

वीर सेवा मन्दिर  
दिल्ली

★

१८८८

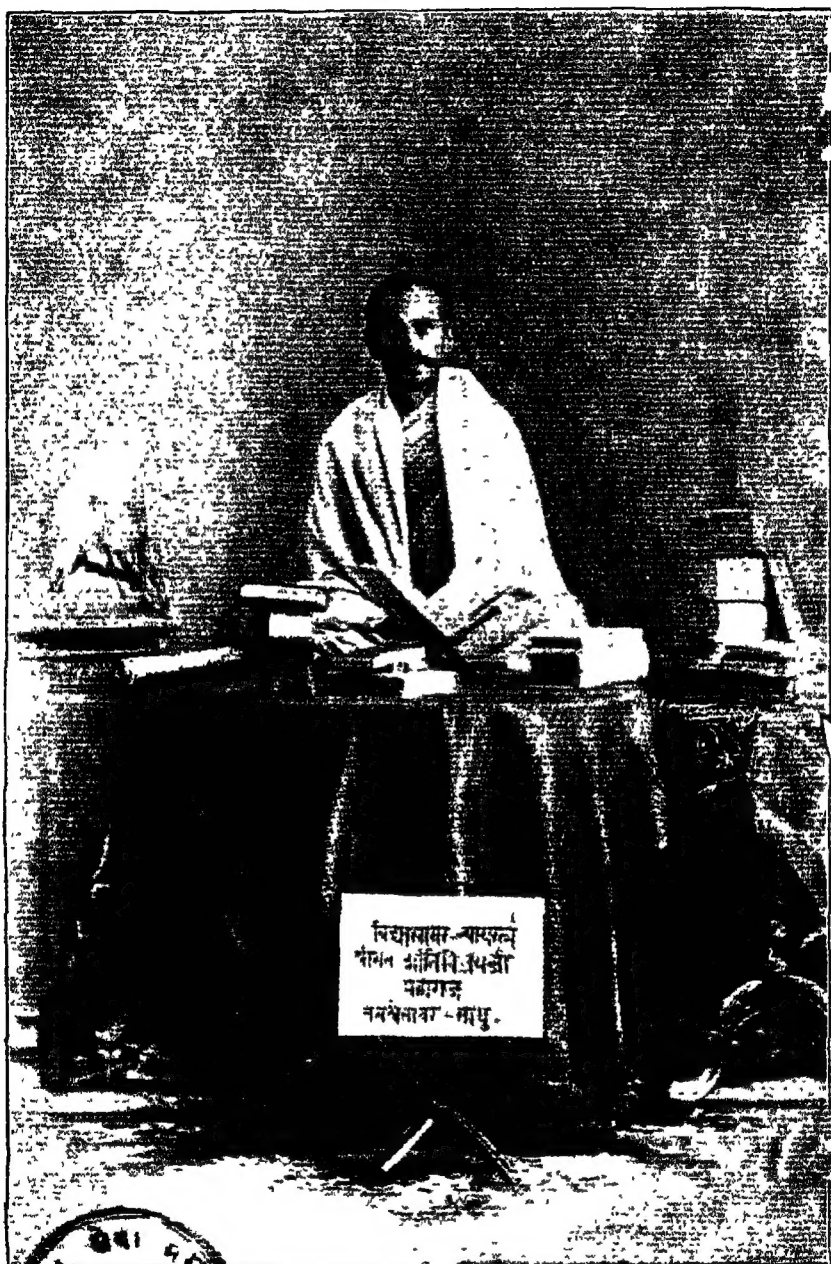
क्रम संख्या

काल नं०

खण्ड







विद्यसागर-न्यायरात्न  
श्रीमन् शान्तिविजयजी  
पद्मनाभ  
नवभेलावा - माधु.



VIDYASAGAR—NYAYRATNA—SHREEMAT

SHANTIVIJAYJI—MAHARAJ

JAIN SHWETĀMBAR—SĀDHU

# मानवधर्मसंहिता.

( दुसरा नाम- )

## शांतसुधानिधि:-

( जिसको )

जैनभेतावरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायर-  
त्न-महाराज-शांतिविजयजीने-बनाया.

[ शार्दूलविकीर्तित ]

धन्या भारतवर्षसंभविजना-येद्यापिकालेकलौ,  
निस्तीर्थेश्वरकेवले निरवधौ नश्यन्मनःपर्यये,  
उद्यत्सूत्रविशेषसंपदिभवदौर्गत्यदुःखापदि,  
श्रीजैनैश्वरचोनुरागवशतःकुर्वति धर्मोद्यम, १,

( प्रथमआवृत्ति: १००० )

प्रकटकर्ता

गुजरात-मारवारु-मालवा-और रा-  
जपुतानाका-जैनसमाज,

मुद्रितकर्ता

युनियनमिडिंगम्रेसकंपनीलिमीटेड-अमदावाद.

( मूल्य १ रुपये. )

सन-१८९८.

संवत् १९५५-

( दोहा, )

क्या देखो तनकी छबी-चित्रलिखि ब्रह्मांति,  
निरखो मुजमनकी छबी-मानवधर्म विख्यात, १,  
चतराईकी बातमें-बातबातमें बात,  
ज्युं केलेके पातमें-पातपातमें पात, २

( सुवाल )-कौन किसकों नही चाहता ? ( जवाब )  
निचेलिखीइबारत पढो.

- |                             |                              |
|-----------------------------|------------------------------|
| १ मित्र-वियोगकोंनहीचहाता.   | १७ जैन-असंगत तचनकों.         |
| २ सिंह-नौकरीकों.            | १८ दंपती-फूटकों.             |
| ३ चौर-दीपककों.              | १९ अमध्य मोक्षकों.           |
| ४ तामसी-छलकपटकों.           | २० उमदा गोदा-चाबककों.        |
| ५ दुर्विदग्ध-सदुपदेशकों.    | २१ पवन-एकत्रस्थितिकों.       |
| ६ गुरु-पठित शिष्यकों.       | २२ पापी-धर्मकों.             |
| ७ कामी-धैर्यनाकों.          | २३ गसभ-मिश्रीकों.            |
| ८ पतिव्रता स्त्री-उपपातकों. | २४ विजली-अंधकारकों.          |
| ९ बहादुर-शिकस्तकों.         | २५ काग-दाखकों.               |
| १० विद्वान्-ताबेदारीकों.    | २६ सत्यवादी-प्रतिष्ठाभंगकों. |
| ११ रोमी-पथ्यकों.            | २७ अग्रविज्ञेता-सुकाळकों.    |
| १२ अनादी-चतुरताकों.         | २८ कृतघ्न-प्रत्युपकारकों.    |
| १३ वेद्या-अपन्यकों.         | २९ नकटा-आरसिकों.             |
| १४ निर्मोड़ी-स्त्रीसंगकों.  | ३० प्रीति-मित्रताकों.        |
| १५ महात्मा-निजस्तुतिकों.    | ३१ शत्रु-मित्र कं मित्रकों.  |
| १६ निर्वल-कुस्तिकों.        | ३२ पक्षपाती-युक्तिकों.       |



## [ धन्यवाद. ]

(जिनजिनमहाशयोंने इसग्रंथके संग्रहकरते व-  
स्तु सहायता दिई उनको धन्यवाद—और  
ग्राहकहोकर ज्य जेजा उनके  
नाम प्रकाशित करता हू. )

( किताब. )— ( ग्राहकोंके नाम. )

- १२५ गुजरातदेशनिवासी एक श्रावक,
- १०० मध्यप्रदेश राजपुतानानिवासी एक श्रावक,
- ५१ शहरअमदावादनिवासी एक श्रावक,
- ५१ झहोरी मगनमलजी जोरावरमलजी मुणोत—( मालिक हीरा-  
कालजी. )—शहर इंदोर देश मालवा,
- ५१ शेठ मगनीराम भभुतसिंह ( मालिक चांदमलजी ) शहर  
रतलाम देश मालवा,
- ५१ श्रीयुत खेमचंदजी दीपचंदजी सुरत नानपुरा,
- ५१ श्रीयुत लहेरचंदजी डालाचंदजी वकील शहर पाटण देश  
गुजरात,
- ५० मुहता जुगराजजी लक्ष्मणराजजी वगेरा, शहर जोधपुर  
देश मारवाड,
- १५ शा. कपूरचंदजी उमाजी, मुकाम देलदर, जीका झोरोही  
देश मारवाड,

- १३ श्रेष्ठ कुंदराजी कपुरचंदजी. घीया. (मालिक लक्ष्मीचंदजी,) परतपागढ, देश मालवा राजपुताना.
- ११ श्रेष्ठ नथमलजी गंभीरमलजी छाजेड, शहर इंदोर (मालवा)
- ११ श्रेष्ठ बालचंदजी कनीरामजी, शहर बंबई,
- १० शा. केशरीमलजी धन्नाजी, मुकाम जावाल जीला शीरोही, देश मारवाड,
- ९ शहर जेशलमेरके श्रावकोंकी तर्फसें,
- ७ मुहता-चंपालालजी हरखचंदजी शहोरी. शहर इंदोर देश मालवा,
- ५ श्रेष्ठ मुन्नालालजी चंपालालजी मारवी, शहर इंदोर देश मालवा,
- ४ शा. छोतरजी रूपजी, शहर इंदोर देश मालवा,
- ४ श्रीयुत जमनालालजी कोठारी, मुकाम जावद, जीला निमचकी छावणी, मालवा राजपुताना.
- ४ गांधी वरधाजी छोगालालजी, मुकाम रतलाम देश मालवा,
- ४ मारवी उदयचंदजी मूलचंदजी मुकाम रतलाम देश मालवा,
- ४ श्रीयुत भाउसाहब सिरदारमलजी, मेनेजर मकसीकार-खाना, देश मालवा,
- ३ शा. लुंबचंदजी, मुकाम रोहिडा राजपुताना आबुरोड.

### ( शहर इंदोर. )

- ४ श्रीयुत गुलाबचंदजी खजानची,
- ३ श्रीयुत वैद्य गणपतजी भगवान्जी,
- २ श्रीयुत मुरजमलजी सकलेचा,

( धन्यवाद. )

- १ श्रीयुत मूलचंदजी दलीचंदजी बोधरा, (मालिकवृजारीमलजी.)
- १ श्रीयुत जोरावरमलजी बागमलजी साणमुखा,
- १ श्रीयुत हीराचंदजी कोठारी,
- १ श्रीयुत सिरदारमलजी पारख,
- १ श्रीयुत लखमीचंदजी मारु,

( शहर रतलाम. )

- १ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी भागीरथजी पोरबाद.
- २ श्रीयुत खुवाजी फकीरचंदजी पोरबाद,
- २ चकौल भगजी केशरीमलजी मारवी,
- १ पीपाडा वीरचंदजी कारुजी,
- २ काठेड हीराजी,
- २ शा. लधाभाइ जेठाभाइ, कच्छी,
- १ घुघरीया हीरालालजी नानालालजी,
- १ श्रीयुत छगनभाइ गुजराती.
- १ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी पोपटचंदजी, खंभातवाला,
- १ शेठ मोकमभाइ केशरीमलजी, गुजराती,
- १ शेठ पेमचंदजी जयचंदजी, गुजराती,
- १ लुणीया सरूपचंदजी,
- १ मोदी धनाजी,
- १ बोधरा गजाजी,
- १ पीचोलीया सरूपचंदजी,
- १ खीमेसरा पंजाजी हरखाजी,

( धन्यवाद. )

- १ मारवी मयाचंदजी बुलचंदजी,
- १ चिनायका हीराजी,
- १ चौधरी नेमाजी,
- १ नाहार नंदाजी,
- १ कांसवा जगवानजी गबुजी,
- १ नाहर रताजी केशरीमलजी,
- १ मेता रतिचंदजी.
- १ पारख ताराजी भागीरथजी,
- १ तलेरा देपालजी चुनीलालजी,
- १ मारवी रायचंदजी खिवाजी,
- १ पोरवाड मुरजमलजी,
- १ पावेचा नाथाजी चपालालजी,
- १ तिलोकचंदजी मोतीलालजी, पंचेवावाला,
- १ कटारिया लखाजी निहालजी,
- १ मुराणा रुपचंदजी जडावचंदजी,
- १ घुघरीया हरखचंदजी केशरीमलजी,
- १ बगाणी जवरचंदजी चुनीलालजी,
- १ दलाल खुबाजी बाघमार.
- १ पोरवाड खुबाजी पुनाजी,
- १ कटारिया मंछारामजी केशरीमलजी,
- १ पंड्याजी भोलीरामजी कालुरामजी,

( कसबा वरुनगर—मालवा. )

- १ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी मोहनलालजी वैद्य, (कुशलगढवाले)

- २ शेट कालुजी तिलोकचंदजी, ( माळिक रिखवदासजी, )  
 १ श्रीयुत यविजी ऊत्तमविजयजी,  
 १ शेट मंगलजी नयमलजी पारख,  
 १ शेट माणाजी कस्तूरचंदजी,

( शहर मंदसोर—मालवा. )

२५ श्रीयुत सौभाग्यचंदजी मुणोत सेक्रीटरी अफीम गोदाम  
 सरकारी,

(तथा) श्रीयुत छगनमलजी बांठिया बगेरा,—

( शीरोही—देश मालवा. )

- |                           |                            |
|---------------------------|----------------------------|
| १ रा.रा. मिलापचंदजीदिवान, | १ शा. नानचंदजी खुशाल-      |
| १ शृंगीजी धनराजजी,        | चंदजी,                     |
| १ शृंगीजी अखेचंदजी,       | १ शा. हंसराजजी बनाजी,      |
| १ शृंगीजी कस्तूरचंदजी,    | १ शा. हिंमतमलजी जयचंदजी,   |
| १ शृंगीजी रूपचंदजी,       | १ कोठारीनवलमलजी पंढाजी,    |
| १ शा. उमेदमलजी,           | १ कांगठाणी भूरमलजी ता-     |
| १ शा. हुकमीचंदजी,         | राचंदजी,                   |
| १ शा. आंबाजी प्रेमाजी,    | १ चौधरी हुकमीचंदजी म-      |
| १ शा. मूलचंदजी भुराजी,    | नरूपजी,                    |
| १ शा. गोबाजी हुकमाजी,     | १ शा. पंनेचंदजी देवीचंदजी, |
| १ शा. रूपचंदजी हिंदुमलजी, | १ शा. नगीनदासजी सुरतवाले   |
| १ शा. जाकमचंदजी जेताजी,   | १ सधवी नयमलजी चैनमलजी,     |



- |                          |                           |
|--------------------------|---------------------------|
| १ शृंगीजी जवानमलजी,      | १ शा. नथमलजी रूपचंदजी,    |
| १ शृंगीजी मिलापचंदजी,    | १ शा. जवेरचंदजी प्रेमाजी, |
| १ शृंगीजी हीराचंदजी,     | १ शा. खुबचंदजी ताराचंदजी, |
| १ शृंगीजी रिल्लवदासजी,   | १ कोठारी शिरेमलजी नव-     |
| १ शा. खूबचंदजी,          | लमलजी,                    |
| १ शा. शिरेमलजी,          | १ दोशी तिलोकचंदजी सां     |
| १ शा. चिमनमलजीनानचंदजी   | कलचंदजी,                  |
| १ शा. हिंदुमलजी भानाजी,  | १ चौधरी मोतीचंदजी नेमाजी  |
| १ शा. रूपचंदजी प्रेमाजी, | १ शा. कस्तूरचंदजी कानाजी, |
| १ शा. गुलाबचंदजी अवाजी,  | १ शा. हुकमीचंदजी मया-     |
| १ शा. लखमीचंदजी जेताजी   | चंदजी,                    |
| १ शा. बजेराजजी,          |                           |

### ( शिवगंज-देश मारवाम )

- |                          |                          |
|--------------------------|--------------------------|
| २ शा. बाहलाजी नाथाजी,    | १ शा. हेमराजजी,          |
| १ शा. श्रीचंदजी दीपाजी,  | १ शा. मोतीजी मंग्याजी,   |
| १ शा. गोमाजी केरिंगजी,   | १ शा. ओटाजी फवाजी, क-    |
| १ शा. मनरुपजी केरिंगजी,  | लापुग,                   |
| १ शा. चेंनाजी सदाजी,     | १ शा. जैसाजीकी स्त्री,   |
| १ शा. धंनानी गोविंदजी,   | १ शा. ललुभाइकी स्त्री,   |
| १ शा. कुपाजी मुजाजी, वा- | शा. तेजाजीकी स्त्री,     |
| लीवाला,                  | १ शा. जीताजी धंनानी,     |
| १ शा. भगानी वनाजी,       | १ शा. गुलाबचंदजी हीराजी, |
| १ शा. वेलाजी फताजी,      | १ शा. दलचंदजी चांपाजी,   |

१ शा. भगजी लालजी,	लापुरा,
१ शा. हेमराजजी सादरी- वाला,	१ शा. लुंबाजी चेनाजी वा- लीवाला.
१ शा. हंसराजजी शीरोही- वाला,	१ शा. वनाजीकी स्त्री,
१ शा. धनरूपजी गलाजी क-	१ शा. जोधाजीकी स्त्री,
	१ सेवक चिमनाजी धुलाजी,

- २३ देश मारवाड-मुकाम मढारके-श्रावकोंकी तरफसें,
- १ मुता जोरावरमलजी मुकाम सोजत देश मारवाड,
- १ शा. लुंबाजी देवराज, मुकाम जावाल,
- २ श्रीयुत अबीरचंदजी जालोरी, मुकाम वासोदा, ( रियासत  
गवालियर, )
- २ श्रीयुत नंदलालजी पारख, मुकाम भेलसा, ( रियासत  
गवालियर, )
- १ श्रीयुत नथमलजी पारख, शहर उज्जैन, ( रियासत  
गवालियर, )

## ( नूतिका. )

॥ ग्रंथरचना उसको कहना जिसमें अपूर्ववातोंका संग्रह किया गया हो, और वह संग्रहभी ऐसा होना जो हमेशाके लिये सबको फायदेमंद हो, व्यर्थकागज कालेकरना क्या जरूरत ! अच्छे लोग फरमाया करते हैं कि—चतराईसे बोलना बहुत मुश्किल बात है लेकिन ! असल पुछांतो चतराईके लेख लिखना उससे भी ज्यादा मुसीबत समझो—थोड़ेहफ्तोंमें बहुत कुछ लिखना और भाषाको रसाली बनाना उससे भी ज्यादा मुश्किल है—अगर उक्त बातें तुमने पुरीतौरसे हासिल नहीं की हैं—तो—ग्रंथ बनाना फिजूल समझो. ग्रंथ तयार करके—छपवाना चाहो तो—बहेत्तर लेकिन ! मूल्य उतना रखो जो लागतमें ज्यादा न हो, लिखाणको प्रेसमें रवाना किये पहिले दोतीन दफे फिरफिरकर पढ़ जाओ, ऐसा न हो कि—पीछेंसे तुमको रंज उठाना पड़े, जैसे धनुष्यसे छुटा हुआ बाण फिर हाथमें नहीं आता लिखेहूँ लेख छपगये बाद फिर मिटा नहीं सकते, इसीसे कहा जाता है फिर मौचलो,

॥ ग्रंथ—छपेबाद दूसरा शकल उसमें भूल बतलावे—और वह—सच्ची हो तो—दूमरी आवाजमें उसको सुधारलो, तुमारी तारीफ होगी, बुराई नहीं, भूलना सबके पीछे लगा है, जहां तक बनें ऐसा लेख लिखो—जो—अन्युक्तिमें रहिन हो, बहुत—रायक या—भयानक बनादोगे—तो—सचको धकापहुंचकर कमजोरी आजायगी, जहां खंडनमंडनका मौका आनबने युक्तिसे—लडो, कुबचन लिखना—ब—शादूरी नहीं, बहादूरी उमीका नाम है जो शास्त्रीयकानूनमें बखि—लाफ बात—नबाली जाय—तारीफ उनकी समझो जिनके लेखोंको दुश्मन सराहे. दुनिया दिवानी है, लेकिन, ! नहीं, ! जिनको अक—लमंद लोग सगाई बही ठीक है. इसग्रंथमें—मुझे—कड़चमत्कारी बातें

बैसी लिखना-था-जो-निमित्त ज्ञानके तालुकथी, लेकिन ! इस-लिये नहीलिखीकि-जमाना बदला हुआ है-अधर्म वृद्धि दुनियाके तीनाहिसोंपर छागइ और-गुणकेपीछे अवगुण बोलने वाले कदम कदमपर खड़ेहै इसलिये यही मुनासिब समझागयाकि-समयदेख-कर बात बतलाना.—

यै-नही कहसकताकि-इसग्रंथमें कहीं-बगेर चुकके लिखगयाहूँ कइजगह गलतीयां रहगइ होगी, अपनी भूल अपने आपको जब तकदूसरा न कहे-मालूम नही देती, इसग्रंथके पांचौतरंगमें जोजो बाते लिखीहै सबका शूचीपत्र न्यारान्यारा बनायाजातातो बहुत बडा फैलाव होता. इस लिये आगे जो संक्षिप्तशूचीपत्र लिखा गयाहै-उसको पढकर मतलब निकाललेना, देशाटनवृत्तांतके लेखमें पृष्ठ (४१)पर-जहां फरखनगरका बर्नेन देखोगे-पंक्ति (१२) में मेरीउमर (३३) वर्षकी छपगइहै वहांपे (३१) वर्ष जानना, श्वेतांबर दिगंबरकीभिन्नतानामके विषयमें-पृष्ठ (२५३)-पंक्ति १-पर जहां-त्रिलोकसारमें ऐसा क्यों कहा लिखाहै, वहांपर-गोमटसारमें ऐसा क्यों कहा-जानना, पृष्ठ (३२६) पंक्ति (१७) में-जहां आमगंधतोला-दो-ऐसा छपगयाहै वहां-आसगंधतोला-दो-एसा पाठ जानना, पृष्ठ (३२८) पर-जहां-सर्पकाटनेपर आरामहोनेके उपाव बतलायेहै-वहांपे पंक्ति (८) में-जहां फीटकरी लिखीदेखो, वहां-सवातोलेफीटकरी-ऐसापाठ जानना, -(४८७)पंक्ति-पांचपर जर्मनीवालोंके हिसाबसे दुनियामे जो एक अबज (७०) करोडको आबादी लिखोहै उसके साथ आम यूरोपवालोंके-जानेहुवे भूगोलके अनुमानसे (१५) अबज मनुष्यकी आबादी दुनियामेंहै एसा जानो.



( हस्ताक्षर,—)

—मुनि-शांतिविजय,—

( संवत् १९५५,—)

# **[मानवधर्मसंहिता-(शांतसुधानिधि)ग्रंथका- संक्षिप्त सूचीपत्र, ]**

( तरंगपहिलेका बयान. )

( विषय )	( पृष्ठ. )
१—देशाटनवृत्तांत, ....	१-१४०
१—यतिजी पं-जयचंद्रजीके सवाल्लोंका जवाब,	१९-२१
१—तीनथुइवाले-मलीनांवरी-मुनिधनविजयजीकी- कुतर्कोका-खंडन,	२१-३९
१—दिगंबरभुल्लक-धर्मदामजीरचित-श्वेतांबर न्यायाकुश ग्रंथका-खंडन.	४३-७०
१—श्वेतांबराचार्य-श्रीमद्-हीरविजयमूरिके फुरमान पत्रकी-नकल.	८४-८६
१—मूर्तिपूजापर-व्याख्यान,	९८-१२४
१—यतिजी-पं-माधवचंद्रजीके-सवाल्लोंका-जवाब,	१२५-१४०
२—जैन-बौधका-भेद, बुधगौतमकी उत्पत्ति-और- तीर्थंकर महावीरका जीवनचरित,	१४१-१८०
१—श्वेतांबरदिगंबरकीभिन्नता-दिगंबरमतकी उत्प- त्ति-भेदानुभेद-चौराशीवाल्लोंका-जवाब.	१८४-२७५
४—मुल्ताननिवासी-दिगंबरश्रावकोंके(१६)सवा- ल्लोंका जवाब,	२७५-२८१
५—लङ्करगवालियरनिवासी-दिगंबरश्रावक फ- तेहलालजीके-सवाल्लोंका-जवाब,	२८१-३०६

६—चिकित्साविद्या-वैद्यकेक्षण-बीमारकीहिफाज-  
त-अजीर्ण-कोषवृद्धि-खुनीबवासीर वगेरारोगके  
मिटानेकाउपाय, स्त्रीको रक्तविकारशांत होकर  
गर्भस्थितिहानेकी चिकित्सा-औरतको-और-  
मर्दको किसतरह शरीरकी रक्षा करना-सर्पके  
काटनेपर आरामहोनेकी चिकित्सा,

३०६-३३०

(तरंगदूसरेकाबयान.)

१—स्वरोदपज्ञान,

३३१-३४१

,,—योगशास्त्रका वर्णन,

"

,,—सूर्य-और-चंद्रनाडीचलतेबख्त-क्याक्याकरना

"

,,—नत्त्वोंकी पहिचान-प्राणायाम,

"

२—अष्टांगनिमित्त,

३४१-३९१

,,—अंगफुरकनेका फल,

"

,,—स्वप्नोंका फल,

"

,,—स्वरविज्ञान-मनुष्य पशु-और पक्षीकीबोलीमेंशुभाशुभ—,

,,—जमीनकंपनेका फल,

"

,,—देश-नगर-और ग्रामोंपरजब आफतआनेवाली  
हो-क्याक्या बनावबने,

"

,,—आकाशमेंधुम्रकेतुका उदय-उल्कापात-और-  
तारोंकाखिरना,

"

,,—शरीरके तिल-मसे-और लहसनका फल,

"

,,—हाथपांवकी रेखाका फल,

"

२—शकुनशास्त्र,

३९२-३९६

३—कालज्ञान, .... ३९६-४०२

## ( तरंग तिसरेका वयान, )

१—मानवधर्मसंहिता,

४०३-६३३

॥—सवेरे उठकर मंत्राधिराजका स्मरण-दातूनकरनेकी विधि-जिनमंदिरजानेकी विधि-शास्त्रमुननेका वरुत-खानपानकी विधि-तांबुल-मकानकीम-फाइ-नशाकरनेमेंनुकशान-वंश-और-गोत्रका वर्नन-क्षत्रीय-ब्राह्मण और वैश्यके कर्त्तव्य-अकलकेफव्वारे-पञ्चनी-चित्रिणी-हस्तिनी-और-शंखिनीस्त्रीके लक्षण-(कामविकार-मोह-कर्मका एकभेद) ब्रह्मचर्यपालनेका उपदेश-गर्भवतीस्त्रीका शिक्षा-गर्भाधान वगैरा मोलहमंस्कार-जैनशास्त्रानुसार विवाहका वर्नन-जैन तोथोंका वयान-इमचंद्राचार्यरचित-अर्हन्नीतिके मुताबिक-दायभागऔर-वर्सायतनामा-वगैराकई बातोंका खुलासा.

॥

## ( तरंग चौथेका वयान. )

१—ज्योतिषशास्त्रका वयान,

६३४-६४६

२—मंत्रशास्त्रका खुलासा,

६४६-६५२

३—छंदशास्त्रका वर्नन,

६५२-६५५

४—जैन-और-दयानंदमरस्वती, इसमें दयानंदमरस्वतीकी कुतर्कोंका-खंडन-और-वेदकी उत्पत्तिकी वयान है,—

६५५-७४७

- ५—दुनियाके मतमतांतर—( धर्मतत्व-प्रदर्शनी)— } ७४३-७९७  
 जैन-बौध-सांख्य  
 योग-मीमांसक-नैयायिक-वैशेषिक—( आर्यदे-  
 शीय मतमतांतर—)मुसलमान-और-इशाइयोंके  
 धर्मपुस्तकका सार—(अनार्यदेशीय मतमतांतर—)  
 काल-स्वभाव-नियति-उद्यम-और-कर्मवादी-  
 का बर्नन-ज्ञानाचरणीय वगेरा आठतरहके क-  
 मोंका बयान-चौदहवाक्यरत्न, .... ..  
 ६—भकसीतीर्थके मेनेजर-भाउसाहबके सवाल्लोका-  
 जवाब—( कलंकीका बयान-और क्षयवृद्धि-  
 थिका निर्णय. )— } ७९७-८०३  
 ७—जैनका संक्षिप्तइतिहास-ग्रंथकी पूर्णता, ८०४-८१२

( तरंग पाचवेका बयान. )

- १-धर्म-अर्थ-काम-और-मोक्ष,.....८१७-८२४  
 ,, जिनप्रतिमाका समवतुरस्नानाप-मूलनायक  
 प्रतिमा अचलरखना-उनकी दृष्टि-दरवजेके  
 कौनसे भागमें रहना ठीक-घरदेरासर  
 की विधि-जिनमंदिरमें घंटानाद-और शिखरपर  
 ध्वजा रखनेके फायदे..... ,,







## Manav Dharma Sanhita.

---

By Vidyasagar-nyaratna Maharaj Santibijoji—a Jain Swetambar Sadhu. The book is full of varied and manifold informations and contains a description of the various sects and their views. Everybody should keep a copy of this work with him. The different subjects treated in this book if studied carefully would undoubtedly win the esteem and approbation of the readers. The other productions of the author published upto date have all been praised by scholars. In fact he has put forward the substance of several *Sashtras* in his work. The paper and printing is neat. Demy 8 vo. of nearly 825 pages. The language is simple enough to be understood by ordinary men. Readers of limited capacity can easily grasp the the subject independently of any help from without. It is also known as *Santa-sudha nidhi* (lit. ocean of nectar of peace). It consist of five parts. The different matters are so interestingly represented that if once begun, the reader can hardly leave aside the book. The following are in brief the principal subjects treated in this work.

The first part contains—an account of a travel—answers to queries of Jatiji Joy Chandraji of Dehli—Criticism upon Malinambari Muni Dhanbijoyji speaker of three verses of prayer and upon *Swetambariyan-*

*kus* of Dharma Das of Digambar sect—a copy of the *Farman* granted by Akbar the Great to Swetambaracharya Srimat Hira Bijoy Suri—Lecture upon idol worship—answers to questions of Jati Madhav Chandraji of Gualior—Difference between Jainism and Buddhism with origin of Budh Goutam and a short life of Tirthankar Mahavira—Distinction between Swetambars and Digambars—Origin of Digambarism—Point of similarity and difference—Solution of their 84 queries—answers to the 16 questions of the Digambar Sravaks of Mooltan and of Mr. Fateh Lalji, a Digambar Sravak of Gwalior—Medical Science—qualifications of a medical practitioner—Art of nursing and looking after the patients—treatment of various diseases e. g. indigestion, blood poisoning, barrenness &c.—rules for preservation of health—treatment of snake bites.

The Second Part contains—Science of nasal breathing—description of the *Yoga Sastra*—enumeration of acts to be done at the presence of *Surya and Chandra Nadi*—*Pranayam*—eight kinds of omers—effects of the throbbing sensation at the different parts of the body and of dreams—vocal knowledge—knowledge of the futurity from the voices of birds, animals and men—effects of an earth-quake—signs which foretell evils to countries, cities & towns—Rise of a comet, falling of a star or meteor—effects of the various red black spots over the body and Palmistry—*Sakunsastra*—knowledge of time.

The third part deals with the duties of human beings—rules for going to the temple of *Jains*—time for hearing *Sastras*—rules for eating and drinking—house cleansing—injury from the use of intoxicating drugs—description of the diver class and creeds—kinds of females—fountain of intelligence—Duties of a Brahmin, a Kshatrya and a Baishya—Total abstinence from intercourse—advice for pregnant women—Account of the Jain sacred place—Sixteen *Sanskar* from Garvadhan to marriage according to Jain Sastra. Copious notes on Jain law of succession according to *Arhan Niti* of Hemacharya—of wills.

The fourth part contains—Astrology—Mantra-viṇyas—Rhetoric—criticism upon the tenets of Dayanand Saraswati—the origin of the present *Vedas*—account of other religious tenets and views of Jain, Bouddha, Sankhya, Joga, Mimansak, Naiyayik, Vaisesik of Arya country and of Mahomedans and Christians of Anarya Country—eight different kinds of *Karmas*—14 *Bakya ratna*—Description of the Kalanki King—answers to question of Bhao Shahib Manager of Makshiji—the cause of increase and decrease of *tithis*—a short history of Jainism.

The fifth part concludes with a description of 4 *Margas* Dharma, Artha, Kam, Moksh (i. e. from religion to final liberation of our souls)—Rules and observances to be performed at the construction of the temples and the consecration of the statue of Gods in them.

( श्रीजिनायनमः )

# [ मानवधर्मसंहिताग्रंथ. ]

—वा—

## [ शांतमुधानिधि.— ]

( मंगलाचरणसमीक्षा, )

( दोहा. )

स्तवी देवअरिहंतकों—जोकलु कीजे काम,  
स्वतः सिद्ध सो होतहै—कहां? विघ्नकों नाम, १

( सवैया, )

आत्मज्ञान प्रकाश विना—खद्योतसमान भया टिमकारा,  
तापर मान कहा करना—दिनचारगये फिर व्है अंधियारा,  
अतिवल्लभ प्राणप्रिया जगमें—निजस्वारथका सबाहि संसारा,  
चित्तशांतकिये संतोष मिले—कर शांतदसा सुखहोत अपारा, २,

जोशरद्वय देशाटनकरके पृथ्वीमंडलमें नहीफिरा—परायेदेशोंकी  
भाषा नहीसमझा—भूगोलखगोलका ज्ञान और नीतिवाक्य नही  
पढ़ा—बुद्धिमान् उसकों चतराइके बड़े हिस्समें वंचितरहा फरमाते  
हैं, दशाटनमें—देशदेशका चालचलन—व्यवहार—मजहब—विद्या—भाषा  
कारिगरी—तिजारत—तबारीख—पहाड—नदी—नहर—झील—बनास्पति  
जीवजंतु—और मौसिमवगेराका हाल—बखूबी मालूम हो सकता है,  
अगरतुम अनार्यदेशमें अटनकरना चाहतेहो—तो—अैसेप्रबंधमें करो  
कि—धर्मभ्रष्ट—न—बनना पड़े, धर्मका नाशकरके कोईकार्य किया  
जाय—बुद्धिमान् उसकों अच्छानहीफरमाते, हमेशासे यहबात हो—

( श्रीमद्भागवतम् )

# [ मानवधर्मसंहिताग्रंथ. ]

—या—

## [ शांतसुधानिधि.- ]

( ममलाचरणसमीक्षा, )

( दोहा. )

स्तवी देवभरिहतकों-जोकलु कोजे काम,  
स्वतः सिद्ध सो होतहै-कहां? विघ्नकों नाम, १

( सर्वैया, )

भातमज्ञान प्रकाश बिना-खद्योतसमान भया दिमकारा,  
तापर मान कहा करना-दिनचारगये फिर जै अंधियारा,  
अतिबल्लभ प्राणप्रिया जगमें-निजस्वारथका सबहि संसारा,  
चित्तशांतकिये संतोष मिले-कर शांतदसा सुखहोत अपारा, २,

जोशस्त्र देशाटनकरके पृथ्वीमंडलमें नहींफिरा-परायेदेशोंकी  
भाषा नहींसमझा-भूगोलखगोलका ज्ञान और नीतिवाक्य नहीं  
पढ़ा-बुद्धिमान उसकों चतराइके बड़े हिस्समें बंचितरहा करमाते  
हैं, देशाटनमें-देशदेशका चालचलन-व्यवहार-मजहब-बिद्या-भाषा  
कारिगरी-तिजारत-तबारीस-पहाड़-नदी-महर-झील-बनास्पति  
जीवजंतु-और मौसिमयोंराका हाल-बखूबी माकूम हो सकता है,  
जगरतुल्य अनार्यदेशमें अटनकरना चाहतेहो-तो-ऐसेप्रबंधमें करो  
कि-धर्मप्रद-न-बनना पड़े, धर्मका नाशकरके कोइकार्य किया  
जाय-बुद्धिमान उसकों अच्छाबुझाकरमाते, इसीकारण महाकाव्य हो-

तीचली आईकि-आर्योंकी हकुमतमें अनार्य लोग रहतेचलेआये, सबबकि-आर्योंका तकदीर अक्सर सदातेज रहा. लेकिन! आज आर्योंकासितारा कमजोरहै-अनार्यदेशीयराजोंकी हकुमतमें आज आर्यलोग-निवासकररेहै-चक्रवर्तीराजे-अबनहीरहे जिनका पुन्य सर्वत्रछा रहाथा, इसीसे कहाजाता हैकि-सभो दिन एक सरोखे किसीके नही होते, देखतेनहीहो-सवेरकी धूप-श्यामकों-कहां चलीजातीहै?-समझसको तो समझ लो ! जिसकी तकदीरबली उसकी-ततबीर बली-और-जिसकी तकदीर-कमजोर-उसकी ततबीरभी कमजोर,-अच्छा !-अब जो कुछ देशोंकी बात सुनाते है-सुनो, !

पहिले यह बतलाओकि-जिसदेशवालोंके मुखमें मिश्री और दिलमें जहर हो-वह पसंद है-या-दिलमें मिश्री-और-मुखमें कटुता । पसंद है, ( जवाब. ) हमकों-जिसके दिलमें मिश्री हो वही पसंद होगा, अच्छा ! तो-यह बतलाओकि-जो-लोग-अनाज-धी-और दुग्ध वगेरा खाते है-वह-पसंद है-या-मांस-मदिरा और पनीर ? ( जवाब. ) अनाज खाना पसंद है, अच्छा ! तो-यह बतलादो ! कुम्भिपर बैठके मेजपर खाना पसंद है-या जमीनपर बैठकर ? ( जवाब. )-इसमें हम किसीका पक्ष नही करेगें, जिसकों जैसा योग मिले वैसा करे, हां ! अभक्ष्य भोजन कभी-पसंद न करेगें, अच्छा ! यहभी बतालादोकि-पाजामा-कोट-और-टोपी-पसंदहै या-अंगरखा-धोता-दुपट्टा-और-पघड़ी ?-( जवाब. ) इसमेंभी वही कहेंगे जिसकों जैसा रुचे-वैसा पहने, लेकिन ! हां ? यह जरूर कहेंगे चालचलन बुरा न चले,

कोशलदेशकी राजधानी अयोध्या-जिसका नाम-विनीता-

नगरी था-रिषभदेव तीर्थंकर इसीमें हुवे-और-सबसे पुरानी नगरीभी यही है,-कुरुक्षेत्र-जहां-कौरव पांडव दिल खोलकर लडेथे, देखकर किसको वीररस नहीं छाजाता !-हस्तिनापुर-रिषभदेवके वरुतका वमाहुवा बहुतपुराना शहर-लेकिन ! आजकल बिल्कुल बिरान पड़ा है, द्वारिका-पश्चिमसमुद्रका शिंगार-यदुवंशीयोंकी निवासभूमि-आजकल वैसि नहीं रही लेकिन ! जमीनवही है, मालवादेशकी राजधानी उज्जैन-बड़ेबड़े आश्रयोंकी भूमि किसीसे छीपीहुइ नहीं, लंका-जिसका दूसरा नाम सिंहलद्वीप वही है जो सेतुबंधके-ठीकसामने देखते हो, शास्त्रोंमें जो-सोनेकी लंका-लिखी उसका अर्थ-यह नहीं समझनाकि-उसके घरोंकी दिवारमें इंटचूनाभी सोनेका लगाया, असलमें घरघर-सोनेकी कलसियां-और दिवारोंपर सोमहरी चित्रकारो एसीथी जां तीनहिस्से सोनाहो सोना दिखताथा, दारचीनी-कालीमीर्च और-इलायची यहां आजकल ज्यादा होती है, यहांका हाथी चालाकी और मजबूतीमें सबसे बढ़कर देखोगे,

सौराष्ट्रदेशके लोग-धर्मज्ञ-दोलतपंद-और-दिलके दलेर किसीमें छीपहुवे नहीं, तीर्थ दार्जुंजय गिरनार इसीदेशके शिंगारहै, बंबईके आम-सबमवोंका शिरताज-मीठे और-बजनमें शेरसेंभी अधिक उतरेगे, हिमालयपहाड तरहतरहकी जडीबूटीयोंका भंडार नेवजे-देवदार-भोज पत्र-और-कस्तूरीयामृग-इसीमें होता है, कश्मिरके दुशाले देशोंमें मशहूर-अंग्रेजोंने बहुतसी कलें बनाई लेकिन ! यहतो उनसेंभी न बनपडा, केशर-बादाम-पिस्ते-अंगूर आलूबुखारा-शाहदाना-अखरोट-बेदमुश्क और-कचनार-बगेरा यहां-ज्यादे होता है, मारवाडमें पानीकी कमती-लेकिन-खानपान



उमदा,-कुंकण-कण्टिक-और-मलबारके लोग-सदाचारी मथुरा-  
ब्रजके-लालची-पंजाबी आपस्वार्थी-लेकिन !-सिखलोग-योद्धे  
मगधके प्रेमी-गुजरातके दातार-बंगालके विनयवान् और-नेपा-  
लके बड़े सख्त होते हैं.

बनारसकी साडी-अहमदाबादका-कमरुबाब-काठियावाडके घोड़े  
जामनगरके औढ़ने-मारवाडके ऊंट-ढाकाबंगालाकी भलमल-जय-  
पुरकी चित्रकारी-सुरतका किस्बोकाम-अजमेरका गुलाब-जहां-  
सीका केवडा-तीरहुतकी नील-लखनउका कसीदा-और-आग-  
राका पेठा-देशोंमें मशहूर है, दिल्लीआगरा-लखनउ-और-बंगाल  
प्रदेशका-खानपान-बालचाल-पुशाक-अच्छा,-पेवाडके शूरवीर  
विराटके मिलनसार-होतेहैं, मारवाड और पूर्ववाले अपनी ओर-  
तोंकों पर्देमें रखते हैं, मुसलमानी अमल्दारी जब पुरीतेजीपरथी  
लोगोंको बहुबेटीयोंको अकेली फिरना खौफकी जगहथा-तबसें  
पर्देकी-रसम जारी हुई-वर्तमानमें वह खौफ मिटगया लेकिन ! न  
मालूम ! फिरभी उक्तरसम क्यों नहीं उठादिई जाती, ? पर्देसें  
ओरतोंको देवदर्शन-और शाम्भु श्रवणमें-न्यूनता पहुंचतीहै, अस-  
लपर्दा नेत्रोंका रखना चाहिये, जिसराजाकी रानीयोंका पर्दा  
शास्त्रोंमें सुनते हों-वह-ऐसा नहीं था-जो तुमने जारी कररखाहै?  
दूसरे तुम-राजेलोंग नहीं-जो उनकी बराबरी करो, बरादरीके  
लोग-एकठे होकर जिसबातको घटाना बढ़ाना चाहे-तो हो सकता  
है, कलिंग भोट-आभीर-गौड-द्रवीड-सुरसेन-सिंध-तैलंग-वत्स  
मैवात-गंधार-कच्छ-कामरूप-बम्बर-और वैदर्भ-बगेरा देशोंकी  
अलग अलग रसम कहाँतक लिखे ? जिसदेशमें जो कोई रहता  
है उसकेलिये वहीवर्ताव अच्छामालूम देगा,

इंग्लंड-अमरिका-रुस-फ्रांस-और-जर्मनी-आजकल सभ्यता और-इशाइ मतके जोरशोरमें अबल मोरचेपर खड़े है, छंडन-न्यु-यॉर्क-सैन्यपिटर्सबर्ग-और-पेकिन-अलबते ! बड़ेशहर है, लेकिन ! फ्रांसकी राजधानी पेरिसनगर अपनीकतावजा और-सुंदरतामें सबमें निराला है, चीनदेशकी जमीन उपजाऊ-चायकी पैदाश ज्यादा-रेशमी कपड़े देशोंमें मशहूर-कापूरकेपेंड चीनहीमें देखोगे, हाथीदांत कचकड़ेके खिलौने-और-चीनीके बर्तन-यहांसे देशोंमें जाते है, कस्तूरीयेद्विरन-शालकी बकरी-और-जंगली गधे-तिब्बतमें देखोगे, एशियाइम्समें हजार बरसोंके पुराने जानवरोंकी लाशें बर्फके तलेमें निकलती है, जापानदेशके लोग घोड़ेकी लगाम हाथों लेन; बड़ेजती समयते है, इसीलिये सवारहोंतबरत लगाम नोकरोंके हाथमें रहती है, अफगानिस्तानमें मेवेंकी पैदाश ज्यादा राजधानी काबुल तिजारतके लिये अबलदर्जेपर, बलूचिस्तान और हिरात अलग अलग मुल्क-लेकिन ! पश्चिमहिरातकों खुरासान कहदो कोइहर्जकीबात नहीं, मोनाचांदी-लसनिया-छाजबर्द-सीसा लोहा-मुरमा-हरनाल-फिटकरी-और-गंधक बगेरा-यहांकी खानोंमें निकलते है, अरबस्तानमें पानी-कम-बिल्कुल रेगिस्तान है, लेकिन ! घोड़ा यहांका तमाम देशोंमें मशहूर-उंट-और-गधाभी वहां अच्छा होता है, गधेकी सवारीसें बहांवाले षेब नहीं गिनते, बल्किन् ! बड़ेचावसें चढ़ते है, देशदेशका चलन व्यवहार सुनोतो पार नहीं, कहांतक कोइ लिखे !-लेकिन ! हां ! जबतुम खुददेशाटन जाओ तो इतनाजरूर लिखलिया करोकि-वहांपर बड़ा-शहर कौनसा है ?-विद्याका प्रचार कैसा देखा ?-मशहूर चीजे कौनकौनसी देखी ?-आबहवा कैसी मलूम हुई ?-कितने आद-

मीकी आबादी-और-व्यापारकी तेजी कैसी है ?-राजा-मंत्री-ज्योतिषी-वैद्य-हाथी-घोड़े-गवैये-साजंदे-नदी-सरोवर-बाग-बगीचे-कोटकिला-प्राचीनशिलालेख-देवालय-पाठशाला-और बाजारकी रजाभक-कैसी है ?-पनेवार उसका वयान लिखलो, कइतरहके संसारी फायदे होंगे,

जवाहिरातमें ( १ ) मानक-सबरत्नोंका शिरताजहै बम्ह्रा श्याम-काबुल-लंका-और-रुसकी अमल्दारीमें यह पैदा होता है, [२] हीरा-जिसका नाम शास्त्रोंमें वज्ररत्न लिखा यहभी सबरत्नोंमें प्रधान रत्न है, इरान-केंप-निझामकी राजधानी कीस्नानदी-और शरना परनावगेगमें पैदा होता है, (३)-पंजा-जिसका नाम शास्त्रोंमें वैदूर्यरत्न-कहा-मिश्र-अर्मारका-मरगज-इरान--और-रुसमें उत्पन्न होता है, (४)-मोती-वेहरन-जददा-मस्कद-लंका-तूत-खाडी-दरभंगा-ठाका-और-चूनाखाडी बंगरामें पैदा होतेहै, बडेसे बडा मोती-आजकल आवले प्रमाण मिलेगा, (५) मूंगा-समुद्रकिनारे और इंग्लंडकी जमीनमें उत्पन्न होता है, (६) गांमेदकरत्न लंका-और-बम्ह्रामें-(७)-लसनिया-जिसकानाम शास्त्रोंमें-ककैत-नरत्न लिखा-लंका-और-बम्ह्रामें निकलता है, (८) निलम-इयामके मुल्कमें-बम्ह्रा-और-कश्मिरकी अमल्दारी कुलुपहाडमें पैदा होता है, (९)-पुखराज-लंका-और-बम्ह्रामें-(१०) पीरोजा-निशापुर-आरकजइ-और इजिप्तमें-पैदा होता है, ( ११ ) लाल रत्न-रूम बम्हा-लंका-और-निझामकी अमल्दारीमें निकलता है, अकीक-खंभातके पास-और-तामडा-सरवाडमें पैदा होता है, शंगेसमपथ्थर सफेद और हरेरंगका-लाजवर्द-आस्मानी-और बिछोर-सफेद-होता है,-

सिंह-व्याघ्र-हाथी-घोड़े-गधे-डंटे-खर-गौ-भैंस-बकरी-कुत्ते  
 रीछ-सूवर-हिरन-रौस-गांदड-खरगोस-बंदर-नेवला-बिल्ली-सांप  
 गिर्गट-चकोर-तीतर-बटेर-मुर्ग-मारस-बुगला-चीडिया-तोता-मैना  
 मोर-कोयल-पर्पाहा-याज-शिकरा-पील-कव्वा-कबूतर-वीछू-म-  
 ख्खी और मच्छर-बगेरा जीवजंतु-सब देशमें होते हैं, लेकिन !  
 हां ! किसीदेशमें ज्यादा-किसीमें कम, कइ देशकी ताहसीर सर्द  
 और कइकी गर्म-होती है,-बिद्या और-धनमें-भारतमध्यखंड-स-  
 बसें अबलदजेंपर रहता चला आया, दूसरे देशके बेपारी इसदे-  
 शकी आशालगाये एकही सफरमें जन्मभरका दरिद्र दूरकर जातेथे,  
 कौनसी ऐसी अधिक उपयोगी चीज है-जो-इस देशमें-न-होती  
 हो ?-भापा सुनो तो-गुजरातमें गुजराती-बंगालमें बंगाला-पंजा-  
 बमें पंजाबी-कश्मीरमें कश्मीरी-तिरहुतमें मैथिली-सिंधमें सिंधी  
 राजपुतानमें देशवाली-कर्णाटकमें कर्णाटकी-तिलंगमें तैलंगी-महा-  
 राष्ट्रमें महाराठी-और द्राविडमें द्राविडी-बंगरा तरहरहको मिलेगी.  
 एक कविने (१०) देशकी भाषा-एकही काव्यमें दर्सा दिइ है-सुनिये !

( स्वयरावृत्तम्. )

प्राणार्थीशोगतोमे-बहुरिनबगदे-दयुंकरु ? रे ! हवेहुं ?  
 माचेकम्मोर्चीगोष्ठी-हिवकुणसुणसी-गांठधेलोनदी छे,  
 मारे तीरां सुणोरा-खरच बहुत है-इहरां टावरां रो,  
 दीष्टी तेंडेदिलोदी-इशकइलफतें-होतवो वीचनाडु, १

जानना चाहिये-इस जमीनका एकछत्र राज्यकरनेवाला क-  
 भीतो चक्रवर्त्ती हुवा, कभी वासुदेव-महामंडलीक-और-कभी-मं-  
 डलीकराजा-इस तरह अनेक मालिक हो चुके, चारचार दिनकी  
 हुकुमत-कर सबचले गये-किसीका इरादा पुरा नहीं हुवा, जहां

जवाहिरातके ढ़ैर लगतेथे. वहां कभी कंकरभी देखे गये--किसकी तारीफ--और--किसकी बेइज़्ज़ती कहे ?--जिसमुल्कमें तिजारत कम हो--वहां--रवंञकभी कम रहेगी, बड़े शहरोंमें अक्सर हरबातका सुख रहता है, लेकिन ! गांवके लोग शहरका रहना कभी पसंद न--करेंगे, पहाडीलोग--पहाडमें--जंगली जंगलमें--और--मेंदानके मेंदानमेंही राजी रहेंगे, कइ नदीयां ऐसी देखोगे--जिसमें बाराह-महिने जल भरारहता है और कइ चार महिनेभी खजानेमें जल नहीं रखती, कइ एसी हैं. जिसमें पूरीबालू रेतभी--नहीं--और--किसी-किसीमें झलाझलसोना निकलता है, इसीसे कहागयाकि-देशाटन करनेहीसे सबमाहीतगारी मिलेगी, आजकल बंबइ-कलकत्ता-दोनों बडेशहर--भारतमध्यखंडमें-आवादी--व्यापार--और--रवंञककेलिये पूरीतेजीपर है, जींदगीके जरूरी और आराम दोनोंतरहके अस-बाब--यहां मिल सकते हैं, सबकिस्मके कारीगर यहांपर मौजूद नगरकी शेरकरनाचाहोतो विनासवारी नहोसकेगी, कहांतक कोई पैदल चले-?-बडेशहरोंमें यहीतां बडीवातेहैं, इभीसे कहागया कि-देशाटन करनेसे सबतरहकी माहीतगारी मिल मकंगी.

कइलोग कहेंगे मुनिजनोंको ऐसीऐसी बातें लिखना क्या जरूरतथी ?--( जवाब. ) ग्रंथमें सभरिस बयान किये जाते हैं, बुद्धिकी कचाइसे कोई न समझे तो उसके लिये क्या कहाजाय ? शास्त्रोंमें विधिवाद--चरितानुवाद--और--यथास्थितवाद--जहांजैसा मुनासिबहुवा बयान किया जाता है, बुद्धिमान जानतेसब--लेकिन! वर्ताव उसीका रखते हैं जो मुनासिब हो. सज्जन लोग गुन और दुर्जन अवगुन लेयेंगे--ग्रंथकर्त्ताकों लाजिमहै किसीका पक्ष-न-करे, जां बात जैसीहो--वैसी--लिख देवे, उपादेयकों उपादेय-

त्यागने योग्यकों हेय—और—उपेक्षाकरने योग्यकों उपेक्षणांय लिखे,

( १ ) ~~हुआ~~ आदमी जब जन्मता है शिवाय पुण्यपापके और कुछ शाय नहीं लाता, जीवनका फल यही है कि—दुनिया में आकर कुछ करनी करे. मनुष्यजन्म बारबार नहीं, पूर्वजन्ममें पुण्यकियाथा तो नरदेह मिला, जिसजमानेमें जोचीज आरामकी मिले सबलंग जमाकरते हैं, कोई ऐसा नहीं देखा जो आरामकों न चाहता हो, अच्छे शहरमें उमदा मकान बनाकर रहना कौन नहीं चाहते ?—शीश-महेल और मजेहुवे कमरे किसकों नापमंद होते हैं,—बाग बगीचे फुलवारी और गर्मीयोंमें हवादार मकान किसकों नागवार गुजरेंगे ? मर्दों खूबमुरत औरत-और-औरतों खूबभुरत मर्द-हमे-शासं पसंद होते चले आये, ईतरफुलेल फुलोंका संज-और उमदा गहने सबकों प्यार लगते हैं. रेशमी पुशाक शालदुशाले और गर्मीयोंमें बारीक वस्त्र किसकों लिये नापसंद हो सकते हैं ? ताजी मीठाई और तुर्की बनी रसोई किसकों अच्छी नहीं लगती ?—मव चाहते हैं कि—हम-खुशमिजाज रहें और आराम हमिल करें, लेकिन ! याद रखो !! जब तुमारे घर खुशीके नकारे बजेगें मवहाजिर रहेंगे जवरंज तबकोई नहीं, ईभीसें कहा जाता है सब मतलबके शायी है, धन दालत मिथ्या—और—संसार जानदार है, ईसमें कोई कायम नहीं रहा, जोशखश ज्ञानीके कहने मुआफिक चलेगा चैन उठायगा और बड़ा नाम पायगा, मुलाहिजा करलो कि—यह बात सचच है—या झूठ ?

( २ ) धर्मात्मा—रहमदिल—परांपकारी और दलर होना सबके लिये लाजिम है, यह मीठीका पुतला नमालूम कि मरौज मीठोंमें मिल जायगा ?—यह खयाल अपने दिलमें जलदी उठालो कि—हम-कुछ चीज है, मन लगाकर कहो ! तुमने पुन्य कितना और पाप कि-

तना किया ? अगर पुन्य कर्मकिया है तो उसके बढानेकी खायेस क्यों छोड बैठे हो ? जैसे रुवावमें तुम तरहतरहके कौतुक देखते हो संसार उसीका नमुनाहै, ईसमें आकर धर्मकरना सारतत्व है, हीरेकी बराबरी काच नहीं करसकता सुन्नेके सामने पीतल-और-चंदनकेसामने नींव जैसे कुछ चीजनहीं, संसार धर्मके आगे कुछ चीज नहीं, शास्त्रकीबातें सुनकर जो तुम हंसदेतेहो बड़ीभूल है, जबतुम मुमाफराकों चलतेहो साथमें औरतकों-दोस्तकों-और-नोकरचाकरकों जरुरलेजातेहो. तरहतरहके मेंवेमीठाई ईतरफुलेल-बिछोना-पंखा-छाता-और कई किस्मकीदवाओंसें भराहुवा-दवा-खानाभी साथ लेतेहो, उमदागाडीमें सवार होकर चलते हुवेभी जब भूखलगतीहै ईमजसें खातेहो मानो ! घरमें बैठकरखानाखारहेहै, यहमवधर्मरूपो कल्पवृक्षके फल है,-लेकिन ! ईतनाहरवखनयादर-खा-परलोककेलियेभी कुछबंदोवस्त करना चाहिये,

( ३ )-धर्मकोबदौलत सुखपाया-औरपाओगे,-अगर कहा जायकि-हम-धर्मधुर्म-नहीं मानते, आपही बनलाईये ! ईमकेहोनेमें सबुताही क्या है ?-( जवाब. ) मुनिये ! अगर धर्म नहीं है-तो-बतलाओ ! एकसुखी-एक दुखी क्यों नजरआते हैं ?-मव एक साही क्योंनहीं ! अगर कहाजाय पैदाकरनेवालेकी मरजी अमी-हीथी-तो-बतलाओ ! उसमें सबव क्या ! असलमें ईश्वर किभीका भलाबुरा नहींकरता, तुमारे कियेहुवेकर्मानुसार फल मिलताहै, ना-हक ! ईश्वरकों दोषदेतेहो, एक ईश्वरवादी एक शहरमें घूमनेकों जारहा था- सामने एकहाथी चलाआताथा-और उसपर बैठाहुवा महावत दूरसें पुकारताथाकि-हटो-हटो !-मगर ईश्वरवादी नहींहटा कहनेलगा जाईश्वर चाहताहै-वहीहोताहै, महावतनै कहा ईनबातों-


कौनो छोड़दो, और हटजाओ, ईश्वरवादी कहनेलगा हाथीमें ईश्वरकी बेसीही प्रेरणाहोगी तो तुजेक्या मालूम ! महावतबोला मेरेमेंभी ईश्वरकी प्रेरणा क्योंनहीमानते ? वह प्रेरणाकहरहीहैकि-हटो ! ईश्वरकी एकप्रेरणा तुमकोमारना चाहतीहै एक बचाना ? तुमको कौनवात मंजूरहै ?—ईश्वरवादी शर्मादा होकरहटगया, और समझगया कि—अपनेअपने कर्मही सबमें प्रधान हैं, न ईश्वर किसीको मारे—न जीलावे, करांडयत्न करो कियेहुवेकर्म भोगेविद्वान ही छुटते,—

(४)—संसारमें दौलतमंद गंजहे लेकिन बुद्धिमानोंका गंज नहीं, ज्ञानके सामने-दौलत कमजोर-और जहां ज्ञान वहां दौलत कम-यह्वात किमीमें छीपी नहीं. ज्ञान और दौलतका वादानु-वादभी दौंचकाहै, रुपये पैमेपरभा हफोंकी महोरहोगी तभी चल-सकते हैं सबुतहुवा लक्ष्मीपरभी ज्ञानका प्रभाव छाया है, लक्ष्मी खर्चकरनेपर कम होजायगी ज्ञान कम नहोगा. तीनलोक और चौ-दहभुवनमें फिगाहुवाजीव-दौलतमंदकों नहीं पुछने जानाकि-मेरे किस्मतमें क्यालिखाहै ? जैसे सिंहकी बराबरी मियार-और-हंसकी बराबरी कौवा नहींकरसकता-ज्ञानकी तुलना दौलत नहीं करसकती, जितनी लियाकत ज्ञानसे टामिलहोतीहै. दौलतमें कभी नहीं होती, तुमको जब बड़ा ओहदा मिले भौच समझकर चलो, और दिलमें रहेम रखो,—एकशख्सकों बड़ा ओहदा मिला तब उसक दोस्तने सौचा मुजे कुछ इसमें फायदाहोगा, बड़ी उमेदसें इसके घर गया, उधर ओहदेदारके चश्मे पहिलेही बद-लेहुवेथे-पहुंचतेही उमने पुछा-तूं-कौन है ?—और क्यों आया ? दोस्तने कहा-खूब हुवा ! अब पहिचाननाभी गया, बहदिन भूल गया ! जो खानेकोभी तंगथा-और-सैंकडोंदफे हाथजोडे थे ?



बस ! इतना कहकर दोस्त चला गया, अच्छेलोगोंका यह काम नहीं कि. ओहदामीलनेपर गर्मीमें आजाय-और-दोस्तको भूल जाय. नफा-नुक़्शान-तकलीफ़-और आराम-सबको लगेहुवेहै, अपनी तरकीमें दूसरोंपर रहेमरखना सबको मुनासिब है,

(५)-यह बात बहुत ठीक है कि-ओछे लोग-दोस्तको भी दगादिये बिदून नहीं रहते, लेकिन ! अपने जीमें इस बातका अचरीज मत-लाओ कि-इसने ऐसा क्यों किया ?-जिसका जैसा स्वभाव होगा मुश्किलसे छुटेगा, असलमें दगाबाजोंने अपनी उमर बेफायदे ग-वाइ, जैसे ओछेजलकी मछली-उछलने लगती है-छोटे आदमी अमीरीपाकर उछलतेहै, लेकिन ! तुम सुजानहो ! छोटेकी सोब-तसे छोटा इरादा क्यों कियेहुवेहो ?-यह बात सचचै कि-कौवेके गलेमें मोतीयोंकी माला नहीं सोहती लेकिन ! क्या कहा जाय !! जमानेकी खबीही ऐसी है, सिंह अगर सात उपवास करे तो भी उसको देखकर कोई भरसा नहीं लाता कि-समताधारी बन गया, दगाबाज कितनाही शांतबने लेकिन ! उसका भरसा नहीं आता. यह एक स्वाभाविक नियम है, एक वक्रजड शिष्यको गुरुने फर-माया-तुं-हमेशासे उलटे रस्ते चलता आया-अब तो-समझकर चल, और-ऐसे कर्म-मतकर जिससे नरके कुंडमें जा पड़े, शिष्य बोला, महाराज ! रास्ता दिखलानेको आपही चलेगें जब ठीक होगा-मैं नहीं जानता हूं-रास्ता किस तरफ है ?-और यह भी कृपाकरके बत-लाइये कि यह-जो-हमेशा भूख लगती है-न-लगे, रोजका झगडा मिठ जाय, गुरुने कहा एसीही कुतर्कोंसे तेरी अकलमंदी झलक रही है, हमेशा ऐसीही तर्क कियेकर-इसमें तेरी तारीफ बढेगी,-

(६)-[  रसिक-और-दोस्तोंका संवाद. ]-एक दफे

रसिक-अपने दोस्तोंसे कहने लगे-एक बात मुझे तुम लोगोसे कहना है, दोस्त बोले ! कहिए ! वह क्या है, ?

रसिक-प्रेम किसीसे मत करना,

दोस्त-खुब कहा !-नही करेंगे तो काम कैसे चलेगा ?

रसिक-खैर ! परदेशीसे तो कभी मत करना,

दोस्त-कभी परदेशीसेही-होगया-तो ?

रसिक-खैर ! फिर उससे बिगाड मत करना अच्छे आद-

मीयोंका काम है,-दोस्तीमे सदा एक समान रहना,

दोस्त-कभी बिगाड हो जाय तो ?

रसिक-रुबरु मिलकर माफी मांगना-या-पत्रद्वारा अपनीभूल

मंजूर करना,

दोस्त-अगर वह-न-माने-तो,-?

रसिक-दोस्तानेकी गुजरी हुई बात-बिगाडमें दूसरोंके सामने

जाहिर मत करना और-सच्चे दिलसे उनके साथ बर्ताव

रखना मोहब्बतफिर शुरूहोगी-मित्रतामें निरभिमान-

और-द्वेषरहित बर्ताव रखनेहीसे सबकाम ठीक होतहै,

( ७ )-जो-मनुष्य-तुमारेशाय नही बोलता-और-तुमारामन

उससे प्रीतिकरनाचाहताहै, बस ! तुम उसमें प्रीतिकी भावना करो,

जरूर आपसे प्रीति करनेलगेगा, जिसमनुष्यका दूरदेशमें होनेसे

पता मालूम नहीदेता उसपर ध्यानकरनेसे-वह-जरूर आजाताहै,

ईसका निश्चय उसीसे होसकताहैकि-तुमको घरआनेकी कब ईच्छा

हुईथी-?-तो-वह-वहीसमय बतलायगा जबसे तुमारा खयाल उस-

परहुवाथा, दूसराप्रमाण यहहैकि जबकिस्नेहीका दूरदेशमें अं-

तकालहोजाताहै और समाचारभी अबतक नहीआयेहै-उससेप-

हिलेही स्नेहीके मनमें रंज पैदा होजाताहै, इसमें मालूमहुवाकि-जिसपर मोहब्बत हो-उसपर मनमनका आकर्षक यंत्र जरूर लगा रहताहै, लेकिन ! पूर्वभवका तुमारे और उनके संबंध होगा-या-नया संबंधलगना ज्ञानीयोंने देखाहोगा-तभी बनावबनेगा, नहीतो हर्गिज न बनेगा, अगर एकपक्षीराग होगातो एकका राग-और-दूसरेको कुछ खयाल नही, मनमें दुर्ध्यानरखनेसे अशुभकर्मोंका बंधहोताहै, ईसलियेहरवक़्तमनको साफ रखना चाहिये, जिसको तुमचाहतेहो वह दुसरेसे खुशहै-और-जिसपर तुमनाखुशहो वहतु-मारेपर खुशहै, जिनसे तुममिलनाचाहतेहो-वै-दुसरोसे मिलतेहै-और-जिनसे तुम अलगरहना चाहते-हो-वै खुद, आनकर मिलते-है,-क्याकहाजाय ! संसारकी यहीस्थितिहै, यहबात कभी मतभूलो-किस्मतकी बात कोईमिटा नही सकता, याद रखो ? एकदिन दे-शनगर राज-रैयत-अपने-पराये-सबको छोडनाहै;

(८)-हरेकजीजमेंसे समयसमयपर परमाणु निकमतेरहतेहै, कई बीजें ऐसीहैकि हाथमें रखकर कुछदौरतक स्पर्शकरोतो शरीरमें उसकाअसर पहुंचजाताहै, बर्फको हाथमें रखोतो ठंडकेमागे हाथ-कांपनेलगतेहै, पांवके तलवोंमें लेंपकरनेसे मस्तकमें असर पहुंच-ताहै, गुलाबचमेलीवगेराके फुलोंकी जोखुशबू आती है असलमें उनकेपरमाणु नाशिकामें जालगतेहै, शरीर-जवान-नाक और-कान प्राप्यकारी, मन-और-चक्षु-अप्राप्यकारीहै, रागभावसे जिमके शरीरपर स्पर्शकियाजाय उससे उसकोखुशी पैदाहोतीहै, जैसेकि-घोडेके शरीरपर कोई मोहब्बतसें थापदे-तो-वहखुशहोकर इनइना-ताहै वैसे औरोंकाभी हाल जानना चाहिये-सांप-और-विंचूकेस्पर्शसे जो तकलीफहोतीहै-सब-उनके परमाणु जहरीलेहै, जवान-

पर-कोईचीज रखो-या-नाकसें-मुँघो-मुर्च उसके आठ स्पर्शी पर-माणुं-स्पर्शहोकर असर करतेहै, कोईशस्त्र अंधेरेमें बैठाहो-शिवाय चुपचापके औरकुच्छ वहाँपरनहींहै उसवस्तु अगर वहाँकोईस्त्री-आजाय-और-उसके गहनेकी आवाज कानोंमें सुनाईदे-तो-मालूम होजाताहै कोईस्त्री यहां-आरहीहै, कानोंमें आठस्पर्शीपरमाणुलग-नेहींसें यह मालूम हुवा, ज्ञानावरणीयवगेराआठकर्म-मन-वचनके-योग-और-कार्माणशरीर-इनके परमाणुं चारस्पर्शीहोतहै-शब्द-अंधकार उद्योत-धूप-छांव-और-प्रभाके-परमाणु-आठस्पर्शी होतेहै, चारस्पर्शी परमाणुं इंद्रियगोचर नहीं होसकते, आठस्पर्शी-होसकतहै, आरीसेमें अपना मुखदेखनेवाला-शस्त्र-आरीसेंकों औरउसपर पड़े हुवे-अपनेशरीरके आठस्पर्शी परमाणुंको देख-ताहै, फोटोग्राफकी-तस्वीरभी शरीरसें निकसेंहुवे आठस्पर्शीपर-माणुका एकसमुहहै, तारमें जो समाचार दिये जातेहै-वें भी-आठ स्पर्शी परमाणुके खुटकेद्वारा जो संज्ञाबांधरखीहै, उसको समझकर पिनसलद्वारा लिखदिये जातेहै, रैलका प्रबंधभी-जल और अग्नि केसंयोगद्वारा है.

(९)-तुमको अखबार पढ़नेका शौकहै-तोकिइलेख देखेहोगें सोवर्ष पहिले दुनियामेंरैल नहींथी-न-तारथा, इस्वीसन (१८१८) में पहिलपहिली विलायतमें रैल जारी हुइ, फ्रांसमें-सन (१८३८) चली, अमरिकामें (१८३८) में जर्मनीमें (१८३५) में-रुसमें (१८३८)-स्पेनमें-(१८४१)-भारतमध्यखंडमें(१८५२)-और-रुममें (१८६८) में-रैल जारी हुइ, कुल (१००) वर्षके इधरही इसकी थुरुआतहै, शास्त्रोंमें पढ़तेहोकि-पूर्वकालमें आकाशगामी विमान विद्याधर लोग चलातेथे सोठीकहै, इस जमानेमें विद्याधरलोग

रहे नहीं-न-वैसाधन-विद्या-और-पुन्यवानी रही. जैसा-समय वैसी-सामग्री रह गई, इसवस्तुतः जानेआनेके लिये रैलहीका साधन उमदा समझ लो. यह स्वाभाविकनियमहै कि-जिस जमानेमें जिसकी बराबरी दूसरी चीज नहो-उसवस्तुतः वही उमदा गिनना चाहिये,

(१०)-एकगुरुकों तीन शिष्य थे,-लेकिन !उनमें कौन कैसा है उसका इम्तिहान लेनेकेलिये-एकएककों अलगबुलाकर कहा, मुझे आम्रफल खानेकी इच्छा हुई है,-शिष्य-नाकमें बलडालकर कहने लगा-आपकी बुद्धि आजकल किसहालमें है ?-गुरुकों कुछ इच्छा तो-थी नहीं-फक्त उसका इम्तिहानलेनाथा-सो-होगया, और अपना अभिप्राय उसकों विदित नहो इसलिये कहदिया हां ! आज मेरी तबीयत कुछ ऐसीही है. जाओ ! दूसरेकों भेजदो-उसने दूसरेकों भेजा, गुरुने उसेभी यही बात कही, उसने कहा, ठीकहै-सौचकर-जवाब दुंगा, इसकोंभी कुछ योग्य-और कुछ अयोग्य जानलिया, और कहा ! जाओ ! ! तीसरेकों भेजदो, तीसरा आया-गुरुने उसेभी यहीबात कही, शिष्यने कहा ! बहुत अच्छा ! लाता हूं,-गुरुने इसीकों योग्य समझा, बतलाओ ! तुमकों कैसा बननाहै-सौचकर जवाब दो ?

(१३)-कुसंग-और-सत्संगंपर एक कविका वचन सुनो,

## [ सवैया. ]

बिगरे पय कांजीकीछींट पढ़ें-कलधौत कुधातपढ़ें बिगरे,  
बिगरे कुलजात कलंक लगे-तृपराज अनीतकिये बिगरे,  
बिगरे तपपुंजकषाय चढ़े-पद ऊंच कुसंगतसँ बिगरे,  
बिगरे हितमित्र जहांछलहै-शुभधर्म मृषामतसँ बिगरे,

मुधरे षष्ठ पंडितसंगतसें-अविनीत कलाधरसें मुधरे,  
 मुधरे मिलपारस लोहसही-और ताम्र रसायनसें मुधरे,  
 मुधरे विषऔषध वैदनसें-मलयागिरिसें बरवा मुधरे,  
 मुधरे अघहिंसक साधुयकी-भवकोटि अगाधतर्पे मुधरे, २,

## [ घमंडकरना बुराहै, ]

मान ! रे ! मानव ! मानबुरो-मतिमान-गुमान-न-मान-न-नीकों,  
 मानकिये अपमान लहे-न विमानलहे बरदेवपुरीकों,  
 मान मीटे सन्मान बढे-परमान करो शुभवाक्य मुनिकों,  
 मानसजन्म समान नहीकछु-धर्म समान नही और नीकों, ३,

(१४)-विना चीज लड़ाईलडे-वहभी-एक मूर्खोंका शिरता-  
 जहै, एक शरूश-अपनी औरतसें कहनेलगा-कलरौज-मैं-एकभेंस  
 लाउगा औरतनेकहा बहुतठीक ! मलाई-मैं-खाउंगी, मर्द बोला-  
 मलाई तुजे नही मिलेगी, मेरेलिये मलाई और तेरे लीये-कोरादुध-  
 दुंगा, बस ! ईसपर खूब जिद हुईयहांतककि-लड़ाई होगई-और-  
 दूसरोंने आनकर फैसलाकिया, हरेकशरूशकों मुनासिबहै नाहक  
 लड़ाई नलडे, एकशरूश अपनी औरतकों-सुसरालसें लेकर अपने  
 गांव आताथा, रास्तेमे एक नदी आई, औरतनेकहा मेरेपांवमें रंग  
 था, नदीके जलसें उतर जायगा, इसका क्या करना ?-पतिने कहा  
 तेरेपांवकों जलसें कुछ उंचे रखकर इसतरकीबसें घसीटकर ले  
 जाउगाकि-रंग-न-बिगडेगा, औरतने कहा-मेरी जान जायगी,  
 मर्द बोला-जानजाओतो क्याहर्ज है ? लेकिन ! रंग-तो-रहेगा,  
 देखिये ! ऐसेभी मूर्ख दुनियामें हैं-जो-औरतकी जान गमानेकों  
 आमादा हुवे-परंतु रंगगमाना नही चाहा, औरतने पतिका बेहु  
 दापन देखकर आप पांवोंसे चलकर पारहोगई और रंगकी कुछ

परबाह नही किइ, मुखोंकी लीलापर खयाल नही करना और अपनी जानकों बचाना चाहिये,

(१५)-जितनेदोस्त तुमने किये-या-करतेहो सब तुमसे अपना मतलब निकाल लेतेहै-और यश नही देते, इसीसे कहाजाता हैकि-सौचसमझकर दोस्त बनाओ, तुमारा मन हजारोंद्वारहके सोच फिरमें हमेशा लगा रहता है-कभीपारनही पाते, इसका उपाव सुनोतो हम बतलावे-असल इसका यही उपाव हैकि-गइ वस्तुका सोच मतकरो और वर्त्तमानमें खयालरखकर बर्चो, इसीसे सबकाम ठीक होगा, दुसरेके औरत देखकर तुम अपना मन लो-भातेहो, सौचो ! इससे क्याफायदा मिलेगा ? जो चीज अपनी नही उससे मन लोभाना बेकारहे, जहांसे बहुत फायदा होनेकी उमेदथी-वहां थोडाहुवा-तो-उसीमें सबरकरनामुनासिब है, नफा-नुकशान अपनी तकदीरके तालुक है, तुमारे भाइयोंसे तुमको ह-मेशा तकली रहती है लेकिन ! क्या कहा जाय ! तुम लाइकवर हो गम साओ, तुमने अपने कुटुंबकी बहुत पाछनाकिइ-और कर-तेभी हो-लेकिन ! उनलोगोंका मन तुमसे राजी नही, यही तो जमानेकी खुबीहै, नयामकान बनानेका कइदिनोंसे तुम इरादा क-रतेहो-लेकिन ! अब उस इरादेको छोडदो, मकान बहुतहै, जरू-रतसे ज्यादा बनाना क्या फायदा ?-तुमारी औरतसे अलबते ! तुमारामन राजी नहीहै उसका यही उपाव हैकि-नसीयत देतेरहो, और बिद्यापढाओ-आप-लियाकत हासिल करेगी,

(१६)-प्रायःतुम बूठनहीबोलतेहो-यह तुममें बडा गुणहै, ईसी गुणसे तुमारी तरकी हुइ औरहौगी, धर्मकाममें तुम खर्चभी करते हो-लेकिन ! पीछेसे पस्तातेहो-यहअच्छानही, यहखूब यादरखो

दौलत धर्मकी दासी है, तुमकों धन बहुत मिला-छास्रहंरूपये आये गये, लेकिन ! पासमें कुछनहीरहा, ईसका सोच-न-छाओ, स्नायापिया और धर्ममें लगाया यही सार है, जिसकों यहां छोड़ जाना है उससे ज्यादा ममत्व क्यों करना !-तुमारा काम जब फतेह होने पर आता है दुश्मन लोग विगाड डालते हैं, लेकिन ! ईसमें किसीका दोष नहीं समझो-विगाड सुधार अपनी तकदीर का है, तुम हर वस्तु दिलमें डरते रहते हो-यह-आदत बिल्कुल छोड़ दो, डरनेसे आदमी की बुद्धि मारी जाती है, शास्त्रोंका फरमाना है कि-दिलके बहादूरकों सब चीज आन मिलेगी, दुश्मन तुमारे कदम कदम पर खड़े हैं लेकिन ! सामने हुये बाद कुछनही कर सकते यह तकदीर ही की तारीफ है, तुमारी बुद्धि-अलबते ! बढी तेज है-बिगड़े हुये कार्यकों भी सुधार देते हो-लेकिन ! वस्तु पर-अपने काममें गाफिल रह जाते हो-यह ठीक नहीं, किसीकी जमानत मत देना तकलीफ पाओगे, अत्यंत प्यारे के लिये देना पड़े-उसका हर्ज नहीं,-लेकिन ! जमाना बदला हुआ है ईसकों पहिले सौचलेना चाहिये, वकाल तपढकर ऐसामत करना कि-सच गवाहकों झूठा-और-झूठों सचाबना दो, घरका भेद-और-दिलका ईरादा किसीके आगे बयान मत करो, जिसकी सलाह लेना मुनासिब समझो उसके सामने कहना हर्ज नहीं, अगर तुमसे नयी विद्या पढना नहीं बन सकता-तो-खैर ! हर वस्तु किसी पुस्तकों वाचते रहो, लेकिन ! ऐसा पुस्तक वाचना ठीक नहीं जिसमे कुछ समझ ही न पड़े, ग्रंथ-वो-वाचना चाहिये जिससे मनकों आनंद मिले और नयी बात भी हासिल हो, ईस पुस्तकमें कई बातें नहीं मिलेगी. गौर करके देखते जाओ,-ग्रंथकर्त्ता की तारीफ जब है कि-उसके ग्रंथकों लोग-सुवर्णके इफों-से लिखा कर पास रखना चाहे, यह खूब याद रखो ! धर्मकी उत्तम शि-



सा पाये बिना कोई शरुस अपना-या-संसारका-उपकार कभी नहीं करसकता,—

संवत् (१९४७) में-हमारा चातुर्मास-दिल्लीमें हुवा, दिल्लीशहर कइदफे उजाड हुवा और बसा. दशदशकोसके घेरेमें टूटीफूटी इम्मारतें और मकबरे यहां इतने खडे है जिनको देखते थकजाय, जमनानदी इसके नीचे बहरही है, बागबगीचे-तालाब-दरख्त-नयेनयेमकान-और-बाजार देखने लाइक है, दुकानोंमें तरहतरहके मालअसबाब-कहीं मेंवा नाशपाती-और-कहीं-मिठाइ-बेचनेवाले बेचरहे और लेनेवाले ले रहे है, खेतांबर श्रावकोंके घर-यहां (१००)-और-मंदिर (२)-एक नवघरेमें और एक चेलपूरीमें.-हमाराठहरना मालीवाडेमें हुवाथा,

[ इनदिनोंमें-यतिजी-पं-जयचंजजीने-नि-

म्रलिखित प्रश्न-हमसेपुछे-उनका जवाब

इस तरह दियागया.- ]

(प्रश्न पहिला.)-केवलज्ञानी समुद्धात करे-या-नही ? करे तो कितनी दफे करे ?

(जवाब.)-केवली दो तरहके-एक-सर्वज्ञकेवली-दुसरे श्रुतकेवली सर्वज्ञकेवली समुद्धात करे तो एकही दफा करे, जिसमें आठसमयतक दैर लगे, दूसरे श्रुतकेवली-छह समुद्धातमें कोइसीभी एकदफे-या-अनेक दफे करे, जिसमें अंतर्मुहूर्त्तकालदैर लगे,

(प्रश्न दुसरा.)-नवनिदानोंमेंसे कितनेनिदानोंमें धर्मप्राप्ति हो ? और कितनोंमें नहो,

(जवाब.)-प्रथमके छह-निदानोंमें धर्मप्राप्ति न होसके-पीछले तीनमें हो.

(प्रश्न तीसरा.)-सामायिक करनेवाला श्रावक-विना गुरु-आज्ञा किसकी लेवे, ?

(जवाब.)-गुरुके अभावमें उनकी स्थापनासें आज्ञा लेवे.

(प्रश्न चौथा.) दीक्षा लेनेवाला मनुष्य-विना गुरु अपनेआप दीक्षा ले सके-या-नही ?

(जवाब.)-न-लेसके, क्योंकि-सर्वविरति चारित्र-विद्यमान गुरुके पासही लेना शास्त्र वचन है, विना गुरु शिष्य किसका बनेगा ? मनकल्पनासें दीक्षा लेना-प्रमाणीक नही.

(प्रश्न पांचवा.) गणधरकों केवलज्ञान होवे-या-नही ?

(जवाब.)-क्यों नही ? केवलज्ञान हुये बादभी गणधरपदवी बनी रहती है,

(प्रश्न छठा) आजकल भारतवर्षमें कितने गुणस्थानवर्ती मनुष्य मिल सके.

(जवाब.)-सातगुणस्थानतक मिलसके, इसके बढकर न मिलेंगे,-

(प्रश्न सातवा.) रिषभदेवकेवरुत-सम्मेतशिखरतीर्थ-था ?

(जवाब.) नही था, उसवरुत-फक्त शत्रुंजय तीर्थही था, पीछें 'ज्युंज्युं तीर्थकरोंके निर्वाण वगेराहोते गये-तीर्थोंकी स्थापना होती गई, यह कोई नियम नही कि-सभीतीर्थ-प्रथम तीर्थकरके वरुतही स्थापित हो जाय.

(प्रश्न आठवा.) चतुर्थ गुणस्थानवर्तीकों पंचमगुण स्थानवर्ती-नमस्कार करे-या-नही, ?

(जवाब.) चतुर्थगुणस्थानवर्ती देवता-या-मनुष्य-कोई हो-उसको

पंचम गुणस्थायी श्रावक-स्वर्धर्मी भ्राता समझकर नमस्कार करते तो क्या हर्ज है, ? क्या सम्यक्तथारी देवते चतुर्थ गुणस्थानवर्त्ती-श्रावक नहीं है ? अगर है-तो-फिर आपसमे नमस्कारकरना कौन हर्जकी बात हुई ?

[ इति प्रश्नोत्तर समाप्त, ]

संवत् (१९२५) में-तपगच्छके-श्रीपूज्यश्रीभरणेंद्रसूरिसैं तक-रारकरके-मुनिराजेंद्रविजयजीने-जो-तीनस्तुतिका मत निकाला-मुनिधनविजयजी-उन्हींके अनुयायी है, चतुर्थस्तुतिनिर्णयछेदनकु-ठारग्रंथ ईन्होंनेही बनायाहै,-मुनिराजेंद्रविजयजीने सर्वविरतिचारित्र किसीगुरुके पास नहीं लिया, आपहीआप बिना गुरु किये साधु बने, सूरिपदवीभी किसीने नहीं दिई, शास्त्रोंके वचनकों लोपकि-या ईससैं निन्हवोंकी पंक्तिमें गिनेगये, पहिलेदिनोंमें जोजो स्तव न सम्राथबनायेथे-उनमें कहींकहीं ठाणांगसूत्रवगेराकी-जो-साक्षी दिईथी-इंदोरकी सभामें मुनिश्रीशिवेरसागरजीके सामने झूठे पढे, और उनपाठोंकों बदलनापडा, फिर कईदिनोंतक ऐसीभी श्रद्धा-रहीकि-जीवकों कोईमारताहो उसे छुडाना नही. कहतेथे छुडानेसैं पापहोताहै, जब श्रीशिवेरसागरजीने कहाजीवोंपर अनुकंपाकरना जिनेद्रोंने कहीं मना नहीं किया, दानके पांचभेद जहां बर्ननकि-येहै अनुकंपादान उनमें सामिल रखाहै, फिर जीवकों बचाना कैसे पापका कारण होसकताहै ?-जब लाजबाबहुवे-तब-कबुलहोनापडा, पहिले कहतेथे साधुलोगोंकों जिनप्रतिमाकी प्रतिष्ठा नहीकरना चाहिये, फिर जब तीनथुईके मतकी दुकानदारी जमी-तब-आपही प्रतिष्ठा करने लगे, कहिये ! क्याबात हुई ? जिसमुखसैं ना-करना उसीसैं फिर-हां-करना, पहिलेदिनोंमें कहतेथे जिनप्रति-

माकों अंगीरचाना मुनासिवनही, राग उत्पन्न होगा, फिर कहने लगेकोईहर्जनही, पहिलेकहतेथे जिनप्रतिमाकी पूजामें साधुलोगों-कों अनुमोदनाकरना ठीक नही. क्रिया लगेगी, फिरबोले कोईहर्जनही, पहिलेकहतेथे-जो जो प्रकरणवगेराग्रंथहै-सो-(४५)पेंताली-सथागमसें विरुद्ध है, हम नहीमानेगें, फिर इंदोरकीसभामें मुनि-श्रीश्वेरासागरजीके सामने जब लाजवाबहुबेकहनेलगे ठीकहै, कहिये ! जिनकों कदमकदमपर संसयशत्रुने घेराहै उनकी श्रद्धाका क्या ईतबारकियाजाय ? जहां पंडितोंकी सभा हो-वहांसें दुमाछि-पाकर भागना-और-अपने श्रावकोंके सामने सूरि-और-न्यायचक्रवर्ती बनना, कहो ! कैसीबातहै ? इंदोर-और रतलामकी चर्चामें मुनिश्वेरासागरजीके सामने क्यों न हुबे ? असलमें उन्हीदिनोंसें पीलेकपडेवाले मुनियोंसें द्वेषकी जड़ लगी, और द्वेषके मारे पीतांबरीकहनेलगे,-लेकिन ! यहनहोमालूमकि-निशीथसूत्रके सोलहमेंउ-देशमें गणधरोंने क्याफरमाया है ? क्या ! वहां नही लिखाकि-जब साधुलोगोंकों नयाकपडामिले तो ईतनीचीजोंसें उसको रंग लेवे, क्या ! मलीनांबरी मुनिराजेंद्र विजयजी और धनविजयजीने अबतकईसपाठकों नहीदेखा, अगरदेखा है-तो-उस मुआफिक बर्त्ताव क्यों नहीकरते ? मूर्खोंके सामने क्यों नर्द दगाकी खेलते है ? अगर किसीकों शंकाहो-लेख छपवाकर मेरेपास भेजे, मैं-उ-सकों छापेद्वारा जवाबदुंगा, चीठीमें जवाब देनेसें लोग बदल जाते है,

मलीनांबरी-मुनि-राजेंद्रविजयजी-और-धनविजयजी-श्वेत-वस्त्र धारीयतिश्रीपूज्यवगेरासें ईसलिये नाराजहै कि-उनसेंतो त-करार करके निकले, चंदरौज श्रीपूज्यवनकर छद्मीचवरकी उमेद

पुरी किई,—पुरीभी कहां हुई ? बल्किन् ! जावरमें संवत् (१९२५) की-साल बैईज्जती होनापडा, जब पकडेगये कहनापडा हमतो साधु होगये है ? हमसें और छडीचवरसें क्यामतलबहै ?—पीलेकपडेवा-लोंसें इसलिये नाराजहुवेकि-रतलामकी सभामे-मुनिश्रीश्वेतरसागरजीसें हारखाकर भागना पडा अब ईन्होंकों-मलीनांबरपद मिलाहै, कपडेभी मलीन-और-मनभी मलीन, दोनों तरहके अन्वयकी ई-नमें योग्यताहै, पाठकवर्ग !—आपलोगईनकों श्वेतांबर-दिगंबर-पी-तांबर-रक्तांबर-नवांबर-डिसेंबर-कुच्छ मतकहिये, मलीनांबरही कहा किजिये, ईसीपदके ये लोग लोईकहै,—

चतुर्थस्तुतिनिर्णयछेदनकुठार ग्रंथ बनाकर चाहाकि-हम-अ-पनेमतकी पुष्टिकरे लेकिन ! कुवेकाजलपीछाकुवेमें चलागया, को-इवार्त पार-न-उतरी, भीतरसें कपट और जाहिरातमें दुंदियोंकी तरहदयाधर्मियोंका चांद लेना चाहालेकिन ! सबलोग मूर्ख नहीं है, सबजानेहुवे बैठेहैकि-ये-लोग-देवताके नींदकहै, जहांजाना भो-खेलोगों भ्रममेंडालकर कहना-सम्यक्त-लो, फिर धीरेधीरे तीन-थुईका मत पकडाना, अगर तीनथुई-सत्यहै-तो-क्योंकहतेहो ? तीन-और-चार-दोंनोंबात सत्यहै, अगर चतुर्थस्तुतिभी सचहै-तो-ती-नथुईके हठवादसें क्या सार निकाला ? जिंदगीतक झगडेढंढोंमें फ-सकर आत्मसाधनकों खोया, ईससें तो-यतिअवस्थाहीमें रहकर झूठीप्ररूपनासें बचेरहतेतो ठीकथा, उत्सृजभाषणसमान कोईबडापाप नहीं, सबक्रिया धरी रहेगी-उक्तपाप दुर्गतिकों लेजायगा, जमालि-जीने गौतमगणधर जैसी क्रिया किई लेकिन ! देखलो ! किस गतिकों जानापडा ? हरेकशस्त्रकों चाहिये श्रद्धामें अचल रहे,—

“चतुर्थस्तुति निर्णय डेदन कुठार”-यह ग्रंथ बनानेसे मुनि धनविजयजीको एक प्रकारका लाज जरूर हुआ वह जो सु-मजी कह सकते है, एक अहमदाबादवाले श्रावकने एक गोधावी नाम निवासी श्रावकको (जोकि-मुनि धनविजयजीका शिष्य) कहा कि-देखो! आत्मारामजी महाराजने “चतुर्थस्तुति निर्णय ग्रंथ बनाया है इसमे (८३) ग्रंथोंकी साक्षी दी-यी है, इसके उत्तरमें त्रिस्तुतिअनुभायी श्रावकने कहा हवारे धनविजयजीमहाराजने ग्रंथ बनाया है उसमें [३७५] ग्रंथकी साक्षी दीयी है, बताइये कौनकी तेजी रही? पाठक मण! अब कहो यह कैसाक शास्त्रार्थ हुआ? एकने मुंह खोला दूसरेने फी-रन उसको सील दिया, सोचो! मुनि धनविजयजीको यह कि-तना लाज है? कितना शिर पचाना कम हो गया. उनके श्रा-वक ही दूसरेको लाजवाब करनेकी ताकात वाले होगये, परंतु वस्तुतः इसमे कोई सार तत्व न निकला, कुछ बिना संबंधके अधिक ग्रंथोंकी साक्षी देनेमें सत्यता नहीं हो सकती, सत्य यु-क्ति एकजी हजारें तकोंके लिये बहोत, और हजार कुतर्क एक सत्य युक्तिके लिये जी थोमी है, हम क्या! सब कोई मनुष्य निःशंसय कह सकते है कि-सूरिराजेधनविजयजीने और उनके शिष्य मुनि धनविजयजीने देवताओंकी आशातना करनेमें स-रासर अधिक जोर दिया, अब इस प्रबंधसे निदोष होना चाहे सम्भव नहीं होसकते, अपनी मानी हुई बातकी हरकत सब समझता है परंतु अगर वह शास्त्रसे विरुद्ध है तो उसको दोष-कर अलग होना, तारिफका काम है.

## २६ श्रीस्तुतिमत्तानुयायीमुनिधनविजयजीकीतर्ककाउत्तर.

कोई शस्त्र एक जगह किसी बातको अन्यथा कथन करे उसको अनेक जगह अन्यथा बोलना पमता है, देखीये! एक चतुर्थस्तुतिके निषेधसे अनेक जगह देवताओंका स्मरण आराधन निषेध करना पमा. दीक्षाविधिमें जहां शासन देवताका स्मरण-बैयावृत्तकरादिका कायोत्सर्ग-देवबंदनमें श्रुतदेवता आदिका का-योत्सर्ग-बगेरा सब जगह अपेक्षा हुं हंके अन्य अन्य बातोंका शरण लेना पमा, वंदितासूत्रमें-“सम्मदीछीदेवा”-की जगह-सम्मदीछी जीवा,-कहना पमा, कितनेक जडिक श्रावक इसबातसे संसयवान् हुवे, बतलाईये! क्या लाज हुवा! बस! अपने मनमें सजी सचे है परंतु ज्ञानीयोंके सामणे जो है सोही है.

कितनेक महाशय कहते है गणधर प्रणीत चार स्तुति कौनसी है? होवें तो मान जी लेवे, परंतु यह तर्क कार्यकारी नहीं, गणधरके कथनानुसार जो जो चार स्तुति आचार्योंने रची वे सब गणधरप्रणीत ही है, जैसे जिनेन्द्रोकी कही हुई अर्थरूप बाणी गणधरोंने सूत्ररूपं गुथी परंतु वस्तुतः जिनेन्द्रप्रणीत ही है, कितनेक कहते है पांचमे-ठठे-सातमे आदि गुणस्थानवार्ते श्रावक साधु देवताओंको नमस्कार कैसे करे? उत्तर, श्रावकजन स्वधर्मी वृद्ध श्रावक जानकर देवताको नमस्कार करते है, धर्मक्रियामें साहाय्यकारी जानकर साधुजनो स्मरण आदर बगेरा करते है, सम्यकदृष्टि देवता चतुर्विधसंघके बहार नही. संघ\* सबको पूज्य है इस लिये साधुजन जी देवताको गौणतासे नमस्कार करते है

---

\* तीर्थकर भी श्रुतज्ञानका आधार जानकर और पण्य पूजान्यायको अनुसरके संघको नमस्कार करते है.

ऐसा कहनेमें क्या दोष है ! न कुछ, केवल अपनी अपनी समझका फर्क है, असलमें जो बात सत्य है वह सत्य ही आयी रहेगी.

चतुर्थस्तुति निर्णयदेनकुठार ग्रंथके [४५९] पृष्ठपर पंक्ति चौथीसें मुनिधनविजयजीनें हमारे संबंधमें निम्न लिखित लेख लिखा है कि—

“आत्मारामजीने कोई प्रकारनी शंका उपजी तेथी धर्मसंग्रह ग्रंथभां पोतानो प्रक्षेप करेलो पाठ तथा यंत्र तेनी प्रतनो लह्यो आ पासे बीजो उतारो कराववा मेशाणेशी पोताना शिष्य शांतिविजय पासे श्री अमदावाद मोकली. सारे शांतिविजयजीए ते प्रत लहीयाने लखवाने सोंप्या पढी ते लहीयो केटलेक दहामे कोई तेना कामने प्रयोजने अमारी पासे आव्यो. त्यारे अमें तेने पुढ्युं के हमणा तमे थुं लखो ठो ! त्यारे तेणे कहुं के आत्मारामजीनो धर्मसंग्रह लखुं छुं, सारे अमें तेने कहुं के ते प्रत अमारे देखवी ठे, त्यारे तेणे कहुं के शांतिविजयजीए कहुं ठे के कोइने प्रत देखामवी नही.” इत्यादि—

उत्तर—मुनि धनविजयजी लिखते हैं कि—धर्मसंग्रहकी प्रति, जिस लहियाको लिखने दीयी थी उसको शांतिविजयजीने कहा था कि-किसीको बताना नही. पाठकगण ! यह बात बिलकुल झूठ है. हमने न तो किसी लहियाको प्रति लिखने दीयी और न लिखवायी. अगर यह बात सत्य ही होती तो धनविजयजी हमको रूबरू मिलकर पुठ लेते, दूर तो नही थे. (संवत् १९४४) में हमारा चातुर्मास जी अहमदावादमें था, शेठ, दलपतजाइके मकानमें ठेरे हुवे थे. मुनि धनविजयजी जी इसी शहरमें पांज-



रापोलके उपाश्रयमें ठेरे थे, आनकर रुबरु खुलासा कर लेते, दूर ही दूरसे मनमें घटना करते रहना, सुनी न सुनी बातकों दिल चाहे लिख देना. यह क्या ! संसारमें विरक्तोका काम है ? यह तो सपत्नीकी लड़ाई जैसा हुआ. लहियाने कहा वह सच, और हम रुबरु बैठे थे वह झूठे, क्या बतावे ! यह वही कहलावत हुए कि-देवदत्त और यज्ञदत्त नामके दो मित्र एक समय एक स्थानकमें मिले. तब यज्ञदत्तने देवदत्तसे कहा कि-हमने सुना था तुम मर गये !-देवदत्त बोला मित्र ! यह कथन झूठ है, जब मत्स्य ही मैं तुमारे सामणे खम्हा हूं तो मर कैसे गया ? तो जी फिर यज्ञदत्त कहता है नही जी ! मेरेसे एक प्रमाणीक पुरुषने कहा है कि-देवदत्तजी मर गये, वस ! जैसा यज्ञदत्तका विश्वास देवदत्तके मत्स्यमें जी यही है कि प्रमाणीक पुरुषका वचन है मुनि धनविजयजीका जी तच्चत् विश्वास है कि लहियाने कहा है, परंतु ऐसा आग्रह करना ठीक नही, संभारी मनुष्य जी जो सज्जन जन है कुछ विषयको लिखने लगने है तो सोच समझ कर लिखते है, मुनि जनोको विशेष सोचना चाहिये; हम मुनि धनविजयजीसे ही पुछने है क्या ! शहर अमदावादमें हमारा तुमारा मिलना कभी नही होता था ? एक दूसरेको पुस्तककी चाहना होती थी तो नही देते लेते थे ? केई दफे पुस्तक देखनेको ले जाते थे, मुनिश्री विवेक सागरजी द्वारा खुद तुमने श्रीवासुपूज्य चरितकी प्रति मंगायी थी. फिर उन्हींके स्वर्गवास हुए पिछे तुमने पीछी जेजी थी-तो क्या ! धर्मसंग्रहकी प्रतिविषयक शंसय निवर्त्तन रुबरु मिलके नही किया गया ?

चतुर्थ स्तुति निर्णय ठेदन कुठारकी प्रस्तावनाके ( ६२ )में पृष्ठपर मुनि धनविजयजीने चतुर्थस्तुति निर्णय ग्रंथकी कितनीक अशुद्धियां बतलाकर पिठें गुरुप्रशस्तिके श्लोकोके ठंदोजंग और व्याकरण दोष दिखलाये है इसका समाधान यह है कि-ठापेकी अशुद्धिका ओलंजा ग्रंथ रचयिता को देना सार्थक नहीं, किसी जगह ग्रंथकी कोपी करनेवालेका हस्त वा दृष्टि दोष रह जाता है किसी जगह ठापनेवाले वा मुफमीट करनेवालेका रह जाता है, अलबते ! ग्रंथकर्त्तानि जो कोई काव्य वा गद्यरचना संस्कृतमे कीयी हो उसमें कोई व्याकरण ठंद दोष वगैरा वक्तव्यता रहजाती हो तो उसका ओलंजा जरूर ग्रंथ कर्त्ताको दे सकते है, (आपही अपनी अशुद्धियांको देखिये !)

[मुनिधन विजयजी रचित संस्कृत मंगलाचरण और गुरु प्रशस्तिके काव्योंका अशुद्धि प्रदर्शन नीचे मुजब.]

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारका प्रथम पृष्ठ, प्रथम वृत्तका पहला पद.

“श्रीअर्हं जिनवीरमीश्वरविभुं त्रैलोक्य चिंतामणिं”

श्रीअर्हं-यहां व्याकरणके नियमानुसार संधि होना चाहिये क्यौं कि-एक पदमें नित्यसंधि होती है (तथाहि) संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः नित्या समामे वाक्येतु सा विवक्षाम वेक्षते,-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके प्रथम पृष्ठपर दूसरे श्लोकका दूसरापद-“वीतरागं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते”-यहां उपासते बहुवचन और उसका कर्त्ता यः यह ठीक नहीं है जो

## १० त्रिस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

इसको यहां-येऽन्यदेवं-ऐसा पाठ करते तो क्रिया ठीक लगती, परंतु उत्तरार्द्धमे-स खरीं दोग्धि-यहां एक वचनसे पूर्वार्द्धमें जी एकवचन चाहिये.-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके प्रथम पृष्ठपर तिसरे श्लोकमे-“स्याद्वादनिति वीरं-प्रणिपत्य जगद्गुरुम्.”

स्याद्वादनिति वीरं-यहां सातवर्ण है इसलिये ठेदो जंग दोष हुआ. अनुष्टुपमे प्रत्येकपदके [८] वर्ण होते हैं.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७५] पर गुरु प्र-शस्तिके दूसरे वृत्तका तिसरा चरण,-“त्येवं वीरवचःप्रतापतरणिस्तीर्थं प्रवर्तिष्यति”-यहां प्रवर्तयिष्यति ऐसा चाहिये, क्योंकि एिच् विना वृत्तधातु अकर्मक है, उसका तीर्थ-कर्मके साथ संबंध नहीं हो सकता, और अकर्मक ही समझा जाय तो परस्पर-दमे इट् नहीं हो सकता.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७५] पर तिसरे वृत्तका चतुर्थचरण-“निग्रंथवीरुदमुशंति गणस्य मुज्ञाः”-वीरुद शब्द ह्रस्व चाहिये, गद्यपद्यमयी राजस्तुति विरुदमुच्यते-इति साहित्य दर्पणे.-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७६] पर ठेद वृत्तका चतुर्थचरण-“तन्नाम्नापि मुधर्मचंश्च इतियुत् मुज्ञाः समाचक्षते”-यहां युत्-शब्द व्याकरणके नियमानुसार अनन्वित और निष्प्रयोजन है.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६७६] पर आठमे

**त्रिस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर. ३१**

वृत्तका तिसरा चरण-“सर्वदेववपुषि निस्पृहस्ततः-यहां अंदोजंग दोष होता है, वर्णाधिक्य है।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए६] पर नवमे वृत्तका तिसरा चरण-“तेन गच्छगतपचमाहयं”-यहां आह्वयशब्द अगर गच्छका विशेषण रखे तो जी पुल्लिंग चाहिये, अगर स्वतंत्र रखे तो जी पुल्लिंग चाहिये, आह्वय-पु० आ × हे श । नामनिस-ज्ञायां प्राणिसाधने धुते च-इतिवचनात्।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए७] पर तेरहमे वृत्तका तिसरा चरण “गण एष दर्शान्वपक्षिणो”-आगे पृष्ठ (६ए८) पर अठारहमे वृत्तका तिसरा चरण-“कल्याणान्यस्त्रि-लजगज्जाने दधन्यो”-यहां दोनो चरणोंमें दधन् शब्द अशुद्ध है दधत् ऐसा होना चाहिये, क्योंकि-“नाभ्यस्ताञ्जतुः” इस सूत्र करके नुमका निषेध होता है।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ (६ए९) पर बारहमी पंक्तिमें निर्मायि-क्रियापदकी जगह निरमायि ऐसा होना चाहिये, क्योंकि-यहां अमागम होता है।

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारकी आद्यके पृष्ठपर जहां मुनिधनविजयजीने अपना और गुरुजीका नाम संस्कृतमें गुम्फित किया है-“क्रियाशुद्धयुपकारका अक्रवर्त्याचार्याः परमगुरुश्रीश्री १०८ श्री विजयराजेंद्रसूरिजीतन्त्रिष्यभ्यायचक्रवर्तिपरंपरानुगश्री युतपंमित मुनिधनविजयजीमहाराजविरचितः-इस वाक्यमें सूरिजी यह पद निर्विज्ञक्तिक हुवा-चाहिये, सविज्ञक्तिक, क्योंकि अक्रवर्त्याचार्याः इस पदका विशेष्य है, “जी”-पद कुछ संस्कृ-

३२ त्रिस्तुति बतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

तका नहीं जो बिचमे रखा गया. "चक्रवर्ती"-यह समासमें दीर्घ नहीं चाहिये, इन मृत्ययांत समासमे दीर्घ कैसे हो सकता है?

यह उपर लिखी हुई अधुष्टियां अगर सत्य है तो मुनि-धनविजयजी अपनी भूलको स्वीकार करे. लज्जित होनेका कुछ काम नहीं है, न अप्रसन्न होना चाहिये, क्योंकि-मनुष्य ही तो है भूलगये, हाथ ही तो है चूक गये, अगर असत्य है और इसके बारेमें कुछ लिखना पढ़ना चाहे तो प्रमाणीक लिखाणके साथ व्याकरण और उदःशास्त्रके कायदेसे जो कुछ वक्तृता लिखनी हो लिखे, उत्तर दिया जायगा, जैसे चतुर्थस्तुति निर्णय वेदन कुठारमें जगह जगह आत्मारामजीके नामपर कुवचनोकी दृष्टि और गाली प्रदान कीया है वैसा न करे, और, यदि इतने पर-जी वें गाली प्रदान करना चाहेंगे तो उनकी मरजी,

“ददतु ददतु गालीं गालीमंतो ज्वंतः

वयमपि तदज्ञावाद् गालीदानेऽप्यशक्ताः ”

इसी वचनपर हमारा मंतोष होगा, सच पूछो तो वास्तविक और उत्तमवात तो यही है कि-अपनी अधुष्टियांको जहां तो स्वीकार लो और जहांतो व्याकरण और उदः शास्त्रका प्रमाण देकर शुद्ध करो, वृथा शंखनाद करके शौर मचाना कोई लाज न होगा, महाशय ! अपने विश्वासीको समझाना सहज है एक दो बातोंके दृष्टांत देकर रफू करना यह जी सहज है, परंतु विद्वानों के सामने शास्त्रार्थके कायदेसे वाग विलास करना सहज नहीं, शिष्टाचारसे जो कुछ कहोगे लिखोगे सबको मान्य होगा. कुवचनबोलने स्त्री जनोको जी याद है इसीमें विद्वत्ता होती तो

संजीजन हमी समक पर चलते, देखिये ! गुरुप ओर जर्मनके अंग्रेज विद्वान् जब कोई प्रकारका विषय वा प्रबंध लिखते है तो वह उमदा शैलीसे लिखते है कि-हृदसे ज्यादा, क्या बतावें ! जो रीति आर्थोकी थी वह अनाथों कों मिल गयी, अगर इन अशुद्धियोंके बारेमें आप कहोगे जो हमने लिखा वह सत्य है तुम क्या जानो ज्ञाप्यमें और बने जैनैध्व्याकरणमें ऐसा ही लिखा है तो हम पहलेसे ही लाजवाप है, हमने ज्ञाप्य और ब-मा जैनैध्व नहीं पढ़ा, अगर कहोगें तुम सच्चा करो हम शास्त्रार्थ करनेको तयार है तो इसमें जी हम लाजबाय है, हमारा कोई हुकम नहीं चलता, जो सबको बुलाना जेजे, और न हमारे पास मरुधर-मालवा-गुजरातके सजी श्रावक लोग एक साथ आ-नकर हाजर होवे, महाशय ! यह तो सब रफू करनेकी बातें है, इनमें कोई लाज नहीं, अलवते ! आप न्यायचक्रवर्ती है आप उद्यम करे तो सब कुछ बन सकता है क्योंकि-चक्रके अधिष्ठा-यक देव सबको घेरकर लाशकते है और अन्यजी आपमें इतना विशेष है कि-आपने मंत्र आराधनजी किया है, आपके ग्रंथमें ( ६९९ ) पृष्ठपर दसमो पंक्तिमे लिखा है कि-“ गुरुमतान्तःपा-तिना धनविजयेन नाम्नाग्र गणिनामया कुवादिवाक्स्तम्भनम-न्वाराधनेन-” मैंने कुवादिओंकी वाणीको स्तंजन करनेका मंत्र आराधन किया है, अस्तु ! आपने आराधनजी किया होबा इसमे हम उजर नहीं करते, परंतु तर्क करनेवाले कह सकते है कि-मुनि धनविजयजी कुवादिओंकी वाणी अगर स्तंजन कर सकते है तो क्या ! अपनी अशुद्ध वाणीको स्तंजन न कर स-

३४ त्रिस्तुति मतानुरागी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

के, !-हम तो यहां विशेषकुछ नहीं कह सकते हैं मंत्र आराधन करना और उसके अधिष्ठायक देवको अपने वशमें लाना, सहजकी बात नहीं. जो मनुष्य मंत्राधिष्ठायक देवोंकी स्तुतिका निषेध करे उनको देव प्रसन्न होनाजी मुश्किल है, जब आपके लिखे कुवचन सज्जानोंके सामने वाचे जाते हैं तो उन्होके मुखसे यही वाक्य निकसता हैकि-यह लिखाण ठीक नहीं किया, अगर आपका आशय यह होकि तुमारे गुरुजीने भी तो हमको कुवचन लिखे है हमक्या ! न लिखे ? इसके उत्तरमें न्यायतों यही कहता है कुवचन लिखने उनको जी उचित नहिं थे, अगर उन्होने लिखें और तुम न लिखते तो तुम्हीको यश आता, एकने किया सोही दूसरेने करना यह कांइ व्याप्ति नहीं. अगर कहोगे जो तुमने झथुधियां निकाली है वह वास्तविक नहीं, कुछ मुश्किलार्थकी बात कहते तो ठीक, तब फिर वही बात आ जायगी कि-किसी समय एक अध्यापकने अपने शिष्यसे पूछा गंगाजलं=और गुरु जक्तिः=पदोंका विग्रह कहो, तो शिष्यने उत्तर दियाकि-महाराज ! कुछ कठिन बात पुछिये, यह तो बहुत सहज है गङ्गास्प जलं=गङ्गाजलं-गुरुस्प जक्तिः=गुरुजक्तिः-इसमे मुश्किलार्थकी बात ही क्या है ? यह सुनकर अध्यापकको बहुत खेद हुआ, ऐसा न किजीयेगा.

आगे आपने अपने ग्रंथके [६३] मे पृष्ठपर आत्मारामजीकी बनाई गुरु प्रशस्तिके श्लोको के [२] उंदोभंग दोष बताये है, प्रथमतो-“ तपागळे जगच्छे, जझिरे बुधिशालिनः,-श्रीमन्मा विजयारूपा, गुरुवः संयमे रताः-इसमें तिसरे चरणका उछा वलो

दीर्घ चाहिये, ह्रस्व है इसलिये उंदोजंग दोष निकाला, दूसरा श्लोक-यस्य धर्मोपदेशेन, निर्मलेन कति जनाः, -सम्यक्तं लेजिरे साधु धर्मं च लेजिरे कति, इसमे दूसरे पदका उठा वर्ण दीर्घ चाहिये, ह्रस्व है इसलिये यहांजी उंदोजंग दोष निकाला,-

[ इसका उत्तर. ]

महाशय ! अनुपवृत्तके जेदोमें कितने नित्य और कितने अनित्य, इसका विचार करना प्रथम आवश्यक कीय है, अगर श्रुतबोधमें दिखलाये भेदको ही एकांत नित्य मानलिया जावे तो फिर त्रिषष्टिशिलाका पुरुषचरित और अमरकोश आदि अनुष्टुप् वृत्त बद्ध केइ ग्रंथ रचयिताओंने यह नियम नित्य क्यों नहीं रखा ? त्रिषष्टिशिलाका पुरुष चरितमें आद्यके अनुष्टुप् वृत्त जिसको हम तुम सकलार्हन् स्तोत्र कहने है इसीमे देखिये !

दूसरे वृत्तका प्रथम चरण-"नामकृतिः स्वयंजावैः"--

आठमे वृत्तका तिसरा चरण-"अन्तरङ्गारिमथने"-

नवमे वृत्तका तिसरा चरण-"नमश्चतुर्वर्णसंघ"-

ग्यारहमे वृत्तका तिसरा चरण-"अचिंत्यमहात्म्यनिधिः"

तेरहमें वृत्तका तिसरा चरण-"निःश्रेयसश्रीरमणः"-

केवल तेरह वृत्तोंके ही देखनेपर आपके धारणे मुजब पांच जगह उंदोजंग दोष हुवा, उठा वर्ण सब पदोमे ह्रस्व है.

अमरकोशके पाचमे वृत्तका पहलाचरण-"त्रिलिंग्यांत्रिष्विति पदं"

,, उठे वृत्तका प्रथम चरण-"स्वरव्ययं स्वर्गनाकः"-

,, उठे वृत्तका तिसरा चरण "सुरलोको द्योदिवौ द्वे"-

,, सातमे वृत्तका तिसरा चरण-"सुपर्वाणः सुमनसः"-



,, आठमे वृत्तका पहला चरण-“आदितेया दिविषदो”-  
 देखिये ! अमरकोशके आद्यमे केवल [८] वृत्तपर ही खयाल  
 किजीये, पांच जगह आपकी अपेक्षा उंदोजंग दोष हुआ, उछा  
 वर्ण ह्रस्व है, बतलाईये ! क्या ! हेमचंद्राचार्य और अमराचार्य  
 दोनो भूजगये ? उन्हांको अनुष्टुप्वृत्तके नित्यानित्य जेदोका जी  
 ज्ञान नहीं था क्या ?-महाशय ! न हेमचंद्राचार्यकी न अमरा-  
 चार्यकी और न आत्मारामजीकी कियोंकी भूल नहीं है, यह  
 तो आपकी इर्षाका एक नमूना है, उनियामें किसीने किसी त-  
 रह आत्मारामजीको लोग बुरा और अणपद समझे, यह आ-  
 पका आशय है, परंतु उनिया आदर्श है इस में जो जैसा है आप  
 ही आप दिख पमता है, कहने सुननेकी कुछ जरूरत नहीं रहती,  
 अगर आपने इस नियमका नित्य ही माना है तो बतलाईये आपही  
 इसपर क्यों न चले ? खयाल किजीये आपके ही बनाये गुरु प्रस्तिके  
 वृत्तोंमें चतुर्थस्तुतिर्णय वेदन कुठार ग्रंथके [६९९] पृष्ठपर यह जो  
 अनुष्टुप्वृत्त लिखा है-“तच्चिपतोऽभुन्यायचक्र वार्त्तिविरुद्धधारकः  
 श्रीमद्भोमः गणकुश्रविजयो गणनायकः”-२२, इसमे आपने खुद  
 क्या रचना रची है ? आत्मारामजीकी दो वृत्तोंमें दो भूल आप-  
 ने निकाली और आपने वही भूल एक वृत्तमें दो रखदी, पहले  
 और तिसरे चरणके उछे वर्ण तर्फ दृष्टि दिजीये, दीर्घ है या  
 ह्रस्व है ? अगर ह्रस्व है तो आपने ही उंदोजंग दोष किया कि  
 नहीं ? आत्मारामजी न्यायान्जोनिधि है आप न्याय चक्रवर्ती  
 है, हमतो दोनोंको कुछ नहीं कह सकते, परंतु तर्क यह कह  
 रहा है कि-अंजोनिधिसं चक्रवर्ती अधिक शक्तिमान होता है,

उसको भूलना न चाहिये, दूसरी यह जी बात है कि-आत्मारामजीने मंत्र आराधन नहीं किया, आपने किया है फिर भूलना कैसे हुआ ?

चतुर्थस्तुति निर्णयके पृष्ठ (१७६) पर आत्मारामजी रचित गुरु प्रशस्तिके तिसरे वृत्तमें-“चंझा”-चौथमें-“झांता” और पांचमें वृत्तमें-“मयानंदविजयेन”-इतनी जगह परसवर्ण दोष निकाले हैं.

( इसका उत्तर. )

महाशय ! जो दक्षिण पथके विद्वान् हैं वे इस पर सवर्ण-रूप व्याकरणके नियमको व्यवहारिक वर्तणुकमें नित्य नहीं स्वीकार रखते हैं उत्तराखंडके विद्वान् रखते हैं, परंतु इसमें ज़ारो दोष नहीं गिनते, देखिये ! दक्षिणापथ बम्बई इलाकेकी जितनी उपी वा लिखी हुयी पुस्तक हैं उनमें यह परसवर्ण करनेकी शैली नित्य नहीं रखी है, उत्तराखंड के पुस्तकोमें बहुधा करके नित्य दिखती है, निदान ! इस बातको ज़ारी दोष नहीं गिनते, इतने परभी आपको विशेष आग्रह था तो आप अपने ग्रंथमें तो वह शैली नित्य रखते, क्यों उसको ठोस दी ? खयाल किजीये टाइटलपेजपर मंत्रज्ञ पद-इससे अगामी दूसरे पृष्ठपर श्लोक के तिसरे चरणमें किंचित् मंगलाचरणक प्रथमका-व्यमें-बंदितामैंछ-बंदे-आगे गद्यपाठमें दूसरी पंक्ति-प्रतिबंध-मंगल-मुपक्रमते-

चतुर्थ पंक्तिमें-परममंगल-अंतकी पंक्तिमें-काकदंत-दूसरे पृष्ठ-पर प्रथम पंक्तिमें-संबंधस्तु-तिसरी पंक्तिमें-केषांचिद्-चतुर्थपंक्तिमें

## ३० श्रीस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

ग्रंथ:-गुरुप्रशस्ति के काव्योंमें पृष्ठ ( ६७५ ) पर तिसरी पंक्तिमें करीब:-

चतुर्थपंक्तिमें-पंच और इसके अगामी पूर्णाहुतीतक इसी परसवर्ण दोष संबंधी निगाह करे तो (१७) दोष और इसमें मौजूद है कहांतक लिख बतावे, इसमें यही कहना ठीक है कि- आप अपनी गुरु प्रशस्तिमें तज्ज्ञासकर लिजीये, (१७) संख्यासे एक जी कम रहजावे तां हमको ओलंभा दिजीये, मुनिजी! दूसरेको कहना सहज है आप उस राह चलना सहज नहीं.

आगे फिर आपने चतुर्थस्तुति निर्णयके [१७६] पृष्ठ पाचमे वृत्तके तिसरे चरणमें [गुम्फित] संबंधी ठापकी अशुद्धि आत्मा-रामजीको दीयो है परंतु यह ठीक नहीं, प्रस्तावअनोक्त [५१] में पृष्ठपर आपने अपने ग्रंथमें लिखा है कि आत्मारामजीके उपाये हुवे सजी ग्रंथमेंसे अगर अशुद्धियां निकाली जावे तो एक छोटासा ग्रंथ जितनी संख्या बने, परंतु हम इन सब बातोंको सार्थक नहीं समझते, क्या आपके एक ही ग्रंथकी अशुद्धियां कोई व्यर्थ समय गमानेवाला शरुश अन्वेषण करे तो क्या कोईजी न निकलेगी? क्या [१७७] संस्कृत पाकृत पाठोंका अर्थ आपने किया है वह सब अन्वय सहित किया है? इनमें कोई शब्दाशुद्धि-अर्थाशुद्धि और अनुवादाशुद्धि नहीं है इसके उत्तरमें कहोगे होती तो लिखके बतलाते नहीं? मलाशय ! इसमें कोई असली तत्व नहीं निकलेगा, जो वास्तविक तत्व है समालोचना उसकी करनी ठीक है,

श्रीस्तुति मत्तानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर. ३९

समीक्षक-मुनिधनविजयजीने शुद्धिपत्र अलग बनाया है उसमें तुमारी निकाली हुयी अशुद्धियांको शुद्ध जो तो किया है,

उत्तर-हमने जो अशुद्धियां निकाली हैं उनमेंसे केवल स्याद्वाद निधि-को जगह स्याद्वादस्य निधि-दिखलाया है परंतु और अशुद्धियांके विषयमें कुछ नहि लिखा, गुरु प्रशस्तिमें युत् इस जगह यत् बतलाया है परंतु यह जी सान्त्वय नहीं है, असल बात तो यह है कि-जो संस्कृत रचना मुनिधनविजयजी अपनी रची बतलाते हैं उसमें आद्यके तीन वृत्ततो साधारण रचनावाले होनेसे स्यात् उनके बनाये हुं हो तो नानही, परंतु और रचना तो अन्य किसी पंक्तिकी रची हुई है और अपने नामसे रफू कियी गई है, क्यों कि-मुनिधनविजयजीकी यह शक्ति नहि, दो वर्ष पहले जब हम और मुनि धनविजयजी शहर अमदावादमें थे, तब शंठ. दलपतजार्डके स्थानपर एक समय ऐसा हुवा कि-मुनि श्री प्रमोदविजयजी-मुनिश्री धीरविजयजी-मुनिश्री कांतिविजयजी-हम-और मुनिश्री मोहनलालजी-यही मुनिश्री धनविजयजी,-और यतिजी पं० पद्मसागरजी वगैरा सब एकत्र मिले थे, बातों ज्ञानगोष्ठीकी होती थी तब मुनि धनविजयजीसें निम्न लिखित-“ बटो ! जिज्ञा मट गां चानय ”-एक सामान्य सारस्वत ग्रंथका वाक्य शुद्धपने उच्चारण न होशकाया, तो संस्कृत रचना रचनी कितनी बात ? इसमें मंत्राराधनका सहारा बतावे तो बतावो, अपने विश्वासी जनोको जो कहो सो ठीक.

जाह्नपद आसोज और कार्तिक मास बतीत होते सूत्रध्या-  
वश्यक (जो व्याख्यानमें वाचना थुरु था) प्रतिक्रमण अध्यय-  
नतक-और श्राद्धविधिग्रंथ संपूर्ण वाचा, सारे दिल्ली इलाकेकी  
मनुष्य गणना (६४३५१५) है, संवत् (१९३४) में यहां एक्कड़-  
म्पोरियल दर्बार हुआ तब हिंडुस्थानके सजी राजे यहां एकठे  
हुवे थे, -इस्तिनापुर तीर्थ यहांमें (३५) कोस दूर है, संवत् (१९४७)  
के मार्गशीर्ष वदी तोज रविवारको शहर दिल्लीमें आगरे तर्फ  
विहार किया, प्रथम मुकाम (४) बोंटे दादाजीकी बतरीमें किया,  
दूसरेदिन कुतुब (महरोली) कुतुबमें (६) कोस गुमगांव-गुमगांवसे  
[४] कोस गढो गढोमें (४) कोस फरखनगर मार्गशीर्ष वदी स-  
प्तमी बुधवारको पहुंचे.

फाल्गुन कृश्न (३) गुरुवार तारिख (२६) फेब्रुआरी सन (१८९१) की  
रात्रीको जो मनुष्य गणना (मर्दम समारी) हुयी इस समय मनोहरलाल ट-  
पालमास्तरने हमसे निम्न लिखित प्रश्न किये, (१) प्रश्न. आपका नाम क्या है?  
हमने उत्तर दिया (शांतिविजयजी,) (२) फिर प्रश्न किया, तुमारा धर्म क्या  
है? उत्तर जैन, (३) फिर पूछा तुमारे कौमका फिरका (धर्मकी शाखा) क्या  
है? उत्तर दिया श्वेतांबर, (४) फिर पूछा तुमागी जानि क्या है? हमने कहा  
जन्मके श्रावक ओशवाल, अब साधु संवेगी, (५) तुमारी कौमका शाखा (जा-  
तिकी शाखा) क्या है? हमने कहा तपागच्छ, (६) फिर हमसे पूछा आपकी  
उमर (अवस्था) कितनी है? हमने कहा (३३) वर्ष, (७) फिर पूछा जन्ममें  
आज तक आपका विवाह हुना या नहीं? हमने कहा नहीं हुवा, फिर पूछा  
आपके माता पिताकी बोली क्या है? हमने कहा गुजराती, (८) फिर उसने  
पूछा आपका जन्म किस जीलेमें हुवा? हमने कहा राजधानी भावनगर गु-  
जरातमें, (९) फिर पूछा तुमारा गुजारा (आ जीवका) क्या है? हमने कहा  
भिक्षा, (११) फिर पूछा कुछ लिख पद जानते हो? हमने कहा हा। जा-

ग्रंथ वाचना शुरू किया, श्वेतांबर श्रावकोका एक जी घर यहाँ नहीं. हुंदियेलोग व्याख्यानमे नहीं आतेथे. सब दिगंबर श्रावक लोग आते थे.

फाल्गुन कृश्न (३) गुरुवार तारिख (२६) फेब्रुआरी सन (१८९१) की रात्रीको जो मनुष्य गणना (मर्दम समारी) हुयी इस समय मनोहरलाल ट-पालमास्तरने हमसे निम्न लिखित प्रश्न किये. (१) प्रश्न. आपका नाम क्या है? हमने उत्तर दिया (शांतिविजयजी). (२) फिर प्रश्न किया, तुमारा धर्म क्या है? उत्तर जैन. (३) फिर पूछा तुमारे कौमका फिरका (धर्मकी शाखा) क्या है? उत्तर दिया श्वेतांबर. (४) फिर पूछा तुमारी जाति क्या है? हमने कहा जन्मके श्रावक ओशवाल, अब साधु संवेगी. (५) तुमारी कौमकी शाखा (जातिकी शाखा) क्या है? हमने कहा तपागच्छ. (६) फिर हमने पूछा आपकी उमर (अवस्था) किननी है? हमने कहा (३३) वर्ष. (७) फिर पूछा जन्मसे आज तक आपका विवाह हुवा या नहीं? हमने कहा नहीं हुवा, फिर पूछा आपके माता पिताकी बोली क्या है? हमने कहा गुजराती. (८) फिर उसने पूछा आपका जन्म किस जिलेमें हुवा? हमने कहा राजधानी भावनगर गुजरातमें. (९) फिर पूछा तुमारा गुजाग (आजीवका) क्या है? हमने कहा शिक्षा. (१०) फिर पूछा कुछ लिख पढ़ जानते हो? हमने कहा हा! जानते हैं, (११) फिर पूछा विशेष क्या लिख पढ़ जानते हो? हमने कहा संस्कृत और प्राकृत. (१२) फिर उसने हमको देखकर कहा बस! खैर! तब हमने पूछा क्यों? क्या बात है? उसने कहा यह किताबमें एक खाना और है जीसमें हम जन्मके बावले-भूंगे-बहेरे-कोठीको यदि हो तो लिख लेते हैं सो यहाँ कोई ऐसा है नहीं इस लिये नहीं लिखा सो खैर.

वैशाखवदी [३] चंडवारके रोज यहाँ हमकों (श्वेतांबरन्या-यांकुश) नामका एक पुस्तक एक महाशयसें मिला, यह शिला-यंत्रसें मुद्रित हुवा एक ओटासा चोपानीयाकी बतौर समजो. इसके रचयिता दिगंबर धुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदासजी हैं. मुनि

श्रीमान् ज्वरेसागरजी जो हमारे समुदायके गीतार्थ साधु है उन्होंनेका रचा हुआ (केशरीयाजी तीर्थका वृत्तांत) पुस्तक जो जावनगर जैनधर्म प्रसारक सज्जाने संवत् [१९४३] में उपवाया है उसका यह खंमन है. इसमें उक्त धुल्लक धर्मदासजीने श्वेतांबरी धर्मपर बहोत कुछ वक्तृता कीयी है और तर्कपर तर्कें लिखी हैं. इसकी समीक्षा करनी उचित समझकर यहां इसके बारेमें कुछ लिखते हैं, पाठकगण ! हम यहां जो कुछ लिखेंगे केवल धुल्लक धर्मदासजीके लेखकाही उत्तर लिखेंगे अन्य किसी मनुष्यके खेदका कारण हमारा लिखाण न होगा. जैसे धुल्लक धर्मदासजीने श्वेतांबरीके विषय कटुक वचनोंकी वृष्टि कीयी है यदि हमजी इसी प्रकार उत्तर देवे तो—“शठं प्रति शठं कुर्यात्”—के अतिरिक्त कोई लाज नही, किंतु जैसे सकल संघ श्वेतांबरीको धर्मदासजीका लिखाण अप्रिय हुआ है दिगंबर लोगोंको हमारा जी होजाय, परंतु हमारा किसीके दिल डखाना वा धर्मभेदनेका अजिप्राय नही. संयम ग्रहण किये. पिछें जो हमको देशाटन करनेकी आवश्यकता हुयी तो देश देशांतरके अनेक स्वमत परमतके विघ्नानोंसें वचनालाप ज्ञानगोष्ठी हुयी. जिसमें दिगंबर आमनायके जी अनेक विघ्नानोंसें मिलना हुआ. परंतु धुल्लक धर्मदासजीके सदृश हमने किसीको व्यर्थ परहृपाती नही देखा.

अब हम उक्त श्वेतांबरीन्यायांकुश ग्रंथका संपूर्ण लिखाण यहां क्रमसें लिखकर उसके नीचे अपनी तर्फसें उत्तर लिखते जायेंगे. यद्यपि इसमें अनेक अशुद्धियां है परंतु केवल विषय संबंधी ही समीक्षा (उत्तर) लिखेंगे और अशुद्धियांको पाठक रुंद

के अब लोकनार्थ ज्युंका त्यूं नकल कर देयगें. जिस पारिव्राज-  
की आदिमे [क्षु.] ऐसा लिखा देखो उतना लेख उक्त सुल्लक-  
जीकाजानना, जहां [ह] ऐसा लिखा देखो हमारा जहां (अ)  
ऐसा लिखा देखो किसी अन्य पुरुषका जानना. यह एक हमने  
अपनी समस्याके चिन्ह बताये है.

( उक्त सुल्लकजीके लेखकी नकल. )

(क्षु.)—श्वेतांबर न्यांकुश.

पत्र प्रथमप्रारंजः

मातृ मिति संवत् १९४४ आषाढ कृश्ण १३ रविवारके दिवस लिखितं  
नाम मात्र सुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास,—आजके रोज सोलापुरसें डाकके द्वारा  
श्वेतांबरके—“श्रीकेशरीयाजी तीर्थनो वृत्तांत”—नामक पुस्तक, बहुरी गीतम  
मोतीचंद रचित मासिक पुस्तक, अर्थात् दोय पुस्तक डाकके द्वारा हमको प्राप्त  
हुवा. उसमें श्वेतांबरके केशरीयाजीनो वृत्तांत, श्वेतांबरी कल्पित लिखता है,  
कारण पूर्वापर विरोध महित वचन उस पुस्तकमें है.

(हमारी तरफसें समीक्षा). [उत्तर]-

(ह.) प्रथम तो श्वेतांबर न्यांकुश लिखना ही सार्थक नहीं.  
इसरा हम ब्रह्मचारी उसी मनुष्यको ममजते है जो अव्यवान्  
होकर स्त्रीका समागम मिलते हुवे न बांड़े.और त्यागी हो जाय.  
जिस मनुष्यको निर्धनताके कारण स्त्रीका समागम न हो सके  
तो उस संबंधी संसारकी यही कहलावत ठीक यचतो हे कि ‘नि  
र्धन माया त्यागी, त्रिया विना बेरागी’-सुल्लकजीको जो पुस्तक.  
वा. पत्र. केशरीयाजी तीर्थ सबधी मिला उसमें कोई पूर्वापर वि  
रोध नहीं है. और जो उनको दिखलाई दियाथा तो धार्य



लिख देते कि-अमूक अमूक पूर्वापर विरोध है, क्योंकि बहुधा शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ पढ़ने वालोंकी समझमें तो आवे नहीं और वह अपनी बुद्धिद्वारा उसको ड़षित कह देते हैं. जैसे संस्कृतमें वदन मुखकों कहते हैं और फारसीमें संपूर्ण शरीरकों. सो जिसने केवल संस्कृत पढ़ी हो, वा फारसी पढ़ी हो, वह इसरी ज़ाषाके कविका सारांश नहीं जान शकेगा. जैसे किसी फारसी कविने लिखा कि-मेरा वदन साढे तीन हाथ लंबा है, तो संस्कृतका जाननेवाला उसकों जूठा समजेगा, परंतु वस्तुतः उसकी समझका हो फेर है, फारसी कविका दोष नहीं है.

( ध्रु. )—नाम—प्रकार १ लो. तीर्थनी उत्पत्ति. मुनो स्वेतांबरी हो. तुम कही तीर्थ उत्पत्ति सो उत्पत्तिको साक्षीदार काण है. तुम कहोगे इमारा सूत्र सिद्धांत है, तो हम कहोगे के तुमारा सूत्र सिद्धांतको साक्षीदार कोन है. इसरा तुमारा सिद्धांतकी सबके प्रमाणमें आती नहीं. जो बात सबके प्रमाणमें आवे नहीं वो बात सत्य नहीं, किंतु कल्पित है. तुम कहोगे कि हमारी सिद्धांत सूत्रकी बात सबके प्रमाणमें केसी नहीं आती. उत्तर-मुनु, सबके प्रमाणमें आती तो सब ही स्वेतांबरी हो जाने. अर्थात् जैन. वैश्रव. बौध. नैयायकक. मीमांसक. चार्वाक. पातंजलादिकका भेद नहीं रहता.

सफेद कपड़ा धारण करे सो स्वेतांबरी, रक्त कपड़ा धारण करे सो रक्तांबरी-इत्यादि समझना गुत्र रेशम आदिका वस्त्र रहित होय सो दिगंबर, अर्थात् जिसके वस्त्र नहीं सो नग्न, अकृत्रिम स्वयंसिद्ध है. आगमका प्रमाण देता हू समझ लेना.

[ काव्य—]

\* मांजीदंडकमंडलुप्रभृतयो नोलांछनो ब्रह्मणो,  
रुद्रस्यापि जटाकपालमुकुटं कापिनस्त्रिद्वंगांगना,  
विष्णुश्चक्रगदादिशस्त्रमतुलंबुद्धस्य रक्तांबरं,  
नम्रपद्मनिवादिनोजगरिदंर्जनैर्ब्रमुद्रांकितं, १ ,

\* काव्यकीऽशुद्धियां. (१) मांजी. २ लांछन. ३ स्रद्धांगना. ४ विष्णोः ५ पश्यत.

इस काव्यमें स्पष्ट प्रसिद्धि नम्रपणा अकृत्रिम स्वयंसिद्ध मालूम होता है. करिये खंडन नम्रके प्रथम कोण है.

[ उत्तर, ] ( ह. ) भुल्लकजी अकृत्रिम तीर्थ वह है जैसे सिद्धाचल, रैवताचल, सम्मेतशिषर, चंपापुरी, और पावापुरी, आदि, परंतु केशरीआजी तीर्थका नामकेवल प्रतिमाजीके चमत्कारी और प्रजाधिक होनेके कारण पमा है सो जिस आम्नायकी यह प्रतिमा है उसी आम्नायका यह तीर्थ जी है इसमें आगम प्रमाणकी कोई आवश्यकता नहीं. लौकिक किम्बदंतियों संसारमें प्रसिद्ध है और प्रतिमाजीके उपर कोई चिन्ह दिगंबर दृष्टगोचर नहीं होता, अथवा किसी दिगंबराचार्यका नामतक जी नहीं, फिर आप जो लिखते हो कि-तुमारा आगम प्रमाण सर्वोपरि स्वीकृत नहीं हो शक्ता तो क्या. जो काव्य आपने अकलंक स्तोत्र दिगांबराचार्य रचितसें १२-मी लिखी उसको हम या हमारे आम्नायी श्वेतांबर श्रावक-अथवा अन्यमति मान सकते हैं ?-यह आपने वही कहलावत कर दीयी कि-“अपने बैर भीठे अन्यके खट्टे,”-इस प्रमाणसेतो आपका स्वयंसिद्ध नम्रनपना स्वीकृत नहीं हो सकता. इस आपके लिखाणमें कोई शास्त्रोक्तयुक्ति नहीं है. अब आगे चलकर आपको मालूम होजायगा कि-जिसको आप प्रथम नम्र कहते हो उसके प्रथम कोन है ? वास्तवमें तो जिसको आप प्रथम नम्र मानते हो उससे पहले उसके माता पिता विद्यमान हैं;-

( ध्रु. )-तुम लिखि के केशरीआजी श्वेतांबरीका तीर्थ है. सो ऐसा तुम्हारा लिखना बालकवत् है. क्योंकि तीर्थ उसकू कहते हैं. जिनसें तरिये, अ-

## ३६ दिगंबर मुत्तक भर्मदासजीकी तर्कका उत्तर.

यात् जैसे नौकामै जहाजमै बैठता है सो तरता है. तैसेही श्री केशरीआजीकी पूजा, ध्यान, जाप, आराधना करे उसका भला होता है. क्या दिगंबरी श्री केशरीआजीका ध्यान, सुमरण, जाप, केसरका विलेपन लगावेतो क्या दिगंबरीका भला नहीं होगा ? अर्थात् जरूर भला होगा. फिर तुम तुमारा ही तीर्थ कैसे मानते हो. येह तुमारा मानना भरमकाहे जैसे श्री गंगाजीका जलको कलस भरकर लेय ब्राह्मणतो आपणै मानता है. के यह जलमेरा है. शुद्रादिकभी तद्वतहि जलका कलस भरभर आपणा आपणा मानता है. विचार कियेसं देखिये तो जल किसिकाभी नहीं. जलतो श्रीगंगार्जाका है. ज्यादा विचार कहिये तो जलका जल है. तदन्याय श्रीकेशरीआजी फकत तुमारा ही तीर्थ नहीं. ममणा ये समज तुम लोकोकी मिथ्यादृष्टनाकी है.

(ह०)-केशरीयाजी तीर्थ जो प्रतिमाजीके चमत्कारी होनेसे प्रसिद्ध हुवा है वह प्रतिमा श्वेतांबर आम्नायकी है इस लीये दिगंबरीयोंका उसमें क्या संबंध है, ?-हम यह नहीं कहते है कि-जो दिगंबरी मनुष्यजी उक्त प्रतिमाजीका पूजा, ध्यान, आराधना करे उसका जला न हो. जला तो होवे ही होवे. और हमारा तो यही निश्चय है कि-अवश्य जला हो. परंतु दिगंबरी लोक श्वेतांबर आम्नायकी प्रतिमामें छेपनाव रखते है तो क्या! इस चमत्कारी प्रतिमाके जयसे ही इसको अपना तीर्थ मानने लगे !-देखो ! जब और श्वेतांबर प्रतिमामें तुम रुकते हो तो श्री केशरीआजीसें जी यह हठ मत करो कि-यह तो हमारा ही तीर्थ है. और जो गंगाजलका प्रमाण देते हो इस विषयमें आपको अन्य दिगंबरीयोसें सम्मति करलेनी चाहिये. क्योंकि इस लीखाणसें तुमने श्री केशरीयाजी तीर्थको ही सबका नहीं किंतु और अन्य कुदेव आदिक चमत्कारीकों जी अपनी तरफ खींच लीया. ऐसा अजिमाय आपहीका हो तो हो. अन्य दिगंबरीका

नही है, इस लिखाणसें ज्ञानवान् स्वतः विचार लेंगे कि-स्वदे-  
वको जेम्कर परदेवपर दावा करना सम्पक् दृष्टिका काम है.  
या. मिथ्या दृष्टिका, ?

(धु.)—लौकिकमे वो धन्य है जो के अंधाकू नेत्र सहित कर देता हैं  
ओ धन्य है. श्वेतांबरी लोगोका देव मूर्तिके चांदी सुवर्णका नेत्र चक्षु लगाते हैं.  
इससे सफा जाहीर होता हैं के श्वेतांबरी बड़ा है. श्वेतांबरीकी देवमूर्ति हिन है.  
क्योकि—अंधाकू नेत्र देता है ओ श्रेष्ठ है. ऐसे तुमारी देवमूर्ति अंधी है ! उसको  
तुम नेत्र लगाते हो. दिगंबर पक्षका श्रावक लोगोकी देवमूर्तिके नेत्र जैसा  
द्रव्यकी प्रतिमा होय तिस ही द्रव्यमयी तिस द्रव्यसें तल्लीन जैसे हाथ, पाव, आंगु-  
लिका आकार मूर्तिका होता है. तद्वन् धातु पाषाणसे तनमयी नेत्र चक्षु  
होता है. इस न्यायसें यह बात साबन होती है. के श्री केशरीआ नाथकी मूर्ति  
श्रीमत् जैन दिगंबर आमन्याकी पूर्व प्राचीन है.

(ह.)—“लौकिकमें वह धन्य है जो के अंधाकू नेत्र सहित  
कर देता है” ऐसेऐसे लिखाणोंसें आपकी उत्तम विद्वानता ऊ-  
लक रही है, जब प्रतिमा नही बनीथी तो केवल धातु या पा-  
षाण ही था. जिसने संपूर्ण अंगोपांग बनाये उसका कुछ दोष न  
समजकर केवल हमारे चक्षु आपको व्यथा दाता हुवे, सो यह अपने  
अपने कर्मानुसार योग्यता अयोग्यता है इसमें और कोई क्या करे, ?  
तुमने देवमूर्तिको अंधी, हीन, इत्यादि कुवचन लिखे इसका उ-  
त्तर हम प्रतिमाजी संबंधी देना अच्छा नही समजते, क्योकि-जैसा  
आपने श्वेतांबरोका अंतःकरण उःखित करनेको कुवचन लिखे  
ऐसा लिखाण विद्वानोको योग्य नही है, विक्रम संवत् [८००] से  
पहलेकी श्वेतांबर, दिगंबर, दोनुं प्रतिमामें विशेष जेद नही था. अब  
जो अधिक जेद परु गया है यह हठ धर्मी और पक्ष पातीयोंने  
पामा है. श्री केशरीआजीकी प्रतिमा श्वेतांबर होनेमें कोई शका

रकी शंका नही, यदि यह प्रतिमा दिगंबरी होती तो उसका अधिष्ठाता देव केवल केशरहीसें तुष्ट होता, लाखों रुपैयाँ के आभूषण क्यों धारण करने देता, ! केवल अष्ट ख्यकी पूजा ही मान लेता. परंतु प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि जब श्वेतांबरी लोक अंगीयां धारण करके पूजन करते है तो जैसा आनंद और हर्ष उस समय उत्पन्न होता है दिगंबरीयोकी पूजा समय नही दिखता.

(श्रु.)-बहुरी हे श्वेतांबरी हो तुम लिखी संवत् १३९ के सालसें दिगंबरी मत निकला है सो यह तुम कोण ग्रंथके प्रमाणसें लिखते हो. यह तुमारा के-हना किसके प्रमाण में आवेगा. क्योंके नगन के प्रथम क्या है. इसकू स्थापन करो ताके पिछे तुम बोलना के श्वेतांबरी प्रथम है. कारण दिगंबर पक्षमे शंकराचार्य भी है. जो के आगे तुमारा मतका आमरचंद जती जो के आमरकोष्ठ बणायो. उसका शास्त्र, पोथी, पुस्तक, जयके द्वारा शंकराचार्य उस जतीका ग्रंथ पुस्तक सर्व श्री गंगाजीमें डबोदिया. बिचार करो तुम तुमारा माका पेटमेंसे यो-नीद्वारा निकले तब कोणसा रसमका, कोणसा सूत्रका कपडा सहित आये बे ? अर्थात् इससें भी येही साबत होती है के तुम लोग भी अवलनम दिगंबरी थे पिछे काल दोषसें तुम नम दिगंबरका प्रति पक्षी हो गये. वास्ते सर्व भेष स्वा-मके प्रथम यो नम्रपना अकृत्रिम स्वयंसिद्ध है. तब कोनती मिति संवत् था. जुड़ी लिख दिनी. १३९ संवत् मे नम दिगंबर हूवा ये बात तुम जुड़ी लिख दिनी.-

( ४७ ) भुलकजी लिखते है कि-तुम किस प्रमाणसे संवत् [१३९] की सालमें दिगंबर मत निकला सिद्ध करोगे सो यह प्रमाण प्रथमतो हमारे श्वेतांबराचार्योंने अपने अनेक अनेक ग्रंथोंमें लिखा, ( इसरा ) यह प्रसिद्ध प्रमाण है कि-श्री महावीर स्वा-मीकों मोक्ष पधायें आजतक ( २४१७ ) वर्ष हुये, और दयानंद सरस्वती अपने बनाये सत्यार्थ प्रकाशमें लिखता है कि-शंकराचा-

र्यकों [११००] से अधिक वर्ष हुवे. और तुमारे लिखनेसें बह सिद्ध होता है कि-शंकराचार्यका अमरचंद यतिसें वाद हुवा तो इससे यह सिद्ध हुवाकि-उस समयजी श्वेतांबर मत प्रबल था. जबकि दिगंबर शास्त्रोंमें अंगपाठी श्रुत केवली मुनियोंका विचरना लिखा है, परंतु वास्तवमेंतों दयानंद सरस्वतीका और आपका दोनों लिखाण सत्य नहीं है, क्योंकि-अमरकोशका कर्त्ता अमराचार्य जैनी नहीं था, किंतु बौद्ध था. और उसके समय शंकराचार्य नहीं हुए. श्री हेमचंद्राचार्यसें कुमारपाल राजाके समय शंकराचार्यका वाद विवाद हुवा, जिसमें जैन धर्मकी जय हुई. यह अन्यमतिजी स्वीकार करते हैं. और यह तुमारी बहुत बड़ी भूल है जो शंकराचार्यों तुम दिगंबर पक्षमें लेते हो. वह तो वाम मत प्रवर्त्तक था. यद्यपि तुमारी दिगंबर शाखा हमारी श्वेतांबर आम्नायसें पृथक् है, परंतु अन्यमतियोंके विचारमें जब हम तुम एक समजे जाते हैं तो हमको महान् कष्ट हम बातपर होता है कि-केवल तुम ही अपनी लेखनीद्वारा वाममत प्रवर्त्तकको अपना कहते हो.—

हमने देवगुरुकी कृपा और देशाटनके करनेसें स्वमत परमत और विशेषकर श्वेतांबर दिगंबर आम्नायके अछे अछे प्रमाणीक शास्त्र देखे, और दिगंबर आम्नायके अनेक विद्वान् पंडितोंसें मीलनाजी हुवा, परंतु जैसा आप लिखते हैं कि-शंकराचार्य दिगंबर पक्षमें है ऐसा न किसी शास्त्रमें देखा और न किसीसें सुना, और तुमारे लिखने में कोई प्रमाण इस विषयका नहीं है कि-किसी श्वेतांबर आचार्यके ग्रंथ पुस्तक शंकराचार्यने गंगामें डबोये. यदि कोई प्रमाण था तो अवश्य लिखनाथा. बिना प्रमाण कोई लेख लिखना यह विद्वानोंका काम नहीं. तु-

मने लिखा विचार करो-“तुम तुमारी माका पेटमेंसें योनिद्वारा निकले तब कोणसा रसमका, कोणसा सूत्रका कपमा सहित आये थे,”-सो धुल्लकजी ! आपहीतो कहिये जब आपने जन्म लियाथा तो क्या जो चदर आप ओढ रहे हो यह तुमारे संगे-थी, ? और मलुम होता है कि कमरुलु जी हाथहीमें होगा, क्यों कि ऐसा न होता तो आप हमपर ऐसा तर्क न करते, और विशेष क्या कहे ! दिगंबर आम्नायकी आर्यका ( साध्वी ) कों एक वस्त्र ( सामी ) रखनेका अधिकार है सो वहजो शाय ही लेकर जन्म लेती होगी, !-इस लिखनेमें तुमारा दिगंबर मत सिद्ध नहीं होता, जिस नग्रपनेकों तुम स्वयं सिद्ध अकृत्रिम समजे हुए हो वह तुमारे शास्त्रानुकूल स्वीकृत नहीं है, यह केवल तुमारी ही भूल है. क्योंकि जन्म समयकी नग्र अवस्था ज्ञान सहित नहीं है. क्या कोइ तुममें पुढे कि-एक पुरुष निज तरुण कन्याकों आप नग्र होकर उसकोंजी नग्र करके गोंदीमें वेठावे तो क्या यह योग्य है ?-और नॉदनीक नहीं है ? सो किम लीयेकि-वह ज्ञानवान् है तो ऐसा क्यों करता है ?-जिम बालकको विषय वासनाका ज्ञान नहीं है उसका ही नग्र रहना स्वीकृत है, ज्ञान वंतका नहीं. और संवत् ( १३९ ) में दिगंबर मत निकला हम जो लिखते है आप हीके लिये लिखते है. प्रगट है कि-महा-वीरके पिढे ( ६०९ ) वर्ष के बाद शिवभूति मुनिने दिगंबर मत निकाला.

(धुं)—और तुम लिखा के जैन दिगंबर पक्षके केत्ताक तेरापंथी आ-वकलोकर्म केसर लगी प्रतिमावा दर्शन पूजन नहीं करते है. सोही आपका लिखना सत्य है. जैसें तुमों श्वेतांबरके भीतर धूडिया तेरापंथी उत्पन्न हुवा तद्वत ही जैन दिगंबरके पक्षके आवक मंडलीमें तेरापंथी उत्पन्न हुवा है.

कोई शुद्रादिक यवन आदि उन लोकोंसें बुजे के तुम कौन धर्मवाले हो. तब वह लोक बोलते हैं की हमतो तेरापंथ वाले हैं. तब शुद्रादिक श्रवण करके चक्रत चित्त हो जाते हैं के येतो हमारे धर्मवाले तो नाहीं. फिरसें बोलता है के हम तेरापंथ वाले हैं. इत्यादि चिभ्रम विसंवाद. और मुनु जिस तुम कहते हो के जैन सो जैन तीनसें तियालाम राजका घनाकार येह लोक हैं. और इस लोकसें इतरसो अलोक सोही तुम विचार करो. इस लोकालोकमें कोण द्रव्य, कोण क्षेत्र, कोण काल, कोण भाव, कोण ठिकाणो जैन नहीं है. अरु कोण द्रव्य, कोण क्षेत्र, कोण काल, कोण भाव, कोण ठिकाणो जैन हैं. इस दोय प्रश्नमेंसे एक बात स्थापन करो.

(हं.)—भुल्लकजी लिखते हैं जैसें श्वेतांबरमेंसें दुंदीया तेरापंथी उत्पन्न हुवे इसी प्रकार दिगंबरसें दिगंबर तेरापंथी निकले हैं. इस विषयमें हमकों अपनी समीक्षा करनेकी कोई आवश्यकता नहीं. आगे चलकर इस विषयमें जो कुछ भुल्लकजीकों उत्तर\* दिगंबरी तेरापंथी श्रावकोंने दिया है सो देख लेना.

(हुं.)—तुम लिखा के श्रीमनसुव्रत स्वामीके वागमै गवण हुवा. जिसकी बनाइ हुइ केमरांआर्जाकी प्रतिमा हैं. बहुगै श्रीमनसुव्रतस्वामीका वारा था तब सवत कोणमा था? जैसें आब इस वर्त्तमानमें संवत १९४४ बरतता है. तैसें मन सुव्रत स्वामीका समयमें कोणमा सवत था? इसका प्रमाण लिखो. बहुरी तुम लिखी के संवत १३९ साल में दिगंबरी मत उत्पन्न हुवा. तैमे ही तुमारा श्वेतांबर मत कोणसा संवत मितिमें उत्पन्न हुवा. तुम कहोंगे अनादिकालका है. तो हमभी सत्यार्थ कहोंगे के नम दिगंबर अनादिकालका है. तुम कहोंगे अनादिकालका कैसाहै? इसका समाधान तो उपर लिख चुके हैं. के माताका पेटमेंसे निकलना है तब वल्ल रहित निकलता है. इसमें माषीद होता है के नम दिगंबर अनादिकालका है.

मुनो श्वेतांबरी हो तुम लोक ओघा, मुपटी, धोली चादर, लकड़ी, हातमें धारण करी जिसमितिसे तुम श्वेतांबरी कवाये. जिस मितिमें तुम ओघा, मुपटी, धोली चदर, धारण करी तब कोणसा संवत मितिथी? तुम तुमारा माके पेटमेंसे

\* यह दिगंबरी तेरापंथी श्रावकोंका लेख आगे आता है.



निकले तबतो धोली चदर, मुपटी, नही था. पिछे धारण किया सो धारण को-  
ण मित्ती संवतमें कीया था.—“नम्र आवे, नम्र जावे, नम्र करे कछोल; जो नम-  
की निंदा करे, सोही डावा डोल”—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, येह  
छ द्रव्य है. तुमारे सूत्रोमेभी है. इस द्रव्यमें सुफेद कपडा सहित स्वेतांबरी को-  
ण है. छ हु द्रव्य. अग्नि उष्णतावत् एक है के सूर्य अंधारावत् अलग अलग है.  
विचार करो. छ हु द्रव्य अनादिकालका स्वयंसिद्ध अकृत्रिम जैसाका तैसा है.  
नामे सफेद कपडा सहित स्वेतांबरी कोण है? जैसे तुमलोक अपने मूसें कहते  
थन इत्यादि प्रकार तुा ह्मारी बेटी, आ ह्मारी लुगई, आ ह्मारा बाप, आ ह्मारा  
कहते हो के केसरियाजी आरग मल, आ ह्मारा मुत्र, आ ह्मारा गांव, आ ह्मारा  
ह्मारा है के तुम तीर्थका है इत्यादि विचार केम तुम लोक विना विचारसें  
धोली चदर, पुस्तक आदि ये स्वेतांबरी है के तुम स्वेतांबरी. तीर्थ तु-  
पटी, धोली चदर, आदिका मेल अग्नि उष्णतावत् एक है, के तुम ह्मारा, पात्रा,  
धोली चदर आदिका सूर्य अंधाराका सा अंतर है. प्रथम तुम हुये के मुपटी;  
धोली चदर, आदि हुये? अर्थात् तुम और मुपटी, धोली चदर, संग संग ही हुये!—

हमकूतो प्रत्यक्षं प्रतीति ये आंती हैं के तुमारी मुपटी, धोली चदर, औ-  
घा, पात्रा, लकड़ी आदि इनकू कोई अभीमें जलादेवे तो तुम जलनेका नही.  
तुम मुपटीकू धोली चदर आदिकू जानते हो. बहुरी मुपटी, धोली चदर, ये  
जब पदार्थ तुमकू जानते नही. वास्ते जैसा तुम हो तैसा येह मुपटी, धोली च-  
दर आदिक नही. बहुरी जैसी धोली चदरादिक तैसा तुम नही. तुमहारा और  
मुपटी, धोली चदर आदिका अग्नि उष्णतावत् एक स्वरूप, एक लक्षण, एक द्र-  
व्य, एक भाव, एक काल नही. तुम अरु मुपटी धोली चदरादिक अलग अलग  
हो. कहो विचार करो. तुमे स्वेतांबरी हो के यह मुपटी धोली चदरादिक स्वे-  
तांबरी है. विचार करो विवाद मत करो.

(हं.)-भुज्जकजी पुठते है कि-“श्री मुनि सुव्रत स्वामीके समय  
रावण हुवा जिसकी चराई श्री केशरियाजीकी प्रतिमा है सो उस  
समय कोन संवत् था,?—जैसा कि अत्र (१९४४) संवत् चलता है”-

बाह ! क्षुल्लकजी, !-धन्य है, इसी विघटतापर पुस्तक लिखनेका साहसकिया ! बीसमे तीर्थकर मुनिसुव्रतस्वामी मल्लिनाथ और नमिनाथके अंतरमें हुवे. मुनिसुव्रतस्वामीके शासनमें रावण हुवा. उसने यह मूर्ति बनायी. मुनिसुव्रतस्वामीसे आजतकके वर्ष कल्पसूत्रमें लिखे है. काढकर गिन लो वही संवत् था. जो पुत्र, माता पिताके जीवते उत्पन्न होता है उसको इस प्रमाणकी क्या आवश्यकता है कि-मैं किसका पुत्र हु, ?-यह आवश्यकता तो उसी मनुष्यों होती है कि-जिसके माता पिता विद्यमान न हों जब हम लिखते है कि-दिगंबर मत संवत् [१३९] में उत्पन्न हुवा तो तुमारा यह पुठनाजी समुचित नही है कि-श्वेतांबर मत किस समयमें निकला. आप विचार करो ! मनुष्य जन्मलेकर जब बाल्य अवस्थाको ओम्ता है तो बस्त्र धारण करता है, यह अनादि कालकी रीति है या नही ! और जो कहेंगे है तो फिर सोचो ! किसका पट्ट सिद्ध होता है. ?-यदि तुम अपने दिगंबर आम्नायके किसी ग्रंथमें जी यह लेख दिखला दो कि-जन्मसे मरण पर्यंत मनुष्यों नग्न रहेना ही कहा है तो हम तुमारा प्रमाण मान लेवेंगे. परंतु ऐसा नही है. जिनकल्प मुद्धा श्वेतांबर आम्नायमें जी मानी है ( जो अब काल दोष और संहनने दोषसे विवेद है ) उस मुद्धाके धारी साधु मुनिराज संसारी जी-वोंसे जिन विचरते थे. और जिसको तुम जन्मकी अपेक्षा दिगंबर सिद्ध करते हो यदि वही दिगंबर मान लीया जाय तो संसारके संपूर्ण व्यवहार व्यर्थ हो जाय. क्योंकि जब माताके पेट-से ही दिगंबरी उत्पन्न हुए तो गुरु आम्नाय वा शास्त्र पठन पठनकी कोई आवश्यकता ही नही रही. और संसारका संपूर्ण व्यवहार ज्ञानमें समजा जाय. सो ऐसा कहना आकाश पुष्प और बंध्यापुत्रके विवाह तुल्य है,-

भुल्लकजी लिखते हैं “अधौघा, मुपटी, धोली चदर, लकमी हाथमें कोणसी मिती, किस संवत्में धारण करी ?-और तुमारी माताके पेटमें निकले तब धोली चदर, मुपटी नहीं था, पीछे धारण करा. सो धारण कोणसी मिती संवत्में करा था” ?-

(भुल्लकजीका प्रश्न.) (पद्य.) नम्र आवे नम्र आवे, नम्र करे कडोल;

जो नम्रकी निंदा करे, सोही डावा डोल, ?.

(हमारा उत्तर.) (पद्य.)-जन्म समय अब्जानी होवे, वापकर्म कडोक,

मरण समयके कष्ट घनेरे, समज सोचका बोल, ?.

जन्मकी अपेक्षा चदर, मुख वस्त्रिकाका उत्तरतो उपर लिख आये, परंतु इतना अवसर पाय विशेष लिखते हैं कि-अनादिका-लमें जो प्रवर्तन चलता है उसका कोई संवत् मिती नहीं होता.

संवत् मिती नवीन वस्तुकी होती है. भुल्लकजी बारंबार एक शब्दको उच्चारण करते हैं कि-नम्र, नम्र, नम्र.-यह नहीं विचारते हैं कि-इसका अर्थ एक समान सब जगें नहीं होता, देखो जब बालक जन्म लेता है वह नम्र दशा उसकी विषय वासना ज्ञान रहित है, और जब तरुण अवस्थामें विषय विकार सेवन करता है वह नग्न दशा पाप विकार युत है, और यह कर्मजी गुप्त स्थान होता है. और जब मरण समय आता है उस मरने वाले मनुष्यके जाव विचित्र होने हैं, परंतु वस्त्र तो उस वस्त्रजी शरीरके साथ रहते हैं, सब जगह एक नम्र, नम्र, ही पुकारते रहना विचारशील पुरुषोंका काम नहीं. (यहां एक दृष्टांत है.)

एक मनुष्यने एक तोता पाला, और उसे (इसमें क्या शक है?) यह वाक्य सीखा दिया. पिंजरेमें घालकर बाजारमें बेचनेको आया. ग्राहकने तोतेके मालिकको पूछा कि-तोतेको माल क्या लेओगे? मालिक बोला सोरूपया लूंगा. झूठ हो तो तोतेमें पूछ लो. ग्राहकने तोतेमें पूछा. क्यों रे ! तोता ! तूं मो रूपयेका है. तोतेने उत्तर

दिया [इसमें क्या शक है?]-ग्राहकने बन्नी खुशीके साथ सो रुपया देकर तोता खरीद लिया, मनमें विचारता है तोता बन्ना इजानी है. रस्तमें तोतेसे पूछता है क्यों गंगाराम ! तुमसे हमको बहोत लाभ होगा ? तोतेने कहा [इसमें क्या शक है?] ग्राहकने घरले-जाकर रख दिया. रोज अच्छी अच्छी चीज खोलाता रहा. कितनेक रोजके बाद ग्राहकने तांतेसे पूछा-तो क्यों जी गंगाराम ! इतने दिवस हुये तुमने हमको कुछ लाभ नहीं दिवाया सो क्या ! चुपके ही रहोंगे ?-तब तोतेने वही कह दिया ( इसमें क्या शक है ? )-फिर मालक बोला तो क्या ! हमारे रुपये डूब गए ?-फिर तोता बोला (इसमें क्या शक है ? ) फिर मालक बोला तेरा बेचनेवाला कोई पाषंमी ठग ही था ! तोतेने जो याद था फिर कह दिया [ इसमें क्या शक है ! ] इस दृष्टांतका सारांश यह है कि-जैसे तोतेके एक शब्दने उसके ग्राहकको डःख दिया उक्त क्षुल्लकजीके नम्र, नम्र पुकारनेको जो बिना ज्ञान धारण करेगा सो ठगाया जायगा. क्योंकि नग्न शब्दका अर्थ सब जगें एक सार नहीं हो सकता. और नग्न नग्न सब एकजी नहीं हो सकते.-

क्षुल्लकजी लिखते हैं-“पट्ट द्रव्यमें श्वेतांबरी कोन है,”-यह कितनी बन्नी भूल है, ! इस लिखनेसे हम नहीं समजते, उनका तात्पर्य क्या है, ? क्योंकि पट्टद्रव्यमें त्रिन्न त्रैलोक्यमें कोई पदार्थ नहीं है, ओर यह हमारा बेटा, यह हमारी बेटी, यह हमारी लुगाई. यह हमारा बाप, खाना, पिना, मलमूत्र, गांव, धन, इत्यादि श्वेतांबरी लोक नहीं बोलते, जैसा संसारी जीवोंका व्यवहार है तैसा सबका है, इससे क्षुल्लकजीने क्या सिद्ध किया ?-कंशरीयाजी तीर्थ हम प्रथम जी लिख आये है कि-जो जाव सहित पूजे, आरा-

वे उसका है. और उसका पूजक आराधक है, सोही केशरीया-  
जी तीर्थका है. परं यह तीर्थ उन मनुष्योंका नहीं है जो श्वेतां-  
वर आम्नायकी अन्य प्रतिमाओंसे जिन्न रहते है जैसे तुम.-

और हमारी चदर पुस्तकादि विशे पुछा कि-“तुमारा वेष  
श्वेतांबरी है या तुम श्वेतांबरी हो !” सो हम तुमसे ही पुछते है  
कि-भुल्लक बह्मचारी तुम हो ?-या तुमारा आत्मा, ? और धर्म-  
दासजी नाम तुमारा है ? कि तुमारा आत्माका, ? तुमारा जन्म  
प्रथम हुवाकि तुमारा आत्माका ?-और तुमकों जीवते या मरने  
पर अग्निसें संस्कार कियाजाय तो तुम जी जलनेके नहीं.  
इसी प्रकार हमकों जी समज लो.-यह बर्क तुमारी बालकवत्  
है. बुद्धिमानोके प्रमाण योग्य नहीं. परंतु हम क्या करे प्रथम  
जब तुमने ही लिखा तो हमको जी तछत् ही लिखना पमा.

(धु.)—ये तो हमकूभी मालूम है के जैन दिगंबर आमनायका श्रावक  
मंडलीमें केताक तेरापंथी नामकमध्ये ऐमा अबोध जन है के जैन दिगंबर प्र-  
तिमाके चरण उपर सुगंध पुष्प केसर विलेपन होय तो वह लोक उममूर्त्तिका  
दर्शन पूजन वंदन नहीं करते. अर्थात् आस्त्रयादिकका वह लोक योनादिक  
तो प्रेम भावसे देखते हैं. परंतु फिका भावसेभी केसर चर्चित प्रतिमाका द-  
र्शन नहीं करने. तब श्वेतांबरी मंदिरमें—तो वह तेरापंथी नामक भ्रष्ट लोक  
किस वास्ते जावेगा. ऐमा इस काल दोपसं जैन दिगंबर आमनायका श्रावक  
मंडलीमें केताक ऐमा अबोध जन भी है. इस प्रमाणकी अबोध बुद्धि आपलोक  
न रखियेगा. यहमेरी लघुता ग्रहण कारण:—

(है.)—भुल्लकजीने तेरापंथी दिगंबर श्रावकों पर जो आ-  
क्रमण किया था उसका उत्तर पंमित ऊरगदलाल बलदेवदास  
आदिने सुजानगढ़ जिल्ला विकानेरके द्वितीय सभा पत्रमें उपवाया  
है, जो मुरादाबादके गुलजार अहमदी यंत्रालयमें श्रावणमास  
संवत् १९४५, में पृष्ठ ११, से १६, तक निम्न लिखित ढपा है.

(अ.) (वदनगर मालवा प्रश्नोत्तर) —

भुल्लक धर्मदास और पंमित ऊरगदलाज बखदेवदासजी आदिकें श्रीमज्झिमेइ चंडके मतानुजाई यथार्थ वस्तुके ज्ञाता सज्जनों-कों प्रगट होवै की नाम मात्र भुल्लक धर्मदासकी पत्रिका देश माजवे वदनगर गाममे आई और आपके वहांजी आई होगी इसमे जिस तरहसे धर्मविरुद्ध समाचार थे तिस पत्रिका उत्तर इस तरहसे लिखा गया है सो आप यथार्थ ज्ञातानकों प्रगट करते है.

१. प्रथम तो हमने उनसे यह पूछा की नाम तो भुल्लक और आचरण यह सो यह जेब कोनसे मतके अनुसार धारण किया ! अगर जो कहोंगे कि जिनमतके अनुसार धारण किया तो हम यह पूछते हैं कि जिनमतमें तो भुल्लक ऐसा नाम झारमी प्रति-माके पहले जेदका है और उसका आचरण करनेवाले तो खंम वल्ल मात्र परिग्रह और शुद्ध दोष टाल मुनिवत् परचर आहारकों जाने है और तुम तो ख्वा इकठा करके आरंजादिक करते हो और डमरोंको आरंज आदिकका उपदेश देते हो सो ये काय शास्त्रविरुद्ध और जिन आज्ञा जंगको लिये हुये हैं और आज्ञा जंगोंको अनंतमसारो जगवानने कहा है इस हेतु हैं तो तुम मिथ्या जेषो हो सो तुमारी पत्रि हमारे मान्य नही ह-सरे तुम्हारी पत्रिकामें जितनी बातें तुमने लिखा है सो सब श्री मज्झिमेइके मतसे प्रतिकूल अर्थात् विरुद्ध लिखी है उसके नि-षेधके अर्थ और जोले जीवोंके मन न बहकनेके अर्थ उत्तर लिखा है सो एक तो यह है;

१. इसरे उनने यह लिखा की जैनमतमे दोय पद है एक दिगम्बर इसरा स्वेतांबर तिसका उत्तर ऐसा लिखाकि यहकहना तो जिनको दो नेत्र भ्रष्ट नए हो तिनका है तुमारा जी एक नेत्र भ्रष्ट नया हुवा सुणाहै इसरातो कायम है अगर वो जी भ्रष्ट होगया होवे तो मालूम नहीं यह वचन कठोर है सो माफ करना इस लिखनेका मतलब यह है की स्वेताम्बरोको तो संसय मिथ्याती शास्त्रोंमे जगैं जगैं आचार्योंने वर्णन किये है सोही कहा है ( ईंदोविय संसेयो ) ऐसा पद है सो जिनमत बाह्यकों तुमने जिननमतमे माना इस हेतुसे जी तुम जिनमत बाह्य हो.-

२. तीसरे उनने यह लिखा है कि तुम तेरापंथी ऐसा ह-मको लिखते हो सो तुम मेरे पंथी नहीं ऐसा व्यंग लिखा है तिसका उत्तर इस तरहसे दियाकी जो श्री जैनधर्मके श्रद्धानी है सो तो नेम करके दर्शन ज्ञान चारित्र भ्रष्ट ऐसे तुम सो तुम्हारे पंथी कैसे होय श्रद्धानीतां तेरेप्रकारचारित्रके धारक ऐसे जिनेंछ मुनेंछ तिनके पंथसे है तिसवास्ते तेरहपंथी कहलाते है-यह तेरापंथी सब्द कुदेव, कुगुरु, कुधर्मका, निषेधवाचक है ताँ सत्यार्थ धर्म प्रवर्तने वालोंका नाम तेरापंथी है और उसमें यह लिखा है की तेरै प्रकारके चारित्रको धारे वे तेरहपंथी होते हे सो तुमतो हिंस्यादिक वा कषायादिकमे प्रवर्तते हो तुम तेरह पंथी कैसे: इसका उत्तर दियाकी कल्याणतो कषायोंका जितना अंस अज्ञाव होवैगा तितना अंस ही होवैगा परंतु इस लिपिसे तेरहपंथी नामका अज्ञाव नहीं हुवा सोचो. अर्थात् विचारोंके जिनके उः संम पृथ्वीका राज्य और उपानवैं हजार रानी तिनकोंजी दिगं-

वरी कहे और अवारजी नाना परिग्रह आरंज करी सहित गृह-  
स्थ श्रावण दिगंवरी कहलाते है सो भविष्य है जो दिगंबर मुख  
धरनसे दिगंवरी कहलाते तो चक्रवर्त्त नारायण बलज्जघ काम  
देव मंडलेस्वरादिक कोईजी दिगंवरी नहि कहलाते परंतु वे सब  
कहलाते हैं तैस ही तेरहपंथी जानने. ऐसैं अपनी कषायें पुष्ट  
करनको खोटा अर्थ करना योग्य नहीं इसका फल सर्वज्ञाने नि-  
गोद कहा है जरा जय रखवो क्यों कुपहु करकैं निजपर  
कोम बोते हो.-

४. चौथे उन्हे यह लिखा की तुम तेरहपंथी तो कहलाते  
हो और विषयजोग सेवना योनादिकका अवलोकन स्पर्श  
करते हो सो तुम महापापी हो ऐसा अपभ्रंस शब्द लिखा है  
तिसका उत्तर ऐसैं दिया की जो अतिलुब्धता करके विषयादि-  
कका भेवन करते है तिनके पाप बंध होता है लेकिन महापापी  
तो मिथ्यादृष्टि प्रतिज्ञा जंग करनेवाले और धर्मके आश्रित आ-  
जीवकाके करनेवालोंको कहा है और योनादिक अवलोकन  
करनेवाले महापापी है तो तुमारे पिताने तुम्हारी माताका योनि  
आदि अवलोकन या स्पर्शनादि नहि किया मालूम पड़ता है  
तुम्हारी उत्पत्ति किसी और हीसे है सो तुमारेही लिखनेसे मालूम  
होती है अगर जो कहोगोकी हमारे पिताने किया तो तुम महा-  
पापीकी अवलाद उहरे ऐसी ऐसी कुजुगते बनाबनाकर ज्ञांछे  
जीवोंको क्यों मबोते हो जरा नर्क निगोदादिकका जय रख  
छःस तुम ही को भुक्तना पड़ेगा;—



५. पांचवे उसने यह लिखा कि केशरलगे प्रतिबिंब अवलोकनका तो त्याग करते हो और गोवरादिक अवलोकनका त्याग नहीं करते हो तिसका उत्तर यह दिया है कि हमारे तो जिनेंछजगवानके मतमें वस्त्र, भूषण, गंधमाल्यादिक परिग्रह सहित तथा राग द्वेष ज्ञयादिक वर्द्धक प्रतिबिंब पूज्य नहीं. फकत निरावरण निर्धिकार निर्दूषण जिनेंछ सदृश बीतराग ज्ञावकी वर्द्धक जिनेंछकी आज्ञा प्रमाण जिनबिंब पूज्य है और जो इसकी अधिक चर्चा करना होतो शास्त्रोंका प्रमाण लेकर इन्दोर तथा बदनगरमें हाजिर होना तुमको सर्वज्ञ मतके अनुसार उचर दिया जावेगा.

६. ठठे, उनको यह लिखा है कि तुम चर्चा बगेराहकी पुस्तक उपाकरके जैन ग्रंथोंका अधिनय किया सो यह तुमने बनी छष्टता करी इसका फल अक्षरके अनंतवे ज्ञाग ज्ञान धारककी अवगाहना पावोगे,-

७. सातवे अब १. सिष्या हितकारी तुमको देतेहै तुम सिष्या देनेके लायक पात्र तो नहीं हो सोही कहाहै-श्लोकः हितोपदेशं मुख्याणां प्रकोपाय नशांतये. पयःपानं भुजंगानां केवलं विष वर्धनं, १, परंतु जैन धर्मियोंका चित्त करुणारसकर सदा काल आश्रित रहता है तिस कारणसे तुमको लिखते है कि ऐसी धर्मछोहकी बातें करोगे तो तुम्हारे हकमें बहुत बुरा होवेगा बिचारी पहलेजी इसी अपराधसे दो चार जगें तुम्हारा अपमान हुआ है एकतो देश मालवेमें धार नगरमें प्रतिष्ठा हुई तब हमारे साम्हने तुमको सत्पार्थ ज्ञातानकी सज्जामेसे ज्ञागना पन्ना, छसरे

उत्पत्तिजीसें तुमने धर्म विरुद्ध चरचा करी तद-दिह्यी मंमलमेसे निकाले गये ऐसे. २ तुम्हारे अपमान तुमको याद नही जिनको अपमान हिताहितका विचार नहि तिनको यादा लिखना व्यर्थ है॥ इस रीतिसे उसकी चिठीका उत्तर दिया गया है और आप साधर्मियोंसे जो हमारी यह प्रार्थना है की एमे कुधर्मनको सिद्धा रूपी दंड दिया करें सो आयंदेसे धर्मविरुद्ध चरचा नही करें-इति शुद्ध मिति मार्ग सोर्ष सुद्ध ७ संवत् १९४४ भृगुवार, ॥-

(है. —इस तेरापंथीयोंके लेखमें अशुद्धियोंके अतिरिक्त पद्यपि अनेक ऐसे कुवचन जरे है जो विद्वानोंके लिखने योग्य नहीं. परंतु हम क्या करे? जब भुल्लकजीने ही एमे शब्द लिखे जो अकथनीय है तो यह विचारे आवश्यक तद्वत् लिखेतो आश्चर्य ही क्या है, ?-विद्वानोंकी यह रीति नही है किकिसी मनुष्यकों-अनंत संसारी, मिथ्याज्ञेयी, दो नेत्रभ्रष्ट, तुमरा एक नेत्र भ्रष्ट, तुम जिनमत बाह्य हो, दर्शन ज्ञान चारित्र भ्रष्ट, कषाय पुष्टकर नेकों खोटा अर्थ करना, तुमारी उत्पत्ति किसी औरही से है, महापापीको ओलाद, डःख तुमहीकों भुक्तना पड़ेगा, बन्नी छष्टता करी, -इत्यादि निज लेखनो द्वारा लिखे. वा. मुखसेंजो कहै. परंतु क्यों न हो, ! भुल्लकजीके दिगंबर पदके ही तो आवश्यक है. कहे ही कहै;—

इसी लेखमें निम्न लिखित वाक्यजी समीक्षा करने योग्य है “भेतांबरोको तो संशय मिथ्याती शास्त्रोंमें जगे जगे आचार्यों-ने वर्नन किये है सो ही कहा है कि-ईदो वियसंसेयो;”—

यह लिखना हमारे संबंधी है और अप्रमाणिक और मिथ्या है. बिना आधार कोई वचन लिखना अल्पज्ञताका चिन्ह है. परंतु जिस धर्मदासजी भुल्लूकने दिल्लीमें संवत् १९३० के लगभग पूर्ण दिगंबरी श्रावकोंमें चतुर्मासा करके अपना इतना मान्य कराया जो हम समयमें अन्य पुरुषका होना कठिन है, और जिस धर्मदासजीकों तेरापंथी और विशपंथी दोनों प्रकारके दिगंबरीयोंने आचार्य करके माना, और उनके चरणोंकी रजकों निजमस्तकसें हठाया, आज उनही धर्मदासजीकों जब तेरापंथीयोंने उपर लिखे हुए अनेक कुवचन कहे तो यदी एक दो कुवचन हमकोंजी कह दिये तो कुछ हर्ज नहीं. क्योंकि हमतो जिन ही हैं. और जो उन कुवचनोंका उत्तर लिखा जावे अनेक दिगंबरीयोंका चित्त व्याकुल हो, इहां हमकों भुल्लूकजीका ही उत्तर देना अजिष्ट है. फिर अन्य मनुष्योंको प्रतिपक्षी करनेमें कोई लाज नहीं है. हा ! इतनातो अवश्य लिखेंगे कि-जो सूत्र दिगंबरी तेरापंथीयोंने उपर लिखा है सो सार्थक और प्रमाणिक नहीं है. क्योंकि जिस धर्मदासजीकी उन्होंने पूर्वोक्त मान बढ़ाई प्रतिष्ठा बढ़ाई थी तब तो क्या उनमें गुण था ?-और जब निंदा बापी तब क्या अवगुण होगया था ?-यह विदित न हुआ.

(क्षु.)—यह मेरी लघुता ग्रहण करणा. क्यौ के दिगंबर पक्कवाले श्रावक और स्वेतांबर पक्कवाले दोनु श्रावक मंडलीमें कोई जीव सम्पत्त सहित दान पूजा, जीवदया, पंच परमेष्टीका जाप्य नाम पापक्रियाका त्याग, चोरी, हिंसा, कुसील, जुवा, मांस, मद्य, बेवया, इत्यादि पाप, अपराध, राग, वैषादिकका जो कोई

त्याग करेगो उसीका जला होगा. मेरी समजतो येती है. जादा समज मेरी मेरे जीतर चंद्र चांदणीवत्, सूर्यकिरणवत्, अग्नि उष्णतावत् एक मेरी मेरे जीतर बुद्धि है सो है ही है. जिसकी निशाणी और सैदाणी क्या बताऊ. घायलकी गति घायल जाने, क्या जाने वैद्य विचारा. इति अलंब ॥

(ह.)—भुल्लकजी लिखते हैं कि “मेरी लघुता ग्रहण करणा” सो बने आश्चर्यकी बात है कि-रस कालमें कोई किसीका ऐश्वर्यजी सहन नहीं कर सकता तो लघुता क्यों कर ग्रहण हो सकती है, !-और आपने लिखा कि-“दिगंबरी श्वेतांबरी दोनु पक्षके श्रावक जो जाप दान पूजा जीव दया इत्यादि करेगा उसका जला होगा”-यह लिखना सर्वथा वृथा है. क्योंकि यदि दोनु पक्ष वीतराग प्रणीत एक ही मार्ग चलते हैं तो अंतर क्यों है ?-एकतो सम्यक्तवान् और एक मिथ्यान्वी कैसे हो सकते हैं, !-और अंतर है तो उत्तर दक्षिण जिन्न जिन्न मार्ग चलनेवाले एक स्थानपर क्योंकर पहुंच सकते हैं ?-इसमें जैसी आपकी समज आपके पास चंद्र चांदणीवत् सूर्य किरणवत् अग्नि उष्णतावत् है यह आप ही के पास रहे. हमको अथवा अन्यको उससे कोई लाज नहीं, क्योंकि जैसी तुमारी समज तुमारे पास ऐसी हमारी हमारे पास. और तुमने लिखा के:-

“ घायलकी गति घायलजाने, क्या जाने वैद्य विचारा ” सो जो मनुष्य अथुज कर्मरूपी-शस्त्रोंसे घायल हुवे हैं उनको सत्प स्याद्वाद जैनसिद्धांतरूपी ओषधी बहुत शिघ्र अच्छा कर देती है. भुल्लकजी ! आप ऐसा लिखते हो कि-“ क्या जाने वैद्य वि-

चारा " इसका तात्पर्य यह है कि तुमारे चित्तके भावकों कोई नहीं जानता. और जैन सिद्धांतका सारांश यह है कि-सिद्ध जगवान् अपने ज्ञानमें सर्वकाल सर्वदर्शी है. अब कहो ! तुमारा लिखना सत्य है या असत्य ?-यदी सत्यमानोंगे तो तुमारा जैन धर्मसें अविश्वासी होना सिद्ध होगा. और अविश्वासी सिद्ध हुवे तो जैन आमनायसें जिन रहोंगें. और जब जिन हुवे तो श्वेतांबरी रहे न दिगंबरी फिर बतलाइये आप किस गणनामें गिने जाओंगे, ?-

(क्षु.)-कोई सज्जन हमारे नाम कृपापत्र जेज्यो तो हमारा ठिकाना हम प्रमाणसे है. खानदेश जिह्वा धूलिया माक पर मेर मुकाम गांव कमुंवामे भुल्लक बह्मचारो धर्मदास. इस प्रमाणसे कोई सज्जन नाम पत्र जेज्यो तो शाखो बाजबोधी अहुरा-धारा भंजना. इति अञ्च. ( इति प्रथम जाग समाप्त. )-

( ह. )-भुल्लकजी लिखते है कि-" जो कोई सज्जन पुरुष हमारे नाम कृपापत्र भेजे तो अमूक ठिकाने अमूक पत्तेपर भंजे-"

यह बड़ा विजह्वा लेख है, क्यों कि प्रथमतो इस जीवका भैलोक्यमें कोई ठिकाना ही नहीं, जहां जहां यह जीव जन्म मरण करता है वह ठिकाना मुसाफरके रैनवशरेवत् है. और थव्य जीवकों ठिकाना तो परंपरा करके मोक्ष ही है. ( इसरा ) जब निजघर त्याग भुल्लकजी हुए तो किसका ठिकाना ? किसका घर ? और किसका पता ?-यदि नाम मात्र होवेभी तो गृहस्थी-कों संभवे है त्यागीको नहीं. हमारातो यही सिद्धांत है

उहा.

जब घर ठोमा आपणा-शिरके घाड़ें केश.

ममता माया त्यागके,-विचरें देशविदेश.

१

जब ऐसा विचार लिया तो किसका ठिकाना ? किसका देश ? किसका गृह ? और किसका परिवार ? किसका पुस्तक ? किसका चोपानीया ? किस्सें प्रीत ? और किस्सें वैर ? सब हो-सैं भिन्न रहकर निज आत्मकल्याण करना ही ठीक है, क्यों कि-यह जोव अकेला ही चोरासी लक्ष जीवयोनी और त्रिलो-कीमें भ्रमता रहता है, इसलिये ज्ञानवान्को किसी स्थान वा देश संबंधी निज ठिकानेका ममत्व नहीं रखना चाहिये. इसमें मुर्छा होनेसे \*परिग्रह दोष आता है.

(बुद्धकजीके लेखसें पाया जाता है कि इस प्रथम ज्ञागके अतिरिक्त वे कोई अन्यज्ञागत्री रचेंगे सो जब हमको इसके अन्यज्ञाग मिलते रहेंगे समीक्षा भी कीयी जायगी.)

(इतिअलं.)

इन दिनोंमें एक पत्र बम्बईसें जैनविद्याशालाके अध्यक्ष माणाभाइ उत्तमचंदने हमारे पास भेजा. यह शिलायंत्रका उपा हुवा इसमें आपनेवाले उपानेवाले दोनोंका नाम नहीं है. जिसको गुम्म चोछी कहते है सो यह है. नाम चाहे किसीका न हो परंतु इसका अंतिम लेखसें यह विदित होजाता है जिसने यह उपा-वाया है. अंतिम पंक्तिमें यह पद लिखा है कि-“धर्मका उद्योत

होगा."-इसका ध्वन्यर्थ समझ लीजिये, शुद्धक धर्मदासजी खुद अपना नाम प्रगट बतारहे हैं कि-हमने यह उपवाया. परंतु प्रगटपने नाम न लिखनेसें राज्यकी चौरी और राज्यघोही तो धर्मदासजी हो चूके. ऐसा करना उचित नहीं था. उचित यह है जो खेख लिखा करे उसमें नाम न छुपाया करे. श्वेतांबर न्यायांकुशमें तो लिखते हैं अमूक हमारा नाम-अमूक ठिकाना-अमूक पता-अमूक शिरनामसें पत्र देना, और यहां सबको उमा दिया. इसजगह कौनका मर था ? सो विदित न हुआ.

शुद्धक धर्मदासजी इस बिना नामकी जांहर खबरमें लिखते हैं कि-मैं बड़ा दिलगिर होकर कहता हूँ श्वेतांबर धर्ममें बड़ी पोल धस रही है. केइ तरहका दुंग करके केवल उगाइ शुरू कीयी है इसका कारण यह है कि-निःस्वामित्व धर्म है, अज्जी जैनमें कोई राजा नहीं, एक रुगनाथ नामा हुंढिया आत्माराम हुंढियेका चेला सो कज्जी तो यति बन जाता है, कज्जी पीत वस्त्र धारण कर लेता है, ऐसे नाना प्रकारके दुंग करके लोग लोगाइयांको ठगता है.-जगवान् विजय बुटेरायजीका शिष्य है सो ज्जी नाना प्रकारके वेषांतर बनाकर उगाई करता है. महात्मा ऊवेरचंद ताराचंद कटणी मोरुवामाका रहनेवाला ज्जी बन्नी उगाई करता है, संवत् [१७४५] में जलगांवमें इसने चौमासा किया था, और एक स्त्रीको भगाके ले गया था. फिर दोवर्षकी कैद भुगती, ऐसे ऐसे कपटीओंसें श्वेतांबर लोग बहोत राजी रहते हैं,-

[ इसका उत्तर. ]

शुद्धकजी लिखते हैं कि-श्वेतांबर धर्ममें बन्नी पोल और

ठगाई चलती है इसलीये मैं बन्ना दलगिर हु. यह उन्होंका दिलगिर होना सरासर व्यर्थ है. क्योंकि-धर्म जो है सनातन है. इसमें जले और बूरे दोनो प्रकारके शरूश रहते है भले सज्जन निष्कपट धर्म पालते है इतर जन इतर प्रकारसे पालते है और इसमें विघ्न होना भी कुछ नवीन नहीं. धर्मी और अधर्मी सदैव चले आते है. जैनी राजा न हुवा तो क्या हुवा ! जोराजोरी धर्मतो बहभो किसीसें नहीं करा सकता. अलबते ! जिस धर्ममें राजा हों उस धर्मकी उन्नति शोभा तो जरूर बढ़ सकती है उल कपट करनेवालोंको दंभभी दे सकता है, परंतु इससें क्या हुवा- अंतःकरणमें जो अधर्मी है वे कुछ राजाके हुकमसें धर्मी नहीं बनते, जैन धर्ममें जो आधूनीक पंथो ठगाई करते है यह भी नवीन प्रचार नहीं है. तीर्थकरोके विद्यमान होते भी (३६३) पावंरु चलते थे और जैनमें भिन्न प्रचार चलानेवाले चलाते ही थे जैसे मरिचि और गोशालाने मनमाना पंथ चलाया था. सब कोइ जैनी जानते है. फिर जो आजकल नवीन प्रचार चलता है इसमें आश्चर्य ही क्या !-रुगनाथ टुंडियेको आत्माराम टुंडियेका चेला लिखा यह भी जूठ है क्योंकि-आत्मारामजी टुंडिया है नहीं और जिस समय वे टुंडिये थे उस समयके गुरु वा चेलेसे उनका अब कोइ संबंध नहीं. फिर आत्मारामजीको रुगनाथसें क्या संबंध है, ? और असलमें रुगनाथ नामे कोई मनुष्य उनका शिष्य है ही नहीं. भगवान् विजय बुटेरायजीके शिष्य विषय और महात्मा ऊबेरचंद ताराचंद कटणी मोरुबामा विषयक लिखा अगर वह सत्यबात है तो भी सुल्लकजीको दिलगिर होनेका क्या प्रयोजन!



क्या ! दिलगिर होनेसे वे हठ जायगें ? बुटेरायजी हमारे गुरुके गुरु है उनके शिष्य प्रति शिष्य हम [१००] साधु अंदाजसे है. अगर इसमें एक दो विपरीत चलते हो तो इसका कोई क्या करे? जोराजोरीतो कोई किसीको रख नहीं सकता. जो जेसा करेगा आप भुगतेंगा. अगर क्षुल्लकजीको ऐसी बातेंपर दिलगिरी ही रहती है तो पहले अपने समुदायकी तलाश तो कर लेवे कि-दिगंबर आमनायमें मेरे जैसे दूसरे क्षुल्लकजी होकर क्या क्या कृत्य कर रहे हैं और पांभे लोग कैसाक चलन चल रहे हैं.

इन्हीं दिनोंमें एक महिनारोज जी नहीं हुआ है पंमित जीयालालजी बम्बई जाते समय वियावर अर्थात् नयाशहर गये थे. और शेष अमोलकचंद चंपालालके नवीन मंदिरमें दर्शन करनेको गये तो दरवजेमें एक मयूरपांछी और कमन्लु धरा देखा. और एक मनुष्य मलीन चदर ओढ़े मुख ढके हुआ हिल रहा था. दो चार मनुष्य जो निकटवर्त्ती थे उनसे पूछाकि- यह कौन है ? तो ऊत्तर मिला क्षुल्लकजी है और ध्यानमें बैठे हैं. यह सुनकर पंमित जीयालालजीने विचारा कि-चलो बाजार देख आवे, लोटते समय अवश्य मिलेंगे, क्या गप्पीबातहे कि-यह क्षुल्लक धर्मदासजी ही हो ! क्योंकि- उनके अतिरिक्त तो आजकल दिगंबर आमनायमें कोई क्षुल्लक ही नहीं है, जब बाजारसें दो तीन घंटे पीछे लोटकर आये तो दरवजेमें क्षुल्लकजी न मिले. पुछनेसे पता मिलाकि-मंदिरमें गये हैं. पंडित जीयालालजी जी मंदिरमें गये, और जोतर जाकर देखा तो एक चक्षुबिहीन पुरुष एक अन्य मनुष्यके कंधेपर चढ़ा पाया और यह चक्षुबिहीन पुरुष

जी फरुखनगरका ही रहनेवाला है. इसका नाम फरुखनगरमें-  
 “इयाला”-मसिद्ध है. अपनी तरुण अवस्थामें इस मनुष्यने अ-  
 पने आपको दयाराम एसा नाम मसिद्ध करके बहुधा जैनी मति  
 जहारक साधु श्रीपूज्य आदिको उगा, और एक जैन बंक खो-  
 ला था. अब जोजनमें जी तंग हुवा तो अंतसमय भुल्लक बना  
 है. परंतु कपट बुद्धिलगी हुई है. मंदिरमें शेर चंपालालजीसें  
 कह रहा था कि मैंने दो लक्ष रुपये इकठे करलिये है और वि-  
 शेष धन्यकी अवश्यकता है, पावागढका मंदिर तयार कराउंगा,  
 यह चरित देख कर पंमित जीयालालजी उलटे चल दिये. और  
 अपना मगट करना ठोक नहीं समझा, क्योंकि-उक्त चक्षुविही-  
 नकों इसमें कष्ट होता.-अब हम पूछते है उक्त चक्षुविहीनने भुल्लक  
 व्रत किस गुरुके पाम लिये ? किसने संयम दिया ? हमारे प्रति-  
 पक्षी भुल्लक धर्मदासजी श्वेतांबरीओंकों तो बुरा कहते है परंतु यह  
 नही विचारते है कि हमारे मस्तकमें ही नेत्र संख्या पूरी नही है.

(सत्य है कि-) [अनुष्टुप्चत्तम्.]

पुमान् सर्पपमात्राणि-परजिह्वाणि पश्यति,

आत्मनो बिल्वमात्राणि-पश्यन्नपि न पश्यति, ?

आगे भुल्लक धर्मदासजी लिखते है अमूक गड्डका श्री पू-  
 ज्य गद्दीके योग्य नही, अमूक गड्डके श्रीपूज्यको किसीने पदवी  
 नही दीयी आप ही आप श्रीपूज्य बन गया है, कौनके पास  
 स्वरिमंत्र लिया ? किसकी आज्ञासें किस गुरुका शिष्य हुवा ?-  
 इनको मानना पूजना न चाहिये, जो मानेगा पूजेगा वह गद्दी-  
 का हरायखोर होगा. इत्यादि,-

[ इसका उत्तर. ]

यह लेख ऐसा है जिसमें सत्यता और मूर्खता मिली हुई है, अवलतो इस बातका उत्तर सुल्लकजीकों उन उन श्रीपूज्योसों ('जो अब विद्यमान है) पुठना व्याजब था कि-आप किसकी आज्ञासों श्रीपूज्यजी हुवे ? किम गुरुसों सूरिमंत्र लिया ? अगर वे उत्तर न देते तो फिर श्वेतांबर संघको पुठना था कि-आप लोग इनकों मानते पूजते हो किस आधारसों मानते हो ? सो ज्ञी प्रगटपने पुठना था, विना नामके पत्र उपांना और नोंदा करनी यह संसारसों विरक्तोंका काम नहीं. इसमें मायावीपना पाया जाता है. असली हकीकत तो यह है कि-जो मनुष्य ईर्ष्या-लु होते हैं वे दूसरेको किसी गद्दीका अधिकारी हुवा देख नहीं सकते. परंतु यह केवल अयोग्य बात है इसमें कर्मबंधकं अतिरिक्त कोई लाज नहीं. हा ! यह हम नहीं कह सकते हैं कि सज्जी साधु श्रीपूज्य अच्छे ही हैं वा सज्जी साधु बुरे हैं, काल दोषसे श्वेतांबर दिगंबर दोनोंमें विपरीत चलनेवाले अनेक मुनि हो गये हैं. परंतु इसमें हम तुम और अन्य कोई क्या करें ! उपदेष्टा उपदेश देनेका अधिकारी है, उसमुजब चलना न चलना यह चलनेवालोंके आधीन, कुछ हमारे तुमारे आधीन नहीं.

वैशाख मास पूरा हुवा, व्याख्यान रौज होताही था, जी-समें विविध तीर्थ कल्प-चिजवदनचपेटा-और मुक्तमुक्तावली तीन ग्रंथ परिपूर्ण बाचे. संवत् (१९४८) ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमें रविवारके रौज फरुखनगरसों मथुरा तर्फ विहार किया, प्रथम मुकाम पांच कोस हरसरु गांव-हरसरुसों आगे (५) कोस बादशाहपुर

यहां [१] दिन ठेरै, बादशाहपुरसें जौंमसी-सौना-इंमरी-मंमना-का-सेवली-होमल-कोंसी-और चोमुहा-इन गांवोंमें होते हुवे आ-षाढ कृष्ण [१] बुधवारको मथुरा पहुचे. रास्तेमें अग्रवाल प-ल्लीवालोंकी वस्ती गांव गांवमें है. जौंडसीसें सौने गांवतक पक्की समक-आगे होमल तक कच्चा रस्ता होडलसें मथुरातक पक्की समक है, दोनों तर्फ वृद्धोंकी गांवमें चलते मुसाफरोको ताप बिलकूल नही सताता.

शहर मथुरा—जमनाके दाहने कनारे बसा हुवा पुराना नगर है सूरसेनदेशकी राजधानी यही शहर शास्त्रोंमें लिखा है, सुपार्श्वनाथ जगवान्के शासनमें धर्मरुचि और धर्मघोष नामा दो मुनि यहां आये थे. ये मुनि महातपस्वी जीन्होको दसम-डवाइस पढ़-भासपढ़न आदि तप करना तो सहज बातथी, उस वखत मथुरानगरी बने धेरेमें बसती थी, वापी-कूप-पुष्करणी-बाग-ऊ-द्यान और धनीक जनोंके प्रामादसे सुशोभित थी. उक्त दो मुनि नगरीके बहार भूतरमण उद्यानमें ठेरे. दोनोंने चातुर्मास यहां किया, चारमहिनेके उपवास करके धर्मध्यानमें लीन रहे, ऐसा इनका प्रशम गुण देखकर उपवनकी अधिष्ठातृक कुबेरा देवी रा-तके समय इन्होके दर्शनोको आयी. दर्शनकर कहने लगी आप-के गुणोंसें मैं रंजित हू, कृपाकर मेरेसे कुछ इप्सित वस्तु लीजीये. मुनियोंने कहा हम निग्रंथ है किसी वस्तुकी चाहना नही, धर्म सुनाया, देवीने सम्यक्त अंगीकार किया चातुर्मास पूरा हुवा तब मुनि विहारको तत्पर हुवे, देवीने विज्ञप्ति कीयी कि-सबका ल आप यहां हो विराजे रहे तो अति उत्तम है मुनियोंने कहा

पबबकी तरह हमारी एकत्र स्थिति नहीं होती. देवी-धर्मोन्नति होती हो तो एक जगह अधिक रहना जी जिनाझासे अविरुध है, निदान ! मुनि यहां कितनाक समय और ठेरे. देवीने अरि-हंत सुपार्श्वनाथकी प्रतिमा सहित स्तूजकी रचना करके धर्मोद्योतमे अधिक यत्न किया. विविधतीर्थकल्प आदि ग्रंथोमें लिखा हैकि-जैसे शत्रुंजयमें रिषजदेव-गिरनारमें नेमिनाथ-भृगुक-लमें मुनिमुव्रतस्वामी और माढेरमें महावीर स्वामी विराजमान है. मथुरामें सुपार्श्वनाथ जगवानका तीर्थ था. अन्यजी केइ मंदिर यहां थे, जेद ग्रंथोमें जहां मंगल चैत्य प्ररुपणाका अधिकार चला है, मथुराके चैत्य विशेष वर्नन किये गये है.

यादवकुल मंडन-समुद्रविजय-उग्रसेन-वसुदेव आदि दश दशारवर बीर पुरुष और जावी तीर्थकर कृष्ण वासुदेव आदि पुन्यवंत पुरुषोकी यह पुरी जन्म भूमि है. १ अर्कस्थल-२ चीरस्थल-३ पद्मस्थल-४ कुरुस्थल-और ५ महास्थल-ये पांचस्थल पहले यहां अधिक मशाहूर थे, १ लोहजंघवन-२ मधुवन-३ लिहवन-४ पालवन-५ कुमुदवन-६ वृंदावन-७ हुमीरवन-८ खदीरवन-९ कोमितवन-१० कालवन-११ बहुलवन-और १२ महावन. येह बारह वन यहां पहले मौजूद थे, वर्तमानमे केइ उजम केइ नामांतर हो गये है, इनमे वृंदावन आजकल शहरकासा आबाद है, १ विश्वंतिकतीर्थ-२ असिकुंठतीर्थ-३ वैकुंठतीर्थ-४ कालिंजर-तीर्थ-और ५ चक्रतीर्थ-येह पांच तीर्थ-वैश्रव संप्रदायके यहां विद्यमान थे, महावीरस्वामीके जीव विश्वभूतिने विश्वनंदीके साथने यहां निदान कियाथाकि-मैं अपने तप तेजक प्रजावसें अगले ज-

न्ममें इसको मारनेवाला होऊं. जीतशत्रुराजाके पुत्र कालवेशी-  
यमुनि अश्वरोगसे पीडित होये हुवे जी यहां गाढ उपसर्ग सहन  
करके निश्चल रहे थे. निवृत्तिरायवरकन्या यहां स्वयंवर मंड-  
पमें सुरेंद्रदत्त राजकुमारको राधावेंधकी प्रतिज्ञासे परणीथी.  
कुबेरदिवा श्राविकाने अपनी कुबेरसेना माताकों और कुबेर-  
दत्त भ्राताकों यहां अवधिज्ञानसे जानें और अठाराह प्रकारके  
नाते (संसारिक संबंध) सुनाकर उन्होको निर्मोही किये. कंबल  
संबल दो बैलों जिनदास श्रावकके संसर्गसे यहां जाति स्मर्ण  
ज्ञान पाकर अनशन किया. और काल करके भुवनपति देवोंमें  
नागकुमार देव उत्पन्न हुवे. शक्र इंद्रने श्रीकालिकाचार्यसे यहां  
निगोदका स्वरूप सुना. उक्त सूरिके कितने शिष्य जो कि-दे-  
वताओंके होनेमें शंसयवान् थे कहते थे देवता कहने मात्र ही है  
वस्तुतः नहीं वे इस प्रबंधसे निःशंसय हुवे. वस्त्र पुष्प मित्र-डर्बलि-  
का पुष्प मित्र यह तीन लब्धि संपन्न मुनि यहां बहुधा वस्तु  
आये है. जब डःसह डर्जिह्द वारहवर्षी काल पमाथा तब स्कं-  
दिलाचार्यने यहां आनकर जैन आगमका अनुयोग प्रवर्तया था  
और सकलसंघ ( जैन समाज ) यहां इकठा हुवा था. वाचक मु-  
ख्य जीनज्ज गणि क्कमा श्रमणने जीर्णप्राय महानिशीथ सूत्र  
जो उहेही जंतु ज्ञहित विन्न जिन्न वुटित प्राय हो गया था यहां  
पुनः अनुसंधान किया. क्कपकमुनिकी तोत्र तपस्या देखकर यहां  
शासनदेवी तुष्टमान हुयीथी, और उस समय यह मथुरातीर्थ  
अन्यमतावलंबीउने अपने हस्तगत कर लियाथा पुनः आर्हत  
संघके हस्तगत कराया. इत्यादि अनेक आश्चर्य निधान यह म-

भुरापुरी जैन आगममे वर्णित है.

वर्तमानमे मथुराका जो कुछ वृत्तांत दृश्यमान है लिखते है, जमना कनारे अच्छा आबाद शहर-वस्ति (५५०१६) मनुष्य-की-और राज्य अंग्रेज गवर्नमेन्टका-कुल इलाकेकी बस्ती (६७१६७०) है. कृष्णजीकी जन्मभूमि होनेपर यह तीर्थकी जगह गिनी गयी है. नगर शोजनीक-बाजारमें पाषाणका फर्श-इम्मारते पकी जोसमें पथ्थरका काम अधिकतालिये है. पनरांह बीस वर्ष पहले श्वेतांबर श्रावको के यहां २०-२५-घर थे, वर्तमानमे कोइ नही. घीयामंमीमें एक मंदिर पार्श्वनाथजीका है, सार संजाल इ-सकी छश्कर ग्वालियरके श्रावकलोग रखते है, मूलनायक पार्श्वनाथ जगवानकी प्रतिमा (१) बीलस्तजर उंची है, इसके बाये पासे दूसरी प्रतिमा देह बीलस्त जर उंची और पुरानी है. ग्यारहसैं वर्ष पहलेकी बनी हुयी यह महा अतिशय युक्त है. जो संवेगी साधुजनो यहां आते है. इसी मंदिरके पासकी जगहमें ठे-रते है. हमारा ठेरना जो यहां हुवा. दिगंबर श्रावकोंके घर ६०-७०-और एक पंचायती मंदिर इसी घीयामंमीमें है. वैश्रव सं-प्रदायके मंदिर-सबसे बडा घाटीकाधीशका-दूसरा जमना कनारे विश्रामघाटका-तिसरा गतश्रमनारायणका-और चौथा गोवर्धन नाथका-वगेरा केइ मंदिर है.

शहरसे (१) मील दूर भूतेश्वर महादेवके पिढामी एक कं-कालीटीला जिसको जैनटीला जी कहते है, पुराना खेमा है, पहले यहां बनी बस्ती थी. जैनपाठशाला-मंदिर यहां अधिक थे, योमे वर्ष पहले सर, ए, कर्निगहाम साहबने प्राचीन लेख

शोधनके लिये यह स्थान खुदाया था, बहोतसें सिलाखेख जमीनमेंसे निकले थे, बुद्धर साहबने इन लेखोंको- “ओर्येंटीसिटी ऑफ द जैन ट्रेमीशन-” कीताबमें जाषांतर करके अंग्रेजीमें उपबाये है. जैनाचार्यके नाम-गण-शाखा-आरै कुलके नाम जो कल्पसूत्रमें लिखे हैं इन लेखोंसे मिलते हैं, (६) लेखोंका वर्नन बुद्धर साहबने लिखा है. जीसमेंसे (प्रथम लेखका सार.)

सिद्धं संवत् (१०) गृष्मरीतुका पहला मास तिथि (१५) के रोज जयपालकी माता-वि . . . लकी स्त्री-दत्तिलकी पुत्री दत्ताने यह कीर्त्तिमान् वर्धमान स्वामीकी प्रतिमा चतुर्विध संघको अर्पण कीयी, कौटीक गङ्ग-वाणिज्यकुल-वयरी शाखाका सीरीका भागके आर्यसिंह आचार्यने इसकी प्रतिष्ठा कीयी.

(दूसरा लेख.)—अरिहंतको नमस्कार सिद्धकों नमस्कार-संवत् [६०] उश्ररीतुका तिसरा महिना-तिथि (५) के रोज यह स्थान उस समुदायको उपजोगके लिये दिया गया, जिसमें चार वर्गका समावेश होता है. दूसरा अर्थ यह जी कर सकते हैं कि-एक एक वर्गके लिये इसका एक एक हिस्सा देनेमें आया था.

(तिसरा लेख.)—सिद्ध महाराज कनीष्क राज्यके संवत् [ ६० ]-महिना पहेला-तिथि [५] के रोज-ब्रह्माकी पुत्री

\* हिंदुस्थान और सीथिया बीचके राजाओंके संवत्से यह संबंध नहीं रखता. किंतु इन्होंसे पहलेके किसी राजाका यह संवत् होना चाहिये. क्योंकि-इस लेखकी लिपी बहुत पुरानी है.

† यह क्या स्थान था इसका खुलासा नहीं मिला है.



और जट्टवित्रकी स्त्री-विकटाने-सब जीवोंके कल्याण निमित्त यह कीर्त्तिमान् वर्द्धमानकी प्रतिमा बनवायी. इसकी प्रतिष्ठा कौटीक गए वाणिज्यकुल-और वथरी शाखाके आचार्य नागनंदीने कीयी.

(चौथा लेख.)—इम लेखका पुरेपुरा समाधान मिलना मुश्किल है परंतु प्रथम पंक्तिके एक टुकड़ेके देखनेसें विदित होता है कि-यह अर्पण करनेका काम एक स्त्रीसें हुवा था. और वह स्त्री अग्रक पुरुषकी बहू तरीके लिखनेमें आयी थी दूसरी पंक्तिमें-कौटिकतो गणतः प्रश्नवाहनतः कुलतो मध्यमातः शाखातः-लिखा है.

(पांचमा लेख.)—वर्ष (४७) उश्ररुतुका दूसरा महिना मोति (२०) मी के रोज-यह एक पानी पिनेका स्थान अर्पण करनेमें आया.

(छठा लेख.)—अरिहंत महावीरको नमस्कार हो. राजा वासुदेवके संवत् (६८) वर्षारुतुका चौथा महिना (११) के रोज-यह एक स्त्रीकी तर्फसे बनवायी गयी. और पारिहासीक कुलकी पौर्ण पत्रिका शाखाका आचार्य आर्यरोहने यह स्थापन किया, यह लेख एकीला अलग पाषाणपर है इस लिये नियत कहना नही हो सकती कि-यह क्या वस्तु स्थापन किया?

ये लेख कल्पसूत्रमें संबंध रखते है कल्पसूत्र श्वेतांबर प्रणीत है इसलिये कह सकते है, पहले यहां श्वेतांबर संघकी आधिक्यता होनी चाहिये. महावीरके निवारण पिछे [४७०] वर्ष व्यतीत

हुये बाद विक्रम संवत् चला, विक्रमके बाद (५७) वर्ष पिछे, इस्वीसन चला, राजा अशोकके लेखोंसे पुराने लेख आजतक हिंडुस्थानसे नही मिले थे. इन लेखोंको देखकर कह सकते है कि-ये अशोकके लेखोंसे जी पुराने है इनमें जो जो संवत् लिखे है हिंडुस्थान और सिथिया देशके बीचके राजा कनिष्क-इ-बिष्क-और वामुदेवके-समयके है. अबतक इन संवत्सरोकी शुरुआत निश्चय नही हुयी है तो जी यह नियत है कि-हिंडुस्थान और सिथिया देशके राजाओंका राज्य इस्वीसनके पहले सेंकमे के अंतसे और दूसरे सेंकमेके पोने जागसे कम नही उहरा सकते. सबबकि-कनिष्क महाराज इस्वीसन [७८] वा [७९] के वर्षमें महीपर बैठा सिद्ध हुवा है.

इस्वीसन [१८७६] मे-सर. ए. कनिंगहाम साहबकों यहांसे एक प्रतिमा महावीर स्वामीकी पायी है, इसपर पाली हर्फोंसे लिखा है कि-"सिद्धं उं नमो अर्हंतस्म महावीरस्स-राजा वामुदेव संवत्सरे ( ९० ) अरिहंत महावीरको नमस्कार हो. वामुदेवके संवत् नब्बेमे यह बनायी गयी. यद्यपि वामुदेव संवत्की शुरुआत कब हुयी अबतक निश्चय नही हुवा है तथापि पाली लिपी हिंडुस्थानमे [ १५०० ] वर्ष पहले लिखी जातीथी यह निःशंका कह सकते है.

यहां हमारा रहेना (३) रोज हुवा आषाढ कृष्ण [५] शुक्र-वारको मथुरासे विहार कर वृंदावन गये. इसको (१२) प्रकारके वनमें हम पहले लिख आये है. मथुरासे (५) मील उत्तर तर्फ जमनाके दाहने कनारे बसा हुवा-इसके महावन होनेमें कोई

कक नही चारों और इसके बड़े सघन वृक्ष और ऊँची झूलम झूलमे है. जगह मुहावनी-वृक्षोंकी ठंडी छांवमें वानर सदा कलोल करते रहते है. वृंदावन मथुरासें छोटा, राज्य गवर्नमेन्टका, श्वेतांबर श्रावक श्रेष्ठ जीतमलजी चंदनमलजीका एक ही घर यहाँ गीपीगली है, हमारा ठेरना इन्हीकी कोठीमे हुवा. दिगंबर श्रावकोके घर पांच दश और एक मंदिर इसी गीपी गलीमें है. वैश्व संप्रदायके मंदिर यहाँ केइ है. सबसे बड़ा रंगजीका जीसको जेतखंजका कहते है-१, लालाबाबूका-२, शाहजीका ४, ब्रह्मचारीजीका-५, गोविंदजीका बगेरा. गोविंद घाटपर रासमंडल एक रमणीक स्थान है. कहतें है यहाँ गोपीजका और कृष्णजीका रासमंडल होता था. कालोछह, मेवाकुंज निजवन, और चीर, घाट आदि स्थान कृष्णजीकी विज्ञासभूमि है. श्रीसंप्रदाय, माधवाचार्यसंप्रदाय, विश्वसंप्रदाय, और निंबार्क संप्रदाय. इन चारों संप्रदायके घारे अखाड़े अलग अलग बने हुवे है. वृंदावनमें हम (४) रोज रहे. फिर छोड़कर मथुराहीमें आये. सबबकि हमको आगरे आना था.

मथुरासें विहार कर (३) कोस नौरंगाबाद-नौरंगाबादसें (७) कोस फरेरा-फरेरासें (७) कोस सिकंदरा-सिकंदरासें (३) कोस आगरा—पूरा ( २० ) कोस है. आषाढ कृष्ण (१३) शनिवारके रोज पहुचे. नोनमंडीमें शांतिनाथजीके मंदिरके पास धर्मशाखामें ठहरे.

शहर आगरा—जमना कनारे बसा हुवा—इसका दूसरा नाम अकबराबाद जी बोलते है. इसमें (१६५३४०) मनुष्यको

बस्ती है, सारे इलाकेकी बस्ती (१७४६५०) मनुष्य-राज्य अंग्रेज गवर्नमेन्टका-और रैलका जंकशन है. श्वेतावर श्रावकोके घर (५०) और (८) मंदिर यहां है. मोतीकटमेमें चिंतामण पार्श्वनाथका मंदिर पुराना है. इसकी दिवारमें हीरविजयसूरि के वरुतका शिला लेख लगा हुआ है. रांसन महोलेमें सीमंघर स्वामीका-इसके एक आलेमें पंजेकी प्रतिमा अवगाहना तीन अंगुलकी है. तिसरा वासुपूज्य स्वामीका, चौथा गोमी पार्श्वनाथका जो श्रावक हंसराज वेद मोताने बनवाया है.-पाचवा केशरीया-नाथजीका-छठा विहरमान सुरस्वामिका-मातमा दादावामीमें महावीर स्वामीका-इसमें जीनदत्तसूरि और हीरविजयसूरिका थुज है.-आठमा नोनमंमीमें शांतिनाथजीका.-

शाहजहां बादशाहकी बेगम मुम्ताज महेलका मकबरा जीसें लोग ताजगंज वा ताजबीबीका रोजा कहते है. जमना कनार देखने लाइक मकान है. इसमें मंगमर्म पाषाणका काम शिल्पकारीगरीका एक नमूना है. दूसरा मकान अकबरका बनाया हुआ किला जी बनी लागतका स्थान है, इसमे महेल जोधा-बाइका-खास महेल बादशाहजादीका, अंगुरीबाग शोशमहेल शम्भनबूर्ज, नगीना महेजत, दिवाने आम और सोमनाथ गेट वगेरा अलग अलग मकान बने हुवे है. जब महम्मूद गजनवीने संवत् [१०८२] में सोमनाथ पट्टनको लूटा था तब सोमनाथ महादेवके चंदनके किवाम गऊनीको ले गया था.

संवत् [१०९९] में सरकारी फोजने गऊनवीसें लाकर यहां धरे है.-

मुसल्मानी अमल्दारीका हेवाल. तवारिखोमे वाचते है तो अकसर दिलको रंज आये बिदून नही रहता. हिंडुओंका नाश करना उनके मूर्ति मंदिर तोम मालना ये लोग बड़ा धर्म सम-जते थे. काफिर शिवाय दूसरी जबान नही बोलते थे. नाचना, गाना, शराब पिना, जो कोइ न्याय होनेको कहें उसको कतलका हुकम कहदेना, हिंदुओंको बहू बेटी बच्चेकों अपने लोंमी गुलाम बना लेना, दिनरात जनानखानेमें बैठ रहना, जीन्होंका नित्य कर्त्तव्य था. अलाउद्दीन, महम्मद तुगलक, फीरोजशाह, तैमूर, और बाबरशाह नेंक. इन्होंके इन्साफकी तारिफ तवारिखोंसे बखूबी दिख पमती है, कहने सुननेकी जरूरत नही रहती. औरंगजेब, नादीरशाह, अहमदशाह डरानों-इन्होंने देशको बरबाद करनेमें कोइ घट नही गुजारी. अमीर खुसरो तारीख अलाइमें लिखता है कि—दखनके शिवालयोंके महादेवकी मूर्त्तें जो मुसल्मानोंके घोड़ेकी लातसे बच गयी थी बिल्कुल तोमी गयी. कहिये ! अमल्दारी किसको कहते है ? इसीका नाम तो अमल्दारी है. ये क्या ! जीधर देखो यही किस्सा है. कोइ तवारिख यह कह रही है आज अमूक राजकुमारकी जीज कटवामाली, आज इतने हिंड कतल किये, अमूक राजकी रानीको आज बेगम बना ली. हिंडओंके घरोंसे सोना-चांदी-मोती-हीरा-माणिक-पन्ना और बढिया कपमे आज इतने लूट लाये, बस ! यही नमूने इन्साफ होनेके लिखे है. हिंदुओंकी बहू बेटीओंको पर्देमें रहना उसी राजसे शुरू हुवा जब मुसल्मानी जरजवानीमे थी. यह कहना न होगा कि-आपको मुसल्मानोपर कुछ घेषबुद्धि है. हमारे लिये जैसे मुसल्मान वैसे अंग्रेज-अंग्रेजोंकी सराहना इस लिये कियी

जाती है ये कुछ न्यायसे चलते हैं. अन्याय नहीं चलते. अम-  
ल्दारी वही है जहां न्याय हो.

अकबर बादशाह कुछ इन्होमें लायकबर हुवा तो मुसल्मा-  
नोने इसको काफिरके बतौर समझा. कहते थे इसने अपने दोनकी  
जोम दिया. अकबर सरीखे बादशाहको हिंदुराजा मजा सब  
चाहते थे. सबकि-इसको धर्मधेष बुद्धि कम थी. इसको राज्य-  
में केइ हिंदु नोकर थे. आमदनी इसके राज्यकी बत्तीस करोम  
रुपया थी. अपनी रानीउकों (जो हिंदु राजेकी लम्कीये थी)  
सुशीसे हिंदु रखता था न्यायमें तो कज़ी कज़ो यह ज़ी अपनी  
असलीयत पर पहुचे रहता था परंतु अलबते ! जितना इसमें  
धर्मअंश था हमको सराहना अनुचित नहीं. अबल तो दूसरे  
धर्मका यह धेषो नहीं था. सज़ी धर्मके साधुउसमें मिलता था.  
दूर दूरसे आमंत्रण पत्र (परवाना) जेजकर बोलाताथा और  
ईश्वरके पहचाननेका रस्ता पूछता था. एक समय अकबरने ही-  
रविजयसूरिकी विघत्ताका बयान सुना. विघातिपत्र जेजकर  
अपने पास बुलाये. धर्म सुना. और जो जो धर्मकृत्य किये उ-  
नको लिखते पहले हमको हीरविजयसूरिका वर्नन लिखना  
ज़ी यहां कचित हुवा.

हीरविजय सूरिका जन्म (संवत् १५८३) भगशीर सुदो (७)  
के रोज मल्हादनपुरमे हुवा. माता पिता जैनी थे. सूरिजी बाल्या  
बस्वामें ही बहोतकुछ योग्य थे. ( १३ ] वर्षको ऊमरमें इन्होने  
संनय लिया, चार वर्षके बाद शिरोही नगरमे सूरिपद प्राप्त हुवा.

व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, अलंकारके संपूर्ण वेत्ता थे. जैनसंघमें एक मध्यान्ह सूर्य थे, आत्मज्ञानी, क्रियापात्र, प्ररूपणा आगम अविरोधिनी होनेके कारण सब गच्छ [ गण ] में इन्होंका वचन मान्य था. हीरप्रश्नग्रंथ जो इन्होंके हृदयगत समुद्रका एक बिंदु है कौन जैनी ऐसा है जो नहीं चाहता. निदान ! ज्ञाततत्त्व हीरविजयसूरि एक महाप्रज्ञाविक पुरुष थे. इन्होंके विहारमें युग प्रधान अतिशय विदित होता था, एक दिन वो समय था जिन्होंके प्रभावसे जैनसंघ आनंद पुरित हो जाता था. आजकल बहुतेरे इन्होंका नाम तक भूल गये हैं. नामको चाहे भूल गये हो पर उन्होंके धर्मकृत्य के नमूने देखकर सब कोई धन्यवाद देनेके उमेदवार है. इसी आशापर आज हम यहां उन्होंके एक दो नमूने लिखनेको आकांक्षी हुवे हैं.

हीरविजयसूरि गंधार बंदरकी तर्फ विचरते थे तब अकबरने एक विज्ञप्तिपत्र जेजा. ऊत्तरखंममें आनेको आमंत्रण किया, अकबर इसबख्त आगराके पास फतेहपुरमें था. सूरिजी गंधार बंदरसे विहार करते ( संवत् १६३७ ] जेठ वदी (१३) के रोज फतेहपुर आये, प्रधान अबुल्फजल द्वारा बादशाहसे मिलें, हीरविजयसूरिके साथ विमलहर्षगणी आदि अनेकमुनि थे. बादशाहने आदरसे सज्जामे बैठाये. ईश्वरका, गुरुका, और धर्मका स्वरूप पूछा. सूरिने ऊत्तर दिया-राग द्वेष, काम क्रोध, मोह अज्ञान आदि दोषोंसे रहित जो संपूर्ण कर्मोंका नाश करके मुक्तात्मा हुवा है, जो किसीपर न खुश है न नाराज है, न संसारमें पुनः अवतार लेता है वह सर्वज्ञ सर्वदर्शी ईश्वर है. सं-

सारको त्याग के मुक्ति मार्गपर आरुढ़ है कंचन कामनोको स्वीकार नहीं रखते और सब जीवांको सच्चा धर्मोपदेश देते है वह गुरु है. उर्गति पमते रक्षण करें और सुगति मे धारण करे उसका नाम धर्म है, अथवा आत्माका शुद्ध स्वभाव जो ज्ञान दर्शन चारित्र वह धर्म है, यह उपदेश सुन अकबरने अधिक हर्ष माना. ईश्वर प्राप्तिके लिये क्या उपाय करना चाहिये. कौन कौनसे कर्मसें स्वर्ग नर्क प्राप्त होता है, इत्यादि सबाल पूछे. एक महरतक धर्मगोष्ठी हुयी. और कहा कि-आप सजी वस्तुके त्यागी है सौना, चांदो, लेना आपको स्वीकार ही नही. आपको दूसरा क्या देवुं ? मेरे मकानमें जैनपुस्तक बहोत है आपको चाहिये तो सजी ले लिजीये. सूरिजीने वे पुस्तक लेकर आगरेके ज्ञान जंमारमे स्थापन किये.

फतेहपुरसें आगरे आनकर संवत् ( १६३९ ) का चौमासा किया. चौमासेके बाद शौरीपुर तोर्थकी यात्राको गये, वहां केइ प्रतिमा और नेमिनाथजगवान्की चरणपाडकाकी प्रतिष्ठा कियी. नेमिनाथको जन्म भूमि यही शहर है. शौरीपुरसे फिर आगरा आये. शाह. ज्ञानचंद कल्याणमल्लके बनवाये चिंतामणि पार्श्वनाथ आदि जीनबिंबोंकी प्रतिष्ठा कियी. आगरासें फिर फतेहपुर गये. अकबरसें मिले. धर्मोपदेश करा. अकबरने कहा मैंने दूर-देशसें आपको बुलाये. और आप कुछ वस्तु मेरेसें नही लेंते यह ठीक नही. सूरिने कहा तेरे राज्यमें पर्युषणपर्वके (७) रोज कोई जानवर न मारा जाय यह मागताहुं. अकबरने कहा (७) आपके और (४) मेरे कुल [ १२ ] रोज (जाइपद बदी दशमीसे सुदी ठठ



तक) कोइ जानवर नही मारा जायगा. (६) फुरमाने लिख दिये. १, गुजरात देशका-२, मालवाका-३, अजमेर प्रांतका-४, दिल्ली फतेहपुरका-५, लाहोर मुल्तान मंगलका-और ६, ठठा हीरवि-जयसूरिके पास रखनेका, पांच फुरमाने उक्त स्थानोपर जेजकर जीवहिंसा बंध करवायी. सूरिकेपाससें उठकर खुद अपने हाथोंसें केइ जानवरोंको पिंजरेसें डोम दिये. सूरिने (१६४०) का चौ-मासा फतेहपुरमें किया. तिसरा चौमासा जौरामनगरमें-चौथा आगरामें-करके जब दखनको आने लगे तब निम्नलिखित एक और करवाया फुरमान उर करवाया.

१  
जलालुद्दीन मो  
इम्मद-अकबर वा  
इशाह गाजीका  
फुरमान.

जलालुद्दीन अकबर बादशाह इमायून  
बादशाहका बेटा-बाबरशाहका बेटा-  
उमरशेखपिगजाका बेटा-मुल्तान अबु-  
सैयदका बेटा-मुल्तान महमदशाहका  
बेटा-मीरशाहका बेटा-अमीरतहमूरसा  
हबकिरानका बेटा.

सूबे मालवा, अकबराबाद, लाहोर मुल्तान, अहमदाबाद, अज-मेर, मेरठ, गुजरात, बंगाला, तथा और मेरे ताबेके सच्ची मुल्कमें अ-बजो मौजूद है और पिछेसें जो बियत किये जाय उन सच्ची सूबे करोरी जहांगीरदारोंको मलूम हो मेरा यह इरादा है कि-सच्ची रैयतका मन राजी रखना, क्योंकि उनका दिल परमेश्वरकी एक बन्नी अनामत है. विशेष करके वृद्ध अवस्थामें मेरा यही इरादा है कि मेरा जजा इन्होंनेवाली रैयत सदा सुखी रहे. इसलिये

हरेक धर्मकी कौममेंसे जो अच्छे विचारवाले परमेश्वरकी जक्तिक-  
इनेमें अपनी ठगर पुरी करते है उनकों में दूर देशोंसे अपने पास  
बुलाता हु. उनकी बातें सुनकर खुश होता हु. मेरे सुननेमें आ-  
या था कि-हीरविजयसूरि जैन श्वेतांबर मतके आचार्य गुजरातके  
बंदरोमें ईश्वरकी जक्ति करते है. येने उन्होंको अपने पास बुल-  
बाये. उनकी मुलाकात करके मैं बहुत खुश हुवा. कितनेक दिन  
पिछे जबवें अपने बतनको जाने लगे तब अर्ज गुजारीकि, गरीब  
पर्वरीकी राहसें हुकम होना चाहिये कि-सिद्धाचलजी, गिरनारजी,  
तारंगाजी, केशरीयानाथजी, आबूजीका पदाम जो गुजरातमें है.  
राजगृहीके पंच पदाम, सम्मैतशिखरजी ऊर्फें पार्शनाथजी जो  
बंगालेमें है उन सजी पदामोंके नीचे, सभी मंदिरोंकी कोठीअं-  
सभी भक्ति करनेकी जगह-तीर्थोंकी जगह-जो जैनश्वेतांबरी धर्मकी  
है उनकी चारों ओर कोई आदमी किसी जानवरको न मारे.  
अब ये बहुत दूरसे मेरे पास आये है. इनकी अर्ज व्याजब और  
दुरस्त है. यद्यपि यह अर्ज मुसलमानी मजबसें विरुद्ध मजूम होती  
है तो जी ईश्वरकों पहचाननेवाले आदमीयोंका यह दस्तूर होवा  
है कि कोई किसीके धर्ममें दस्तल न दे. उनके रिवाजोंकों बहाल  
रखे. इसलिये यह अर्ज मेरी समझमें सची मालूम हुयी. ये सभी  
पदाम और सजी पूजाकी जगह बहुत मुदतसें जैनश्वेतांबर धर्म  
वालोंकी है. इसलिये इनकी अर्ज कबुल कियी गयीकि, सिद्धा-  
चलका पदाम, गिरनारका पदाम, तारंगाका पदाम, केशरीयाका  
पदाम-आबूका पदाम-जो गुजरातके मुल्कमें है. राजगृहीके पंच  
पदाम, सम्मैतशिखर ऊर्फें पारसनाथ जो बंगालेमें है. ये सजी

पूजाकी जगह और पहानके नीचेकी जगह जो मेरे राज्यमें है चाहे किसी ठिकाने जैनश्वेतांबर धर्मकी हो वह श्वेतांबर धर्मके आचार्य हीरविजयसूरिको देनेमें आयी है. हकीकतमें येह पूर्वोक्त सच्ची जगह जैनश्वेतांबर धर्मवालोंकीही है. जबतक सूर्यसें दिन प्रकाशमान रहे. और चंद्रमासें रात रोसन रहे तबतक इस फुरमानका हुकम जैनश्वेतांबरधर्मके लोगोमें सूर्यचंद्रमाकी तरह प्रकाशित रहे. कोई आदमी इनको हरकत नकरे. कोई इन पहानों-पर-नीचे-चारोंओरकी पूजाकी जगह-और तीर्थकी जगह-जानवरकों न मारे इस हुकमपर अमल करे. इस हुकमसें न फिरे. नयो सनंद न मागे. लिखा तारिख [७] मी-माहे ऊर्दो बहेस मुताबिक माहे रबीयुल अबल सने (१७) जुलसी.-

शांतिचंद्र उपाध्यायको अकबरके पास उपदेशके लिये भोमकर हीरविजयसरि मारवाडको आये शिरोहीमें-रिषभदेव जगवानके चौमुखाजी और अजितनाथजी वगेरा प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कियी. फिर आबूजीको आये. बहोतसा बिहार हीरविजयसरिने गुजरात मारवाम देशमें ही किया है. इधर शांतिचंद्र उपाध्याय अकबरको धर्म सुनाते रहे. हीरविजयसूरिके पहपर विजयसेनसूरि हुवे. इनके शिष्योंने अकबरके बेटे जहांगीरको धर्म सुनाया. फुरमानपत्र जी लिखवाया, जो सात फुरमानकी किताबमें उप चूका है.

शहर आगरामें हम (५) रोज ठहरे. चौमासाका समय निकट आया था आषाढ सुदी (३) गुरुवारके रोज लश्कर ग-वालियर आनेको बिहार किया. चारकोस ककौआ गांव ति-

सरे ग्रहर आये. पांच कोस आगे जाजलकी शराय पांच कोसपर मनीयागांव चार कोस आगे धोलपुर पहुँचे. जाजलकी शराय ठोककर अन्यत्र आहार पानी मिलनेका योग नहीं.

**धोलपुर**—गवालियरसे उत्तरको (१८) कोसपर चम्पल नदीके बायें कनारे बसा हुआ है. धोलपुरके बसानेवाले राजा धोलनदेव तूअरके घरानेके थे, यह घराना पहले दिल्लीमें राज्य करता था. धोलपुरसे नैरुत्यको चम्पलसे दश मील दूर बेलपुरमें संवत् (१०६१) में ये रहते थे. राजा धोलनदेवने चम्पलके नालेमें किला बाधा था जो अबतक मौजूद है. अकबरकी अमल्दारीमें धोलपुर आगरेके सूबेकी तर्फ था. मोहबतखां बगेरा यहां हाकमी करते थे. संवत् [१८३८] में सिंधियाके कबजेमें आया फिर अंग्रेजोंके कबजेमें हुआ. अंग्रेजोंने खेरातसिंहजीको गोहदके बदलेमें दिया. खेरात सिंहजी संवत् [१८८३] में देहांत हुवे, वर्तमानमें राणा निहालसिंहजी स्वतंत्र राज्याधिकारी है, इस राज्यके नीचे (६६६) गांव हैं. आमदनी दश लाखकी खास धोलपुरकी मनुष्य गणना (६२७३) है. श्वेतांबर जैन मंदिर वा श्रावकोके घर कोइ नहीं. अन्य जगहसे आये हुवे एक दो घर हैं. हम एक रोज यहां रहे. दूसरे दिन बिहार कर चम्पल नदी उतरे इसका पाट लंबा है नाव बिदून उतरना नहीं होता. चार कोस बंधा गांव बंधासे चार कोस मुरेना मुरेनासे चार कोस नुराबाद चार कोस पुरानो ठावणी और पुरानी ठावणीसे दो अठ्ठाइ कोस छत्रकर गवालियर सं० [१८४८] आषाढ सुदी [८] जौमवारके रोज पहुंचे. सराफा बजारमें मंदिरके

पास पंचायती उपाश्रयमे उहरे. यह शहर सोनरेखा नदी कनारे बसा हुवा पहाडके घेरेसें वेष्टित है. लश्कर और गवालिअरके बीचमे देढ कोसका अंतर है. गवालिअर पुराना नगर है, लश्कर नया है संवत् [१८६६] मे इसकी आबादी हुयी. सिंधिया सरकारकी राजधानीका शहर है पहले उज्जैन था. इसको फोज सदा चढाई और लम्बाइपर रहती ही थी जबसें गवालिअरमें बसा हुवा और फिर न हिला तबसें यही राजधानी हो गया. सिंधियाकी अमल्दारी उत्तरको सूबे आगराके सरकारी जीले करोली और धोलपुर इलाकेसे मिली है. पूरबकों बुदेखखंम ताल जोपाल और सागर नर्मदाके जिले पश्चिमकों जयपुर और कोटाको सीमातक दखनकी तर्फ निजाम हेदराबाद और इंदोरको अमल्दारीसें मिली है. आमदनी लश्कर राज्यकी [१३६०५००६] वस्ती [३११५८५७] खास लश्करकी देढलाख, श्वेतांबर श्रावकोके घर (३५०) जीसमें [१००] दुधियापंथके मंदिर (१) सराफा बजारमें चिंतामणि पार्श्वनाथका शिखरबंद लंबाईमें सवातेइस गज, चौडाई साढे चौदह गज है, रंगमंडपकी उत्तमें मीनाकारो काम देखने योग्य है. दोनों पासेकी दिवारमें सिद्धाचल, गिरनार, आबू, अष्टापद, सम्मेशिखर, और नंदीश्वर आदि तीर्थोंके जाव चित्रामके बने हुवे मनोहर है. शहरके बहार दादाबानीमें शांतिनाथजीका मंदिर और जिनदत्तमूरि जिन कुशलमूरिका थूज है.

आषाढ सुदी (१३) रविवारके रोज ज्ञातासुत्र और आचार दिनकर व्याख्यानमे वाचना शुरू किया. ओर निम्न लि-

खित टाईमटेबल (वख्त नियमावलीपत्र) लिखकर उपाश्रयकी दिवारपर लगाया.

### ( टाईमटेबल.)

प्रातःसमयके (६) बजेसें (७) बजेतक प्रतिलेखना स्थंभिल-भूमि गमन आदि सब क्रिया.- (७) बजेसें (८) बजेतक धर्मोपदेश (व्याख्यान).- (८) बजेसें (१०) बजेतक विश्राम.- [ १० ] बजेसें (११) बजेतक अहार पानी लेना.- (११) बजेसें (१) बजेतक विश्राम और कुछ योगाभ्यास चितवन.- (१) बजेसें [ ४ ] बजेतक ज्ञानचर्चा पठनपाठन आदितत्व विचार और प्रतिलेखना आदि क्रिया.- [ ४ ] बजेसें (५) बजेतक पुनःस्थंभिल गमन आदि क्रिया.- (५) बजेसें (६) बजेतक आहार क्रिया.- सूर्य अस्त होनेके पितें [ ८ ] बजेतक प्रतिक्रमणक्रिया.- (८) बजेसें [ १० ] बजेतक ज्ञानगोष्ठी.- (१०) बजेसें [ ११ ] बजेतक योगाभ्यास.- [ ११ ] बजेसें (५) बजेतक शयन और फिर पुनःप्रतिक्रमण आदि आवश्यक क्रिया सूर्योदयतक करनी.- उपर लिखे अनुसार जो समय ज्ञान चर्चाका नियत किया गया है उस समय श्रावक और अन्यसर्वही मतांतरके धारक मनुष्य हमारे पास आनकर धर्मोपदेशका और ज्ञानचर्चाका लाभ ले सकते है और जिसको पूछना वा शंसय निवर्त्तन करना हो एसा कर सकते है. विवाद प्रश्न व्याख्यानसज्जामें करो.

समयको निरर्थक न जाने देना अधिक लाभका हेतु है. गया हुआ समय फिर पिछा नहीं आता. समयपर किया हुआ काम बहुधा निष्फल नहीं जाता. आगमका वचन जी है कि "काखे

काले समायरे,-' जो मनुष्य वस्तुनियामावली नही करता है ऊतकां सदा प्रमाद धेरे रहता है. कोइ कार्य नही सुजता.

श्रावण सुदो (११) रविवारके रोज हमारा जाना गवालियरको हुवा. पहेले किलेपर गये लश्करसें देढ मील उतर की बाजु [१७४] फूट उंची पहामोपर यह एक पुराना स्थान है. (२) मील लंबा और एक तर्फसे [ ६०० ] फूट दूसरी तर्फसें (१०००) फूट चौमा है. इसके दरबजेपर हर वस्तु चौकी पहरा रहता है, जो शरूस इसें देखना चाहता है राज्यकी तर्फसें उसको टिकट मिलता है, इसको देखाकर सारे किलेमें घूम लो. शास्त्रोमें जो गोपाचल उर्ग लिखा है वह यही स्थान है. पावापुरीमें निर्वाण समय महावीरस्वामीने पांचमें आरेका ज्ञाव वर्नन करते कहाथा जो गोपाचल उर्गमें आमराजा बप्पन्नसूरिके उपदेशसें मेरी स्वर्णमय प्रतिमा बनायगा सो यहो गोपाचल समजीयेगा. विविधतीर्थ कल्पमें जीनप्रन्नसुरि इसीके संबंधमे लिखते है कि विक्रम संवत् [८०१] में यहां आमराजा राज्य करता था. आचार्य बप्पन्नसूरि यहां आये थे. उनके उपदेशसें आमराजा जैनधर्मी हुवा. और महावीर स्वामीकी स्वर्णमय मूर्ति यहां स्थापन कियो. कितनेक समयके बाद राजका उलथा हुवा तब यह मूर्ति मथुरामें पधरायी गयी.

किलेमें प्रवेश करते उरवायो दरवजा आता है. आगे सुरजकुंम और गंगोला जील सुहावने स्थान हरवस्तु इनमें पुष्कल जल जरा रहता है. गुजरी महल, शीशमहल, पुरानी इम्मारते है, इनमें कारीगरोंका काम तलधर जलके ऊरनें और

तरह तरहके मकान देखने लाइक है गणेशपोल दरवाजा और बादलगढ दरवाजा इसपर निर्गमघार है.

संवत् (११४९) में यहां दिगंबर आम्नायका मंदिर बना. जो अब प्रसिद्धिमें सास बहूका मंदिर कहा जाता है. इसके पहले दिगंबरमतका यहां कोई मंदिर नहीं था. आजकल इसमें कोई मूर्ति नहीं. केवल टूटा फूटा पत्ता है. चारके अगामी दोनों फाटकमें दो शिलालेख आपने सामने दिवारमें लगे हुवे है लंबे सवातीन हाथ, चौमें एक हाथ पंक्ति (११) दोनोंकी मिलाकर ४२ है. इसमें कुछ जिम्बाण संस्कृत है. लिखा है कि विक्रम संवत् (११४९) आसोज वदी पंचमीके सौंज यह पद्म प्रभुका मंदिर बनाया गया. कितनेक काव्य जिन स्तुति के और कितनेक दिगंबर आचार्योंके वर्णन के है. उरवायी दरवाजा के पास पहाडमे उकेरी हुयी कितनोक मूर्ति खमे आकार कितनोक बेठे आकार सब खंमित है खमे आकारकी मूर्ति कोई (५) गज कोई (७) गज उंची है. सब नग्न स्वरूप हैं. इनमें एक मूर्ति सबसे बनी जिसकों लोग कहते है (५२) गज उंची है परंतु यह कहना ब्रथा है. हमारे खबर एक शरूखने चढकर इसको मोरीसें नापी तो (१७) गज हुयी. इसके दाहने पासे थोमीसी दूर एक प्रतिमा बेठे आकार अनुमान (१०) हाथ उंची रिषजदेव जगवानको है इसके नीचेके लेखमे लिखा है कि ( संवत् १४९७ ) वैशाख सुदी सप्तमी वार शुक्रे.—

गोपाचल डोंगे-महाराजधिराज ( यहां राजाका नामथा सो तोमा गया है)—काष्ठासंघे माधुरान्वये पुष्कर गणो जहारक श्रीगुण कीर्तिदेव तत्पट्टे यशःकीर्तिदेव प्रतिष्ठाचार्ये, श्रीपंमित रैपु तेषां



आम्नाये-अग्रोतवंशे-गोहुलगोत्रे-साचुरातू-तस्य पुत्र साचू भोपा  
तस्य जार्या नाल्ही-पुत्र ५-प्रथम साचु क्लेमसिंह-द्वितीय साचु  
महाराज-तृतीय आसराज-चतुर्थ साचु नयपाल-पंचम संधाधि-  
पति कौला-तस्य जार्या (१) ज्येष्ठा स्त्री सरस्वती-पुत्र मल्लिदास  
द्वितीय जार्या साध्वी सुरों-पुत्र चंडपाल-क्लेमसी पुत्र द्वितीय  
साचु श्री जोजराज जार्या देवादी-पुत्र पुन्यपाल-एतेषां मध्ये  
श्री आदिजिनं-संधाधिपति कौला सदा प्रणमति.

यह लेख यद्यपि विद्वान्का लिखाया हुआ नहीं है क्योंकि  
विद्वान् आचार्यका लिखाया हुआ होता तो व्याकरणके कायदेसँ  
विरुद्ध नहोता परंतु इस बातका यहां विचार करनेकी जरूरत  
नहीं. तात्पर्यसँ जरूरत है. सो तात्पर्य खुलासा ही है जाषामे  
लिखनेकी आवश्यकता नहीं.

इसप्रतिमाके दाहने पासेकी दिवारमें (१) शिला लेख और  
भी लगा हुआ है. इसमें संस्कृत वृत्त (७) है. पहले दोवृत्तमें रिषज  
देवकी स्तुति है तिसरे वृत्तमें आगें संवत् मिति वगेरा है संवत्  
( १४७७ ) वैशाख सुदी सप्तमी शुक्रवार पुनर्वसु नक्षत्र आदि  
लिखा है.—

किलेके पिछलें पासे एक पथरकी बावनीके दाहने हाथ  
पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा जो उकेरी हुयी है निचेके लेखमें लिखा  
है कि-जब यहां कीर्तिसिंघ राजा राज्य करता था उसका खजा-  
नची गोलाराट् श्रावकने(जो दिगंबर आम्नाय मूलसंघका श्रावक  
था) यह प्रतिमा बनवायी.-अन्य जी बहांतसी प्रतिमा इसजगह  
उकेरवायी. परंतु वर्त्तमानमे कोई साबत नहीं. किसीके अंग

और किसीके ऊपांग खंमित किये हुवे है.

इस किलेके बारेमें इतिहासकारोंका कथन.

(१०६७) वर्ष पहले यहां कडवाहे ठाकर सूरजसेन महा-  
राजका राज्य था. इसका दूसरा नाम सूरजपाल था. सूरजकुंभ  
इसी सूरजपालका बनाया हुवा है. इसने यहां (३६) वर्ष राज्य  
किया. इसका पुत्र रसिकपाल हुवा. राज्य (१) ही वर्ष किया.  
इसका पुत्र नरहलपाल इसने यहां एक महादेवका मंदिर बन-  
वाया. (११) वर्ष राज्य किया. इसके पिछे अमरपालने (३६)  
वर्ष, इसके पिछे गंगपाल हुवा. (२१) वर्ष राज्य किया. इसने  
यहां गंगोलाजील तालाब बनाया जो अबतक मौजूद है. गंग-  
पालके पिछे राजा पालने यहां (१०) वर्ष राज्य किया. नोजपा-  
ल (९) वर्ष राज्य-पन्नपाल (९) वर्ष राज्य-अनंगपाल यह साधु  
जनोंका संगी हुवा-इंद्रपाल (२) वर्ष राज्य जोतपाल (१४) वर्ष  
राज्य-वसंतपाल (१७) वर्ष राज्य-धोधपाल (११) वर्ष-लठम-  
नपाल (४) वर्ष-नाहरपाल (२) वर्ष-और अज्जापाल (९) वर्ष  
राज्य किया. इन बीस राजाओंके बाद पालके घरानेमें  
(६३) राजें और हुवे. सूरजपालसे लगा पालघरानेका राज्य(८४)  
राजेतक (९८९) वर्ष रहा. अंतिम राजा बुधपाल था. बुधपा-  
लका पुत्र तेजकरण. यहां पालगोत नुप्त हुवा. तेजकरण\*आमेरके  
राजा रानमूलकी पुत्री व्याहा था. राजा तेजकरण इस रानीके  
साथ अत्यंत रागवान् था. और अपने मुसरालमें जा रहा था.

\* जयपुरसे (३) कोस उत्तरमे छोटासा गांव मौजूद है.

स्त्रीकी आसक्तिमें राज्यका चलाना कैसे बने ? निदान ! गवालियरका राज्य रामदेव प्रहारने संजाला. और (१) वर्षके बाद यही खुद राज्याधिकारी हो गया रामदेव प्रहारसे प्रहार खानदान थुरु हुवा. इसघरानेमें परमालदेव-सलामदेव-विक्रमदेव-रत्नदेव सोजागदेव नरसिंघदेव-और परमलदेव-यह (७) राजे (१०१) वर्षतक राज्य करते रहे.

बाद शमसुद्दीन अलतमसके कबजेमें आया. यह कुतबुद्दीन अयबकके घरका गुलाम था कुतबुद्दीनके पिछे यही दिल्लीके तरुत नसीन हुवा था. जब दखनमें लडाइकर यह पिछा लोटा तब (७६) हजार फोजके साथ यहां \* आंतरी मुकामपर पमाव किया. मुलतान यहां ठेरा परंतु परमलदेव इसको मिलने नही गया. मुलतानने अपने नोकरोको हुकम दिया कि-इसको पकम लाउ. और किलेपर एक मशजीद् बनाउ. परमलदेवनं अपने कुटुंबको जलायकर आप मुलतानमें लमा. और देह त्याग किया. यहां प्रहार घराना टूट गया. मुलतानने यहां एक मशजीद् बनवायी. जो सूरजकुंम और गंगोलाजीलके पास मौजूद है.

मुलतान शमसुद्दीनके बाद मुलतान फिरोजशाह यहां राज्याधिकारी हुवा. इसके वरुतमें तूअर जातिके दो रजपूत जीन्होंका नाम परमालदेव और अघरदेव था लमकर यहां अपना कबजा किया. तूअर घरानेके (६) राजे यहां हुवे, ठठा राजा बंगरसिंहने यहां गणैसपोल दरवजा बनाया. जो बादलगद द-

\* यहगांव गवालियरमें (१२) मील दक्कनमें है.

रवजे के पास है. इंगरासिंहका पुत्र कीर्तिसिंह हुवा. कीर्तिसिंहका पुत्र कल्याणसिंह इसने (१७) वर्ष राज्य किया. कल्याणसिंहका पुत्र राजामान हुवा. यह एक समय एक मेदानमें ट-हल रहाथा तो रायगांवकी एक ओरत चली जाती देखी. जो शरीरसें ताकातदार और सुंदर थी इधर दो जेसें बने जोरसें लम रहेथे ओरतने बीचमें आनकर दोनोंको अलग अलग कर दिये. चकित हुवा राजा मान ओरतसें पूछता है तुं इतनी ताकातदार क्यों ? ओरतने कहा राइजीलका पानी पिती हुं. राजाने इसको खुशीमें इसको अपनी रानी बना ली. ओर रहनेके लिये एक गुजरोमहल बनवा दिया जो शीशमहलके पास मौजूद है. राजा मानके बख्त दिल्लीकेतख्तपर मुलतान बहलोले लोदी था. संवत् ( १४२४ ) में हुसंगशाह मालवेका यहां आया और कुछ दखल जमाया था. राजामानके पिठे इसका पुत्र विक्रमाजीत हुवा. (३) वर्ष राज्यकिया. तूअर घराना यहां समाप्त हुवां. परमालदेवसें लगा विक्रमाजीततक तूअर घरानेके (१०) राजा-आने (२०५) वर्ष यहां राज्य किया.

बाद मुसल्मानी अमल्दारीके कबजेमें रहा. ऊन दिनोंमे बाबर बादशाह यहां आया. इसने यहां गंगोलाजीलपर एक बगीचा बनवाया. हुमायुके पिठे जब दिल्लीके तख्तनसीन अकबर हुवा तब मुरबल गुलाम राज्याधिकारी होकर यहां आया. निदान ! अकबरके हाथनीचे यह किला (५०) वर्ष रहा. जहांगीरके हाथ नीचे (२४) वर्ष रहा. शाहजहांके बख्त वराह शैबद यहां हुकूमत करता रहा. आलमगीरके बख्त ख्वाजा अबुल्ला

इसने यहां किलेके नीचे (१) शराय बनवायी. कुछ (१) वर्ष रहा. बाद मोतमीतखां आया (७) वर्ष रहा और (३) इम्मारतें बनवायी. आलमगीरदरवजा मशजीद और नूराबाद शराय. मोतमीतखांके बाद खिदमनगारखां आया. (६) वर्ष रहा धोरेपुर बारेहदरी-मोलाफसल बाग-और ऊरवायी दरवजा इसने बनवाया. इसके पिठे शैयद मनवरखां-मनवरखांके पिठे महम्मद अली न-बाब शवास्तखां-वसंतशाह-मुहमदशाह कासदअलीखां-वगेरा यहां राज्याधिकार करते रहे.

इसके पिठे महाराठोंका यहां दखल हुवा. राणा जीमसिंह गोहद बालेको विठलरावने सीकस्त दीयी और अपना अमल किया. विठलरावके पिठे उसका पुत्र बापू शिवाजीने यहां १६ वर्ष राज्यकारजार किया. लधेभी टेकरीके पास नजरबाग और तालाब बनवाया. ग्वालपासिध्र योगीकी गुफा इसीके पासमे है बापू शिवाजीके पिठे गोविंद श्यामराव (जो कारकूनथा) काम करने लगा. बाद रुगनाथराव ( गोविंद श्यामरावका पुत्र ) राज्याधिकार करता रहा. रुगनाथरावके पिठे बापूजी होलकर-और इसके पिठे ज्ञातसाहब और विश्वासराव यहां राज्य करते रहे. (संवत् १८३६) में अंबाजी इंगलें गणपतराव और सरदार खामेरावने गोहदवाले उतरपतके साथ लमाइ कियो. उतरपतने हार मानो और अंग्रेजोंसे मिता. अंबाजी इंगलेने दखनी फोजकी (१) कंपनी किलेपर रखी. श्रावण वदी (४) शुक्रवारके रोज अंग्रेजी दो रजमीट गरगजके पहारपर दाखल हुयी. इधर बापूजी सूबेदार और अन्य केइ सरदार लोग

सूरजकुंभपर उपस्थित हुवे. अंग्रेजी फोजसें एक गोली आनकर बापूजी सुबेदारको लगी और उनका देहांत हुवा तब अंबाजी इंगले माल असबाब वगेरा लेकर पहाडगढको चले गये. अंग्रेजोने किलेपर आनकर कब्जा किया. (१) वर्षके बाद महदजी सिंधियेने इसको संजाला. फिर अंग्रेजोने इस वख्त महाराज जीयाजीरावको उमर (१४) वर्षकी थी. राज्यकारनार दिनकर रावजी करते थे. इन दिनोंमें बागीलोगोंका ऊपड्व अधिक था. जीयाजीराव बागीउ के सामने उपस्थित हुवे, परंतु फोजके बदल जानेपर पिठा ठठना हुवा. अंग्रेजोकी साहाय्यसें फिर बागीओंसें लडे और सीकस्त दियो.

किलेको देखकर हम गवालिअरको गये. यह नगर पहाडके नीचे खंम खंम वमा हुवा है. जितना पहले आवाद था अब नही रहा. मनुष्य गणना (२००००) हजार राज्य सिंधिया सरकारका और जैनश्वेतांबर मंदिर एक ही यहां है, श्रावकोके घर पहले बीस पच्चीस थे अब नही रहा. मंदिरमें मूलनायक पार्श्वनाथजी, सार संजाल लश्करके श्रावक लोग रखते है. सायंकालको हम लश्कर आये.

पर्यषण पर्व बतीत होनेके बाद भाद्रपद सुदी (१३) बुधवार के रौज दर्शनोके लिये हमारा जाना मुरार ढावणी हुवा.

लश्करसे पूरबको (३) कोसपर मुरार नदीके किनारे अनुमान (५०) वर्ष हुवे यह आवाद हुयी है. हम (४) घटी दिन चढे पहुचे. इसमें (१५०००) हजार मनुष्यको बस्ती, राज्य सिंधिया सरकारका, श्वेतांबर श्रावकोके घर [३०] मजी हुंदियापंथके

है. मंदिर (१) पार्श्वनाथजीका शिखरबंद, इसकी प्रतिष्ठा संवत् (१९२७) वैशाख सुदी (३) तोजके रोज हुयी. दर्शन किये, मूर्ति अतिशय युक्त है. मंदिरके पास उपाश्रयमें ठहरे, व्याख्यान वाचा. लंकरसे कितनेक श्रावक यहां दर्शनोको आये थे. और कितनेक यहांके श्रावक जी मुननेको आये. मूर्ति पूजा आगम प्रमाण और युक्तिद्वारा सत्य है वा असत्य है, इस विषयपर वक्तृता हुयी. इसका संक्षिप्त निचे मुजब.

### (मूर्ति पूजापर व्याख्यान.)

मूर्ति पूजा सर्वज्ञ प्रणीत आगमानुसार सबको मान्य है. अनुयोगधारसूत्रमें [४] निक्षेपेके अर्वांतर दूसरा स्थापना निक्षेपा यही मूर्ति. मूर्ति कहो बिंब वा. प्रतिमा कहो तस्बीर उबी अक्ष या प्रतिकृति कहो सबका वाच्य अर्थ एक है.

नाम जिण जिणानामा, ठवणजिण जिणदंपडिमानु,  
दव जिणा जिणजीवा, जावजिणा समवसरणत्ता. १

रिषजदेव-पार्श्वनाथ-महावीर-आदि नाम जिन है, उनकी मूर्ति स्थापना जिन-उनका असंग्रह्य प्रदेशमय आत्मा इन्ध जिन और जब वे समवसरणस्थित साक्षात् विद्यमान थे वह जावजीन है. "जिन अजावे जिनठवणा"—जिनेश्वरोके अजावमें उन्होकी स्थापना दो प्रकारकी, सद्जाव दूसरी असद्जाव, सद्जाव स्थापना मूर्ति और अमद्जाव स्थापना स्थूजआदि, जगवतीसूत्रमें ब्राह्मी लिपीको गणधरोने नमस्कार किया, जो महाशय इस बातको मानता है, मूर्ति पूजासे कर्जी इनकार नहो

कर सकता. इसी सूत्रमें जहां चमरेंद्रकी उत्पात शक्तिका वर्णन चला है वहां तीन वस्तुका सरणा लेकर उर्ध्वलोगम जाना लिखा है. अरिहंतका सरणा चैत्यका सरणा और तिसरा मुनिका सरणा. यहां चैत्य शब्दका अर्थ मूर्ति है ज्ञान नहीं. चैत्य शब्द का ज्ञान अर्थ धातु प्रत्यय रुढ़ी वा योगिक किसीद्वारा सिद्ध नहीं हो सकता. “चैत्य जिनौकस्तद्विंबं चैत्यो जिनसज्जातरुः” अरिहंतको दाढाऊको लेजाकर इंद्र रत्नमय मान्द्रमेमें रखते है. उनके स्वरु पांच इंद्रियोंके विषय विकारको कोई बात नहीं करते यहांतककि देवांगनाकेमाथ ऊसजगह प्रेमयुक्त दृष्टिमें दृष्ट भी नहीं मिलाते. यह मूर्तिपूजाका ही एक जेद समझियेगा.

समीक्षक मूर्ति पूजा खुद जिनेश्वरोंने कही वा पिछेंसे आचार्योंने चलायी ? उत्तर—जिनेश्वरोंने कही समीक्षक—जिनेश्वर कैसे कहे कि-तुम हमारी पूजा करो ?-इसमें महत्त्वताकी आकांक्षा पायी जाती है. उत्तर, जैमें गुरु अपने शिष्यका विनय सिखाते है और उसके आत्माहितका रस्ता बतलाने है वैसे जिनेश्वर जी जव्य जीवोंको आत्महितका मार्ग बताकर उनको उचित किया करनेका उपदेश देते है. महत्त्वताकी आकांक्षा उसको है जो रागी घेपी है. निरागीको महत्त्वता कैसी ?-समीक्षक मूर्तिपूजा उत्तम है तो साधुजनो क्यों नहीं करते ? उत्तर-पूजा दो प्रकारकी, डव्य और जाव, साधुजनो जाव पूजा करते है. यह कोई नियम नहीं कि-जो कार्य श्रावक करे वह मुनि जी करे. देश विरति और सर्व विरतिका गुणस्थान अलग है इसलिये साधुश्रावककी समस्तक्रिया एक नहीं हो सकती. दूसरा यह



जी है कि-अविरतिरूप ज्वर गृहस्थको है साधुओंको नहीं इसलिये  
ये अल्प पूजारूप औषधी लेनेकी उन्हेंको जरूरत नहीं.

मूर्तिपूजा मूर्तिको उपकारी नहीं किंतु पूजकको उपकारी  
है. अर्थात् असुखकर्ममल दूर होनेमें निमित्त कारण है. यद्यपि  
इसमें अल्प हिंसा होती है परंतु वह पुन्यानुबंधिपुन्य प्राप्ति और  
अशुभ कर्मकी निर्जरा होनेमें हानिकारक नहीं. जैसे किसी स्त्री  
का पुत्र एक जगहपर खेलता है और उधरसे एक सर्प उसके  
सामने चला आया. माताने दूरसे देखा कि-मेरे पुत्रको सर्पके  
मुखसे खींच लेना ही मेरे सुखका निधान है. दोमके आयी,  
और पुत्रको पकड़के घसीट लिया. पुत्रके शरीरमें लोहूजी आ  
गया परंतु कहती है बन्ना लाज हुआ मरनेसे मेरा पत्र बच गया.  
इसी तरह गृहस्थ जी अल्प हिंसासे मूर्तिपूजामें अधिक लाज  
समझकर सुखका निधान समझते हैं. जिस कार्यमें अल्पदोष हो  
और बहुत दोषोंका निवारण होता हो वह कार्य त्यागने योग्य  
नहीं. जैसे रिषभदेव जगवानने शिल्पआदि शिक्षा बहोत दो-  
षका निवारण होता जानकर संमारी जीवोंको बतलायी.

समीक्षक,-पूजा सावध है और सामायिक निरवध है, इस  
लिये सामायिक ही क्यों न करे? उत्तर कौन कहता है कि सा-  
मायिक न करना. पूजाके समय पूजा और सामायिकके समय  
सामायिक दोनों करना ठीक है. पूजाको ठोमना और सा-  
मायिक करना यह ठीक नहीं. क्योंकि-प्रथम सम्यक्तकी शुद्धि हो  
नि व्याजब है. जिन पूजा सम्यक्तकी शुद्धि करनेको पुष्ट आलं-  
बन है. समीक्षक,-तीन निक्षेपें जाव निक्षेपा बिद्वान् अपूज्य कहते

है ? उत्तर यह बात असत्य है क्योंकि शास्त्र सिद्धांत जी भाव निक्षेपोंसे रहित है वे जी अपूज्य ठहरेगें. समोक्तक, -जैसे षट् आवश्यक साधु श्रावकको प्रतिदिन करना कहा वैसे सूत्रोंमें जिन पूजा जी अवश्य कृत्य क्यों न कही ? उत्तर बराबर कही है कौन कहता है नहीं कही ? जगह जगह सूत्रोंमें जिन पूजा करनी कही है. कौन कौनका यहां नाम लिखे. संकमे ग्रंथ इन बातोंपर बन चूके है. जो एकत्तीस बत्तीस शास्त्र ही मान रहे हे यह चिंता ऊन्होंकी ही है हमको नहीं. जब कोई पूजता है बत्तीस सूत्र ही मानने अपर नहीं मानने कहा लिखा है तब फिर मुंह खोलनेकी जगह नहीं रहती. समीक्षक-आणंद कामदेव श्रावकने मंदिर बनाया सूत्रोंमें क्यों नहीं लिखा ? हकीकतमें उन्होंने बनाया ही कहा है ? उत्तर-न बनाया तो क्या हुआ ? पूज्या तो है. उपासकदशांग सूत्र कह रहा है आणंद कामदेव आदिने सम्यक्तमूल बारहव्रत लिये. और अन्य देवको नमन पूजनका त्याग किया. वीतरागदेवको नमना पूजना स्वीकृत रखा. फिर शंकरकी बात ही क्या रही ? ठाणांगसूत्रके चौथे ठाणोमें श्रावक शब्दका अर्थ कहा है वहां सात खेत्रमें श्रावकको धन लगाना कहा. आणंद कामदेव दृढ धर्मवान् श्रावक थे इन्होंने सातखेत्रमें धन लगाया और सम्यक्तके आठ आचार यथाविधि सेवन किये. साधर्मी वत्सल और प्रज्ञावना ये दो उक्त आठ आचारोंमें जिन नहीं. साधर्मी वत्सलमें साधु साध्वी श्रावक श्राविका ये (४) क्षेत्र आ गये. प्रज्ञावनामें जिनमंदिर जिनप्रतिष्ठा और ज्ञान ये (३) क्षेत्र आये. आणंदआदिने सातक्षेत्र सेवन किये

और जिनप्रतिमाकी पूजा कियी इसमे कोई शंसयकी बात नहीं. हतनेपर जी जिन्होको शंसय न मिटे उनके लिये कोई उपाय नहीं. उपासकदशांग चरितानुवाद है. चरितानुवाद एक देशी होता है. विधिवाद सर्वव्यापी होता है. इसमे देखना चाहिये कि- श्रावकोके लिये मंदिर और मूर्ति बनवानेकी आज्ञा है कि नहीं ? अगर आज्ञा न होती तो जरतचक्रवर्त्ति अष्टापदपर काहेकों मंदिर और मूर्ति बनाता ? पुरिमताल नगर निवासी बगूर भावक मल्लिनाथका मंदिर काहेको बनवाता ? विमलशाह शेठ-वस्तुपाल, तेजपाल, मंत्री-और जैसाशाह, शत्रुंजय, गिरनार, और आवू वगेरा तीर्थमें काहेको लाखों करोमों रुपैये लगाते ? कुमारपाल राजा तारंगतीर्थपर आस्मानसे बातें करता हुवा मंदिर बनाकर काहेका ड्य्य विनाश करता ? महावीरस्वामीके पश्चात् (७०) वर्ष बाद रत्नप्रज्ञसूरि हुवे उन्होंके प्रतिष्ठा मंदिर जो अबतक मारवाम देशमे मौजूद है काहेको होते ? शंखेश्वर पार्श्वनाथ-धुलेवामे केशरीयानाथ-खंजातमे स्थंजनपार्श्वनाथ-फलोदीमें फलवर्द्धी पार्श्वनाथ-वरकाणामें वरकाणा और अंतरी-स्वजीमें अंतरिक्षपार्श्वनाथ, नादिया गांवमें जीवितस्वामी, महावीर, गोधामें नवखंभापार्श्वनाथ, ज्योयणीमें प्रगट हुवे मल्लिनाथ-और मथुरामें ग्यारहसे वर्षके पहलेकी पुराणीपार्श्वनाथकी प्रतिमा-ये सब पुराणी प्रतिमा अगर जैनमें मूर्तिपूजनका निषेध होता तो कौन बनवाता ? संप्रतिराजा जो महावीरस्वामीके पश्चात् (१९७०) वर्ष बाद हुवा काहेको जगह जगह मंदिर मूर्ति स्थापन करता ? जो वर्त्तमानमें हम तुम देख रहे है. महानिशीथ सूत्रमे अष्टप्रकारी

पूजाका वर्नन और ज्ञाता रायपसेणी बगेरा सूत्रमें सतराह प्रकारी पूजाका वर्नन काहेको होता ? बस ! मूर्तिपूजाका निषेध जैनमें कुल (३३५) वर्षके अंदाजसें शुरू हुवा है. इस बातको कोइ इनकार नहीं कर सकता.

उत्तराध्ययन सूत्रमें कहा है कि-चित्रामकी स्त्री मूर्ति जिस मकानमें हो वहां साधु न उहरे. सोचोकि जब चित्रामकी स्त्री मूर्ति विकार पेदा करेगी तो बीतरागकी मूर्ति हमको बीतराग क्यों न करेगी ? समीक्षक-दूसरेकी पूजासे दूसरेको संतोष कैसे ? उत्तर-हम दूसरेकी पूजा नहीं करते हैं किंतु मूर्तिद्वारा उस देवकी स्मृति करके उसमें आरोपद्वारा साक्षात् देवकी पूजा करते हैं. बीतराग आत्म स्वप्नावमें स्थित है हम उनको संतोष क्या करेगे वे आप आपने ज्ञानदर्शनचारित्र्यमें संतुष्ट हैं. पूजा पूज्यको उपकारणी नहीं किंतु शुद्धज्ञावसे पूजकको उपकारिणी है. समीक्षक-पाषाण पूजना और मुंहसें बीतरागको पूजा बोलना यह क्या ! हम पाषाण नहीं पूजते हैं. अगर हम पाषाण पूजते होते तो स्तुति इस वजह करते हैं पाषाण ! तूं ब्रह्मा कोमल है, अमूक खाएसें तूं पैदा हुवा, तूं मरुखनसा मलाश्म है. तूं दश रूपये गज मौलका है. तेरी हम स्तुति करते हैं अइसा बोलते. परंतु नहीं ! हमतो उसमें आरोपित बीतराग देवकी स्तुति करते हैं, निरंजन-निराकार-अजर-अमर-अकलंक-सिद्ध निर्मोही-निःकांक्षी बीतराग-अर्हन्-जिन, इत्यादि बोलते हैं.

समीक्षक-मूर्तिमें ये गुण हैं ?

उत्तर-मूर्ति एक अपेक्षा तबत् है और एक अपेक्षा तबत्

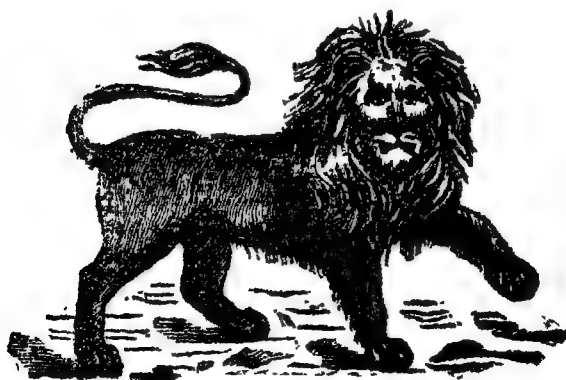
नहीं. जब पूजक पुरुष उसमें पूज्यका आरोप करता है तब उसको साक्षात् वीतराग ही दिखता है.

समीक्षक,—पूजा समयके अनंतर मूर्तिको कोई पैर लगावे तो दोष है ?

उत्तर—क्यों नहीं ? जो मूर्ति देवकी स्मृति करानेमें उपकारिणी है उसका आदर चाहिये कि निरादर ! जैसे पुस्तक और मालाका निरादरमें दोष है तद्वत् मूर्तिके निरादरमें भी है.

समीक्षक—जबतक जिस वस्तुका पुरेपूरा हाल न पाया हो सुने सुनाये उसपर अमल कर लेना कौन चतुराईकी बात है ?

उत्तर—अच्छा ! इसीपर कायम रहियेगा बदलना नहीं. मानिये ! कि—आप किसी राजेके बागमें देखनेको गये हैं. वहां केइ पिंजरेमें सिंह (शेर) बंधे सुने है, अबतक आप उस जगह नहीं पहुंचे हैं और रास्तेमें किसी शरूशनेदोरके कहा कि—जागिये ! पिंजरेमें सिंह निकल आया, चला आता है.



बस ! इतनेही कहनेपर आप चमक गये. और उस सुनी सुनाई बातपर अमल करके जगे. सोजो ऐसे जगे कि—धुध बुध

दोनों विसर गयो. बतलाइये पूरेपूरा हाल पाना और इसकी तलाश करनी कहाँ रहो ! सुना सुनाया ऐसा ज़ारी हो गया जिसपर जागना ही बन आया. महाशय ! ये सब आपकी वृथा तर्क-वितर्क है. जिस बातको आप न मानना हो अनेक दोष निकालने, समीक्षक-जो वस्तु जब तक समझमें न आवे तब तक हमतो नहीं माने अर्थात् मूर्तिपूजाका तात्पर्य और विधि विधान जब तक समझे नहीं है तब तक कैसे माने ?

उत्तर-बिना समझे जन्मते ही दूध पिया. बिना समझे खेल खेले, बिना समझे पढ़ने लगे. बिना समझे दवा खायो. बगेरा केइ कार्य बिना समझे किया. यह व्याप्ति यहां लग नहीं सकती.

बैश्याका नाटक रंग राग देखते ही राग रागणी के जेद बिना समझे कह देते है अहा ! हा !! क्या ! सुंदर माना हो रहा है. चंद्रमा सूर्यके विमानमें क्या क्या चीज है हम तुम देख नहीं आये जब देखा नहो तो समझना कहासे हुवा ? फिर बिना समझे उसकी चांदनी और प्रकाशके अनुसार कार्यजी न करना ठीक है, एकोले परमाणुको हम तुमने कजी नहो देखा तो फिर बिना देखे समझ उसका मानना जो व्यर्थ है. कहोगे सर्वज्ञके वचनसे मानते है तो पूजा जी सर्वज्ञके वचनसे मान्य होगी, जो मनुष्य विचार शील है उनके लिये समझानेका यत्न है. दीबमें गिरते पतंगका बचाना हमारा उद्योग हे इतनेपर जो आन पके तो उसकी मरजी.

समीक्षक-निराकारकी उपासना ध्यानद्वारा हो सकती है फिर मूर्ति पूजासे क्या प्रयोजन ?

उत्तर-मनुष्यके मस्तिष्कमें जितने जाग है उनमें किसीमें जी यह ताकात नहीं कि निराकारका ध्यान करे. यह बात प्रत्यक्षमें जी सबको मान्य है कि-जितने रंग हम लोगोके देखनेमें आते हैं. जिस जिस चोजका स्वाद चखनेमें आता है उनमें वि लक्षणका ध्यान स्पर्श और कल्पना जी हमारी शक्तिसें बाहार हैं. जब जब ध्यान करेंगे तो किसो एक वस्तु ध्यानमें पड़ेगी. यदि ज्योतिरूप मानकर ध्यान करेंगे तो जी उसमें शुद्ध श्याम आदि रूप मानना पड़ेगा. और सिद्धोंमें वह पौद्गलीक रूप नहीं किंतु अपौद्गलीक रूप है जिसको सर्वज्ञ जान सकते हैं. सिद्धचक्रमें सिद्धोंकी लाल कल्पना कियी गयी है वह साकारकी है निराकारकी नहीं. समोक्तक,—हम मानसी मूर्ति मनमें कल्पना करके उसका ध्यान करते हैं. पापाणमय नहीं मानते, उत्तर-किसीने मनमें मूर्ति मानो किसीने उसको प्रगटपने मानी. मूर्ति विद्वान् ध्यान जी तो न हुआ फिर बात ही क्या हुयी? और ध्यान करना जी क्या सहज है? संसारमें कोइ तो धनकी चिंतामें मग्न है कोइ स्त्री चिंतामें. कोइ अरजी पुरजे के देने लेनेमें और कोइ जमीन के ऊगड़ेमें सदा मस्त हो रहे हैं, कोइ के ध्यानमें तबला और आंखमें अबला समा रहो है उनका ध्यानकी प्राप्ति क्या रस्तेमें धरी है ! यह सब कोइ जानना है कि जोले जीवोका ध्यान जितना पूजामें रंग रागमें लगेगा हरगिऊ ध्यानमें नहीं लगेगा. सब कहियेगा ! नये नये गीत सुरोजा, तमूरा, सीतार, मृदंग, सारंगी, और ताल, स्वरका जरा गमक तमकदार गाना आपके चित्तको ज्यादा मोहे लेता है कि ध्यान समाधि !-जब

योगीराज बनना चाहोगें पूजा आप ही छूट जायगी. गृहस्थमें रहकर पूजा ठोमना लाजके बदले हानि उठाना है. ध्यानकी जगह ध्यान और पूजाको जगह पूजा. अलबते ! पूजा ध्यानको साहाय्यक है प्रतिबंधक नहीं. ध्यानका अभ्यास थोमे कालका है रंगरागका जन्म जन्ममें है, गीतगानको सुनकर बालक रुदन करता हो तो जी चूप हो जाता है. सर्प और हिरन जो तिर-थीन जाति है मस्त हो जाते हैं मनुष्य तो उसीमे लयलीन ज-रासा “तननतूं” जी हुवा कि-चट चंचलमन वहां ही जाय बे-उता है बताइये ! अगर इसमें जिनस्तुति और संसारकी असा-रता बुद्धि ग्रहण कर शके तो कितने कर्मोंकी निर्जरा हो जाय ? ध्यान ध्यान तो करते हो परंतु मोचो तो यही परम ध्यान है जो जिन पूजामें लीन होना. अलबते ! जो संसार ठोमकर दो-क्षित हुवे हैं उन्हींको ध्यान ही परम निधान है. गृहस्थको मूर्ति पूजा परम निधान है.

समीक्षक-मूर्ति पूजामें प्रमाण क्या ! (याने मूर्ति पूजा करनी चाहिये इसमें क्या प्रमाण है.)

उत्तर-प्रत्यक्ष अनुमान-और आगम ये तीनों प्रमाणसे मूर्ति पूजा सिद्ध है. समीक्षके, यह जी तो सुनते हैं कि-मूर्ति पूजा ज-गवान्के पिठसे यतिजनोने चलायी है. उत्तर, यह बात युक्तिसैं रहित है. अगर यतिजनोने चलायी होती तो मूल सूत्रोंमें मूर्ति पूजाका वर्णन कहाँसे आता ? समीक्षक मूर्ति पूजाका वर्णन जी तो यतियोंने प्रक्षेपकिया सुनते हैं. उत्तर, यह कहना एक ज़ारी दोष देना है, पुरानेसे पुराने लिखे सूत्रमिलाने जाते हैं तो सब



एकसे मिलते हैं. कोई फर्क नहीं आता. अगर यही मान लिया जायकि-मूर्ति पूजन यतियोंने चलाया है तो यह बतावो सारे संसारको किसने सिखलाया ! मुसल्मान मक्केको, क्रिश्चियन चर्चको, पारसी अग्निको, वैदिकलोग ब्रह्मा विष्णु महेशको, कोष्ट किसी पद्मामकी टेकरीको कोई किसी वृद्धके पैरको-आप लोग अपने गुरुजके चरणको पूजते हैं. कहिये ! मूर्तिपूजाके आश्रयसे कौन बचा है ? मूर्ति पूजाको संसारसे उठा देनेके लिये अनेक विद्वानोंने अनेक ग्रंथ रचे अनेक युक्तिये लगायी परंतु सब व्यर्थ गये. एकको न चली. मूर्ति पूजाके बारेमें जिनेंझोका वचन ग-णेशरोका वचन निर्युक्ति ज्ञाप्य टीका और चूर्णिकारोका वचन कौन कौनका यहां नाम लेवे जो सुविहित आचार्य पाठक प्रभृति हो गये इसी समकपर चले हैं. यदि इतनेपर भी जिनको विश्वास नहीं है और “टीका न मानु मैं ज्ञाप्य न मानु माने मूलमें काढ बतावो जो” इस ढाल चोपाइपर आग्रह है उनको हमारी ताकात नहीं जो समझा सके.

समीक्षक,-कहिये तो ! मूर्तिके सामने जो प्रार्थना बगेरा कियी जाती है क्या वह सुनती है ?

उत्तर-पहले जी हम कह चुके हैं कि हम मूर्तिकी प्रार्थना बगेरा नहीं करते हैं, किंतु जिसकी वह मूर्ति है उस देवकी करते हैं, वह ज्ञानी है हमारी प्रार्थना बराबर अपने ज्ञानसे जान रहे हैं परंतु यह तो बताइये ! आप जो जन्मते ही बालकके कानमें मुंहलगाकर काना फुस फुस करते हो क्या वह बालक सुनता है ? तुमारे किये हुवे प्यारकी कदर जानता है ? नहीं जानता तो ह-

यां पागलपना क्यों करना ? इसे जी ठोम दिजिये.

समीक्षक-मूर्तिके स्नात्रजलसे कहते हैं सभी रोग चले जाते हैं तो उसीसे रोगकी शांति कर लिया करे, वैद्य और मात्तरो के दवाखाने क्यों टुंढने ?

उत्तर-बराबर रोग चले जाते हैं कौन कहता है नहीं जाता ? जन्म जन्मके रोग जाते हैं जो जावसें लगावे. श्रीपालका और [ ७०० ] कोढीयोंका कौंढ गया. यादवपतिकी मेना जरासें मुक्त हुयी. अजयदेवमूरिका सर्वांग रोग गया. वर्त्तमानमें जो केइ मनुष्योंका रोग जाता देखते हैं. परंतु आप लोग अपने पूज्य गुरु टुंढिये साधुओंके चरण पूजते हो उनकी रजकों जी त चुल्य गिनते हो तो फिर विमारोंके बरत वैद्य लोगोको क्यों बुलाते हो ? पूज्यके चरणोंको रज लगायी अच्चा होजायगा, वृथा दाम खर्चके असंयतीको क्यों पोपना ? लाहोर के दवाखानेमें जायकर धर्मचंदजी साधुजी (१) महिने तक क्यों रहे ? क्या आंखोंका रोग गुरुओंकी चरण रजसें न मिटा ? थोमे दिन हुवे इसी मुरार ढावणोंमें आप लोगोंकी एक आर्याजीको भूत लग गया था तो मुसल्मानको जामा देनेके लिये काहेको बुलाया था ? क्या चरणोंकी रज नहीं मौजूद थी ?

समीक्षक-हम मानसी मूर्ति मानते हैं कृत्रिममूर्ति नहीं मानते. जो पांच पांच सात सात रुपैयेमे बिकती है बल्कि इन बातोंसे जिन्हेंछांकी आशातना होती है.

उत्तर-कहिये ! मानसी [ जाव ] मूर्तिके रंग कैसाक है ? लाल, पिला, सफेद, काला वा हरा कौनसा रंगकी है ? कहोगे

उसका न रंग है न रूप है बतावे क्या ! तो फिर महाशय यह आपका कहना बिल्कुल जुठा है कि हम मानसी मूर्ति मानते हैं. जिसका रंग रूप नहीं तुमारी सामर्थ्य नहीं कि तुम उसका ध्यान कर शको कृत्रिम मूर्तिसमें कहते हो आशातना होती है तो फिर आचारांग सूत्रकृतांग जगवतीआदि द्वादशांग वाणी के कृत्रिम पुस्तक जो पांच पांच दश दश रूपयेमें बिकते हैं का हेको लेना और अपने गुरुजको देना, महाशय ! जुठी तर्कों में क्या रखा है वस्तुतः गुणदोषको चीनों.

समीक्षक—मूर्ति जीव कि अजीव ? पर्याप्त कि अपर्याप्ति ? सूक्ष्म कि बादर इसमें गुणठाणे कितने ?

उत्तर—बत्तीस सूत्र जीवकि अजीव पर्याप्तकि अपर्याप्ति ? सूक्ष्मकि बादर ? गुणठाणे कितने ? यह आपका जैसा प्रश्न है वैसे उत्तर है.

समीक्षक—मूर्तिको स्नात्र ही कराना है तो केवले, गुलाब, जलआदि अचित्त जलमें कराना चाहिये. कच्चे जलसे हिंसा होती है. फलको जगह कागजोंके बने फुल वा लोंग बगेरा अचित्त फुल चढ़ाया करे.

उत्तर—आप जी अपने पूज्योंको जबकि गोचरी लेने आवे कागजोंकी रोटी और पुरियां दिया करे और जलको जगह गुलाबजल केवला दिया करे. आप लोग जी उपवास करें तब गुलाबजल पिया करे, कच्चे पानीको तत्ता करनेमें हिंसा होगी, रसोश्में जी षट्काय जीवोंकी हिंसा होगी. महाशय ! यह सब वृथा तर्क है, जो उचित प्रवृत्ति है उसमें फेरफार करना न चा

हिये, कागजोंके फुल और गुलाबजलमें पूजा करनेसें आज्ञा जंग आदि दोष है लाज नहीं, सोचो कि स्त्रीसंजोगमें फुलोंका ओढ़ना कांचली गजरे वगेरा पहनाकर काम सेवन करते बख्त जीव हिंसाका खयाल न करना और पूजामें पांच दश फुलोंपर हिंसाका खयाल करना यह कौन चतुराईकी बात है? गुरुजके सामने जानेमें, प्रतिक्रमण करनेमें, तपस्वीको पारणा करानेके लिये जोजन बनानेमें, दीक्षा महोत्सवमें, सब धर्मकृत्यमें पहले हिंसा होती है कौन ऐसा कृत्य है जिसमें हिंसाका लेश नहा सजी त्याग देना चाहिये.

समीक्षक-अच्छा ! मूर्ति पूजा ही मंगल कारण है तो फिर प्रतिष्ठा वगेरा मुहूर्तमें ये नक्षत्र ठीक है ये ठीक नहीं यह बखेभा क्या ? आकाशके तारे जी जला बुरा कर देते है ?

उत्तर-आकाशके तारे न जला करे न बुरा करे, अजबते ! वे जले बुरेके द्योतक और सूचक है. जैसे आप किसी कार्य करनेका चले और ठीक हुयी, कुत्ता चिल्लाया, बिलाइ सामणे आ गयी, विधवा स्त्रीके दर्शन हुवे, तो कहते हो ठहर जाओ बुरा होगा. कहिये तो ! क्या ठीक जी जला बुरा कर देती है ! कुत्ता बिलाइ विधवा स्त्री जला बुरा करनेको शक्तिमान् है ! बस ! यही कहना होगा कि अथुज सूचक है, इसी तरह यहां जी समझ लो. थुज नक्षत्र थुज ग्रह वगेरा थुज सूचक है अथुज अथुज सूचक है. अगर इस बातका नही मानते हो तो आपके गुरु जब किसी चलेको दिक्षा देना चाहते है तो मुहूर्त के लिये पंचांगको क्यों दुंदते है ? दुंदिये साधुज व्याकरण पढते

नहो, व्याकरण बिना पढ़े ज्योतिष कहा ! फिर ब्राह्मणको जो अविरति अमृत्यु ख्यानी है बुलाना पमता है. कहिये तो ! पंच-महाव्रत खुद मंगलकारो नही जो आकाशके तारे दिखानेका बखेमा करना पमा.

समीक्षक—भूर्ति तो गोटोसी और मणोंबंद नैवेद्य क्यों ! भूर्तिके पेटमें इतनी जगह है !

उत्तर,—दीक्षा लेनवाला मनुष्य गेटा और उसपर पंच महाव्रतरूप पांच मेरु क्यों ! क्या ! उसके शिरपर पांचमेरु उठरनेको जगह है ! यह जैसी तर्क है वैसा उत्तर है. हकीकतमें नैवेद्य भूर्तिको खानेके लिये नही धरते. पूजकको भक्तिका एक अंग है.

समीक्षक,—कृत्रिम वस्तुका आदर करना चतुराशकी बात नही.

उत्तर,—जबतक मुक्तात्मा नही हुवे है तब तक कृत्रिम वस्तुका आदर करना नही झूटता, साधु साध्वीका वेष कृत्रिम-शास्त्र कृत्रिम-मकान कृत्रिम-आपको उचित है इन वस्तुओंका आदर करना ठोम देवे.

समीक्षक,—एक सास अपने बेटेकी बहूकों ठाकुरजीकी पूजा कराने लेजाना चाहती थी. बहूसें कहा, चल ! ठाकुरजीकी पूजा कर आवे. सासके कहनेसे बहू सामग्री लेकर सासके साथ चली. ठाकुरघारेके अगामी एक गौ और एक नाहर पथथरका बनाया खमा है. बहूने गौके आंचजोसें पानी लगाकर दूध दोहना शुरू किया. सासने कहा बहू ! तूं बम्बो मूर्खिणी है पथथरकी गौ जो दूध देतो हांगी ? अगामी चल ! फिर नाहरको देखकर बहू चमक उठी. कहतो है हाय ! खा लिया. सासने कहा, री ! अकल

की दुश्मन ! पथरका नाहर कजी खाजेता होगा ? चल ! ठा-  
कुरजीकी पूजा कर, वैकुंठ देयगे. बहुने कहा यदि पथरका ना-  
हर खा नहीं लेता गौ दूध नहीं देती तो पथरके ठाकुरजी  
मुक्ति कैसे देयगे ?

उत्तर—हम कब कहते हैं पथरकी मूर्ति मुक्ति देती है.  
जिस देवकी वह मूर्ति है उस देवकी स्मृति करानेमें वह सहारा  
है स्मृति होने बाद पूजकको जैसा ज्ञाव पैदा होगा वैसा फल होगा.

समीक्षक—मूर्तिकों देखकर ह्यायोपशम ज्ञाव नहीं आता  
किंतु उदयिक ज्ञाव आता है. जब कोई मंदिरमें जायगा तो  
स्नान दीप धूप फूल चढ़ाना, ताल मृदंग बजाना, नाचना कूद-  
ना वगेरां ँकाय जीवोंकी लूटालूट करनेका परिणाम आयगा.  
अगर कहोगे नमस्कारमंत्र शक्तस्तवत्र्यादि स्तोत्र पढ़ने जाते हैं  
तो ठीक है परंतु वह तो किसी जगहपर बैठकर गिनो, मंदिर  
हीमें जाना क्या जरूरत ? हमारी समझमें मंदिर मूर्ति बनाना  
बुरा ही है. सो चोकि—किसी शखशने मंदिर बनाकर मूर्ति स्था-  
पन किया. लाखों रुपये व्यय किये. कहिये ! सब कार्य हिंसासें  
बनाकि-हिंसा बिदून, ?-हिंसासें तो बनाने वालेकों पाप हुवा,  
फिर पूजने वालेकों धर्म कैसे होगा ? अगर कहोगे हिंसासें धर्म  
हुवा तो तुम हिंसाधर्मी हो चूके, अहिंसेने अहिंसा धर्म मरुपा है.

उत्तर—मूर्तिको देखकर कौन कहता है ह्यायोपशम ज्ञाव  
नहीं आता, जरूर आता है, अहिंसे मूर्ति देखकर जब अहिंसेकी  
स्मृति होगी तो शुद्ध ज्ञाव क्यों न आयगा ? शुद्ध ज्ञाव आना  
ह्यायोपशम ज्ञाव है. मंदिरमे जायकर ँकायजीवोंकी लूटालूट

करनेका इरादा पूजक पुरुषका नहीं, किंतु जक्ति करके जिन आज्ञा अखंड रखनेका इरादा है, जैसे नदी उतरते साधु जानते है कि-हिंसा होती है परंतु जिन आज्ञा है ऐसा जानकर उतरते है, कहोगे नदी उतरनेसें अगामी धर्मध्यानकी प्रवृत्ति होनेपर भव्य जीवोंको उपकार होता है जैनधर्म दीपता है तो तद्यत् मंदिर बनानेसें पूजा प्रतिष्ठा करानेसें भी भव्य जीवोंको उपकार होता है, जैनधर्म दीपता है फिर वृथा कैसे हुवा ? अगर कहोगे धीतरागने आहिंसा धर्म कहा है तो हिंसा होती जान बुझकर नदी उतरना यह तुमारी श्रद्धानसें अधर्म हुवा. अधर्मसें फिर धर्म कैसे होगा ? जैसे मंदिर मूर्ति बनाना पूजा करना हिंसा होनेके लिये वृथा है तैसे ही हिंसा होनेसें तुमको नदी उतरना, आहार विहार करना, वरसातमें लघुशंका बभीशंकाके छिड़ जाना. प्रतिक्रमण करना, व्याख्यानवाचना, गोचरी जाना, गुरुकी वैयावृत्य करना वगेरा न करना चाहिये सब काममें जीव हिंसा होती है.

(यतः) — ( अनुष्टुप्वृत्तम् )

जले जीवाः स्थले जीवा जीवा आकाश मालिनी,

जीवाः सर्वत्र लोकेषु कथं निष्ठुरहिंसकः ( १, )

परंतु महाशय ! यह सब आपलोगोंकी समझका फर्क है, कोई कार्य ऐसा नहीं जिसमें हिंसा न होती हो, द्रव्य हिंसा सब जगह होती है, जाव हिंसा मनःपरिणाम के आधीन है, जैसा जिसका परिणाम होगा वैसा उसको फल होगा. हिंसाकों देखो या जिन आज्ञाको देखो ? जो कुछ जिनेंछोने आज्ञा दीयी है सब

जीवोंके आत्म कल्याण निमित्त दिया है. हम तुमसे वे निर्मल ज्ञानी थे, पूर्वापर अविरोधी कथनसे उन्होमें सर्वज्ञता सिद्ध हो चुकी है, उन्होको असख आज्ञा देनेमें क्या प्रयोजन था ?

मूर्तिपूजाके निषेधक पुरुष संसारमें केइ हुवे परंतु एककी न चली, दयानंद सरस्वतीने मूर्तिपूजाके निषेधमें अधिक जोर दिया. वह कहता था मेरी समझके अगामी किसीकी समझ कार्यकारी नहीं. सब रिषि मुनि अविद्या हुवे, वेदका सच्चा अर्थ मैं ही जानता हू, मुझे सुजी सो किसीकों न सुजी, अपने सेवकोंके समूहका नाम (आर्यसमाज) रखकर उनको उपदेश दिया कि-तुम सब उस ईश्वरका ध्यान करो जो निरंजन निराकार है, बस ! आर्यसमाजी क्रियाकाम उपासना छोड़कर गृहस्थाश्रम में ही बैठे चोथे आश्रममें टांग पसारने लगे. वेदके निंदक होते होते देवताओंके निंदक बनना पमा. सजीमनुष्योंको एक जाति करना चाहा, जीतरमें हिंसक और उपरमें गोरक्षाका चंदा बनाकर दयाधर्मीयोंका चांद लेना चाहा. परंतु थोमे ही दिनोंमें कूबेका जल पिठा कूबामें चला गया. एक बात पूरी न उतरी. केइ जगह विद्वानोंकी सज्जामेंसे हाथ पकड़ कर बहिष्कृत किये किये गये, जब कोइ उनको पूजता है तुम्हारा सिद्धांत क्या है ? उत्तर नहीं देसकते. क्या देवे ? सब रिषि मुनियोंकी झूठ लेकर तो मत निकाहा, वेदके असली अर्थकी नींदा शिवाय दूसरी बात नहीं. कहेंगे-निराकार ईश्वरकी मूर्ति बनाना वृथा है, देव देवीओंको पूजना न चाहिये, जातिभेद रखना ठीक नहीं, जन्मका कर्त्ता ईश्वर है, पृथ्वी जल तेज और वायुके परमाणु नि-



त्य है, इत्यादि इत्यादि.-सोचनेकी जगह है दयानंदजीने दूसरों के मसालेसँ अपनी दिवार बनाकर कौनसा रक्षण किया ? क्या ! वेदमतानुयायी नहीं कहते है मूर्तिपूजा साकारकी है निराकारकी नहीं. निराकार अवस्था वे जी तो मानते ही है, कहते जी है कि-उपरको भूमिकामें पड़ोचेंगे तब साकारता सेवन आप ही छूट जायगा, मूर्तिपूजा फिर न करनी होगी. बतलाइये ! फिर दयानंदजीने अपनी न्यारी खीचनी पकाकर क्या सार निकाला ?-पृथ्वी जल आदिके परमाणुओंको नैयायिक पहले ही कह रहे है कि-नित्य है, जगत्का कर्त्ता ईश्वर है, थोमासा मसाला नैयायिकोका लेकर सरस्वतीजीने अपनी जाजी तर्कारी उमकी. कौनमें हिंदूलोक अनार्य हो गये थे जिनमेंसें ठाँटकर अपनी समाजका नाम “ आर्य ” रखा ?-देव देवीओंकी उपासना जी उपरले आश्रम पढ़ाचनेपर वैदिक लोक त्याग रूप कहते ही है, फिर सरस्वतीजीने नयेनाटकमें क्या लाज उठाया ? लाजतो क्या उठाया बल्कि अपने सेवकोंको न घरके न घाटके दोनों जहानके न रखे. सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथके पृष्ठ ( ५७८ ) में लिखा है मैं विद्वानोंको देव मानता हू, अविद्वानोंको असुर मानता हू, पापीयोंको राक्षस और अनाचारियोंको पिशाच मानता हू, अगर यह बात सच है तो वेद मंत्रोंमें जहाँ जहाँ देव और असुरोंका पूजन लिखा है वहाँ विद्वानोंका और अविद्वानोंका पूजन होना चाहिये. ( ५८१ ) पृष्ठपर लिखा है मुझे मतमतांतरके ऊगमे प्रसन्न नहीं, कहिये अगर मतान्तरके ऊगमे प्रसन्न नहीं थे तो सत्यार्थप्रकाश ग्रंथके कागजोंको क्यों काळे किये ?-

सब बात तो यह है कि-मुंहसे बातको निकालना सहज है उस पर चलना सहज नहीं, अलबते ! इतना इतम दयानंदजीका तारीफ करने योग्य है कि-उन्होंने अछे अछे विद्वानोंको जी गुरु देकर खूब लुझाये, कहते रहे देखो जाइ ! तुमको मैं कितना सरल रस्ता बताताहु, जब तूम मैरे कथनानुसार चलोगे तो-जिस तिस कुलकी युवती से शादी कर शकोगे, मनमाना खाना खा शकोगे, विना पूजन पाठ परमात्माको प्रसन्न कर शकोगे, विना कृस्तान बने कृस्तानीका मजा उठा शकोगे, और साथ आर्य जी कहलाओगे, वेदमें मूर्तिपूजन कही नहीं लिखा, बल्कि प्रतिमाका निषेध वाक्य है, देखो ! यजुर्वेद अध्याय (१४)-सपथ्यगान्धुक्रमकायमव्रणाम्-वह परमात्मा अकाय ( शरीर रहित ) है. इसका उत्तर,-यह श्रुति निर्गुण अवस्था प्रतिपादक है, वैदिक लोक निर्गुण अवस्थामें मूर्ति कहाँ कहते है ? साकार अवस्थामें मूर्ति कहते है.

न तस्य प्रतिमा अस्ति-यस्य नाम महद्यशः यह जो वेदमें श्रुति है कि जिसके नामका ही ब्रह्मा यशः है तिसकी प्रतिमा नहीं है, यहां प्रतिमाका अर्थ तुल्य लिया है परंतु मूर्तिका अज्ञाव नहीं लिया, अगर अज्ञाव ही अर्थ लेवे तो वेदकी अन्य श्रुतियोंसे विरोध आता है अन्य श्रुतियोंमें सैकड़ो जगह मूर्ति पूजा प्रतिपादक प्रमाण है, यजुर्वेद अध्याय (१३) श्रुति (४१) आदित्यं गर्जपयसा समडधिसहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपं-नाभ्यं-हे पुरुषशिरः आदित्यं चित्याग्निं पयसा

हुधेन समङ्घिसन्नद्धय अजे लोटमध्यमैकवचनं किं-  
भूतं आदित्यं गर्जं गृह्णाति पशूनिति गर्जस्तं मत्वं ज्ञा-  
दसं तथा सहस्रस्य प्रतिमाम् सहस्ररूपेण प्रतिपाद्यस्य  
परमेश्वरस्य प्रतिमाभूतं अतएव विश्वरूपं सर्वाणिरू-  
पाणि यस्मात् यद्वा आदित्यो वा एष पुरुषः पुरुषो वै  
सहस्रस्य प्रतिम विश्वरूपं इति श्रुतिः—

अर्थ,—हे ! पुरुष शिरः—आदित्य जो चित्यमिहै तिसको दूध-  
सें रक्षा कर, कैसा यह आदित्य है कि-गर्जरूप है, गर्ज किसको  
कहते है जो प्राणोंको ग्रहण करे, वहं परमेश्वरकी प्रतिमा है और  
विश्वरूप है, तात्पर्य यह हुवा कि- उस परमेश्वरकी श्रुति है और  
वह मान्य है.

यजुर्वेद अध्याय(१६)-नमस्ते रुद्रमन्यव उतो-  
त इषवे नमः—बाहूभ्यामुतते नमः

अर्थ.—हे रुद्र ! तुम्हारे क्रोधको नमस्कार हो, तुम्हारे बा-  
णको नमस्कार हो, और तुम्हारी बाहुओंको नमस्कार हो. ज्ञा-  
प्यकारने इस श्रुतिके अर्थमे लिखा है कि-तवक्रोधबाणहस्ता  
अस्मदरिषु कामादिषु प्रसरंतु नास्माषु—हे रुद्र! तुम्हारे  
क्रोध बाण और बाहु हमारे काम क्रोध आदि रिपुओंपर पसार  
हो याने उनको व्यथादाता हो हमको नहीं, यहां तात्पर्य यह है  
कि-बाहु साकारके ही होती है निराकारके नहीं होती,

रिग्वेद अध्याय ( ५ ) मा—अनुवाक् ( ४ ) वर्ग

तिसरा रिचा (१२)—अंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टि  
वर्धनं उर्वारु कमिव बंधनान्मृत्यो मुह्यीयमामृतात्—

इस रिचाका तात्पर्य अर्थ यह है कि-हम अंबकको यज  
न करते हैं, अंबक शब्द महादेवका विशेषण और त्रिलोचनका  
पर्याय है, सोचो कि-यदि वेदमें साकारता स्वीकार है तभी अंब-  
क उसका वाचक कहा, निराकारता स्वीकार होती तो अंबक  
कहना न रहता, दयानंदजी अंबक शब्दकी व्युत्पत्ति करते थे  
त्रीन् लोकान् अवतीति अंबकः—परंतु अब रक्षणे  
धातुका अंबकरूप नहीं बनता अंबक बनेगा. व्याकरण को-  
शके नियमको ठोकर मनःकल्पना कैसे किया जाय ?—इसी  
कल्पनाने सरस्वतीजीकी विद्वत्ताको हानी पहुंचायी है.

सामवेदीयप्रतिमोपनिषदमें लिखा है. ( प्रतिमा  
पूजनाद्वयत्वं च गत्वा अमृतत्वं च गच्छति. ) प्रतिमा  
पूजनसे ब्रह्मत्व और मुक्ति प्राप्त होती है. आगे बसिष्ठजीने  
ब्रह्मासे पूछा कि-हे जगवन् ! प्रतिमा कैसे हुयी, तब ब्रह्माने कहा.  
पहले एक महापुरुषसे मैं पैदा हुवा, मेरा नाम हिरण्यगर्भ कहते  
हैं, सो महापुरुषकी अंगुली मथन होनेसे जल पैदा हुवा. जलसे  
फेन हुवा, फेनसे बुद्बुद हुवा, बुद्बुदसे अंम और अंमसे दृष्टि  
क्रम-बगेरासो—जानीहि जो प्रतिमा ब्रम्ह मूर्तिः—प्रतिमा  
आठ प्रकारकी जिसमें सात भौमविकारकी और आठमी मानसी,  
भागवतके (११) स्कंधमें कहा है.

शैली दारुमयी लोही लेप्यालेख्या च सैकनी

मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधाः स्मृताः १.

प्रतिमा मनुष्यकों पवित्र करती है, सामवेदके ब्राह्मण जागमें लिखा है कि-देवतायतनानि कंपन्ते-दैवतप्रतिमा हसन्ति रुदन्ति गायन्ति नृत्यन्ति स्फुटन्ति खिद्यन्ति उन्मीलन्ति निमीलन्ति-प्रतियन्ति नद्यः-कबंधं आदित्ये दृश्यते-केतुपताका उत्र वज्र विषाणानि प्रज्वलन्ति-अश्वानां च वालधीष्वंगाराःक्षरन्ति-अहतानि मर्माणि कनिक्रंदन्ते-इत्येवमादिनि सर्वाणि विष्णुदैवत्यानि अद्भूतानि प्रायश्चित्तानि नवन्ति-इति-

अर्थ,-देवताओंके मंदिर कंपायमान होवे, देवप्रतिमाओं हसे, रोवे, गावे, नृत्यकरे, खंभित होजाय, खेदयुक्त होय, नेत्र-मीचे, नेत्रखोले, मूर्धमें कबंध दिखे, नदीयों उलटी बहे, केतु पताका उत्र वज्र पशुविषाण जाज्वल्यमान दिखे, घोमोंकी पूँठसे अंगारे गिरे, बिना मारे घाव हो जाय, इत्यादि जितने उत्पात है उन सबोंका विष्णुदेवता है अद्भूत प्रायश्चित्तों वे शांत होते हैं, निदान ! सामवेदके ब्राह्मण जागमें देवमंदिर और देवमूर्तिका होना सिद्ध है.

अथर्वकांम तिसरेमें लिखाहै-सम्बत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा राज्युपास्महे सान आयुष्मतीं प्रजां रापस्यो-षेण संसृजः ३-(टीका.) संवत्सरस्य रात्रिषु कालरात्रि महारात्रि माहारात्रिश्च तासु यां प्रतिमां प्रतिष्ठायारूपां

त्वां वयंसर्वे उपास्महे-अथवा सम्बत्सरस्य रात्रि र्यथा  
सितकृष्णरूपा स्यात् तद्वत् यां सितकृष्णरूपप्रतिमां  
त्वां वयं उपा स्महे-सा प्रतिमा नःअस्माकं प्रजा राप-  
स्योषेण सहआयुष्यमतीं सम्यक् प्रकारेण सृज-यया  
प्रजया नःसुखं स्पादिति प्रार्थना-

अजुर्वेद अध्याय (१५)

सहस्रस्य प्रमासि-सहस्रस्य प्रतिमासि-सहस्र  
स्योन्मासि-सहस्रायत्वा. (जाष्यं) त्वं सहस्रस्य प्रमा  
नाम प्रमाणमासि-त्वं सहस्रस्य प्रतिमा प्रतिनिधिरसि  
' त्वं सहस्रस्य उन्मानं तुल्यं उर्द्धमानं किलोन्मानमिति  
महानाष्ये-साहस्रःसहस्राहोसि अतःसहस्राय सह-  
स्रफलावाप्त्यै त्वा त्वां प्रोक्षामि.-

(मनुस्मृति-अध्याय दूसरा—)

नित्यं स्नात्वा गुचिः कुर्याद्वैवर्षि पितृतर्पणं,  
देवताभ्यर्चनं चैव समिधादानमेव च, (१७)

(अध्याय चौथा—)

मैत्रप्रसाधनं स्नानं दंतधावनमङ्गानं,  
पूर्वान्हे एव कुर्वीत देवतानां च पूजनं, (१५३)

(अध्याय आठवा—)

तद्भागान्युदपानानि—वाप्यःप्रश्रवणानि च,  
सीमासंधिषु कार्याणि देवतायतनानि च,  
(पाराशर स्मृति—)

वापीकूपतद्भागदि देवतामंदिराणि च  
पतितान्युद्धरेद्यस्तु सपूर्तफलमश्नुते,—

इत्यादि प्रमाणोंसे वेदमें मूर्तिपूजन सिद्ध है, इनका अर्थ कोइ तोमफोम कर अन्यथा करे तो वह मान्य नहीं, टीका और ज्ञाप्यकारोंका किया हुआ अर्थ असत्य होनेमें प्रमाण क्या ? कवि परंपरा करके जो शब्द जिस अर्थमें आरुढ़ है वे शब्द उसी अर्थमें योजन करना चाहिये.—जो पुरुष मूर्तिपूजन सेवनमें बिल्कुल इनकार है उनसे पूठना चाहिये कि-निर्गुण ब्रह्मकी प्रतिमा जो प्रणव है उसका अर्चन और मानसी पूजन तुम करते हो या नहीं ?—ध्वनिमात्र शब्द होता है उसकी प्रतिमा अकार आदि स्वर और व्यंजनकों वाङ्मय अर्चनमें हरवस्तु लाते हो या नहीं ?—वेदकी ज्ञानमय प्रतिमा तुमारे हृदयमें विद्यमान रहती है वह मान्यरूप है या अमान्य है ?—तुमारा शरीर ही तुमारी प्रतिमा है जिसका दिनरात सेवन करते हो यह सत्य है वा असत्य ?—प्रियपुत्र वा स्त्रीकी तसबीर नित्य देखते हो मगन होते हो, दयानंदजीका प्रतिबिंब प्रति आर्यसमाज पास रखते है. फिर विक्टोरियाका प्रतिबिंब दिल्लीमें साहनसाह नखतपर रख गद्दीका अधिकार और जेंट असरफी धरी गयी. राजा महाराजा परिचर्यामें हाजिर थे, हकीकतमें सारा संसार प्रतिबिंबके बशी-

भूत है ऐसे ही त्रिलोकीनाथके प्रतिविंबका कौन इनकार कर सकता है ?—

दयानंदजी अगर मूर्ति नहीं मानते थे तो सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथके पृष्ठ (४१) पर अग्नि होत्रके लिये वेदी-प्रोक्षणीपात्र-पणी-तापात्र-आज्पस्थाली-और चमसा-इस प्रकार बनाना ऐसा चित्र करके न बतलाते. अगर अल्पज्ञोंके समझानेको बतलाये है तो मूर्ति कौनसी सर्वज्ञोंके लिये है ? जब उपरली भूमिकामें पड़ो चोगे मूर्तिपूजा काहेको करनी रहेगो. (कहलावत है कि—)

प्रतिमाजीको पूजना—ज्युं गुमीयांको खेल,

जबमन लाग्यो पीवसें—धरी पटारे मेल. (१)

दयानंदजी सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथमें लिखते हैं जब मुसल्मानोंने देवमंदिर और मूर्तियां तोम माली तब उनके सामने बे लमी क्यों नहीं ? जब अपना ही रक्षण न करसकी तो हमारा क्या कर सकेगी ?—परंतु यह वृथा आग्रह है मूर्ति उस देवकी स्मृति करानेमें सहारा है जो करामात बतावे वह मान्य और इतर अमान्य ऐसा कोई शास्त्रमें लेख नहीं.

बराह मिहिर संहिता बगेरा शिल्प शास्त्रोंमें अर्हन् विष्णु देवता देवीओ बगेराकी मूर्ति बनानेका विधिविधान लिखा है बराहमिहिर प्रथम जैनमुनि थे. जद्धबाहु स्वामीके भ्राता थे.\* जद्धबाहु ठोटे थे बराहमिहिर बम्मे थे. गुरुके पिठे गादीपर बैठनेकी

\* भद्रबाहुस्वामीने भद्रबाहुसंहिता रची. जो अब संपूर्ण नहीं मिलती. ते-रहबर भोक प्रमाण एक हिस्सा कही कही भंडारमें मिलता है.



बाबतगे तकरार होनेसें बराहमिहरने जैन मुनिका वेष ठोम दिया पूर्वोको विद्या जानते ही थे उन्होने संहिता वगेरा ग्रंथ रचे, अनुमान इन्होंको (११००) वर्षसें कुछ अधिक वर्ष हुवे. सोचोकि-अगर मूर्तिपूजन थोमे समयसे चला है तो पुराने ग्रंथोंमें इसका विवेचन कैसे होता ?

जैन आगमके प्रमाण पहले दे चुके है विशेष जंबूद्वीप म-झमि जिवाजिगम और महानिशीथमें लिखा है वीतरागकी प्रतिमाके समीप मुनि आलोचन प्रायश्चित्त लेवे, व्यवहार सूत्रमें जो यही वर्णन है. सोचोकि-अगर जिनप्रतिमा जैनशासनमें अमान्य होती तो ये अधिकार कैसे होते ?-शय्यंजवसूरि-और आञ्जकुमार मूर्ति देखकर प्रतिवांध पाये. अनेक जीव मूर्तिके आलंबनमें संसार समुद्र तिरे है.

इसप्रकार मूर्तिपूजापर व्याख्यान मुनकर-श्रावक राजमल-जी [ जो इस मोरारठावनीके ही रहनेवाले हैं ] ने कहा कि-मैं कितनेक समयसें दुंदक आम्नायमें श्रद्धावान् हुवा था. अब मूर्तिके बारेमें मेरा संशय न रहा. मूर्ति मानना सत्य है. दुंदियेपने-की श्रद्धा झूठी होनेमें ठोमताहु. उसी वरुत मज्जाके रुबरु सम्य-क्तमूल श्रावकधर्म अंगीकार किया. विधिके साथ वासक्रेष लिया और पूजन स्वधर्मी वत्सल वगेरा महोत्तव किया. तिसरे महर हमारा आना लश्कर हुवा.

चौमासा पूरा होनेपर धर्माधिकारमें जो ज्ञातासूत्र वाचतेथे ते पूरा बाचा, चौमासाके बाद मोरार ठावनी गये, एक सप्ताह यहां ठहरे, पुनः लश्कर आये. धर्माधिकारमें अंगचूजियासूत्र

बाचना शुरू किया, फिर उपासकदशांग और फिर विविधतीर्थकल्प वाचते रहे.

संवत् [ १९४९ ]-चैत्र शुक्ल [ ७ ] के रोज यतिजी ०५० माधवचंड़जीने-जो पं० पं० बालालजीके शिष्यके शिष्य है इसी लश्कर दानावली बाजारमें रहते हैं हमसे निम्न लिखित (३?) प्रश्न पूछे, जिसका उत्तर इस प्रकार दिया.

१-प्रश्न,-सम्यक्त जीवका निजगुण है वा परगुण है ?

उत्तर-निश्चयनयकी अपेक्षा निजगुण है और व्यवहार नयकी अपेक्षा परगुण है.

२-प्रश्न,-सिद्ध महाराजमें सम्यक्त पाइये वा नहीं? पाइये तो कोनसा ? और उसकी स्थिति कितने कालकी ?

उत्तर-सिद्धमें द्वायिक सम्यक्त पाइये. द्वायिक सम्यक्तकी स्थिति संसारा वस्थामें (६६) सागरोपम, -सिद्धोंके एक सिद्धकी अपेक्षा सादि. अनंतकाल और अनंत सिद्धोंकी अपेक्षा अनादि अनंतकाल.

३-प्रश्न,-प्रज्ञापना सूत्रमें चारों प्रकारकी ज्ञापा बोलता हुआ आराधक कहा. सो अमत्य ज्ञापा बोलता हुआ साधु आराधक कैसे संजवे ?

उत्तर-आचारांग सूत्रमें अधिकार है कि-अटवीमें मुनिचले जाते हो, हिरनका झूंम पास होकर चला गया. पिछेसे पारधि आनकर मुनिसे पूछे कि जो साधो ! तुमने हिरन देखे ? तब मुनि जानता हुआ जो कहे कि-मैं नहीं जानता हूं. इसमें आप्त प्रणीत आगम वचन प्रमाण है. आप्त वचन सदैव हितावह होता

१२६ यतिजी पं० साधवचंजजीके प्रश्नोका उत्तर.

है. लोकीकमें यह प्रसिद्ध है कि—“सत्यं हि तत् नूतहितं यदेव,”—

४-प्रश्न,—जिसमें एक अंक और मिला देवेतो असंख्याते हो जाय ऐसा संख्याता कितने अंकका हो ?

उत्तर,—जैन आम्नायमें [१.७४] अंकतकको संख्यातेकी संज्ञा है, और उसका नाम शीर्षमहेलिका कहते हैं. इसपर एक अंक बढ़ानेसे आगे असंख्यातेकी संज्ञा है.

५-प्रश्न,—एक आकाश प्रदेशमें अजीबके जेद कितने पाइये?

उत्तर—धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय इन तीनोंके प्रदेशकी अपेक्षा तीन जेद-पुद्गलके चार-स्कंध, देश, प्रदेश, और परमाणु, कुल सात जेद हुवे. क्षेत्रकी अपेक्षा प्रश्न है तो एक जेद कालका और बड़ेगा.

६-प्रश्न,—जीबके आठ रुचक प्रदेश कर्मोपाधिसें लिप्त हो या नहीं

उत्तर—नहीं होवे, अगर वें जी लिप्त होवे तो जीब अजीब हो जाय, (युक्तं)-

स्पृश्यंते कर्मणा तेऽपि-प्रदेशा आत्मनो यदि,

तदा जीवो जगत्यस्मि अजीवत्वं प्रपद्यते. १,

७-प्रश्न,—अचारह पन्मिया (अग्निग्रह विशेष) बहून करनेवाला श्रावक कितनी पन्मिमातक चंदनपुष्पादि सामग्रीसें जिनपूजा करे,!

उत्तर,—सातमी पन्मिमाकी पूर्णाहुती तक चंदनपुष्पादिसें जिन पूजा करे. ललितविस्तरा पंजिकामें यह कथन है.

८-प्रश्न-रात्री जोजन करनेवालेकों दूसरे दिन अगर नव-कारसी, पोरसी, एकाशन, आचाम्ल वा उपवास आदि तप करना हो तो हो सके वा नहीं, ?

उत्तर-हो सके, शास्त्र आइहासें विरुद्ध नहीं. क्योंकि-सू-योंदयसें उसका नियम शुरू होता है.

९-प्रश्न,-उपपातिक आदि उपांग सूत्रके रचयिता कौन कौन हुवे, ? जैसे प्रज्ञापना उपांगके रचयिता श्यामाचार्य.

उत्तर,-तीर्थकरके शिष्य समुदायमें गणधर शिवाय अन्य जो स्थविर मुनि होते हैं वे उपांग सूत्रके रचयिता हैं.

१०-प्रश्न,-कौन कौनसे गुणस्थानमें वर्त्तता जीव मृत्यु न पावे?

उत्तर, मिश्र-क्षीण मोह-और सयोगी केवली-इन तीन गुणस्थानमें वर्त्तता हुवा मृत्यु न हो, शेष ग्यारह गुणस्थानमें हों.

११-प्रश्न-सामायिक जीव वा अजीव ? इव्य वा गुण, ?

उत्तर,-इव्यार्थिक नयकी अपेक्षा सामायिक गुणमें परिणमन हुआ हुवा जीव ही सामायिक है, पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा सामायिक जीवका एक गुण है. आंवश्यक सूत्रकी नि-र्युक्तिमें यह वर्नन है.

( गाथा. )

जीवो गुणपन्निबन्धो-नयस्स दब्बठिअस्स सामाहयं,  
सोचेव पक्कठिअनयस्स जीवस्स एस गुणो. १

१२-प्रश्न-जिसकी गुरुपरंपरामें शिथिल आचार हो गया है उसमेंसें कोई यतिजी क्रिया उद्धार करना चाहे तो उनको अन्य मुनिके पास चारित्र्य उपसंपदा लेनी चाहिये कि नहीं ?

वा सुधर्मस्वामीकों ही गुरुमानकर क्रिया उद्धार कर लेना ?

उत्तर-जिसके एक दो तीन पद तक गुरु परंपरामें शिथिलता हुयी हो प्रायः उस परंपरामें समाचारी सर्वथा नाश नहीं होती, इस लिये उसमेंसे कोई शरत् क्रिया उद्धार करना चाहे तो उसकों अन्य गुरुके पास चारित्र्य उपसंपदा लेनेकी जरूरत नहीं. जिसके चार आदि गुरुपट्ट परंपरासे शिथिलता हुयी है उसकों अन्य गुरुके पाससे चारित्र्य उपसंपदा लेकर क्रिया उद्धार करना चाहिये. क्योंकि-सर्वविरति सामायिक विद्यमान गुरुके पास ही लिया जाता है. जो इस तरह नहीं करते हैं और सुधर्मस्वामीको गुरु मानकर मुनिपना स्वीकार कर लेते हैं वह बात जैन आगमसे विरुद्ध है.

१३-प्रश्न,-प्रदेशी राजाकों केसीकुमार श्रमण निर्ग्रंथमुनिने कहा कि-पहले रमणीक होकर पीछे अरमणीक मत होना. प्रदेशी राजाने कहा आजसे मैं राज्यके ( ४ ) जाग करुंगा. सो चार जागमेंसे कौनसे जागसे धर्म पैदा हुवा ? और वह रमणीक हुवा, ?

उत्तर,-प्रदेशी राजाने अपने राज्यकी आमदनीके ( ४ ) जाग किये. एक जाग सैन्य वाहनके लिये-एक जाग कोष्टागारके लिये-एक अंतःपुर (रानीयों) के लिये-और एक दानशाखा आदिके लिये-दिया. हकीकतमें चारों ही विजाग धर्मकी सापेक्षतालिये हैं, अगर इनमेंसे कोई जी हिस्सा अधर्मरूप होता तो केसीकुमार श्रमण निर्ग्रंथ उसे मनायी करते कि-अयूक्त हिस्सा अधर्मरूप है अरमणीक है, इस लिये जाना जाता है चारों

ही हिस्से बीतरागकी आज्ञा संयुक्त है. और बीतरागकी आज्ञामें धर्म है.

१४-प्रश्न-केवल मनसे विचारा हुवा पाप निकाचित हो सकता है या नहीं, ?

उत्तर,-केवल मनसे विचाराहुवा पाप निकाचित हो सकता है और नहीं भी होसकता. निकाचितके अध्यवसाय फरसे तो निकाचित कर्म बंध हो-अनिकाचितके अध्यवसाय फरसे तो अनिकाचित कर्म बंध हो. अध्यवसाय स्थान आश्रित कर्म बंध पमताहै. जैसे तंडुलमट्टकी तरह कोइको निकाचित-और प्रसन-चंद्र राजर्षिकी तरह कोइको अनिकाचित बंध पमे. जहां मनयोग है वहां वचनकाया भी है, क्योंकि-एक काययोगके विशेष विज्ञा-गको वचन मनयोग कहाहै. आवश्यकमूत्रवृहद्वृत्ति-विशेषावश्यक-और लोकप्रकाशमें यह अधिकार है

१५-प्रश्न,-स्थापनाचार्य जिनके सामने प्रतिक्रमण आदि क्रिया करते है यह गुरुस्थापना वा अरिहंतकी स्थापना है ? गुरु-स्थापना है तो इनके सामने शक्रस्तव कहना कैसे बने. ?

उत्तर,-यह गुरुस्थापना है अरिहंतकी नहीं. जैसे जिन अज्ञावे जिनप्रतिमा तैसे गुरु अज्ञावे गुरुस्थापना. यह लेख अनु-योगद्वार-द्वंदारवृत्ति-और प्रतिक्रमण गर्जहेतुमें है. आवश्यकक्रिया वगेरामें चैत्यवंदनके समय गुरुस्थापनाके सामने शक्रस्तव पढ़नेमें कोइ हर्ज नहीं. क्योंकि-जितनी क्रिया करनी गुरुसाक्षीसे करनी कही है.

१६-प्रश्न,-आर्क्षा नक्षत्रपर सूर्य आये पीठे विहार नहीं

## १३० यतिजी पं० माधवचंद्रजीके प्रश्नोका उत्तर.

करना यह कौनसे सिद्धांतमें कहा है ?

उत्तर-आर्घा नह्त्रपर सूर्य आये बाद मुनिको विह्वल नहीं करना यह बात कोइ सिद्धांतमें नहीं देखी. केवल जलप्राय देशोंमें बरसात आदिके कारण जीवोंकी उत्पत्ति देखकर यह रीति पूर्वाचार्योंने पीठोंसे थुरु कीयी है जैसे गुजरात देशमें है. मालवा-मारवारु-मेवारु-ढुंढार पंजाब वगेरा देशोंमें आषाढ सुदी (१३) तक मुनिजनों विहार करते हैं.

१७-प्रश्न-दृष्टिवादकों ( १४ ) पूर्वके अंतर्गत समझना वा पूर्वोका एकविज्ञान समझना ?

उत्तर,-चौदह पूर्वकों दृष्टिवादके अंतर्गत समझना क्यों कि-<sup>\*</sup>दृष्टिवादका तीसरा अध्ययन (१४) पूर्व है.

१८-प्रश्न,-जगवती सूत्रमें कहा है असंयती अव्रतीकों जोजन जीमानेवाला एकांत पापकर्म बंधन करे, निर्जरा न करे, यह कौनसे न्यायका वचन,

उत्तर,-असंयती अव्रतीकों मोक्ष निमित्त जोजन जीमावे अर्थात् इन्होंकों जोजन जीमानेसें मैरी मुक्ति होयगी ऐसा जानकर जीमावे तो एकांत पाप कर्म बंध करे इस न्यायका वचन है. जगवती सूत्रका आठमा शतक उठा उद्देश देखो.

१९-प्रश्न,-नवतत्त्वमें होय कितने ? उपादेय कितने और हेय कितने, ?

---

<sup>\*</sup>दृष्टिवादके पांच अध्ययनके नाम-१, परिकर्म-२, सूत्र-३, पूर्वानुयोग-४, पूर्वगत-और ५, चूलिका.

उत्तर,—जीव अजीव ज्ञेय-पुन्य संवर निर्जरा मोक्ष  
उपादेय-पाप आश्रय और बंध हेय है.

३०-प्रश्न-पृथ्वी स्थिर है या फिरती है ?-गोल है या स-  
पाट है ? गोल है तो नींबूके आकार वा स्थालीके आकार है ?

उत्तर,—पृथ्वी स्थिर है फिरती नहीं. स्थालीके आकार  
गोल और सपाट है नींबूके आकार नहीं. अगर पृथ्वी फिरती  
है तो कहो उर्ध्व अधः फिरती है वा तिर्यग् फिरती है ? उर्ध्व  
अधः फिरती है तो उर्ध्व स्थित पदार्थ अधः आनेसे गिरनेकी  
संज्ञावना है. तिर्यग् फिरती है तो कहो किमके आधार वह एक  
स्थानमें स्थित रहकर फिरती है ? याने जिस कीलकके आधार  
वह फिरती है उस कीलककी आधार कोइ अन्य पृथ्वी जी है  
जिसमें वह कीलक लगा हुआ है. जैसे कुंजकारके चक्रके नीचे  
कीलक होता है. अगर कहोगे पृथ्वी निराधार हि रहकर  
फिरती है तो सोचो कि-गुरु पदार्थ निराधार कैसे ठेर शकेगा ?  
जो जो गुरुपदार्थ देखा सो सो निराधार नहीं देखा, इससे नि-  
श्चय मानना पड़ेगा कि-पृथ्वी किसीके आधार रही है. सिद्धांत  
शिरोमणि ज्योतिष् ग्रंथका रचयिता ज्ञास्कराचार्य कहता है  
पृथ्वी मोदकके आकार गोल और विना आधार आकाशमें  
स्व स्वज्ञावसे स्थिर है जैसे सूर्य और अग्निमें उष्णता चंद्रमामें  
शितलता पाषाणमें कठिनता और वायुमें तिर्यग् गतिका स्वज्ञाव  
है तद्वत् पृथ्वीमें निराधार स्थिर रहनेका स्वज्ञाव है परंतु यह,  
बात केवल जो ज्ञास्कराचार्यके रागी है उन्हीको मानने योग्य  
है इतरजनोंको तो युक्ति प्रमाण सहित हो मानने योग्य है, पृ-



ध्वी गुर्वी पदार्थमें निराधार स्थित रहना यह स्वज्ञाव प्रमाणसे बाधित है. जास्कराचार्यकों ज्योतिषीलोग सर्वज्ञ कहते हैं परंतु उनके वचन सर्वज्ञताके नहीं हैं, ये महाशय महाराष्ट्र देशके ज्ञा-  
 क्षण थे इन्होंने प्राचीन सिद्धांतोंको देखकर सिद्धांत शिरोमणि  
 अंश (३६) वर्षमें तयार किया. फिर जो बहोत जगह भूल गये,  
 कबित्वशक्ति अच्छी होनेसे सिद्धांत शिरोमणिकों लोग पढ़ने  
 लगे, लंबन नति क्षेत्र जास्काराचार्यने बिल्कुल अशुद्ध बनाया,  
 भुज कोटि कर्ण तीनों ही वृहद्वचनोंमें कह दिया, और उनकी  
 मणित मान्य जी न हुयी. परंतु खेर ! इन बातोंसे अपनेको यहां  
 कोई जरूरत नहीं, पृथ्वीके गोल आकारमें उन्होंने जो कहा  
 है कि-भूगोलके उपर ठीक मध्य जागमें लंकापुरी है-पूर्वमें यम  
 कोटि पश्चिममें रोमक पत्तन-और ठीक नीचे सिद्धपुरआदि न-  
 गर हैं. यहां परिक्रमक जनो सवाल कर सकते हैं कि-सिद्धपुर  
 आदि नगरके कुवोंका जल निराधार कैसे उठर सकेगा, ? ध्वी  
 पदार्थ निराधार नहीं रह सकता. कहोगे आकर्षण शक्ति पृ-  
 थ्वीमें है वह उहरा लेती है तो सोचोकि-आकर्षण शब्द स्पुद्ध  
 प्रत्ययांत करण अर्थमें होता है, निदान ! आकर्षण शब्द करण  
 वाचक हुवा. आकर्षक कर्ता कोई अन्य होना चाहिये, अगर  
 कहोगे पृथ्वी ही आकर्षक है तो कहिये ! आकर्षक शक्ति पृथ्वीमें  
 निम्न है या अज्निम्न ? निम्न है उसका आधार कौन पदार्थ है ? अ-  
 ज्निम्न है तो पृथ्वीके साथ लगी हुयी सजी वस्तुमात्रकी चखन शक्ति-  
 का अज्ञाव होना चाहिये और है नही इस लिये प्रत्यक्ष विरोध है.  
 ज्योतिषके (१०) सिद्धांतोंने पृथ्वीको मोदकके आकार

गोल और स्थिर मानी, इनमें आर्य जड़ सिद्धांत वालेने इतना विशेष माना कि-पृथ्वी फिरती जी है. अंग्रेजोंने इसी आर्यजड़-सिद्धांतका आधार लिया है. जो बालक अंग्रेजी पढ़नेमें उद्योगी है उन्हेंकों भूगोलविद्या पढ़नी ही होती है. बस ! उन्हेंकों दिख्यें यह संस्कार पुरत जमजाता है कि पृथ्वीका फिरना सच है. परंतु युक्तिद्वारा सिद्ध नहीं होता, अगर पृथ्वी फिरती है तो एक गांव दूसरे गांवसे जिस दिशामें है बदलजाना चाहिये वरसातसे इंद-सरोवरआदि जलमें जरने न चाहिये. वरसात दोघंटेतक समजो एक जगह वरसता रहा. और पृथ्वी वहांसे दोघंटेमें ( १६०० ) कोस दूर चली गई. क्योंकि-पृथ्वीको फिरना माननेवालोंने माना है कि पृथ्वी एकघटीकामें [ ३२० ] कोस काटती है, इससे इसका वेगजी बमा जारी हुवा, इस वेगसे उत्पन्न होता हुआ पवन बमेवडे वृक्ष मकान आदिकों तोमने वाला कैसे न होशकेगा ?-पृथ्वी फिरती है तो पंखी अपने मालोंसे उमकर फिर अपने मालोंकों न पाशकेगे. क्योंकि दोघंटे बे आकाशमें उमते रहे इधर पृथ्वी चलकर उस जगहसे ( १६०० ) कोस दूर चली गयी. सबूतर उमानेवाले अपने मकानसे सबूतर उमते है फिर वे पहरदोपहरकेबाद उसी जगह आन बैठते है जहांसे उमे बे. फिरना माननेवालोंकी अपेक्षा वहस्थान दूर चलागया पाना न चाहिये. पतंग उमानेवाला एक मकानपर बम्बरडकर पतंग उमाता है समजोकि-मोर बीचमेंसे दूट गयी. उमानेवाला मनुष्य पृथ्वीकेसाथ लगाहुवा चलाजाता है. पतंग आकाशमें घूमता हुवा फिर जमीनपर उसीजगह थोमीसी दूर

आनकर गिरा दिखता है वह न-दिखना चाहिये. निदान ! कि-सी मूरत पृथ्वीका फिरना नहीं सिद्ध होता.

प्रश्नोत्तरी प्राकृतिक भूगोल चंद्रिका जो हिंडस्थानी ज्ञापामें लपी है उसके (५) में पृष्ठपर लिखा है कि-पृथ्वी फिरती है परंतु हमको मलूम नहीं होता जैसे नदीपर नाव घूम जाता है और उसके आदिमियोंको मलूम नहीं होता. इसीतरह पृथ्वीके रास्तेमें कोई एसी चीज नहीं है कि-वह टकरावे या रुकजावे जिससे हमको मलूम हो. यहां हमारा सवाल है कि-पृथ्वी नि-राधार फिरती है कि साधार ? अगर कहोगे कीलीके आधार फिरती है तो कहिये ! वह कीली किसके आधार है ? फिर उसी पृष्ठपर भूगोल कर्त्ताने लिखा है पृथ्वीकी कीली एक क-ल्पित रेखा है, जब कीली कल्पित रेखा है तो हम कहते हैं पृथ्वीका उसके उपर स्थित रहकर फिरना जी कल्पितमात्र है, फिर भूगोलकर्त्ताने लिखा है जैसे गेंदपर स्याहीकी बिंदू माल दीजावे और उसको उंधा करदियाजाय तो स्याहीका बिंदू उस जगहसे स्थान नहीं बदलता और न गिरजाता है तद्वत् पृथ्वी उर्ध्व अधः फिरती है परंतु उसपरसे चीज नीचे नहीं गिरती, आकर्षण सक्तिसे थंजी रहती है. परंतु यह कहना वृथा है, क्यों कि-स्याहीका बिंदू गेंदसे एकमेक याने अजिन्न है और हम तुम हाथी-घोमे-पडर-जल-शिला-जामे वर्त्तन-आदि असंख्य चीजें पृथ्वीसे जिन्न है, जैसे गेंदपर गेहू या बाजरीका दाना रखा जाय और फिर गेंदको उल्टादिया जाय जरूर गेहूका दाना गिर जायगा, इसीतरह पृथ्वीके उर्ध्व अधः फिरनेसे असंख्य चीजें

जी ज़रूर गिर जायगी कोई अटक नहीं सकता. आकर्षण शक्तिका सहारा लेते हो परंतु वह आपकी आकर्षण शक्ति कहने ही मात्र है, अगर आकर्षण शक्ति पृथ्वीमें होती तो हम तूम जो अपनी दृष्टा पूर्वक गमन कर रहे है रोक न लेती ? और जहां हम तूम बैठते है वहां ही पकड़ न लेती ?-भूगोलविद्या लिखने वाले तर्क करते है कि-अगर पृथ्वी अपनी कीलीपर न घूमती तो उसके आधे हिस्सेपर सदा प्रकाश और आधे हिस्सेपर सदा अंधेरा रहता, परंतु जब पृथ्वी घालीके आकार गोल है जिसके ठीक मध्यमें मेरु पर्वत है, मेरुके चारों ओर आकाशमें सूर्य चंद्र आदि ग्रहतारागण फिरते है बीचमें निषध नीलवंत पर्वत पूर्व पश्चिम पमनेसे दिन रात वगेरा सब प्रवर्तन यथातथ्य हो रहा है, फिर सदा एक जगह प्रकाश और अंधेरा रहनेका क्या हेतु रहा ?

फिर नयीरोशनीवाले कहते है सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चोफेर घूमती है. अगर यह सत्य है तो अमावास्याके रोज चंद्रमा सूर्यजायाके नीचे और पौर्णमासीके रोज सन्मुख क्योंकर हो जाता है ? और एक राशिपर अनेक ग्रहोंका एकत्र होना फिर जिन्न जिन्न हो जाना जो प्रगट रूपसे देखनेमें आता है क्यों कर संभव हो ?-निदान ! पृथ्वीका फिरना और चंद्र सूर्यादिग्रह गणका स्थिर रहना किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता. पृथ्वी मोदकके आकार गोल नहीं. अठारह सिद्धांतवाले ज्योतिषी जो कह रहे है, ज्योतिष्यका सर्वांगको बिना जाने कह रहे है, ज्योतिष्यका सर्वांग जाननेकी जिनको दृष्टा है, चंद्रप्रज्ञप्ति

सूर्यप्रज्ञप्ति सिद्धांत देखो, आजकल जितना प्रचार ज्योतिषका चल रहा है कुछ दो अठाइ हजार वर्षों नया शुरू हुआ है इसके पहले आर्यावर्तमें जिस प्रकार ज्योतिषका प्रचार था चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्य प्रज्ञप्ति सिद्धांतमें देख लो. वह गणित वह क्षेत्रफल वह गति आजकल व्यवहार गिणानामें चलनी मोकुफ होगयी है, जर्मनी देशस्थ जोकोवी साहबने आचारांग और कल्पसूत्रका अंग्रेजीमें उल्था (तरजूमा) किया है उसकी प्रस्तावनामें चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति सिद्धांतकी ज्योतिष गिणानाकों प्राचीनता दिखानेमें उत्तम युक्ति तर्क वितर्क दिनी है. लिखा है कि- चंद्र प्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति जैनागम ग्रीकलोकोके हिंदूस्थानमें आये पहलेके है, क्योंकि-जो जो ज्योतिष संबंधी हकीकत इनमें है ग्रीकलोको के ज्योतिषशास्त्रमें नहीं.-जैन आगममें निषधपर्वतके उपरसें सूर्यका उदय होना और तिरश्चोन गतिसें सायंकालको उसी पर्वतके पश्चिम जागपर जायकर अस्त होना, मंमलोंद्वारा ज्योतिषचक्रका भ्रमण होनेसें अयन आदिका व्यवहार होना, घनवायु तनुवायुके आधार रही हुयी पृथ्वी स्थालीके आकार गोल और सपाट होना, सत्य मलूम होता है.

११-प्रश्न,-सूर्यचंद्र ग्रह नक्षत्र तारे जमीनसें कितने उंचे है?  
उत्तर,-(७६०) योजन उंचे तारेके विमान-(८००) योजन सूर्यका विमान. (८८०) योजन चंद्रमाका विमान-(९००) योजन शनैश्वरका विमान जमीनसें उंचा है.

१२-प्रश्न,-पच्चीस क्रियामेंसें (११) में और (११) में गुणस्थान कितनी क्रिया पावे ?

उत्तर,-११-१२-१३-में गुणस्थानमें एक इर्याप्रक्रिकी क्रिया पावे.

१३-प्रश्न,-शुजयोगमें पुन्य संवर निर्जरा तीनोंही होवेया कमी बेसी, ?

उत्तर,-शुजयोगमें पुन्य संवर निर्जरा तीनोंही होंवे, तैर-हमें गुणस्थानमें केवलीकों सातावेदनो कर्मका बंध है.

१४-प्रश्न,-सम्यक्त कितने दंमकमें उपजे ?

उत्तर,-पांच स्थावरके पांचदंमकमें सम्यक्त न उपजे, तीन विकलेंद्रियके तीन दंमकमें अपर्याप्त अवस्थामें पिडले जखत शाय लाया हुवा हो, नया न उत्पन्न होवे. शेष सोलह दंमकमें नया उत्पन्न होवे.

१५-प्रश्न,-गत्यंतर जाते अपांतराल मार्गमें पांचप्रकारके शरीरमेंसे कितने शरीर? कितने योग हो, ?

उत्तर,-तैजस कर्मण दो शरीर और एकही कर्मणकाययोग,

१६-प्रश्न,-र्षीन्द्रिय त्रीन्द्रियमें उपयोग कितने ? और वायु कायमें योग कितने, ?

उत्तर,-१-ज्ञान-१, अज्ञान-१, अचक्षुदर्शन. यह पांच उपयोग र्षीन्द्रिय त्रीन्द्रियजीवोंमें पाइये, वायुकायमें १, उदारिक-१, उदारिककामिभ्र-१, वैक्रिय-४, वैक्रियकामिभ्र-और-५, कर्मणयोगयह पांच योग पाइये.

१७-प्रश्न,-मुनिकों एकीले विहार करनेकी जिनाज्ञाहै, ? वा नही ?

उत्तर,-आज्ञा है. ( यतः आगमवचनं.)

गीयथ्य विहारो, बीयो गीयथ्य मिसओ जणियो,  
एस तईयो विहारो—नाणुन्नाओ जिएवरेहिं, १

अर्थ:—गीतार्थमुनि एकीला विहार करंतोनी जिनाझा विरुद्ध नहीं. दूसरा गीतार्थमिश्रित अर्थात् एक मुनि गीतार्थ और दूसरे अंगीतार्थमिलकर विहार करे तोनी जिनाझाविरुद्ध नहीं. इसके शिवाय तिसरे प्रकारका विहार करनेकी जिनाझा नहीं. कितनेक मुनि अंगीतार्थ मिलकर विहार करते है उनमें एकनी गीतार्थ नही परंतु वे अपने बहोत मुनिसमुदायका मान करके अपने आपको संयमी कहलातेहै, ज्ञानी इनमें कोई गीतार्थ नहीं इसलिए अंगीतार्थ विहार कहकर संयमका अज्ञाव बतलाते है. निदान ! आगमवचनका तात्पर्य यह हुवाकि—कुछ पांचसातसाधु अंगीतायोंके इकठे मिलनेपर संयमका सद्ज्ञाव नहीं, संयमका सद्ज्ञाव गीतार्थसे है, चाहे गीतार्थ एकीलाविचरे, वा. दोचार मिलकर विचरे, वा एक गीतार्थ औरउनके साथ अंगीतार्थ मिलकर विचरे सब जिनाझा के आराधक है. गीतार्थके बिना पांच दस इकोड मिलकर विचरे तोनी वे आराधक नहीं. किंतु विराधक है.

१०-प्रश्न,—पांच ज्ञावके एक एक ज्ञावमें कितने कितने बोलपाइए ?

उत्तर,—उपशम सम्यक्त और उपशम चारित्र उपशमज्ञावमें पाइए. क्वायिकसम्यक्त क्वायिकचारित्र केवलज्ञान केवलदर्शन दान लान जोग उपजोग और वीर्य यह (ए) क्वायिकज्ञावमें पाइए. सायोपशम सम्यक्त क्वायोपशम चारित्र

संयमासंयम मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनःपर्यायज्ञान  
मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान विभंगअज्ञान चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन  
अवधिदर्शन दानलब्धि लाभलब्धि जोगलब्धि उपभोगल  
ब्धि और वीर्यलब्धि यह ( १० ) क्लायोपशमभावमें पाइये.  
चारगति (नरक तिर्यच मनुष्य देव. )-चार कषाय ( क्रोध मान  
माया लोभ. ) स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद मिथ्यादर्शन अज्ञान  
असंयम असिद्ध और उह लेश्या यह ( २१ ) औदयिकभावमें  
पाइये. जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व अस्तित्व अन्यत्व कर्तृत्व भो-  
क्तृत्व गुणवत्त्व असर्वगतत्व अनादिकर्मसंतानबद्धत्व मदेशत्व  
अरूपत्व नित्यत्व-इत्यादि अनादि परिणामिक जावमें पाइये.

१९-प्रश्न,-नेरहमें चौदहमें गुणस्थान भाव कितने पाइये.

उत्तर.-औदयिक क्लायिक और पारिणामिक तीनभाव पाइये.

३०-प्रश्न,-हुंढियेलोग चैत्य शब्दका अर्थ ज्ञान करते है.

अथवा कोइ उद्मस्थ अरिहंत ऐसा करते है, अथवा कोइ साधु  
ऐसा करते है यह बात सत्य है कि असत्य ?

उत्तर,-असत्य है. व्याकरण कोश वा आगमधारा यह  
अर्थ सिद्ध नहीं होता. चैत्यशब्दका सत्य अर्थ यह है हेमचंद्र  
सूरिकृतनाममालामें चैत्यावेहारौ जिनसद्गनि इति-स्वो-  
पज्ञवृत्तौ-चीयत इति चितिः तस्य जावश्चैत्यं जावेयण  
प्रत्ययः-तथा अमरकोशे चैत्यमायतनं प्रोक्तं-धातुपा-  
ठवृत्तौ चिञ् चयने इत्यस्य धातोः प्रयोगश्चैत्यं-हेमाने  
कार्यसंग्रहे चैत्यं जिनौक स्तद्विबंश-इति-चैत्यशब्द-



का अर्थ जिनबिंब जिनमंदिर और जिनसज्जातह है.

३१-प्रश्न,—हुंडिये लोक [३१] सूत्र कौन कौनसे मानते है और अपनेमें कितने मानते है ?

उत्तर,—[११] अंग, [१२] उपांग, चारमूल (दशवैकालिक-उत्तराध्ययन-नंदीसूत्र और अनुयोगचार.) ठेदग्रंथ चार दशाश्रुतस्कंध-वृहत्कल्प-व्यवहार और निशीथ.) वत्तीसमा आवश्यक सूत्र-ये (३१) सूत्र हुंडिएलोग मानतेहै, चारमूलमें फेरफार कराहै वह (६) ठेदग्रंथमेंसे चारहो ठेदमाने दो नही माने.

अपनेमें (११) अंग, [१२] उपांग,—दशाश्रुतस्कंध, वृहत्कल्प व्यवहारसूत्र, पंचकल्प, निशीथ, और महानिशीथ, ये [६] ठेद ग्रंथ. चारमूलसूत्र ( आवश्यक-दशवैकालिक-पिंरुनिर्युक्ति और उत्तराध्ययन.) अनुयोगचार और नंदीसूत्र मुख्य करके ए [४५] मानतेहै, नंदीसूत्रमें (८४) आगमके नाम है बेज्जी मान्य है. (१४०००) प्रसिद्ध एक महावीरस्वामीके शिष्यके रचित नंदीसूत्रमें लिखेहै सब मात्थहै. विशेष क्या कहे ! महावीरस्वामीसे लेकर आजतक पूर्वाचार्योंने जितने शास्त्रसिद्धांत रचेहै जो जो द्वादशांगवानीके अनुसार है वे सज्जी मान्यहै.

वैशाख ज्येष्ठ आषाढ महिनेमें नंदीसूत्र व्याख्यानमें बाचा. आचारदिनकर जो जावनाधिकारमें बाचते थे पूरा किया. सिद्धांतशिरोमणिका मोलध्याय इनदिनोंमें कंठाग्र किया. चौथासा लगते पहले आषाढ शुक्ल (१३) के रौज ठाणांगसूत्र और वासुपूज्य चरित व्याख्यानमेंवांचना शुरु किया. श्रावणशुक्ल [ए] के रौज जैनधर्मप्रसारक सज्जाके मंत्रा अमरचंद घेलाजाइ एक प्र-

कारका चलता विरोधकी कृपा मागनेकों हमारे पास आये. तीन रौज रहे. फिर अपने शहरकों गये. पर्युषणपर्व बतीत होनेके बाद जयपुरसें प्रिन्सिपल हरिदासजीने पंमित जगन्नाथजी द्वारा जैन बोधके संबंधमें कितनेक सवाल हमसें पूछे. उसका उत्तर लिखकर उसीके बारेमें एक सविस्तर निराळा विषय लिखा सो यह है.

### ( जैन बोधका जेद. )

कितनेक महाशय जैन बोधको एक और कितनेक एक दूसरेकी शाखा समझते है. परंतु जैन बोध एक नही, न एक दूसरेकी शाखा है. कितनेक कहते है एक दूसरेकी पुस्तकोपरसें नकल कियो, कितनेक कहते है दोनोने-“बौधायन”-जो वैदिक-मतका पुस्तक है उस परसें नकल कियो. परंतु यह बात गलत है. क्योंकि जो बात जैन पुस्तकोमें है वह बौधायनमें नही, जो बौधायनमें है वह जैनमें नही. कितनेक कहते है जैन बोधके इतिहासकी बातें परस्पर मिलती है इसलिये दोनो एक है. परंतु इतिहासकी बातें कहाँ मिलती है ! जैनमें (१४) तीर्थंकर मानते है बौधमें (७) मानते है. चोइसमे तीर्थंकर महावीर और बौधमतके आचार्य गौतमबुध एक समयमे हुवे परंतु इससें यह नही कह सकते है कि-जैनबोध एक है, रिवाज जी निम निम है. एक दो बातें मिलनेपर एक नही हो सकते.

महावीरके पिताका नाम सिद्धार्थ और गौतमबुधके पिताका नाम शुद्धोदन था. महावीरकी माताका नाम त्रिशला-गौतमबुधकी माताका नाम गौतमी था. महावीरकी स्त्रीका नाम

यशोदा-गौतमबुधकी स्त्रीका नाम यशोधरा था. महावीरके भ्रा-  
तृका नाम नंदीवर्द्धन-गौतमबुधके भ्राताका नाम नंद था. महा-  
वीरका जन्म \*कृत्रियकुंरु ग्राममें हुआ गौतमबुधका जन्म नेपाल  
की तराइमें सुंसारमारपर्वतके पास कपिलवस्तु ग्राममें हुआ. महा-  
वीरकी माता महावीर ( १८ ) वर्षके हुवे तबतक जीयो-गौतम  
बुधकी माता गौतमबुधके जन्मते ही गुजर गयी. महावीरको कोई  
पुत्र नहीं था प्रियदर्शना नाम एक पुत्री थी. और गौतमबुधको  
राहुल नाम एक पुत्र था.

१-महावीरने राज्याधिकार नहीं लिया. अठाइस वर्ष  
बतीत होनेपर माता पिता स्वर्गवास हुवे तब नंदीवर्द्धनसे पूछा  
कि-मैं मुनि होना चाहता हू. नंदीवर्द्धनने कहा माता पिताका  
शोकरूपो दाह मुझे हो रहा है उसपर नैन मत लगा. जाइके  
आग्रहसे (१) वर्ष संसारमें रहना स्वीकार किया. परंतु संसारिक  
कार्यमें आसक्त न हुवे. ब्रह्मचर्य पाला. और पुरे (३०) वर्षकी  
उमरमें संसार छोड़कर मार्गशीर्ष सुदी दशमोके राँज अपने लंबेके  
शोंकों काट कर मुनि हुवे. नंदीवर्द्धन और इन्होंने दीक्षा महो-  
त्सव किया. मतिज्ञान श्रुतज्ञान-और अवधिज्ञान पहले मौजूद  
थे दीक्षा लिये बाद महावीरको \* मनःपर्यायज्ञान पैदा हुआ.

२-गौतमबुधने (३०) वर्षकी उमरमें डुनिया छोड़कर मुनि  
पना स्वीकार किया. ऐसा बयान है कि-एक दिन गौतमबुध अ-  
पनी स्त्रीके महेलमें सोने लगे. वह सोती थी, मनमें वैराग्य आया

\* आजकल लखीशरांग स्टेशनसे (१६) मील दूर बसता है.

\* दूसरे मनुष्यके मनकी बात इस ज्ञानसे जाहेर हो.

कि-डनिया मुठी है दरवजे ही सें पिठें लोटे. बच्चेकों इस अं-  
देसेसैं प्यार जो नही किया कि-ऐसा न हो उसकी मा जाग  
उठे. घोंमंस्वार होकर अंधेरेमें चले. रात जरकी सफरके बाद  
सवेरकों अपने इमानदार रथवानके हाथ घोड़ा और गेहूना  
अपने पिताको जेज दिया और लंबे केशोंको काट फकीराना  
वेष पहनकर जंगलको राह लीयी.

महावीर और गौतमबुध दोनों राजपुत्र थे. दोनोंने जवा-  
नीमें डनियाका सुख चैन गोमा. प्यारे अपत्य और स्त्रीसैं मोह  
न किया. राजकुमार होकर जंगल वासी बने हकीकतमें सहज  
बात नही. इस मजपुनकों जैनी और बौध अपने अपने पवित्र  
पुस्तकमें जब खयालान करते है सबकों प्यारा लगता है. पाषाण  
हृदय पुरुष जी रो देते है. एक जमाना वह था चंपेवर्ण शरीर-  
पर राजसी कपमें पहने रहते थें, घरसैं बहार कदम जरनेकोंजी  
स्वारी हाजर थी, अब वो बात धार लीयी कि-घर घर मोछने  
वाल्लोंको तरह जिह्वा मागना-देहकों विदेह समजना-और जंगल  
वासी बनना धर्म प्यारा न होतो कौन ऐसा कर शकता है, ?-  
हकीकतमें डनिया मोहरूपी जंजोरसैं जडो है, जहां स्नेह वहां  
डल है, संयोगके साथ त्रियोग लगा है, युवानो बुढापनसैं घीरी  
है सुख डःखका चक्र सारे संसारपर फिर रहा है. रैयत समजती  
है राजा-और राजा समजता है रैयत सुखी है, परंतु वास्तवमें  
कोइ सुखी नही. धन और औरत के लिये पुरुष और पुरुषके  
लिये औरत बेहोश फिर रहे है. किसीने तृप्ति नही पायी. तृप्ति  
पानेका यहो रस्ता है जो महावीर और गौतमबुधने लिया. धर्म

प्यारा लगे बिदून संसारकों कोइ नही ठोमता. अलबते ! झा नकी न्यूनाधिकता होनेपर कोइ सचे राह चलता है कोइ उजडे चलता है, परंतु इतना कहना जरूर बन सकता है संसार ठोमना और धर्मकी तर्फ मुंह करना अज्ञा ही है.

३-कृत्रियकुंम ग्रामसें विहार कर महावीर कुमारसंनिवेश गये, और ध्यानारूढ हुवे. वहां पशुपाल (गोवालो) ने अपने बैलोंको इनकेपास लायकर बांध दिये. इस विचारसें कि ये इनकी रक्षा करेंगे, बैलोंके चले जानेपर पशुपालोंने गुस्से होकर महावीरकों मार मारना चाहा. इन्हे अवधिज्ञानसें यह बात जानी आनकर पशुपालोंको शिक्षा दीयी. और महावीरसें विज्ञप्ति कियी कि-(१३॥) वर्षतक आपको बमे कष्ट उपस्थित होंगे आप हुकम देवेतो मैं आपकी सेवामें हाजर रहू. महावीरने कहा कर्मोंका कृत्य अपनी शक्तिद्वारा करे मुक्ति जब होती है. इन्हे मरणांत उपसर्ग निवारणके लिये एक देवता महावीरकी सेवा में रखा जिसका नाम सिद्धार्थ था. पहला चौमासा महावीरने मौराक संनिवेशमें किया, यद्यपि केइ कारणोंसें इस चौमासेमें अनियतपने फिरते रहे परंतु यही कहजाता है कि-मौराकसंनिवेश और अस्थिक ग्रामके निश्चित यह चौमासा हुवा.

४-कपिलवस्तु ग्रामसें चलकर गौतमबुधने पहला चौमासा बनारसमें किया.

५-मौराक संनिवेशसें अन्यत्र विहार करके महावीर श्वेतांबिका नगरी गये, रस्तेमें चंमकौशियानागकों प्रतिबोध दिया. श्वेतांबिकासें सुरजीपुर-सुरजीपुरसें आगे गंगा नदी उत्तर कर

राजग्रही गये. वहां नाळंद मोहलेमें तंतुवायकी शाळामें ठहरे. एक महिनेका तप किया. गोशाळा मंखलीपुत्र यहां महावीरसें मिला. दूसरा चोमासा यहां हुवा.

६-वनारससें चलकर गौतमबुध राजग्रही आये. और आनंद-देवदत्त-उपाली-और अनुरुद्ध-ये ( ४ ) चले यहां किये. जिसमें आनंद जातिका हजाम था. इनदिनोंमें कपिलवस्तुमें शुद्धोदनराजाका गौतमबुधको बुलाना आया, गौतमबुध चेलों-कों लेकर कपिलवस्तु गये. पिताने जोजनकेलिये निमंत्रणा कियी. जिक्राकेलिये गौतमबुधे अपने घर गये-सत्ती कुटुंबसें मिले-स्त्री यशोधराकोंजी मिलने गये. दूरसेंही पतिकों देखकर यशोधराने रोदिया. पैरमें गिरकर बहोत रोंने लगी तब गौतमबुधने उपदेश दियाकि धीरज रखो. दुनिया झूठी है और धर्मकरना अच्छा है. गौतम बुध जिक्रा लेकर अपने मठको आये. और जब कपिल वस्तुमें जाने लगे यशोधराने अपने बेटे राहुलको राज्यजाग मांगनेके लिये जेजा. एक दो पराव चले गये बाद एक आश्रममें राहुल गौतमबुधसें जाय मिला. गौतमबुधने चेलोंसें कहरखाया कि-राहुलकों साधु बना लेना. उन्होंने उसीतरह किया. शुद्धोदन इसबातसें बहोत नाराज हुवे. और गौतमबुधसें मिलकर इकरार करवाया कि-माता पिताकी आज्ञा बिदून किसीकों साधुकरना नही. अखीरमें गौतमबुधकी स्त्रीजी साध्वी हुयी. गौतमबुध राजग्रही आये. दूसरा चोमासा यहां किया.

७-राजग्रहीसें विहारकर महावीर ब्राह्मणगांव होतै चंपा-नगरी गये. तिसरा चोमासा यहां किया. चंपासें काळाकसंनिवेश

होते पात्रालक संनिवेश गये. गोशाला मंस्त्रीपुत्र जो महावीरके बिना कहे साधुपनेका वेष पहनकर चेला होचूका था साथ ही फिरता रहा. पात्रालक संनिवेशसे कुमार संनिवेश गये, वहां तेइसमें तीर्थकर पार्श्वनाथके शिष्यसंप्रदायमेंसे मुनिचंद्रजीके चेलोंसे गोशाला मिला. कहताहै तुम कौन हो ? उन्होंने कहा हम निर्ग्रंथ मुनिहैं. गोशालाने कहा तुमकों निर्ग्रंथ किसने बनाये?—कहां मेरा धर्माचार्य और कहां तुम?—बिल्कुल झूठे हो. इत्यादि वादानुवाद करता रहा. कुमार संनिवेशसे महावीर चौराकसंनिवेश होते हुवे पृष्ठचंपानगरी गये. चौथा चौमासा यहां किया.

८—गौतमबुधके तिसरे चौमासेका यथार्थ हाल बोधपीठ-कोंमें नही मिलता. चौथे चौमासेका इतना हाल मिलता हैकि—विशाला नगरीमें किया.

९—पृष्ठचंपासें विहार कर महावीर कायंगल संनिवेश होते सावलीनगरी आये. कितनाक समय ठहरकर हरिद संनिवेश गये, वहां ध्यानारूढ़ हुवे. वहांसें नगलग्राम गये. वहांसें क्लिष्ट कर्मकी निर्जराके लिये ज़ादा विषयको और वहांसें पूर्णक़्लेश (अनार्यभूमि) नामा ग्रामकों गये. वहां अपशुक्न हुवा मानकर दो चौर तलवार लेकर महावीरकों मारने आये. इंद्रने आनकर दोनोंको हठाये. वहांसें जडिकापुरी गये. पांचमा चौमासा यहां किया.

१०—विशालासें चलेकर गौतमबुध कपिलवस्तु तर्फ आये. राजा शुद्धोदन मृत्यु हुवा तब गौतमबुध कपिल वस्तुमें थे. कितनीक स्त्रीयोंकों यहां साध्वी कियी. फिर वत्सदेशमें कौ-

शांभी आये. कौशांभीमें महावनमें कुंतागारविहार आनकर पांचमा चौमासा किया.

११-जञ्जिकामें विहारकर महावीर तंबालग्राम गये. गौशालामंखली पुत्र यहांसें न्यारा हुवा. तंबालमें विशाला गये. यहां ध्यान किया. फिर ग्रामाक संनिवेश गये. यहां विज्जेलकयद्धने महिमा कियी. फिर शालिशोर्षग्राम गये. यहां एक वाणव्यंतरी देवीने उपसर्ग किया. यह देवी जब महावीर त्रिपुष्ट वासुदेवके जन्ममें थे तब इन्होंकी स्त्री थी परंतु अपमानिता थी. उपसर्गको सहते हुवे महावीरकों यहां \*लोक अवधिज्ञान पैदा हुवा. यहांसे फिर जञ्जिकानगरी गये और उठा चौमासा यहां किया. अनेक अजिग्रह धारन किये, गोशाला मंखली पुत्र फिर आन मिला.

१२-कुंतागार विहारमें चलकर गौतमबुध महाकुलमें गये वहां उठा चौमासा किया. इस चौमासमें गौतमबुधने सोचा कि-मैंने ७ वर्ष तप किया. परंतु कुछ न हुवा. इस लिये तप करना छोड़ देना चाहिये. जो हैसो ज्ञानमें है. दूसरे मनुष्योंको उपदेश देकर धर्ममें लाना यही ठीक बात है.

१३-जञ्जिका नगरीमें विहार कर महावीर मगध देशमें आठमहिने निरुपसर्ग विचरते रहे. सातमा चौमासा आलंजिका नगरीमें किया. चार महिनेका तप किया.

१४-महाकुलसें चलकर गौतमबुध राजग्रही आये. राजा बिम्बिसार (श्रेणिक)की स्त्री क्लेमाकों बुध धर्मकी दीक्षा दीयी.

\* चतुर्दश रज्जातमक लोकमें जितने रुपीपर्य है इस ज्ञानसें देख सके.



सावध्थीमें आनकर बिम्बिसारकों कितनेक चमत्कार बताये, फिर गौतमबुध स्वर्गमें गये. वहांसें पिठें आनकर सातमा चौमासा जैतवनविहारमें किया.

१५-आलंभिकासें महावीर कुडूमसंनिवेश गये. वहां ध्यान करते रहे. फिर मदनग्राम-मदनग्रामसें उन्नागसंनिवेश-फिर वज्र भूमि-और वज्रभूमिसें राजग्रही आनकर आठमा चौमासा किया.

१६-जैतवनविहारसें चलकर गौतमबुध मूसमार पर्वत [जो कपिलवस्तुके पास है] पर नये. यहां आठमा चौमासा किया.

१७- राजग्रहीमें महावीर वज्रभूमिमें गये. इस जगह अनेक उपसर्ग सहन किये. नवमा चौमासा इसी भूमिमें अनियतपने किया. सबबकि-चारमहिनेतक एक जगह ठहरनेको उचित स्थान नहि मिला. कजी किसी जगह और कजी किसी जगह फिरते रहे. चार महिनेका तप किया.

१८-मूसमार पर्वतसें गौतमबुध कौशांबी आये. यहां मोद्गलायनके साथ तकरार हुवा. आप ममे विरोध पैदा होनेसें गौतमबुध गुस्से होकर पारिलेयकवनमें चले गये. और यहाँ नवमा चौमासा किया. मोद्गलायन और शौरीपुत्र ये दो गौतमबुधके लायकवर शिष्य थे. बांधपीटकोंमें इन्होंका नाम बहोतजगह देखनेमें आताहै.

१९-वज्रभूमिसें विहारकर महावीर और जी दो महिने उसीके आसपासकी जमीनमें विचरते रहे. बाद कूर्मग्राममें आये. कूर्मग्रामसें सावध्थी आनकर दशमा चौमासा किया. गोशाला मंसलीपुत्रने महावीरसें अलग होकर तेजुलेइया साधन कियी.

और पार्श्वनाथके शिष्यप्रशिष्योंमेंसे एककों [जो संयमरहित था] मिलकर अष्टांग निमित्त सीखा. अपने आपको सर्वज्ञ मानने लगा.

१०-दशमा चौमासाज्जी गौतमबुधने पारिलेयकवनमेंही किया

११-सावथ्यीमें विहारकर महावीर म्लेच्छछद्मभूमि कों गये.

वहां पेढालग्राममें बहार पोलासचैत्यके एक जगहमें ध्यानारुढ हुवे. इसवख्त तेलका तप किया था. इधर पहले देवलोकमें इंद्रने अपनी सज्जामें सबदेवोंके स्वरु महावीरके चित्तकी हृदता का वर्णन किया. और कहा कौनदेव वा दानव ऐसा है जो महावीरकों ध्यानमें चला सके. सज्जामें बैठा हुवा संगमदेव कहने लगा अज्जी चलाकर आताहुं. मनुष्यलोकमें जहां महावीर थे आया. महावीरपर धुलकी वृष्टि कियी. मांस मच्छर घृतेलिका विछ सर्प उंदरे नोलके रूपसे महावीरकों काटा. हाथीका रूप करके मर्दन प्रहार किया, पिशाच होकर मराये, व्याघ्र होकर नखोंसे विदारण किया, सिन्धार्थ और त्रिशलारानिका रूप करके रुदन किया अनुकूल उपसर्ग दिया. महावायु कलिकाबायु चलाकर कालचक्र ठोसा. देवमायामें सृष्टौदय करके महावीरसे कहा अब दिन चढ़ गया चलते क्यों नहीं? महावीर अपने ज्ञानसे जानतेही थे कि-रात्री है और इसने देवमायासे दिन चढ़ाकर दिखाया है. फिर दिव्यरिद्धि देखाकर कहा जो दिल चाहे सो मागलो. देवांगनाका रूप करके जोग करनेकी प्रार्थना कियी परंतु किसी प्रकार महावीर अपने ध्यानमें चले नहीं, एकरात्री में संगमदेवने (१०) उपसर्ग किये. वहांसे दिन रोशन हुवा जब महावीर आगे बढ़े तब वह देवज्जी पिठे पिठे चला. जहां जहां जिह्वाकों जावे जिह्वाकेयोगकों दोषित करमाछे. याने किसी प्र-

कार तोम फोरकर जिक्रा न मिले वैसा उपाव करे. निदान !  
 उहमहिनेतक महावीरके पिछे फिरा. परंतु एक उपाव नही चला.  
 हार खाकर जब जाने लगा कहता है है ! देवार्थ ! चले जाऊ  
 अब मैं आपकों ओरदिये. महावीरने कहा मैं कोइके आधीन  
 नही. जहां योग्य जानता हु जाता हु. संगम देवलोककों  
 गया, महावीर अगाडीबढे. देवलोकमें इंछनेसंगमकों आते  
 देखकर मुंह फेर लिया. और देवोंकों हुकम दियाकि-  
 इस छष्टकों मैरे सामनेसेनिकाल दो. इमने हमारे मान्य पर-  
 मात्मकों बहोत खेदित किये. निदान ! संगमदेवको स्वर्गसे निकाल  
 दिया, जोकि- मेरुपर्वतकी चूलिकापर आन रहा. महावीर आ-  
 लंजिका नगरी गये. वहां हरिकांत और श्वेतंबिका गये तब  
 हरिसह दो विद्युत कुमार देवोंके इंछ साता पूठने आये. साव-  
 ध्यीमें शक्र इंछ साता पुठने आया. कौशांबीमें गये तब चंद्र  
 सुर्य राजग्रहीमें इशान इंछ और मिथिलामें धरणीछ साता पूठने  
 आये, इसो तरह विहार करते विशालामें आये. ग्यारहमा चौ-  
 मासा यहां किया.

१३-पारिलेयक वनसें चलकर गौतमबुध राजग्रहीके पास  
 भरघाज ग्राम गये. ग्यारहमा चौमासा किया.

१४-विशालासें चलकर महावीर सुंसमारपुर गये. सुंसमा-  
 रपुरसें कौशांबी-जहां शतानिक राजा राज्य करता था. महावी  
 रने यहां एक कठिन \*अजिग्रह धारा जो उह महिनके बाद पूरा  
 हुवा. कौशांबीसें जंभिका ग्राम गये. जंभिकासें मैदिक ग्राम-मैदि-

\* कल्पसूत्रमें इसका वर्नन हे.

कग्रामसें पणमानी ग्राम गये. वहां ध्यानारूढ थे तब एक गोवा-  
लिया दो बैलोंकों इनके पास ठोम गया. कह गयाकि मैं-  
आता हु आप खयाल रखियेगा. निमोही महावीरने न हां कही  
न ना कही. इधर बैलोंने जंगलकी राह लीयी. गवालीयेने आ-  
नकर पूछा बैल कहां गये ?-महावीर कुछ न बोले. क्रोधमें आकर  
गवालियेने दो मेखां काठकी दोनों कानोंमें लगा दियी. त्रिष्टु  
वासुदेवके ज्वमें महावीरने इस गोवालियेको (जो शय्यापाल था)  
कानोंमें सीसा गिराकर प्राणांत किया था. वह कर्म यहां उदय  
आया. याने वह शय्यापाल गोवालिया हुवा और कानोंमें मेखां  
लगाकर बदला लिया. वहांसे महावीर मध्यपावामें गये. स्त्रि-  
वणिकके घर जब जिक्हाकों गये तब खरक वैद्यने देखा कि-इन  
के शरीरमें कुछ व्यथा है. जब महावीर जिक्हा लेकर वनकों  
लोटे खरक वैद्य पीठें पीठें आया. और व्यथा निवारण कियी.  
बर्म यत्नसें काष्ठकी मेखां निकाली, मरोहिणी औषधि लगाकर  
निरोग किये. हम उत्तम कार्यसें वैद्यने देवगति होनेका पुन्य  
उपार्जन किया. गोवालिया मरकर नरकगतिको गया शांत  
दांत जिनेन्द्रिय-गगनवत् निरालंबी-वायुवत् अग्रतिबंध विहारी-  
समुद्भवत् गंजीर-मेखवत् अक्रंप-ज्जारंमपक्षीवत् अममादी-कंचन  
पाषाणमें एक दृष्टि ज्ञानदर्शन चारित्र करके जावितात्मा-महावीर  
(१२) वर्ष ग्रामानु ग्राम विचरे. तेरहमें वर्षकी गृष्मरतुका दूसरा  
महिना वैशाख शुक्र (१०)मी के रौज-जूजिकग्रामके बाहार-रिजु-  
वालुका नदी कनारे-श्यामाक कुटुंबके खेतमें शालवृक्षके नीचे  
अकहुआसन बेटे हुवे महावीरकों शुद्ध्यान ध्याते केवलज्ञान

उत्पन्न हुवा. ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनी और अंतराय ये (४) कर्मसें रहित हुवे. चौरासी लाख जीवयोनिकी गति आगति स्थिति जीवन मरण अवतरण सजी जीवोंके मनोगतज्ञाव और धर्मास्तिकाय आदि खट्खटके सजी जेदोंको जानने लगे. महावीरको केवलज्ञान उत्पन्न हुवा जानकर [ ६४ ] इंद्र ज्ञानका महोच्च करनेको आये, समवसरण (व्याख्यान भूमि.) की-रचना कियी. उसमें बैठकर महावीरने धर्मोपदेश किया. (१२॥) वर्षके तपको महावीरने सफल माना. तपसें कर्मोंका नाश होता है कर्मोंके नाशसें ज्ञानप्राप्ति होती है.

रिजुवालुका नदीकिनारेसें विहार करके महावीर पावा पुरीमें आये. देवाने मिलकर समवसरणकी रचना कियी. इसवख्त पावा पुरीमें सोमिलविप्रके घर यज्ञ महोच्चकेलिये बहोत ब्राह्मण इकठे हुवे थे. इनमें इंद्रभूति (गौतम)-अग्निभूति-वायुभूति-वे(१) पंमित सगेभ्राता थे. एक एकको पांचसें पांचमें शिष्यका परिवार था. व्यक्त और सुधर्मा पंमितकोजी पांचमें शिष्य थे. पंमित और मौर्यपुत्र दो पंमित सगेभ्राता थे. दोनोंके सातसें चले थे. अकंपित अचलभ्राता मेतार्य और प्रज्ञास इन चार पंमितोंकोतीनसें तीनमें शिष्यका परिवार था. कुल (४४००) शिष्यके(११) पंमित अध्यक्त थे. महावीरके समवसरण में इंद्र-वगेरा देव आकाशसें उतरने लगे इंद्रभूतिआदि [११] पंमित कहते रहे देखो ! यज्ञ के प्रज्ञावसें प्रसन्न होकर देवता यज्ञमहोच्चमें आते हैं. परंतु वे जब महावीरके पास गये औरलोकोमेंजी बात पसार दुश्कि, यहां चौइसमें तीर्थकर आये है तब इंद्रभूति

[गौतम] कों दर्शा पैदा हुयी. मनमें निर्णय करलिया कि-उस सर्वज्ञकों चर्चा करके हराना यज्ञकों ओमकर इन्द्रभूति गौतम महावीरके सामने गया. इसकों शंसय थाकि-आत्मा मरकर परलोक जाता आता नहो किन्तु पृथ्वीजन्म आदि पंचभूतोंसे उत्पन्न होकर उसीमें समा जाताहै जैसे जलमें बुदबुदा-महावीरने इसका उत्तर दिया कि-जोव नित्य है नित्यको उत्पत्ति नहो होती. अगर यह पंचभूतोंसे उत्पन्न होता होतो एक सुखी एक दुखी न होना चाहिये. सुख दुखका होना शुजाशुज्जकर्मके आधीन है. जब शुजाशुज्जकर्मका सद्भाव हुवा तो परलोक जाना आना कैसे न हो ! इसलिये आत्मा मरकर परलोकमें जाता आता जरूरहै. जब संपूर्ण कर्म क्षय हो जायगे इसकी मुक्ति होगी. दूसरा प्रमाण यह है कि-शरीर जोग्य है जोग्यवस्तुका जोक्ता जरूर होना चाहिये, जैसे दूधमें घृत-तिलोंमें तैल-काष्ठमें अग्नि और पुष्पमें सुगंध रही है तद्वत् शरीरमें आत्मा रहा है आत्मा ज्ञानमय है. जबतक कर्मोंसे मुक्त नही हुवा है शरीरके साथ क्षीरनीरकी तरह मिला है. सांजी देह व्यापी सर्वव्यापी नहो. मुक्ति होनेपर शरीर छूट जाताहै. ज्ञानकरके सर्वव्यापी है. इस उत्तरसे इन्द्रभूति गौतम निशंसय होकर पाचसे शिष्योंके साथ दीक्षा लेकर महावीरका शिष्य हुवा.

दूसरा अग्निभूति पंमित आया. इसकों कर्मके होनेमे शंसय था. महावीरने उत्तरदिया अगर कर्म नहोतो एकसुखी एक दुखी एक राजा एक रंक बगेरा वैचित्रता कैसे है ?-इकीकतम इनका हेतु शुजाशुज्जकर्म है. इसबातसे अग्निभूति निःशंसय हो-

कर पांचसैं चेलोंके साथ दीक्षा लेकर शिष्य हुवा. तीसरा वा-  
युभूति पंमित आया. इसकों-जो शरीर है वही आत्मा है वा श-  
रीसैं कोई न्यारा आत्मा है?—यह संसय था. महावीरने इंद्रभूति  
गौतमकों जो उत्तर दिया था वही उत्तर देकर निशंसय किया.  
वह पांचसैं चेलोंके साथ दीक्षा लेकर शिष्य हुवा चौथा व्यक्त  
पंमित आया. इसकों पृथ्वी-अप्-तेज-वायु-और आकाश यह  
पंचभूत है या नही इसविषय संसय था. महावीरने उत्तर दिया  
पृथ्वी आदि पंचभूत हैं वेदमें पृथ्वी आदि पंचभूतोंको स्वप्नकी  
तरह असत्य कहे यह अध्यात्मज्ञानको अपेक्षा कहा है. इससैं  
पंचभूतोंका निषेध हुवा नहि समझना अज्ञानने ! अखीरमें ओ-  
मनेयोग्य है इस उत्तरमें निशंसय होकर पांचमें चेलोंके साथ  
महावीरका शिष्य हुवा. पांचमा सुधर्मा पंमित आया. इसकों  
यह संसय था कि-जो इम जन्ममें पुरुष वह मरकर अगले जन्म-  
में जी पुरुष होगा. जो पशु है वह पशु और जो स्त्री है वह अ-  
गले जन्ममें स्त्री होगी. महावीरने उत्तर दिया यह बात ठीक  
नही कोई पुरुष बहोत पापकर्म करे वह पुरुषमें बदलकर अगले  
जन्ममें पशु होजाय. पशु अगर पुन्यकर्म करे तो वह अगले ज-  
न्ममें मनुष्य होजाय. यह कोई बात नही कि-जो यहां पुरुष है वह  
पुरुष और पशु है वह पशु ही हो. यह सब अपने अपने कर्मके  
अनुसारहै. इस उत्तरसे निःसंसय होकर पांचमें चेलोंके साथ महा-  
वीरका शिष्य हुवा. छठा पंमितपुत्र पंमित आया. इसकों बंध  
मोक्तहै वा नही ?—यह संसय था. महावीरने उत्तर दिया जहांतक  
जीव संसारमें एक गतिमें दूसरी गति भ्रमण करता है वहांतक

उसे कमाका बंध जरूर है. जब संपूर्ण कर्मोंमें रहित होगा तब फिर उसे कर्मबंध न होगा इस उत्तरमें निःशंसय होकर साढ़े तीनसों चेलोंके परिवारमें महावीरका शिष्य हुवा. सातमा मौर्यपुत्रपंम्ति आया. इसको देवताके होनेमें शंसय था कहता था यह सब इंद्रजालकी विद्या है, महावीरने उत्तर दिया अगर देवता न होतेतो-यज्ञायुधी यजमानः स्वर्गलोकमवाप्नुयात् वेदमें यह वचन न होता, मायोपमादेवाः-यह जो वचन है इसका तात्पर्य यह नहि कि-देवते बिल्कुल है नही. किंतु अस्सीरमें देवतेजी अनित्य है. आयुष्य पूर्ण होनपर विनाशी है. शंसय दूर हुवा और साढ़ेतीनसों चेलोंके साथ शिष्य हुवा. आठमा अकंपित पंम्ति आया. इसको नरक है वा नही शंसय था. महावीरने उत्तर दिया अगर नरक नही है तो-"जो शुद्धका अन्न खावे वह नारको हो"-यह वचन वेदमें कैमे कहा? इसमें मिद्ध है कि-सबसे अधिक पापफल जोगनेको जगह नरकगति है एक जीवकी अपेक्षा सादि सांत है अनेक जीवोंकी अपेक्षा अनादि अनंत है. शंसय दूर होनेसेतीनसों चेलोंके साथ महावीरका शिष्य हुवा. नवमा अचल भ्राता पंम्ति आया. इसको पुन्य पाप है वा नही इसपर शंसय था. महावीरने उत्तर दिया पुन्य पाप शुभाशुभकर्मजन्म है. शुभाशुभकर्म विना जगत्की विचित्रता नही बनशकती. इश्वर इच्छाका सहारा लेवेतो कृतकृत्य इश्वरको जगत रचनेमें क्या प्रयोजन?—जगत प्रवाहरूपसे अनादि है. इसका बनानेवत्ता काइ नही जो जीव जैसे कर्म करते हैं उसकर्मके उदयसे आपहोवैसा फल जोगते हैं. इसी कारण जगतकी विचित्र-



ताहै. इस उत्तरसे शंसय न रहनेपर तीनसो चेजोके परिवारसे शिष्य हुवा. दशमा पेतार्य पंमित आया. इसको परभव है वा नहो शंसय था. महावीरने जैसे इच्छभूति गौतमके उत्तरमें बर्नन किया था तद्वत् उत्तर देकर निशंसय किया, तीनसें चेजोके साथ दोह्ना लेकर शिष्य हुवा गारहमा प्रभास पंमित आया. इसको निर्वाण है या नही ? यह शंसय था कहता था मोक्ष साधनके अनुष्ठानका काल वेदमें क्यों नही ?—महावीरने उत्तर दिया आठ प्रहारके कर्ममें जब यह जीव रहित होताहै तब इसका निर्वाण ( मोक्ष ) होताहै वेदमें निर्वाण अर्थां पुरुष अग्नि-होत्र आदि कार्य ओम्कर निर्वाण साधनका अनुष्ठान करे यह जो लिखाहै निर्वाण साधनकाल हा तो बताया है. अगर निर्वाणका अज्ञाव होता तो यह वचन कैसे होता ?—शंसय दूर होनेपर तीनसों चेजोके परिवारसे दोह्ना लेकर शिष्य हुवा. पावापुरीमें एकहो रौज ( ४४१.१ ) चले हुवे. उक्त [११] पंमितको गणधरपद दिया. इन्होंने छादशांगवानी रची. साधुसाध्वी श्रावक श्राविका-चतुर्विध संघका स्थापना हुयी.

पावापुरीसे बिहारकर महावीर ग्रामानुग्राम विचरते रहे आर धर्मोपदेश करते रहे महावीरका धर्मोपदेश यह था. हर एक मनुष्य [जो धर्म करताहै] मोक्ष पाशक्ता है. जो जोव जैमाकर्म करता है वैसा फल जोगता है. न तो देवते और न मनुष्यके रोके रुक शक्ता है. आराम और रंज आदमीको घेरे तब अपने कर्मोंके फल और नतीजेपर खयाल करना चाहिये, सुख के वस्तु मान और दुःखके वस्तु गरीबी न खाना चाहिये. जब कोइ जीव मरता है

तो वह फिर अपने कर्मानुसार ढोटा या बम्हा शरीर धारण करता है. चौराशी लक्ष जीवयोनिमें यह जीव अनादिकालसे फिर रहा है. कच्ची देव कच्ची मनुष्य कभी जानवर पंखी और कच्ची नरकगतिमें इसका जाना आना बन रहा है. जीमने मनुष्यजन्म पाया और पूर्वसंचितकर्म दूरकरके अगामी निस्पृह तप किया उसने मुक्ति पायी. जगतका कर्त्ता कोई नहीं स्वतः अनादिकालसे प्रवाह रूप चला आता है. जो जीव मुक्त्य करता है उसकी मुक्ति होती है, मुक्त हुये पिछे संसारमें आना नहीं रहना. जीव-अजीव पुण्य-पाप-आश्रव-संवर-बंध-निर्जरा-और मांक्ष-ये [ ९ ] तत्व हैं. धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय-आकाशास्तिकाय-पुद्गलकाल-और-जीव ये (६) द्रव्य हैं - अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्त्तत्व, और अमूर्त्तत्व, ये [ १० ] द्रव्यके सामान्य गुण हैं. ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, गतिहेतुत्व, स्थितिहेतुत्व, अवगाहेनाहेतुत्व, वर्त्तना हेतुत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्त्तत्व, और अमूर्त्तत्व, ये (१६) द्रव्यके विशेषगुण हैं. - अस्ति, नास्ति, नित्य, अनित्य, एक, अनेक, जेद, अजेद, जव्य, अजव्य, और परम, ये (११) द्रव्यके सामान्यस्वजाव हैं. - चेतन, अचेतन, मूर्त्त, अमूर्त्त, एक प्रदेश, अनेकप्रदेश. विज्ञावस्वजाव, शुद्धस्वजाव, अशुद्धस्वजाव, और उपचरितस्वजाव, ये (१०) द्रव्यके विशेषस्वजाव हैं.

अनंतधर्मात्कवस्तु प्रमाणका विषय है. प्रत्यक्ष और परोक्ष-ये (२) प्रमाण हैं. वस्तुके एक एक धर्मपर सप्तजंग रचना जानने योग्य है. स्याच्चाद न्यायसे जिसवस्तुकी परिक्षा कियी जाय और

सही सही जतरे वह सत्य है.—स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिनास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्ति अवक्तव्य, स्यान्नास्तिअवक्तव्य, स्यादस्तिनास्तिअवक्तव्य. यह स्याद्वाद न्यायकी मुख्य बातें हैं. दुनियामें सजी वस्तु उत्पात व्यय और ध्रौव्यगुणमें युक्त हैं. द्रव्यकी अपेक्षा नित्य है, पयायकी अपेक्षा अनित्य है. स्वरूपकरके अस्ति हैं पररूप करके नास्ति है. पररूप करके अस्ति नहीं और स्वरूप करके नास्ति नहीं.

पृथ्वी थिर है फिरती नहीं. थाली के आकार गोल है मोदक के आकार नहीं. जंबुद्वीपमें घेरे हुए असंख्य ममुष् और असंख्यद्वीप हैं. मनुष्यलोक ठीक बीचमें है स्वर्गलोक उपर और नरकावास मनुष्यलोकके नीचे है. जगत अनन्त है, नित्यानिश एकानेक जेदाजेद वगेरा धर्मकरके युक्त है. अगर एकांत नित्य-एक-और जेद-ही होतो पुन्यपाप सुखदुःख बंधमोक्ष वगेराका अभाव होना चाहिये. जोत्रमंख्या अनन्त हैं, हर वस्तुके-नाम-मूर्ति-द्रव्य-और भाव-ये (४) निक्षेपे होते हैं, जिस वस्तुके ये [४] नहीं वह अवस्तु है. ज्ञान दर्शन चारित्र्यद्वारा मोक्ष मार्गका साधन किया जाता है. वह मार्ग [१] प्रकारमें-एक मनिमार्ग-दूसरा गृहस्थमार्ग-मनिमार्गमें प्राणानिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन और परिग्रह (धन)का त्याग रखना चाहिये. गृहस्थमार्गमें स्थूल प्राणानिपात विरमणव्रत आदि (११) व्रत पालन करने चाहिये. (११) अजक्षय (२१) अनन्तकाय वस्तु न खाना और (११) जावना खयालमें लाना उचितकृत्य हैं. तीर्थ (१) प्रकारके

है एक स्थावर दूसरा जंगम. स्थावर तोर्थ वो है जहां तीर्थंकरोंके कल्याणक हुवे हैं. जगमतोर्थ खुद मुनिजन है. दान शीख तप और जाव ये (४) धर्मके पर्याय है जाव इनमें प्रधान है क्यों कि-जाव बिदून दान शील तप कार्यकारी नहो. आत्त रौखध्यान आत्माकों पापमे लगेदनेवाले हैं. धर्म शुक्लध्यान आत्माकों मुक्तिदेनेवाले है. काल-स्वभाव-नियति-कर्म-और उद्यम-ये ५ ) समवाय मुक्ति होनेमें संबंध रखत है. अर्थात् जब जन्म जोवका भव्यत्वस्थितिपरिपाक होगा और ज्ञानिदृष्ट जावके अनुसार जब उद्यमद्वारा ज्ञानावरण आदि आठ कर्म क्षय किये जायगें तब जीवकी मुक्ति होगी. जिसको मुक्तिकी परवाह है वह प्रथम ज्ञान-द्वारा मनकों खोटे कर्मोंमें रोंके. इति धर्मोपदेशः—

बहुधा महावीरका विहार चंपा राजग्रही पृष्ठचंपा विशाली मिथिला अयोध्या कौशांबा नदिका आलंबिका कुणाला आदिनगरी उत्तर पूर्वप्रदेश तर्फ हुवा कज्जी हिमालयमें उत्तरको-कज्जी नेपालकी तराईमें-कज्जी जमना गंगाके चौफेरकों-और कज्जी मध्यदेश और दखनकोंभी फिरे हैं.—(१२) वर्ष तप के और (२०) वर्ष ज्ञानक कुल (४२) मुनिअवस्थामें रहे. बयाली चौमासोंकी गिनतो. (१) चौमासा मोराकमनीवेश और अस्थिक ग्रामकी निश्राय किया, चंपा और पृष्ठचंपाको निश्राय (३) चौमासों किये. विशाला और वाणिजयग्रामको निश्राय (१२)-राजगृही औरनालंद शास्त्रापुरके निश्राय (१४) मिथिलानगरीमें (६)-भदिकामें (२)-आलंबिकामें (१)-सावध्थीमें (१)-वज्रभूमि अनार्यदेशमें

(१) और ठेकमका पावापुरीमें [१] चौमासा -

१४-भारद्वाजग्रामसे चलकर गौतमबुध कोशलदेशमें बेरंज ग्राम गये. वहां बारहमा चौमासा किया. बेरंजसे चलकर दखन देशमें मंतलनक लंबो सफर कियी. मंतलसे लोटकर कोशलदेश में बनारस आये. बनारसमें विशाला होते सावथ्यी गये. यहां राहुल पुत्रकों महाकुलनामासूत्र रचकर सुनाया. जबकी-राहुल (१७) वर्षका होचूका था, सावथ्यासे चालियाग्राम गये. तेरहमा चौमासा यहां किया. चौमासेके बाद फिर सावथ्यी गये. सावथ्यीके जेतून विहारमें चौदहमा चौमासा किया. पनराहमा चौमासा सावथ्यीके पास न्यग्रोधगृहमें किया. शुद्धोदनकी गद्दीपर जइक और जइककी गद्दीपर जो महानामका राजा हुवाथा उसकों यहां उपदेश किया. न्यग्रोधगृहमें चलकर सांलहमा चौमासा अलवीग्राममें किया यहां एक राक्षसकों प्रतिबोध दिया. सतराहमा चौमामा राजग्रहीमें किया यहां एक श्रीमतीवेश्याकों प्रतिबोध दिया. राजग्रहीमें सावथ्यी-सावथ्यीसे अलवीग्राम-अलवीसे चालियाग्राम आनकर अठारमा चौमामा किया. चालियासे राजग्रहो गये. उन्नीसमा चौमामा वेल्वनविहारमें किया. वेल्वनविहारसे मगध देशकी मुसाफरी कियी. रस्तेमें एक हिरन ( जो फसा हुवाथा ) ठामाया, उर एक वृक्षके नीचे ध्यानकेलिये बैठे. यहां एक शरूशकों दोह्ना दियी. बिसमा चौमासा सावथ्यीमें किया. सावथ्यीमें चालियाग्राम गये, वहां वनमें एक चौरकों प्रतिबोध दिया जिमका नाम ऐंगुजीपाल था. इसकेबाद चौमासेकी ठीक ठीक हकीकत नहीं मिलती.

इनदिनोमें देवदत्तके साथ गौतमबुधका तकरार हुवा जोकि -पाचेका बेटा था. रुसकर देवदत्त राजग्रही गया, श्रेणिकके बेटे अजातशत्रु (कौणिक) के दिये हुवे मकानमें ठहरा. थोड़े रौ-जके बाद गौतमबुधभी राजग्रही गये. देवदत्तने क्रियाउध्दार करनेकी आज्ञा मागी परंतु गौतमबुधने आज्ञा न दीयी जिससे दे-वदत्तने नयामत निकाला. बौधपीटकोंमें लिखा है देवदत्तने अ-जातशत्रुकों कहकर श्रेणिककों मरवा माला. क्योंकि इसमें देव-दत्तकों लाभ होनेका संभव बताते है. इसवखत गौतमबुधकों दीक्षा लिये (३७) वर्ष होचूके थे. देवदत्त नयामत निकालनेकी को-शीशमें था तब निम्नलिखित (४) कायदे गौतमबुधमें स्वीकार कराना चाहता था.

- (१) साधुवोंकों शहर ठोमकर बनमें रहना.
- (२)-गृहस्थके उत्तरे हुवे वस्त्र लेना.
- (३) भेजा हुवा आहार नहीं लेना. आमंत्रण करे उसके घ-रजी नहीं जाना किंतु गोचरीकरके आहार लाना.
- (४)-मांस जह्णण बंध करना.

गौतमबुधने उत्तर दिया कि-इस बातमें मैं नासुशर्जी नहीं और खुशर्जी नहीं. एक सरस्त्रे कायदे बाल वृद्ध और ग्लानपर मैं जारी नहीं कर सकता हु. साधुवोंके रहनेकों शहर और बन दोनों ठीक है. कपडोंके विषयमें जैसा मिले वैसैं करना. आहा-रके लिये जहां जैसा योग हो वेसा लेना. मांसकेबारेमें जिसदेश में जैसा मिले वैसा खाना परंतु छोलुपतासैं मांस नहीं खाना. मांसके त्यागनेसैं वा अंगीकार करनेसैं मुक्ति होती बंद नहीं हो

शक्ती. अगर एक सरखे कायदे सजीपर चलाये जाय तो मुक्तिका रस्ताबंद किया उहरे. मैरा अजिप्राय यह हैकि-सजीकों मुक्ति प्राप्त हो. देवदत्तने नयामत निकाला अजातशत्रुने उसकों सहारा दिया परंतु देवदत्त बहोत काल जिया नहो जिससे उसका मत अधिक न चला. अजातशत्रुने सावथीपर अपना कबजा किया और कपिलवस्तुका नाश किया यह सब वर्नन बौध मतके महा परिनिब्बाण सूत्रमें है.

एकीसमें चौमासेसे लगाकर तेयालीसमें चौमासेतक गौतम-बुधकी दिनचर्या यथार्थ नही मिलती. चौआलीसमा चौमासा सावथीके पास जेतवनविहारमें किया. जेतवनविहारसे वलचर टेकरी-वलचरटेकरीसे पाटलीपुत्र-पाटलीपुत्रसे अंबपाली-और अंबपालीसे वेलूग्राम आनकर पैतालिसमा चौमासा किया. यहां गौतमबुध बिमार हुवे.

सारी जीदगी गौतमबुध ग्रामानुग्राम विहार करते रहे. विहार-अवध-ममालिक-मगरबी-और शोपालीके जिलोंमें विशेष उपदेश दिया. (३०) वर्ष दुनियादारीमें रहे. (५)-(६) वर्ष तप किया. (४४) वर्षसेकुच्छ अधिक दुनियाकों अपने महजबकी शिक्षा दीयी, [गौतमबुधकी धर्मशिक्षा निम्न लिखित थी, ]

जो शरूश धर्म और शिक्षापर पाबंद है हिम्मत नही हारता वही जीदगीके समुझको पारकरके दुखसे छूटकारा पावेगा. यह दुनिया जंजीरोंसे मखन जकमी है. सब चीजें क्षणविनाशी है मेरी शिक्षा क्षणविनाशी नही. मेरी शिक्षापर ध्यान दो जो शरूश जैसा बोताहे वैसाफल पाता है. शरीरकों तकलीफ दिये

बिदू न मुक्ति नही. जो मनुष मुकृत्योसें अपने आत्माकों वश करेगा उसकी मुक्ति है. जिसका संयोग है उसका वियोग है. खुद आत्माजी सएविनाशी है. एकीला ज्ञान ही कृणसंततीके साथ वासनारूप सहचारोहै. स्कंध [तत्व] पांचहै. विज्ञान-वेदना-संज्ञा-संस्कार-और रूप, जो बुधधर्मके आचार क्रियामें लीनरहेगा उसका ज्ञान निर्मल होगा. इसीका नाम मुक्ति है श्रमण माहण जो जो उपदेश देते हैं इस पांचस्कंधसें अलग नहीं. जावना पांचहै. १. मैत्री-२, मुदित-३, करुणा-४, अशुन, और ५, उत्पेक्षा, आयतन [१२] है, १, स्पर्शन-२, रसन-३, घ्राण-४, चक्षु-५. श्रौत्र-६, स्पर्श-७, रस-८, गंध-९, रूप-१०, शब्द ११, मनः-और १२, धर्मायतन.-इनकेशिष्य जाति जरा मरण जब उपादान तृप्णा यह आयतन नाम रूप विज्ञान संस्कार और अविद्या यहजी आयतन है यह सर्ववस्तु क्षणिक है. मत्स्य और अनुमान यह [२] प्रमाण है.-धर्म-बुध-और संघ-ये [३] रत्न है. प्रथम समय हेतु [कारण] और दूसरे समय उसका फल होता है. इत्यादि धर्मशिक्षा देतेथे. अपने शिष्योंको ताकीद करी कि-सबकों उपदेश देकर अपने महजबमें लाओ. इति धर्मशिक्षा:-

२५-महावीरके उपदेशकों निम्न लिखित राजोंने सुना और माना. मगधदेशका मालक श्रेणिक ( बिम्भसार )-अजातशत्रु [कौणिक]-विशालीका मालक चेटक-काशीकोशलदेशके. मल्लिजातिके [ए] और लन्धीयजातिके [ए] कुल अठारह राजे-आमलकल्पाका राजा श्वेत-वीतजयपत्तनका राजा उदयन-कौशांबीका



वत्स उदयन-कृत्रियकुंभका राजा नंदीवर्धन-उज्जयिनीका चंम-  
प्रद्योत-पृष्ठचंपाके राजे शाह और महाशाल-पोतनपुरका प्रसेनचंद्र  
-हस्तिशीर्षका अदीनशत्रु-विजयपुरका वासवदत्त-महापुरका बल  
और साकेतपुरका मित्रनंदी बगेरा. श्रेणिकके बेटे अजयकुमार  
और मेघकुमारने महावीरके पास दीक्षा लीथी. अजयकुमार  
नंदारानीका बेटा था मेघकुमार धारणीका और अजातशत्रु [को-  
णिक] चेलणा रानीका बेटा था. दोनों रानी बनी थी. और  
महावीरके उपदेशकों स्वीकार रखती थी. अजातशत्रु श्रेणिकके  
पूर्वजन्मका वैरी था. अपने पिताकों कैद रखा और पिठली अ-  
वस्थामें श्रेणिक कैदरीमें परलोक हुवे. वैरानुबंधकर्म जब खतम  
हुवा अजातशत्रुने बहोत श्वात्ताप किया. कितनेकरोज पिताके  
नाम ही नाम लेते गुजारे. अलोरमें राजग्रही ठोकर चंपामें  
रहना शुरू किया, आणंद कामदेव बेपेरा (१०) श्रावक महावीरके  
अवल नंबरके श्रमणोपासक थे. उपासक दशांगसूत्रमें इनका  
बयान है.

१६-गौतमबुके उपदेशसें श्रेणिक [विम्भसार]-अजातशत्रु-  
शुद्धोदन-जडक-और महा बगेरा राजे बुधमतके पाबंद हुवे.  
श्रेणिक और अजातशत्रुकों बौध और जैन दोनोंमें पाबंद लिखा.  
देखकर अनुमान होताहै किये दोनों पहले स्यात् बौध होंगे.  
पिछेसें जैन हुवे. क्योंकि-श्रेणिकचरितमें लिखाहैकि-महावीरकी  
धर्मदेशना सुनकर श्रेणिक जैनमतानुयायी हुवा. यतः

[ अनुष्टुप् वृत्तम्. ]

श्रुत्वा तां धर्मदेशनां जत्तुः-सम्यक्तं श्रेणिकोश्रयत्  
श्रावकधर्मं त्वज्जय कुमाराद्याः अपेदिरे [३७५].

जैनागममे यहजो लेख है कि—चिल्लणारानी और भेषिकका धर्मविषयक वादानुवाद होता था, सबबकि चिल्लणा प्रथम हीसँ जैनधर्मावलंबिनी थी.

१७-महावीरके शिष्योंमें इंद्रभूति ( गौतम ) आदि. (११) जो गणधर कहाते थे बड़े माने जाते थे.

१८-गौतमबुधके शिष्योंमें मौद्गलायन शौरीपुत्र और आणंद बड़े थे.

१९-महावीरने ठेकमका चोमासा पावापुरीमें किया. आपने ज्ञानसँ जाना कि. मेरा आयुष्य कार्तिकवदी ०)) के रौज पिबलीरात जब चंद्रमा स्वातिनक्षत्रमें आयगा पूर्ण होगा. जब वह समय आया तब पावापुरीमें काशीकोशल देशके मल्लीय और लच्छीयजातेके (१८) राजे-साधु साध्वी श्रावक श्राविका आदि चतुर्विधसंघ इकठा हुवा. महावीरने उन्हींको धर्मोपदेश दिया. ज्ञानावरण आदि (८) कर्मोंका स्वरूप आत्माका, स्वरूप संसारका और मुक्तिका स्वरूप दो दिनतक बर्नन किया.

पुरुष वा स्त्री कोइ हो जो श्रद्धापूर्वक ज्ञानद्वारा निस्पृह होकर तपकरेगा उसकी मुक्ति है. [३] वर्ष [८॥] महिने बाद पांचमा आरा लगेगा. उसवरुतसँ दिनपर दिन उत्तम वस्तुकी न्युनता होती जायगी. बैसातप नही बन शकेगा जिससँ मुक्ति हो. जारतवर्षके सिवाय महाविदेह आदि अन्य जो क्षेत्रहै वहाँके मनुष्योंकी बैसाताप करनेकी शक्ति बनी रहेगी जिससँ उनकी मुक्ति होनी शरु रहेगी. चाहे राजा या रंक हो जो पापसँ बचेगा अष्टीगति पायगा. इस संसारमें अनंत जीव है, जो जीव मनुष्यम-

तिमें आनकरके जी अपने आत्माको नहीं चीनता वह बहोत दिलगिरि उठायगा. मनुष्यजन्म पाना बहोत पुण्यके उदय बिडन नहीं बनता. जबतक रागद्वेष [जो कर्मोंका बीज है] न छोडाजाय तबकक मुक्ति नहीं होती. महावीरने कोइ शिष्यपर मोहबत नहीं कियी. न किसीबातकी ताकीद या जलामण कियी. न अपना मत चलानेकों किसीसे धेरणा कियी. सबहैनिरोगीकों राग कहाँ ! जब वे अपने शरीरपरजी राग नहीं करते थे तो अन्म बीजकी बात ही क्या ? निदान ! निस्पृहतासे उपदेश देते समाधिमें पदमासन बैठे निर्वाण हुवे. जीवन मरणमें रहित हुवे. अरुपी आत्मा स्वर्गमें अगामी लोकांतमें जायकर स्वस्वरूपमें स्थित हुवा जैसे तुंबीपर बहोतसें मीटीकेलेंप लगाकर जलमें गरदो और लेंप दूर होनेपर वह जलपर आजाती हैं मुक्तात्माजी तत्रत् कर्म लेंपसेरहित होनेपर लाकके उपर अजातेहै. महावीरके शरीरका अग्निस्ंस्कार किये बाद उनकी माटे पूजनेकेलिये इंद्र स्वर्गमें लेगये. मनुष्य उनके शरीरकी जस्म लेगंय. महावीरके निर्वाण होनेपर कितनेक मुनियोने सब व्यवहार छोडकर बिल्कुल ध्यान समाधि लगादियी. महावीर जब निर्वाण हुवे तब उनके शरीरकी इंद्रआदि देवांने और मनुष्योने आरात्रिका ( आरती ) कियी. दीपकका उद्योत किया इस सबबमें दीपमाला (दीवाली) पर्व हिंडुस्तानमें शुरुहुवा. पहले नहीं था. कार्तिकशुक्र [१] के रौज इंद्रभूति (गौतम) गणधरकों केवल ज्ञान पैदा हुवा.

३०-बिमर हुवे पिठे गौतमबुधने बेलूग्राममें अपने शिष्यों-कों इकठे किये और बोध दियां कि-सजीकों मुख हो इसप्रकार

तुम वर्त्तना. मेरा आयुष्य अब (३) महिना बाकी रहा है अतः  
 करणका स्वच्छ रखना और ज्ञानकी रक्षा करनी यही सार है.  
 इसप्रकार जो वर्त्तेगा सुखी रहेगा. इत्यादि बोधकर पावापुरी  
 गये. वहाँ एक \*सोनीने उनकी परोणागत कियी और डुकरका  
 मांस और चावलोंका जौजन जिमाया. (३) प्रहर रहकर पावा-  
 पुरीसे बनारस होते कुसीनार जानेको रवाना हुवे. कुसीनार ब-  
 नारससे (१००) मील और कपिल वस्तुसे (८०) मील दूर था.  
 कुसीनार पहुँचनेपर उनको विमारी बढ गयी. तृषाने अधिक  
 जोर दिया तब आणंद शिष्यकेपास पानी मंगाकर पिया और  
 कहा कि-चंदसोनीसे जब तेरा मिलना हो तब कहना कि-हे चंद !  
 मेरी सेवाका लाज तुझे अगले जन्ममें मिलेगा. काल होते पहले  
 गौतमबुधने आणंद शिष्योंको कितनाक बोध दिया. जब आणंद  
 रुदन करने लगा गौतमबुधने उसे पास बुलाकर दिलासा दिया.  
 और कहा कि-डुनिया झुठी है तुझे ज्ञी निर्वाण मिलेगा. जिसका  
 संयोग है उसका वियोग है इस लिये हिम्मत रख इतना कह  
 कर दूसरे शिष्योंतर्फ दृष्टि दीयी. आणंदकी बाबतमें कितनाक  
 कहना था सो कहा. इस वस्तु कृष्णनगरका मुज्जविघ्ना गौ-  
 तमबुधसे प्रश्न पूछने आया. आणंदने उसको जीतर आनेकी  
 मना कियी. गौतमबुधने कहा आनेदो. मुज्ज जीतर आया और  
 प्रश्नकिया कि-(६) ब्राह्मण जो कुछ कहते हैं सच है ? वा फू-  
 ठ ? गौतमबुधने कहा ऐसी चर्चाका इस समय अवसर नहीं.  
 मैं तुजको अपनामत कहता हू. सुन ले !-जिसमें पवित्रताके [८]

रस्ते नहीं है वह मत ठीक जानना. इस वचनकों सुनकर मुजंघ बोधकों प्राप्त हुआ. गौतमबुधने अपने शिष्योंकों उपदेश दिया कि-जो मेरे कायदे है खुद मैं ही हूँ ऐसा जानना, जिस बातका शंसय हो फिर पूछ लो. पांच स्कंध मैंने तुमकों कहे है वही ठीक है. श्रमण माहण बगेरा जो कुछ तुमकों बोध करेगें इन्ही स्कंधोंके जीतर आजायगा. तुम अपने अङ्गे रस्तेकों ठोमना नहीं. ऐसे कहते कहते बेहोश हुवे और काल किया.

४१-महावीरके पहले और उनके राबरे निम्नलिखितदेश नगरमें जैनधर्म चलता था. १-मगधदेश राजग्रहनगर, २-अंगदेश चंपानगरी, ३-वंगदेश ताम्र लिप्तीनगरी, ४-कालिंगदेश कांचनपुरनगर, ५-कोशलदेश साकेतपुर. (अयोध्या)-६-कुरुदेश गजपुर (हस्तिनापुर)-७-कुशावर्तदेश शौरीपुर, ८-पांचालदेश कांपिल्यपुर, ९-जंगलदेश अहिच्छता नगरी, १०-सौराष्ट्रदेश द्वारिका नगरी, ११-विदेहदेश मिथिला, १२-वत्सदेश कौशांबी, १३-शांमिल्यदेश नंदीपुर, १४-मलयदेश जटिलपुर, १५-मत्स्यदेश वैराटनगर, १६-वरुणदेश अज्जापुरी, १७-दशार्णदेश मृत्तिकावती नगरी, १८-चेदिदेश शौक्तिकावती नगरी, १९-सिंधुसौवीरदेश बीतजयपत्तन नगर, २०-सुरसेनदेश मथुरा नगरी, २१-कुण्डलदेश सावध्धीनगरी, २२-लाटदेश कोटीवर्षनगर २३-अवंतिदेश उज्जयिनी नगरी, २४-महाराष्ट्र, २५-कॉकण, २६-मरुस्थल, और २७-मेदपाट बगेरा देशोंमें-बाद महावीरकेपिठे नेपालमें जैनधर्म चलता था. जैनाचार्य जङ्गवाहुस्वामी नेपालमें बहोतदफे फिरे जो-कि-महावीरके पिठे (१४८) वर्षबादहुवेहै, महावीर चौदसमे ती-

र्थकर ये इनके पहले रिषजदेव आदि तेइस तार्थकर होचूके है. रिषजदेवके बख्त बहलीदेशमें तख्तशीलानगरी जिसकों वर्त्तमानमें काबलगङ्गानी कहते है जैनधर्म चलता था, मगधाधिप श्रेणिकके मरनेबाद गद्दीनसीन कौणिक हुवा. कौणिकका पुत्र उदायी, इसकी राजधानी पटणा थी ये तीनों जैन थे. उदायीके पट्टपर नवनंद हुवे. इनकी राजधानीजो पटणा रहा. ये जैनी नहीं थे. नवमें नंदके पट्टपर चंडगुप्त-मंत्री चाणाक्य ये दोनों जैन थे. चंडगुप्तका बेटा बिंडुमार-इसकी राजधानी उज्जयिनी हुयी. बिंडुमार जैन था. इसका बेटा अशोकश्री हुवा इसने बौधमत स्वीकार किया. इसके पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमोताने बौधमतका योग धारा. अशोकश्रीने बौधमतकों फैलानेमें अधिक जोर दिया. दिल्ली और प्रयागके शिलास्थंजोमें जो पाली इफोंके लेख देखते है इसीके लिखवाये हुवे है. अशोकश्रीका बेटा कुणाल और कुणालका बेटा संभति हुवा आर्यमुहस्नी जैनाचार्यके उपदेशसे इसने जैनमत स्वीकार किया छात्रिम-अंध-कर्णाटक-गङ्गानी-और खु-रासाण वगेरा देशमें जहां जहां अपना राज्य था जैनमत बढ़ाया. बहोत जैनमंदिर बनवाये जो कि-शत्रुंजय गिरनार आदि तिर्थोंमें अब मौजूद है. दानशाला औषधालय वगेरा धर्मस्थान बनवाये. महावीरके पीढे तीसरे सेंकमेंमें यह हुवा.

महावीरके निर्वाणपीछे (१२) वर्षबाद इंडभूति (गौतम) गणधर (२०) वर्ष बाद सुधर्माणधर और (६४) वर्ष बाद जंबू-स्वामी निर्वाण हुवे. जंबूस्वामीके पीछे केवलज्ञान होना व्यवहिस हुवा. प्रज्जवाचार्य-शय्यंजय यशोज्ञ-संभूतिविजय-जडवाहु-और

स्वच्छन्द-ये (६) श्रुतकेवली याने चौदहपूर्वके ज्ञानो हुवे. वज्र, स्वामीतक दशपूर्वका ज्ञान रहा. आर्यरक्षियसूरि साढे नव पूर्व-पाठी थे. इन्होंने मनुष्योंकी प्रज्ञाहानी होती देखकर जैनसूत्रके (४) \*अनुयोम अलग अलग गुंथे. महावीरके पीठे (९८०) वर्ष बाद देवर्द्धिगणिकमाश्रमण आचार्यने +वल्लजोनगरीमें जैनपुस्तक लिखे. इसके पहले मुनि कंठाग्र ज्ञान रखतेथे. देवर्द्धिगणिकमा-श्रमण एकपूर्वधारी थे. चौदहपूर्वज्ञानके आगे एकपूर्व इतना स-मझीये जैसे समुद्रके आगे बिंदु.

३३-गौतमबुध जहां जहां विचरते रहे उनके वरुतमे वहां पर बौधधर्म चलता था. महावनमूत्रमें लिखाहैकि-गौतमबुधके निर्वा-ण हुवे पीठे (३३०) वर्षबाद तीनपीठका लिखी गयी. संवत् (१६१) में काश्मिरका मेघवाहनराजा बौधमत पालता था. चीन-मेंजो इसी अरसेमें इसका फेलाव हुवा. संवत् (४५७) में चीनके राजेजो बौधमत मानने लगे. कोरियाटापुमें संवत् (४३९) में बौधमत मानना शुरु हुवा. संवत् (४८७) में बौधाचार्य बुधघोषने धम्मपादसूत्रकी टीका शीलोन (लंका) में बनायी. संवत् (५०७) में धर्म्मदेशमें-संवत् (६०९) में जापानमें और संवत् (६९५) में स्यामदेशमें बौधमत चलना शुरु हुवा. जापानमें पहले यह मत चलता था. कि-स्वजावकी शक्तिसें सब बनाव बनता है संवत्

\* ग्याह अंग चरण करणानुयोग-उत्तराध्ययन आदि धर्मकयानुयोग-सू-र्यप्रज्ञति चंद्रप्रज्ञप्तिआदि गणितानुयोग-और संपूण दृष्टिवाद इव्यानुयोग है. महा-कल्प-निशाय मङ्गलनिशीयआदि (६) छेदसूत्र चरण करण के अर्थ ही सें संबंध रखत हैं इतलिये चरणकरणानुयोग है.

✱ जिम्मे कारकिर्तियाँ सौराष्ट्रमें हैं.

(१३५७) में काबुल और काश्मिरके पास लद्दाकमेंसे मुसलमानोंने बौधमत निकाल दिया जोकि-थोमे बहुत पहले धरु हुवा था. जापानमें संवत् (१३१९) में एक सीनराय नामके बौधमुनिने नयसंपथ निकाला और यह कायदा जारी कियाकि-मुनियोंको भी कन्याविवाहनी चाहिये. आजनक जापानमें वही रीति चल-तो है. जावा टापुमें बौधमत कबसे चला इसका पता नहीं मिलता परंतु यह निश्चय होचुका है कि संवत् (१३५७) में यहांका राजा बौध था. संवत् (४५७) में चीना मुसाफर फाहियान हिंडस्थानमें आया उसने अपनी किताबमें लिखा है जब मैं मगधदेशमें गया मुझे बौधमतके साधु मिले. ब्राह्मणोंके और हिंदुओंके देरास्तर (मंदिर) बहोत देखे. संवत् (४६७) में फाहियान शिलोन गया. शिलोनके बर्ननमें लिखता है यहांके लोग बतलाते है कि-बौ-तमबुध यहां आये थे. हवांक्तसांग चीना मुसाफर संवत् (५०५) में हिंडस्थान आया. उसने लिखा है गंगा जमनाके चौफेर मुल-कमें ब्राह्मण और बौध धर्म ज्यादा था. राजग्रहीके नालंद पा-केमें कितनेक विद्वानोंसे मेरो बातें हुयी. काश्मिरमें (५००) यज्ञ और अंदाज (५०००) हजार बौधसाधु रहते देखें. कंदहारमें बौधमत अधिक था. काश्मिरकों जब मुसलमानोंने जीत लिया था हिंडस्थानमें बौधमत बहोतकम होगयाथा.

३३-जैन आगम द्वादशांगवानोंके कितनेक पुस्तकोके नाम.

१ आचारसंग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ सप्तकाव्यांग,  
५ जगवती, ६ ज्ञाताधर्मकया, ७ उपासकदशांग, ८ अंतकृत, ९  
अनुचरोपपातिका, १० मभव्याकरण, ११ विपाक, और १२



दृष्टिवाद. इन बारह अंग सूत्रोंके उपांग नोचे मुजब. १ उपपा-  
तिक, २ राजप्रश्नीय, ३ जोवाभिगम, ४ प्रज्ञापना, ५ जंबूद्वीप-  
प्रज्ञप्ति, ६ चंद्रप्रज्ञप्ति, ७ सूर्यप्रज्ञप्ति, ८ \*निरयावली, ९ कल्पा  
वतंसिका, १० पुष्पिका, ११ पुष्पचूलिका, और १२ बन्हि-  
दशा. (१०) प्रकोर्णकसूत्रके नाम, १ चतुःशरण, २ आयुःप्रत्या-  
ख्यान, ३ ज्ञक्त परिज्ञा, ४ महाप्रत्याख्यान, ५ तंदुलवैतालिक,  
६ चंद्रवेध्यक, ७ गणितविद्या, ८ मरणममाधि, ९ संस्ता  
रकप्रकोर्णक, कितनेक देवेंद्रस्नवज्जी गिनते है, १० गच्छाचार,  
(६) वेदसूत्रके नाम, १ निशीथ, २ वृहत्कल्प, ३ व्यवहार, ४  
पंचकल्प, ५ दशाश्रुतस्कंध, और ६ महानिशीथ.-(४) मूलसूत्रके  
नाम, १ आवश्यक, २ दशवैकात्रिक, ३ पिंमनिर्युक्ति, कित-  
नेक औषधनिर्युक्तिज्जी गिनते है. और ४-उत्तराध्ययन.

चूलकामूत्र [ २ ]-१-नंदीसूत्र, २-और अनुयोगद्वार.  
नंदीसूत्रमें [ ८४ ] आगम और ( १४००० ) हजार प्रकी-  
र्णक सूत्रके नाम है जिनमेंसे कितनेक मौजूद है कितनेक  
व्यवलिप्त हो गये. महावीरसे लेकर आजतक जितने पूर्वाचार्य  
हुवे उन्होने जितने द्वादशांगवानीके आधारसे शास्त्र रचे उनमे  
से कितने व्यवलिप्त होगये ? इसका निर्णय होना मुसीबत है.  
(१४०००) हजार हस्त लिखित जैन पुस्तक मोक्षतर बुद्धर और  
पीटरसम वगेरा हिंछस्थानसे मौल देकर ले गये जो अब जर्म-  
नीदेशमें † मौजूद है. महावीरने केवलज्ञानके बलसे अर्थरूपवानी

\* कल्पिका सूत्रभी गिनते है

† वमुदेवहिंद (प्रथमानुयोग)-अंगविद्या-द्वीपसागर प्रज्ञप्ति-सिद्धमाधृत-  
व्योतिष्करदक-भार भंडांग निमित्तभादि.

कही और उनके ग्यारह गणधरोने जो सूत्ररूप गूँधन किसी जन्मसे सुधर्मागणधरकी गूँथी हुयी बानीका सब फेलाव है [ ७ ] गणधर महावीरके रोबरु निर्वाण हुवे, इन्द्रभूति ( गौतम ) और सुधर्मा ये दो गणधर पिछे निर्वाण हुवे. निदान ! महावीरकी गद्दोनसीन सुधर्मा गणधर थे महावीर चौइसमें तीर्थकर ये इनके पहले रिषजदेव, अजोतनाथ, संजवनाथ, अजिनंदन, सुमतिनाथ. पद्मप्रज्ज. सुपार्श्व, चंद्रप्रज्ज, सुविधि, शीतल, श्रेयांस बासुपूज्य, विमल, अन्नंत, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुथुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिमुव्रत. नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, -ये ( ३३ ) तीर्थकर होचुके है. सब तीर्थकर अपने केवलज्ञानसे छनियाका और मुक्तिका जैसा स्वरूप जानते है कयन करते है. किसीके कयनमें फर्क नही आता सबब कि सब पूर्णज्ञानी होते है. निदान ! महावीरने नयामन नही चलाया किंतु तेइस तीर्थकरोसे चलते आयेको सहारा दिया.

३४-बौध आगम पीठिकामूत्रके कितनेक पुस्तकोके नाम.  
१-विनयपीठिकामूत्र, २-महावग्गमूत्र, ३-कुलवग्गमूत्र, ४-परिवारपाठमूत्र, ५-दिग्निकायमूत्र, ६-परिनिव्वाणमूत्र, ७-मध्यमनिकायमूत्र, ८-मूत्रनिपात, ९-विमानवध्युमूत्र, १०-पेयवध्यु, ११-थिरगाथा, १२-जातक, (इसमें ५५० कथा है)-१३-निदी शपीठिका. [शौरीपुत्रकृत] १४-पाटीसंविदा, १५-अपादान, १६-बुद्धव्यास, १७-क्रियापीठिका, १८-धर्मसंग्रहिणी, १९-कथावध्यु, २०-पठाणमूत्र, [इसमें जीवका स्वरूप वर्नन है. -२१

शृगालवाद, [इसमें गौतमबुधके साथ शृगाल पुरुषका सवाल जबाब है.] वगेरा.

लंमनशहर निवासी डेविडजबारीष्टर कहता है सजी बौधमत के पुस्तकोमें (१७५२८००) शब्द है.

३५-जैनमें सम्मतितर्क, प्रमाण मीमांसा, नयचक्र, प्रमाणोक्ति समुच्चय, प्रमेयप्रमातृम्, तत्त्वार्थ, अनेकांतजयपताका, स्याद्वादरत्नाकरावतारिका, स्याद्वादमंजरी, स्याद्वादकलिका, और धर्मसंग्रहिणी. वगेरा तर्क ग्रंथ है. बौधमें तर्क ज्ञाषा, हेतुबिंड, न्यायबिंड, अर्बट, कर्मलशैत, न्यायप्रवेश, और ज्ञानपार, वगेरा तर्क ग्रंथ है. जैनमुनि विशेषकरके श्रमण वा निर्ग्रंथ लिखे जाते हैं बौधमुनि श्रमण वा बोधिसत्व लिखे जाते हैं, जैनमुनि श्वेत्तवस्त्र और बौधमुनि रक्तवस्त्र पहनेते हैं.

बौधमें (७) तीर्थंकर मानते हैं उनके नाम.

विपश्यी, शिखी, विश्वम्भ, ककुब्ध, कांचन, काश्यप, और सातमा शाक्यासंह. जैनमें इंड्रभूति, (गौतम) सुधर्मा, जंबू, भद्र बाहु स्थूलजघ्न, वज्रपि, सिद्धसेनदिवाकर, देवर्द्धिगणिक्कमाश्रमण और हरिजघ्नसूरि वगेरा मुनियोंको गुरु मानते हैं. बौधमें गौतमबुध, सर्वार्थसिद्ध, मौद्गल्यायन, शौरीपुत्र देवदत्त और आर्षद वगेराको गुरु मानते हैं. जैनमें दिगंबर और दुंदिया जैन कहलाते हैं परंतु जैनकेकायदेसे विपरीत चलाते हैं. जैसे जैनमें मुनियोंको श्वेतवस्त्र पहनना लिखा है दिगंबर कहते हैं नहीं ! मुनियोंको नग्नही रहना कहा है. स्त्रीको अगर पंचमहाव्रतपाले तो उसीजन्ममें मोक्ष हो ऐसा जैनागममें कहा है दिगंबर कहते

हे चाहे स्त्री कितना जी ब्रत पाले तोभी उसजन्ममें उसकी मोक्ष नहीं हो. निदान ! जैनकी असखी कोम जो श्वेतांबर प्रसिद्ध है द्वादशांगवानोके पुस्तक मानते है और उसमें लिखे वमुजब च-  
खते है दिगंबर नहीं चलते.

जैनमें मूर्तिपूजन करना लिखा है दुंदियेलोग कहते है मूर्ति पूजन जैनमें कहां लिखा है ? मूर्तिकों मानना और पथ्यरको मानना एकसरखा है ऐसा कहकर असलीकोंममेंसे भेद करते है मुँहके उपर दिनरात बस्त्रकोपाटो बांध रखतें है.

बौधमें मुख्यकरके (४) भेद है वैजापिक, सौत्रांतिक, योगाचार, और मध्यम.

(यतः) — (शार्दूल विक्रीणितम्.)

अथों ज्ञानसमन्वितो मतिमता वैजापिकेणेष्यते,

प्रत्यक्षो नही बाह्यवस्तुविसरः सौत्रांतिकैरादृतः;

योगाचारमतानुगै रजिमता साकारबुद्धिः परा,

मन्यते वत मध्यमाः कृतधियः स्वस्थां परां संविदं. १

निदान ! जैन और बौध दोनों निराले है. बौधके महाव-  
ग सूत्रमें लिखा है जब गौतमबुध विशाली गये थे तब वहां एक  
निगंथज्ञातपुत्रके उपासकको अपना मतमें किया, जाने बौध  
मतमें लाये जोकि मल्लीय और लल्लीय जातिके अठारह राजा-  
उकें वंशमें था. इससे कहसकते है कि गौतम बुधके समय वि-  
शालीके गिर्द जैनमत चलता था. बौध पीठिकामें लिखा है नि-  
गंथनाथपुत्र और अग्गीवेशायगोतका सुधर्मा अपने पक्षे दुश्मन है.  
इससे कह सकते है कि बौधकों जैनका कुछ जय रहता था.

फिर लिखा है निगंथनाथपुत्रने पावापुरीमें काल किया. गांशा-  
ला [मंसलीपुत्र) अजयकुमार और अजातशत्रु बगेराके नामभी  
बौधपुस्तकोंमें बहोत जगह लिखा है. किसी जगह यह नही लि-  
खा कि निगंथनाथपुत्र आदि नये हुवे. इससे पाया जाता है कि  
जैन नवीन नही. बौधोंमें ललितविस्तराग्रंथ बहोत पुराना मानते  
है परंतु इसमें भी जैन छादशांगवानी-के आचारांग सुत्रकृतांग  
आदि पुराने सिद्ध होते है क्यों कि इनमें जो आर्यावंद लिखे  
है [११००] वर्षकी रचनासे पुराने है. चंद्रमङ्गलसि सूर्यमङ्गलसि जै-  
नागम ग्रीकलोगोके हिंदुस्थानमें आये पहलेके है सबकी-ज्यो-  
तिष् संबंधी जो जो हकीकत इनमें है ग्रीकलोगोके ज्योतिष् शा-  
स्त्रमें नही.

कितनेका यह आशय है कि बौधोंकी पालीभाषा जैनोकी  
प्राकृतभाषासे पुरानी है परंतु सोचनेकी जगह है कि-जैनआगम  
जैसे अब है महावीरके निर्वाणसे [५००] वर्ष बाद लिखे गये  
उस असेमें बोली जरूर बदली होगी. शिवाय इसके जैनोके (१४)  
पूर्व विवेद हो गये. बाजे आदमी कहते हैं बौधमतकी जड़ कपि-  
लके सांख्यपर है, परंतु यह गलत है, सांख्य और बौधके त-  
त्वोंमें जमीन आस्मानका फर्क है. हंटर साहबके कहनेपर काय  
म रहे तो जैन बौधकी एक शाखा ठहरती है परंतु हकीकतमें  
हंटर साहबकी समझका फर्क है. कोलब्रूक अंग्रेज गौतमबुधको  
महावीरका चेला कहता है और वेबर जर्मन कहता है दोनों  
अलग थे याने महावीरका चेला गौतम अलग और बुधगौतम  
अलग. इसमें वेबरका कहना सच है. क्योंकि-गौतम तीन हुवे.

इंद्रभूति [गौतम] महावीरका चेला, बुधकीर्त्ति गौतमबुध बौध-मतका गुरु, और प्रमाण प्रमेयादि [१६] पदार्थ प्रतिपादक गौ-तम नैयायिक. ये तीनों एक दूसरेसें कुछ संबंध नहीं रखते. बौधपोठिकाओंमें निर्ग्रंथोंको बौधोके वादी लिखे है, इन बातों-सें कह सकते हैं जैन बौध एक नहीं.

३६-जैनमत बहुधा हिंडुस्थानमें ही है, कुछ (३०) लाख संख्यासें अधिक नहीं. जिममें (३ लाख दिगंबर और (१) लाख के अंदाज दुंदिये है. जैनमंदिर [३६०००] हजारसें कम न होंगे. बौधमत हिंडुस्थानमें थोमा है एशियाखंडमें वगेरा अन्यसब ज-गह मिलाकर (५०) करोमके अंदाज मनुष्य है. बौधमंदिरोंको बौधाढक बोलते है कता वजामें गोल आकार होते है. बुधकी मूर्तिके शिरपर जटा बढीहुयी और बशीहुयी होतीहै, यज्ञोपवी-तके आकार वस्त्र लिपटा हुवा-लंगोट बंधा हुवा-दाहना हाथ उपदेशरूप उंचा कियेहुवे-पद्मासन बेठी रहती है. और बुधम-तके पदवीधर साधुओंको लामा और साधारण साधुओंको पुंगी जी बोलते है और रक्तावर रखते है तिब्बतदेशमे लामाकी मूर्ति इसी पृथक् प्रकारकी पूजी जाती है. जैनमुनि-योंके ठहरनेकी जगहको उपाश्रय और बौधमुनियोंके ठहरनेकी जगहको मठ वा आश्रम बोलते है. बौधमें देवमंदिर प्रायःथोमे बनाये जाते है विशेषकरके गुम्बज ढात्रीयां और मठ बनानेका रिवाज ज्यादा है. इतिहासकारोंने गौतमबुधकी लाशके बारेमें लिखा है जब इस्वीसन [४७७] वर्ष पहले गौतमबुध देहांत हुवे उस समय बौधमती राजोंने चाहा कि-उनकी लाशको अपने

अपने देशमें लेजावे. और इस बातकेलिये लम्बनेकों जी तयार हुवे तब गौतमबुधके चेलोने उस लाशकों जलाकर थोमी थोमी हस्ती और राख सबकों बांटदियी. और लम्बनेसें रोका. निदान बौधराजाआँने उस हस्ती राखकों अपने अपने इलाकेपर जमीनमें गामकर गुम्बज बना दिये. फिर उसके चेलोके मरनेपर उनकी हस्ती राखके उपर जी इसीतरह गुम्बज बने और उनकी पूजा करने लगे. इसी सबब बौधमें देवमंदिर बनानेका रिवाज थोमा रहा. जिलसा मानिकयाला आदि केइ जगह उक्तप्रकारके गुम्बज मौजूद है. बर्मा-सहल-तिब्बत-और चीनके मुल्कमें बौध लोग धातु पत्थर या मीट्टीके गुम्बज बनाकर पूजते हैं. बनारसमें बौधोंकी एक पूज्यजगह है जिसकों वहाँके लोग सारनाथ की धमेख बोलते हैं इसमें उनके कोइ महापुरुषकी लाश बताते हैं. नेपालमें अबजो शिवधर्म चलता है शिव और पार्वतीका नहीं किंतु अवलोकितेश्वर और पैशावरके असंगनामके शरूशका चलाया हुवा बुधशिव नामका धर्म है. एशियाखंडमें बौधमत अशोकके बरत जारो हुवा, अशोकका इरादा यह ज्यादा रहता था कि-किसीप्रकार बौधमत अधिक फैले. कनिष्कराजा अनुमान इसीसन (४०) में हुवा. अशोकके बरतसें बौधमत राजधर्म होगया.

३७-जैनमुनिके नियम,-कच्ची जीवकों न मारना. मारा जावे तों प्रायश्चित्त लेना. झूठ नहीं बोलना. चोरी नहीं करना. यहाँ तक कि-मालककी रजा लिये बिदू न कोइजी चीज अपने उपयोगमें नहीं खाना. मनः वचन और कायासें स्त्रीसेवन न करना. एक आदमी बिचमें पाये बिदू न एकीली स्त्रीसे बात न करना. वम

दोलत न रखना. रात्रीकों कच्ची आहार या पानी खाना पीना नही. सामना कनारा न दिखाइ देवे एसे समुद्र या नदीके पार होनेको जहांजमें न चढना. सारी जींदगी जिज्ञासांगकर आ जीविका करना. पलंगपर न सौना. रुइदार वस्त्र न उढनें. कोई वनास्पति जिसमें जमीकंद आदि अजक विल्कुल त्याग और जमीकंद शिवाय कच्ची वनास्पति न खाना. रंधी हुयी खाना. उ-  
भ्र जल पीना. दशप्रकार यतिधर्म और समाचारी पालन करना. असवारीपर न चढना सदा पैरोंसें चलकर देशाटन करना. बौ-  
धमुनिके नियम इससें फर्कवाले है. जैसें जैनमुनिकों घर घर गो-  
चरीकरके जिज्ञा लेना कहा बौधमुनिकों कोई शस्त्र मठमें जो-  
जन देजावे तो जो खा लेना. जैनमुनिकों मांस खाना मना है  
बौधमुनिकों मना नही. देवदत्त शिष्यने गौतमबुधसें इसरिवाजकों  
बंद करनेकी याचना कियी थी परंतु कबूल नही हुयी.

३७-जैनगृहस्थके नियम. व्रमजीवकी हिंसा न करना. ब्रूठी  
साक्षी फूठा लेख न करना. चोरी न करना. अपने धनका इ-  
च्छा निरोध याने प्रमाण करना कि मुजे इतने तक रखना. रखे.  
हुवेमेंसें उठा जाग धर्मकृत्यमें व्यय करना. पर स्त्री न जोगना.  
दश दिशामें जाने आनेका प्रमाण करना. मदिरा मांस आदि  
[३३] अजक्ष्य और (३३) अनंतकाय वस्तु न खाना. रात्रीजो-  
जन न करना. प्रतिदिन सामायिक करना. पर्वतिथिकों पौष-  
व्रत करना. त्रिकाल जिनपूजा और यथाशक्ति सुमुनिकों  
दान देना.

३४-बौध कृषिकवादी है प्रथम जिस चूके, ज्ञाना क्षेत्र-



वादी और शुन्यवादी ये [ १ ] शाखा और ज्ञी इनमें है. वेदसें तो जैन बौध दोनों बखिलाफ है. जैन लोग महावीरकों ज्ञातपुत्र इसलिये कहते हैं कि कल्पसूत्रमें उनके पिताकों ज्ञातकृत्रीय कहकर लिखा है. बौधके सामन्नफलसुत्रमें निर्ग्रन्थज्ञातपुत्रकों अग्निवैशायन लिखा है यह बौधोंकी भूल विदित होती है. उन्होंने ने स्यात् महावीरकों उनकेशिष्य मुधर्म्मासें मिलाकर एक कर दिया. क्योंकि मुधर्म्मा अग्निवैशायन गोतके थे. गौतमबुधने अपने शिष्योंकों कहा है कि-श्रमण माहण तुमकों जो कुछ बोधे करेगें मेरे कहे पांचस्कंधके जीतर आजायगा. निदान ! इनबातोंसें सिद्ध है कि जैन बौध जिन जिन हैं एक नहीं. न एक दूसरेकी शाखा.

४०-जैन और बौध दोनोंके शास्त्रोंसें सबूत है महावीर और गौतमबुध बिम्भसार और अजातशत्रुके वख्तमें थे. जैनशास्त्रोंसें नियत है कि महावीरके निर्वाण के बाद (४७०) वर्ष बतीत हुवे तब विक्रम संवत् चला. [ ४७० ] को [ १९४९ ] में मिला दो तो महावीरके निर्वाणकों आज (१४१९)वर्ष होते हैं.

जैन बौधके बारेमें यहां हमने जो कुछ लिखा दोनोंके शास्त्रोंसें और प्राचीन इतिहासकी कितावांसें देखकर लिखा है. अगर इसमें कोई गलत बात है पाठकवर्ग उसे गलत समझे. सुधारनेकों हमसें सूचना करे. नयी बात जान पड़े जरूर लिखे. संसारमें एकसें एक ज्यादा बहिमान् पड़े हैं. मनुष्यों यह खयाल न रहना चाहिये कि-हमने जो लिखा सो ही सत्य है. इस विषयको अगल अलग करना है तो जिनजिन पारिग्राह गट

लो, महावीर और गौतमबुद्धकी दिनचर्या न्यारी बन सकेगी और साथ साथ दोनों मजबूत कायदेजो अलग निकाला आवेंगे.

संवत् (१९४९)-जादूपद वदी (१४) रविवारके रोज पा-  
लिताणोमें मुनिश्रो दानविजयजीका पत्र आया, जिसमें स्थापन  
होनेवाली जैन पाठशालामें आनेकों आमंत्रण लिखा था. जिस-  
का उत्तर अनेक धर्मसंबंधी कार्योंका विघ्न देख जाना न बननेके  
कारण यही लिखना बना था कि-कई विशेष कार्योंके उपस्थित  
होनेसे हम आ नहीं सकते.

आसोज वदी (१३) रविवारके रोज जावनगरमें अम-  
रचंद घेलाजाइका पत्र आया. हममें बालुकम मुकामपर प्रतिष्ठा  
किस दिन करना ! श्रीमुनिमुव्रतस्वामीकी प्रतिमा-बैठानेवाले-  
का नाम रतनचंद वीरजी है. इत्यादि हकीकत थी. इसपत्रके  
आनेपर ज्योतिषद्वारा विचार किया तो इस वर्षमें लग्नशुद्धिका  
अज्ञाव मिला. हमलिये यही लिखदिया गया कि-इसवर्षमें  
उत्तम लग्न शुद्धिका अज्ञाव है.

संवत् (१९४९) आसोज सुदी (७) बुधवारकी टपालमें मुनि  
श्री वीरविजयजीका पत्र मुकाम अमृतमर पंजावमें आया. उसमें  
लिखा था कि सिद्धमहाराजकों रुपारूपी माननेमें आता है. क-  
हनेमें जी रुपारूपी आते है. सो किस अपेक्षा अरूपी और कि  
स अपेक्षा रूपी समजना, ? इसका यह उत्तर दिया कि-पौद्-  
गल्लोकरूपका अज्ञाव होनेमें सिद्ध अरूपी और ज्ञानीयोके ज्ञा-  
नमें वे असंख्यात प्रदेशात्मक आत्मद्रव्य जैसे है दिखलाइ देते  
है इस अपेक्षा रूपी समजना निदान ! अपौद्गल्लोकरूप  
सिद्धमें है.

इनदिनोमें गुजरात और मारवामें [१]मुनियोंने पत्रद्वारा सूचन किया हम आपकेपास रहकर विद्याभ्यास करना चाहते है. इनपत्रोंका उत्तर हमने उनकी मरजीके माफिक इसद्विजे नही दिया कि-इस पंचमकालमें मनुष्योंके योग्यायोग्यका पत्ता नही लगता. समय बडाविचित्र है. मुनासिब नही है कि-इतनी दूरसे किसी साधुकों बोलाकर पास रखाजावे. अलबते ! जब हम विहार करते हुवे गुजरातकी तरफ विचरेगें तब जो कुछ विद्याभ्यास कियो है उसकों नवीन साधुवोंके पढाने और श्रावक आदि शुज्जकर्मियोंके उपदेशमें ही लगावेगें यही मुनियोंका धर्म है. किसी मुनिको दूरदेशमें बोलाकर हम व्यर्थ डुबी करना नही चाहते, जैसे कि-पंजावमें बहुधा साधु गुप्तपने डुबी दृष्ट पढते है.

चौमासा पुरा हुवा कार्तिक पौर्णमासी शुक्रके रौज तिसरे पहर लश्करसे विहार कर मोरार ठावणी गये. व्याख्यानमे ढालसागर जिममें हरिवंश पांरुव कौरवोका वर्नन है ) वाचना शुरू किया. मार्गशेष वदी (२) रविवारकं रौज मिष्टी हरनारायणजी हमारेपास आये और ज्योतिषसंबंधी कितनेक सवाल पूछे. जिनका उत्तर यथाअवसर ग्रंथानुसार दिया गया. एकमास कल्प उहरे शेठ-राजमलजीके ठोटे भ्राता मगनमलजीने दुंदिया पंथ ठोरुकर सम्यक्तपूर्वक संवेग आम्नायका वासक्षेप लिया. विश स्थानककी पूजनवगेरा उज्जव हुवा. मोरार ठावणीसे फिर लश्कर आये.

संवत् (१९५०) चैत्रमुदी प्रतिपदाके रौज नवीनसंवत्के प्रवेशमें एक नवीन समाचार निम्नलिखित प्राप्त हुवा. ज्ञावार्थ-एक

दिगंबर महाशय ! निजपत्रद्वारा निर्पक्वजावसें लिखते है कि-दि-  
ल्लीके दोचार जैनीलोकोने अंबलीके महोलेमें एक नवीन दिगं-  
बरमंदिर बनाया है, और उसको रथयात्राका महोत्सव चैत्रकृष्णा  
(४) चंडवारका नियतकरके देशांतरमें चीठो जेजो गयी. और  
दिल्लीकी सर्वबरादरी इसमें सामल थी. एकमास प्रथमसें जेमंगपुरे  
स्थानमें (जो दिल्लीमें दखन दिशामें दोकोशके फाशलेपर बसता  
है राज्यजयपुरके आधीन है ) ऊंमारोपणका मुहूर्त किया. सो  
ऊंमारोपणके समय पृथ्वीमेंमें दबीहुयी एक जैनप्रतिमा निकसी.  
जिसको देखकर प्रथमतो हमलोकोकों बडा हर्ष हुवा परंतु विशेष  
देखजाल करनेसें जबउक्त प्रतिमा श्वेतांबरआम्नायकी ज्ञात हुयी  
उससमय मूर्त्तानंदीयोने पक्षपातरूपी द्वेषकरके फेंक दियो, जिसका  
फल अज्ञा नही हुवा, जावार्थ-जो मेलता होनेवाला था उसमें एसे  
एसे विघ्न हुवे जिनका वर्नन करने शोक उत्पन्न होता है. यद्यपि  
कोइकोइ विद्वान्पुरुषोने मूर्त्तानंदीयोकों बारबार समझाया कि-  
यद्यपि आम्नायजेद परु गया परंतु प्रतिमातो अपनेही जिनेन्द्र-  
देवकी है. उससें द्वेष करना आपको उचित नही. परंतु पथरकों  
जोक नही लगती. किमीकों कुछ खयाल नही हुवा केवल प्रति-  
माकों उठाकर लेगये. सोजो इस जयमेंकि-कोइ श्वेतांबरी न  
जेजाने पावे. प्रतिमा महामनोइ और अखंड है.

दिल्लीके दिगंबरलोकोने जेमंगपुरेमें जो ( ५००० ) रूपये  
लगाकर सज्जामंरुप बनाया था उसकं थंज लोहमयी अधिक-  
पायदार जावार्थ-रैलकी लीकके बनाये थे, और यात्राहोनेसें  
एकदिन पहले पूर्ण कियागया था. जिसकों देखकर अत्यंत आनंद

होता था. परंतु इनके द्वेषका परिचय किसीदिवयोगसे यह हुआ कि-चैत्रकृष्णतृतीया रविवारकी अर्द्धरातकों वृष्टि-आँला-भूकंप-वज्रपात इत्यादि उपद्रवोंने उमसन्नामंरूपकों समूल उठाकर दूर फेंक दिया. लोहेके थंज इसप्रकार दूकमे होगये जिसप्रकार काचकी ठमी उपका लगनेसें करक जाती है. और यह उपद्रव मेल्लेकेबजार और मन्नामंरूपमें ही हुआ जहां जगवान्की प्रतिमा बिराजमान करनेकेलिये मरा लगाया था उसमें कोई उपद्रव नहीं हुआ. यह देवकागण नहीं तो और क्या है ?

इमलिखनेसें सारांश यह है कि आजकल संसारमें अविद्या-अंधकारके फैलानेसें द्वेषज्ञावकी वृद्धि होगयी और हमारे दिगंबरान्नाइ जो प्रायः विद्याकरके अनजिज्ञ है उनके द्वेषका तो क्या कहना? जब वे पाषाणमूर्तसें छेप रखते हैं तो-श्वेतांबरसंघसे छेपकरना कौन बमोवात है ? यह तो इनका स्वज्ञाविक धर्मही होगया. अब इ-विषयके अंतर्गत हमको यह दिखलानेकी आवश्यकता हुयी कि-जैनमें दिगम्मतकी उत्पत्ति कबसें हुयी?-कान-आचार्यके कौनमशिष्यसें इमका प्रचार क्योंकर हुआ?-यद्यपि इसविषयमें हमारेपास कुछ दिन हुवे मुलतानकरहनेवाले श्रावकोने [१५] प्रश्न जेने थे जिनमेंकुछ दिगंबर और कुछ हुंदियोकी तरफ के प्रतीत होतेथे, परंतु इमअवसरपर उनकाजो उत्तर यथार्थ लिखनेमें आयगा. जोकि-इमनिबंधकी पूर्णता होनेपर लिख लाये जायगें.

( श्वेतांबर दिगांबरकी निन्नता. )

महावीरके निर्वाण पिठें (६०९) वर्ष बतीत हुवे बाद शिव

भूतिमुनिसैं दिगंबरमतकी उत्पत्ति हुयी. आर्यकृष्णाचार्यके ये शिष्य थे. संसार अवस्थामें रथवीरपुर नगरके रहनेवाले एक प्रसिद्ध गृहस्थ थे. नाम शिवभूतिसहस्रमल्ल था. इन्होंने उक्त आचार्यकेपास दीक्षा लियी और जिस हेतुसैं इन्होंका प्रयत्न होना हुवा आवश्यकसुत्रकी श्रीहरिजन्मसूरिरचित वृहद्वृत्तिमें इसप्रकार लिखा है. ( तद्यथा. )

[गाथा.]

उवासमएहिं नवुत्तरोहिं [६०७]सिद्धिगयस्स विरस्स १,  
तो वोडियाएदिठो-रहवीरपुरं समुपन्ना,  
रहवीरपुरं नयरं-दीवगमुज्जाण मज्झकन्होय,  
सिवभूइस्सुवाहिमिउ-पुत्ता थेराण कहणाय, २

व्याख्या,-रहवीरपुरं नगरं, तच्च दीवगमुज्जाणं, तच्च अज्झकन्होय एवम आयरिया समोसद्धा, तच्चय एगोसाहसमल्लो एवम, तस्स जज्जा, सातस्म मातंचमेति तुज्झ पत्ता दिवसे दिवसे अश्वरत्ते एइ, अहं जग्गामि छुहाइया, अज्झामि ताहे ताए जणति, मा दारं देव्वाहिं, अहं अज्झ जग्गामि, साए सुत्ता, इयरा जग्गइ अश्वरत्ते आगतो, दारं मग्गति, माताए अंबादितो, जच्च एताए वेज्जाए उघाडिताणि दाराणि तच्च वच्च. सो एिगउ. मग्गतेण साहु पडिस्सउ उग्गामितो दिठो. वंदित्ता जणति, पन्वावेहमं, ते नेउंति, सयं लोउ कतो. ताहे सल्लिं दिन्नं. ते विहरिता. पुरि एोवि आगताए रएणा कंवलएणं दिन्नं. आयरिएण किं एतए जतोए किं गहितंति जणिकए तस्स अणापुत्ताए फालियं निसे थातो कतातो, कसाइउ. अएणइ जिणकप्पिया वणिज्जंति, ए-

उंतरे सिवभूतिणा पुढितो. किंमिदाणि पत्तियो उवही धरिच्च-  
 ति जेणं जिणकप्पो न किरति. गुरुणा जणितं. न तीरइ सो इ  
 दाणि बोढिन्नो. ततो जणाति. किं बोढिच्चति ? अहं करोमि. सो  
 चेव परलोगाणि कायव्वो. किं उवहिपरिग्गहेण ? परिग्गह  
 सभ्जावे कसाय मुञ्जाजयादिया बहु दोसा. अपरिग्गहत्तं च सुए  
 जणितं. अचेलय जिणिंदा अतो अचेलता सुंदरत्ति. देव्हसभ्जा  
 वेवि कसाया मुञ्जाइया कस्सइ जवंति. तो देहोवि परिच्चइयव्वो-  
 त्ति. अपरिग्गहत्तं च सुए जणितं धम्मोवगरणेवि मुञ्जा ए काय-  
 व्वत्ति. जिणावि एगेते ण अचेलो. ततो जणियं सव्वेवि एग  
 दूसेणंणिग्गता जिणवरा इत्यादि-एवं थेरेहिं कहणा. सेकतत्ति  
 गाथार्थः एवं पणवितो कम्मोदण उमिता गतो. तस्सुत्तरा  
 जणिणी उज्जाणेतितस्स वंदिता गता. तं दंदूण तोयवि चीवराणि  
 उमिताणि. ताए जिख्वं पविठा. गणिताये दिठा मो अम्ह लोगो  
 बिरिच्चिहित्ति उरे से पोत्ती वच्चा. नहा सा णेतति. तेण जणितं. अउउ  
 एसा तव देवताए दिन्ना. तेणय दो सीसा पच्चाविया. कोडिणो  
 कोट्टवीरोय. ततो सीसाण परंपरा फामो जातो एवं बोमिया उपन्ना.

अमुमेवार्थं ज्ञाप्यकारोऽप्याह. [मूलज्ञाप्यकारः]-गाहा,-

ऊहाए पन्नत्तं बोमियसिवभूइ उत्तराहिं इमं

मिउदंसणमिणमो. रहवीरपुरे समुपन्नं. १,

ऊहया स्वतर्कबुद्धा प्रज्ञप्तं प्रणीतं बाँटिकशिवभूत्युत्तराभ्या-  
 मिदं मिथ्यादर्शनं. इणमोत्ति-एतच्च क्षेत्रतो रथवीरपुरे समुपन्न  
 इतिगाथार्थः-बाँटिकशिवभूतिसकासात् बौटिकलिंगस्य जवत्युत्तत्ति  
 वत्तमाननिर्देशप्रयोजनं पूर्ववत् पाठांतरंवा. [गाहा.]

कोमियसिवभूर्इयो बोमियलिंगस्त होइ उत्पत्ती.

कोमिन्नकुठवीरा-परंपरा फास उपप्ता. (१)

ततःकोमिन्यश्च कोटिवीरश्चेति सर्वो द्वंद्वो विज्ञापया एकवच-  
वतीति कोमिन्यकोटीवीरं तस्मात्परंपरां स्पर्श आचार्यशिष्य  
संबंधलक्षणामधिकृत्य उत्पत्ता संजाता बोटिकदृष्टिरध्याहरणी  
येतिगाथार्थः—

(अर्थः)—रथवीरपुरनगरके दीपकउद्यानमें आर्यकृष्णनामके  
आचार्य ग्रामानुग्राम विहार करतेहुवे पधारे. इसनगरमें शिवभू-  
तिसहस्रमहानाममें एक प्रसिद्ध गृहस्थ रहताथा. एकरौज इसकी  
स्त्री अपनी सासमें कहनेलगी आपकें पुत्र रातकों इतनी अवेरकरके  
आतेहैं जितनीदेरतकमें जाग्रत नहो रहशकती. सासने कहा अच्छा  
बहु ! आज तुम मत जागना मैं जागुंगी. शिवभूति रौज दैरमें आते  
ही थी उसीमुजब बन्दीदैरमें घरआये. आवाज दियी कि-किबाम  
खोलो. जीतरमें माताने जवाब दिया इतनीदेर जहां किबाम बंद  
न किये जातेहो वहां जा. इतनीबात सुनकर शिवभूति गोस्ता  
खाकर उलटे लोटे, नगरमें फिरते फिरते साधुजनोंका उपाश्रय  
खुजा देखा. जीतर जायकर बंदना कियी और कहाकि-मुझे साधु  
किजीये. गुरु दीक्षा देनेको इनकार हुवे तब इसरे दिन शिवभू-  
तिजीने आपसेआप लोच करके पुनःप्रार्थना कियी. अधिक  
आग्रहदेखकर गुरुने शिवभूतिजीकों साधुपनेका वेष देयकर दीक्षा  
दियी और वहांसे विहार कर गये. देशांतरमे फिरते फिरकजी  
उन्होंका आना रथवीरपुरनगरमें हुवा. तब शिवभूतिमुनिकों राजाचे  
एकरत्नकंबल दिया. रत्नकंबल लेकर शिवभूतिमुनि जब गरुकेपास



पहोचे गुरुने कहा ऐसे रत्नकंबलसें अपनेको क्या प्रयोजन है ?  
 बहुत मौलका रत्नकंबल रखना व्याजब नही ऐसा कहकर बिना  
 पूछे उसरत्नकंबलके बड़े बड़े टुक करदिये और पाँचने प्रमार्ज-  
 नेके काममें लगादिये. शिवभूतिमुनिने इसबातसें बहोतरोष माना.  
 यूँ होतेकितनेक दिन बतीत हुवे एक दिनकी बात है गुरु जिन-  
 कल्पी मुनियोंका अधिकार कथन कररहेथे शिवभूतिमुनिने  
 गुरुसें पूछा कि-आपांजो ऐमे क्यों नही होते ?-उपधि क्यों रखते  
 हैं ? जिससे जिनकल्पमार्ग नही बन आता, -गुरुने उत्तर दिया  
 इस कालमें जिनकल्पमार्ग व्यवच्छिन्न होगया उपधि बिना स्थिर  
 रहना अशक्य है. शिवभूतिमुनिने कहा कैमे व्यवच्छिन्न होगया ?  
 मैं करुंगा. परलोक अर्थीको उपधिपरिग्रहसें क्या प्रयोजन ?-  
 उपधिके होनेसें कषाय मूर्छा और ज्ञयआदि बहुतेरे दोष पैदा होते  
 है. अपरिग्रहपना सूत्रमें कहा है. जैमे-“अचेज्जयजिणिंदा”  
 अर्थात् जिनेश्वर अचेलक ( वस्त्र रहित. ) थे. इस लिये अचेज्ज-  
 पना ही सुंदर है. गुरुने कहा जैमे उपधि परिग्रहके सद्ज्ञावमें  
 कषाय मूर्छाआदि दोष स्वीकार है तो शरीरके सद्ज्ञावमेजी  
 कषाय मूर्च्छाआदि दोष क्यों नही स्वीकार होंगे, ?-इससेंतो  
 शरीरजी ठोरु देना चाहिये. परंतु यह तुमारो समझका फर्क है.  
 सूत्रमें जो अपरिग्रहपना कथन किया है वह धर्मके उपगरणमेंजो  
 मूर्छा नही करना चाहिये इस अपेक्षासें है, जिनेश्वरभी एकांत  
 अचल (वस्त्र रहित) नही थे. आगमवचन है कि-“सद्येवि एगदू-  
 सेणा णिग्गता जिणावरा”—मज्जीजिन एक देवदूष्य वस्त्र स-  
 हित दीक्षा लेकर निकले. इत्यादि कथनसे गुरुने बहोत सम-

जाये परंतु कर्षोदयसें शिवभूतिमुनिकी समझमे नही आया. अलग होकर पात्र और वस्त्र वगैरा सर्वउपधि ढोडकर नग्न विहार करने लगे. बहार उद्यानआदिमें स्थिति करते रहे. इधर उनकी बहैन जो कि-दोहिता थी शिवभूतिमुनिकों वंदना करने गयी उनकी वस्त्ररहित देखकर आपन्नी वस्त्ररहित होकर विचरने लगी. एकदिनकी बात है. जब जिह्वा निमित्त वह शहरमें आयी तो एक गणिकाने इसको देखकर सोचा कि-जोक हमारेपर विरक्त न हो जाय एकमाडी लेआयो और उसें पहना दियो. साध्वी सा-डी लेनेको यद्यपि इनकार थी तो जी गणिकाने कहा तुमारे दे-वने तुमको दियो है लेना चाहिये ऐसा कहकर चली गयी.

शिवभूतिमुनिके कोडिन्त्य और कोटिवीर नामके दो शिष्य हुवे. क्रमसें शिष्य परंपरा बढ़ती गयी. [मूलजाण्यकारने जी कहा है कि-] यह मिथ्यादर्शन रथवीरपुरनगरसें शिवभूतिमु-नि और उत्तरासाध्वीसें उत्पन्न हुवा. जबकि-विक्रम संवत् (१३७) चलता था और महावीरके निर्वाणको उमबरूत (६०७) वर्ष हो चुके थे. क्योंकि-महावीरके निर्वाण हुवे बाद (४७०) वर्ष पिछे विक्रम संवत् चला है. श्वेतांबर आम्नायके शास्त्रोंमें बहुत जगह लिखा है कि-विक्रम के संवत्सें (४७०) वर्ष पहिले महावीर का निर्वाण हुवा. दिगंबर आम्नायके शास्त्रमें लिखा है कि- (६०५) वर्ष पहिले महावीरका निर्वाण हुवा. यह जो (१३५) व-र्षका फर्क दोनों आम्नायवालोकी गिनतीमें पडा यह विक्रमके संवत् और शालिवाहनके शाकेका है. क्योंकि-दिगंबराचार्योंने शालिवाहनका मचार किया हुवा शाका-“संवत्”-करके माना

है. और इसी शालिवाहनकों विक्रमार्क करके लिखा है. इसकी साक्षी त्रिलोकसार और हरिवंशपुराण आदिसे मिल सकती है.

शिवभूतिमुनिसें जबकि—इसमतकी शुरुआत हुयी उसको आज (१८११) वर्ष हुवे और महावीरके निर्वाणकों आज (३४१०) वर्ष हुवे, महावीरके गणधर आदि शिष्योंसे लेकर शिवभूतिमुनितकके बीच बीच सेंकड़े जैनाचार्य हुवे उनमेंसे किसी आचार्यका रचा हुआ ग्रंथ या किसी ग्रंथका स्थल दिगंबरआम्नायमें क्यौ नही मिलता ? क्या ! किसी आचार्यने कोई ग्रंथ नही रचा ? इस लेखका तात्पर्य यह है कि—बीचके पांचसो ठसो वर्षके आचार्योंका कोई ग्रंथ दिगंबरआम्नायमें नही मिलता और श्वेतांबर आम्नायमें मिलता है इससे कह सकते है दिगंबर मतको शुरुआत पिछेसें हुयी.

कोइ कोइ दिगंबर ऐसा कह देते है कि—जख्बाहुसंहिता जख्बाहुस्वामीकी रची हुयी है, जो महावीरके निर्वाण पिछे (१६१) वर्ष देहांत हुवे है, परंतु यह कहना ठीक नही. क्यौकि वह जख्बाहुसंहिता हमारे पास है, उसके उत्तरखंडके प्रारंभमें चतुर्थ—पंचम और षष्ठम श्लोकमें लिखा है कि—छादशांग वेत्ता जख्बाहुको, नमस्कार करके उनके शिष्य उनसें विज्ञप्ति करते है कि—महाराज ! हमको दिव्यज्ञान विदित करो, (जख्बाहु संहिताका पाठ.)

तत्रासीनं महात्मानं ज्ञानविज्ञानसागरं,  
तपोयुक्तं च श्रेयांसं जख्बाहुं निराश्रयं, ४  
छादशांगस्य वेत्तारं निर्ग्रन्थां महाद्युतिं,  
हृत्तशिष्यैः शशिष्यैश्च निपुणं तत्त्ववेदिनां, ५

प्रणम्य शिरसाचार्यं, इति,

फिर अठारहमें अध्यायके (१४) में श्लोकपर लिखा है कि  
“जङ्घबाहुवचो यथा”—इन प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि—  
जङ्घबाहुस्वामी इसके रचयिता नहीं है, किंतु और कोई है.

कोई कोई दिगंबर कहते हैं, यह संहिता पिठले जङ्घबाहु-  
स्वामीकी रची हुयी है जो कि—महावीरस्वामीके निर्वाणसे (४७१)  
वर्ष बाद हुये है. परंतु हमारे विचारमें क्या ? किंतु अनेक दिगंबर  
लोकोके विचारमें जी यह संहिता दोनों जङ्घबाहुमुनियोंकी ब-  
नायी हुयी नहीं है. पिठले जङ्घबाहुस्वामीकी रची हुयी माने  
तो इसके प्रथमाधिकारके तिसरे श्लोकमें लिखा है कि—गोवर्ध-  
न गुरुकों नमस्कार करके और गौतम संहिता देखकर मैं यह  
संहिता बनाता हूं. (तत्पाठः)

गोवर्धनं गुरुं नत्वा दृष्ट्वा गौतमसंहितां,

वर्णाश्रमविधियुता संहिता वर्ण्यतेधुना. ३,

जब पिठले जङ्घबाहुस्वामीकी रचित यह संहिता उहरे तो  
उनके गुरु गोवर्धनजी कैसे कह सकते हो ?—क्योंकि—पिठले  
जङ्घबाहुजी—श्रीगुप्तिगुप्तआचार्यके गुरु हुवे और पहले जङ्घ-  
बाहुजी—श्रीविशाखाचार्यके गुरु हुवे लिखे है, शंसय हो तो दि-  
गंबर पट्टावलीमें देख लो. श्वेतांबर आमनायमे श्रीजङ्घबाहुस्वामी  
एक ही हुवे लिखे है. निदान ! उक्तसंहिता न पहले न दूसरे  
दोनोंमेंसे किसी जङ्घबाहुस्वामीकी रचित नहीं है. क्योंकि—स्वोप-  
ज्ञ ग्रंथमें वे कैसे लिखे कि—जङ्घबाहुवचो यथा,—अर्थात् ज-  
ङ्घबाहुका वचन इसमें प्रमाण है. ऐसा लिखना खुद जङ्घबाहु

स्वामीका कैसे हो शक्ता है ?—इसलिये यह तो नहीं सिद्ध हुआ कि—यह संहिता जछ्वाहुजीकी रचित है. कोइ दिगंबर महाशय प्रमाणद्वारा साबित करदेवे तो हमको वैसे माननेमें जी इनकार नहीं.

दिगंबरआम्नायके पुस्तकोमें लिखा है महावीरके निर्वाण पिछे (६०३) वर्ष बाद श्री पुष्पदंत और भूतबलमुनिने पुस्तका रूढ किया, अर्थात् दिगंबर मतके शास्त्र पुस्तकाकार लिखे. और कहते हैं उमवरुत विक्रमार्क कहिये विक्रमादित्यका शत्रु—“शक” मवर्त्तक शालिवाहन राजा गर्जमें था. कुंदकुंदाचार्यके पश्चात् उ मास्वामी पट्ट बैठे. उमास्वामीकी पट्टपर लोहाचार्य बैठे. काष्ठासं यकी उत्पत्ति इन्हीसें हुयी ऐसा मूलसंघकी पटावलीमें लिखा है.

श्वेतांबर आम्नायके पुस्तकोमें लिखा है महावीरके निर्वाण बाद (९५०) वर्ष पिछे वल्लभीनगरीमें श्री देवार्द्धिगणिकमाश्रमण आचार्यने पुस्तकारूढ किया. याने अंगशास्त्र (जितने उस वरुत मौजूद थे.) वगेरा जैनशास्त्र पुस्तकाकार लिखे. समीहक—जब श्वेतांबरशास्त्रोंसें दिगंबरशास्त्र पहेले लिखे गये तो वे अधिक जरूरत रखने योग्य क्यों नहीं ?—इसका हेतु सोचते हैं तो कुछ पहेले लिखे जानेपर अधिक जरूरतके पात्र नहो ठहर सकते. क्योंकि जिसकी धारणाशक्ति कमजोर हो उसको लिखलेनेकी जरूरत प्रथम होती है जिसकी धारणाशक्ति पुख्ता हो उसको क्या प्र-योजन है शिघ्रता करे. यह दोनों आम्नायमें मान्य है कि—संपूर्ण जैनशास्त्र गणवर—आचार्य—उपाध्याय—और सामान्यमुनियोने रचे. जिनोंने जबतक काम चलवा रहा अपने अमूल्य समयको

धर्मध्यानके अतिरिक्त लिखा पढीमें नही लगाया. परंतु जब धारणा शक्तिकी न्यूनता होने लगी तब लाचार ग्रंथ लिखनेका श्रम उठाया.

धवल-जयधवल-और महाधवल-यह तीनशास्त्र दिगंबर आम्नायमें आद्यके गिने जाते है. इनके पहले दिगंबर आम्नायमें कहते है कोइ शास्त्र नही गुंथा गया. इनमेंसे उच्चार करके नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्त्तीजीने चामुंडराजाके पढनेकेलिये संस्कृत [११३३] में गोमटसार ग्रंथ बनाया.

दिगंबर पुस्तकोंमें यह बात जोरके साथ लिखी है कि-स्त्री को मोक्ष नही. वस्त्रधारी चाहें स्त्री वा पुरुष कोइ क्यों न हो ! बिना नम्र हुवे उनकी जी मोक्ष नही होतो. तीर्थंकर वा अन्य मुनि कोइ हो जब वे केवलज्ञानी हो जाते है आहारपानी बिलकुल नही लेते, उनोसवे तीर्थंकर मल्लिनाथको पुरुष बताते है श्वेतांबर मल्लिनाथको स्त्री बताते है. छादशांगवानीमेंसे एक दृष्टिवाद अंगको ओडकर शेष ग्यारहअंगशास्त्र जो अब विद्यमान है उनको श्वेतांबर मानते है दिगंबर लोग नही मानते. इनमे जो [१०] आश्चर्य हुवे लिखे है वह जी दिगंबर नही मानते. किंतु दूसरे प्रकारसे मानते है. वगेरा बहोतसी बातेंका अंतर दोनो आम्नायमें है. मल्लिनाथको दिगंबर आम्नायके शास्त्रमें पुरुष लिख दिया इसका कारण यही विदित होता है कि-यदि वे इनको स्त्री मान लेते तो उनका अपने ग्रंथोंमें स्त्रीका मोक्ष नहोना ऐसा जो लिखना है व्यर्थ हो जाता.

श्वेतांबरमुनि वंदन करनेवालेको धर्मलाज कहते है दिगंबर

मुनि धर्मवृद्धि कहते हैं, परंतु वर्त्तमानक लमें दिगंबरमुनि कोइ जगह नहो है, केवल मनको धीरज देनेके लिये उत्तराखंडके दिगंबरश्रावक कहदेते हैं दखनमें होयगें, दखनवाले कहते हैं उत्तरमें होयगें. सारे हिंदुस्थानमें [जोकि-आर्य तरीके गिना जाता है] तो है नही, अनार्यदेशमें होवे तो वे दिगंबरशास्त्रोके कथन मुजब मुनि नहो कहे जायगें. क्योंकि-वहां कोइ श्रावक नही जिससे उनको निर्दोष आहार मिले. श्वेतांबरमुनि (४३) दोष त्याग के जिह्वा लेते हैं दिगंबरमुनि [ ३३ ] अंतराय त्याग के लेते हैं. श्वेतांबरआम्नायमें जिनकल्पी और स्थविरकल्पी दो प्रकारके मुनि माने जाते हैं, परंतु जिनकल्पीमुनि अब नही रहें. जंबूस्वामीके मोक्षहोनेवाद व्यवहिन हो गये, वर्त्तमानका लमें स्थविरकल्पी मुनि विद्यमान है, वस्त्र पात्र आदि [ १४ ] उपकरण इनके लिये रखने कहे हैं. श्वेतांबरका कहना एसा है कि-जब मुक्तिमार्ग शुरुथा तब वस्त्रआदि उपधि धारण करनेवा ले मुनिको जो मुक्ति होती थी. क्योंकि-वस्त्र पात्र आदि उपधिमें अगर ममत्वजाव नहो है तो मुक्तिको कौन रोक सकती है? दिगंबरको इन बातोंसे इनकार है और कहते हैं मुनिको वस्त्र पात्र आदि उपकरण रखने हो न चाहिये. मूर्खा हांगी. श्वेतांबरमुनि रजोहरण उनका रखते हैं दिगंबर मयूरपिठोंकी पीठो रखते हैं.

तत्त्वार्थ सूत्रको दिगंबर आम्नायमें मान्य रखा है परंतु इसके कर्त्ता उमास्वातिजी दिगंबर नही थे. क्योंकि-ये दिगंबर थे इस विषय प्रमाण देनेको दिगंबराचार्य रचित कोइ प्रमाणिक ग्रंथ

नहीं. केवल पट्टावलीके आश्रय उनका दिगंबर होना विद्वानों-  
को मान्य नहीं हो सकता. सबकि-दिगंबर आमनायमें जितनी  
पट्टावली है जट्टारकोंकी बनायी हुयी है. जट्टारकोंकी उत्पत्ति  
संवत् [१३१६] के पश्चात् है, क्योंकि-इसी संवत्में फिरोजशाह  
बादशाहकी आज्ञासें जट्टारक प्रजाचञ्चने वस्त्र अंगीकार किया  
लिखते है, जितनी पट्टावली है सब इसीके पोछे जट्टारकोंकी ब-  
नायी हुयी है. इसमें पुरानी कोई पट्टावली नहीं है, जट्टारको  
का बचन नवीन होनेमें अप्रमाण है. इनका नाम उमास्वाति  
किस हेतुसें रखा गया था ?-कौनसे समयमें ये हुवे ?-कितने ग्रंथ  
रचे ?-यह सब वर्तन श्वेतांबर पुस्तकोंमें मिल सकता है.

महावीरके सातमे पट्टपर जड्वाहु हुवे, जड्वाहुके पट्टपर  
स्थूलजड् जो महावीरके बाद [२१५] वर्ष पोछे देहांत हुवे है,  
स्थूलजट्टजीके आर्यमहागोरी और आर्यमुहस्तो दो शिष्यहुवे  
दोनोंकी अलग अलग पट्टावली चली, जिसमें आर्यमहागिरि  
को पट्टपर बजिस्तहसूरि हुये, बजिस्तहसूरिके बाद स्वातिसूरि-  
स्वातिसूरिके बाद श्यामाचार्य जो महावीरनिर्वाणके पश्चात्  
[३७६] वर्ष बाद देहांत हुवे है.

उमास्वातिजी इन्ही श्यामाचार्यके शिष्य और पूर्वधारी  
थे. दिगंबरआमनायकी पट्टावलीमें उमास्वातिजीको कुंदकुंदाचा-  
र्यके शिष्य लिखे है. और लिखा है विक्रमार्क संवत् [१४३] में  
ये देहांत हुवे. दोनोंके कहनेमें बहुत फर्क आया. दिगंबर पट्टा-  
वली संवत् (१३१६) से पहलेकी न होनेसें प्रमाण योग्य नरही.  
श्वेतांबर आमनायकी पट्टावली नंदीसूत्र और कल्पसूत्र बगेराये



मिलसकती है जोकि—अधिक पुरानी होनेसे अधिक प्रमाण योग्य है.

उमास्वातिजीने [५००] ग्रंथ रचे. जिनमेंसे वर्त्तमानमें केइ भिन्नते है जैसेकि—हमारे ही पास उमास्वाति रचित पूजाप्रकरण है जिसको दिगंबरलोग नहीं मानते. इसी प्रकार औरको जी नहीं मानते. इन्होंका बनाया एक तत्त्वार्थसूत्र ही दिगंबरमतमें मान्य रहा दूसरे नहो रहे इससे विदित होता है उनमें स्त्रीको मोक्ष और केवलीको आहारका होना लिखा है. अंगशास्त्र जी इसी लिये अस्वीकार हुवे.

मूलसंघकी पहावल्लोमें लिखा है कि—सेनसंघ—सिंहसंघ—नं-दीसंघ—और देवसंघ—इनइन मुनियोंने किया. सेन और सिंह संघ जिनसेनमुनिने (जो १०४ में हुवे है) किया. जिसमें सेनसंघ पहला और सिंहसंघ सिंहकी गुफामें रहनेसे हुवा. नंदीसंघ मा-घनंदीमुनिने किया जो कि (१६०) में हुवे है. देवसंघ देवदत्ता नामकी बेइयाके घर योग धारा इस लिये कहा गया. नंदीसंघमें पारिजात गड्ड बलात्कार गए—और मुनियोंके नामपर नंदी—चंद्र कीर्ति—और भूषण—ये (४) उपनाम स्थापित किये गये. तथा मूलसंघ नंदीआम्नाव सरस्वती गड्ड बलात्कार गए—और मुनि-योंके नामपर पूर्वोक्त (४) प्रकारके उपनाम स्थापित किये गये. सजी दिगंबर पहावल्लोके गुम्फक जट्टारक है और जट्टारकोकी छत्तति (संवत् १३१६) में हुयो ऐसा वसुनंदीश्रावकाचारमें लिखा है.

मूलसंघ—काष्ठासंघ—माथुरसंघ—और गोप्यसंघ—ये चार संघ जी दिगंबर आम्नायमें हुवे लिखे है. मूलसंघमें और गोप्यसंघमें

मधुरके पीठेकी पींठी रखते है, काष्ठासंघमें चमरीवालकी रखते है. और माधुरसंघमें कोइ प्रकारकी जी पींठी नहीं रखते. जब वर्त्तमान समयमें कोइ दिगंबरमुनि ही नहीं रहे तो पींठीकी स-  
क्षास हमको क्यों करनी होगी !-इनमें गोप्यसंघवाले स्त्रीको मुक्ति होना मान्य रखते है. केवलीकों आहारपानी करना तो चारों संघवाले नहीं मानते.

स्याघादन्यायकेलिये श्वेतांबर दिगंबर दोनोंकी एक सड़क है. सम्प्रति तर्क-घादसारनयचक्र-अनेकांतजयपताका-स्याघाद-  
रत्नाकर-स्याघादरत्नाकरावतारिका-स्याघादमंजरी-बगेरा श्वे-  
तांबरआम्नायके तर्क ग्रंथ है. अष्टसहस्री न्यायकैरवचंछमा-और सिद्धांतसार आदि तर्कग्रंथ दिगंबर आम्नायके है. और कल्या-  
णमंदिर ज्ञानामर सिंदूरप्रकरआदि स्तोत्र दोनों आम्नायमें मा-  
न्य है जिनके रचनेवाले श्वेतांबराचार्य है.

दिगंबरआम्नायमें वीशपंथ-तेरहपंथ-गुमानपंथ-और समै-  
पापंथ-ये ( ४ ) जेद अब मौजूद है. जो वीशप्रकारकी \*धर्मक्रि-  
यामें पाबंद है वे वीशपंथी कहलाते है. वीशमेंसे सातप्रकारकी क्रिया लुथ्यापन कियी निसमें तेरहपंथी कहलाये. कहते है वीशपंथमेंसे फटकर संबत् ( १७३६ ) में ये अलग हुवे. जयपुरके तेरहपंथीयोंसे \*टोडरमल्लके पुत्र गुमानीरामजीने संबत् ( १८३७ ) में गुमानपंथ निकाला.

प्रतिमाकों स्नानकरानेका निषेध इन्हीने किया. समैपापंथ

---

\* सिंदूर प्रकरके ( ८ ) में—काव्यमें देखो. कहते है टोडरमल्लजीने जायकासारग्रंथ बनाया है.

मिलसकती है जोकि—अधिक पुरानी होनेसे अधिक प्रमाण योग्य है.

उमास्वातिजीने [५००] ग्रंथ रचे. जिनमेंसे वर्त्तमानमें केइ लिखते हैं जैसेकि—हमारे ही पास उमास्वाति रचित पूजाप्रकरण है जिसको दिगंबरलोग नहीं मानते. इसी प्रकार औरको भी नहीं मानते. इन्होंका बनाया एक तत्त्वार्थसूत्र ही दिगंबरमतमें मान्य रहा दूसरे नहीं रहे इसमें विदित होता है उनमें स्त्रीको मोक्ष और केवलीको आहारका होना लिखा है. अंगशास्त्र भी इसी लिये अस्वीकार हुवे.

मूलसंघकी पहावल्लोमें लिखा है कि—सेनसंघ—सिंहसंघ—नं-दीसंघ—और देवसंघ—इनइन मुनियोंने किया. सेन और सिंह संघ जिनसेनमुनिने (जो १०४ में हुये हैं) किया. जिसमें सेनसंघ पहला और सिंहसंघ सिंहकी गुफामें रहनेमें हुवा. नंदीसंघ मा-घनंदीमुनिने किया जो कि ( १६० ) में हुये हैं. देवसंघ देवदत्ता नामकी बेश्याके घर योग धारा इस लिये कहा गया. नंदीसंघमें पारिजात गड बलात्कार गए—और मुनियोंके नामपर नंदी-चंद्र कीर्ति—और भूषण—ये ( ४ ) उपनाम स्थापित किये गये. तथा मूलसंघ नंदीआम्नाव सरस्वती गड बलात्कार गए—और मुनि-योंके नामपर पूर्वोक्त ( ४ ) प्रकारके उपनाम स्थापित किये गये. सच्ची दिगंबर पहावल्लोके गुम्फक जटारक है और जटारकोकी उत्पत्ति (संवत् १३१६)में हुयो ऐसा वसुनंदीश्रावकाचारमें लिखा है.

मूलसंघ—काष्ठासंघ—माथुरसंघ—और गोप्यसंघ—ये चार संघ भी दिगंबर आम्नायमें हुवे लिखे हैं. मूलसंघमें और गोप्यसंघमें

मयूरके पीछेकी पींढी रखते हैं, काष्ठासंघमें खमरीबालकी रखते हैं. और माथुरसंघमें कोई प्रकारको जी पींढी नहीं रखते. जब वर्त्तमान समयमें कोई दिगंबरमुनि ही नहीं रहे तो पींढीकी सल्लास हमको क्यों करनी होगी !—इनमें गोप्यसंघवाले स्त्रीको मुक्ति होना मान्य रखते हैं. केवलीकों आहारपानी करना सौ चारों संघवाले नहीं मानते.

स्याघादन्यायकेलिये श्वेतांबर दिगंबर दोनोंकी एक सड़क है. सम्प्रति तर्क—घादसारनयचक्र—अनेकांतजयपताका—स्याघाद-रत्नाकर—स्याघादरत्नाकरा वतारिका—स्याघादमंजरी—बगेरा श्वेतांबरआम्नायके तर्क ग्रंथ है. अष्टसहस्री न्यायकैरवचंछमा—और सिद्धांतसार आदि तर्कग्रंथ दिगंबर आम्नायके हैं. और कल्याणमंदिर नकाशर सिंदूरप्रकरआदि स्तोत्र दोनों आम्नायमें मान्य हैं जिनके रचनेवाले श्वेतांबराचार्य हैं.

दिगंबरआम्नायमें वीशपंथ-तेरहपंथ-गुमानपंथ—और समैयापंथ—ये ( ४ ) जेद अब मौजूद हैं. जो वीशप्रकारकी \*धर्मक्रियामें पाबंद हैं वे वीशपंथी कहलाते हैं. वीशमेंसे सातप्रकारकी क्रिया लुब्ध्यापन कियी जिससे तेरहपंथी कहलाये. कहते हैं वीशपंथमेंसे फटकर संवत् ( १७३६ ) में ये अलग हुवे. जयपुरके तेरहपंथीयोंसे \*टोडरमल्लके पुत्र गुमानीरामजीने संवत् ( १८३७ ) में गुमानपंथ निकाला.

प्रतिमाकों स्नानकरानेका निषेध इन्होंने किया. समैयापंथ

---

\* सिंदूर प्रकारके (८) में—काव्यमें देखो. कहते हैं टोडरमल्लजीने कावकाचारग्रंथ बनाया है.

संवत् [१०७९] निकसा. मूर्त्तिपूजन ये लोक बिल्कुल नहीं मानते शास्त्रको ही वेदोपर रखकर पूजते हैं. कहते हैं शास्त्रहीसे सब बात चली इस लिये इन्हींका पूजन ठीक है. इसागढ-खास मुकाम मल्हारगढ-नागपुर-जेजसा-वासोदा वगैरा स्थानपर ये लोक ज्यादा हैं.

वीशपंथीयोकी पूजन इस प्रकार-(१) जलमें स्नान कराते हैं और पूजनके समय मूर्त्तिके सामने धारा देते हैं. [ २ ] चंदन केशर प्रतिमाजीके चरणोंपर लगाते हैं. (३) अर्घ्य शफेद चावलको धोकर पुंज ( ढेरी ) प्रतिमाजीके सामने स्थालीमें बनाते हैं. (४) पुष्प-प्रतिमाजीके चरणोंपर तथा स्थालीमें किये हुये चावलको पुंजोपर चढ़ाते हैं. (५) चंदनादिक सुगंधद्रव्यको कुटकर एक धूपायनमें मूर्त्तिके आगे धप देते हैं, निदान ! हुताशनमें धूप डालते हैं. (६) दीप-कर्पूरका तथा धृतका दीपक जलाकर आरती उतारते हैं और मूर्त्तिके आगे पुंजोपर रख देते हैं. ( ७ ) नैवेद्य जैसा कुछ पकान मिठाई मिले उसको प्रतिमाजीके सन्मुख चढ़ाते हैं ( ८ ) फल जिसरुतुमें जैसा फल मिले वैसा चढ़ाते हैं. वीशपंथी लोग उपास्वातिकृत एक ग्रंथमें ऐसा लिखा होनेका विश्वास करते हैं कि पुष्पके स्थान चावलोंको केशरमें रंग दिया जाय तो वह ज़ी समयानुसार ग्रहण करने योग्य है. परंतु आजतक कोई महाशयने उक्तग्रंथका प्रमाण प्रकाशित नहीं किया. बिना प्रमाण चाहे जैसा विश्वास करलो परीक्षकतो कज़ी प्रमाण नहीं करेगे. जब पुष्पकेलिये चावलों की कल्पना कियी गयी तो फलकेलिये न मद्धम कौनसी चीज

हुंढनी होगी ? तद्वत् नैवेद्य दोष जल धूप और केशर बगेरामे जो तर्क वितर्क क्यों नहीं ? उक्त (७) छव्यको एक थालीमें रखकर प्रतिमाके सम्मुख जेट करनेको अर्थ बोलते है.

तेरहपंथीलोग जिसप्रकार पूजन करते है वह वीशपंथीयोकी पूजनसेजो दूसरीप्रकार है. ( १ ) प्रतिमाको स्नान नही कराते किंतु जलनाममात्र पूजनकेसमय एकजारीसे चरोमें गरते है,( १ ) चंदन नाममात्र घीसकर एकजलके लघुपात्रमें मिलाते है और आवश्यकताके समय जलकी तरह जारीपर गीडकते है.(३)अद्वैत—इसमें तेरहपंथी वीशपंथी बराबर चलतेहै. (४) पुष्पोंके स्थान कहीं कहीं केशरसे और कहीं कहीं हारशृंगार अथवा केथुकेफुलोंसे रंगकर चावल चढाते है. (५) धूप—इसविषयमें जिनजिन विश्वास है.किसी नगरमें धूपायन होता है और किसीमें नहीं, और किसी नगरमेतो थोडासा धूप धूपायनमें और थोडासा पूर्वोक्त पुंजो पर ढालते है और किसी नगरमें धूपायनमे नहीं ढालते. ( ६ ) दीपक—ये लोक नहीं जलाते इसके स्थान नालियरकी गीरीका बहोत गेटा टुकडा पोला रंगकर पुंजोपर चढादेते है. ( ७ ) नैवेद्यके स्थान नालियरकी गीरीका बहोत गेटा खंड बिनारंगा श्वेत चढाते है. ( ८ ) फलको जगह नालियर बादाम छुहारा इत्यादि सूके फल चढाते हे. अर्थ ये लोकजो वीशपंथीयोके समान आगेही द्रव्यका बनाते है परंतु द्रव्यमें जो कल्पना करलियी है उ सीमाफिक चढाते है. कितनेक इनमें ऐसेजो है जो प्रतिमाको स्नान कराते है कितनेक नहीं, और केशर वा चंदन चढीहुयी प्रतिमाको देखकर दुखो होतेहै और बचते है.

श्वेतांबरआम्नायमें त्रिषष्टिशलाका पुरुषको पदवीधर मानते हैं जिनमें (१४) तीर्थंकर तद्भव मुक्तिगामी (११) चक्री अगर संयम आराधन करेतो देवलोक वा मुक्ति जाय अन्यथा नरक गामी [ ६ ] बलदेव नरकगामी नहीं किंतु देवलोकवा मुक्तिगामी [ ६ ] वासुदेव ( ६ ) प्रतिवासुदेव निश्चय नरकगामी होते हैं. क्योंकि वे पिछले जन्मकी तपक्रिया पांच इंद्रियोंकें विषयनिमित्त संकल्प करके उक्तपदवीकों पाये हुये हैं. दिगंबर आम्नायमें [ १६६ ] पुरुषकों पदवीधर मानते हैं. [ १४ ] कुलकर [ १४ ] तीर्थंकरके पिता [ १४ ] तीर्थंकरकी माता [ १४ ] तीर्थंकर [ १४ ] कामदेव [ ११ ] चक्री ( ६ ) वासुदेव [ ६ ] प्रतिवासुदेव ( ६ ) बलदेव ( ६ ) नारद और ( ११ ) रुद्र इनमें कितनेक जीवदोदो तीनतीन पदधारी हुये जिसमें ( १६६ ) की संख्यामें कमी हुयी. और हुंभावसर्पिणीकालदोष करके अच्छेरा हुवा मानते हैं.

दिगंबर आम्नायमें तीन अष्टान्हिका-फाल्गुन-आषाढ-और कार्तिक महिनेकी सुदी(८) से (१५) तक और जाछपद सुदी(५) से आसोज वदी (१) तक दशलाक्षणिकपर्व अथवा सोलहकार ए ज्ञावना व्रत आदि बड़े पर्व गिने जाते हैं.

श्वेतांबर दिगंबरके वादानुवादमें मुख्य करके (८४) बोलका फर्क है, इसका असली कारण यह है कि दिगंबराचार्योंने छादशांगबानीके पुस्तक [ जो शेष रहे हैं. ] नहीं माने और वृथा बारीकी ग्रहण कियी.

दिगंबरोके शास्त्रमें जगह जगह श्वेतांबरका खंभन किया है और श्वेतांबरोंके छादशांग शास्त्रमें दिगंबरका नाम जी नहीं.

इस प्रमाणसे जाना जाता है कि-श्वेतांबरशास्त्रसे दिगंबरके शास्त्र पीठे बने हैं, क्योंकि पहलेवालोंका खंमन पीठले करते हैं, पिताके विवाहका तमासा पुत्र नहीं देख सकता. हकीकतमें जब द्वादशांगवानी गणधरोने गूथन कियी थी तब दिगंबरमत कहाँ था ? जिससे उसका विवेचन किया जाय.

यद्यपि-श्वेतांबर दिगंबर दोनों कह रहे हैं कि-रिषभदेवसे लगाकर आजतक जितना जैनसंघ हुवा हमारे संघमें हुवा अर्थात् श्वेतांबर अपनेमें और दिगंबर अपनेमें हुवा बतलाते हैं. इसमें कौनका कहना सच और कौनका झूठ इस बातका नतीजा आजाय तो क्या ! अच्छीबात है ?-श्वेतांबर दिगंबर दोनोंको ढोढ कर तिसरा कोई परीक्षक इसके नतीजेपर खयाल करे तो प्रथम यही प्रश्न करेगाकि-तुमारे जिनेद्र कितने ज्ञानी थे ?-उत्तर यही कहना होगा कि-अनंत ज्ञानवान् थे याने सर्वज्ञ सर्वदर्शी थे. उन्होंने जब धर्मोपदेश दिया तो किस किस पदार्थका दिया था ? उत्तरजी यही कहना होगा कि-द्वादशांगवानीके पुस्तकोमें जो जो पदार्थ कहे हैं उसका-जिस उपदेशकों उनके शिष्य गणधरो ने-(१) आचारांग-(२) सूत्रकृतांग-[३] स्थानांग-(४) समवायांग-[५] \*विवाह प्रज्ञप्ति-( ६ ) ज्ञातार्थकथा-(७) उपासक दशांग-(८) अंतकृतदशांग-(९) अनुत्तरोपपातिकादशांग-(१०) प्रश्नव्याकरण-(११) विपाक-और [१२] दृष्टिवाद-ये द्वादशांग सूत्रोंमें गूथन किया. श्वेतांबर इनको मान्य रखते हैं और इनके कथमानुसार सब कथन और प्रवृत्ति करते हैं. दिगंबर इनको



नही मानते और न उसवमुजब चलते हैं. किंतु धवल-महाधवल जयधवल-गोमटसार-आदिपुराण-हरिवंश पुराण वगेरा ग्रंथ जो उन्हीके कहने मुजब (६७३) वर्ष महावीरनिर्वाणके बाद बनाये गये हैं उसमुजब चलते हैं उनमें जो जो कथन है उसीको सच्च मानते हैं. अंग शास्त्र जो उपर लिख चूके कहते हैं श्वेतांबरोंने नये बना लिये. जब सवाल किया जाता है कि-वे अंगशास्त्र बतला उ जो गणधरेने रचे हैं. तब उत्तर देते हैं वे सब विच्छेद हो गये. सोचनेकी जगह है जब छादशांगवानी ही विच्छेद हो गई तो जैनसंघ कैसे बना रहा ?-क्योंकि-छादशांगवानी जैनका मूल है. जब मूल न रहा शाखा समूह कैसे रहें ?-धवल-जयधवल-महाधवल-गोमटसार-आदिपुराण-हरिवंशपुराण-वगेरा ग्रंथ किसवानीके अनुसार बनाये गये ? अगर छादशांगवानीके अनुसार बनाये हैं तो छादशांगवानीका विच्छेद होना कैसे कह सकते हो ?-अगर यह कहा जाय कि-संपूर्ण छादशांगीके शास्त्र नहीं रहे अवयव हैं इसलिये वे मान्य नहीं हो सकते तो सोचो कि-चौदह पूर्वके आगे एक पूर्वजी एक अवयव होनेसे मान्य न हो सकेगा, और वर्तमानमें जितने जैनशास्त्र हैं वे एक पूर्वपाठी मुनियोनेही [जितनापाठ उस वस्तुमें शेष रहगयाथा] अनुसंधान किये हैं. फिर संपूर्ण जैनशास्त्रकोही क्यों मानना ? इनकार ही करने बैठे तो थोड़ा बहोत क्या ! सजी इनकार करदेना चाहिये.

आचारांग सूत्रकृतांग आदि. [११] अंगशास्त्र. जो अब मौजूद है इनको अगर कोई महाशय नये ठहराना चाहे तो नहीं ठहर सकते. क्योंकि इनमें जो आर्यावंद लिखे हैं [ ११०० ]

वर्षकी ँद रचनासें पुराने है. चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ग्रीकलोकोके हिंदुस्थानमें आये पहलेके है, इनमें जेसा कुछ ज्योतिष संबंधी वर्नन है ग्रीकलोकोके ज्योतिष् ग्रंथमें नही. कि-तनेक दिगंबर कहते है गोशालामंखपुत्र महावीरका शिष्य नही था, अगर था तो हमारे ग्रंथोंमें उसका वर्नन क्यों नही ?-इसका तात्पर्य यह है कि-जब दिगंबर ग्रंथ सब पीठोंसे ही बने तो उनमें असलीहाल कहांसें हो? बौधपीठकोमें देखिये! जहां महावीर कों और सुधर्मा गणधरकों बौधोंके प्रतिपक्षी लिखे है वहां गोशालामंखपुत्रका हालज्जी लिखा है वा नही? बौधपीठक (१०००) वर्षसें अधिक समयके बने हुवे है. क्या ! इनकोंजी नयें ही कहना होगा ?

दिगंबरआम्नायमें माना है महावीरके निर्वाणको जब (६८३) वर्ष बतीत हो चूकेथे तब धवल—जयधवल—महाधवल आदि शास्त्रकी रचना हुयी. इसके पहले कोइ ग्रंथ नही रचा गया, सोचनेकी जगह है कि—दिगंबरपट्टावलीमें जंबूस्वामीके पीठे-विष्णुकुमार--नंदीमित्र--अपराजित गोवर्धन--और भद्रबाहु ये (५) श्रुतकेवली हुवे लिखे है. भद्रबाहुके पीठे-विशाखाचार्य--पोष्टिलाचार्य--क्षत्रियाचार्य-जयसेन, सागरसेन-सिद्धार्थाचार्य--धृतिसेनाचार्य-विजयाचार्य-बुद्धालिंगाचार्य देवाचार्य--और धर्मसेनाचार्य-ये (११) कों-दशपूर्वधारी लिखेहै. धर्मसेनाचार्य के पीछे-नक्षत्राचार्य--जयपालाचार्य--पांडवाचार्य--ध्रुवसेनाचार्य--कंसाचार्य--सुभद्राचार्य--यसोभद्राचार्य--दूसरेभद्रबाहु--और लोहाचार्य-ये (६) कों-एकादस अंगधारी लिखेहै. लोहाचार्य महावीरके नि-

बौणसे ( ५६५ ) बाद देहांत हुवे क्या ! इन सभी दिगंबराचार्योंने पूर्वोक्त ज्ञानको विछेद जाता देखकर दिगंबरसंघके हितार्थ कोई शास्त्र नहीं रचा ?—ज्ञानीपुरुष संघके हितमें न प्रवर्त्ते यह संभव नहीं होता सच है कि-जो मनुष्य एकजगह बिना विचारे बात कहता है उसको अनेक जगह इसीतरह करना पड़ता है.

( १००० ) वर्ष पहलेकी नशाकार दिगंबरमूर्ति आजतक को इ नहीं मिली, दिल्लीके पंमित शिवचंझजी ( आम्नाय वोशपंथ ) अपनी बनायी प्रश्नांतरदीपिका नामकी किताबमें प्रथमपृष्ठपर लिखते हैं कि-मांगीतुंगीके गजपंथके पहाडमें- बमोदेकेपास पावा गिरिमें-बमवाणीके पहाडमें-दखनमें गिरिनारी गांवमें-कारकुलन-गरकेपास पटामके उपर-और रंगनगरके तालाबबीच मंदिरमें-वगे रास्थानोपर दिगंबर आम्नायकी बहोतप्राचीन मूर्ति है. हमको यहां इतनाही लिखना बहात है कि-संवत् तिथि-प्रतिष्ठाचार्यके नाम बिदुन चाहे जितनी पुरानी और चौथेकालकी कह दो दिगंबर आम्नायके श्रावकसंघ सिवाय इतर मनुष्य नहीं मान सकते. जगवानधर्मादर्श किताबमें रचायिता लिखता है दिगंबर आम्नायके मंदिर ( १०००० ) हजार-( १५००० ) हजार वर्षके बने अब मौजूद है. और लखनऊके दिगंबरमंदिरमें विक्रम संवत् [१]की बनी हुयी मूर्ति धातुमय मौजूद है. हम यहां बहोत खुश होकर उस महाशयसे निवेदन करते हैं कि-बेबीश पचीशहजार वर्षके बने मंदिर अब किस जगह खड़े हैं ?-हमको जी विदित कर दिजिये. उसी किताबमें पतेवार अगर आप लिख देते और

\* ( १४ ) पृष्ठकी किताब रसिककाशीप्रेस दिल्लीमें उपा है.

शिलालेखआदिकी सबूतिं देते तो हमको मुंह खोलनेकी जगह न रहती. और लखनऊके मंदिरकी मूर्तिके प्रतिष्ठाकरनेवाले कौन आचार्य किसके शिष्य थे लिखदेते तो अलबते ! हमको मान्य करते इनकार न होता. महाशय ! पांचहजारवर्षकी इम्मारत वर्त्तमानमें मिलनी मुश्किल है. तो फिर बीस और पच्चीस हजारवर्षकी इम्मारतकों बतानेका दावा करना आपहीकी ताकाद है. हां ! अलबते, संवत् तिथि और प्रतिष्ठाचार्यके नामसाहित कोइ नग्न स्वरूप खमीमूर्ति दो अढाइहजारवर्षसे पुरानी निकल आवे. और उसप्रतिष्ठाकरनेवाले आचार्यका नाम कोइ प्राचीनग्रंथमें पाया जाय तो मान्य हों. परंतु आपके दिगंबरवसुनंदाश्रावका चारमें जहां मुनियोंकी पट्टावली लिखी है वहां ( ४ ) संघके अतिरिक्त और किसीकी प्रतिष्ठितप्रतिमा पूजनेयोग्य नहीं कही. उनसंघके नामके साथ नंदी-चंड-कीर्त्ति-और भूषण-ये चार उपनाम लगाये हैं, सो इनकी पट्टपरंपरायसे विमुख जो प्रतिमा दिगंबर लोक प्राचीन मानेंगे उसका क्या प्रमाण देयगे ?-इसबातकों सोचो. क्योंकि-ये चारसंघतो विक्रमसे बहोत पीछेके है. अर्थात् इसके पहलेकी प्रतिमापर किसका नाम होना चाहिये. जिसको वो मान्य रखेंगे ऐसा कीसी मीगंबर ग्रंथमें होना चाहिये. सो है नहीं.

पंक्ति शिवचरणजी कारकुल नगरके पास पहाडपर बहोत पुरानीमूर्ति बताते हैं उसका जेद डालिचंद्रपाहिकश्रावक जयपुरवालेकी रची जैनयात्रादर्पणकी किताबसे खुल जाता है. दूसरे जाग पृष्ठ ( १० ) पर देखो क्या लिखा है ?-“इहासे कारकुल

नगर दक्षिणी है, उतरनेका ठिकाना जैनके मठमें है, इहां मंदिर झठारा बड़े है और यहां छोटा पर्वत है उसके उपर कोट बना है. इसके भीतर पथथरकी बड़ी वेदी है इसीके उपर बाहुबली स्वा मीकी प्रतिमा कायोत्सर्ग उंची अंदाज नौ धनुष्यकी है, इनका पार्श्वका पंजा सवातीन हाथका लंबा है इनकी प्रतिष्ठा संवत् ( १३५३ ) के सालकी हुयी है-”

जैनबन्दी मोडबन्दीतीर्थके पास श्रवण बेलगुलगांवके नजदीक बाहुबलीजीकी प्रतिमा खड़े आकार ( १० ) धनुष्य उंची जैनया आदर्पणके दुसरे भाग ( १५ ) पृष्ठपर लिखी है. गोमटस्वामी बाहु बलीजीकाही नाम दिगंबर आम्नायमें प्रसिद्ध है, उनकी प्रतिमा खड़े योगकी होती है. चौइसतीर्थकरोंकी प्रतिमा पद्मासन होनेका लेख दिगंबर शास्त्रोंमें है और खड़े आकारकी बनाना यथापि शास्त्राज्ञासँ विरुद्ध है तथापि जो प्रवृत्ति एकदफे चलपड़ी रुकनी मुश्किल है. इसप्रवृत्तिकेलिये केइ दिगंबर पांडितोंसे दर्पाफतकिया जाता है तो बताते है केइतीर्थकर खड़े खड़े ( खड्गासन ) युक्त हुवे है इसलिये यह प्रवृत्ति हुयी, जो प्रतिमा जैनबन्दीमें गोमटस्वामीकी पहाडमें उकेरी हुयी है उसमें कारिगरने यह बन्नी उत्तमता रखीहैकि-उसकी छाया उसीमें रहती है इधर उधर नही पडती. इसमें कोइ देवकारण नही किंतु कारिगरकी चतुराई है. इसी गोमटस्वामीके बारेमें कितनेक दिगंबरपांडित एसाजी कहते हैं कि चामुंदरायके समयमें दिगंबराचार्य नेमिचंद्र-सिद्धांतचक्रवर्त्ती गोमदसारग्रंथके कर्त्ता विद्यमान थे. एकरोजकी बात है चामुंदरा यने प्रतिज्ञा लियीथी कि-मैं तीर्थकरभगवान्के दर्शन किये बिना

भोजन नहीं करूंगा. इसपर नेपिचंद्रजीने चक्रेश्वरीका आराधन किया तो उसने स्वप्न दिखाकि--चामुंडराजा इसप्रहाडपर बायां मारेगातो पर्वत फटकर एक प्रतिमा निकलेगी. सो तब तू ही किम गया. उससमयकी यह प्रतिमा है और यही कारण है जो इस प्रतिमाकी ढाया नहीं पड़ती और कायी नहीं जमती. परंतु यह विश्वास उनका भोले लोकोकों भूलमें डालनेकेलियेहै. गोमह स्वामीकी प्रतिमाके निकट इज्ञान और नैरुत्यकों बहाड उंचा होनेके कारण सूर्यके उदय अस्त और थोड़े दिन चढेचक्रतो पहाडकी ढाया बनी रहती है. जब मध्यान्ह होताहै तो प्रतिमाकी उंचाइ उत्तरकों झुकी हुई होनेके कारण संपूर्णछाया उसकी उसीपर रहतीहै, इधर उधर नहीं पड़ती. और उसपर कायी इसलिये नहीं जमती कि-वह एकही पाषाण है यदि टुक टुक जुड़े हुवे होते तो जोड़के उपर अवश्य कायी जमती बाले पाषाणभी ऐसा होता है जिसपर कायी नहीं आती. इसमें चक्रेश्वरी आदि देवताकी करामात कहना ठीक नहीं है.

कितनेक दिगंबर एसानी कहते है कि-हमारा एकमंदिर दखनदेशके एक सरोवरमें है वहां हमलोक थालीमें पूजाकीसाम ग्री रखकर प्रवाहित करदेते है तब वह थाली मंदिरमें जायकर सामग्री बेदीमें चढ़ाती है और आप खाली होकर पीछे लोट आतीहै. सो इस बातको देवताकी करामात समझना बहोत बड़ी भूल है. प्रथमतो जो बात सुनी होती है जब उसको बुद्धिमान् आंखोंसे देखते है बहोत थोमी होजाती है. और यदि अनुमान द्वारा उसको ठीकज्जी मानलिया जावे तो ऐसा समझमेंभी आ

शकता है कि-यदि चूबकपाषाणकी प्रतिमा बनाकर किसी सरोवरमें बेदीपर उंची रखी जावे और दूर खड़ा होकर लोहेकी थाली या पात्रमें कोईवस्तु उसके सन्मुख ओम्देवे तो उसपाषाणकी आकर्षणशक्ति उसको अवश्य मूर्तिकी तर्फ खेंच लेयगी और यहभी निश्चय है कि-जब वो पात्र मूर्तितक पहुँच जायगा तो उंचा नीचा होकर खालीज्जी हो जायगा परंतु इसमें इतना असंभवहैकि-थाली लोटकर नहीं आशकती परंतु जिसमनुष्यने यह चतुराई रखी है कि-वह थाली वहाँ चली जाय तो जलके बहावकी तर्फ ध्यानदेनेसे यहजी निश्चय होशकता हैकि-थाली निश्चय लोटकर आजाती होगी. क्योंकि-बहावके सन्मुख आनेपर कोई वस्तु रुक नहीं सकती. बराबर प्रवाहमें वह चलती है.

हवनकुंडमेंसे बहुधा भट्टारक और उनकेचले पंक्ति लोक भोली मनुष्योंके भ्रमानेकेलिये जो वस्तु उनके सन्मुख होते हुवे अग्निमें डालदेते है जैसेकि-चूंदमी नालियेर वगेरा. और पुनः बिना जली नीकाल देते है सो इसमेंजी कोई करामात नहीं. केइ वस्तु एसी है जिसको पानीमें जलमय करके उसमें भाँगोकर जिसवस्तुको जलाया जाय वह प्रगटपने सबको जलती दिखेगी. परंतु असलमें उसका आग्निसंस्कार न होगा. जैसी है बेसी बनी रहगी. इसीप्रकार कोई दवाइके योगमें वेह-लोकभी जलीवस्तुको पुनःनिकालकर अपनी करामात सिद्ध करते हैं.

निदान :-दिगंबरमतके--जनबद्री मोडबझी मांगीतुंगी मुक्तागिरि सोनागिरि वगेरा-तीर्थोंमें ( २००० ) वर्षसे पहलेलेकी कोई मूर्ति नहीं. गांपाचल दुर्गमें याने ग्वालीयरके किलेमे पहाडपर

उकेरी हुयी खड़े और बेठे आकार जितनी है सब संवत् [१४९७] से लगा-(१५२०) तककी है. सासबहुके मंदिरमें दोनों फाटकपर जो दोशिला लेख आमनेसामने दिवारमें जड़े हुवे है उसमें लिखा है संवत् [ ११५० ] आश्विन शुक्ला पंचमीके रौज यह पद्म प्रभुका मंदिर बना, परंतु हकीकतमें यह मंदीर दिगंबरमतका विदित नहो होता, बौधमंदिरमें दिगंबरोंने पिछेसे अपना दखल किया अनुमित होता है, क्योंकि दिगंबरआम्नायकी कोइ मूर्ति इसमें न दिवारपर और न बेदीमें है चारों ओरकी दिवारमें उकेरी हुयी जो जो मूर्ति है सब बौधमतकी है. जैनबोधके वर्ननमें बौध मूर्तिके चिन्ह जो लिख चूके उनमें केवल इतना फर्क है कि—ये खड़े आकार और चारहाथवाली है. इसरा दिगंबर वेदिकाका कोइ आकार नही न कोइ चिन्ह. किंतु बौधमतके मंदिर और बेदीका पूरापूरा आकार है. बौधोमें यह रिवाज है कि—एकमूर्ति गौतम बुधकी ठीकबीचमें बैठे आकार स्थापन करके चौफेर मौदगलायन शौरीपुत्र आनंद वगेरा शिष्यसंप्रदायकी मूर्ति उपदेश सुननेके लिये स्थापित कीयी जाती है. इसरिवाजका हेतु यही ज्ञात होता है कि—कच्ची दंगाफीमात होजाय तो उनमूर्तियोंको शिघ्र उठा लियी जावे. सो इसमंदिरमें जो वेदिका है इसके देखनेसे सारा मंदिर बौधोका विदित होता है दिगंबरोंने अपना दखल करके पिछेसे लेख लगवाये है. दखनकी तर्फके दरवाजेको पीछामोसे बंद करके एक कोटडी बनायी है जो कि—मंदिरबर्नके बाद बनी हुई है, इसकी दिवारमें कोइ चित्र नही अगर मंदिरबना तत्की यही कोटडी होती तो उसमें चित्रजी जरूर होते, जैसेकी—मंदिरमें



शकता है कि-यदि चून्त है कोटडी पिछेसें बनी और मंदिर पट्ट वरमें घेदीपर उंची के मंदिरसें दाहने पासे जो दूसरा छोटा मंदिर थाली या पात्र मंदिरकी कतावजामें मिलता होनेसें बौधोंका ही की आकर्षण है. मूर्ति दोनों मंदिरमें नहीं खाली पड़े है. गंगोला यहूदी सामने जो तेलीकीलाट कही जाती है इसमें न जैनकी चून्त बौधकी किसीकी मूर्ति स्थापित नहीं. किंतु चौफेर जो थंजे जमीनमें गाड़कर खड़े किये है उनमें केइ मूर्ति जैनकी और बौधकीनी है.

शीशमहेलके नीचे होकर जिसदरवजेसें गवालियरको उतरते है वहांपर दाहनेपासे जो चतुर्भुजका मंदिरहै उसमें गौतमबुध की खमे आकार मूर्ति अंदाज गजभर उंची है, मौद्गलायन शौर्यपुत्र दोशिष्य दोनोंतर्फ खमे है. औरनी केइ चले वास्ते धर्मोपदेश सुननेको बैठे है. इसके दरवजेपर और मंदिरके भीतर की दिवारपर शिला लेख लगे हुवे है. इन प्रमाणोमे कह सकतेहै- कि-इस दुर्गमें बौधोंका जलसानी पहले बीत चुका है.

शहर लश्करमें चंपावागके दिगंबर मंदिरमें संवत् (१२२६) आश्विन शुक्ल (६)की- प्रतिष्ठित मुनिमुव्रतस्वामीकी प्रतिमा पद्मासन है इसमें पुरानी कोई नहीं.

श्वेतांबर आमनायकी प्राचीनताकेलिये अन्वेषण करते है तो प्रथम श्रीमहावीरके निर्वाणसें कुल [७०] वर्ष बादकी श्री रत्नप्रज्ञसूरी प्रतिष्ठित महावीरस्वामीकी प्रतिमा कोरंटनगरमें मिलती है. कोरंटनगर मारवाडमें एरणपुरकी ठावनीसें (६) को सपर जिसको आजकल कोरटागांव बोलते है मौजूद है. रत्नप्रभ

सूरि उपदेश गङ्गमें हुवे जो कि-पार्श्वनाथकी पट्टपरंपराकेये इस विषयको सबूती उशियानगरीके शिला लेखसें मिलती है. उशि या नगरी जोधपुरके पास पुराना गांव उजडप्राय यहांपर श्वेतांबर आमनायका मंदिर और लेख उसवख्तके बने हुवे विद्यमान है. महावीरके बाद ( १६० ) वर्ष व्यतीत होनेपर उज्जयिनीका राजा संप्रति हुवा. उसके बनाये श्वेतांबरमंदिर, शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थपर मिलते है. राजावामुदेव संवत् [ ६० ] की प्रतिष्ठित प्रतिमा महावीरस्वामीकी जो सर, ए, कनिंगहामसाहबने इस्वीसन ( १८७६ ) में मथुराके जैनटीलेसें पायी है. उसके नीचेका लेख पालीभाषामें इतिहास तिमिरनाशकके [ ६ ] पृष्ठपर उपा है. पाली भाषा दाअष्टाई हजारवर्ष पहले लिखोजातीथी यह इतिहास कारोंका मत है. कनिष्कराज्यके संवत् [ ६० ]-प्रथममास-तिथि पंचमी-महावीरस्वामीकी प्रतिमा प्रतिष्ठा कौटिकगण वाणिज्यकुल वयरीशाखाके आचार्यनागनंदीकी कियी हुयी-मथुराहीके जैनटी लेसें उक्त कनिंगहाम साहबने पायी और उसके लेखकी नकल बुद्धरसाहबने अपनी बनायी-"आर्थेंटीसिटी औफ धीजैनट्रेमी शन"-किताबमें लिखी है, कनिष्कराजा इस्वीसन ( ४० ) के आसन्न हुवा यह हंटरसाहबरचित हिंडस्थानके इतिहासमें लिखाहै.

हिंड थान और सिथिया बीचके राजाउसें पहलेके राजेका संवत् ( १० ) की बनी महावीरमूर्तिभी उक्त कनिंगहाम साहबने मथुराके जैनटीलेसें पायी और उसका लेखजो बुद्धरसाहबकी बनायी हुयी पूर्वोक्त किताबमें उपचूका है. जिनको शंसय हो देखलेवे. बस ! इनप्रमाणोसे श्वेतांबर आमनायको प्राचीनताको

कोई इनकार नहीं कर सकता, उदयपुरकेपास उडगांम जिसको  
 क्षत्रमें आघाटपुर लिखा है यहां राजाभीमसेनका बनाया हुआ  
 मंदिर है, जिसका लेख मंदिरके बहार हनुमानकेपास दिवारमें  
 लगा हुआ है. मारवाममें शिरोहीकेनिकट नादियागाममें महावीर  
 के बने भ्राता नंदीवर्धनकी बनायी महावीरकी प्रतिमा विद्यमा  
 न है. जिसको देखकर अच्छेअच्छे कारिगरजी कहते हैं अपूर्व  
 मूर्ति है. शत्रुंजय गिरनारसंस्मृतशिखर और राजगृहीकं पंचपहाड  
 ये जैनके सबमें ज्यादा पुराने तीर्थ हैं इनपर सबजगह श्वेतांबर  
 आम्नायकी मालकी है. श्वेतांबराचार्य हीरविजयसूरिके बाद  
 शाह अकबरने जो फुरमानं तावेपत्रपर-लिखदिये हैं उनमें लिखा  
 हैकि-सिध्दाचलका पहाड-गिरनारका पहाड-तारंगाका पहाड  
 केशरियाका पहाड-आबुका पहाड-(जो गुजरातमें है)-राजग्रहीके  
 पंचपहाड-संस्मृत शिखर उर्फ पारमनाथ जो बंगालमें है यं सन्नी  
 पूजाकी जगह और पहाडके नीचेकी जगह जो मेरेराज्यमें है चाहो  
 किसी ठिकाने जैनश्वेतांबर धर्मको हो वह श्वेतांबर धर्मके आचार्य  
 हीरविजयसूरिको देनेमें आइ है, हकीकतमें ये पूर्वोक्त सभीजगह  
 जैनश्वेतांबर धर्मवालोको ही है. जबतक सूर्यसे दिनप्रकाशमान रहे  
 और चंद्रमासे रात रोशन रहे तबतक इसफुरमानका हुकम श्वेतांबर  
 धर्मके लोकामें सूर्यचंद्रमाकी तरह प्रकाशित रहे, कोई आदमी  
 इनको हरकत न करे, कोई इनपहाडोपर-नीचे चारों ओरकी  
 पूजाकी जगह-और तीर्थकी जगह जानवरको न मारे, इसहुकमपर  
 अमल करे, इसहुकममें न फिरे, नयी सनंद न मागे. लिखा  
 तारिख [७] मो-माहे उर्दा बडेसमुताबेक माहे रबीयुल-अवजसने

( ३७ ) जुलूसी.

इसमें अकबर लिखता है कि-“हकीकतमें ये पूर्वोक्त जगह जैनश्वेतांबरवालोंकी ही है” सोचोकि-अगर ये पुरानेतीर्थ-दिगंबर आमनायके होतेतो बादशाहका लिखना ऐसा क्योंकर होसकता?

बिना प्रमाण शंखनाद करनेको सब मुस्तेज हो जाते हैं लेकिन प्रमाणद्वारा किसीबस्तुके नतीजेपर खयाल किया जाय तो जो सच्चे हैं वही सच्चे रहेंगे. सोचोकि-अंगशास्त्रोंको जब दिगंबरने न मान्य किये तजो [८४] बोलोंका अंतर पडा और पेंम पेंमपर वादानुवाद पैदा हुवा. अगर अंगशास्त्रको मान्य रखते तो काहेको कोइ बातका अंतर आता ? अगर उतर दिया जाय कि-अंगशास्त्र पूरे नहीं रहे थोड़े हिस्से रहगये इसलिये मान्य नहीं हो सकते-परंतु यह कहना बड़ी भूल है. केवलज्ञानके आगे मति श्रुत अवधिज्ञान आदि थोड़े हिस्से हैं. ( १४ ) पूर्व-दृष्टिवादका तिमरा अध्ययन है. चौदहपूर्वमेंसेभी (१) पूर्व रहगरा तब जैनशास्त्र पुस्तकाकार लिखे गये. एकपूर्व चौदहपूर्वका एक हिस्सा हुवा अगर हिस्सेको न मानना इसीबातपर पाबंद हो तो सभी सिद्धांतोंको मानना मोकुफ करदो. धवल-जयधवल-महा धवल-गोमटसार-आदिपुराण-हरिवंशपुराण वगेरा ग्रंथभी काहेको मानने ?-एकपूर्वपाठी मुनि अपने ज्ञानका हिस्सा प्रगटकरगयेहैं और हिस्सेको अपने मान्य रखना मंजुर नहीं. बस ! यही बात विवादकी जड हुयी. श्वेतांबरने इस जमको मूलसे नासकर दिया और दिगंबरने इसको पुष्ट किया. (८४) बोलका फर्क आया इसी जडका फल है.

(१)-दिगंबरकहते हैं श्वेतांबरमत हमारेमेंसे निकसा है. दुर्जिन क्षसमय आचार न पालनेमें शिथिलाचार धारन किया श्वेतांबर हुवे. श्वेतांबर कहतेहैं महावीरके निर्वाणमें (६०९) वर्षवाद हमारे श्वेतांबरमतमेंसे आज्ञाभंगकर घादशांगवाणीकों उथ्थापन किया दिगंबरहुवे जो इसहालकालमेंअभीतक पलता नहीं और नसाधु रहे. देखलियाजावेकि, जो सर्वज्ञकी आज्ञाभंगकर मनोकूलमत चलावे उसको हानोहीहो. श्वेतांबरमें दिगंबरमत निकला इसका प्रमाण यह है दिगंबरोंके शास्त्रमें जगह जगह श्वेतांबरका खंडन कियाहै, और श्वेतांबरोंके मूल आगमोंमें दिगंबरमतका नामभी नहींदीखता. इसप्रमाणसे जानाजाताहै श्वेतांबरशास्त्रमें दिगंबरके शास्त्र पीछे बने. क्योंकि-पहलेवालोंका खंमन पीछले करते हैं, पिताकेबिवाहका तपासा पुत्र नहीं देख सकता.

(२)-दिगंबरलोक श्वेतांबरको कहतेहैं ये शंभय मिथ्यादृष्टि हैं. उनके गोमटसागरग्रंथ [जो नेमिचंद्रआचार्यने संवत् [११३३] में बनाया है ] में कहा हैं-"इंदोविय शंसेयो"-परंतु यह कहना केवल पक्षपातकरके है. घादशांगवाणीकों माननवाले सदासम्य गृह्णित हैं वे दिगंबरोंके कहनेमें मिथ्यात्वी नहीं होशकते. मिथ्यात्वी वो है जो घादशांगवाणीकों उथ्थापते हैं. नयेग्रंथबनाकर स्वछंदतामें चलतेहैं, और इसीसबबसे दिगंबरकों एकांतमिथ्यादृष्टि एकपक्ष पकड़नेवाले कहतेहैं, मबबकि-घादशांगवाणीमें जो जिनकल्प और स्थविरकल्प दोषकारके मुनि होने कहे हैं जिसमें कहतेहैं जिनकल्पमुनियों हम मानते हैं लेकिन उनकाभी यथार्थ स्वरूप नहीं जानते, न उनकी बराबर चलसकते, वृथा इठकरना

इसीलिये एकांतमिथ्यादृष्टिसंजी अधिक मिथ्यात्वी है. और स्थ-  
विरकल्प मुनिकों मानना कहाहै उनकों नही मानते. अपनी  
पक्षपातसे जैनसंघका उध्थापन इसकालसे करदिया, और जि-  
नेद्रोंने पंचमकालके अंततक-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-  
( चतुर्विधसंघ ) रहना कहाहै. और दिगंबरके श्रावक श्राविका  
दोही संघ रह गये. सोजीपूरे नही.

(३) नाजिकुलकर और मरुदेवीकों श्वेतांबर कहतेहै युगली  
ये थे, और दिगंबरकहते है युगलीये नही ये, अन्यअन्य मातापिताके  
जन्मे हुवेथे इसका समाधान यहहैकि-नाजिकुलकरके वरुतमें युग  
लधर्म निवारण नही हुवाथा, क्योंकि-उसवरुत राजानही राणी  
नही दासनही दासीनही खंतीनही वामी नही असीमषीकृषी  
तीनप्रकारके कर्मनही और विवाहका होना नही था. इत्यादि  
अकर्मभूमिका व्यवहार वर्त्तनेसे युगलीयापनाही सिद्ध होताहै.  
अगर कहोगे नाभिकुलकर और उनकी स्त्री मरुदेवीके अन्यअन्य  
मातापिता थे तो दिखलाउ ! नाजिकुलकरके पिताका नाम क्या  
था ? और मरुदेवीके पिताकानाम क्या था ?-कोइ शास्त्रमेनही  
है तो वृथा हठ क्यों करना !-युगलधर्म कब दुरहुवा ? इसका  
विवेचन देखते है तो विदित होता है, जब रिषभदेवभग-  
वान् राज्यगादीपर बैठे, असीमषीकृषी तीनप्रकारकेकर्म जब  
उन्होंने प्रकाशितकिये-पुरुषकी ( ७२ ) कला-स्त्रीकी ( ६४ )  
कला-और ( १०० ) प्रकारके शिल्प जब प्रचलित किये, और  
कर्मभूमिपनेका प्रवर्त्तन शुरू हुवा तब युगलधर्म निवारण हुवायह  
सबकोइ जैनी मान्य रखतेहै, इसके पहले युगलधर्मका निवारण

हुवा मानना युक्तिविकल है। अगर फिरभी दृढ रखना मंजूर है तो बतलाओ ! रिपभदेवभगवान्‌के विवाहसमय इंद्रदेव क्यों आये? और विवाहकीरीति क्यों करवाई? क्योंकि-दिगंबरके कहनेमुजब तो नाभिकुलकरके वखतसेही विवाहकी रीति शुरू होचूकीथी फिर उनके वखत इंद्रदेवोंके आनेसे क्या प्रयोजनथा ? अगर कहेंगे भक्तिकेलिये आये तो अन्यतीर्थकरोंके विवाहमें क्यों नहीं आये इसलिये श्वेतांबरका कहना सत्य ठहरताहैकि-नाभिकुलकरके वखत युगलधर्म निवारण नहीं हुआथा।

(४)-मुनिसुव्रततीर्थकर जब केवलीअवस्थामें ग्रामानुग्राम विचरतथे तब भृगुकुञ्ज (जरुच) नगरमें अश्वमेधयज्ञ ब्राह्मणोंने कियाथा, जिसघोमेकों होमनेकेलिये लायेथे वहघोमा पूर्वजन्ममें मुनिसुव्रतस्वामीका मित्र था, केवलज्ञानसे इसबातको जानकर स्वामी भृगुकुञ्जनगर आये। घोमेकों प्रतिबोध दिया, उसको जाति-स्मरण ज्ञानहुवा और अनशनकरके आठमेंदेवलोकमें देवपने उत्पन्न हुवा, यहबात शत्रुंजयमहात्ममें लिखीहै, देवगतिका आयुष्य पुरा करके फिर वह मनुष्य होगा तब अनागतकालकी चौविशीमें गणधरपदवी पावेगा। इसबातको विनासमझे दिगंबराचार्य कहतेहै कि-श्वेतांबरमें मुनिसुव्रतस्वामीका घोमा गणधर हुवा मानते है, परंतु इसमें दिगंबराचार्यकी समझका फर्क है श्वेतांबरमान्य शास्त्रमें कोइजगह नहीं लिखाकि-घोमा गणधर हुवा।

(चोपाइ)-मुनिसुव्रतको गणधर घोरो-एसो कहे सो जाने थोरो,  
बुझे नहीं असमंजस बोले-सां संतनमें तृणके तोले,  
कुन गणधर इहां घोरो भाख्यो-भूठो आल मुगधने दाख्यो,

आसिको औषध काने बाँहे- ताकों कुन गहि बाँह निभावे,  
अगर किसी दिगंबरभट्टारक-पंमित-या-श्रावकों यह गर्व  
रहता हो कि-हमारे आचार्य झूठ कैसे कहे? तो उचित है कि-श्वेतां-  
बरके किसी शास्त्रमेंजी मुनिमुव्रतस्वामीका गणधर घोड़ा हुवा  
औसापाठ लिखलावे.

(५)-श्वेतांबरलोग-अंतराय (५)-दान, लाज, जोग, उपजोग,  
और वीर्य (पराक्रम)-हास्य-जय-रति-अरति-शोक-डुगंठा-काम-  
मिथ्यात्व-अज्ञान-निष्ठा-अविरति-राग और द्वेष-येह (१०) दोष-  
करके केवलीकों रहित मानते है, दिगंबर ये (१०) दोष विपर्यय  
मानते है, जैसे-क्षुधा-तृषा जय-शोक-रोग-जरा-मरण-जन्म-मद-मोह-  
स्नेह-प्रस्वद नींद-विस्मय-चिंता गद-रति-और विषाद-येह अठाराह  
दोष मानते है और कहते है येह अठारा दोष केवलीमें नहोने चाहिये.  
परंतु यह कहना वृथा है, क्योंकि-केवलज्ञान जो हुवा है सो (४)  
घातीकर्मके दूरहोनेसे हुवा है सो इन (४) घातीकर्मके दोषोंका  
अज्ञाव केवलीमें होना चाहिये अघातीकर्मके दोषोंका अज्ञाव  
न होना चाहिये दिगंबरने अघातीकर्मके दोषोंका अभाव माना  
है. जैसे क्षुधा-तृषा-मरण-रोग आदि ये अघातीकर्मके दोषोंका  
सदज्ञाव है सो केवलज्ञानहोनेसे दूर नही होशकता. क्योंकि-  
केवलज्ञान हुवेबादजी-वंदनीकर्म-नामकर्म गोत्रकर्म-और आयुष्य-  
कर्म-ये (४) अघातीकर्म बाकी रहते है सो येह दोषतरीके गीने नही  
जाते, क्योंकि ये दोष चारगतिमें रुलानेको समर्थ नही. अगर  
इनकों दोष मानतेहो तो नरगतिप्रमुख अन्यजी केइ दोष मानो.  
(६) दिगंबर केहते है केवलीके (४) कर्म जरीजबरी याने दग्धरज्जु-



सम्मान विफल है, तांबर कहते हैं मोहकर्मके अज्ञावसे संसारमें न रहानेकी अपेक्षा वे विफल है, लेकिन उदयकी अपेक्षा विफल नहीं, अगर उदयकी अपेक्षा भी विफल ही है तो आयुष्यकर्म विफल होनेसे उसी वखत मुक्ति चलेजाना चाहिये, नामकर्मके विफल होनेसे यशःकीर्ति न होना चाहिये, गात्रकर्मकविफल होनेसे तीर्थकरणोत्रका अज्ञाव होना चाहिये, वेदनीकर्मकविफल होनेसे निराबाधपना होना चाहिये, परंतु ये बातें जबतक वे मुक्त नहीं हुवे हैं तबतक हैं नहीं, बल्कि-चारों अघातीकर्मक उदयसे चारोंहो बातें उनमें प्रत्यक्ष विद्यमान हैं. फिर कैसे कह सकेंगे कि-केवलीके चारकर्म विफल है केवलीकों ज्ञानावरणकर्म क्षय होनेसे अनंत-ज्ञान-दर्शनावरण क्षय होनेसे अनंतदर्शन-मोहनीकर्मके दोषेद जिसमें दर्शनमोहनोंके क्षय होनेमें क्षायिकशुद्ध मम्यक्त और चारित्रमोहनीके क्षय होनेसे क्षायिकशुद्ध चारित्र-और अंतरायकर्म क्षय होनेसे अनंतवोर्य-ये ( ४ ) गुण प्रकट हुवे हैं, जब अघाती कर्मक्षय जायगं तब सिद्ध अवस्थामें (४)गुण और प्रकट होयगे जैसे वेदनो कर्मके क्षयसे अनंतसुख अव्याबाधपना) नाम कर्मके क्षयसे (अगुरुलघुत्व)-और आयुष्य कर्मके क्षयसे आरुह्यस्थिति-ये (५) गुण सिद्धोंके हुवे.

(७)-दिगंबर कहते हैं केवलज्ञान होतेहो केवलीकी काया सातधातवर्जित होजाती है, इसपर भेतांबर पूछते हैं सातधातवर्जित होनेका कारण क्या ! केवलज्ञान हुवा !-तो हांच या चार धातवर्जितका कारण मनःपर्याय ज्ञान भी होना चाहिये, अगर मनःपर्याय ज्ञानभी कहोने होता है तो मलकरोकों भी पांच

का चार घातवर्जित कल्पा कहना चाहिये, और कही नहीं, इस लिये यह कहना ठीक नहीं कि—ज्ञानके प्रकाश होनेसें शरीरकी घातवर्जित हो जाय अगर ऐसा होता तो एक एक ज्ञानकी वृद्धिमें एक एक या दोदो घातकावर्जित होना सब जीवोंको होता. ज्ञानका लाभ यह है कि—इंद्रियपदार्थका जानना सात घातका और संहननका नाश होना ज्ञानावरणकर्मके नाश होनेसें नहीं होता. केवलज्ञान हानेसें ज्ञानका प्रकाश हुवा शरीर शांघन नहीं हुवा, जो सातघात न रहे. उदारिक शरीरमें संहनन होता है, संहननका होना अस्थि मांस बिना नहीं होता वैक्रियशरीरमें संहनन नहीं इसी लिये वह हारु मांस करके भी वर्जित होता है. उदारिकशरीरको सातघातकरके वर्जित कहना ठीक नहीं.

(७)—दिगंबर कहते हैं तीर्थकर केवलज्ञान हुये पीछे आकाशमें चलते हैं अर्थात् जमीनपर दवरचित कमल और कमलके ऊपर अस्पृश्य होकर आप चलते हैं. सोचनेकी जगह है कि अगर तीर्थकर जगवान् आकाशमेंही चलतेहैं तो देवोंकी कमल रचना एक व्यर्थसी हुई. तीनज्ञानके धारक देव मूर्ख नहीं है, जब वे जानतेथेकि जगवान् आकाशमें चलतेहैं तो व्यर्थ कमल रचना क्यों करते ? कमलकी रचना करनेका प्रयोजन यही कहा जाताहैकि—जमीनकी रज भगवान्के चरणोंको न लगे. जगत्तापर स्तोत्र दिगंबर श्वेतांबर दोनों आम्नायवाले मानते हैं उसीमें क्या!

लिखो ! देखो ! } पादौ यदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! वस्तुः  
प्रमाने तत्र विदुषाः परिकल्पयन्ति.

इसपाठके अर्थपर दृष्टि देतेहैतो श्वेतांबरका कहना ठीक यथताहैकि-कमलपर भगवान् पैर देकर ही चलतेहै.

[५]-दिगंबरकहतेहै केवलीके शरीरसें द्रव्य हिंसा नहीं होती; श्वेतांबरकहतेहै होतीहै, क्योंकि- केवली सयोगीहै. योगहै सो सकंपमान सव्यापार है. सव्यापार होनेसें सक्रिय है. जो जो सक्रियहै उससें द्रव्यहिंसा बच नहीं सकती. दिगंबर आम्नायके द्रव्यसंग्रहकी वृत्तिमें जहां चारित्रका अधिकार चज्ञाहै त्रिखाहै कि-योगत्रयके व्यापारसें जिनेश्वरजी चारित्रकों मलीन करतेहै. इसका पाठ इस प्रकार है. संयोगि केवलीनो यथाख्यातंचारित्रं-ननुपरमयथाख्यातं चौराज्ज वेपि चौरसंसागिंवत् मोहोदयाभावेपि योगत्रयव्यापारश्चारित्रमलं जनयतीतिद्रव्यसंग्रहवृत्तौ-कोऽ इसमें तर्क करेकि-केवलज्ञानी सब जीवोंको ज्ञानमें देखरहेहै फिर कैसे हिंसा करेंगे ?-इसका उत्तर-केवलज्ञानसें बेशक देखरहेहै उनका इरादा हिंसा करनेका नहीं इसलिये उनको पापजी नहीं लगता परंतु कायाकरके पाचस्थावरोंकी जो हिंसा होरही है उसको कैसे बचाय सकते हैं ?-इसपर कहाजायकि-द्रव्यहिंसा तो होती है लेकिन कहनेमात्रही है तो कहिये ! क्या ! ! उनस्थावरजीवोंका मृत्यु नहीं हुवा ?-फिर यह कहाजायकि-उनको पाप नहीं लगता इस अपेक्षा कहने मात्र है तो श्वेतांबर और क्या कहते हैं ? वही तो यही कहतेहै कि-द्रव्यहिंसा हुयी याने उनजीवाका मृत्यु हुवा परंतु पाप नहीं लगा याने जाब करके हिंसा नहीं हुयी परंतु द्रव्य हिंसाका अज्ञाव तो नहीं हुवा ?-अर्थात् इर्यापथिकी क्रिया तो लगी. क्योंकि-तेरहमें गुणस्थानपरजी इर्यापथिकी क्रिया कही है.

(१०)-दिगंबरकहतेहैं केवली कबलाहार नहीं करते नोकर्म वर्गणाहार करतेहैं, श्वेतांबरकहतेहैं कबलाहारही करते हैं, इसका समाधान-अगर कबलाहार केवली नहीं करतेहैं तो सोचोकि-छोटी उमरमें किसीमनिकों केवलज्ञान होगया और उनकी उमर विशेष है तो उनके शरीरकी बधवारी किसकारणसे होगी. दोनों आमनायमें यहबात मंजूरहैकि-जघन्यमें आठवर्षकी उमरवालेकों केवलज्ञान होजाय और उनकी उत्कृष्ट आयुर्भ्याति किसीकिमीकी क्रोडपर्वकीज्नी होती है. अगर कहेंग कबलाहार नहीं करते और वृद्धि होती है तो सवालहोनेकी जगह है क्या ! शरीरकी वृद्धि ज्ञानसे हुयी ? अगरजो ज्ञानसे हुयी तौ क्या ! चैतन्य स्वभावसे शरीरकी वृद्धि मानतेहो ?-ऐसा मानो तो आत्मस्वभाव जड हुवा, क्योंकि-जडसे जडकी वृद्धि होती है, ज्ञानसे जडकी वृद्धि नहीं, ज्ञानसेतो ज्ञातृत्वशक्तिकी वृद्धि होतीहै जडकी वृद्धि नहीं होता. इसलिये केवलीकों कबलाहारही कहना ठीक है.

[ सवेया. ]

केवलीआहारकरे जागेअग्निअंतरकी वेदनीआहारशक्ति ताकी-नहीहीनता, हेतुकेसमाजमें घटेजुंकाजसाजथुअ लाजे तहांआज जुंके ज्ञानीकहादीनता, अन्यथा न अष्टवर्ष बालकेवली विशाल पूर्वकोटिआठपाल ताकूंवृद्धिहीनता वृद्धि पोषदाइजाइ वर्णा कहांमुपाइ ! ज्ञानते जू आइ तामें मुक्तिकी प्रवीणता.

नो कर्मवर्गणा आहार कहना ठीक नहीं. कर्मोंकी प्रकृतिका जो उदय-उसका जो भोगना उसीको दिगंबर लोग नो,कर्मवर्गणा,आहार कहते हैं. यहां सवाल होनेकी जगह

है कि इसके आहार करनेसे क्षुधातृषादि जो शरीरको लग रहे है उनकी तृप्ति कैसे हो सकती है ?—इसलिये कबलाहारही कहना ठीक है. उदारिक शरीरकी स्थिति कबलाहारहीसे है. अभ्यथा प्रत्यक्षविरोध होता है. तत्त्वार्थसूत्रके नवमें अध्यायमें जहां परिसहोका वर्णन है वहां लिखा है. मोक्षाच्यवननिर्जरार्थं प रिबोदव्याःपरिसहाः—क्षुतापिपामाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यरतिस्त्री चर्यानिषद्यःशय्याक्रोशव्याचनालाभरोगतृष्णस्पर्शमजसत्कारपुर स्कारमज्ञाज्ञानादर्शनानि सूक्ष्मसांपराय उद्गमस्थवीतरागभोश्चतुर्दश एकादशाजिने-बादरसांपराये सर्वे—ज्ञानावरणे मज्ञाज्ञाने-दर्शनमो हांतराययोःदर्शनालाजौ—चारित्र्यमोहे नाग्न्यरतिस्त्रीनिषद्याक्रोश व्याचनासत्कारपुरस्काराः वेदनीयेशेषाः—एकादयोभाज्याः—युगप ॥ देकास्मिन्नेकोनविंशतेः—अर्थः—ज्ञानावरण-दर्शनावरण-मोह-अंत- राय—और वेदनी इन पांच कर्मोंके उदयसे परिसह उत्पन्न होते है और इनको मोक्षार्थीजीव निर्जरार्थ और मोक्षमार्गसे अच्य बनार्थ सहन करते है. सूक्ष्मसांपराय और उद्गमस्थवीतराग गुण स्थानवर्त्तिकों—क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, अला भ, मज्ञा, अज्ञान, शय्या, वष, रोग, तृष्ण स्पर्श, और मल, ये (१४) परिसह होते है,—एकादशाजिने—अर्थात् तेरहमें गुणस्थान वर्त्तिकों—क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, शय्या, वष रोग, तृष्ण स्पर्श, और मल,—ये (११) परिह होते है. क्योंकि तेरहमें गुणस्थानपर परिसह उत्पन्न करनेवाला एक वेदनी ही कर्म रहा है. बादरसांपराय गुणस्थानवर्त्तिकों ( १२ ) परिसह उत्पन्न होते है. किसीको एक—किसीको दो—किसीको तीन—इ-

सी प्रकार किमीको संपूर्ण परिसहोका उदय हो जाय तो (१०) परिसहसे अधिकका उदय न हो. क्यों कि—जहां शीत वहां उष्ण नहीं और जहां उष्ण वहां शीत नहीं. जहां चर्या वहां शय्या निषद्या नहीं; जहां शय्या वहां चर्या निषद्या नहीं, और जहां निषद्या वहां शय्या चर्या नहीं. बाइसपरिसहोंमें मज्ञा और अज्ञान यह दो परिसह ज्ञानावरण कर्मके उदयमें होते हैं दर्शन और अलाभ यह दो दर्शनमोह और अंतरायकर्मके उदयमें होते हैं. नाग्न्य-अराते-स्त्री-निषद्या-आक्रोश-याचना-और सत्कारपुरस्कार—यह सातपरिसह चारित्र्य मोहकर्मके उदयमें होते हैं सुधा-तृषा-शीत-उष्ण दंष्ट्रमशक-चर्या-शय्या-वध-रोग-तृष्णस्पर्श-और मज्ज ये (११) ग्यारहपरिसह वेदनीकर्मके उदयमें होत हैं. केवलीकों वेदनीकर्म मौजूद है इसीलिये उनको ग्यारहपरिसह का सद्भाव कहा. फिर सुधा तृषाका अभाव कैसे कह सकते हो ?—क्यों कि—केवलज्ञान हुवे पहले भी वेदनीकर्मजन्य ग्यारह परिसह उनका थे वेही ग्यारहपरिसह केवलज्ञान हुवे पीछे भी रहे तो कवलाहार करना सिद्ध हुआही. बिना कवलाहार जैसे पहले कायाकी स्थिति नहीं होसकतीथी तद्वत् केवली अवस्थामें भी नहीं होसकती. अगर कहोग केवलज्ञानसे शरीरकी स्थिति होती है तो यह बात कथ्य है. केवल ज्ञानकाविषय ज्ञेयपदार्थके जाननका है. शरीरकी स्थिति या वृद्धि करनेका नहीं.

दिगंबर इसपर कहते हैं ग्यारहपरिसह जो तत्त्वार्थसूत्रमें लिखेहैं वे बेवक ! केवलीको है लेकिन उपचारमात्रहै कुञ्जाकर्मावकारी नहीं. भोतांबरकहतेहैं यह कहना ठीक नहीं. ग्यारहपरिसह

उनके शरीरपर वर्त्तते है जबतक वेदनीकर्म नहीं छूटाहे तबतक उपचारमात्र कैसे कहसकतेहो ?-उपचार उसको कहतेहै जो बात वास्तवमें न हो और आरोप करके कहीजाय-उपचारका लक्षण ए. अन्यत्र नसिद्धस्य धर्मस्य अन्यत्रारोपणमुपचारः सो क्या ग्यारहपरिसह केवलीमें नहीं है?—वृथाही कहना पडता है?—अगर वृथाही कहते हो तो वेदनोआदि चार अघातीकर्म है वेनी वृथा कहो जब अघातीकर्म वृथा हुवे तो चारघातीकर्मके नाश होतेही मुक्ति होजाना चाहिये. और होते नहीं—बतलाइये ? फिर मुक्त होतको रोकनेमें दूसरा कौन कारण रहा ?—इसलिये चारअघाती कर्मको कार्यकारी मानना चाहिये. जो उनको मुक्ति जानेसे रोक रहेहै. इनको उपचारमात्र कहना वृथा है. दिगंबरने केवलीको अठाराह दोष करके रहित माना उसमेंनी विरुद्धता है. सोचो कि—एकादशजिने-अर्थात् केवलीको (११) परिसहनी बतलातेहै. और सुधा, तृषादिकदोष रहितभी कहते जातेहै. ऐसा विरुद्ध वचन कैसे संभवे ?—हकीकतमें तो दिगंबरोंने द्वादशांगवानीके सिद्धांत उद्घापन किये तब ऐसी कल्पितवातोंका सहारा लेना पडा सब है कि-जो मनुष्य कल्पित शास्त्र गुंथे उनका ऐसाही विरुद्ध आशय होता है. और बातबातमें अटकना पडता है. इसलिये केवलोको कबलाहारकरना सिद्ध हुवा. इसबातमें दिगंबर वृथा हठ करते है.

फिर दिगंबरोंका कहना यहहैकि-केवली आहारकरतेसमय जब घ्रास उठायें तो मूर्छा आयी, इसपरश्वेतांबरका कहतेहै केवली विहारकरतेसमय जब कदम उठाते है समयसरणमें सिंहासन

परबैठतेहै तबजी कहो मूर्छा आयी. तो ऐसा कहना ठीक नहीं, मोह कर्मकेनाशसें मूर्छाका अज्ञावतो उनको पहलेही हो चुकाहै. फिर मूर्छाका कहना पापबंधका कारणहै. वृथाकुतर्क करना ठीक नहीं. दिगंबरआम्नायमें तत्त्वार्थसूत्र प्रमाणहै सो वोजी श्वेतांबर आचार्य उमास्वातिका रचाहुवा है. हठकरके दिगंबरोंने अपना मानलियाहै उसके अक्षरार्थ देखनेसेंजी क्षुधा तृषादि परिसह केवलीकों रहे और कवलाआहार सिद्ध हुवा. फिर न मालूम दिगंबरलोक कौन ग्रंथके प्रमाणकरके कवलाहार नहीं मानते है?—फिर दिगंबर कहते है क्या ! अशातावेदनी कर्मजी केवलीकों है ?—उत्तर-शाता अशातावेदनी दोनों केवलीको है. अगर अशातावेदनी कर्म न होता तो किसकर्मकी निर्जरार्थ उनको परिसहसहन करना कहा !—अलबते ! इतना जरूर हैकि—उनको शातावेदनी कर्मका उदय ज्यादाहै अशातावेदनीका थोडा है, लेकीन है दोनों-फिर दिगंबरका कहनाहै कि-जब उन्होंनें कवलाहार करलिया तो क्षुधा तृषादि परिसहकासहना कहां रहा ?—उत्तर-क्यों नहीं रहा !—सोचोकि-केवलज्ञानमें उन्होंको ज्ञासन हुवा अमूक समयमें हमको आहार लेना होगा. जबतक वहसमय नहीं आयाहै उससें पहले समझो उनको अशातावेदनीके उदयसें क्षुधातृषाका सद्भाव हुवा उतनाकाल वह उसको सहन करेंगे वही उनको क्षुधा तृषा परिसह सहना है. अगर इसबातको नहीं मानते हो तो (११) परिसहभो न मानना चाहिये. बस ! तत्त्वार्थसूत्रके एकादशजिने—इसपाठपर कलम फेरदो. केवलीको क्षुधातृषाका सद्भाव सुनकर नाराजी आतीहै तोशीत



उभपरिसहके लियेजी इनकार करदो. और यहभी कहदो कि-दंष्ट्रामशकजी उनके शरीरपर नही बैठने पाते. फिर चर्या-शय्या-नध-रोग-तृणस्पर्श-और मल ये परिसहजी काहेकों कहना? जब धुधातृषा उत्थापन कियी तो और परिसहजी नही मानना चाहिये. जब और परिसहभी नही माने तो आज्ञाभंगका दूषण आया और तत्त्वार्थसूत्रकी सनंद नही रही. अगर फिर यह तर्क कियीजायकि-आहारकरलिया तो परिसह सहना कहां रहा? इसका उत्तर-केवली जब उग्रस्थ थे तबजी आहार करतेथे और परिसह सहन होता था तद्यत् केवल अवस्थामेंभी आहार किया और अशातावेदनीकी निर्जरार्थ परिसह सहन करते रहे इसमें विरोध क्या ! हुवा ?-बिना विचारे तर्क करना वृथा है. अगर कहोगे उनका अनंतबल कहां रहा? हमकहते है अनंतबल क्यों नही रहा ?-बलका अस्तित्व जो है सो उनमें मौजूद है जो अंतरायकर्मके क्षयसे हुवाहै उसकों आहारके पुद्गल आवरण नही करशक्ते जिससे अनंत बल घट जाय, आहार अनंतबल घटाने बढ़ानेका कारण नही. अंतराय कर्मके नाश होतेही अनंत बल प्रकट होताहै वह क्या ! आहारकरनेसे घटबढ़ शकताहै ?-इसलिये कवलाहार करनेसे अनंतबलमें कोई विरोध नही आता, न सर्वज्ञतामेंभी कवलाहारके साथ विरोध है. प्रमाणनयतत्वलो कालंकारके प्रथम अध्यायमें--कवलाहारसर्वज्ञत्वयोरविरोधात्- इससूत्रपर टीकाकारने बहोतकुछ समालोचना कियी है. यहां कितना लिखें ?-

( १.१. )-दिग्ंबर कहतेहै तीर्थकरोके निर्वाण हुवेबादउनका

शरीर कर्पूरवत् खीर जाता है, फिर देवते आनकर नयाशरीर रचके उसका अग्निसंस्कार करते हैं. श्वेतांबर कहतेहैं तीर्थंकरों का शरीर खीरता नहीं. उदारिकशरीरका स्वभाव खीरनेका नहीं. क्योंकि-वह बंधन संघातनसहित है. सो कैसे खीरे?—खीरजानेका हेतु क्या?—

(११)—श्वेतांबर कहतेहैं तीर्थंकरोंके निर्वाण हुवे बाद इंद्रदेव उनके शरीरका अग्निसंस्कार करके उनकी ढाढा ( फुल ) देव लोकमें लेजाकर रत्नटीपारोंमें रखके पूजते हैं. दिगंबर कहते हैं तीर्थंकरोंका असलीशरीर कर्पूरवत् खीरजाता है केवल नख के श नहीं खीरते, उन नखकेशोंको देवलोकमें लेजाकर रत्नटीपारोंमें रखके पूजते हैं.

( १३ )-दिगंबर कहते हैं केवली बोलते नहीं किंतु शिर से नाद पैदा होता है. धर्मोपदेश वगेरामेंजी इसी प्रकार शिरसेही नाद उठता है.—श्वेतांबर कहतेहैं केवली बोलतेहैं. शिरसे नाद होनेका कोई प्रयोजन नहीं. अगर प्रयोजन है तो उसमें हेतुक्या? धर्मदशनामें मालकोस जीमपलासी वगेरा मधुरी रागरागणीसे धर्मोपदेश करतेहैं यह बात युक्तिद्वारा सबकिसीको मान्य होश कती है. जिसको साहूरी वाणी बोलनेकी शक्ति है वे निरहूरी वाणी क्यों बोलेंगे?—क्या ! उरः—कंठ—शिर—जीव्हामुल—दंत—नाशिका—ओष्ठ—और तालु—ये आठ स्थान जिनसे वर्णाक्षरकी उत्पत्ति है केवलीके नहीं रहे ? जो शिरसे नाद उठे?

[१४]—महावीरस्वामीका विवाह हुवा उनको पुत्री हुयी और वह जमाली जातके मालीको विवाही यहबात कहकर दिगं

बरलोक श्वेतांबरकों आलोचना देतेहैं. परंतु इसमें उनकी समझका फर्कहै. श्वेतांबरलोक महावीरका विवाह हुवा-उनकों पुत्री हुयी और बहू जमाली नामके राजकुमारकों विवाही गयी-जरूर मानते हैं. कौनकहता है जमाली मालीजातिका था ? विना प्रमाण कोई बात कहदेना धर्मीजनोंका काम नहीं. कौनसे शास्त्रमें जमालीकों माली लिखा है ? प्रमाण देना चाहिये.

(१५)-दिगंबर कहतेहैं जिनप्रतिमाका स्वरूप वीतराग कहा सरागकरके क्यों पूजते हो ?-गेहना आभूषणमें श्रृंगारी हुयी प्रतिमामें वीतरागपना कहाँ रहा ? श्वेतांबर कहतेहैं क्यों नहीं रहा ! जब वे निरागी हैं हम उनकी उचितभक्ति करके गेहने आभूषण पहनाने हैं इससे उनके वीतरागभावकी हानी क्योंकर होशकती है?-हमारे जोले जाइ दिगंबर प्रश्नतो कर बैठते हैं परंतु तत्वकों नहीं विचारते. वीतरागभावका अज्ञाव आभूषण आदिकसें नहीं होता. समवसरणमें रत्नसिंहासनपर जब बैठतेथे छत्र चवर होतेथे तब गणधर और इंद्रदेवआदि वीतराग कहकर उनकी स्तुति करतेथे. सोचोकि-अगर उनका वीतरागज्ञाव चला गया होतातो वे उनकों वीतराग कहकर क्यों मानते पूजते !-इसलिये वीतरागज्ञावका अभाव आभूषणादिकसें नहीं होता जैसाकि-कंगालदशा दर्शनसें होताहै, भाववस्तु बाह्य नहीं किंतु अभ्यंतर है यही मानना मुनासब है, अगर केवल वीतरागभावकोंही मानना स्वीकार है तो स्नान कराना-केशरघंदनपुष्प चढाना-रथारोहन करना-तुमारी अपेक्षा वृथा है न करना चाहिये. वीतरागहुवे बाद कौनसें रौज वे रथपर चढेथे ?-कब सचित्त जलसें स्नान

कियाथा ?—और केसरचंदनविलेपन करायाथा ? तुम लोक क्यों करते हो ?—सिंहासन छत्र भामंडलआदि जिनप्रतिमासें मिलाकर रखते हो क्या ! यह आभूषण नहीं है ?—निर्ग्रन्थअवस्थाही मानना प्रमाण है तो कहिये ! उस अवस्थाको प्रतिमाकों रथमें सवार करके फिराना किस आगमका लेख है ?—अगर कहोंगे भक्तिप्रभावना है तो सोचो ! श्वेतांबर और क्या कहते है ? वेज्नी तो भक्ति प्रभावनाही कहतेहै. अगर कहोंगे सबकुछ किया परंतु शरीरका रूपतों हमने नहीं बदला ? हम कहतेहै यह तर्क मूर्खोंकी है विद्या नोकी नहीं. किसीने हेयवस्तुके त्यागीकों हेयवस्तुके समुहपर बिठाया और किसीने हेयवस्तु उनके शरीरपर रखी-ज्ञातापुरुषों की समझ मुजब तो दोनों एक सरस्वीबात है. हठवादीयोंकी बात अलग है.

क्षुल्लकधर्मदासजीके उत्तरमें पंडितऊरगदलाल लिखते है हम तो बीतरागभावकी वर्द्धक प्रतिमा मानते है. हम पूछते है जब बीतरागज्ञाव वर्द्धक प्रतिमा ही मान्य है तो प्रतिष्ठा समय जन्मसंस्कार-विवाहसंस्कार-कलशारोपण-वगेरा क्यों करना ? क्या उससमय रागभाववर्द्धक वह मूर्त्ति नहीं है ? बीतरागकी मुर्त्तिपर ऐसेकार्य करने और दूसरा करेतो उसका उपहास्य करना यही तो मुर्खताका कारण है. सोचो तो बीतरागज्ञाव उससमय उत्पन्न होताहै जब केवलज्ञानका उदय आवे. उससें पहले तो संपूर्ण कार्य सरागज्ञावका कारण है, अगर एसाही आग्रह है तो एक निर्वाणकोंही मानके अन्यसंपूर्णकृत्य छोड दो. महाशय ! कहना तो सहज है लेकीन उस मुजब चलना सहज नहीं. देखो ! जिस

मूर्तिकों श्वेतांबर पूजते हैं उसके और दिगंबर प्रतिमाके मध्य केवल आभूषणआदिका अंतर है, इसके शिवाय समयलब्धि पायकर औरजी केइ अंतरपडते गये. जैसे खम्हे आकारनग्नमूर्ति जिसका पुरुषचिन्ह लटकता हुवा महाविज्रत्साकार नजर आताहे देखकर मारीडनिया नाक चढाती है एसी जिनमूर्ति बनाना कोइ दिगंबर शास्त्रमें नही लिखा गडरीया प्रवाह चलपमाहै, दिगंबरलोक इसवातकोंविशेष पुष्ट करतहै और कहतेहैकि-केइ तीर्थकर खडगासन मुक्ति हुवे है उनकी नकल हम बनातेहै. हम पूजते है वे नग्न दिसते थे ?नही दिसतेथे-तो फिर एसी नीधमूर्ति क्यों बनाना ?-जिससें उज्जयलोक विरुद्धता प्राप्त हो. जबकिसी शहरमें दिगंबरोंकी रथयात्राका महोत्सव होताहै सज्जी मनुष्य नोंदा करते है और कहते है बडी अयोग्य बात है कि-नग्नदेव मूर्ति नगरमें फिरायी गयो. देखिये ! छादशांगीके सिद्धांतोंको उ थापन किये-मनःकल्पित सिद्धांत बनाकर उस मुजब चलना शुरूकिया-तो एसी नोंदाका पात्र होना पडा. छादशांगवाणीके सिद्धांतोंमें पद्मासन जिनमूर्ति बनाना लिखा है, जिससें उनके नग्नस्वरूपमें और लोक व्यवहारमें दोनोमें विरोध नही आता.

दिगंबर कहते है अरिहंतदेव वस्त्रके त्यागी थे उनकों अंगी यां पह्राना ठीक नहीं. ( उत्तर )-अरिहंतदेव स्नानविलेपनके त्यागी थे सो भी कराना ठीक नहीं. अगर भक्तिसें कराते हो तो अंगीयां भी भक्तिहीसे पह्रनायी जाती है अगर भोग्यवस्तुके त्यागीकों भोग्यवस्तुका संबंध कराना नामंजूरही है तो तुमकों अरिहंतदेवके सामने नैवेद्यजी न चढाना चाहिये. केवल ज्ञान

हुवे बाद अरिहंतदेवकों तुम आहारके त्यागी मानते हो. जो बात शास्त्राज्ञासँ प्रतिकूल हो गोमना चाहिये. जैसे रात्रीको देव पूजा करना कोइ शास्त्रमें नही लिखा आरात्रिका (आरती) कराना यही सायंकालकी पूजा है. दिगंबर लोक-अनंत चौदश (जो भाष्पद सूदीमें आती है) -शरदपुनम-और दीपमाळा (दीवाली) के रोज-रात्रीकों अष्टध्व्यसँ जिनपूजा करते है यह शास्त्राज्ञाविरुद्ध है. और दुसरा एक यह ब्रह्मा अनर्थ करते है कि-जब कभी बड़ीपूजन करायी जाती है तो मंदिरमें प्रतिष्ठा की हुयी प्रतिमाजीके होते हुवे पूजनके समय एक ठवणा रखकर वहां भगवान्का आह्वान ओर विसर्जन करते है यह कितना बड़ा अनर्थ है कि-जगवान्के साक्षात् विराजमान होते हुवे आह्वान विसर्जन किया जाय. इससँतो प्रतिमाजीका होना सर्वथा व्यर्थ समझा गया. क्योंकि-पूजा तो उस देवकी हुयी जिसका आह्वानकरके विसर्जन किया.

फिर दिगंबरलोक जिनप्रतिमाकों नेत्र लगे हुवे देखकर उपहास्य करते है. कहतेहै क्या ! जिनमूर्ति अंधी है जो नेत्र लगाये जाय ? ( इसका उत्तर )-महाशय-जिनप्रतिमा अंधी नहीहै कहने वालेही अंधे है जो जिनप्रतिमाकों तदाकार नही देखते. जिनेद्र देवकी भ्रूश्यामरंग थी सो श्वेतांबरलोक उनकी प्रतिमामें श्यामरंगकी भूवनाते है, अधर लालरंग थे सो लाल बनाते है, हाथपांव के तल्लें लाल थे सोजी लाल बनाते है, नेत्र उनके चमकते थे जैसे रत्न चमकते है अब उसजगह उसी रूपका स्वरूप बनानेके कारण नेत्रजी स्फटिकरत्नके चमकते लगाते है. कहिये ! इसमें

कौनसी विपरीत बात हुयी ?-वृथा हंसी करना मूर्खोंका काम है. दिगंबरलोक कहते तो हैकि-जिनेन्द्रकी प्रतिमाकों हम तत्सदृश बनाते हैं लेकिन कहनेहीमात्र है. बनती नहीं. जबतदाकार नहीं बनी तो तदाकार कहना वृथा है. क्या ! नग्नस्वरूप लटकता हुवा पुरुषचिन्ह बनादिया इसीसे तदाकारता हो गयी ?-सोचो ! जिनेन्द्र नग्न होते हुवे भी दूसरेकों नग्न दिसते थे ?-विशेष क्या ! लिखे ?-छादशांग वाणीके सिद्धांतोमे जो कुछ लिखा है उसी मुताबिक श्वेतांबरलोक करते हैं दिगंबर नहीं करते. शास्त्रमें वीतरागज्ञावका वर्णन इसप्रकार किया है.-

( मालिनी वृत्तं )

प्रशमरसनिमग्नदष्टियुगं प्रसन्नं,  
वदनकमलमंकःकामिनीमंगशून्यः,  
करयुगमपि धत्ते शस्त्रसंबंधवंध्यं,  
तदसिजगति देवो वीतराग ! त्वमेव, १

मित्रवर ! पक्षपात त्यागकर कहना उपर लिखा हुवा वीतरागज्ञाव श्वेतांबर प्रतिमामें है या नहीं ? यदि है तो तुमारे तर्क व्यर्थ है.

( १६ )-दिगंबरलोक कस्तूरीकों अपवित्र कहते हैं और मंदिरमें छेजाना बुरा गिनते हैं परंतु इन्हींके ज्ञाई वीशंपंथी बुरा नहीं गिनते. सोचनेकी जगह हैकि-अगर कस्तूरी अपवित्रही है तो मृदंग-सारंगो-बगेरा चमड़ेके बाजे जो मंदिरमें बजाये जाते हैं वे कैसे पवित्र हुवे ?-यहां कोई तर्क करेकि-तेरहपंथी चमड़ेके बाजे मंदिरमें नहीं छेजाते तो ऐसा कहनाभी व्यर्थ है. क्योंकि-तेरहपंथी

लोक अंग्रेजीके बने हुवे कपडे पहनेकर मंदिरमें जाते है. जिसमें अनेक रंग रुधिरके सहारेसे रंगनेमें आते है. और बहुधा तेरहपंथीयोंकी स्त्रियों अपनेबालकोंके गलेमें सिंह-बीजुआदिके नस्लोंका तथा कोडीयोंका-हार मालती है और उसको मंदिरमें लेजाते है. हम पूछते है क्या! ये कस्तुरीसे अच्छे है ?-अगर उत्पत्तिकी अपेक्षा कस्तुरी त्रस जीवका अवयव होनेसे अपवित्र मानते हो तो मुनिकों मयूरपींठी-और चमरी गायके केशकी पींठीजी अपवित्र होनेसे न रखना चाहिये. क्योंकि त्रसजीवका अवयव है. और इसी प्रकार रेशम-लोइ-कंबल-दूशाला-आदिजी समझो. परंतु हकीकतमें दिगंबरोकी समझका फर्क है. जो वस्तु व्यवहारमें पवित्र है वह पवित्रही मानी जाती है जिनप्रतिमाको चढाना अयोग्य नहीं. यदि उत्पत्तिकी अपेक्षा वस्तुकी पवित्रतापर खयाल रखना मंजूर है तो प्रतिमाजीको स्नान करानाभी बंद करदो. क्योंकि-सर्व अपवित्रतासे जल संमीलित है. अनेक-मूत्र-कूटप-भांडक-आदि जीवोंका अवयव करके सहित है. थलचर-खेचरजीवोंका उत्सृष्ट है और मूत्र-पूरीष-हाड-मांस आदि करके संयोजित है. इसलिये आप लोकोंकी बारीकीके आगे जलजी अपवित्र ठेरता है.

(१७) चर्मकी मशकका नीर-और चर्मके भांडेका घृत-त्वानेसे दिगंबर कहते है मांसभक्षणका दोष लगता है. श्वेतांबर कहते है शुष्कचर्मकी मशकका नीर और शुष्कचर्मके भांडेका घृत-त्वानेसे मांसका दोष नहीं लगता. मांसका दोष तो जब लगे अगर मांस वा-मांसमिश्रित पदार्थ खाया जाय शुष्कचर्म न मांस है न मांस मिश्रित है. इतनेपरन्ती इसमें मांस भक्षण दोष मानना मंजूर है



तो चीनी खांडकी खांची जिसमें अनंत निगोदराशि पड़ती है पंचेंद्रियआदि जोवका शरीरभी गलता है-क्लेवर उसमें प्रत्यक्ष दिसते हैं-न खाना चाहिये, सांवरलौनकी उत्पत्ति देखते हैं तो महा अपावन है, यहां हम अपनी आंखोंसे देखी हुयी हकीकत लिखते हैं कि-जब हमने संवत् ( १९४७ ) के मार्गशीर्षमहिनेमें दिल्लीमें विहार किया और मथुराकों आतेथे, रास्तेमें फरुखनगर के निकटवर्त्तास्थानोंमें खारीनीमक बनता देखा था. जो गौ-महिषो-आदि पशुओंके खोपड़ेकी हमीके सहारेसे जमाया जाताथा. और पूछनेपर उनलोकोंने कहाथाकि-बिना हमीके ये नीमक नहीं बनता. उत्पत्तिकी अपेक्षा अगर खयाल किया जाय तो यह नीमकजी न खाना चाहिये. उधकी उत्पत्ति कच्चा मांसमेंसे प्रत्यक्ष है इसमेंभी कहदो मांसभक्षणका दोष है. क्या बतावे ! दिगंबरलोक-चीनीखांड-खारी ( सांवर ) नीमक-आदि तो खातेहैं और सूकेचर्मकी मशका नोर-तथा सूकेचर्मके जामेका घृतमें न मालूम किस हेतु परेज करते हैं, सो विदित न हुवा.

( १० )-दिगंबर कहतेहैं अव्यचारित्र बिना मुक्ति नहीं होती; श्वेतांबर कहते हैं जावचारित्र उदय आजाय तो अव्यचारित्र हो चाहे न हो मुक्ति हो सकती है. अगर अव्यचारित्रही कार्यकारी है तो कहो ! अव्यचारित्र जीवका स्वस्वभाव है या परस्वभाव है. अगर स्वस्वभाव है तो अभव्यजीवकोंभी द्रव्यचारित्र उदय आता है मुक्ति होना चाहिये. और परस्वभाव है तो परस्वभाव बिना मुक्ति न हुयी ऐसा मानो. परंतु हकीकतमें दिगंबरोकी समझकाही फर्क है. जबतक विषयोसे मन नहीं

निवर्त्ता है चाहे साधु होजाउ या गृहस्थ रहो मुक्ति न होगी जब मन शुद्ध होजायगा अर्थात् जावचारित्र उदय आयगा मुक्ति होतेको कोई न रोक सकेगा.

( १.ए )-दिगंबर कहते है शुद्धको मुक्ति नहीं होती, श्वेतांबर कहते होती है. मुक्तिका रस्ता सम्यक्ज्ञान दर्शन और चारित्रहै. तत्त्वार्थसूत्रके प्रथम अध्यायमें क्या कहाहै ? सम्यक् दर्शनज्ञान चारित्राणि-मोक्षमार्गः-जो मनुष्य इसमार्गपर चलेगा उसकी मुक्ति कौन रोक सकेगा ?-जन्मकी अपेक्षा जो जातिहीन है वह उत्तम क्रिया करने परज्जी उत्तम न समझा जाय यह कोई प्रमाणकरने योग्य बात नहीं. किसी दिगंबरशास्त्रमें जातिभेद जन्मकी अपेक्षा नहीं लिखा किंतु गुणकर्मकी अपेक्षा लिखाहै. जिसको श्वेतांबर भी मानते है. क्या ! कोई ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न होकर चांडाली-कर्म स्वीकार करे वह ब्राह्मणही रह सकता है ?-कभी नहीं. इसी प्रकार जो शुद्धकुलमें जन्म लेकर शुद्ध आचरणसे विचरे उसकी किसी दिगंबरशास्त्रमें दीक्षा निषेध नहीं कियी, जबतक कोई ठीक प्रमाण न होगा विद्वान् नहीं मानेंगे दिगंबरको पांचमें जिनसेनाचार्यके लेखोपर पूरा विश्वास नहीं करना चाहिये क्योंकि-एक ब्राह्मणका पुत्र एक भट्टारकका रसोदया था. कुछ दिनपीठे चेला होकर कितनेक ग्रंथोंकी रचना कियी, जो दिगंबर मतके शास्त्रोंसे बहुधा प्रतिकूल है. जैसेकि-हरिवंशपुराणमेंलिखा हैकि-जरार्सिंहके तथा कृष्णजीके मरनेपर इनके पीछलोंने श्राद्ध किया और तिलांजलि दियी. इसमें सर्वथा अपने ब्राह्मणधर्म को स्थापन किया है.

( १० )—दिगंबर कहते हैं जैनीके शिवाय डसरे मतावलंबीके घरका बनाहुवा आहारपानी मुनिकों लेना उचित नहीं. श्वेतांबर कहते हैं जो मनुष्य (चाहे वो जैनी हो वा अन्यधर्मी हो) शुद्धआहार व्यवहार रखता है उसके घरका हरेक पदार्थ मुनिकों लेना उचित है. यदि ऐसाही हो जैसाकि-दिगंबरलोक कहतेहैं तब तो प्रथम उनकों जैनीके शिवाय अन्यकिसीसे संबंधही नहींरखना चाहिये. दूसरी यहभी बात है कि-जैनी-जैनधर्मपालने और श्रद्धा रखनेवालोंका नाम है. आजकल अनेक दिगंबरी ऐसे देखनेमें आतेहैं जिनोंने जन्म समयसे लगा आजतक अपने धर्मका तत्व नहीं जाना, कोरे नामके जैनी हैं, यदिकोई जैनमुनि इसके घरका आहार ग्रहण करे तो सोचना चाहिये, वो शुद्ध क्योंकर हो सकता है? क्योंकि-उसकों तो शुद्धाशुद्धका ज्ञान नहीं, इसलिये पक्षपातरहित मनुष्योंकों यथार्थ वस्तु जहांसे मीले विन रागद्वेष ग्रहण करलेनी योग्य है. यदि मुनि किसी घर प्रवे करनेसे द्वेषभाव करे तो छुपण लगता है. असततत्वतो यहहै जिसपात्रमें मांस पकातेहैं उस पात्रका आहार नहीं लेना, ३ मांसके संघटनसेज्जी आहार नहीं लेना यह मुनियोंका व्यवहार है. शुद्ध आहार अलग पड़ा है उसकों गृहस्थ शुद्धभावसे देवे तो लेनेमें कुछ दोष नहीं. यदी फिरज्जी यही आग्रह है कि—अन्यधर्मीके घरका बनाहुवा आहार मुनिकों और श्रावककों न खाना चाहिये तो संपूर्ण दिगंबर श्रावक ब्राह्मणके हाथका पका हुवा जोजन ग्रहण करते हैं ठोम देना चाहिये. क्योंकि-वे जैन धर्मसे विमुख हैं. सोचो ! एक ब्राह्मण मिठाई बनानेका कार

करता है उसने अनछाने जलसे मिठाई बनाई और कोई दिगंबर श्रावक उस मिठाईको अपने खानेके निमित्त मॉल लेगया इधर उसीदिन कोई जैनमुनि उसके घर भीक्षाको आये और श्रावक-ने उस मीठाई लेनेकी निमंत्रणा कियी. कहिये ! मुनि उसको लेवे या नहीं ?-यदि कहोगे लेवे तो अनछाने जलकी बनी चीज कैसे खायेंगे ? न लेवे तो उसमें हेतु क्या ?-महाशय ! एकांतपवित्र आहार उत्पात्तिकी अपेक्षा कच्ची नहीं मिल सकती. देखो ! जल कैसा अपवित्र है जिसमें-मछ-कछपके अवयव-थलचरजीवोंके मूत्र पुरीष-हाड-चाम-रुधिर-बगेरा संमीलित है. दूध बछड़ोंका शूठा और हारुमांसकी पेसीमेंसे नोकसा हुवा है. दही-छास-मखन-इनमें बलोणा करते वख्त शुद्धलोक अपने घरका जल अनछाना मीलाते हैं. बहोत दिनका मखन इकठाकर तपाते हैं. तिलपिछ तेवख्त तेली अपने घरका जल मीलाता है. अन्न और पत्र शाक आदिमें अकसरकोईनकोई जीव पतन होही जाता है. इसी प्रकार वस्तुकी उत्पात्तिकी अपेक्षा अपवित्रता मानोगें तो फिर आहारपानी लेना योग्यही न ठहरेगा, हमारे इसलिखनेका यह अभिप्राय नहीं है कि-मुनि अपवित्र आहार ग्रहण करे. जो वस्तु व्यवहार मार्गमें पवित्र गिनी जातीहै-शिष्टपुरुषों जिसको अपवित्र नहीं कहते- उसको व्यवहारसे पवित्रमानकर मुनि और श्रावक ग्रहण करे. दातारकी शुद्धाशुद्धि तो उसके आचार व्यवहारसेही विदित होजाती है. जिसको अशुद्ध देखनेमें आयगा उसका आहार तो मूर्ख और अन्यधर्मावलंबीजी ग्रहण नहीं करते. फिर जैनमुनि कैसे लेवेंगे ?-और हम पूछते हैं जिसमुनिकों

जैनीके शिवाय अन्यके घरका आहार नहीं लेना ऐसाही प्रणहै तो रिषभदेव भगवान्ने चतुर्विध संघस्थापन करनेसे पहले कौन सा जैनी था जिसके घरका आहार उन्होंने जैनी समझकर लिया. एक श्रेयांसकुमारको जातिस्मरण ज्ञान था सारीदुनियाकोतो नहीं था. यहां यही सिद्ध होता हैकि-जहां शुद्ध आहार मिले वहांही से लेलेना योग्य है. सोचोकि-कुछ समय जब सुविधि [ पुष्पदंत ] नाथजीके पीछे धर्म विवेद हो गया था तो शीथलनाथ दशमैती र्थकरने कौनके घरसे आहार लिया होगा ?-क्योंकि उस समय कोह श्रावक तो था नहीं. यदि कहोगे श्रावकके घरसे नहीं लिया, तो अब क्यों हठ करते हो ?

अग्रवालकी उत्पत्तिका विचार करते है तो यह बात सिद्ध हो चुकी है कि-राजा अग्रसेनने (१७) दफे पशुमेध यज्ञ कराया. परंतु अठारहमें यज्ञके समय दयाने उसके हृदयमें प्रवेशकर यज्ञ को अपूर्ण रखा. और उसने मांस जह्णका त्याग कर हजिरियों से पृथक् होकर वैश्यधर्म स्वीकार किया. इसी कारणसे उसकी कुल आमनायके ( १७॥ ) साढे सतराह गोत्र हुवे. जिनकी जन्मादमें जितने अग्रवालजैनीहै सब काष्ठासंधीलोहाचार्यके किये हुवे दिवाकरनामा एक पुरुषके संघाती संबंधी है.

(११)-भरतचक्रीको दर्पणघरमें केवलज्ञान हुवा श्वेतांबर मानते है दिगंबर नहीं मानते. हकीकतमें भावचारित्र आनेपर केवलज्ञान उत्पन्न होना आश्चर्य नहीं. मनसे जब मूर्छाजाव न रहा तो वन और घर एक तुल्य है. गोमटसारमें गुणस्थानमार्ग एा अधिकार कहा है वहां कर्मप्रकृति खपानेको जीव द्रव्यचारि

त्रविनाभी गुणश्रेणी चढताहै. केवलज्ञान आदि पानेमें गुणस्थान ही प्रधानकारण है. द्रव्यचारित्रकी नियमता नहीं. होवेभी नहीं भी होवे. ज्ञावचारित्रकी नियमता है, देखो ! बाहुवलीजी स्व्य-चारित्र करके दीक्षित हुवे, तप किया, लेकीन मनःशुद्धिमें कसर रही तबतक केवलज्ञान नहीं हुवा. मनः शुद्धि हुइ तब केवलज्ञान हुवा. सोचो ! तो ज्ञावचारित्रही प्रधान रहा.

( ११ )-दिगंबरने स्थविरकल्प उध्यापन करके-जिनकल्प मार्ग जो जंबुस्वामीके मोक्षहुवे बाद विच्छेद हो गया है उसीकों पकडरखा परंतु दोनोंमें गये, न स्थविरकल्प न जिनकल्प एकजी नहीं बन सका. कहाँमें बने ? जो क्रिया वज्ररिपञ्जनाराचसंहन नवालोंके करनेकी है वह हीनसंहननवाले कैसे कर शके ?-जो शस्त्र शक्तिसँ अधिकबोज उठावे वह गिरेहीगा. जिनकल्पीमुनि नवकल्पी विहार करते थे, नेत्रमें तृण और पैरोंमें कंटक लगेहुवे कों निकालते नहीं थे, हाथी-सिंह-चीत्ता-व्याघ्र-आदिके भयसे पीछा नहीं हटतेथे, रोगहुवे औपथ नहीं खातेथे, छमहिनेतक आहार न मोले तोभी किलामना नहीं पातेथे, जघन्यसँ नवमापूर्वकी तीसरी आचारवस्तुतक सूत्रार्थके पाठी-उत्कृष्टसँ दशपूर्वके पाठी होतेथे, संहनन उनका वज्ररिपञ्जनाराच था-हरहमेश तीसरे प्रहर भीष्माकों उठते थे-नय होते हुवेभी दूसरोंकों नग्न नहीं दि-सते थे, व्याणिपात्रआदि लब्धिके धारक थे. दिगंबरने ऐसेमुनियों की बराबरीकरनेकों श्रादा किया परंतु लाभके बदले हानी उठाइ. न स्थविरकल्प रहें न जिनकल्प हुवे. भट्टारकलोक जिन की उत्पात्ति विक्रमसंवत् ( १३१६ ) में हुयी-कहतैहै हम उस आ

चरणके प्रतिकूल जो दिगंबर मुनियोंने किया है केवलवस्त्रही ग्रहण करते है और सबकृत्य उनमुनियोंके अनुसार ही है. सो क्या ! यह कहना ठीक है ! नहीं नहीं ! हर्गिज नहीं. जिनक स्त्रीमुनि तो दूर रहे स्थविरकल्पीमुनिकी बराबरीजी नहीं करशकते, दिगंबर मुद्रामंडन नामकी किताब-जो दिह्खीनिवासीविशिष्यार्थपिं दित शिवचंद्रजीने बनाइ है जिसके कुल (१५) पृष्ठ है उसके[७] में पृष्ठपर लिखाहैकि-जिनकल्प अनादि सिद्ध है जिनकल्प है सोही दिगंबरहै, इसका उत्तर-प्रथमतो जिनकल्पमुद्रा है उसकों दिगंबर मानना यही भूल है. दूसरे जिनकल्पका जंबुस्वामीके पीठे विच्छेद होगया, जैसेकि-मोक्षजाना विच्छेद हो गया. सो दिगंबरलोग यदि जरतखंममें जिनकल्पका वर्तमान समय सद्भाव समझते है तो उनकों मोक्षकाभी सद्भाव समझकर दिखलाना पड़ेगा. जंबुस्वामीके पीठे-१, मनः पर्यायज्ञान-२, परमावधिज्ञान ( जिसके बाद केवलज्ञान अवश्य पैदा हो, )-३, पुला कलन्धी-४, आहारकलन्धि-५, कृपकश्रेणी-६. उपशमश्रेणी-७ जिनकल्प-८, परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसंपराय-यथारूपात् चारित्र-यह संयमत्रिक-९, केवलज्ञान-और १०, मोक्ष-यह दशवस्तु विच्छेद हुयीहै उसमेंसे ( ८ ) बात शेष रही उनकाजी सद्भाव मानना पड़ेगा. यह कहांकी चतुराई है कि-एक जिनकल्पमुद्रातो सद्भाव और शेष ( ९ ) का अभाव माना जाय. और जो जिन कल्पमुनिकी क्रिया श्वेतांबरशास्त्रमें लिखीहै उसके प्रतिकूल दिगंबरमुद्रा है. हम महाविदेहमेंजी उसी जिनकल्पकों मानते है जो श्वेतांबर शास्त्रानुसार अर्थात् द्वादशांगवाणीके आगमानुसार

यार्त् छद्दशांगवाणीके आगमानुसार इसवर्त्तमान कालमें यहां नहीं रहा. इसमें यह सिद्ध करना कि-दिगंबर महाविदेहमें है सो वृथा है. जिसको हम विद्देह मानते है वह दिगंबरोंके शास्त्रानुसार दिगंबर नहीं. केसरीसिंहके करनेका काम हिरन चाहे मैं कर लू तो कच्ची हों सकताहै? क्या! दशपूर्वका ज्ञान-पाणिपात्रादिलब्ध-और वजरिपन्नाराचमंहनन विनाच्ची जिनकल्प मुनि बन सकते हो? फिर इसी दिगंबरमुद्गमंडनके ( ११ ) पृष्ठपर कल्प सूत्रका पाठ लिखकर यह सिद्ध किया है कि-महावीर (१) महिनेतक वस्त्रधारी रहे फिर नग्न पाणिपात्र हुवे और इसीप्रकार सर्व तीर्थंकर देवदुष्य वस्त्रके दूर होनेपर पाणिपात्र नग्न हुवे. इसमें दिगंबर सिद्ध है, और फिर (१३) पृष्ठपर यहभी लिखाहै कि-अगर कोई तीर्थंकर श्वेतपटधारी हुवाहो तो शास्त्रमें दिखलावो? इसका उत्तर-प्रथमतो तीर्थंकर महाराजकी बराबरी सामान्य मुनिसें नहीं हो सकती. और वे जो नग्न स्वरूपभी थे तो अति शय करके नग्न नहीं दिखते थे. इसमें क्या! सिद्ध हुवा कि-जिसको नग्न रहते हुवेभी दूसरेको उसका नग्नस्वरूप दिखलाइ न देवे ऐसे अतिशयका धारी नग्न रहे तो कुछ हर्ज नहीं. सर्व साधारण मुनिकों नग्न रहना उचित नहीं और यह कोई आवश्यकताकी बात नहीं कि-श्वेतपटही शास्त्रमें लिखाहो, पटनाम वस्त्रका है जिसका लेख विद्यमान है. फिर पंडितजीने अकलंकदेवके येहुवे अष्टका एककाव्य लिखकर नग्न सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है, इसका उत्तर यथार्थरूप हम सुल्लुक्षधर्मदासजीकी तर्क के उत्तरमें लिख चुके है.



[३३]—दिगंबर कहतेहैं मुनिकों नग्न रहना चाहिये वस्त्र पात्रादि उपकरण रखना ठीक नहीं. परिग्रह होताहै,—श्वेतांबर कहतेहैं मुनिकों बस्त्रपात्रादि उपकरण मूर्छा रहित रखनेसें परिग्रह नहीं होता परिग्रह वो है जिसपर मूर्छाभाव हो तत्त्वार्थसूत्र ७)अध्यायमें कहाहैकि-मूर्छा परिग्रहः-इति यदि ज्ञानदर्शन चारित्रिके उपकरण मूर्छाका हेतु बतलाकर न रखना मंजूर है तो शरीरभी मूर्छाका हेतु है न रखना चाहिये. अर्थात् दीक्षा लेतेही त्याग देना चाहिये. संथारा करके अनशनव्रत लेलेना उचित है. क्योंकि-कषाय मूर्छाआदि जितने दोष हैं सब शरीरहीसे होते हैं. क्याकहे? और कौनकों समझावे? जिनकों एकांतपट्ट खेचनाही प्यारा लगता है उनकों कौन समझाशके?—मूर्छा मूर्छा—पुकारतेहैं लेकिन मूर्छाका स्वरूप नहीं जानते. क्या वस्त्रकं ग्रहण करनेहीसें मूर्छा आगयी?—हम पूछते हैं यदि दिगंबर मुनि ऐसेहो त्यागी बनते हैं तो जिज्ञाकों क्यों उठते हैं?—ज्ञानध्यानकों छोड़कर आहारके उपावमें क्यों प्रवर्तना?—तुमारी अपेक्षा तो मूर्छा आयी जभी भिक्षाकों उठे फिर गृहस्थीके घर जब खड़े खड़े आहार करने लगे तो यदि मूर्छा न होती तो कबलकों क्यों उठाया? और मुखमेंही क्यों धरा?—परंतु हकीकतमें दिगंबरोकी समझकाही फेर है. जैसे ध्यान करनेमें जोजन साहायक मानतें हैं वेसे निर्वाण पदके साधनमें वस्त्रादि धर्मोपकरणजी साहायक मानना चाहिये. यदि यहवात नामंजूर है तो फिर भोजनजी त्यागकर अनशन करदेना मुनासब है.

[ दुहा. ]—मूर्छा बाह्यप्रवृत्तिमें-जो तुम कहो कुपस

जोजन तज अनशन भजो-एसे होत जु दख १

ध्यानदीपकों तैल जो-भोजन करो प्रमान,

तो निर्वातपद उपकरण-मानो क्यों न अजान. २

यदि कहा जायकि-आहारकी मर्यादा (३२) कबलकी है हम कहतेहै क्या! वस्त्रकी मर्यादा नहीं है ?-दो चोलपट्टे-दो चादर एक कंबल-एक मुखवासिका-एकरजोहरण-और एक झोली-इत्यादि मर्यादा आगममें देख लो यदि वस्त्रोंमें यूका पतनहोने से अयतना होगी ऐसा माने तो जोजनजीमनेसेभी पेटमें घींघिया दिजीव पैदा होंगे इसमें क्या अयतना न होगी ?-यदि वस्त्रकी रक्षा करनी पमती है इसलिये ममता आयगी कहोगे हम पूछतेहै आहारकीभी गवेषणा करनी पमती है इसमें क्या ममता न आयगी? हकीकतमें आहार और वस्त्रादि उपकरण देह और संयमके साहायकारी है. इनमें एकको मानना एककों न मानना यह एकांत मिथ्या दृष्टिका लक्षण है. यदि यही आग्रह हैकि-मुनिकों धर्मोपकरणजी नहीं रखने तो कहिये ! धाँछोकमंडलु रखना कैसे मंजूर हुवा ?-क्या यह मूर्छाके हेतु नहीं है ?-यदि मूर्छा नहीं है तो शायशाय क्यों लिये फिरते है ?-जब एक स्थानसे दूसरे स्थान जानेकी इच्छा होती है तो चलते समय पाँखो कमंडलु हाथमें क्यों लेंतेहै. यदि बिलकुल त्यागी है तो वहाँही ठोड जाते परंतु हकीकतमें दिगंबरोंकी समझका फर्क है. संयम और देहनिर्वाहके उपकरण मूर्छा रहित रखनेसे व्रतभंग नहीं होता. कुंदकुंदाचार्य रचित मूलाचारमें-ज्ञान उपाधि-संयमउपाधि-और अन्यउपाधिभी-रखना कहाहै. उसका पाठ-

नाणुवाहिं संयमुवाहिं-तउच्चुवाहिं अएणमवि उवाहिंवा,  
पयदं गह्णिलेवो-समट्ठी आदाणं निखेवो. (१)

दिगंबरोंको खयाल करना चाहिये कुंदकुंदाचार्य क्या कह रहे हैं ?—इसी तरह ज्ञानार्णव और समाधितंत्रमें भी उपाधि रखना कहा है. जगवती आराधनासारमें कंबल रखना कहा है. आजकलके दिगंबर पंथित और श्रावक घमंडके मारै छाती फूलाये हुवे कह रहे हैं कि—मुनिकों किंचित्मात्र परिग्रह न रखना चाहिये एन्होसे पृष्ठा जाता है आपके पूर्वाचार्योंने क्या कहा है ?—इसको सच मानते हो या झूठ ?—

यदि-पौंढीकमंमलु और पुस्तक-दया शौच और ज्ञानके उपकरण कहकर रखना मंजूर करतेहो तो-बस्त्रपात्र रजोहरण मुखवासिका आदि जो छद्मशांगवाणीके पुस्तकोंमें ज्ञानदर्शन चरित्रके उपकरण कहे हैं उनको रखना इनकार कैसे कर सकतेहो ?

[ १४ ] दिगंबर कहते हैं मुनिकों एकही घर खड़े खड़े आहारकरना चाहिये—श्वेतांबर कहते हैं घरघर भिक्षाटन करके अपने स्थान आयकर करना चाहिये,—इसबातकेलिये दिगंबरोंको अपना भगवती आराधनासार ग्रंथ देखना चाहिये. जिसमें लिखा है कि—आचार्य-या-संघाधीश-जिस ग्रामनगरमें जाय वहां अपने संघके मुनियोंको—इस सप्रकार विजाजित करेकि-जिससे कोई प्रकारकी व्यग्रता न होने पावे. अर्थात् कितनेक मुनि आहारको जाय-कितनेक आहारके शिवाय दूसरे कार्यमें लगे-और कितनेक उससे जिनकार्यमें लगे—इससे क्या सिद्ध हुवाकि-जो मुनि अन्य कार्यमें लगाये गये हैं उनके वास्तेभी जोजनलानेवाले

मुनिही आहार लावेंगे, जब आहारलाना आवश्यक हुवा तब उनको पात्रकीजी चाहना होगी. जब पात्रा रखना सिद्ध हुवा तो जोलीरखना इनकार कैसे करशकेगें. कितनेक दिगंबर पांडे और श्रावक-श्वेतांबर मुनिकों वस्त्रपात्ररखते देखकर मुहमरोमकर हंसी उमातेहैं और नींदा करते हैं परंतु हकीकतमें कुपात्रहो पात्रकी निंदा करते हैं. सोचो कि-कोई ग्लानमुनि ऐसे अशक्त हो गये हैं जिन-कों चलनेफिरनेकी शक्ति नहीं रही है उनको दूसरामुनि आहार लादेना चाहे तो पात्र बिना किसमें लायगा ?-क्या ! हाथोंमेंही लायकर खीलावेगा ?-अगर कहोगे उनको भूखेही रखना परंतु पात्र ग्रहण नहीं करना. तो यह बात ठीक हुयी. अपने हठकेमारे वैयावृत्यपद बाहो उन्थापन हो गया तो होजाऊ परंतु हठ नहो छोड़ना. इसीका नाम जैनमार्ग है. रजोहरणको बदलकर पीछी धारण कियी- और पात्रको छोड़ कपडलु लिया, सोचो! इससे सार क्या निकला?-जैनका वेष ठोमकर मिथ्यात्वका वेष अंगीकार किया और नंगे हुवे-इसी करतूतपर जिनकल्पी मुनि होगये ?-

[ ३५ ]-दिगंबर कहते हैं मुनिकों दंड रखना न चाहिये. श्वेतांबर कहते हैं रखना चाहिये. इससे आत्म और संयमकी रक्षा होती है. जैसे बिहार करते हुवे मुनि समझो अटवीमें पहुँचे हैं वहाँ कोई नदी आयी. कनारेपर दूसरा कोई मनुष्य नहीं है जिसको पूछलिया जायकि-नदी कितनी उंडी है ? उस जगह दूरसे देखलेवेकि जल इतना उंडा है. जहाँ थोडा जल हो उस राह नदीके पार होना. यदि तर्क किया जायकि-देहरक्षाकरनेमें मुनिकों मूर्छा आइ-तो यह तर्क बुरा है. क्योंकि-इंद्रियोंके विषय

पुष्टिनिमित्त रक्षा नहीं कियी किंतु धर्मकार्यके लिये कियी है. यदि धर्मकार्य निमित्तजी देहरक्षा न करना यही बात मंजूर है तो दीक्षा लेकर आहारनिहारही क्यों करना ?-वस ! उसीवस्तु शरीरकों त्याग देनाही ठीक है. एकांत मिथ्यात्वीयोंका यही तो चिन्ह है जो बातबातमें एकांत पक्ष खेंचना.

( १६ )-दिगंबर कहते हैं मुनिकों रात्रीके समय चतुर्विध आहारका परित्याग है तो जल रखनेमें क्या प्रयोजन ?-न रखना चाहिये. श्वेतांबर कहते हैं चतुर्विध आहारका परित्याग जरूर है छेकीन शौचकेलिये याने मलमुत्रकी शुद्धि अर्थ रखना चाहिये. यदि जल न रखाजाय तो मलमुत्रकी शुद्धि काहेसें करेंगे ?-इसलिये उसमें क्षारक्षेपन करके रखनाही ठीक है.

( १७ )-दिगंबर कहते हैं मुनिकों दिनमें एकही दफे आहार करना चाहिये. श्वेतांबर कहते हैं एकदफे-वा-अनेकदफे जबतक सूर्यअस्त नहो तबतक आहार करनेका मुनिकों अधिकार है. जैसी शक्ति हो उसमाफिक करे. उत्सर्ग और अपवाद इनमें एककों मानना एककों नहीं मानना यह ठीक नहीं.

( १८ ) मुनिकों कोई गृहस्थ मांस बहारा दे तो उसकों खालेवे और फिर गुरुके पास आनकर पायछित लेके शुद्ध हांवें ऐसा कहकर दिगंबरलोग श्वेतांबर संघको नींदा करते हैं. और कहते हैं देखो ! श्वेतांबरोंमें क्या क्या गप्प है ? परंतु हकीकतमें यह दिगंबरोंहीकी गप्प है. बाइस अभक्ष्य श्रावकोंके लिये जी त्याज्य है तो मुनिकेलिये उपादेय कैसे कहेंगे ?-विना प्रमाण कोईबात मुंहसें निकालना बड़ी भूलका काम है. यह तो विचारना

थाकि- श्वेतांबर मुनि आहारकों मकानपर लाकर खाते हैं, गुरु वा दुसरा साधु वहां मौजूद है तो खानेसे पहले क्या ! उनकी सम्मति नहीं ले सकते हैं ? जो पीछेसे दंडप्रायश्चित लेना पड़े ?- यह दिगंबरमुनि तो नहीं ! जो गृहस्थके घर खड़ेहोकर जो मीले सो खावे. जिस मनुष्यकों भोजन अपने मकानपर लानेकी आज्ञा है वह स्वतंत्र है. यदि जानबुझकर भ्रष्ट होना चाहे तो उसका दंडप्रायश्चित नहीं है और अनजाने ऐसाकरे तो स्वतंत्रताके होते हुवे ऐसा कर नहीं सकता.

[ २९ ]-दिगंबर कहते हैं-श्वेतांबर मुनिकों उभोदकका योग न मीले तो मूत्र पीइ लेना कहाहै. इसका उत्तर,-यहबात मिथ्या है. श्वेतांबर मुनियोंमें यह प्रवृत्ति नहीं है. झूठादोष आरोप करना उर्गतिका कारणहै. अगर यहबात सच्च हो तो श्वेतांबर आमनायके कोइभी शास्त्रमें पाठ दिखलाना चाहिये. विना प्रमाण कोइबात कहना लिखना मूर्खोंका काम है. और जो कोइ ऐसा करता है उसकों चांडाल समझना चाहिये.

( ३० )-दिगंबर कहते हैं धर्मकी हानिकरनेवालेकोंजी मुनि ताडना तर्जना शिक्षा सज्जा न देवे-तेजुलेश्याम वगेरा शक्ति होतेभी न चलावे-विराधक होजायगा. श्वेतांबर कहतेहैं धर्मकी हानिकर्त्ताकों मुनि ताडना तर्जना शिक्षा सज्जा देवे-तेजुलेश्याम वगेरा शक्ति हो तो चलावे-विराधक न हो. क्योंकि-इरादा उसका धर्म रक्षा करनेके लिये है. इन्द्रियोंकी विषय पुष्टिकेलिये नहीं सोचो ! कोइ अन्यायीराजा-मंत्री-या-गृहस्थ-देवमंदिर आदि

धर्मस्थानकों तोड़मालता है, मूर्तियों खंभन करता है. मुनि आर्यिकाको तकलीफ देता है. प्राणलेनेसेंजो नहीं डरता. वा-धर्मपुस्तक जलाता है, पानीमें डबोता है, वगेरा धर्म हानिका काम करता है और प्रजा उसकों सजा देनेकों शक्तिमती नहीं है उसवरुत मुनि वहां विद्यमान होते हुवे उनके सामने ऐसा अनथकाम होरहाहो उसकों रोकनेके लिये प्रथम मीष्ट वचनसें उपदेश देवे-फिर कठोरवचनसें ताडना करे-इतनेपरभी न समझे तो नेजुजेइयादि शक्तिमें सजा देवे, थोड़ी सजासें न माने तो फिर जालकर जस्म करडाले, इसका दंडप्रायश्चित कोइजो आग-ममें नहीं लिखा. हकीकतमें धर्मकी हानि करनेवालेकों सजादेना अनुचित नहीं और इसीलिये दंडप्रायश्चितभी नहीं. जब दंड प्रायश्चित नहीं तो वो आराधक है विराधक नहीं. दिगंबरशास्त्रोंमें लिखाहै कि-विष्णुकुमारजी मुनिने-नमुचिकों अन्याय करते हुवे रोकनेके लिये अपनो जंघा चारिणलब्धिसें कामलेकर रात्रिके समय गमन किया. यह कार्य उनका धर्मरक्षानिमित्त होनेसें उत्तम समझा गया.

(३१)-दिगंबर कहतेहैं-श्वेतांबरमुनि जिनमंदिरमें आहारपानी खाते हैं, परंतु यहबात असत्य कहतेहैं. श्वेतांबरके शास्त्रोंमें नहीं लिखाकि-जिनमंदिरमें आहारपानी खाना, न कोइ खाताहै. शूठा कलंक देना समदृष्टिजनोंका काम नहीं. यदि अज्ञानसें कोइ मुनि जिनमंदिरमें आहारआदि खाता हो तो उसको भूल है-छद्मस्थजीवोंकी प्रकृति जुदी जुदी है, एक मनुष्यकी भूलपर सर्व संघकों कलंक देना योग्य नहीं.

( ३२ )—दिगंबरलोक दीवालीके रोजही चौमासा पूर्णहुवा मानबे है, जबपूर्वकालमें उनके नग्नमुनि विद्यमान थे तब वे कार्तिकसुदी एकमकोही विहार करजाते थे. अब जो उनके शिष्य जट्टारकलोक है वे कहतेहैं एक वस्त्र ग्रहणके अतिरिक्त अन्य जितनेकार्य हम करते है पूर्वमुनियोंके कार्य मुजब है, परंतु यह कहना जाननेही योग्य है. आगे चलके इसी बोलमेंउनका कुञ्जवर्नन लिखेंगे. उसमें जो समऊना हां-समऊ जेना. यहां हम कों इतनाही कहना है भट्टारकलोकजी कार्तिकसुदी एकमकों विहार करते है. श्वेतांबर लोक कार्तिक शुक्ल पौर्णमासीके रोज चौमासा पूर्ण होना मानते है और मार्गशीर्षवदी एकमकों विहार करते है. इसमें दोनों आम्नायवाले अपने अपने शास्त्रकी साक्षी देतेहैं. जो द्वादशांगवाणोंके सिद्धांतोंकों उच्छ्वापनकरके नयेग्रंथोंपर श्रद्धा रखते है उनकी कथनोंसे तो अलबते ? द्वादशांगवाणोंके सिद्धांतोंकों माननेवालोंकाही कथन प्रमाणभूत माना जायगा. ( भट्टारकोंका चाल चलन, )—जट्टारकलोक वस्त्र लाल पहनते है. काष्ठासंघ ( दिछोवाले ) पोलेभी-पहेनतेहैं. जाहेरातमें जोजन एकही दफे जीमते हैलेकीन गुप्तपने अपने मकानमें रसोइ बनवाकर दोवाराजी जीमते है परंतु कहनेमें यही कहेंगे हमने एकहीदफे जोजन किया है. ऐसा न कहे तो उनके श्रावकलोक थोडा आदर करके रहे जाय-दिगंबरोंमें यहरीति ज्यादा देखी गयीकि-जो उंची उंची बात प्ररुपे वह अधिक आदर पावे. जो शिथिलाचारकी बात कहे उसका आदर नहो. जोजनके लिये भट्टारकलोक जब शास्त्रवांच चूकतेहैं तब एक श्रावक उनकों



भ्रामरीके लिये प्रार्थना करता है. जट्टारकजी अपनी पीछी उसके हाथ छुवाते है अर्थात् निश्चय हो गयाकि भट्टारकजी आज इसके घर भोजनजीमने जायगे. फिर भट्टारकजीके शायका कोइ श्रावक या-पंडित-उसभ्रामरीवालेके घरजाकर विधि पूर्वक भोजनका तयारी कराता है. रसोइ तयार हो चूकी तो सब प्रकारकी चीजें एक थालमें धरके जट्टारकजीकों दिखाके मंदिरमें चढाता है. बाजे गाजेके साथ फिर भट्टारकजी उसके घर जातेहै. वहां शास्त्रकी पूजा उस श्रावकसे कराके-रसोडेमें बैठ भोजनजीमना शुरू करते है. भोजनमें कबलकी गिनती रखना चाहिये. कोइ ( ३० ) कबल-कोइ ( ३२ )-कोइ ( ४० ) और कोइ ( ४५ ) कबलतक खाते है. रसोइकी चीजमें यदि-केश-मलखी-या साबत अनाजका दाना-आजाय तो भोजन छोड देना पडे. कुत्ता-बिल्ली गधा-जंगी-कसाइ-चांमाल-इनमेंसे किसीका शब्द भट्टारकजीकों सुन पडे तोभी भोजन छोड देना, यह कायदा उनका सबसे अधिक पाबंद है. इसीलिये उनके श्रावकलोक-भट्टारकजीके जीमते समय झालर-घंटा-वा-थाल-बजाते रहते है. याने कोइ प्रकार अंतरा य न होने पावे. पानी कच्चा पीते है. असवारीमें-म्याना-पालखी-और रैलमें-चढते है. गुप्तपने जंगलमें-गड्डीपर-वा-घोडेपरजी-चढते है. धन्य-धान्य-मकानात-वगेरा सर्वप्रकारका परिग्रह सर्व भट्टारक रखते है. नोकर-चाकर-छडी-चवर-वगेरा सबकाम राज्य वर्गी जैसा है. और कहते है कि-हम पूर्वकालके मुनियोंका-अनुकरण करते है. समझ शको तो समझ लो ! यह बात सत्यहै या असत्य ?-शास्त्रानुकूल है वा मनःकल्पित है ?-एकबात लिखनी

और रहगयी जब भट्टारजी भोजन जीमने लगते है तब कोइतो बिल्कुल नग्न होकर जीमते है, कोइ कोइ शर्मके मारे नग्न नही होशकते वे धोती थोड़ीसी ढीली करके कमर खुली करदेते है. सबबकि-उनके नग्न मुनियोंने जो किया सो इनोंनेभी करना.

[ ३३ ]-दिगंबर कहतेहैं-स्त्रीकों पंचमहाव्रत उदय नही आते श्वेतांबर कहते आते है. दिगंबरआम्नायके-गोमट्टसार-आश्रव त्रि भंगी-और चर्चाशतक ग्रंथमें लिखाहै कि-स्त्रीवेद पुरुषवेद-और नपुंसकवेदका उदय नवमें गुणस्थान तक है सोचोकि-यदि स्त्रीमें सर्व विरति चारित्र न होता तो नवमें गुणस्थानतक कैसे पहुच शकती? -महाव्रतविना गुणस्थान कैसे चढी ?-यदि गुणस्थान चढी तो दिगंबरकेही वचनसे स्त्री पंचमहाव्रतकी अधिकारिणी हुइ या नही ?-दिगंबरआम्नायके अष्टपाहुड ग्रंथमें स्त्रीकों पंचमहाव्रत उदयआना लिखा है. उसका पाठ-जइदंसणेण थुद्धा-उत्ताणमगोणसाविसंजुत्ता घोरं चरियचरित्तं इत्यादि. फिर द्रव्य संग्रहकी दृष्टिमें सीताकों पंचमहाव्रत उदय आये लिखे. यदि स्त्रीकों पंचमहाव्रत नही मानना मंजूर है तो कहिये ! चतुर्विधसंघमें साध्वीपद किसमें रहा ? और पंचमहाव्रतविना धर्मवृद्धि कहनेका अधिकार उसकों कैसे हुवा? -यदि कहाजायकि-स्त्रीसें शर्म नही छांभी जाती-बस्त्र रखना पडता है-और बस्त्र रखा तो मूर्छा हुइ-फिर पंचमहाव्रत कहां रहे?-इसका उत्तर,-मूर्छाका स्वरूप प्रथम लिखचूके है. दुर्विदग्धोंको कोइ समझा नही शकता. धर्मोपकरण मूर्छारहित रखनेसे पंचमहाव्रत चले नही जाते. विना पदार्थ यदि मूर्छा है तो वही मूर्छा परिग्रह है पदार्थ है और उसमें मूर्छा नही है तो वह परिग्रह नही, यदि ऐसा न

माने तो संसारमें जितने दरिखी मनुष्य है, कोमी पेसा जिनकों बिल्कुल नहीं मिलता, नंगेही रहते है, क्या ! उनकों त्यागी कहेंगे ?--नहीं ! कहेंगे ! !--क्योंकि-उनके पास मूर्छा ( चाहना ) रूप बड़ा भारी परिग्रह है. इसलिये यहो सिद्ध हुवाकि-जहां मूर्छा नहीं वहां त्यागभाव है.—जहां त्यागभाव है वहां महाव्रत है. इस बातकों कोइ इनकार नहीं कर सकता. दिगंबर लोक वृथा हठ करते है. इसहठकों यदि वे छोड़ देवे तोभी ठोक नहीं. क्योंकि—पंचमहाव्रत जब स्त्रीकों मान ले नो मुक्तिभी मानना पड़े और स्त्रीकों मुक्ति मानलियीतो दिगंबरमतकी जड़ही उठ जाय.

( ३४ )—दिगंबर कहतेहैं-स्त्रीकी उमीभवमें मुक्ति नहीं होती. श्वेतांबर कहते होती है. क्योंकि-मुक्तिका-मार्ग-सम्यक् ज्ञानदर्शन, और चारित्र है.इमपर जो चले वो मुक्ति पाशके, चाहे स्त्रीहो या पुरुष हो. यदि कहाजायकि-उममार्गपर चलनेकी स्त्रोमें शक्ति नहीं है तो यह कहना प्रमाणसें बाधित है. क्या ! ब्रह्मचर्यव्रत जोकि-सब व्रतोमें शिरोमणि है स्त्री नहीं पाल सकती ?-आगमके वचनकी श्रद्धालाना अतिदुष्कर है क्या ! स्त्री नहीं लाशकती ? तनमनघन कों क्या ! धर्मपर नहीं लगाशकतो?-तीर्थकरकी माता-और ब्राह्मी सुंदरी-सीता-दययंती-राजीमती- कुंती—इत्यम्भी-सत्यभामा-द्रोपदी-धारणी-रेवती-सुभद्रा-चंदनबाळा-और मृगावती वगेरा सतीर्थोंकों क्या उत्तम न कहना चाहिये ?-ये मुक्तिसाधनका कामकरे और मुक्ति न पाशके इसमें प्रमाण क्या ? दिगंबरलोक स्त्रीकों अधम ! अधम ! ! कहते तो है लेकीन यह नही विचारतेकि-हम कहने वालेहो अधम है जो जिन-राणीकों उद्ध्यापन करके मनमानी कह

रहेहै. यदि स्त्रीकों मुक्ति नहीं होती तो दिगंबर आम्नायके त्रिलोक सारमें ऐसा क्यों कहाकि-( २० ) नपुंसकवेदी-(४०) स्त्रीवेदी-और [४८] पुरुषवेदी-कुल (१०८) एक समयमें मोक्ष जाय. (उ० पाठ)

बीस नपुंसकवेद्या-दृष्टविवेयाय हुंति चालीसा.

पुंवैया अडयाला समय एगेण सिङ्गांति.

१

इसपर दिगंबर कहते है-स्त्रीवेदीकों जो मुक्ति कही सो द्रव्य स्त्रीवेदीकों नहीं, किंतु भाव स्त्रीवेदीकों समझना. भावस्त्रीवेदी वह होके-जैसे किसी पुरुषकों इच्छा हुयीकि-मैं स्त्रीवत् कामसेवन करू उससमय वह पुरुष-ज्ञावस्त्रीवेदी है. ऐसे पुरुषकों-( अर्थात् भाव स्त्रीकों ) जो मोक्ष होना यही भावस्त्रीवेदीका मोक्ष दिगंबरआम्नायमें कहाहै. इसपर श्वेतांबर पूछते है क्या ! दिगंबरमतमें ऐसे भाववर्तते हुवेभी मोक्ष होजाती है ? कामसेवनके ज्ञाव होतेभी ज्ञावस्त्रीकों मोक्ष कहतेहों तो फिर अव्यस्त्रीकों मोक्ष कहते क्या बाधक था ?-सोचो ! जब पुरुष ऐसा बुराविकल्पमें पडाहै तो धर्मशुद्ध्यान कहां रहा ?-जिसमें केवलज्ञान और मोक्षहो, यदि ऐसेही मानते हो तो समझो ! किसी स्त्रीकों इच्छा हुयी कि-मैं पुरुष वत् कामसेवन करूं,-उससमय वह स्त्री-भावपुरुषवेदी आपके मान ने मुजब है तो उसकोंभी मोक्ष कहना चाहिये. जब ऐसा मानना मंजूर है तो तुमारेही मुखमें स्त्रीकों मोक्ष कहना लाजम हुवा. कितनेक तर्क करतेहै कि-स्त्री अधोगतिमें छठी नरक जाती है सातमी नरक नहीं जाती. जब उत्कृष्ट पापकरनेकी ताकात नहीं तो मोक्षजानेकी ताकात कहांसे आयो ?-इसका उत्तर-यह कोइ व्याप्ति नहींकि-जो सातमी नरक जावे सोही मुक्तिजानेकी ताकात

रस्ते, उत्कृष्ट पापकरके सातमी नरक-और उत्कृष्ट पुन्यकरके अ  
नुत्तरविमान जाना होता है वैसे मुक्तिजानेमें वही न्याय लगाना  
ठीक नहीं. क्योंकि-मुक्तिजानेमें पुन्यपाप दोनों क्षय करनेके न्यारे  
ही अध्यवसाय है. जोकि-शुद्धध्यानरूप है. इसका संबंध देवलोक  
वा-नरक जानेके साथ नहीं, न्यायवानोंको इसमें विनपक्षपात  
सोचना चाहिये.

( ३५ )-दिगंबर कहते हैं-श्वेतांबर आम्नायमें उत्कृष्ट (५००)  
धनुष्यकी अवगाहना वालेको मुक्ति होना कहा. और मरुदेवाजी  
( ५२५ ) धनुष्यकी अवगाहनावालेथे, इनको मुक्तिहोना कैसे  
संभवे ?-उत्तर, -(२००) धनुष्यकी कायावालोंका मुक्ति जाना  
कहा सो बाहुल्यता आश्रित वचन है. कोई सवापांचसे धनुष्यकी  
कायावाला मुक्ति हो जायतो निषेध नहीं. बहोतसेतो पांचसे  
धनुष्यकी कायावालेही गये. लेकिन कोई कोई सवापांचसे धनु  
ष्यके धारकभी गये. इसमें क्या विरोध हुआ ?-नाभिकुलकरसें  
मरुदेवीजो किंचित् न्यून अवगाहनायुत थे. क्यों कि-उत्तमसंस्था  
नवतीक्ष्णी उत्तमसंस्थानवान् पुरुषसें किंचित् न्यून प्रमाणवाली  
होता है. दिगंबरको यदि यह बात नामंजुर हो और मरुदेवीजीका  
शरीर सवापांचसे धनुष्यका मानना होतोभी क्या? जब आगमका  
वचन बाहुल्यता आश्रित है तो फिर विरोधही क्या रहा ?-अल  
बत ! जिनको सौकी मुक्ति सुनतेही नाराजी पैदा होती है उनके  
तो विरोधही है.

( ३६ )-दिगंबर कहते हैं-त्रिषष्टीशलाका पुरुष आहार तो  
करत है लेकिन निहार नही करते. अर्थात् भोजन जीमते है परंतु

मलमूत्र उनकों नही आता. श्वेतांबर कहते है जो आहार करेना मलमूत्र उसकों कैसे न आयमा ?-अगर कहाजायकि-उनके खल पुदगल शरीरमें जल जाते है तो सोचो ! रसपुदगल भी उनके जल जाना चाहिये. जब एसा हुवा तो. भस्मरोग पैदा होनेमें क्या न्युनता रही ?-वृथा तर्क करना मुखोंका काम है. अच्छा ! यह तो बतलाइये !-स्त्री संज्ञोग करते समय उनकों वीर्यस्खलन होता था या नही ?-यदि कहोंगे हांताथा तो फिर तुमारेही बचनसें निहार सिद्ध हुवा. वीर्य खीरना निहारहीका भेद है. यह कोइबात नही जो वीर्य तो निकसे और मूत्र न निकसे. जब मूत्रनिकसना सिद्ध हुवा तो मलभी निकसना युक्तियुक्त है.

( ३७ )-दिगंबर कहतेहै यादवंशी मांस नही खाते थे, श्वेतांबर कहते है जिनोंने श्रावकव्रत लियाथा वे नही खातेथे दूसरे खातेथे. यादवोंपर श्वेतांबरकों क्या द्वेषभाव था ? जिससें वे उनकों मांस भक्षी ठहरावे ! जरतकुमार जिसने कृष्णजीकों मृगसमक्षकर बाण मारा-यदि मांस भक्षी नहीथातो आखेट क्यों करताथा ? और यह निश्चय हैकि-कृष्णजीके पीछे इसी जरतकुमारसें यादवंशका नाम चला है.

[ ३८ ]-तत्त्वार्थसूत्रमें नय [ ७ ] कही-और दिगंबर देवसेना चार्य अपने बनाये नयचक्र ग्रंथमें ( ९. ) नय कहते है, याने द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिककोंभी नय कहतेहै. श्वेतांबर द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिककों नय नही किंतु नयकेअंश याने उपनय कहते है. नैगम-संग्र-व्यवहार-रिजुसूत्र-शब्द-समजिरहू और एवंभूत नय तो ये सातही है, यदिनयके अंशकों नय माने तो प्रमाणके अंश जो-

अवग्रह-इहा-अवाय-धारणा-और अनुमान आदि मतिज्ञानके जेद है उनकोंजी प्रमाण मानना चाहिये. सो तो मानते नहीं और नयके अंशको लेकर नय कहते हैं कितनी भूल !-यदि कहाजाय कि- तत्त्वार्थमें तत्व सात कहे और हैं नव-इसी प्रकार नयजी नव होना चाहिये. परंतु यह बात युक्त नहीं, क्योंकि-विभक्तविभाग न्यारी बात है और कारणजात न्यारी बात है. यदि नयांशकों नय मानना मंजूर है तो अर्पित अनर्पितकोंभी ( जो नयके अंश है ) नय मान लो. फिर नवही क्यों ग्यारह नय कह दो-

( ३९ ) दिगंबर निश्चयनयकों पहले और व्यवहारनयको पीछें कहते हैं. श्वेतांबर व्यवहारनयकों पहले कहते हैं. क्योंकि-प्रथम व्यवहारनयको परिणमन होता है. जबतक आंखोंसे देखा न जाय क्या ! मालूम ?-इस पुस्तकमें क्या लिखा है ?-दिगंबर अपने पक्षकों पुष्टता करनेमें कसर नहीं रखते परंतु श्रुतकी दोड़ कितनी !-निश्चयनय हृदयमें स्थापनकर व्यवहारमें प्रवर्तना यही जैनागमका रहस्य है. यदि व्यवहारकों पीछेंही मानना मंजूर है तो प्रथम गुरुशिष्यभाव क्यों मानना ?-निश्चयनयमें तो अपना आत्माही गुरु है.

( ४० )-दिगंबर कहते हैं-गुणके स्वभाव और विभाव दो पर्याय है. श्वेतांबर कहते हैं गुण-द्रव्यमें भिन्न नहीं फिर उसकों पर्याय कहाँसे ? इकीकतमें द्रव्यके सहजावीपर्यायोंकाही नाम गुण है. इसलिये स्वभाव विभाव दो गुणके पर्याय नहीं किंतु द्रव्यकी परिणति रूप है.

( ४१ )-दिगंबरलोक-हुंदाअवसर्पणी कालसे इतनी बातेंअन

होती हुयी मानते है.(१)-तीर्थकरोंकाजन्म अयोध्यामेंही होना चाहिये और अन्य जगहसें हुवा.(२)-तीर्थकरोंकी मुक्ति सम्पेत शिखर से होना चाहिये कितनेककी अन्यक्षेत्रोंसें हुयी.(३)-तीर्थकरोंके पुत्री होपुत्री नहो-रिषभदेवके घर पुत्री जन्मी.(४)-चक्रवर्तीका मान खंडन नहो-और भरतचक्रीका मान बाहुबलीजीने खंडन किया.(५)-तीर्थकरकों किसी अवस्थामें उपसर्ग न हो पार्श्वनाथजीकों हुवा.(६)-तीर्थकर अवधिज्ञानकों छदमस्थअवस्थामें प्रकाशित करे नहि-रिषभदेवने किया.(७)-वासुदेवका मृत्यु भाइके हाथसें नहो कृष्णजीका मृत्यु जरतकुमारसें हुवा.(८) ब्राह्मणकुलकी उत्पत्ति अन्यकालमेंनही होती-इसकालमें हुइ.(९)-त्रिषष्टीशलाका पुरुष (६३) होने चाहिये-(५८) हुवे.(१०)-नवमेंतीर्थकरसें लगा सोलहमें तीर्थकरतक साततीर्थकरोंके अंतरमें धर्म बिल्कुल विच्छेद होगया-अन्यकालमें नही होता.(११)-रुद्र और नारद अन्यकालमें उत्पन्न नही होते-इसकालमें हुवे.(१२)-(११) कल्की और (२१) अर्द्धकल्की अनागतकालमें होयगें.-यह वर्नन सिद्धांत सार-त्रैलोक्यप्रज्ञप्ति-और भाषाके पार्श्वपुराणसें देखकर लिखाहै,-

श्वेतांबरलोक हुंडाअवसर्पिणीकालदोषसें इतनावाते अनहोतो हुयी मानते है.(१)-उत्कृष्टअवगाहनाके धारक (१०८) एक समयमें मुक्ति न जाय और इसकालमें गये.(२)-सुविधिनाथ और शीतलनाथके अंतरमें धर्म विच्छेद हुवा और असंयतिकी पूजा हुयी.(३)-मल्लिनाथतीर्थकर स्त्री हुवे. धर्मनायक पुरुष प्रधान होने चाहिये.(४)-वासुदेव वासुदेवोंका शंखशब्दसें मीलना हुवा.(५)-युगलीये मरके नरक न जाय और इसकालमें दो युगलीये नरके गये.(६)-तीर्थकर तुच्छकुलमें न आवे-महावीरस्वामी



आये-और उनका गर्भ संचार किया गया. ( ७ )-तीर्थकरोंकी धर्मदेशना निष्फल न जाय और महावीरस्वामीकी प्रथमधर्मदेशना निष्फल गयी. ( ८ )-केवलज्ञान हुवेबाद उपसर्ग न हो और महावीरस्वामीका हुवा. ( ९ )-चंद्रमा सूर्य मूलविमानसे मनुष्य लोकमें आये. ( १० ) चमरेंद्रका उत्पात उर्द्धलोकमें हुवा-यह वर्णन कल्पसूत्रमें लिखा है.-

दोनों अम्नायवाले यह मंजूर रखते हैं ये अनहोतीबाते जो उपर लिखी गयी हैं मुख्य मुख्य हैं. इसके शिवाय और भी केइ एसी अनहोतीबात याने आश्चर्यजनक हुयी हैं जिनका वर्णन बहु-श्रुतज्ञानीयोंमें जानना चाहिये.

दिगंबरलोग-नीचेलिखेहुवे सातसवालोंको चौरासीबोलोंमें गिनकर ज्यादा तकरीरमें लाते हैं, ( ४२ ) जैसेकि-उत्कृष्टअवगाहनाके धारक ( १०८ ) एक समयमें मोक्षकैसे गये ?-( ४३ ) तीर्थकर स्त्री-कैसे हो ? ( ४४ ) युगलीये नरक कैसे गये ?-( ४५ ) तीर्थकरकी धर्मदेशना निष्फल क्यों ? ( ४६ ) तीर्थकरकों उपसर्ग क्यों ? ( ४७ ) चंद्रसूर्य मूलविमानसे कैसे आये ? और ( ४८ ) चमरेंद्रका उर्द्धलोकमें उत्पात कैसे हुवा ?-( इसका जवाब. ) श्वेतांबरलोग द्वादशांगवाणीके अंगशास्त्रोंके अनुसार चलते हैं, उनमें फरमायाकि-हुं-डासर्पणीकालदोषमें ( १० ) दसबाते अनहोती हुइ, उपर लिखे हुवे ( ४२ )-से-लगाकर ( ४८ ) तकके-सातसवाल-उनदस आश्चर्योंमें दाखिलहैं, इसलिये कालदोषके कारण उक्तबातेहुइ कहना चाहिये, तीर्थकरका-स्त्री स्वरूपमें होना युक्तिद्वारा सबुतहोतेहुवेभी अनहोतीबातमें इसलिये कहागयाकि-धर्मकेनायक बहुतकरके पुरुषही होते हैं लेकिन ! इसकालमें एकतीर्थकर-स्त्री-हुवे-यह-एक अचं-

भेकी बातहुइ, बहुधाकरके-पुरुषही-राजा-होते है लेकिन ! कोई समय स्त्रीभी-राज्येश्वरी-होजाय तो-ना-नहीकहसकते,

मल्लिनाथतीर्थकर-स्त्री-हुवे-इसमें प्रमाण यहहैकि-स्त्रीवेद-और तीर्थकर नामकर्मका बंध-एकजीवकों-गुणस्थानोंके आकर्षसे हो-सकताहै, जैसेकोइ-जीव-जब-मिथ्यात्व-या-सास्वादन गुणस्था-नपर मौजूदथा-उमदग्त-स्त्रीवेदका बंध-किया-और-फिरजब उपरकेगुणस्थानपर पहुंचा-तब-तीर्थकरनामकर्मका बंध किया-सौ-चो ! इसमें क्या हर्ज हुवा !-असलपुछोतो कांइहर्जनही, जैसे-श्रे-णिकराजाने मिथ्यात्वगुणस्थानपर थे-जब-नरकगति-बांध लिइ-और जब-चतुर्थगुणस्थानपर पहुंचे-तब-क्षायिकसम्यक्तीहुवे-और तीर्थकरनामकर्म-उपार्जनकिया-वैसे-मल्लिनाथजीके जीवने पहिले स्त्रीवेद-और-पोछेंसे तीर्थकरनामकर्म-बांधाथा-कहिये ! इसमें क्या बाधक आया !-सौचकर जवाब दो-वृथा शंखनादकरना मूर्खोंका कामहै. किसकी ताकात है जो सच्च बातकों-तोड सके ?-

( ४९ )-दिगंबर कहते है वसुदेवजीकों बहत्तरहजार स्त्रीका होना असंभव है. चक्रवर्तीसे अधिकपुन्यप्रताप सिद्ध हुवा, इसपर श्वेतांबर कहते है जैसे बाहुबलीजी बलपराक्रममें भरतचक्रीसे अधिक हुवे इसीप्रकार स्त्रीप्राप्तिके सांभाग्यमें वसुदेवजी अधिक हुवे. इसमें शंसयलाना वृथा है.

( ५० )-दिगंबर कहते है गौतमस्वामीकों स्कंधकपरिव्राज-कके सामने चलाकर जाना बातचीत करना उचित नहीं था. श्वेतांबर कहते है ज्ञानी पुरुष जैसा भाव होना अपने ज्ञानमें देखते है वैसे करते है गौतमस्वामीका इरादा उसकों धर्म प्राप्ति करानेका था. इसलिये कोई दोषकी बात नहीं. महावीर स्वामीकी

आज्ञासे गये थे,—एकांत पक्षकों खेंचते रहना इसीसे तो दिगंबरोंका नाम एकांत मिथ्यादृष्टि कहा गया, सौचोकि—जिसक्षेत्रके रहनेवालेजीवोंका पुन्योदय आता है उस उदयकी आकर्षण शक्तिसे ज्ञानीयोंका उसक्षेत्रमें जाना निमित्त कारण है.

( ५१ )—दिगंबर कहते हैं—द्रौपदीके पांचभर्तार हुवे फिरसती कैमे रहीं?—श्वेतांबर कहते हैं जैमे चक्रवर्ती—बलभद्र वासुदेवआदि पुरुषोंको संकडे हजार स्त्रीयां थी और फिर वे शीलवान् और सतेकरहे इसीप्रकार द्रौपदीभी सती रही पांचोकी साक्षीसे पांच पांडवोंके साथद्रौपदीका विवाह हुवा यह सर्व शास्त्रोंका लेख है. द्रौपदीने छठे पुरुषकी स्नाना न कियो इसलिये सती कही गई. यदि पांचोके स्वरु एककों पतिकरके चारके साथ विषयसेवन करती तो अलबते असती कहसकते. यदि स्वाल किया जायकि—संसारमें अन्य अन्यस्त्रीयोंने एकपतिसे ज्यादा पति क्यों न किये?—इसका उत्तर—द्रौपदीने पूर्वभवमें नियाणा किया थाकि—मेरो तपस्याका फल होतो मुजे अगले जन्ममें पांच भर्तार मिले—सो मिले और पांचके शिवाय छठे पुरुषको उसने भोग्या नही फिर दिगंबरलोक इसको कुसतीका दोष किसलिये लगाते है सो विदित न हुवा?—यदि एक पतिसे ज्यादापति होनेसे लगाते हो तो चक्रवर्ती बलभद्रादिकों एकस्त्रीसे ज्यादास्त्री हुयी उनकोभी दोषित कह दो.

( ५२ )—दिगंबर कहते हैं देवता मनुष्यणीके साथ—और मनुष्य देवांगनाके साथ—काम भोग नही सेवते, श्वेतांबर कहते सेवते है. कामभोग मोहकर्मका भेद है. मोहके उदयसे उंचजाति का पुरुष—चांडालजैसी नीचजातिकी स्त्रीसे—और कभी तिर्बचणीके

शायभी कामसेवन करलेता है. इसी प्रकार देवता-मनुष्यकी शाय-और मनुष्य देवांगनाके शाय यदि अनुकूल हो तो विषय सेवन कर सकते हैं, भरतचक्रीने गंगादेवीके शाय संभोग किया द्वादशांगवाणीके सिद्धांतोंमें लिखा है. दिगंबर इसबातको सुनकर हंसी उड़ाते हैं लेकिन मुखोंकी हांसीसे ज्ञानीयोंके वचन अन्यथा नहीं हो सकते. यदि प्रश्न किया जाय कि-क्या उन्होंने गर्भोत्पत्ति भी होती है ?-इसका उत्तर,—वैक्रियवीर्यसे—उदारिक और उदारिक वीर्यसे—वैक्रिय शरीरमें गर्भोत्पत्ति नहीं होती, परंतु कामविकारकी शांति जरूर होती है.

[५३]—सुलसा श्राविकाके शाय देवताने विषयसेवन किया जिससे उसको [ ३२ ] लड़के एक शाय पैदा हुवे. ऐसा कहकर दिगंबरलोक श्वेतांबरोका उपहास्य करते हैं. परंतु इसमें उनकी समझका फर्क है. सुलसाको रोगादि दोषसे गर्भस्थंभन नहीं होता था, उसने देवताका आराधन किया जब उसदोषके मिटानेको देवताने [ ३२ ] गुटिका दियो. और कहा कि—एकएक गोली खानेसे एकएक गर्भस्थंभन होता रहेगा. सुलसाने भोल्लेपनसे [ ३२ ] गोली एक शाय खाली. दैवयोग [ ३२ ] गर्भस्थित रहे. और बड़ी वेदनाका समय पैदा हुआ. देवताने आनकर कहा तुमने बड़ी भूल किया. जो ऐसा किया. निदान !—प्रसूतिसमय देवने साहाय्य किया जिससे ( ३२ ) पुत्र प्रसूत हुवे. वर्तमानकालमें भी देखते हैं बड़ेवैद्य आपनी चिकित्सा विद्यासे स्त्रीको गर्भस्थंभन हो ऐसा उपाय करते हैं और औषध जड़ीबुटीद्वारा साहाय्यक होते हैं. किसीकिसी स्त्रीको दोदो तीनतीन लड़के एक शाय जन्मते हैं. क्या ! दिगंबरको यह बात पंजूर नहीं ?—उनके गुरुभट्टारक-

पादों--और तरहपंथीयोंके भाइजी--तो इसीव्यवहारसे अपना गुजारा चलाते हैं.

(५४)-महावीरस्वामीकों मातापिता विद्याशालामें पढाने केलिये लगये दिगंबर इस बातकों नही मानते. तर्क करतेहैकि-अवधिज्ञानी होकर पढनेकों कैसे गये ?-इसका उत्तर,-अवधिज्ञानी जरूर थे लेकिन मातापिताके मनोरथकों खंडित कैसे करे ? जैसे नेमनाथ भगवान् जानते थेकि-मेरा विवाह न होगा कुमारअवस्था मेंही संयम उदय आयगा. लेकिन मातापिता भ्रातादिककी प्रेरणासे उनका मनोरथ अखंडित रखनेकेलिये विवाहनेकों गये. और पीछे लोट आये, इसी प्रकार महावीरस्वामी विद्याशालामें गये-और पंडितका संसय निवृत्तन किया,-मातापिताका मनोरथ अखंड रखा-और पीछे लोट आये. दिगंबर नेमनाथको विवाहने केलिये जानातो मानते हैं, और महावीरस्वामीकों पाठशालामें जाना इसपर संसय लातेहै-कहिये ? संसय मिथ्यादृष्टि कौन हुवे ? सोचो ! अवधिज्ञानीने अपनेज्ञानसे यहभी तो देखा होगा कि-मेरा जाना पंडितके घर वास्ते पढनेकेलिये होगा.

(५५)-दिगंबर कहते हैं श्वेतांबरआम्नायमें मानाहै कि-पेहले देवलोकका इंद्र मरकर दूसरे-और दूसरे देवलोकका इंद्र मरकर पहले देवलोकमें इंद्र होवे, इसका उत्तर,-यह बात असत्य है. क्या ! दिगंबरमतमें-अंधेरनगरीबेंबुझराजा-यही न्याय चलता है ?-विना प्रमाण कोई बात कहना बड़ी भूल है.-

(५६) धातकीखंडका कपिलवासुदेव जंबुद्वीपके भरक्षेत्रमें आया-उसकों केवलज्ञान हुवा और फिर आनंदसे-नृत्य किया. इसका उत्तर,-यहभी दिगंबरोंकी इषाका एक नमूना है,--

कोई शास्त्रमें नहीं लिखा.-उन्मत्तोंकों कौन समझावे ?

[ ५७ ]-दिगंबरकहते हैं श्वेतांबर आम्नायमें यह बात मान्य हैकि-कोई श्रावक-वृद्धसाधुकों स्त्रीका योग मीलाकर उनका मन स्थिर करेतो दोष नहीं किंतु पुन्यप्राप्ति हो. इसका उत्तर, यह बात मिथ्या है, स्त्रीसेवन साधुजनोंके लिये बिल्कुल निषेध है ऐसी ऐसी बातोंसेही तो दिगंबरोंकी उत्तम विद्वत्ता झलक रही है. मनमें समझ रहेहैं जो हमकों सुझीसों किसीकों नहीं सुझी. हमारी समझ के अगाड़ी किसीकी समझ ठीक नहीं. द्वादशांगी माननेवाले सभी मुनिमहर्षि अविद्वान् हुवे. नम्रहोकर पीछीकमंडलु पकड़ लीया. बस ! मुनमहाराज बन गये. सोभी कुवेका जल पीछा कुवेमें चला गया. न मुनि रहे न आर्यिका रही, स्थविरकल्पमार्गके नींदक होते द्वादशांगवाणीका नींदक बनना पडा, दूसरोंकी नींदा और अपनी तारीफ शिवाय बात नहीं. स्त्रीकों मुक्ति नहीं केवलीकों आहार नहीं यह दो बातें दिगंबरोंकी परमसमाधि है. दिगंबरोंकी स्त्री रात्री समय-अपने पतिकों नम्र देखे-सवेरे देवदर्शनकों जावे वहां देवमूर्तियों नम्र देखे-और मध्यान्हमें उनके नम्र मुनि भिक्षाकों आवे तो उनकोंभी नम्र देखे-रातदिन पुरुषचिन्ह मेंही उसका ध्यान रहे मुक्ति कहाँमें हो ? अनेकजगह शास्त्रर्थमें लाजबाप होते हुवेभी निर्लज्जोंको लज्जा नहीं आती. रत्नकंबलके लिये गुरुसें लड़ाइ करके तो शिवभूतिमुनिने मत निकाला-आज उसकी औलाद असली जैनसंघकी बराबरी करनेको उमेदवार हुयी है. देखिये ? स्यात् ! !

( ५८ )-दिगंबरकहते हैं-तिविहार उपवासमें जलकों उष्ण बनाकर पीनेसें आरंभ होगा, इसलिये कच्चाजल पीना ठीक है.

श्वेतांबर कहते हैं तिविहारउपवासमें उष्णजल पीना चाहिये, क-  
ञ्चजल पीनेसे उपवास नहीं होता-यदि आरंभहोनेका हेतुबताते  
होतो-कुर्वेसँ जल निकालके-पीनेमें-क्या ! आरंभ नहीं होता ?-  
आरंभका त्यागतो फिरभी न बना. और सचित्तजलपीनेसँ उप-  
वास नहीं बना. वृथा भूखे मरे.

( ५९ )-दिगंबर कहते हैं व्रतधारोमनुष्य व्रतमें शिथिल हो  
जाय और वो खानेको मांगेतोभी देना नही. व्रततोडानेका दोष  
लगता है. श्वेतांबर कहते हैं यह बात ठीक नहीं. जब सर्वप्रकार  
की धैर्यतासँ मनुष्य रहित होचूका-अन्नजल मागता है तो उसको  
एक दो दफे व्रतकी यादी दिलाना. यदि बिलकुल शिथिल है  
तो अनुकंपासे अन्नजल देना. इसमें व्रत तोडानेका दोष नहीं  
लगता. समाधिधैर्यताके अभावसँ उसका व्रतही रहा नहीं तो  
फिर तोडानेका दोष कहासँ आया ?-अन्न ! अन्न ! जल ! जल !  
पुकारता है और तुमको अनुकंपा न आयी तो धर्म कहा रहा ?-  
यह जिनाज्ञा नहिंकि-अनुकंपासँभी रहित होजाना. उसके परि-  
णामही पलट गये तो क्या उसका व्रत तुम रख सकते हो ?-परंतु  
सच्चे ! एकांतमिथ्यादृष्टियोंको समझाना मुश्किल है,

( ६० )-दिगंबर कहते हैं श्वेतांबर आम्नायमें शास्त्रको जड  
मानते हैं. इनका अविनय होजाय तो दोष नहीं. इसका उत्तर,-  
श्वेतांबरलोक शास्त्रको उत्तमप्रकारसँ आदरकरते हैं. सोनाचांदी  
इनकेपर चढाते हैं. उंचे आसनपर रखते हैं. तुमने क्योंकर जाना  
जड मानते हैं, क्या ! मुद्रितकराना-देशविदेशमें जहां जहां धर्मवृद्धि  
हो वहां भोजना जिससँ हरकोई सच्चैतत्वको चीने, इसबातको दे-

खकर जड़ माननेका दोषारोप किया ?-पक्षीकी तरह दिगंबरलोक उभास्वातिकृततत्त्वार्थ मंत्रकों और भक्तामर कल्याण मंदिरआदि स्तोत्रको कंठ याद करलेते है और चतुर्दशी आदिक पर्वके दिन इनका पाठ करजानाही परमधर्म समझते है, सोचोकि-यह जड़ता नही तो और क्या है ?-प्रथमतो बिना व्याकरण विद्याके शुद्ध उच्चारण नही होशकता. दूसरे जबतक श्रोतागण वक्ताके कथन को यथार्थ न समझ ले-तो उसका संपूर्णश्रम व्यर्थ है. यदि कोई भेंसके आगे भेरवीरागिनी गावे तो उसको क्या लाभ ?-इसीप्रकार जानना चाहियेकि--शास्त्रको जड़ कहना श्वेतांबरका हुवा-या-दिगंबरका ?-

( ६१ )—श्वेतांबर नमस्कार मंत्रको ( ९ ) पद और [ ६७ ] अक्षरमय मानते है. दिगंबर ( ५ ) पद [ ३५ ] अक्षरमय मानते है. पीछले ( ४ ) पद नही मानते.-इसका उत्तर,-असंलभ [ ४ ] पद कम करनेसे अधूरा मंत्र हुवा. यदि कहा जायकि-संक्षेपसे हम पढ़ते है तो संक्षेपसे उंकारमेंभी-पांचपद आजाते है उसीको पढ़लो. पांचपदपढ़नेकी तकलीफ क्यों उठानी ?-यदि तर्क कियाजायकि पीछले [ ४ ] पद अनुष्टुप्छंदमय है इसलिये ( ३२ ) अक्षर होने चाहिये और है ( ३३ ) इमलिये छंदोभंग हुवा अप्रामाण्य है, इसका उत्तर-यह कोशवात नही मंत्रका कवच ( ६० ) कोठेमें है. यदि एक अक्षर कम होतो कवचका ( १ ) कोठा खाली रहे, फिर मंत्रका विधान खंडित हुवा. खंडित मंत्र पढ़ना या खंडित विधान करना शास्त्राज्ञासे विरुद्धहै. दिगंबरलोकभी देवपूजामें इस मंत्रको चालिकासहित उच्चारण करते है, और रिषिमंमलस्तोत्रभी चालि-



का सहित पाठ है. द्वेषभावकर हठवाद करना दूसरी बात है.

[ ६२ ] दिगंबर कहते हैं श्वेतांबरोंके शास्त्र सब नवीन और पूर्वापर, विरोधसे भरे हुए हैं. इसका उत्तर.-श्वेतांबरके शास्त्र नवीन नहीं. जो द्वादशांगवाणीके अंग शास्त्र हैं उनको नवीन कहना उन्मत्तताका कारण है. दिगंबरके शास्त्र सब-शिवभूतिमुनिके पीछे बनेहुए हैं. द्वादशांग वाणीके अंगशास्त्रको मानते नहीं. सोचो ! अब कौनके शास्त्र नवीन ठहरे ? श्वेतांबर शास्त्रोंमें पूर्वापर विरोध बताना दिगंबरोंकी इर्षा शिषाय दूसरा कोई कारण नहीं, पूर्व पाठी मुनियोंका अभाव हुआ-बारहवर्षोंकालमें भूखकेमारे कंठाग्र ज्ञानकोभी मुनिजनो चितार न शके जिसमेंजी बहोतकुछ न्यूनता हो गयी-बाद एकपूर्वपाठी श्रीदेवद्विगणीकृमाश्रमणजी जितना ज्ञान उनको याद था सब आचार्योंकी संमतिसे लिखगये कोई बात पाठांतरथी सो पाठांतर कहकर लिखी, मतांतरथी सो मतांतर कहकर लिखी.-इनवातोंको विना विचारे यदि कोई कहे कि-इनके शास्त्रोंमें विरोध है उसे कोई नहीं समझा सकता. दिगंबरोंके शास्त्रोंमें पूर्वापर विरोधकी दोचार बातें यहां लिखते हैं. सीता चरितमें लिखा है कि-सीता जनकराजाकी बेटी थी. जनक राजाकी स्त्रीका नाम विदेहा था. उसकी कुक्षीसे सीता और जामंडल दोनों एकसाथ जन्मे, छोटा पद्म पुराणमें लिखा है कि-सीता रावणकी बेटी थी छोटे बड़े दोनों पद्मपुराणमें रामचंद्रजी का मारीचहिरणको आखेट रूप मारनेजाना नहीं लिखा. किंतु उत्तरपुराणमें लिखा है मारीचविद्याधर स्वर्ण मय हिरण बनकर आया और रामचंद्रजी धनुष्यबाण लेकर उसको मारने गये,-

छोटा हरिवंश पुराणमें नेमनाथजीका गर्भ तथा जन्मकल्याणक शौरीपुरमें लिखा और बड़े हरिवंश पुराणमें दोनों कल्याणक शारिकामें हुये लिखे. शारिकामें शौरीपुर नामका एक महोलाबताया.

(६३)-चोतीस अतिशय दिगंबरलोक इस मुजब मानतेहै.-

(१०)-जन्मके (१०)-केवलज्ञान हुवे बाद-और (१४)-देवकृत. श्वेतांबरलोक चोतीस अतिशय इसप्रकार मानते है, (४)जन्मके (११)-केवलज्ञान हुवेके और [१५]-देवकृत.

(६४)-मल्लिनाथ और नेमनाथकों श्वेतांबरलोक बालभ्रमर-चारी मानते है याने इनोंका विवाह नही हुवा. दिगंबर कहते है बामुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमनाथ-पार्श्वनाथ-और महावीर-ये (५) तीर्थकर बालभ्रमरचारी रहे. विवाह इनोंका नही हुवा.

(६५)-छद्मस्थ अवस्थामें महावीर स्वामीका विहार अनार्य देशमें हुवा दिगंबर नही मानते. श्वेतांबर मानते है.

(६६)-रिषभदेवस्वामीकों [१००] पुत्र-और (३) पुत्री-श्वेतांबरलोक मानते है दिगंबरलोक-(१०१)पुत्र-और [३]पुत्री मानते है.

(६७)-तीर्थकर भगवान् गृहस्थ अवस्थामें दीक्षासे पहले एक वर्षतक सावत्सरीयदान देते है इसवातकों दिगंबर नही मानते.

(६८)-रिषभदेव जगवानने चारमुष्टीलोक किया दिगंबरलोक नही मानते. पंचमुष्टि किया मानते है.

(६९)-तीर्थकरकी माता-श्वेतांबरलोक कहतेहै (१४) स्वप्न देखे, दिगंबर कहते है (१६)देखे.

(७०)-दिगंबर-(१६)-देवलोक मानते है श्वेतांबर-१३-मानते है.

(७१)—देवलोकमें श्वेतांबरलोक-(६३)-प्रतर मानते है, दिगंबर (६३)-मानते है.

( ७२ )-श्वेतांबर-[ ५६ ]-अंतर्द्वीप मानते है, दिगंबर-[६६] मानते है.

(७३)—श्वेतांबर(६४)—इंद्र मानते है दिगंबर (१००) मानते है.

( ७४ )-श्वेतांबर कहते है तीर्थंकरके जन्मसमय शक्रेंद्रपाल-कविमानमें बैठकर आता है, दिगंबर कहतेहै नही !-ऐरावण हस्तीपर बैठकर आता है.

( ७५ )-श्वेतांबर चक्रवर्त्तिको [ ६४००० ] स्त्री मानते है, दिगंबर [ ६६००० ] मानते है,

( ७६ )-श्वेतांबर-पांचो पांडवोंको मुक्ति गये कहते है. दिगंबर कहते है कोइ मुक्ति गये कोइ नहीभी गये.

( ७७ )-शास्वते चैत्यालयोंकी गिनतीमें दोनोंकी संख्या कयीबेंसी है.

( ७८ )-दिगंबर चंडरुद्राचार्यके शिष्वकों विहार करते हुवे केवलज्ञान उत्पन्न हुवा नही मानते. कहते है दोघडी एक जगह स्थिर बैठे विना केवलज्ञान नही होता.

( ७९ )-महावीरस्वामीने दारिद्र्यी ब्राह्मणको अनुकंपासें अथ पना देवछण्य वस्त्र दिया दिगंबर नही मानते कहते है दीक्षा लिये पीछे वस्त्रही नही रखना तो देना किसकों?-

( ८० )-महावीरस्वामीकों केवलीअवस्थामें रोग हुवा दिगंबर नही मानते.-श्वेतांबर मानते है, तत्त्वार्थसूत्रमें-एकादश-जिने-(११) परिसह केवलीकों क्यों कहा? उसमें रोग परिसहजी कहा

है. रोग होना अशाता वेदनीकर्मके उदयसे है, केवलीकों अशाता वेदनीकर्मका बिल्कुल अभाव नहीं इसलिये केवलीकों रोग होना असंभव नहीं कह सकते किंतु संभव है.

(८१)-कालिकाचार्यने साध्वीजीका शीलव्रत खंडन करने वाले गर्दजिह्वा राजाके साथ संग्राम किया इस बातको दिगंबर नहीं मानते. कहते हैं साधुहोकर संग्राम करना ?-परंतु इतना नहीं सोचबे धर्मरक्षाकेलिये संग्राम करनेसे महाव्रत नहीं जाता धर्मरक्षा केलिये छष्ट राजेको या हरकिसी छष्टको सजा देनेसे-शक्ति होतो तेजुलेश्या वगेरासे जस्मकरडालनेसे भी महाव्रत नहीं जाते. अल बते! पांच इंद्रियके विषयनिमित्त कोई कार्य किया जाय उसमें दोष है यदि इसबातको नहीं मानते होतो-विष्णुकुमारजीने नमुचिको ताडनादियी क्यों मानते हो ?-

(८२)-दिगंबर भरतक्षेत्रके ७ खंडोंमेंसे बीचला एकखंड जो दखनदिशाको है उसको आर्य मानते हैं. श्वेतांबर उसमेंके साठे पच्चीस आर्य देश मानते हैं. जहाँकि-तीर्थंकर-चक्रवर्ति-और-वासु-देवका जन्म हुवा है.

(८३)-सतराहप्रकारी-वीशप्रकारी-वगेरा पूजा-दिगंबर नहीं मानते. केवल अष्टप्रकारी पूजाही मानते हैं.

(८४)-दिगंबर कहते हैं-दीक्षालेकर श्वेतांबरमुनि कान वीं धाते हैं. व्याख्यानवाचते समय उसमें मुहपत्ति बांधकर व्याख्या करते हैं. कोइकोइ सदा बांधरखते हैं. इसका उचर, -जैनआगममें सदा-या-व्याख्यानवाचते समय-मुखपर मुखबस्त्रिका बांधना नही कहा. हुंठियेपंथके साधुको जोकि-जैन नहीं और जैन कहलाया चाहते

है देखकर दिगंबरने यह तर्क किया हो तो श्वेतांबरसंघकों क्या ? जैसे दिगंबर जैनभास वैसे दुंदिये जैनजास-जैसे-दिगंबरने छादशा गवाणीके सिद्धांतोंको उठापन किये-पीछो कमंडलुलेकर अन्य लिंग धारा वैसे दुंदियापंथीयोंने जिनप्रतिमा उठापन किया-और मुखपर मुखवस्त्रिका बांधकर अन्यालिंग धारा. टीका-जाप्य-निर्युक्त चूर्णि-अवचूरकों ढोडकर मनमाना अर्थकरना शुरूकिया और जाहेरातमें दयाधर्मीका चांद छेनाचाहा परंतु झूठ कहांतक चले !-अंतमें सवेरके सितारेकी तरह तेजरहित होनापडा. व्याख्यानवाच तेसमयभी मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना जैनागममें नहीं कहा, बल्कि-यह कहाहै कि-व्याख्यानवाचनेवाला साधु अपने दांतोंको साफ रखे-सभामें अनेक प्रकारके श्रोते अकसर आतेहै, दांतोंको मखीन देखकर कहेंगे बड़े मूर्ख है ! इनका धर्मजी मूर्खतालिये है जो दांतोंकोभी साफ नहीं रखते !! धर्मभी साफ नहीं होगा !!!-इस लिये दांत साफ रखना कहा. यदि मुखवस्त्रिका बांधकर व्याख्यान वाचना जैनआगमकों स्वीकार होता तो दांतकों कौन देखता !-जिसकेलिये साफ रखना कहा गया.-नम्रमुनि जब उपदेश देते होंगे तब क्या हाल होता होगा ? अनुमान तो यही होता है कि-सबलोक उनके पुरुषचिन्हपर दृष्टिदेकर उपहास्य करते होंगे. फिर उपदेशमें कौन ध्यान देता होगा ?

( ८४ ) बोलोंका वर्णन पुरा हुआ. कितनेक बोल व्यर्थ वा दानुवादके देखे उनको ठोकर जो शास्त्रार्थ करनेके योग्य थे केवल उनकेपरही समालोचना किया. यूँतो पेंडपेंडपर विरोध है. कहांतक और कितना लिखें ?

[ वीशपंथी और तेरहपंथीयोंकी क्रियाका तफावत ].

( वीशपंथीलोक )-जिनमंदिरमें क्षेत्रपाल देव-देवी-बगेराकी स्थापना करते है.

( वी-पं- )-जिनप्रतिमापर पंचा मृतसँ कलशामिषेक करतेहै.

( वी-पं- )-पुष्पमाला छूटेफुल प्रतिमापर चढ़ाते है.

( वी-पं- )-सांजकों मंदिरमें आरती करते है.

( वी-पं- )-हरैफल पुजनमें चढ़ाते है.

( वी-पं- )-चवरी गायके बालका चवर उपयोगमें लाते है.

( वी-पं- )-मंदिरमें जब बड़ी पूजा बगेरा विधान होताहै जवारा आरोपण शकली करण-बगेरा करते है.

( वी-पं- )-गुरुओंके चरणका धूम मानते है-जैसे-नेमिचंद्राचार्यके, बगेरा.

( वी-पं- )-प्रतिष्ठाबगेरामें नवग्रह पूजन करते है.

तेरहपंथी लोक नहीं करते.

तेरहपंथी नहीं करते.

तेरहपंथी नहीं चढ़ाते.

तेरहपंथी नहीं करते. किंतु केवल पाठमात्र उच्चारण करलेतेहै तेरहपंथी नहीं चढ़ाते.

तेरहपंथी उसजगह रेशम-या-गोटेके-चवर उपयोगमें लातेहै तेरहपंथी नहीं करते है.

तेरहपंथी नहीं मानते.

तेरहपंथी नहीं करते.

(बी-पं-)- व्रतके ग्रहण और स माप्तिमें गुरुकी पीछी-वा-माला रूप—गुरुस्थापनाकों हाथमें लेकर नमस्कार करते है.

( बी-पं-)-निर्गन्धगुरुकोंभी गुरु मानते है और सग्रन्थ अर्थात् परिग्रहधारी--भट्टारक--और उनके शिष्य पांडेकोंभी गुरु मानते है.

तेरहपंथी नही करते.

तेरहपंथी- भट्टारक-और पांडे कों गुरु नही मानते. लेकीन इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाकों मा नते है. क्यों ? जब उनको गुरुही नही माना तो उनकी प्रतिष्ठा कैसे मानी गयी !- और बीशपंथी जब परिग्रह धारी भट्टारक पांडे आदिकों भी गुरुमानते है तो उनके शास्त्रकी यहजो प्रतिज्ञायोकि निर्ग्रन्थकोंही गुरु मानना वह कहाँ रही !-

इकीकतमें दोनोंकी भूल है. जब द्वादशांगवाणीके सिद्धांतोंको उध्यापन किये-और विच्छेद होये हुवे जिनकल्पकों स्थापन किया-द्रव्य क्षेत्र काल भावके परिवर्तनकों सोचा नही-इसी सबबसे-पदपदपर विरोध हुवा.

बीशपंथी कहते है जिनमंदिरमें विवादकर तेरहपंथीयोने नवीन पंथ निकाला,-गुरुओंको बिल्कुल उध्यापन करदिया,-देवपूजा पुरानी छोडकर भाषाछंदमय मनोमति बनायी,-अष्ट

प्रकारी पुजामें पुष्प, फल, दीप, पंचामृत, सब बदल दिया, और-  
खोपरेकी गिरिकोंही नैवेद्य और दीपक बगेरामें प्रधान कर दिया-  
(क्षेत्रपाल देवीदेवताकों जढामूलसे उच्चापन करदिये—बहोत क्या  
कहे ! जैसे श्वेतांबरमेंसे विना गुरुके मुंडे टुंढिये पैदा हुवेवैसे दि-  
गंबरमें तेरापंथी पैदा हुवे.

( दोहा. )—श्वेतांबरके घातकी—प्रकट भयाछे टुंढया.

वीसपंथमें तेरापंथी विना गुरुका मुंढया. (१)

( सबैया. )

नाममात्र तेरापंथ चाले न सुपंथपंथ कहा जयो ग्रंथनकी करतेहै पठापठी,  
तलकी न सुझे काहु बलज्ञानी बने फिरे कहे हमारे देवगुरु धर्मकी घटाघटी,  
रामा धन मोहके विलासनमें मग्न रहै कुटिल कुबाते करे धर्मसे हठाहठी  
देवधर्मपूजाहुमे बलके स्वभाव धरे देखो भाइ जहांतहां करतेहै लटालठी.

[ अथ-रागनी होरी. ]-

कहा भयो जैनी कहायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, -(एटैर.)-

धरके कपटकी गठ्ढी शीरपें-तेरापंथ कहायो,

कर विवाद जिनमंदिर माहे-पापबंध उपजायो,

कहे हम धर्म बढायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, १

छहु रुतके फलफूल गुरुने-जिन आगममें गायो,

तामें दोष बतावेरे भाई !-धर्म नजर नही आयो,

कहां ? तेरो ज्ञान नसायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, २

पद्मावती क्षेत्रपाल तिनोंकों-रक्षाकार बतायो,

यह तो रक्षक जिनशासनके-ताहे उच्छेद करायो,

तैं परिवार बतायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, ३,



सात तरहके गुरुजन भाखें-भेदभेद कर गायो,  
 जैसेकों तेसा लख भाई !-यह सतगुरु फरमायो,  
 तेरे हिरदे न समायो-जिनमत तेने अजहु न पायो. ४,  
 इतिपदं.

तेरहपंथी कहतेहैं-वीशपंथीयोंने नये ग्रंथबनाकर जिनमुद्राकों  
 अविधिसे पूजाया-रागीदेव स्थापनकर हिंसामें धर्म बताया-दीन  
 डुर्बलबुभुक्षित कुलका पुत्र मॉल लेकर उसका नाम पंडित रखा-  
 और नग्रवेशकों भ्रष्ट कर दिया-यह सब हुंदाअवसर्पिणीकालका  
 दोष है-ऐसा कहकर निम्नलिखित लावणी गाते हैं.

हुंदासर्पणीकालदोषतें-जिनमतमें पाखंड भये,  
 तिनकी अब कुछ कहूं हकीकत-सुनकर भवी प्रतिबोध थये, १  
 दीनडुर्बलका पुत्र मॉल ले-ताका पंडित नाम धरा,  
 फिर ताकों जिनदीक्षा देकर-नग्रवेश तें भ्रष्ट करा, २  
 शालडसाला ओढ पालखी बैठ-बहोत अभिमान भरा,  
 पंचपापमें मग्न होय शठ-श्रावकजनपर हुकम करा, ३  
 (अंद.)-तिनें कल्पित ग्रंथ बनाये-जिनमुद्रा अविध पूजाये,  
 बहुरागी देव थपाये-हिंसामें धर्म बताये, (१)-  
 भोरेजन बहकाय बाचकर-डुर्गतिकों तिन संगलिये,  
 अनंतानुबंधिमिथ्याती-धरकर ईतर निगोद गये, ४.  
 हुंदासर्पणीकालदोषतें-जिनमतमें पाखंड भये,  
 तिनकी अब कुछ कहूं हकीकत-सुनकर भवी प्रतिबोध भये

यदिकहाजायकि-तेरहपंथीयोने इसी लावणीमें श्वेतांबरकों भी तो पाखंडी कहेहैं.

( इसका उत्तर- )—मित्रवर ! कुछ हर्ज नहीं. तेरहपंथी-बी शपंथी-या-अन्यपंथी-कोइ हो ! किसीके कहनेसें कोइ बुराजला नहीं होशकता. अलबते ! युक्तिप्रमाणद्वारा जो शरूश झूठा हो जाय वही झूठा है. मोचोकि-जब दिगंबरके शास्त्रोंमें-जगहजगहपर श्वेतांबरका खंडन लिखा है. और श्वेतांबरके मूलसिद्धान्तोंमें दिगंबरका नामतक नहीं, कहिये ! फिर क्या सिद्ध हुवा :-बस ! यही सिद्ध हुवा कि-श्वेतांबरशास्त्रसें दिगंबरके शास्त्र पीछे बने. क्योंकि-पहलेवालोंका खंडन पीछले करते है. पिताके विवाहका तमाशा पुत्र नहीं देख सकता. इतनाही लिखना समझदारोंकेलि ये बढात है,—

( श्वेतांबर दिगंबरकी निन्नताका विषय समाप्त. )—

[ मुल्ताननिवासी दिगंबर श्रावकोंके (१६) प्रश्नोंका उत्तर. ]—

(१)—प्रश्न-केवली जगवानकों आहार कौनसा है ?-श्वेतांबर कहतेहैं कवलाहार है. इच्छा रहित है ? वा सहित है ?-इच्छारहित है ?-इच्छारहित है कहोगे बने नही.

( उत्तर. )—शास्त्रके लेखपर जोमनुष्य कुतर्क करते है वे ज्ञानप्राप्तिके अधिकारी नहीं. सोचो ! एक मनुष्यकी अभिलाषा उग्रपौनेकी है. और पुछता है इध क्योंकर उत्पन्न होता है ?-

किसीने उत्तर दिया गौ महिषी और छालीआदिसें उत्पन्न होता है, तब डुग्धाभिलाषी पुरुषकों यह प्रश्न करनाकि-इन तीन प्रकारके पशुओंमें किनका डुध उत्तम है ? यहतो सार्थक है, परंतु यदि वह इसप्रश्नकों छोड़कर ऐसा कुतर्क करेकि-गौ तो श्वेत होनेसे उसका डुध श्वेत होना यथार्थ है लेकिन माहिषी-छाली-जो श्याम होतीहै उनका डुध श्वेत क्यों ?-ऐसा कुतर्क करनेसे शंसयमिध्यात्वी होता है. सूर्य विना इच्छा प्रकाश करता है और उसके प्रकाशमें आर्द्रवस्तु शुष्क हो जाती है, संपूर्णसंसारकों प्रकाश लाभकारी होताहै लेकिन उलुका नहीं होता. इस कहनेसे क्या ! सिद्ध हुवा कि-केवली जबतक शरीरयुक्त रहें तबतक उस शरीरका स्वभाव स्वाज्ञाविकर्म्म आहार करनेका है. उनकों इच्छा होना या न होना इसके सिद्ध करनेमें केवल कुतर्क है, जो शास्त्रसे विमुख है, देखो ! विहारकरना-समवसरणमें आसनपर बैठना-धर्मोपदेश देना-इत्यादि सभी हांतेहै. जो इनकों इच्छासे कहेंगे तो संभवे नहीं, यहां कोई तर्क करेकि-जिन जीवोंका पुन्योदय होकर तीर्थंकर या केवली महाराजका दर्शनलाभ होनेवाला है उनकी पुन्यप्रकृति ऐसा कराती है तो यह उत्तर होशकताहै कि-जो वस्तु आहारमें दीयी जावेगी वोभी देनेवालेकी ( याने ) दानीकी पुन्यप्रकृतिका फल है, विशेष देखनाहोतों चोरासीबोलों मेंसे (१०)-मा बोल देखो.

(१)-प्रश्न,—सूत्र किसके रचे हुवे है ? ऊनकी श्लोक संख्या कम क्यों मिलती है, ?-

( उत्तर, )—सूत्र गणधरआदिकोंके रचे हुवे है. बारावर्षी

मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके [१६] प्रश्नोका उत्तर. १७७

कालदोष करके बहुधा विच्छेद होगये. इसलिये श्लोकसंख्या कम मिलती है.

(३)-प्रश्न-अन्यालिंगी-गृहस्थ-और चांडालादिकों को मोक्ष कहेहैं सो किस तरह ?—

( उत्तर )-दिगंबरमतके पदमपुराणमें लिखा है कि-राजा सोमदत्त-नित्य प्रत्ये एक बालकका मांस खाया करता था, यह काम चांडालोंका है, परंतु अंत्यसमय दीक्षालेकर मोक्ष गया. तथा अन्यालिंगीभी अनेक कथाओंसे मोक्ष गये सिद्ध होचूकेहैं. जिसको अंतकृतकेबलो कहेहैं. पुन्याश्रव-कथाकोश-और-आराधनासारआदिकमें-अनेक कथाएँ भरी हैं. जिनमें पूर्वोक्त वचनकी सिद्धि होतीहै. विशेष तर्क वितर्क देखना हो तो पूर्वोक्त श्वेतांबर दिगंबरकी भिन्नताका विषयमें-(१८)-(१९)मा-बोल देखो.

(४) प्रश्न-केवलीको उपसर्ग कैसे हो ?-

( उत्तर. )-केवलियोंको उपसर्ग न होना चाहिये. परंतु हुंमा अवसर्षणी कालदोषसे अनहोतीबात हुयी है जो दश आश्चर्यमें गिनी गयी है.

(५) प्रश्न-मल्लिकुवरीको मल्लिनाथ कहते हैं.

( उत्तर. )-यह यथार्थ है. समाधान इसका जहां स्त्रीको मोक्ष सिद्ध कियाहै वहांसे जानो अर्थात्-(३४)-और-(४१) में-बोलके विस्तारमें देखो.

(६)-प्रश्न-वर्द्धमानस्वामी देवानंदाब्राह्मणीकी कुक्षीमें रहे सो गर्जकल्याणक कहाँ हुवा ?-

( उत्तर. )-पंचकल्याणक तीर्थकर महाराजके होतेहैं सो व

१७८ मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके [१६] प्रश्नोका उत्तर.

ईमान तोर्थकर जब देवानंदाब्राह्मणीकी कुक्षीमें गर्जपने आये तब वहांही गर्जकल्याणक हुवा, और जहां जन्में वहां जन्मकल्याण क हुवा, फिर-दीक्षा-ज्ञान-और-निर्वाण-ये ( ३ ) कल्याण और हुवे, एसा जानना.

(७)-प्रश्न-युगलियाकों श्वेतांबर नरकगति कहते है. सिद्धांतो देवगतिसे दूसरी नही कही.

( उत्तर. )-एक युगलयुगलनीकी कारणवशात नरकगति हुयो सिद्धांतमें लिखाहै. जिसमें हरिवंशकी उत्पत्ति हुयी. सब यु गलीयोंके लिये यह बात नही, हुंडाअवसर्पणीकाल दोषमें यह एक अनहोती बात हुयी है. इसका क्या कहा जाय ?-जैसे कोइ मैलेमें हजार आदमी चले जारहे है-उसमें एक पुरुष काणा भी चला जारहाहै. इनकों देखकर सब सही कहेगेंकि-हजारो आ दमी मुजाके जारहेहै. एक काणेकी अलग गिनती कोइ नही क रता, बस ! इसीतरह एक युगलयुगलनोके नरक जानेंसे सब नर कगामी नही हो सकते.

(८)-प्रश्न-प्रतिमाका स्वरूप वीतराग कहा सराग करके क्यों पूजते हो ?—

( उत्तर. )-आभूषणआदिकसे वीतराग भावका अभाव नही होता. दिगंबर लोक जो अमूल्यसिंहासन-छत्र-भामंडल-आदि प्रतिमासे मिलाकर रखते है क्यों ! यह आभूषण नही है ?-वीत राग हुवे पीछे कौनसे दिन भगवान् रथमें चढे थे ? रथमें चढाक र फिरानेमें भी दिगंबरके वीतरागका वीतरागभाव बना रहा तो आभूषण पहेरानेसे वीतराग भावका नाश कौन कर शकता है ?

मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके (१६) प्रश्नोका उत्तर. १७९

विशेष वर्नन देखना होतो चोरासी बोलोमें (१५)मा-बोछ देखो.

(१६)-प्रश्न-केवलीकों केवली नमस्कार करे या नही ?

( उत्तर. )-केवलीकों केवली मिले तब नमस्कार करे, दिगंबरकी तरह केवली एक नयकों उच्चापतें नही. किंतु निश्चय और व्यवहार दोनों नयकों स्वीकार रखते हैं. अलबते ! दिगंबर तो यही हठ करेंगेकि-केवलीकों केवली न मिले. समवसरणमें जी न्यारी न्यारी गंधकुटी ( कोटडी ) में बैठे. आते जाते रस्तेमें कभी न मिले.

(१७)-प्रश्न-महावीरस्वामीने अपने निर्वाणसमय गोतमगण धरकों देव शार्माब्राह्मणके संबोधनार्थ भेजा. उसमें मोहका भय सिद्ध होता है कि-मैं मुक्ति जाऊंगा तब यह मोह करेगा. सो भगवान्‌कों रागभाव आया.

( उत्तर. )-यह कहना ठीक नही. जबजब समवसरणमें अनेकजीव एकत्रित होतेथे तो भगवान्‌की देशना होतीथी, यदि यही समझा जायकि-उनजीवोंके आनेमें भगवान्‌ देशना देतेथे तो यहांजी राग सिद्ध होता है, परंतु ज्ञानीमनुष्य ज्ञानिदृष्टज्ञावकों राग नही समझते, किंतु जेसाजेसा ज्ञानियोंके ज्ञानमें ऊलकता है तद्वत् होनेकी आज्ञा ज्ञानियोंके मुखसें होती है. रागभावसें नही. कुतर्क करना न्यायीबातहै. सोचो ! वीतरागकों राग कहां ?

(१८)-प्रश्न-साधुकों दंडा रखना किस वास्ते कहा ?—

( उत्तर. )-शास्त्रोंमे मुनिकेलिये दंडा केइ विशेष कारणोंसें रखना लिखाहै जिसमें एक यहभी है कि-जब मुनिको किसी नदी पार होना हो तो जलपरीक्षाकेलिये इसकी आवश्यकता हैकि-

१०० मुल्ताननिवासीदिगंबर श्रावकोके (१६) प्रश्नोका उत्तर.

जल इसदंडेसे अधिक उंचा तो नहीं है ? जिसको मैं पार न कर सकूँ, ?—

(११)-प्रश्न-दादाजीके चरणकों पूजना क्यों कहा ?

(उत्तर.)-शास्त्रमें पदपदपर गुरुके चरणोंकी पूजा करनी लिखी है. जब दादाजीने पंचमहाव्रतपालन किये तब वे साधुपद में गिनेगये साधुकी सेवा भक्ति करना गृहस्थका मुख्यधर्म है, फिर उनके चरणपूजनेमें क्या दोष हुआ ?-अलबते ! संसारिककार्य बन-स्त्री-पुत्र-परिवारकी वांछा-वगेरा करके पूजना न चाहिये. दिगंबरलोक जब तीर्थयात्राकों जातेहैं वहां अनेक चरणपादुका पूजते हैं तथा मालवा-गुजरात वगेरा देशोंमें-नेमिचंद्रआचार्यकी चरणपादुका हरेक मंदिरमें बनोहूयी स्थापित है उसकों पूजते हैं. क्या ! मुल्तानकेदिगंबर श्रावकों अपने घरकीजी मालुम नहीं-कनारेपर बसते हों इसालिये ?-

(१२)-प्रश्न-तीर्थकर निहार कैसे करते हैं ?-

[उत्तर.]-जो आहारकरेगा निहार अवश्य करेगा. आहार और निहार शारीरिकधर्म है. जबतक शरीर रहेगा छूट नहीं सकते. दिगंबरने (६३) शलाकापुरुषकों आहार माना और निहार नहीं माना. यह एकांतमिथ्यादृष्टिका लक्षणहै. विशेष बर्नन घोराशी बोलमें (३६) मा-बोल देखो.

(१४)-प्रश्न-मोक्षमें कोनसा संहननवाला मनुष्य जावे ?-

(उत्तर) वज्ररिषभनाराच संहननवाला.

(१५)-प्रश्न-स्त्रीकों कितने गुणस्थान प्राप्त हो ?

(उत्तर.)-जब हम स्त्रीकों मोक्षहोनाही मानते हैं तो गुण

( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) ३०१

---

स्थानजी चौदह क्यों नहीं मानें ?

( १६ )-प्रश्न,—श्वेतांबर किमकों कहना ?

( उत्तर )—श्वेतनाम है निर्मलका-सो निर्मल है वस्त्र और  
आचरणजिनके-उनको कहना श्वेतांबर—

---

[ लश्कर गवालियरनिवासी दिगंबरश्रावक-फतेहलाल  
जीके प्रश्नोंका उत्तर. ]

---

उक्तश्रावक-फतेहलालजीके साथ-स्वरूपमें जां जो प्रश्नोत्तर  
हुवे उनकी नकल,-फतेहलालजीने आतेही वंदन नमन करके कहा  
में दिगंबरविशंपंथ आम्नायका श्रावक हूं, पंक्ति चमनलालजी  
जयपुरवाले कइ रौजसें यहां आये हुवे है, उन्होंने आपका नाम  
लेकर कहाथा कि-उक्तसाधु अच्चे विद्वान् पुरुष है, कइदिनोंसें  
मैं चाहताथाकि-आपकेसाथ ज्ञानगोष्ठो करके कइ बातोंके नती-  
जेपर खयाल करूं, परंतु आजतक ऐसा मौका नहि मिलाकी-मैं  
बो-उपेद पुरोकरता, इसवरुत आपको यदि तकलीफ नहोतां  
कइबातोका दरयाफ्त करना चाहताहूं. इसपर कहा गया कि-  
जो कुछ दरयाफ्त करनाहो खुशीकेसाथ करें, मुनियोंका धर्म  
है कि-जिज्ञासु पुरुषोंके प्रश्नका यथार्थ उत्तर देना.

( फतेहलालजीने )-कहा-मैं-अल्पज्ञहूं, यदि कोइबात अयो-  
ग्य कही जायतो आप कृपा करना. ( हमनेकहा )-चर्चाबार्तामें  
एसा वरुतजी आनपमता है कि-कोइ बात जोरके साथजी क-  
हनी पमती है इसपर नाराज होना नचाहिये.



१७१ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

( फतेहलालजीने कहा )—मैं इसबातको स्वीकार करता हूँ कि झूठीबातके पक्षकरनेसें सबको नाराजी और गुस्सा आताहै, अलबते ! एक केवलीकों नही आता. क्योंकि-वे-रागधेष रहित है. हमजी जब किसी डकानदारके सामने जाकर कहते है कि-अंग्रेजो रुपया-चौदह आनेका होता है तो वो इस बातको कब कबूल करता है ?— इसी प्रकार झूठी बातकों ज्ञानी जन कब सच कहने लगें ?

( हमनेकहा. )—जो शरुस-साधुजनोंसें चर्चावार्त्तामें हारजाता है और कोइ युक्ति नही पाता-तो-कहने लगता है आप ! साधु महात्मा है आपको गुस्सा करना ठीक नही, क्षमा रखना चाहिये इत्यादि इत्यादि, -परंतु यह नही आता कि-इसमें मेराही अपराध है जो-वक्रता करके सत्यकों झूठ कह रहाहूँ. ठंमा जलजी अग्निपर धरनेसें उष्ण जाता है फिर सत्यवादीके सामने झूठ बात कहनेपर उनव तमोगुण कैसे न आयगा ?—किंतु जरूर आयगा, आवश्यक का जैनागमजी कह रहे है कि-जो शरुस वक्रताकरके प्रश्न प्रश्नकों तामना जरूर देना, अलबते ! जो विनयसें पुछे उसव तामना देनेकी कोइ जरूरत नही, जैसे छलटे चलनेवाले घोंको चाबक लगाना परता है वैसे वक्र-शिष्यकों वचनरूप ताबक लगानाजो न्यायमार्ग है, अगर इस बातकों बिना समझ कोइ शरुस-साधुजनोंको दोष देवेकि-आप-कों गुस्सा करना यहां कहा है ?— तो उसको कोइ समझा नही सकता. सोचो किसत्यबातके इनकार करनेवालेको यदि तामना न दीयी जाय तों क्या धन्यवाद दिया जाय-यदि कहा जायकि-

न-धन्यवाद-न-ताड़ना-कुछ नहीं देना चूप होजाना चाहिये तो इसमें जो दोष प्राप्ति है. क्योंकि “ नानिषिद्धं अनुमतं— ” इस न्यायसे असत्य बातका स्वीकार हुवा, अज्ञानीयोंके अज्ञानवादकी वृद्धि हुई-और चारजनोंके सामने वक्ताको मूर्खताका दोष आया कि-ये अविद्वान् है. इसलिये असत्यके स्थापनकरने वालेको तामना देना कोई अन्यायकी बात नहीं. इस बातको बिना समझे जो लोग साधुजनोंसे-या-गृहस्थ विद्वानोंसे कहदेते है कि-गुणोजनोंको गुस्सा करना नचाहिये वे हकीकतमें मूर्ख है. शास्त्रोंमें जगह जगहपर लिखा है कि-धर्मके अर्पणवाद बोलने वालोंको शिक्षा देना, इतनेपर न माने और कुतर्क करे तो तामना तर्जना देकर उसकी कुयुक्तियोंका खंमन करना. हा ! अलबते ! बिना प्रयोजन उसको ठेमठाम करके क्लेश पैदा करना ठीक नहीं, परंतु जब सामने आकर धर्मतत्वको झूठा कहे तो फिर चूप खेंच जानाजी अज्ञा नहीं.

( फतेहलालजीने कहा. )—यह आपका कहना बहुत ठीक है कि-असत्यबातके उद्घापन करनेमें चूप रहना योग्य नहीं, किंतु सत्यका खंमन और असत्यका खंमन करना-जरूर-चाहिये जो शरूस हृदयसे मखीन है बेही मुखमीठी बात करके अपनी खोटी वाहवाह कराते है. अब-मैं-आपसे जो कुछ पुछने आयाहुं आज्ञा हो तो प्रारंभ करूं.

( हमने कहा. )—सुशीसें किजिये !—हमको इसमें कोई तकलीफ नहीं.

( अब-फतेहलालजीका-प्रश्न. )—परवस्तुका संग त्यागने योग्य

है-या-अंगीकार करने योग्य ?

( इसपर हमारा उत्तर. )-त्यागने योग्य है.

( फिर फतेहलालजीकी तर्क. )-फिर चौदह उपकरण श्वे-  
तांबर मुनि क्यों रखते है,

( उत्तर. )-जैसे दिगंबरमुनि मूर्धारहित-पींठीकमंमलुं-रखते  
है तद्वत्श्वेतांबर मुनि चौदह उपकरण रखते है.

( ३ )-तर्क-वस्त्र रखना मूर्धा होनेका कारण है, न रख-  
ना चाहिये.

( उत्तर. )-योर पींठी और कमंमलुजी मूर्धाका कारण है  
न रखना चाहिये. यदि कहा जाय कि-ये तो साधुके चिन्ह है  
तो क्या चौदह उपकरण साधुके चिन्ह नहीं है ?-असल पुत्रो  
तो शरीरही मूर्धाका कारण है, शरीरहीकेलिये मुनियोंको आ-  
हारआदिकी गवेषणा करनी पमती है.

( ४ ) तर्क-शरीर अपरिग्रहित है और वस्त्रपरिग्रहित (या-  
ने ) ग्रहण किये जाते है,

( उत्तर. )-जैसे वस्त्र-ऐसं-शरीर-दोनो परिग्रहितही है. श-  
रीर माताके उदरमें ग्रहण किया वस्त्र पोर्सेमें ग्रहण किये, आ-  
त्माके लिये तो दोनों परवस्तु है.

( ५ ) तर्क-मुनि-वस्त्र उढेमें तो मूर्धाआयी सिध होगी.

( उत्तर. )-चलतेवस्तु पींठीकमंमलुं उठायमें तो नी मूर्धा  
आयी सिध होगी, आहारके लिये उठना और कवल लेकर  
मुखमेंही धरना इसकोंनी मूर्धाका कारण कहो.

( ६ ) तर्क-पींठीकमंमलुं-जीवरक्षा और शौचक्रियाके लिये

रखे गये हैं। पुस्तक पंखे-ठवणी कबली-पुस्तकका बंधन-योगपट्ट-  
क-आसनपट्ट-और कोपीन-बगेरा उपकरणजी चारित्रनिर्वाहके  
लिये समयानुसार रखने योग्य है, परंतु जब ओढ़नेके लिये वस्त्र  
रखलिये तो अचेलपरिसह सहन करना कहां रहा ?—

( उत्तर. )—अचेलपरिसह सहन करना उसका नाम नहीं  
है जो वस्त्र त्यागकर बिल्कुल नग्न होजाना, बहु मूल्यकेवस्त्र त्याग  
कर थोमे मॉलका कुत्तितवस्त्र रखना इसकानाम अचेलपरिसह  
है. अचेलशब्दमें जो अकार है वह सर्वथा निषेधवाचक नहीं,  
व्याकरण शास्त्रमें कहा है कि—

द्वौ नजौ समाख्यातौ—पर्युदासप्रसज्यकौ,

पर्युदासः सदृग्ग्राही—प्रसज्यस्तु निषेधकृत्. ।

यदि इस प्रकार अचेलशब्दके अकारकों नहीं मानों तो  
जहां लिखा है कि-मुनि-अज्ञानपरिसहकों सहनकरे-वहां-क्या !  
बिल्कुल ज्ञानके अज्ञावको सहन करना कहोगे ? चेतनालक्षण  
ज्ञानका अज्ञावजी मुनियोंमें मानते हो क्या ?- यह दिगंबराचा-  
याँकी बहुतबड़ी भूल है जो-जिनकल्प-और-स्थविरकल्पकों एक  
बनादिया, और फिर दोनोंमेंसे एककाजी निर्वाह न कर सके.  
एकांत पट्ट खेंचनेवालोंका यही हाल होता है, और जो तुमने  
कहा कि-योगपट्टक रखना समयानुसार ठीक है तो फिर उसीपर  
खयाल कर लिजिये !- कि-योगपट्टक किसका नाम है ?- दिगं-  
बरमुनि योगपट्टक-आवरण वस्त्रकों कहते हैं. और कहते हैं पंच-  
मकालमें लज्जापरिसह जितना मुश्किल है इस लिये एक आव-  
रणवस्त्र याने उढनेकावस्त्र रखना चाहिये. इसपर सवाल होनेकी

३७६ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

जगह है कि-फिर आपका दिगंबर पना-कहां रहा ?- और आप-  
पलोंकोंकी आर्या जो सोलह हाथकी सामी पहेनती है क्या वह  
दिगंबरा नहीं रही ?- श्वेतांबरा होगयी ?- सत्य है कि-अपनी  
शक्तिकों विना विचारे कार्यकरनेवाला अखीरमें खताही पाताहै.

( ७ ) तर्क-जिनकल्पमुनिकों आप मानते हो-या-नही ?

( उत्तर. )-मानते है परंतु महाविदेहक्षेत्रमें-यहां-नहीं रहे ज-  
बसें जबूस्वामी निर्वाण हुवे है ज्ञारतवर्षमें उक्त मुनि नहीं रहे  
व्यवच्छिन्न होगये.

( ८ ) तर्क-जिनकल्पमुनि किसकों कहते है ?

( उत्तर, )-जिनकल्पमुनि उसको कहते है जो-वरिषज-  
नाराचसंहनवाले हो-थोमेसे थोमा नवपूर्वकी तिसरीआचार व-  
स्तुतके और उत्कृष्टसे दशपूर्वतक पढ़े हुवे हो-तीसरेपहेर जिज्ञा-  
टन करे-आंखमें तुणखा-और-पावमें कंमा लगें तो जी निकाले  
नही और-चोता-और-व्याघ्र-बगेराके मरसें पीछे हटे नहीं-रोगहो  
जाय तो जी दवा न खावे-और-नवकल्पी विहार करे, अगर उ  
महिनेतक आहार नमिले तो जी दोनता न लावे-सूत्रसिद्धांतके  
बलसें सबबातको मालूम करे-लोच करे-सर्वथा अप्रतिबंध होनेके  
कारण किसीकों धर्मोपदेश न देवे-और पाणिपात्रआदि अनेक  
लब्धिके धारक हो-वे-मुनि जिनकल्पमार्गके अधिकारी है. जिनके  
हाथमें सो ( १०० ) घंमे जलढे गेरदिये जाय और एक बिंड  
जो उसमेंसे निचे न गिरनेपावे ऐसे लब्धधारी आज कहां रहे!-

( ९ ) तर्क-न रहे तो क्या हुवा ?- जितना बनशके : उत्त-  
नात्तो जोर लगाना चाहिये.

( उत्तर )-असमर्थ होकर समर्थका दावाकरना लाजके ब-  
दले हानि उठाना है. एकमात्र नंगे रहनेहीसे जिनकल्प बनना  
चाहते हो तो अलग बात है. वर्तमानकालमें लब्धिहीन मुनि रह  
गये उनको उचित है कि-स्थविरकल्प मार्गको ही स्वीकार रखे.  
वृथा इठकरके दोनों बातोंसे भ्रष्ट होना कोई चतराईकी बात  
नहीं. देखिये ! आपके आचार्योंने-रजोहरण-मुखवस्त्रिका-गोमकर  
पीठीकमंडलुं धारा परंतु इसमेंजी लाजके बदले हानि उठाई.  
याने जैनलिंग त्यागके अन्यालिंगी हुये. सर्व शास्त्रोंका कथन है  
कि-मुनियोंको घरघर जिह्वाटन करना परंतु पात्रके अज्ञावसें  
आपके मुनियोंने-विचाराकि-यहतो न बनेगा, लाचार ! एक ही  
के घर खमेखमे आहार खाना कबुल रखा, जब एकके घर आ-  
हार लेना होगा तो सोचनेकी जगह है कि-आधाकर्मिक दोष  
कैसे हठ शकता है ? वस्त्रके अज्ञावसें जब ठंम लगने लगी तो  
जिनमंदिरके गूढमंरुपमें जाकर सोनापमा, कहिये ! इससें देवकी  
अवज्ञा हुई-या-सेवा ?- पात्र रखना बंद किया इससेंजी सोचो !  
तो लाजकी जगह हानिही हुई, बिमारसाधुको पात्रबिना आहार  
छादेना नहीं बना, उनकी वैयावच करनेमें अंतराय हुई, गृहस्थीके  
घर खमे खमे आहार जोगनेसें जी कह बातोंके दोष लगने शुरू  
हुये, अंतराय न हो जाय इसलिये गृहस्थलोक स्थाल-या-परात  
बजानेलागे. अनेक प्रकारके कबल बनाकर हाथमें देते जाय और  
आपके मुनि खाते जाय-यहजी खूबसराहनीय बात हुई कि-जि-  
सको खेखकर लमकेजी हंसी करे, कहिये ! जिनकल्पकी स्पर्धाकर  
आपके गुरुजने क्या सार निकाला, ?- देखिये ! श्वेतांबर मुनि

३६७ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

पात्र रखते है तो उससे-बै-कितने प्रकारके लाज उठा सकते है, अवलतो ! गुरुको नक्ति करसकते है, बिमार साधुको आहार देकर बैयावच करसकते है, तपस्वी-बाल-वृद्ध-प्राधुर्णक-वगेरार्क, आहारपानीद्वारा-बैयावच करसकते है, कच्ची अनजानसें कोइ अभुद्ध वस्तुआजाय तोपात्रद्वारा बहार ले जाकर उसको परठ सकते है. और हिंसाके जागी नही होते है, पात्र रखनेसें इतने लाज हुवे.

( १० ) तर्क-यूंही तो शिथिल होते होते आपलोगोंमें यति श्रीपूज्य-शिथिलाचारी हो गये.

( उत्तर, )-धर्म और प्रीत जोरा जोरी नही होसकते. तीर्थंकरोंके बैठेहुवे जी जो शख्स धर्म करना नही चाहतेथे उनको जोराजोरी कोइ नही करा सकता था, जैसे श्वेतांबरमें यति-श्री पूज्य-वैसे-आपलोगोंमें जटारक और क्षुल्लक-दोनो एक तुल्य है. जटारक-लाल वस्त्र रखते है श्रीपूज्य श्वेत रखते है. रसोइया जैसे जटारकोंके लिये शाय रहता है श्रीपूज्योंकेलियेजी इसी तरह समझलो. श्रावकोंके घर धाजेगाजेकेसाथ जैसे जटारकलोग भ्रामरीके लिये जाते है इसी प्रकार श्रीपूज्यजी गोचरीके नामसें जाते है, पानी जैसे जटारक लोग कच्चा पीते है. श्रीपूज्यजी कच्चा पीते है. म्याना-पालखी-रेलगमीवगेरामें सवारहोना-हाथी-घोमे-घनधान्य-मकानात रखना दोनोंका एकसा है. नोकर-चाकर-ढम्मी-चवर सबकाम राजवर्गी, वतलाइये ! फिर किसकों जैनाचार्य और किसकों शिथिलाचार्य कहा जाय ?- रहे क्षुल्लक सो जी इन्हीके ठोटे जाइ है, जैसे यतिलोग सवारीपर चढते है क्षुल्लकजी चढते

है. गृहस्थोंके घर जोजन जीमना-कच्चापानी पीना-धनरखना-बगेरा जो जो आचरण यतिजनोंके दिखलाइ देते है क्षुल्लकोंकेजो वैसे हो है. दूर क्यों जाते हो यहां लश्करमेंही क्षुल्लकरामचंडजी-जो कि-धर्मदासजीके-चेले बताते है-देख लो !- क्या ! आप इन्हीके ज़रोसें अपने आमनायकी तारीफ कर रहे हो ?- शास्त्रोंका वचन है कि-पंचमकालमें-ऐसे ऐसे-साधु-उपाध्याय-और आचार्य होयमें कि-जो-मरकर उर्गतिमें जायमें, इसीसें कहशकते है कि-पंचमहा-व्रत बिना एकीला वेष कार्यकारी नही. जैसेकिसी नटने साधुका वेष पहने लिया तो क्या वह पंचमहाव्रत बिदून पूजनोक हो शकता है ?-जब नही हो शकता तो फिर एकीले वेषसें क्या गरज सरी ?—

( ११ ) तर्क—जिनकी श्रद्धा ठीक हो चाहे वे क्रियासेंरहित हां कोई हर्जकी बात नही. शास्त्रोंका वचन है कि-सम्यक्तरहित पुरुष संसारकापार नही पाशके. इस बातके कहनेसें तात्पर्य यह है कि-हमारे जट्टारक लोग यद्यपि चारित्र रहित बेशक है लेकीन श्रद्धासेंतो शुद्ध जैनी है. आपलोगोंकी तरह संसयमें नही पड़े.

( उत्तर. )—शुद्ध जैनी कहलाना कुछ हमारे तुमारे आधीन नही, किंतु सर्वज्ञ प्रणीतशास्त्रोंके आधीन है, शास्त्रवचनसें जो कोई श्रद्धालुठहरशके वही शुद्ध जैनी है. छ्वादशांगवानीके असली सिद्धांत आचारांग सूत्रकृतांग-आदि-माननेवाले कज्जो संसयमें नही पड़ते, संसयमें वही पड़ते है जो उक्तसिद्धांतोंको बिभेद गये कहकर-धवलजयधवल-गोमहसागर बगेरा नवीन ग्रं-



३५७ ( दिगंबर आचर्य कृतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

धोंकों असली समझते हैं, जिनमेंकि-सोमोह-और-केवलीके-कवल आहारपर तकरार उठाई गयी है.

( १२ ) तर्क-केवलीको कवल आहार आप सिद्ध कर सकते हो ?

( उत्तर. )-क्षुधा तृषा उदारिक शरीरका धर्म है. जबतक शरीर रहे तबतक यह जी रहेंगे. ये दोष केवलीके अतीन्द्रियज्ञानकी घात नहीं कर सकते. क्षुधा तृषा वेदनीय कर्मके उदयसे होते हैं. वेदनीय कर्मका अज्ञाव केवलीकों है नहीं. फिर क्षुधातृषाका अज्ञाव कैसे हो सकता है ?-आहारपर्याप्तिनामकर्म-तथा-वेदनीयकर्मके उदयसे-जठराग्नि-प्रज्वलित होती है (यदुक्तं)-रत्नाकरावतारिकायां-आहारपर्याप्तिनामकर्मोदयवेदनीयोदयप्रबलप्रज्वलदौ दर्यज्वलनोपतप्यमानोहिपुमान् आहारं आहारयतीति- कहिये ! ये-(२) दो-प्रकृतिकेवलीको नहीं है क्या ?-यदि है तो क्षुधा तृषाका अज्ञाव क्यों ?-अगर कहा जायकि-वेदनीयकर्मका उदय तो है लेकिन उससे आकुलता नहीं होती, माना !-हम कब कहते हैं कि-होती है ?-प्रदेशउदय केवलीको नहीं लेकिन विषाकोदय तो है अलबते ! सातावेदनीय कर्मका अत्यंत उदय है असाताका थोमा परंतु बिल्कुल अज्ञाव नहीं अगर असातावेदनीयका केवलीको अज्ञाव होता तो तत्त्वार्थसूत्रमें (११) परिसह क्यों कहे ?

( १३ )-तर्क-सर्वार्थसिद्धीकामे-न-संति-पद उपरसे

लाना कहा है ( ज्ञावार्थ ) एकादश जिने-न-संति-याने ग्यारहपरिसह केवलीको नहीं ऐसा जानना.

( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) ३३१

( उत्तर- )—यह व्याख्यान प्रमाणसेबाधित है, तत्सार्थसूत्रमें परिसहके स्वामीकी गिनतीका अधिकार बलाहै, वहां अज्ञाव कहना असंभवहै, परिसहकेस्वामीको अस्वामी बतलाना मृषा-वादीयोंका काम है,

( १४ )—तर्क, केवलीको ग्यारहपरिसह उपचारमात्र है, याने कहनेहीमात्रहै असत्त्वमें नहीं, यद्यपि वेदनीयकर्म केवलीकोजरु रहै परंतु इससे क्या होशक्ता है, ?

( उत्तर. )—स्वाभिलाषितांके वर्णनमें उपचारकहना बनी भूलहै, इतनेपरन्ती यदि हठकरना मंजूरहै तो मोहनीकर्मके होनेसे उपशांतमोह गुणस्थानवालेकोजी बाइसपरिसह कहना चाहिये.

( १५ )—तर्क-केवलीको अगर क्षुधा लगती होतो उनके बलकी हानी होजाय, फिर अनंतवली कहना कैसे बने, ?—

( उत्तर. )—शारीरीकबल-अलबते ! क्षुधालगनेसे घटजाता है इसको कौनबुद्धिमान् इनकार करशक्ताहै, सबबकि-शारीरी-कबल नामकर्मको परिणति रूप है, नामकर्म केवलीका क्षीणहुवा है नहीं, क्षीणहुवाहै अंतरायकर्म जोकि- अंतरंग शक्तिरूपवीर्य अर्थात् पराक्रमको रोवनेवाला था. इसलिये केवलीकी अंतरंग शक्ति कभी नहीं घटती. हकीकतमें बल-और-वीर्य अलगअलग है, शरीरके पराक्रमकानाम बल है और अंतरंगशक्तिका नाम वीर्य है, शास्त्रोंमें जगहजगहपर कहाहैकि-बलं शारिरं वीर्यं चांतरं-इति, उदारिकशरीरका धर्म है कि आहारपानी न मिल-नसें कुमलाइ जाव, यह एक प्रत्यक्ष प्रमाण है. प्रत्यक्षको झूठा बतलाना दुर्यतग्राहीयोंका काम है.

## १९२ ( दिगंबर आचक फतेहजालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

( १६ )-तर्क,-आहारकरनेवालेकों निद्राजी जरूर आतीहै, इससे कहना पड़ेगाकि-केवली निद्राजी लेते होंगे.

( उत्तर )-यहकोई नियमनहीकि-जो जो शरूश आहारकरे वह निद्रा जरूरलेवे, निद्रा दर्शनावरणीकर्मके उदयसे आती है, आहार निद्राका कारण नहीं, दर्शनावरणी कर्म केवलीको क्षीण होगया इसलिये उनको निद्रा नहीं आती.

( १७ )--तर्क,-शास्त्रोंमें लेखहैकि--आहारथोमा खाना. सोचो !-इससे क्या सिद्ध हुवा ?-यही सिद्धहुवाकि-आहारका खाना वास्तवमें बुराही है.

( उत्तर )-अगर आहारका खाना बुराही होतातो-पुरुषकों (१३) कवल प्रमाण आहारखाना शास्त्रकारोंने क्यों फरमाया ?-यह तुमारोही समझका फर्कहै कि-आहारका खानाबुरा कहतेहो तुमारेमुनिजी जब विद्यमानथे ( ३१ ) कवल खातेथे कहोयेजी बुराहीकाम करते थे. परंतु यह तुमारा समझना गृथा है, हकीकतमें स्वाभाविक आहार प्रमाणसे खाना बुरानहीं, अजीर्ण पेदा हो इसप्रकार खाना बुरा है.

( १८ )-तर्क,-आहारकीकथाकरनाजी मुनियोंके लिये प्रमादका हेतु कहा तो, खाना प्रमादका हेतु क्यों नहीं ?-

( उत्तर. )-आहारकी कथा दो प्रकारकी, एकतो लंपट होकर आहारकीतारीफ वर्नन करे, और एक साधारणरूपसे आहारका यथार्थवर्नन करे, इसमें प्रथमजेदवालेकों अलबते अतिचारदोष लगता है, दूसरेजेदवालेकों तो अतिचारदोषजी

( दिग्गज आधक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) १७३

नही लगता फिर मूर्खरहित आहारखानेवाले-मुनिकों-प्रमादकैसे कह सकते हो, !-अगर फिरजी हठवादकरना मंजूर है तो पहिले अपनेगुरुओंकोही प्रमादी कहो जो बनीस केवल प्रमाणआहार खातेथे.

( १.९ )-तर्क,--सातमेंगुणस्थानपर आहारसंज्ञा नहीं रहती, फिर अगले गुणस्थानपर कहाँसे आयगी ?-और बिना आहार संज्ञाकेवलीकों आहार करना कैसे संजवे, ?

( उत्तर. )-अप्रमत्तसाधु आहारसंज्ञाबिना याने अजिज्ञाषा रहित आहार करते है. शास्त्रोंमें अजिज्ञाषाहीको आहारसंज्ञा कहीहै देखो !-तुमाराही गोमटसारग्रंथ क्या कहता है ? टीकाकारने आद्यमेंही लिखा है कि-आहारसंज्ञा खड्गवाहाराजिज्ञाषः

( १० )-तर्क-आहारखानेसे शूलरोगजी कबलोकों हो जाता होगा ?-

( उत्तर. )-प्रमाणयुक्त पथ्यआहारखानेमें शूल क्या ! को-रोग नहींहोता,

( ११ )-तर्क-आहारखानेसे--दिशाजंगलजी जातापरुता होगा, सज्जामेंसे उठकर जाते हुवें क्या ! अच्छे दिखते होंगे ?

( उत्तर, )-नम्रस्वरूप जिनेंछदेव सभामें क्या ! अच्छे दिखते होंगे ?—

( १२ )-तर्क-यहतो अतिशयकीबात है कि दूसरोंकोनम्रनदेखे.

( उत्तर, )-फिर आहारनिहारमें अतिशयका प्रभाव कहाँ जायगा ?-क्या ? चोतोशअतिशयोंमें यह बात नहीं लिखिहैकि-

१९४४ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

जिनेश्वरोंको आहार निहारक्रिया दूसरोंको न दिखाइ दे, ?

( १३ )-तर्क,केवली जिह्वालेनेको खुदजाते होंगे-या-उनके चेहरे लादेतेहोंगे,

( उत्तर, )-सामान्यकेवली-कजी खुदजी जाते है कजी चेलेजी लादेतेहै

( १४ )-तर्क-जब खुद जिह्वाको जाय और आहारनमिले तो कितना मानजंग होताहोगा ?—

( उत्तर, )-केवलीका अंतराय होनेका क्या काम ?—अंतरायकर्म तो उनका पहलेही कृत्य होचुका है, विशेषआवश्यक सूत्रमें लिखाहैकि-केवलीको जिज्ञा प्राप्तकरते अंतराय न हो.

( १५ )-तर्क,तीर्थकरदेवजी जिह्वालेने जाते होंगे ?-

( उत्तर, )-तीर्थकरको शिष्यसमुदायके होतेहुवे खुद जिह्वाटन करना असंभव है. सामान्यकेवलीकेलिये अलबते ! कथंचित् जाना न जाना कहा,

( १६ )-तर्क-जिसको शरीरपर मूर्छा हो वो आहारकरे मुनियोंको मूर्छा रखना ठीक नहो,

( उत्तर. )-यह कोइ नियम नहीकि-जिसको मूर्छा होवही आहारकरे. और यह जो कहाकि मुनियोंको मूर्छा रखना ठीक नही इसमें दो बातहै. अगर पांचइंद्रियोके विषयपुष्टिनिमित्त शरीरपर मूर्छा रखेतो अलबते ! उचित नही, परंतु धर्मपालनको रखे तो पापबंधका कारण नही. कहिये !-अगर सर्प-या सिंहके सामनेसे-कोइमुनि-हठकर पीछे लोटे तो उनको तुम योग्य मानो या अयोग्य, ?-अगर कहोगे वे मुनिकाहेके जो सर्पासिंहसे मरते

रहे ?- ( इसका उत्तर )- ठीक है ! महाशय ! !-कुछ कहनाही जानतेहो या करदिखलानाजी जानतेहो ?-सोचोकि-अगर मरजी उन्होने रखा तो क्या पांचइंद्रियोंके विषयपुष्टिनिमित्त रखा या धर्मपालनकेलिये ?-अगर धर्मपालनकेलिये रखा तो फिर वे मुनि रहे वा भ्रष्टहोगये ? यूँहीतो तुमारे आचार्योंने उंचीउंची बातपकडकर धर्मको निर्मूल करदिया. और तुमको बिनागुरु के रखदिये. अंतमें तुम आपही आप शास्त्रवाचने लगगये और मनोमति हुवे.

( १७ )-तर्क, मोहकर्मके नाशहोनेसे केवलीका शरीर सप्तधातु वर्जित होजाता है जैसे अबरकका पटल हो वेसा तेजमय रहजाताहै. उसको कवलआहारकरनेकी कोई जरूरत नही रहती.

( उत्तर. )-मोहकर्मकेनाशसे केवलीकेशरीरको सातधातु दूर नहीहोती. मोहकर्म अलग है नामकर्म अलग है, शरीर नामकर्मकी प्रकृतिके अंतर्गत है, क्या !-वज्ररिषज्ञ नाराचसंहनन-नामकर्मकी-प्रकृति-केवलीको उदयमें नही रही जो सातधातु उनको दूर होजाय ?-अगर- कहोगे रहो है तो सोचोकि-अस्थि पुदगलबिना वह प्रकृति विपाकफल किसमें दिखलायगी ?-अगर-कहाजायकि-दृढसंस्थानमात्र पुदगलमें वह विपाक दिखलायगी तो देवताकोंजो वज्ररिषज्ञनाराचसंहनन कहना चाहिये. केवलज्ञानके होनेसे शरीरमें कुछ विशेषता नही होती शरीरनामकर्मके उदयसेही शरीरमें विशेषता होतीहै. इसलिये केवलीके शरीरको सप्तधातुवर्जित नही किंतु सहित कहना चाहिये, क्या ! हारु-मांस-रुधिर-जो केवलीको पहिलेथे वे केवलज्ञान होतेही

**३७६ ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )**

नाशहोगये ?-अगर कहेंगे हां ! नाशहोगये तो कहो उसका कारण क्या है ?-

( ३८ )-तर्क-मुनाहै श्वेतांबरआम्नायमें पनरांहमकारसेसिद्ध होते है उनमें स्त्रीकीजी मुक्ति होती है. ?-

( उत्तर, )-श्वेतांबरआम्नायमें स्त्रीकी मुक्तिहोना कुछ बीपी-बात नही, घंटांनादकेसाथ कहरहेहै कि-स्त्री-यदि ज्ञानदर्शन चारित्रका आराधनकरे तो उमीज्जमें मुक्ति होजाय,--कौन रोक सकताहै ?—

( ३९ )-तर्क--ब्रह्मआश्चर्यकी बात है जो महानिघबस्तुकों उत्तमपद प्राप्तहो, ?

( उत्तर )-साध्वीपद उत्तम है-या-निघ ? यदि उत्तम है तो तुमारे आचार्योंने बनी भूल कियीकि--चतुर्विधसंघमें स्त्रीकों साध्वीपद प्राप्तहोना कहा. उनकों उचितथाकि-तीन या-दो प्रकारका संघ कहते.

( ४० )-तर्क-हमलोग स्त्रीकों पंचमहाव्रत नही मानते.

( उत्तर, )-फिर चतुर्विधसंघ नहीं मानना चाहिये. त्रिविध संघही कहना ठीक है.

( ४१ )-तर्क, स्त्रीलिंग आप किसको कहते हो ?-

( उत्तर. )-स्त्रीलिंग हम तीनप्रकारसे कहते है. [ १ ] वेद [ २ ] शरीर [ ३ ] और नैपथ्यजिसमें वेदजक्षणस्त्रीलिंग वो है जोअभिकेदाहकीतरहपुरुषकी चाहना हो.-शरीरनिर्वृत्तिलक्षण स्त्रीलिंग वो है जो-स्तन-जग-आदिआकार संयुक्त हो,--तिसरा नैपथ्य-तिलक-तंबोल-नेत्रांजन-हार-कंकण-और-झांझर-बगेरा

वासकृतशृंगाररूप हो. इनमें वेदलक्षणलिंग अर्थात् ज्ञावस्त्रीवेदको केवलज्ञानकी प्राप्ति नहीं कही. नवमेंगुणस्थानपर जब स्त्रीवेदका अज्ञाव होजाय तभी अगामीके गुणस्थानपर चदश के फिर धातिककर्मोंका कृत्य करे. इसलिये वेदलक्षणलिंग-केवलज्ञानकी प्राप्तिमें-वर्जनीय—कहा. अगर स्त्रीकों पंचमहाव्रत नहीं मानतेहो तो नवमेंगुणस्थानपर तीनोंवेदका जो गोमदसार वगेरामे कृत्य लिखा है वो क्योंकर होशके ?- अगर कहोगे ज्ञावकरके पुरुषमें जो स्त्रीवेद है उसको कृत्य करते हैं तो यह कहना जो झूठ है. क्योंकि- अग्रमत्त अवस्थामें पुरुषकों-स्त्रीका-और-स्त्रीको-पुरुषका-भाव मानना यह विरुद्ध है.

( ३२ ) तर्ज-वस्त्र आभूषण पहनी हुईस्त्रीजी मुक्ति होजातीहोगी ?-

( उत्तर )—महाशय !-वस्त्र आभूषण क्या !-सोलह शृंगार सजी हुई स्त्री-अगर-सिंहासनपर बैठ करके जो ध्यानारुढ हो जाय-और-अनित्य अशरण ज्ञावना भावे तो वहांजी उसकों केवलज्ञान हो सकता है, आप किस ख्यालमें भूले हो ?-केवलज्ञान और मुक्तिका रोधक शिंंगार नहीं किंतु रागादि लक्षण अशुद्ध उपयोगही केवलज्ञान और मुक्तिका रोधक है, यह हम नहीं कहते हैं कि-शृंगारही मुक्तिका प्रधान कारण है. शृंगाररहित स्त्रीजी यदि उक्त अवस्थाकों प्राप्त हो तो उसकोंजी केवलज्ञान और मुक्तिकी प्राप्ति होशकती है, शरीर लक्षण स्त्रीलिंग तो विशेष करके मुक्तिका रोधक होही नहीं सकता, सबबकि-जबतक मनुष्य गतिमें मनुष्यका आयुष्य विद्यमान है तबतक वह चिन्ह तो रहताही है,



## ३६० ( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. )

( ३३ )-तर्क-स्त्रीके अंगोपांग पुरुषके लिये अज्जिनवकारी याने प्रीति उत्पादक होते हैं वे खुल्ले नहीं रखजाते, उनको ढांकनेके लिये वस्त्र रखने पड़ेगें. वस्त्ररखनेमें परिग्रह होगा, जहां परिग्रह होगा वहां चारित्र्य नहीं. चारित्र्यनहीं तो मुक्तिकहांसे होगी?

( उत्तर. ) संयमनिर्वाहके लिये वस्त्र रखना परिग्रह नहीं, सोचनेकी जगह है कि मूर्छा बिना परिग्रह कैसे होशकता है, ?-शास्त्रोंमें मूर्छाहीको परिग्रह कहा. अगर इस बातको नहीं मानते होतो अखंड पृथ्वीके जोक्ता-जरतचक्रवर्ती-बगेराको निष्परिग्रही क्यों कहते हो ?-छादशांगवाणोका कथन है कि-परिसह होते हुवेजी यदि मूर्छा नहीं है तो परिग्रह नहीं. और नहीं होते हुवे यदि मूर्छा है तो परिग्रह है, अगर दिगंबराचार्योंके इतवादा पर ख्याल करे तो संसारमें सर्व दरिद्री मनुष्य नंगेही फिरते हैं उनको जो त्यागी निष्परिग्रही कहना चाहिये, सबवकि-उनके पास शरीरके शिवाय दूसरा कोई बाह्य परिग्रह नहीं, परंतु इसमें क्या हुवा ?-हकीकतमें उनके पास इच्छारूप ब्रह्मा जारी परिग्रह है, इसका नतीजा यह हुवाकि-केवल नंगेही होनेसे काम नहीं चलता. किंतु मूर्छाका त्याग करनेसे काम चलेगा. निश्चय नय पकड़कर बैठ रहना यही मिथ्यात्वका कारण है.

( ३४ )-तर्क, -स्त्री जातिकों आप पापको बाहुल्यता मानते हो या नहीं ?—

[ उत्तर. ]-मानते हैं लेकिन जिस प्रकार तुम लोग मानते हो उस प्रकार नहीं मानते.

[ ३५ ]-तर्क-वो प्रकार क्या है ?-

( दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर. ) २५५

( उत्तर. )—जिसवरुत जिस जीवने स्त्रीपना बांधा उसवरुत यद्यपि अधिक पाप प्रकृति मिथ्यात्वादिरूपही थी, लेकीनजब-बे प्रकृति—जन्यत्वपरिपाकसें सम्यक्त गुणपाकर दृयकियी जाय उसवरुत स्त्रीकों पापप्रकृतिकी बाहुल्यता हम नही मानते, अगर जबतक स्त्रीका शरीररहे तबतक बंधकेकारण मिथ्यात्वादिक बने रहते हो तो स्त्रीकों सम्यक्त गुणजी न पानाचाहिये, और मानते हो, फिर ! बरमे अंधेरकी बात है ! !-कि-स्त्रीकों—चारित्र और मुक्ति-न मानना.

( ३६ )—तर्क,—स्त्रीका शरीर परमअशुचिहै इसलिये उसकी मुक्ति कैसे हो ?

( उत्तर. )—शरीरकी अशुचि जैसी पुरुषको वैसी स्त्रीकों है. मुक्तिका संबंध जावचारित्रके साथ है, जिसकों जावचारित्र होशके उसकी मुक्तिका इनकार करना युक्तिप्रमाणसें बाधितहै. अगर कहाजायकि-स्त्रीको योनिमें बहुधा करके सन्मूर्तिमजोवोंकी उत्पत्ति रहती है. सोचनेकी बात हैक्या !-पुरुषके शरीरमें रोगादिकारणसें जीवोत्पत्ति नही रहती ?-अगर कहोगे रहती है तो उनकों जी मोक्ष न मानो.

( उत्तर )—तर्क,—मल्लिनाथ तीर्थकर स्त्री हुवे यह बनी अयोग्य बात है,

( उत्तर )—हुंमासर्पिणीकालदोषसें कइबाते आश्चर्यजनक हुइ इसकों श्वेतांबर दिगंबर दोनों मानते है, आपलोगोंके शास्त्रोंमें लिखा है कि-हुंमासर्पिणीकालदोषसें कइ अणहोती बाते हुइ. तीर्थकरोंके घर पुत्र पैदाहो, पुत्री नहो, लेकोन रिषजदेवके घर पुत्री

३३० ( दिगंबर भाषक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर, )

पैदाहुयी-चक्रवर्तिका मानसंमन नहो और जरतचकीका मान बाहुबलीने संमन किया, तीर्थकरोकों किसी अवस्थामें उपसर्ग नहो लेकीन पार्श्वनाथजीकों हुवा, तीर्थकर उदमस्थअवस्थामें अवधिज्ञानकों प्रकाशित नकरे लेकीन रिषजदेवने किया, -बासुदेवका मरना किसीके हाथ न हो लेकीन कृष्णबासुदेवका मरना जरतकुमारके हाथसें हुवा, ब्राह्मणकुलकी उत्पति दूसरेकालमें नहीं होती लेकीन इसकालमें हुइ, सोचो !-जब कालदोषसें ये अनहोतीबातका होना आपलोग मानते हो तो-मल्लिनाथतीर्थकर स्त्री हुवे एक युगलीया मरके नरक गया तीर्थकर तुलकुलमें न पैदा हो लेकीन महावीर हुवे-तीर्थकरोकों की धर्मदेशना खाली न जाय लेकीन महावीरकी पहेली देशना खाली गइ.-केवलज्ञान हुवे बाद उपसर्ग नहो लेकीन महावीरकों हुवा-ये बात न मानना इसमें क्या कारण है ?-पक्षपात करके अपनी बातकों सच्च और-दूसरेकी-झूठ कहना यह कोई चतराइ नहीं, चौराशी बांलोका जवाप कवित्तमें उपाव्याय यशोविजयजीने दिया है उसमें लिखा है कि-

(दोहा.)-तिहुंकर थीवेदको-क्यों एकनकों बंध, ?-

गुनथानक आकर्षथी-यहू हमारी संध,(१)

( ३० )-तर्क,-तत्त्वार्थ सूत्रके बनानेवाले उमास्वामीजी श्वेतांबर थे या दिगंबर ?—

( उत्तर. )-उमास्वातिजी श्वेतांबराचार्य थे. ( ५०० ) पांचसें ग्रंथ उनोंने बनाये जिनमें तत्त्वार्थ सूत्रजी एक ग्रंथ है, पूजा प्रकरण-प्रशमरति-बगेरा कई ग्रंथ वर्तमान समयमेंजी हमारे पास

मौजूद है. जिनको तुम लोग नहीं मानते. यदि तुमारे कहने मुजब उमास्वातिजी तुमारेही आचार्य थे तो उनके अन्यग्रंथ तुमारे संघमें क्यों न मान्य हुवे ?-तत्त्वार्थ सूत्रकी रचना बहुत उत्तम और चमत्कारी देखी इसलिये तुमलोकोने इसको वाचना पढना स्वीकारलिया, लेकीन इससे क्या हुवा ?-हकीकतमें यह ग्रंथ श्वेतांबर आम्नायहीका है, तुमारे आचार्योंको गंधजी इसमें नहीं. फिर देखिये !-एकादश जिने इस सूत्रमें केवलीको कवलाहार कहा, क्योंकि-ग्यारह परिसहमें-छुधादृषा पहेलेही गिनेहै, और तुमलोक केवलीको कवलाहार मानते नहीं, सोचो !-फिर किसका पक्ष सिद्ध हुवा ?-परिसहोंकी हेरफेर करनेमें-तुमारे आचार्योंने बहुतेरे उपाव किये लेकीन एक नहीं चला, तत्त्वार्थ सूत्रकी सर्वार्थसिद्धटीकामें टीकाकार कह रहे है-एकादशजिने न-संति-अर्थात् ग्यारहपरिसह जिनेंछोंमें नहीं कहना. इधर प्रमेयकमलमार्त्तंड ग्रंथके रचयिता कह रहे है-एकेन अधिका न-दश-एकादश-अर्थात् एक और दश-ग्यारहपरिसह जिनेंछोंमें नहीं, एसी एसी कुतर्क करनेमें तुमारे आचार्य अलबते ! चूके नहीं, परंतु झूठी दोम कितनी ?-अखीरमें झूठे आदमी सच्चे नहीं होशकते, प्रशमरति ग्रंथमें मुनियोंको धर्मोपकरण रखना कहा, सोचोकि-अगर उमास्वातिजी तुमारे आचार्य होते तो मुनियोंको नंगाही रहना न कहते ?-जब तुमलोकोके आशयसे उनका आशय जिन था तो वे खुदजी दिगंबर नहीं थे इस कहनेको कौन रोक सकता है !—

## ३०३ ( दिगंबर श्रावक फतेहखालजीके प्रश्नाकों उत्तर.

( ३९ ) तर्क, केवलीकों-विहार-धर्मोपदेश-और-उठना बैठना वगैरा क्रिया ही नहीं होती तो ज्ञोजन क्रिया करना कैसे संजवे?-

( उत्तर, )-यह बात गलत है, सबबकि-केवली चलतेवख्त जरूर कदम उठाते हैं, धर्म देशना देते शब्द उच्चारण करते हैं, और समवसरणमें सिंहासनपर बैठना वगैरा क्रियाजी जरूर करते हैं, इसका निषेध करना तुमारे आचार्योंका दृढवादहीसे हुवा, आजतक किसीने इस विषयमें कोई प्रमाणीक युक्ति नहीं बतलाई,

( ४० ) तर्क, -केवलीकों सबक्रिया स्वज्ञाव सिद्ध है, प्रयत्न सिद्ध नहीं, प्रयत्नका होना मोहविना नहीं होता.

( उत्तर, )-यदि सबक्रिया केवलीकों स्वज्ञावसेंही होतीहो तो प्रयत्न निरर्थक ठहरें, और प्रयत्नविना क्रियाका होना निर्मूल है, अगर कहाजायकि-केवलीकी चेष्टा प्रयत्नजन्य नहीं किंतु एक विलक्षण स्वज्ञाववतो है तो सवाल होनेकी जगह है कि-जैसे चेष्टा विलक्षण मानते हो वैसे प्रयत्नजी विलक्षण क्यों नहीं मानते ?-और विलक्षण चेष्टा जैसे मोहविना कहते हो वैसे विलक्षण प्रयत्नजी मोहविना क्यों न कहो ?-अगर कहाजायकि केवलीकी चेष्टा मनःपूर्वक नहीं तो इसीप्रकार प्रयत्नजी मन पूर्वक नहीं ऐसा माननेमें क्या दोष है ?—

( ४१ ) तर्क, -केवलीको रागका अज्ञावहोनेसे वचन व्यापारकाजी अज्ञाव है, धर्मोपदेशके, वख्त वे खुद नहीं बोलते किंतु श्रोता पुरुषोंकी पुन्यप्रकृतिके प्रज्ञावसे केवलीके मस्तकमेंसे आपोआप एक प्रकारकी ध्वनि पैदाहोतीहै, सोजी निरक्षरीनाद

अर्थात् अक्षररूप वाणी नहीं किंतु एक बड़े ज़ारी अवाजका गोंला जानना.

( उत्तर )—धन्य महाशय ! धन्य !!—आपकी तर्कज़ी तारीफ करने लाइक है जब बिना राग केवलीके मस्तकसे उपदेशरूप अवाज निकसना माना तो अक्षररूप वाणी न माननेका क्या हेतु है ?—क्या-ज्वाषपर्याप्तिनाम कर्मका उदय केवलीकों नहींहै ?—जो निरक्षरीनाद पेदा हो.

( ४१ )—तर्क, बीतरागकों रागज्ञावसे पूजना यह कौनसे जैन आगमका वचन है, ?—

( उत्तर. ) अंगशास्त्रोंमें पूजा दो प्रकारकी लिखी है, एक छव्य पूजा—दूसरी ज्ञावपूजा—छव्यपूजा—केशर चंदन और पुष्पवगे-राकी—और—ज्ञावपूजा—शुद्धमनसे गुणानुवाद करनेकी—पूजा—पूजक पुरुषकों हितकारिणो है पूज्यकों उससे कोई प्रयोजन नहीं, पूज-कका रागज्ञाव पूज्यकों अनर्थका हेतु नहीं, तुमलोक अगर केवल बीतरागज्ञाववर्द्धक प्रतिमाही मानते हो तो उस प्रतिमाकों रथपर क्यों चढ़ाते हो ?—क्या मुनिहुवेवाद वे कज़ी रथपर चढ़ेथे, ?—प्रतिष्ठाके समय—अंकुरारोपण—नादीपंगल—वास्तुपूजा—कलशारोह—जलयात्रा—शांतिचक्र—चर्चनभूषण—नाटकगीत—दोहावृद्ध—अभूता-लोश संस्कार—तिलकदान—और—अधिवासना—बगेरा—सरागज्ञाव-की क्रिया क्यों करते हो, ?—अगर कहोगे पीछले ज्ञाव जो उनोंने अनुभूत किये है उनका अनुकरण करना चाहिये तो सवाल होनेकी जगह है कि—बीतरागपर सरागज्ञाव करना तुमनेही खुद मंज़ूर रखा या नहीं ?—अगर कहोगे प्रतिष्ठाके बाद तो हम सराग

ज्ञावकी कोई बात नहीं करते ?-तो फिर सवाल पैदा होता है कि जो चीज बुरी है वो बीतरागकी प्रतिमापर एकवार जी क्यों करना ?-

अगर तुम-बीतरागज्ञाव वर्द्धक प्रतिमाके सच्चे ज्ञक्त होते तो एक निर्वाण कल्याणकके शिवाय पहेलेके चार कल्याणककी कोई क्रिया जिन प्रतिमापर न करते अथवा तो पांचो कल्याणककी पांचो प्रतिमा अलग अलग बनाते, सचित्तजलमें स्नान करना-चरणोपर तीलक लगाना क्या यह सरागज्ञाव नहीं है ?-सिंहासन-उत्र-जामंमल-वगेरा आम्बर क्या सराग ज्ञावके चिन्ह नहीं है ?-परंतु क्या किया जाय !-तुमारी समझकाही फरक है दिगंबरलोकोंका हठ विशेष करके इसबातपर ज्यादे देखागया कि-बड़ी बड़ी बातें करना लेकीन उसपर चलना नहीं,--मंदिरमें ओछव करना--गाना बजाना नाचना-क्या यह रागज्ञावके चिन्ह नहीं है ?-इनकोजी ओम्दो-केवल मूर्तिके सामनेबैठकर ध्यानही करलिया करो, परंतु फिरजी मंदिर तो बनवाना जरूर पड़ेगा, अलबते ! हुंढियापंथी बनजाओ तो न्यारी बात है, परंतु फिरजी शास्त्रवाचनेके लिये तो मकान बनानाही पड़ेगा, जंची जंची बात खेंचकर तो गुरुओंका विनाश किया अब औरजी धर्मकार्य उठाते जाओ,--कितनेही दिगंबर श्रावक हममें कह चुके हैं कि-क्या करे !-हमारे धर्माचार्योंने वस्त्रपेहनना छोड़कर खबर नहीं क्या सार निकाला ?-क्या शरीर--आत्माके लिये वस्त्र नहीं है ?-इस कालमें अगर हमलोक मुनिबनना चाहे तो नंगे हो नहीं सकते, वस्त्र रखे तो शिथिलाचारी कहजावे, गृहस्थपनेमें सोच फिकरके मारे बेसा धर्म पालन नहीं होशकता, आपलोगोंमें जैसा स्थविर

कल्पमार्ग इसकालमें मौजू है देशकाल मुजब बहोत ठीक है,-

फिर मुनियोंके संबंधमें कहते हो जो जिनेंद्रने किया सो उनके चेलोंको करना चाहिये, परंतु इतना नही सोचतेकि-कहां केशरी-सिंह और कहां हिरन ? तोर्थकरोंकेलिये समवसरणकी रचना होतीथी मुनियोंकेलिये न हुई न हो, पीछीकमंडलु जैसे मुनिको रखना कहते हो तोर्थकरजी रखते थे क्या !,-फिर प्राचीनताके बारेमें कहते हो कि-हम-श्वेतांवरोसें पहेलेके है लेकोन जब पुठा जाता है कि--तुमारे ग्रंथोंमें जिस आचारांग सूत्रकृतांगवगेराके नाम है वे अंगशास्त्र अब कहां है दिखलाइये !-तो-उत्तर नही मिलता, कोइ पंक्ति-या-तेरहपंथियोंका भाइ जो-अभिमानमे आनकर कुञ्ज कहता है तो-विच्छेद होगये-इसके शिवाय औरकुञ्ज नही कह सकता, परंतु सोचोकि-अंगशास्त्रही विच्छेद हो गयेथे तो जैन-संघ कैसे बनारहा ? दो हजारवर्षसें पहेलेके ऐसे मंदिर और मूर्त्ति बतलाना चाहिये जिनके उपर संवत् मीति-प्रतिष्ठाचार्यका नाम-लिखा हुवा हो, और वो प्रतिष्ठाचार्य दिगंबरपट्टावलीके शाखागणमें दाखिल हो.

स्त्रीको उसीजवमें मुक्ति होना इनकारकरके फिर ( २० ) नपुंसक-( ४० ) स्त्री और ( ४८ ) पुरुष-एकसमयमें मुक्त होना मंजूर रखा, क्या ! ऐसे ऐसे पूर्वापर विरोधी वचन सर्वज्ञप्रणीत हो सकते है ?-क्या संसारमें सजी स्त्रीयां अज्ञव्य ही है जो उन-मेसें कोइकी मुक्ति न होशके ?-क्या सभीस्त्री अपूर्वकरण न पाशके यही नियम है ?-भावचारित्र किसी स्त्रीको प्राप्त न हो यहजो क्या दिगंबरचार्योंने ठेका लिया है ?



इसप्रकार प्रश्नोत्तर हुवे-चौरासीबोलोंका वर्णन पुछा-साक्षा-  
नुसार उनका उत्तरदेकर शंसयदूर किया, भितने तर्कवितर्क होते  
रहे तबका वर्णन यहां लिखना चाहे तो कहांतक लिखे, ?-

( दिगंबरश्रावक-फतेहलालजीके प्रश्नोका उत्तर )

॥ समाप्त ॥

## [ चिकित्साविद्या. ]

वैद्य वैद्यकों उचित है कि-किसी प्रकारका नशा नखावे.  
बदचलन न चले. धर्मपर धन्य रहे और रोगियों हिम्मत देता  
रहेकि-आप कुछ चिंता नकरे बीमारी जल्दी आराम होगी,  
लोज ज्यादा न रहे-ठलरुपटमें कोई आपधि बीमारको न लि-  
खावे. और खूबहेतुकाल जावको विचारकर परहेज उनचो-  
जोंका करावे जो उसरोगकों हानिकारक हो. जो जो चीजें उस  
बीमारीकों हठानेवाली हो उसकों दवाकंसहाय खानपानमें मदद-  
गार रहे.

विचारकों चाहियेकि-वैद्यके वचनपर धन्य रहे औषध खा-  
नेमें कमीबेसी न करे-और दवाके लिये जो कुछ सर्व पडे सुछे  
दिलमें करे, धन माल और सजाना शरीर तंडरास्व नहो तो  
किसी कामके नहो कुछ बीमारको उत्पत्ति मिथ्याआहार-और  
मिथ्याव्यवहारसे होता है, आदमोंकों चाहियेकि-उससे बचे,

क्यादे कमजोम सेवनेसे बीर्य कम हो जाता है, अजोर्ण-बमेह-क-  
मजोरो-कमेरा अनेक बीमारी पैदा होते है,

योहीसी कुछ नाडी परीक्षा लिखते है, वैद्य नाडी बर्दकी  
जीमणो हाथकी और स्त्रीकी बायें हाथकी देखे. और इसी तरह  
पांवकीजो नाडी-मर्दकी जीमणी-स्त्रीकी-बायी देखे यहां कोई तर्क  
करेकि-स्त्री पुरुषके लिये तो ठीक समझलिया लेकीन जब नपुं-  
सककी नाडी देखना तो क्या करना चाहिये ?-(इसका खुलासा-)  
नपुंसक दो तरहके होते है, एक पुरुष नपुंसक-इसरा स्त्री नपुंसक;  
पुरुष नपुंसककी जीमणो हाथकी-स्त्री नपुंसककी डायें हाथकी दे-  
खना. बिमारके हाथकी नाडीपर वैद्य अपनी तीन अंगुलीयां र-  
खकर इसबलाइमतासे देखेकि-जिससे रोगोको तक्रजोफ न हो  
और रोग पहेठानमें आजाय, नाडी सर्प या जोंककी-तरह टेढ़ी-  
वांकी चले तो वैद्य उसे वातवृद्धि समझे, अगर मेंढककी तरह  
कूंदती हुई चले तो पित्तवृद्धि-और कबूतरकी-या-हंसकी-तरह  
लचकाखाकर चले तो कफवृद्धि समझे.

डाक्टरलोक नाडी इसरीतरह देखते है-वें कहतेहै एक वर्षके  
बच्चेकी नामी एक मिनिटमें ( १४० ) खटके देती है, दो वर्षके  
बच्चेकी नामी ( १३० ) और तीन वर्षके बच्चेकी नाडी ( ११० )  
खटके देती है, तीन वर्षमें लमा सात वर्षके बच्चेकी नाडी ( १०० )  
खटके देती है, सात वर्षमें लमा चौदह वर्षके बालककी नामी  
( ८५ ) खटके देती है, चौदह वर्षमें लमा सतराह वर्षके लड-  
केकी नामी ( ८० ) खटके और सतराह वर्षमें लमा पचास वर्षके  
पुरुषकी नामी ( ७५ ) खटके देता है. पचास वर्षमें लेकर इसी

वर्षके बुढ़ेकी नामी ( ६० ) खटके देती है. इससे कमी खटके देवेतो वैद्य उसे शीत-याने-वातहृष्टि जाने. और ज्यादा देवेतो पित्तहृष्टि जानें.

रोगीकों सुंदर साफ वायुयुक्त मकानमें रखना चाहिये, पलंग कोमल बीठोंना साफ-और-नर्म हो, -मुखलोग रोगीकों ठोटे और अंधेरे घरमें मालदेते है इसमें उसकों बहुत तकलीफ हांती है, बिमारी जी बढ़ती है, रोगीके बीठोंनेकों रोज धूप और हवामें मालदेना चाहिये. हरइमेश-या-दो तोन दिनकेबाद रोगीके बीठोंनेकी चदर बदलदेना ठीक है. पहेननेके कपमे जी निर्मल होना चाहिये, मलीन कपमेसे रोगीका चित्त बिगमता है. हरव-रुत रोगीकेपास बहोत आदमीओंका रहना अच्छा नही. लेकीन रोगीकों एकीला रखना जी योग्य नही. अत्यंत असाध्य रोग जी होजाय तोजी रोगीमें न कहे कि-तुम इम बीमारीमें मर जा-उंगे. बल्कि-कहता रहे कि-तुम जलदी अच्छे हो जाउंगे. यह बीमारी थोमी और ठोटी है. रोगीके सामने सदा शास्त्रकी बात सुनाता रहे, रोगीकेपास बैठकर रोवे नही. रोगीकों बहोतदिनतक एक घरमें न रखे, बीचबीचमें घर बदलता रहे. अगर उस जग हका-वायु-या-जल अनुकूल न हो तो दुसरे नगरमें लेजाय. रोगका इलाज मुझवैद्यसे कराना, मुख्य वैद्य जानका जोखम है. वात पित्त और कफ जबतक सम रहे बीमारी पैदा नही होती, जो रोगी पथ्यसेवन करता है उसकों बिना औषधही अच्छा होताहै. दिनमें थोमीसी देर हांसी खुशीकी बातें करना-परिश्रम ठोम-कर आराम जोगना-और-भमाणकेसाथ जोजन खाना-शरीरके

जिसे हितकारी है. दिनमें सौना-रातको जागना-बहोत खाना-ज्यादे नसा करना-अधिक मैथुन सेवना-अधिक बोलना-ज्वादे बाँज उठाना-अधिक गर्मी और शीतमें फिरना-मलमूत्रकी बाधा-कों रोकना-और गीले घरमें रहना बीमार होनेकी निशानी है.

जो शरूश दातून नहीं करता उसके मुँहमें बदबू आती है. दांत मज्जीन रहते हैं, मसूमोंमें दर्द पैदा होता है, दांतोंकी जम शिथिल होजाती है, माँह दूखने लगती है, जीव्हापर और ग. लेमें बमेबम रोग पैदा होते हैं. अगर मुखमें कोई ज़ारी रोग-हुवा हो तो न करनाज़ी ठीक है, खटाइ-करमी वस्तु-और-रुखाअन्न-मुखरोगीकों खाना अच्छा नहीं.

वाताधिक प्रकृतिवाले पुरुषकों किस तरह बर्तना चाहिये ? क्या ! क्या ! चीज उसे पथ्य और अपथ्य है !-मुनिये !-प्रथम तो बादीके शरीरवालेकों हवामें बचाव रखना ठीक है. नागरवे-लकापान-केशर-पीपरा-मूल-सतावर-गोखरू-अरनी-खसका जल-सूँठ-बगेरा जितने बादी शांत करनेसे पदार्थ है और चाँदीसो-नेकी खाख बगेरा जितनी रसायन इस रोगकों दूरकरनेवाली है वैद्यकी सलाहसें उपयोगमें लाना अच्छा है, बहोत बोलना-अभि-का तापना-और-ज्यादे कामजोग करना इस रोगवालेकों अच्छा नहीं, वर्षा रतुमें बादीवाले मनुष्य सुखी नहीं रहते. बूढ़ेपनमें बादीरोगवालेकों जीनेकें मरनाही अच्छा मालूम देताहै. ठंमाजो-जन-बरफ-चने मूंग-सुपारी-बादीरोगवालेकों हानिकारक है.

पित्त प्रकृतिवालेकों तरगरम शरबत-इक्षुरस-मिश्री-केले-अ-नार-करेले-बदाम-पीस्ते-कड़ूबे और मीठेरस-सेवन करना अच्छा

है: चंदनाकी चंदनीमें सोना-नीतमान सुनना-बागवनीमें बूझ-ना-बाग-देखना-पित्तप्रकृतिवालोंको विशेष आनंदकारी है. नदी-समुद्र-सरोवर-कनारे बैठकर हवाखाना-फूलबूझना-शरीरपर उंढे-लेंप लगाना-और-जलाशयको देखते रहना-पित्तप्रकृतिवालोंको बहोत रुचता है, बल्कि नू-स्वप्नमें जी यही हाल रहता है कि-आज तो हम खूब नहायें, आज पहामकी हरियालीमें और जलके छरनोमें खूब मोलतेफिरे, ज्ञापण करना-चर्चावार्तामें घंटोंतक म-गजवशी करना यह तो पित्तप्रकृतिवालोंकी जीवनग्रंथी है. बा-तोबे लमादो तो खानापीनाजी भूल जाय. घी-दूध-गैहू-चावल-दाख-सोनेचांदीकी जस्म-लोहेकी जस्म-बगेरा औषधी-बैद्यकीस-लाइसे खाना अच्छा है इवादार मकान-या-तलघरमें रहना पि-चाधिकको हितकारा है, तपाखूषीना-धूपमें मोलना-और अधिक कामजोग करना पित्ताधिकको बुरा है, मलमूत्रके बेगको कजी न रोकना चाहिये. क्रोधकरना-द्वारमिलेपदार्थ खाना-रास्ता च-लना-इस रोगवालोंको बहोतही बुरा है परंतु क्या किया जाय!-पित्तवालोंकी प्रकृतिहां तामसी होती है तेल-गुम-हींग सरसों-इ-मली-और-संपूर्ण विदाहकारी पदार्थ पित्तरोगवालोंको हानिका-रक है. नागरबेलके पानजी बहोत खाना ठीक नहीं.

जिनका शरीर कफप्रधान है उनको परिश्रम करना-रास्ता चलना और-प्यास लगी हुईको रोकना अच्छा है. चने-भूंग-जव-कुलथी-राइ-द्वार-चरपरे और कसाबलेरस-सरसोंका तेल-सोंठ-कालीबीर-बीपर केरा चीज कफप्रकृतिवालोंको पथ्य है. उम-र-दूधके पदार्थ-केल-सखे-बिमकीन-जारी-कीतल-और-याकन्या

कककारी स्नानघाम और औषध-कफरोगवालेको विष समान है; ठोस देना चाहिये.

जो लोक पढ़नेलिखनेके अभ्यासी है उनके मस्तकमें जरूर कमजोरी होजाती है, उन्होंको चाहियेकि-उमासे बादाम-उमासे मिश्री उमासे ताजाधी-और-दोरति केशर-इन चीजोंको बारीक पीसकर मल्हममाबनाके एक मीचीमें रखे, और दो दिनतक सुंघते रहे, मगजको ताकात पहुँचेगी. तमाखूपीना ठंमेजलसे स्नान करना-और-ज्यादे रास्ता चलना-मस्तकरोगीको बुरा है. घी-दूध-और-गेहूँके बने पदार्थ स्नाना अच्छा है, तालवेपर चमेलीकातेल खूब मसलके उसपर गुलाबजल ढाँटना-या-चमेलीके फूल सूँघना-मस्तकरोगीको लाजकारी है, जिसकी आंखोंका तेज मस्तककी खूशकीके कारण घटगयाहो उसके सीरपर ताजा मख्वन मलना अच्छा है. मलमूत्रकी बाधा रोकनेसे और मस्तकके केश न सुधारनेसेजो सीरमें दर्द पैदा होता है. मस्तकको ठंडे जलसे धोकर जब केशोंको सवारना तो कंधीसे धीरेधीरे सवारना चाहिये. उल्टेबाज बहानेसे सीरके चमकेको इजापहोचती है. स्नानमिली कोई चीज मस्तकमें लगाना ठीक नहीं. शरीरकी शोभा यातो वस्त्रआभूषणसे-या-केश शृंगारसेही कियीजाती है, केशही मनुष्यकीसुंदरताका विशेष साधन है. स्त्रीकी खूबसूरतीकेलिये तो बालही मुख्यहै, बालबिगमनेसे मनुष्यका सबहीरूप बिगम जाताहै. जिसमनुष्यकी पिताधिकप्रकृतिहो उसके बाल जल्दी चेत हो जातेहै, कश्मनुष्योंको थोमीउपरमेंही बालउम्रजातेहै, जोबहुज्य मस्तके रंगरूपपरगयाहो उसके केश भीमे होतेहै, जि-

सको ढाढीमूछ बिल्कुल न आवे उसको नपुंसक समझना चाहिये.

सबप्रकारके रत्नोंसे नेत्रोंको अनमोलरत्न कहागया है, अधिक पढ़ना-अंधेरेमें बारीक चीजको देखना नेत्ररोगवालोंको बुरा है. अधिकी तेजीकेसामने आंखोंकीज्योति बिल्कुल तवाह होजा-तोहै. लिखने पढ़नेवाले मनुष्योंको चाहियेकि-हरहमेश पांचसात तोले घी जरूर खायाकरें. एकीला घी न खाया जायतो रोटी-या-दालमें मिलाके खाना-या-तोलेजर बादामकी गिरी-तोलेजर ताजाघी-और चारतोले मिश्रीमिलाकर सवेरेही खाना अच्छाहै. लेकीन लालमीरच और हींग जबतक नओमोंगे फायदा नहोगा आंखके उपाव दो-यातो चश्मा लगाकर कामलेना-या वैद्यकी सलाहमें कोई औषध खाकर इलाज लेना. नेत्ररोग बहुधा न-जलेके कारण उत्पन्न होतेहैं, इस लिये जिस मनुष्यके नजलेका प्रकोप होकर नेत्रज्योति मंद होजाय-छालरहे-पानीऊरे-अथवा चकाचौंध लगजाय-इत्यादि रोग शांत करनेकेलिये निम्नलि-खित उपाव अति उपयोगीहैं. बादामकी गिरी तोले (३०) तीस कालीमीरच उमासे-बमो इलायचीके बीज उमासे-बंसलोचन उ-मासे-दालचोनी एकमासा-केशरदोमासा-प्रथम बादामकी गिरीको रात्रीसमय जलमें र्जीगोना, सवेरे उसका मुख बीलका उतारकर बटेपर सफेदगिरीकी पीठी पीसना, जबबहोतबारीक होजाय उसमें कालीमीरच-इलायचीके बीज-बंसलोचन-और-केशर पीस कर मिलादेना, परंतु केशरको पानीमें धीसकर मिलाना चाहिये जिससे संपूर्ण पीठीपर रंग आजाय. फिर उसपीठीकी एककढा-इमें गौका ताजापूत चढ़ाकर पकोमीकीतरह ढोढोढोटी ढली भू-

नलेनाचाहिये. जब उसमें कच्चापन न रहे एकथालीमें जुदाउतारता जाय. सब पीठी इसीप्रकारभूनजाय तब उसमेंबराबर मिश्रीका चुराहालकर और पकोडीयांका चुराकर किसीमिट्टीके चीकने बर्तनमें रखना, तीनदिन हवासें बचाना. फिर सांज और सबेरको एकएक तोछा रौज स्नाना. सटाई-तेल-और-लालमीरचका बचावकरना-इससे नजलेकेसबप्रकारके नेत्र और मस्तकके रोग नष्ट होते है.

कानमें अंगुलीघालकर-या-तुणका बगेरासें बहोत उकेरना नही चाहिये, जगह नाजुकहोनेसें सहजमें बीमारी पैदा होजातीहै, खुटखुट शब्द होना-जलनहोकर पींव बहना-ये सब कर्णरोगके विन्है. इसरोगवालेको बहोतबोलना अच्छा नहीं. इसके उपाव अनेकहै लेकिन जिसको जो माफिकआजाय उसकेलिये वही अच्छा. आकवृक्ष जो जंगलमें होताहै उसके पीलेपत्ते लाना, और कपडेसें पुंछकर नाममात्र घी उनपर लगाना. और फिर गर्मतवेपर-या-किसी और बर्त्तन थाली बगेरापर जिसके नीचे अभिष्टो उनको गर्मकरना और फिर कानमें निचोड देना. परंतु इतनाध्या नरहेकि-पत्तोंपर घी विशेषभी न लगे और रुखेभी न रहे. और पुंछनेमें उनपर मेलभी न रहनेपावे, पत्तेभी जो जमीनपर पडकर पीलेपडजातेहै वे कामके नही. जो वृक्षपरही पककर पीलेहोजातेहै वे लाना चाहिये.

अजीर्णरोग सबरोगोंकी जन्मभूमिहै, चिकित्साशास्त्रका-बचनहैकि-अजीर्णमें भोजन नहीजीमना. अच्छीतरहभोजनपचनेपर कोईरोग पैदानहीहोता. अजीर्णसें जबतकदूसरीबीमारी नशुद्ध



हो उसके पहले इसका उपाय करना जरूरी है, पतला दस्त आना—पेट फूलना—खट्टी डकार आनी—ये अजीर्ण बुबुके चिन्ह हैं। अजीर्णकों मिटाने के लिये कोई चूर्ण—या—शंख वटी की गोली—खाना चाहिये। भोजन थोड़ा जीमना—कोस दो कोस की मजल करना—या—दो चार घंटे दिन में बामेपासे सो रहेना अच्छा है। रात को भी नव घंटे से ज्यादा नींद लेना चाहिये। इसपर भी अजीर्ण कम न होतो उत्तम वैद्य की सलाह से चिकित्सा करना लेकिन बेपरवाह न रहना।

अजीर्ण होने से बुखार की पैदाश है, जब तक जठराग्नि तेज बनी रहे बुखार कभी नहीं आता। बुखार देखते में कमजोर मालूम देता है लेकिन सब रोगों का सिरदार यही है। इसके होते सभी बीमारीयां हाजर हो जाती हैं। रौज आने वाला बुखार—दूसरे दिन आने वाला—तीसरे दिन आने वाला—चौथे दिन आने वाला—ठंड देकर आने वाला—मज्जागत—धातुगत—और हाड ज्वर—बगेरा अनेक भेद इसके हैं। दस्त न आना—भोजन न पचना—शरीर दुबल होना—ये—सब ज्वरों के चिन्ह हैं, जब तक ज्वर न छूटे—छूटने पर भी जब तक शरीर में ताकात न आवे तब तक काम भोग करना नहीं चाहिये। इससे स्त्रीकों और पुरुषकों दोनोंकों नुकसान है, बुखार में एकादो दिन भोजन जीमना बंद रख जाय तो भी कोई हर्ज की बात नहीं। स्निग्ध भोजन ज्वर रोग में बुरा है, आधार भूत थोड़ा और हलका खानपान लेना बुरा नहीं।

बुखार की दवा—संखीया शुद्ध तोला एक—इडताल शुद्ध तोला एक डी का मारी तोला दो—इनको बारी कपीस कर थोहर के पत्ते के रस में तीन दिन तक खरल करे—बाद तीन दिन तक आकड़े के पत्ते के रस में खरल करे—फिर सींगरफ मासा (६) और—बछनाग शुद्ध मासा (६) भू-

रीकपीसकर उसमें साभीलकरे. बाद तीनदिन गांजेके रसमें खरल करे, फिर तीनदिन नींबुकेरसमें खरलकरके एक पींड बनावे, बाद थोहरकेपत्ते (२०) तोले लेकर कूटके उसकी नुंगदी बनाके उस-पींडको उसमें रखदेवे, दो पींटोके सकोरे लेकर उसमें सबको बंदकरे, उसपर कपड़ाबांधकर मोटोलगाके दोशेर जंगलीछाणैकी आंचमें फूके, फिर उसीतरह आकडेके पत्तेकी नुंगदीमें और गांजे के पत्तेकी नुंगदीमें अलगअलग फूके. बाद निकालकर नींबुकेरसमें खरलकरे और मूंगजितनी गोली बांधे. बुखारवालेको—एकगोली शुभ्र और एक श्याम—देवे. शीतऔरवर्षारुतुमें अद्रककेरसमें—या सोंठके काडेमें—और—उनालेमें घांके शाय थोड़ी मिश्री मिलाकर देवे. सबजातके बुखार—और—त्रिदोष—इससे शांतहोमें.

चिकित्साविद्या द्वादशांगवाणीकेज्ञानसे बहारनहीं. रसायण प्रकरणमें धातुओंकीभस्मबनानेका जहां अधिकारहै अनेकजडीबूटीकेरस निकालकर उसमें डाले जातेहैं, चूर्ण—गुटिका—औषधिभि-श्रिततैल—और—एकीप्रकारके पाक बनानेमें अनेकप्रकारकी वन-स्पति—कूटपीसकरडाली जातीहै. अगरकोई महाशय समझेकि—ऐसे हिंसकप्रयोगसे मुनियोंको क्याजरूरतथी?—तो—उसके जवापमें यह कहतेहोकि—गणधर और पूर्वाचार्य—मुनि थे या गृहस्थ?—अगर मुनि थे तो बम !—इसीपर सोचलो! उन्होंने चिकित्साविद्यामें क्यों ऐसे प्रयोग लिखे?—कि—जिसमें अनेक जडीबूटीयोंका छेदनभेदन कर-ना/पड़े?—इकोक्त तुमारी समझकाही फर्कहै उन्को इरादा यहथा कि—बुनियादारोंसे ठीकठीकतोरपर धर्म—अर्थ—और—कामका—पालन होशके. शरीर एक—गाड़ीके—समान है उसके पैयेमें जबतक तैलब-

मेराचीजें नहीढालीजाय तो वह चले नही. उसकों चलानेके लिये चिकित्साविद्या एकपरमसाधनहै. आजकलके नयीरोगनीवाले जो कि अपनी अकलकेसामने दूसरेकों कुछमाल नही समझते उनकों समझानेकेलिये अगर हजारयुक्ति दियाजाय तोभी बृथाहै.

जिसकों श्वासरोग याने दमेकी बीमारीहोजाय उसे चाहिये कि-सबसे पहले काम भोग सेवना बंद करे. श्वासरोग जेसी कोई भयानक तकलीफ दुनियामें नहीहै. इसबीमारीसे शरीर दुबला होतेहोते क्षीणहोजाताहै. रातकों यहरोग पुरीतकलीफ देताहै, उसवख्त ऐसा विचारआताहैकि-इसबीमारीमें जीनेसे मरनाहीअच्छाहै. छातीमें बोजसा मालूम पडना-श्वासखींचनेमें जोर लगनामुंह फीका और हाथपैर ठंडे होजाना-शरीरमें पसीनाआने लगना-कफकेसंगखून गिरना. नींद बिल्कुल न आना-बगेरा उपद्रवहोनेलगते है. यदि शरीर तंदुरस्त रखनाचाहतैहो इसरोगके होते ही ईलाजकराना शुरू करो. रोग और शत्रुकों बढनेदेना बिल्कुल मनाहै. श्वासरोगकी औषधी,-हडतालबरकीतोलाएक-इसकों(१०) दक्षनींबुकेरसमें खरलकरे-जब सुकजाय-बाद अबरखके दो टुकडे बीलस्तभरलंबे लेना, उनमेंसे एकटुकडेपर वह हडतालका घुटा हुवा चुरा बीचमें फेलादेना. दूसराटुकडाउसपर धरके कोयलेकी थोड़ीसीआग नीचे और थोड़ीसीउपर रखना, जब धुआंनिकलना शुरूहो और बंदहोजाय देखनाकि-हडतालका क्यारंगहै?-अगर सुर्खरंग होगयाहो तो निकाललेना और पीलारहाहो तो फिरआंच देना. इसप्रकारबनीहुई हडतालतोलाएक-मोतीबारीकमासादो-चांहीकेबरकमासेछ-सोनेकेबरकमासाएक-कालीमीरकमासादो-अज-

बायनकेफुलमासाएक-लोबानकेफुलमासेतीन-इनसबको आकड़ेके पत्तेकेरसमें तीनदिन खरल करे. जब गोलीबाधनेकेलाइकहोजाय भ्रूंगसमानगोली बाधे,-एकगोली भुभह और श्याम पानबीडीमें खावे. शरीरमें लाक्षादितेल-या-चंदनके तेलकी मालीस करे. स्नानमें तरचीजखावे. आराम होगा.

कोषवृद्धिरोगवालेको हरवस्तु-जांधिया-या-कोपीनसें-कसा हुआ रहना चाहिये. बहोतठंडाइपोनेसें-इसरोगकी पैदाशहै. भोजनजीमके तुरत पुष्कलजलपीन-चारेदिन बैठेरहना-और-ज्यादे खटाइखाना-इसरोगवालेको बुराहै. ग्रंथीमें दर्द होना-चलतेवस्तु तकलीफ पाना-और-नामर्दहोजाना-इसरोगके चिन्हहै, कोषवृद्धि रोगकी चिकित्सा-लाजवंतीकेपत्तेतोलाएक-वचशासेछ-सरसोंमासे छ-कूठमासे छ-पींपरछोटीमासेतीन-सोंठमासे छ-अकलकरातोला एक-एलवा तोला दो-अफीमका तेलतोला एक-पहेत तोला दो-इनसब चीजोंको आकड़ेकेपत्तेके रसमें दोदिनतक खरल करे.बाद तोलेतोलेभरकी गोली बनावे. जब जरूरपडे पानीमें धीसकर थोडासागर्मकरके कोषग्रंथीपर लेप करे, और अग्निका सेंक देवे-तमाखूका पत्ता उपर बांधे. फायदा होगा.

सुनीबवासीर-याने-अर्शविकाररोगहोनेसें गुदामें पीडा होती है, लोही बढना-दस्तआतेसमय बडेबडे कष्ट भोगना-और-गुदामें जलन होना-सब इसीरोगके चिन्ह है. इसरोगवालेकों देरमेंपचवे-वाली-और-गर्म-वस्तु खाना ठीक नही. जलदीपचनेवालीचीज दर्हाका-मठा-और पकेफलखाना अच्छाहै. गुदामें बहोतपीडा होतो लोबान-या-धांगका-भुंवा लेना ठीक है, भोजनमें बदामका तेल

खाना गुणकारी है. नींबोलीकेबीजतोले पांच-रसोंततोले पांच-हा रज्जुंगारके बीज तोले पांच-कालीमीरचतोला सवा-मीलजाय तं हडतालकी भस्ममासा एक-इनसबचीजोंको गेंदेकेपत्तेके रसमें-३ यवा भांगकेपत्तेके रसमें-एकदिन खरल करे. फिर चनेके बराब गोली बांधे-बादीबवासीर होतो दोगोली शुभह और दोगोली श्याम ठंडे पानीकेशाथ खावे. और वही एकगोली घीमें घीसके गुदापर लगावे. और एकगोलीको आगपरधरके धुनी देवे. बादी बवासीर दूर होगा. खुनीबवासीर होतो एक गोली सवेरे और एक श्यामको खाकर उसपर पवाडेकेपत्तेका रस तीन तोला पीइ जाय, उपर लिखेमुजब धुनीदेना और लगाना शुरु रखे. आराम होगा. यह औषध (७) सातरौज जरूरलेना चाहिये. कुच्छबीमारी बाकी रहेतो (११) रौज लेवे.

एसा कोइमनुष्य नही दिखता जो वीर्यरोगसेपीडित न हो, सबको एकनएक वीर्यरोग लगाहीरहताहै, इमरोगकेपैदाहोनेकी जड कइ है, ज्यादा कामचेष्टासे वीर्यक्षीण होजाताहै, अधिकइंद्रिय चालना आदि दोषोंसे वीर्य पतलापडजाताहै, वीर्यमें कमजोरीहो-नेसे स्वप्नदांष होनेलगताहै, स्त्रीयोंके देखने-छूने-और-यादकरने मात्रहीसे वीर्यपातहोजाना-मगजमें कमजोरी-स्पर्शशक्तिकी न्यून-ता-और चलतेवरत चकर आना-बगेरा बढीबढी तकलीफें पैदा होतीहै. इसका उपाय न लियाजाय तो अखोरमें-आदमी सीरडो होजाताहै. इसरोगवालेको सबप्रकारसे बलबढानेवाली चीज खा-नाचाहिये. चावल-घी-दूध-सबप्रकारका मँवा-घीमेंपकी खीचडी-गेंहूकी रोटी-पुरी-या ताजीमीठाइखानाअच्छाहै. लेकिन बहुतदेरमें

पचनेवालोचीज एकवारही पेट भरके नहीं खानीचाहिये. दही-खटाइ-वासीअन्न-बीगडीहुइमीठाइ-वीर्यरोगवालेको हानिकारक है, स्त्रीविषयकचिंता-अथवा-उसकेमीलनेका उत्साह-बिल्कुलछो-डदेना चाहिये. सवेरे जंगलकी हवामें घूमनेको जाना-शरीरको सुगंधि तेलसें मर्दनकरके स्नानकरना-और-उसीसमयभारीकपडा ओढलेना अच्छाहै, इसका उपाव न लियाजाय तो प्रमेहरोग पैदा होजाता है, पेशाबकेसंग धातु-या-रुधिर-गिरना-बारंबार पेशाब-आना-पेशाबके रास्तेमें घाव होना-और हाथपांवके तलवोंमें जलनहोना-य सब प्रमेहरोगके चिन्हहै, मैथुन-इस्तमैथुन-शक्तिसें ज्यादा मिहनत-और-रातको जागना-इसरोगवालेको बुराहै. उत्तमवैद्यसें इसकी चिकित्साकराना व्याजबहे, आगेचलकर इसका उपावभी लिखेंगे लेकिन मुखवैद्यसे इलाज करायाजायगा तो जानका जोखमहै, गुड-तेल-लालमीर्च-सोंठ-तमाखू-खट्टे और निमकीनपदार्थ-खाना अच्छा नही.

स्त्रीको बहोतसे रोग ऐसे होतेहै जो लज्जाकेपारे दूसरेको क-हनहीशक्ती, रुनुशूल-या-माहिनारुकनेकेशिवायअधिक रज गिरना पेटमें पीडाहोना-गर्भधारण न करसकना-बेसमयगर्भ गिरना-प्रदर श्वेतप्रदर-रक्तप्रदर-गुल्म-वगेरा-अनेकरोग ऐसे होतेहै जिससें रा-त्रीको चमक उठना-आलजंजालस्वप्न दिखने-नींदमें गुडगुडाना-शरीर दुबला होना-छातीमें गभराट-वगेरा कइ तकलीफें पैदा हो-तेहै, मुखलोक कहदेतेहै भूत पिशाचकी इसपर छाया है लेकिन नही सोचतेकि-इसको रोग क्या है!-रोगको देवकारण समझना बड़ीभूलहै, कितनीक स्त्रीयां एसीभी होतीहै जो कोरापापंड क-

रती है, घरका धंदा नहोशके तो कहदेती है मेरा शरीर भारी है मुझे भूतणी आनकर सताती है, महाशय ! अगर इसकी परीक्षा करना चाहो तो एकछोटी शीशीमें छ मासा ताजा चुना-और-छ मासा न-बसादर पीसाहुवा मोलाकर उसस्त्रीकी नाकको मुंघाना, भूतहोगा तो कुछ परवाह न करेगो-और-पापंडहोगा तो चिल्ला उठेगी. जिसके शरीरमें सबेही देवछाया हो ऐसा समझाजाय तो उसे भ-विष्यत् वृत्तांत पूछना-या-मुठीमें कोई चीजलेकर कहना बतला ! इसमें क्या चीज है ?-अगर फोरन उसचीजका नाम बतलादेवे तो अलबते ! देवकारण समझना, और फिर पुछना कि-आजसे दश-रौजके बाद क्या बनाव बनेगा ? अगर जैसा कहे वेसाही उसरौज बने तो निश्चय देवकारण समझकर उसका इलाज करना.

बहुधास्त्रीयोंके रुधुर्भ रुकजाता है और बहुधास्त्रीयोंके बच्चे-दाहोनेकेपीछे मल साफ न होनेकेकारणभी उदर-तथा-नलोंमें बि-कार उत्पन्नहोजाता है, बाद वहस्त्री शरीरसे पीलीपडजाती है. हाथ पांवफुटते रहते हैं, शिरमें दर्द और भोजनपर अरुचीहोती है, कोई वस्तु प्यारी नहीं लगती, इसकासाधारण इलाज लिखते हैं, मुलेठी ( जेठीमध ) छ मासा-गुडवच छ मासा-पोस्त ( अफीमडोडा ) एक मासा-हलदी दो मासा-पुराना तोनवर्षका गुड देढतोला-और दे-शीचूना एकमासा-इनसबको ( २० ) तोलाजलमें अग्निपर चढाना, जब एकतेपकते ( १५ ) तोलारहजाय-अग्निपरसे उतारकर कपडेसे छाने और ठंडाकरके स्त्रीको पीलादेवे, एसातीनरौज सबेरे कर-नेसे रुकाहुवामल पुनःप्रवाह होकर शरीर शुद्धहोजायगा. यदि दबा गर्मी ज्यादाकरे तो एकएकदिन तथा दोदोदिनका अंतरदे-

कर पिलाना, और जो एकदिनमेंही दवा देनेमें मलशुद्ध होजाय तो फिर दूसरी दफे देनेकी कोई जरूरत नहीं. यह रोग कि-जिसकी दवा (उपरलिखी गयी है) दो कारणसे उत्पन्न होता है, एक तो किसी स्त्रीके बालक पैदा हुआ हो और वह अपनेपतिसे भोग करनेकी शिघ्रता करे. कमसे कम बालकके जन्मदिनसे लेकर चालीशदिन भी पुरे न होने देवे तो इस रोगकी जड़ लगे, चिकित्साशास्त्रोंका वचन है कि-बालक जन्म बाद (४०) दिन कामभोगमें बचाना चाहिये. जो नहीं बचाते है वे जरूर रोगी होजाते है. दूसरा कारण-यह भी है कि-रुतुधर्मवती स्त्री तीनदिनके बीच बीच अगर पुरुषके पास जाय तो उक्त रोग पैदा हो जाय, रुतुवती स्त्रीसे संभोग करनेमें पुरुषको भी बड़ी तकलीफ पड़ती है, पुरुषचिन्हमें अनेक तरहके कष्ट और गर्मीके रोग पैदा होते है.

स्त्रीको वीर्यरोगका चिकित्सा-सुखे हो-या-सफेद हो-इसद्वारे दोनो रोगोंको फायदा है. मुशली सफेद तोले दश-गौका ता-जाघी तोले दश और-मिश्री तोले दश-दोनोंको कूटपीसकर कपड छीनकरके धीमे मिलाटना और-चोइसपहर एककलाइकियेहुवे डबेमें रखछोटना-बाद वीर्यरोगवाली स्त्रीको चाहिये कि-हरहमेश तोले तोले भर खाते रहना. खानपानमें तेलमीरचका परहेज रखना, सात रोजमें आराम होगा, (दूसरी दवा) मुशली काली-मुशली सफेद-उटंगनके बीज-सेबलकी जड़का छीलका-गोखरु छोटे-ये चीज तोले तोले भर लेना और कूटपीसकर बारीक कपडेसे कपड छाणकरके छमासे सुभह और छमासे श्याम-गौके ठंडे दूधके साथ फाकना, परंतु इतना याद रहेके-छमासे एकदम न फाके-थोड़ा थोड़ा हथेलीमें लेकर फाकने जाना और दूधके घुटकेसे उतारने जाना, वीर्यरोग



प्रदर-दूरहोगा. ( अगर किसीको यह मंजूरहोकि-स्त्रीको गर्भ रहे तो ) इसीदवाको रजस्वलासे साफहोनेकेबाद याने पांचमें रौजसे लेकर आगे पांचरौजतक उसीतरीकेसे खावे जो उपर लिख चुके है. अकेलीस्त्रीकेलियेही यहदवा नहीं बल्किन् उसका पतिभी बराबर पांचरौजतक खातारहे, कामभोगसेवना पांचरौज मोकुफरखे. बाद संभोगकरनेमें गर्भस्थितिभी हो सकती है.

( गर्भस्थितिहोनेकी दूसरी चिकित्सा )-छमासे आसगंध कूटकर एकीश तोले पानीमें इतना औटानाकि-साढेदशतोले रह जाय उसको चूलेसे नोचे उतारकर उसमें दशतोले कचागौकादूध और अढाइतोले घी-सामीलकरके रुतुधर्मवतीस्त्री जिसदिनरुतुधर्म आवे उसदिनसे लगाकर पांचरौजतक सवेरे सवेरे पीयेतो उसको गर्भरहनेकी संभावना है.

( दूसरी चिकित्सा )-पारमपीपल अर्थात् सफेतपीपलकीजड या-उसके बीज सफेतजीरा-आंग-शरपुंखा-ये चीजे आठ आठ मासे लेना-कूटछानकर-छछमासेकी चारपुडियां बनाना-अगर रुतुधर्मके दिनमें लगाकर चाररौजतक कोईस्त्री एकीशतोलेगौकेकचे दूधके साथ सवेरेसवेरे पीयेगी गर्भरहनेका संभवहै. कितनेक कहते हैं रुतुधर्मके दिनोंमें स्त्रीको दूध पीना अच्छानही, लेकीन दवामें मीलाकर पीनेकी कोइमना नहीं, अलबते !-यूं खानपानमें चाहे मत प्रीओ.

अगरकिसीको अपने शरीरमें वीर्यवृद्धिकरना मंजूर हो तो नीचेलिखाहुवा केशरपाक बनाकर खावे, [ केशरपाकबनानेकी तरकीब. ]-केशरतोलाएक-कस्तूरीमासे दो-अमरमासाएक-छोटेयो-

तीमामा दो-शिशजीतशोधाहुवा तोलाएक-इनसबर्चाजोंको लेकर गुलाबजलमें तीनघंटेतक खरलकरे, और एकतरफ रखे, फिर बादामकी मींजी पचास तोले-तींस्ते पनराह तोले-गर्मपानीमें धोकर छीलकर उतारडाले-और कूटकर मावासा बना लेवे-पांचतोले छोटीएलायची छीलकेउतारके कूटपीसकर उस मावेमें सामील करे और एकतरफ रखे, पारा शोधाहुवा तोलाएक-गंधकशोधा हुवा तोलाएक और धनूराकेबीजतोले दो-लेकर तीनदिनतक खरल करे, जब चूर्णहोजाय एकतरफ रखे. फिर उरदका आटा तोला चौदह-धोलीमुशलीतोले तीन-सतावर तोलेतीन-आसगंध तोलेतीन-बेहमनसफेद तोलाएक-बेहमनसुख तोलाएक-तोदरीस-फेद तोलाएक-तोदरीसुखतोलाएक-तोदरीपीलीतोलाएक-जाय-फल तोलापांच-इनसबको कूटपीसकर चूर्णबनाके कपडछान करे और एकतरफ रखे. बाद-गुलाबका इतर उमदा मासे छ-चांदीके बर्क तोला एक. मोनेके बर्क मासेदो मीश्रीतोले (२००) दोसे और-गौका घी तोले (१००) लेकर एकतरफ रखे, फिर एक कडाइ पीतलकी-या-तांबेकी-लेकीन कलाइकियीहुयी हो लेना, और पचासतोलेघी उममें डालकर चूलेपर धरके थोड़ीथोड़ी आंच लगाना, बाद बीशतोले भीलावें लेकर उस कडाइमें डालना, जब सुंनमुंनकरना बंद होजाय और धुवांदिने लगे सभी भीलावें निकाललेना, लेकीन आंचका ऐसा खयालरखनाकि-भी जलकर कोडा न होनेपावे, अगर कोडा होगयातो सबपाक खराब होजायगा,

बहोतमे वैद्यलोक पाकबनातेहै लेकीन वो ठीकनहीबनता

और सेंकडेरूपये मीट्टीमें चलेजातेहैं इसका यही सबब है कि-बनानेकी क्रियामें चूकते हैं. इसलिये बहुतहुशियारीसें पाकबनाना चाहिये.

निदान ! उसभीलामेंके तलेहुवे पचासतोले घीमें उडदकाआटाबगेरा काष्ठादिक औषधियोंका चूर्ण ( जो कपडछानकरके एक तरफ रखाथा. ) मेक लेना. सोभी एसा सेकनाकि-थोडासा सेक लगे और जलने न पावे. फिर उसको दूसरे वर्तनमें डालकर उसकडाइको खूबमांजकर साफकरना. और चूलेपर धरकर उसमें ( १०० ) सोतोले मिश्रीकी चामनी बनाना, चामनी गुच्छाबंध याने अंगुलीऔर अंगुठेपर देखनेसे छसातवार उठतहो एसी हो जाय तब नीचे उतारकर उसमें वो जो पचासतोले घी बाकोरखा था डालदेना और खांचेसे धीरेधीरे हिलानेजाना. जब मोतीकी माफक रवे पडजाय उसमें केवर-कस्तूरी अमर-पोती-और-शीलाजीत जो गुलाबजलमें खरलकरके एकतरफ रग्वेथे डालदेना बाद बादाम-पीस्ते-और-एलायर्चाका-जो मात्रामा बनारखाथा वो-और-उडदकाआटाबगेराकाष्ठादिक औषधियोंका चूर्ण जो भी लावेकेतलेहुवे घीमें मेककर एकतरफ रखाथा-सब-उस चामनीमें डालकर धीरेधीरे बहोतयन्नकेशाय मीलादेना. बाद पारा-गंधक और धतूरेकेबीज जो खरलकरके एकतरफरखे थे वे भी उसमेंसामीलकरदेना, चींदीकेवरक और गुलाबका इतर डालकर जब संपूर्णपाक तयार होजाय दोतीनथालमें-घीवोपडकर डालदेना और उपरसें सोनेकेवरक चीपकाना, उमदा क्लेशरपाक होजायगा.

इसपाक पुरुष या स्त्री जोखायगा दशगुना बलवीर्यबढेगा इ रीरकी रंगत और फुरतीबढेगी. अंगअंगमें चपलता और उत्स

जोरदेना. [ इसको खानेका तरीका ] प्रथम पांचसातरौज दोदो तोले शुभह और श्याम-खानाचाहिये, उपरमें बीस तोला दूध पीइकर देखना, जब इतना पचजाय तो फिर पांचपांच तोले पाक और उपरसें चालीशचालीशतोले दूध पीना, उनालेमें यहपाक खाना मनाहै गर्मी करेगा, शियाले चौमासेमें-खाना बहोत अच्छा. दूध एकपरमऔषधी है, इसका पीनाकोइवखत मनानही लेकीन इतना यादरखना चाहियेकि-कोरा पीनेमें पेटमें जाकर गुच्छासा बंध जाताहै. इसलिये उचितहैकि-इसतरकीबसें बनाकर पीये. दूध तोलाचालीश-गुलाबजल तोलावीस-और मीथी तोलेपांच एक कलाईदार वर्तनमें-डालकर-अग्निपर धरना, और वेदानेमासे (६) एकसफेदकपड़ेकी षोडशीबांधकर उसमेंडालना-जोश इतनादेना कि-पीछा चालीशतोला रहजाय, जब ठंडाहोजाय पीडलेना. चलनेफिरनेका अभ्यास हर्ग्वखत बनाये रखना चाहिये. गद्दीतकी-याकेनोकरबने रहनाठीकनही. खट्टा और तेल खाना मना है, (४१) दिनतक अगरकोइ इसपाकको सावधानीमें खायगा बहोत कुच्छ फायदा उठायगा. जो लोक उदार प्रकृतिवालेहैं और शरीरको तंदुरस्तरखना चाहतेहैं उनकेलिये यह निहायत उपयोगी चीजहै. जो शल्लभ महाकंजूममखीचुस है उसकेलिये मेथीका आटा तेल-और गुडही अच्छे है.

जिसको मूत्रकृच्छ्रब्याधि हो उनकोचाहिये शतावरीकी गीली डका रस तोलेभर और छमासामीथी मिलाकर पीये, तीनदिन बरे इसप्रकार पीनेसें आशाहै आरामहोगा. शतावरी न मिले तो हरीगिलोय तोलेभर लेना. जिसको बिनाइच्छा पेश निकल जाता

हो-या-उपकृताहो-उनकोउचितहैवि-हालेतिल-और-अजवायन-तीनतीन तोले-कूटपीसकर गुडमें मिलाके नवनवमामेन्ती गोलीयां बनावे, और सबेरेही एकगोली खावे आरामहोगा, नागकेशरके फुल-गांके घोंमें मीलाकर रजस्वलाहोनकेबाद चौथेरोजसें तीनदिन तक अगर कोइ स्त्री खावे और क्षीरकाभोजन करे तो गर्भस्थिति होनेका संभवहै, लेकिन दवालेनेके दिनोंमें कामभोगसेवन नकरे.

पुहषभी यही दवा शायशाय लेता रहे, मुशलीपाक अगर ठीकठीकविधिते बनाहा हरहमेश चारतोले खायाजाय तो धातुकी क्षीणतामिटै-पंद्राग्रि-वास-अरुचि-विषमज्वर-और नपुंसकता-दूर करे, प्रमेहकों शांतकरे, शरीर पुष्टहो. स्त्रीकोभी यह पाकखाना अच्छाहै. सबतरहसें तेजी बढायगा. लेकिन सवामहिनेतक खाना चाहिये,—

जिसको अपनीबुद्धितेजकरना हो सरस्वतीचूर्णबनाकर(४१) दिनखाय. (सरस्वतीचूर्णबनानेकी तरकीब.)-विद्याब्राह्मीतोला-एक-शंखावलीतोलाएक-शतावरीतोलाएक-शुंठतोला एक-आं-धानाडतोलाएक-गिलोयमुकीतोलाएक-वायवर्डींगतोलाएक-वच-तोलाएक-अकलकरातोला दो-आमगंधतोला दो-कस्तूरीमासादो केशरतोलाएक-जाय फलतोलाएक-जवत्रीतोलाएक-बादामकी गिरीतोलादश-पीस्तातोलापांच-चीरोंजीतोला पांच-ककडीकेबीज-छीलेहुवे तोलाअढाई-तरबुजकेबीजछीलेहुवे तोलाअढाई-आलके बीजछीलेहुवे तोलाअढाई-खरबुजकेबीजछीलेहुवे तोलाअढाई-एलाचीछांटीतोलाएक-मोतीकीखाखमासा दो-सोनेकेवरकमासाएक चांदीकेवरक ( ७५ )-घृततोला एकीस-( ताजा और गौका )-मी

श्री तोला साठ-इतनीचीजे लाकर इनमेंसेकाष्टादिकऔषधियें अच्छीसाफकरके हमामदस्तमें खूबकूटे-और-कपडछानकरके ए-तरफ रखे.

बादाम-पीस्ते-चीरोंजी-गरमपानीमें धोकर छीलके निकालकर चकुसेंतर रखे. केशर-कस्तूरी-मोतीकीखाख-गुलाबजल-केशाथ घंटेतीनतक घोटकर एककटोरीमें निकाललेवे, एलाची अथकचरी कूटकर रखे, सानेकेवरक-चांदीकेवरक-कडाहीतावेकी या-पीतलकी-खोंचा कलाइ किया हुवा. मिश्री-और-घृत-ये-सब चीजेनजरकेसामने तयाररखे, फिर चतरवैद्य-या-कारीगर पहले कहाडी चूलेपरचढाकर ( २५ ) तोलपानीकेशाथ मीश्रीकोंगलाकर छान लेवे, उसकीचासनी गुलाबंद-छसाततार अंगुलीपरनिकले बेसी-लेकर जमीनपर रखे, और उसएकशि तोले घीमेंसें ( १० ) दशतोलेलेकर चासनीमें डाल दे, और धीरेधीरे खोंचेसें हीला-ताजाय-जब रवापडजाय-केशर-कस्तूरी-मोतीकीखाख-घुटीहुइ-उसचासनीमें डाल दे. और-खोंचेसें हीला देवे, बाकीरहाहुवा ( ११ ) तोले घी-लेकर-काष्टादिकऔषधियोंमें डालदेवे-अथवा चासनीमें डालकर खोंचेसें हीलादे, फिर बादाम-पीस्ते-और-एलाची-उसीचासनीमें डालकर हीलाता रहे, बाद चांदीकेवरकभी उसकेभीतरडालकर एकमेक करदेवे. बस!-फिर साफ थालीमें घी चोपडकर-तयार होयाहुवा पाक-उनमें फैलादेवे, औरसोनेके-वरक उसपरचोटाकर रुइके फुएसें दबादेवे. उमदासरस्वतीपाक तयार होगा.

हरइमेसपांचतोले पाक-खाकर उपरसें ( १० ) दशतोलेतता

दूध भीश्रीकेशाथपीनेसे निश्चयहैकि-(४१) दिनमें बुद्धि तेजहोगी, लेकीन!-भोजन एसाजिमनाचाहिये जो हलका और जलदीपच-नेवाला हो. दातूनकुरला करके मुंहकोसाफ रखना-हरहमेश शरी-रमें पसीनाआजाय इतना परिश्रम लेंतरहना और-शाथशाथ दो-चारकाव्य कंठाग्ररुतजाना ठीकहै. कुपथ्यखाकरपाकको दोषदेना बड़ीभूलहोगी. चतरआदमी-चा-है-जोलिखे-मुताधिक-बर्तावरखे.

सर्पकाटनेकीजगह मामाभरसंखीया घीसकरलगानेसे तुरत-आरामहोगा, जिसकोसर्पकाटे दोचारघंटेहोचूकेहै उसकोलालफी-टकरी कच्चीहीलेकर बानीकेशाय तीनहिस्से बनाके आधआधघंटे-कीदेरीसे पीलादेना आरामहोगा, कंगुदीकीजडघीतकर पीलाने-सेभी सर्पकाझेर दू-होताहै, नागदमनीऔपधि तो मवसे ज्यादा फायदेमंद है. ( गर्भवतीस्त्रीको कष्टमिटानेकेलिये )-तीजयपहुत्त-स्तोत्रमें जिसकीविधि लिखी है वह यंत्र-केशरमें कांसेकीथालीमें लिखकर धूपदेना और पांचतोलेजलकेशाय धोकरपीलानेसे पी-डादूरहोगी और गर्भ कोरन छुटजायगा. अगरएकदफे पीलानेसे न छुटेतो दोतीनदफे पीलाना,

चिकित्साविद्या अगरपूर्णरूपसेलिखीजाय तो बहोतकुच्छ वि-स्तारबढशक्ताहै, जिसतरफनेगाहकरो वही विद्या अपारहै, कइत-रहकेग्रंथ छपेहुवे मौजुदहै, रगरगकेमाहितगार वैद्यलोग दुनियामें थोडेनहीं, इसलिये इसकाज्यादे बढावबढानाभी जरूरतनहीरहा. ग्रंथकारोंका नियमहैकि-जो बात सदाकेलिये सर्वोपयोगी अपूर्व हो लिखदियाकरे, वैद्य और ग्रंथकार आयुष्यकेमालिकनही, आ-रामहोना न होना कर्माधीनहै. निश्चयनयकों दिलमें रखकर व्य-

बहारनयसें बर्त्तावकरना सज्जनोंका काम है. कितनेक आदमी कर्मोंपर भरसाधरके कह देते हैं कि—जो होनहार होगा आप अच्छा हो जायगा हम दवा नहीं खायगे, लेकिन! यह बात शास्त्रसें बखिलाफ है, आजकल वैसे शरीर नही रह है, अब के आधार प्राण रह गये, इसलिये मुनासब है अच्छे वैद्यसे चिकित्सा करावे और उसके कहने मुजब खानपान करे, रोग बेंमनका ढंगा चलाना अच्छा नही. शरीर एक अंधेरी कोठरी है, इसमें चिकित्सा विद्याही का चांदना काम देता है. कइद फेदे खा गया कि—साधु लोग हरेक गृहस्थ की दीयी हुई औषधि बिना वैद्य की सलाह खालेते हैं, लेकिन!—सोचना चाहिये कि—हरेक आदमी वैद्य नहीं हैं, साधु लोग धर्मशास्त्र के जानकार हैं, लेकिन!—शारीरीक विद्या के जानकार तो वैद्य ही होते हैं. एक बारीष्टर एक डाक्टर के पास गया और कहने लगा मेरे पांवमें दर्द है इसका इलाज बतलाइये!—पास बैठे हुवे पांचचार बेवकुफ कहने लगे क्यों जी!—दो दो हजार रुपये एक दिन की तनखामें पाते हो—क्या!—पांव का इलाज भी नहीं जानते!—बारीष्टर का जवाब हुवा कि—मैं—बकालत करनेमें अब बते! होशियार हूं, लेकिन! शारीरीक विद्यामें नहीं हूं, यह तो डाक्टरों को भी चाहिये कि—जब अपना रोग अपनी पहे छानमें न आवे तो दूसरे की सलाह भी लेवे. सब बात कानती जा यह आया कि—हरेक आदमी रोग पैदा हो तुर्च वैद्य के पास चला जाय और जो कुछ वह दुकम दे उसमाफिक बर्त्ते. अपनी बुद्धि की कुतर्क न करे. दवा का दाम उसी वख्त दे दिया करे, दाम न देनेसें—या—देरीसें देनेसें वैद्य लोग शर्म के मारे बोलेंगे नही लेकिन!—ध्यान देकर इलाज नही करेंगे. पै-



सारूपया शरीरसें बढकर नहींहै. इसबातमें बल्किन्!-ज्यादे उ-  
दारता रखनीचाहिये. उदारआदमी हरतरहसें सुखी रहताहै.

[ इति चिकित्सा प्रवाहपूर्ति-समाप्त, - ]

इतिश्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-  
शांतिविजयजीमहाराज-विरचित-  
शांतसुधानिधिग्रंथका प्रथमतरंग समाप्त.



## [ स्वरोदयज्ञान,— ]

स्वरोदयज्ञानकावर्नन मूलसूत्रोंमें-प्रकीर्णकग्रंथोंमें-और-भाषामयकवित्तछंदोंमें कइजगहदेखागया, विवेकमार्तिदयोगरहस्प-हे-मधंद्राचार्यरचितयोगशास्त्र-और कपूरचंद्रजीरचितस्वरोदयज्ञानभी स्वरशास्त्रहीकेग्रंथहै, अगस्वरशास्त्रका अभ्यासकरनाचाहतेहो-स्वरोदयज्ञानीकों मिलकर इसकेभंदानभेदपुछो-सीखो-पढो-और-जो कुछ हुकमदे उसमाफिकचलो. स्वरोदयज्ञानसीखनेवाला आहार और नींद-थोड़ीले, मंसारमें लिपटा न रहे. हरहमेशहृदयमें नव-पांखडीकाकमलबनाकर-अरिहंत-मिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-दर्शन-ज्ञान-चारित्र-और-तप-इनका ध्यानकरे, प्राणायामयोगकी दशभूमिहै उसमें पहलीमजलस्वरोदयज्ञानहै, जिसकेबडेभाग्यहो उसको इसकारास्ता मिलताहै, जिनेद्रद्व-और-गणधरमहाराज-संपूर्णप्राणायामयोगके पुगेमाहितगार थे. महावीरअरिहंतकेबाद-चौदहपूर्वकेपोठी-भद्रबाहुस्वामी-जबहुवे-उनोंने सूक्ष्मप्राणायाम-ध्यानका जब परावर्त्तनकियाथा श्रावकमंघने मीलकरउनोंकों वि-ज्ञप्तिकियीथी-वगेराबातें जैनागममें कइजगह बांचने सुननेमें आती है, इससेंभो मालूमहोताहैकि-पहेलेकालमें साधुलोग इसकाखूब अभ्यासरखतेथे, अबशरीरकीताकात कमहोगइ, धर्मश्रद्धा उतरने लगी, और कुछलोभनेभी अपनापंजा ज्यादाफेलाया,-कहिये ! अब-स्वरोदयज्ञानकाटंटा किसे अच्छा लगे ?-यहकाम निर्लोभी और आत्मज्ञानीयोंकाहै, दशभूमितक न बने तो दोतीनचारभी

बनामाचाहिये. मेहनत करनेसे मुश्किल बात भी सहेज होजाती है.

( दोहा. )—नाडीतो तनमें घनी-पिनचौइस प्रधान,

तिनमें नवफुनताहुमें-तीनअधिककर जान. १

इंगला पींगला सुखमना-ये तीनोंके नाम,

भिन्नभिन्न अब कहतहुं-ताके गुन अरु धाम. २

भ्रकुटिचक्रसें होतहै-स्वासाकों परकास,

बंकनालके दिगथइ-नाभिकरत निवास. ३

नाभितें फुनि संचरत-इंगला पींगला धाम,

दक्षिणदिशहै पींगला-इंगला नाडी वाम. ४

इनदोउकेमध्यमें-सुखमना नाडी जोय,

सुखमनके परकाममें-स्वर फुन चालत दोय. ५

हावास्वर जब चलतहै-चंदउदय तब जान,

जबस्वर चालत जोमना-उदयहोत तब भान. ६

सोमकाजकों शुभशशी-करकामकों मूर,

इनविध लखकारजकरत-पामे सुख भरपूर. ७

दोउस्वर समसंचरे-तब सुखमन पहिचान,

तामे कोउ कारजकरत-अवश होतकच्छु हान. ८

चंदचलत कीजे सदा-थीरकारज स्वरभाल,

चरकारज सुरज चलत-सिद्ध होतततकाल. ९

कृष्णपक्ष एकमादिने-प्रातमूर जो होय,

तो ते पक्ष प्रबौननर-आनंदकारी जोय. १०

शुक्लपक्षके आदिदिन-जोशशी स्वर उद्योत,

तो ते पक्ष विचारिये-सुखदायक अतिहोत. ११

- चंद्रतिथिमें आय जो-भानुकरत प्रकाश,  
तो क्लेश पीडा हुवे-किंचित् वित्तविनाश. १२
- सूरज तिथि पडिवा दिने-चले चंदस्वर भोर,  
पीडाकलह नृपभय करे-चितचंचल चिह्न और. १३
- दोउपक्ष पडिवादिने-मुखमन स्वर जो होय,  
लाभहान सामान्यथी-तो निश्चे करी जोय. १४
- सन्मुख वामी उर्द्धदिश-रहीप्रश्नकरे कोय,  
चंदयोग हो तामें तो कारज सिद्ध होय. १५
- नीचे पीछे जीमणे-जो कोइ पुछे आय,  
भानुयोगस्वर होय जो-तसकारज होजाय. १६
- अष्टभेद है यागके-पंचम प्राणायाम,  
ताके सप्तप्रकार है-सकल सिद्धके धाम. १७
- वायु पांच शरीरमें प्राण समान अपान,  
उदानवायु चोथो-हो पंचम अनिलअव्यान. १८

स्वरोदयज्ञानकों सीखने-वाला पहले नाशिकासें चंद्र और सूर्यस्वरकी पहचानमीखे, नाककेडावेछेकमेंसें हवा निकलतीहो चंद्रस्वर समझना चाहिये जीमनेमें निकलतीहो सूर्यस्वर समझे, हरमहिनेकी सुदीएकमकरौज सवेरे सूर्योदयकेवख्त अगर चंद्रस्वर चलताहो अच्छाहै, पनराहरौज आनंदसें गुजरेंगे, इसीतरह हरमहिनेकी वदीअकेमकरौज सूर्योदयके वख्त सूर्यस्वरचलताहो अच्छाहै, पनराहदिन आनंदरहेगा. अच्छंनिरोगमनुष्यके दिनरात घंटेघंटेभर चंद्र और सूर्यस्वर अदलबदलहोतेहुवे चलतेरहतेहैं, रोगीकों यहनीयम नही रहता, ज्यादे कमभी होजाताहै.

## [ चंद्रस्वरचलतेवस्तु जो जो कामकरनेचा- हियेउसकी यादी. ]

जिनमंदिग्बनवाना थुरुको तो बनानेवाला अपनाचंद्रस्वर चलताहो नींव डाले, प्रतिष्ठाकेंवस्तु प्रतिमाजीको स्थापनकरे तो चंद्रस्वरमें करे, पूजाप्रभावना दिनपगदिन बढ़तीरहेगी. मंदिरकेशि स्वरपर कलशचढ़ावे चंद्रस्वरमें अच्छाहै, पोषधशाला-धर्मशाला-दानशाला-पाठशाला-घर-हाट-हवेली-महल-कोट-और-किला-नयाबनाना-या-उनमें प्रथमप्रवेशकरना चंद्रस्वरमें करना, तोर्थया-त्राकौजाना चंद्रस्वरमें अच्छाहै, सुखचैन रहेगा. दीक्षादेनेवालागुरु जब चेन्नेकों दीक्षादे तो चंद्रस्वरचलनेवस्तु देवे, मंत्रवतलाना चंद्रस्वरमें ठीकहै, लेनेवालेकाभी चंद्रस्वर हो तो निहायतउपदावा-तहै, लेकिन ! जब देवसाधनकरनेकेलिये बैठना तो सूर्यस्वरमें ठीक है, याते जलदी सिद्धहो. नयेधरमें-या नयेनगरमें प्रथम प्रवेशकरना चंद्रस्वरमें करनाअच्छाहै आनंदरहेगा. नयाकपडा-और-नयागेहना-पहनना चंद्रस्वरमें अच्छाहै गाम-और-देश-इजारेलेना चंद्रस्वरमें ठीकहै, फायदाहोगा. बीमारआदमी औषधखावे चंद्रस्वरमें अच्छाहै. बागडगाना-और खेतमें बीज डालना चंद्रस्वरमें बहुतठीक होगा.

राजासें पहेलीमुलाकातलेना चंद्रस्वरमें अच्छाहै फायदा होगा, लडाई और युद्धमेंकेलिये-जाना तो सूर्यस्वरमें अच्छाहै. राजा-जब गद्दीपरबैठे तो चंद्रस्वरमें बैठे, बहुतदिनोतकराज करेगा. नयीदुकानखोलनेवाला चंद्रस्वरमें दुकानखोले लाभ होगा

नदीनालेका पुलुबांधना गुरुकरे-ता चंद्रस्वरमें कामचलावे, बहोत कालतक बनारहेगा. जवाहरातका काम पहेलेचंद्रस्वरमें गुरुकरना अच्छाहै.

## [सूर्यस्वरचलतेवरुत जोजो कामकरनेचाहिये उसकी यादी. ]

विद्यापढ़ना गुरुकरेनो सूर्यस्वरमें करे जलदी कंठ हो. राजाकों-या-किसीहाकिमकों अरजीदेना सूर्यस्वरमें देना, वृश्मनकों हरानेकेलिये बीडा उठाना सूर्यस्वरमें अच्छाहै, भूतउतारनेजाना या-सांपकेक्षेत्रउतारनेकेलिये झाडा देना सूर्यस्वरमें ठीकहै, जलदी फायदा होगा. वैद्यलोग जब रोगीकों दवा खीजावे अपना सूर्यस्वरचलताहो उसवरुत खीलावे जलदी कारकरेगी. बीमार अलबते! चंद्रस्वरमेंही खावे. लडाइकी तयारीकेलिये हथियार सारीदे-या-हाथीघोडे-मौललं-ता सूर्यस्वरमें ले. स्नान-और भोजन सूर्यस्वरमें करे.

- ( दोहा. )—दक्षिणस्वर भोजन करे-डाबे पीवे नीर,  
 डाबीकरवट सोवतां-होय निरोग शरीर. १  
 चलत चंद भोजन करे-अथवा नारी भोग,  
 जलपीवे सूरज विषे-तो तन आवे रोग. २  
 पांचसातदिन इनपरे-चले रीत विपरीत,  
 होय पीडा तनमें कलु-जानो धरी परतीत. ३

कामभोगसेवनकरना सूर्यस्वरमें योग्यहै, पुरुषार्थकी हानि न होगी. चंद्रस्वरमें करनेसे हानिपहुंचतीहै, नयीपुस्तकमें-या-न-

यीवहीमें लिखाण शुरूकरना सूर्यस्वरमें अच्छाहै, राजा-लडाइके-लिये सूर्यस्वरमें चढ़े जलदीफतेहपावे, समुद्रमें जहाज चलाना-या जहाजमेंबैठकर पारहोना सूर्यस्वरमें ठीकहै,—जलदी पार हो दु-श्मनके घर जाना सूर्यस्वरमें अच्छा, उधारदेना-या-लेना-वगेरा जितनेजलदीकेकामहै सूर्यस्वरमें करने चाहिये.

मुख्यमनास्वर उसकों कहतेहैं जो दोनोंस्वर एकसाथ चलने लंग-जब चंद्रबदलकर सूर्य हो-या-सूर्यबदलकर चंद्रहो-तब-पांच सातमिनीट-मुख्यमनास्वर चलताहै, इसवख्त कोईकाम नहीकरना चाहिये, फक्त ध्यानस्मर्ण-और परमात्माकानामही उच्चारन करना अच्छाहै.

चैतमुदीएकमकेरौज सबेरे सूर्योदयके वख्त-चंद्रस्वर चलताहो तो बहोतअच्छाहै पनरांहरौज आनंदसे गुजरेगें, जिसकों तत्वोंकी प-हेछानकरना मालूमहोगइहां और देखेकि-चंद्रस्वरमें पृथ्वी-या-ज-लतत्व चलताहै तो बारांमहिनेका ज्ञान उसकों मालूम होशक्ता है, लेकिन!-गुरुगमसे सीखनाचाहिये, आपहीआप कोईबिद्या नहीं जानीजाती, मंषराशिपर जिसदिन सूर्य आवे उसवख्त अगर जि-सका चंद्रस्वर चलताहो तो सप्सललेवे वर्षभर आनंदरहेगा, अ-खात्रीजकेरौज सबेरे सूर्योदयहोतेवख्त चंद्रस्वरचलना बहोतअ-च्छाहै, वर्षतक आनंदरहे,-

चैतमुदीएकमके रौज दिनभरमें जिसका घंटाभरभी चंद्रस्वर न चले उसकों तीनमहिंनक रोगकीतकलीफ उठानीहोगी, चैत-मुदीदुजकेरौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी नचले उसकों परदेशमें जानापड़े और वहांभी तकलीफरहे,—चैतमुदीतीजकेरौज

दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकेशरीरमें पि-  
तृज्वरका खेद रहे,—चैतसुदीचोथकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर  
घंटाभरभी न चले वो उसीवरसमें मरजाय,—चैतसुदीपंचमीकेरौज  
दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसको राज्यकीतर-  
फसें जरीमाना भोगनापड़े,—चैतसुदीछठकेरौज दिनभरमें जिसका  
चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकाभाइ उसीवरसमें मरजाय,—चै-  
तसुदीसप्तमीकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले  
उसकी स्त्री उसवर्षमें मरजाय,—चैतसुदीअष्टमीकेरौज दिनभरमें  
जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसको उसवर्षमें लाभ और  
मुखथोड़ा मिले,—वर्षदिनका भलाबुरा-नतीजा-आठदिनमें दे-  
खना चाहो तो देखसक्ते हो, ये आठदिन वर्षदिवसका मानों  
बीज है, जैसे जन्मग्रह सारोर्जिदिगीका बीज है—स्वरोदयज्ञानमें उक्त  
आठदिन बीजरूप है.

शरीरमें—हाड—मांस—नस—चाम—और—रोम—ये पांचपार्थिवतत्त्व  
याने पृथ्वीके अंशहै. लाला—पूत्र—पसीना—वीर्य—और लोही—ये पां  
चजलके अंशहै. भूख—प्यास—निद्रा—आलस—और—शरीरकी—कांति  
ये पांच अग्निकेअंशहै, धावन—वल्गन—रोध—संकोच—और—प्रसारण  
ये पांच वायुके अंशहै, आकाशकाअंश—सबशरीरमें व्याप्तहीहै,—  
विवेकमार्त्तंडयोगरहस्य—ग्रंथकेआधारसें उक्तबातलिखीगयीहै, स्व-  
रोदयज्ञान जाननेका और उसमुजबबर्त्ताव रखनेका सबब यही  
हैकि—मन एकाग्रताको पकड़े, जबतक मन एकाग्रनहीहुवा पापका  
अंत न आयगा, शुद्धध्यानभी न होसकेगा, ध्यानकी निर्मलता  
बिदून जीवकी मुक्ति होना मुश्किलहै. योग उसीकानामहै जो



मनकी एकाग्रता लावे, भरतचक्री-और-मरुदेवाजी ध्यानकी एकाग्रताहीसे ज्ञानपाकर संसार तीरेहै, योगशास्त्र-जो श्री हेमचंद्र आचार्यका बनायाहुवाहै उसका लेखहैकि-

( अनुष्टुप्वृत्तम्. )-

अहो योगस्य महात्म्यं-प्राज्यं साम्राज्यमुद्वहन्,

अवाप केवलं ज्ञानं-जरतोपि जरताधिपः ?

पूर्वमप्राप्तधर्मापि-परमानंदनंदिता,

योगप्रजावतः प्राप-मरुदेवा परं पदं. ३

जिनकों भोगकेवलतभी योग याद आवे उसकों धन्यवाद समझना चाहिये, स्वरोदयज्ञानी होलेहोले उसपदकों पहुचसक्ताहै जो आत्माकोंहितकारीहै. योगसाधनकरना चाहो तो पहले स्वरोदयज्ञानीकों मिलकर उससे माहितगार बनो चंद्रस्वरमेंपानी और-सूर्यस्वरमें भोजनग्रहण करो. भोजनका न बन सके तो खेर! लेकीन-पानी तो चंद्रस्वरमेंही पीया करो अगर जिनको चतुर्विध आहारका रात्रीकेसमय त्यागहै वह सांजको चोविहारकरतेवलत पुष्कलजल पीना चाहे तो लाजिमहैकि-पहेलेजब चंद्रस्वरचलताहो ज्यादेपीइले कोई हर्ज न होगा-सांजको थोडानाममात्रपीइकर कामचलासक्ताहै, इसीसेतो कहकि-स्वरोदयज्ञानीकों शरीरसे मोह उतारना पडेगा, विवेकमार्चंडयोगरहस्यका लेखहैकि-

( अनुष्टुप्वृत्तम्. )

ब्रह्मचारी मिताहारी-योगी योगपरायणः

अब्दादुर्द्धं नवेत्सिद्धो-नात्र कार्या विचारणा. १

आसनानि च यावन्ति—यावत्यो योगजातयः

एतेषामखिलान् ज्ञेदान्—विजानाति जिनेश्वरः ३

आसनेभ्यः समस्तेभ्यो—द्वयमेतदुदाहृतं,

एकं सिद्धासनं नाम—द्वितीयं कमलासनं. ३

न गंधं न रसं रूपं—न स्पर्शं न च निश्चनं,

नात्मानं न परं वेत्ति—योगी युक्तसमाधिना. ४

दुग्धे क्षीरं घृते सर्पि—रघ्नौ वह्निरिवार्पितः

तन्मयत्वं ब्रजत्येव—योगी लीनः परेपदे. ५

हरेकस्वरमें अदलबदलहोतेहुवे—पृथ्वी—जल—अग्नि—वायु—और आकाश—ये पांचतत्त्व चलते रहते हैं, इनकी पहचान बहोत मुश्किलसें होतीहै.

( दोहा. ) श्रवणअंगुठा मध्यमा—नासापुटपर थाप,

नयन तर्जनीसें ढकी—भ्रूकुटिमें लख आप. १

पद्यासनलगाके दोनोंहाथके दोनोंअंगुठे कानमें लगाना,और दोनोंहाथोंकी मध्यमाअंगुली नाकके दोनोंपडदोंपर टीकाना,दोनों आखोंके पडदे तर्जनी अंगुलीसें ढांककर भ्रूकुटिचक्रमें देखनाकि किसरंगका बिंदु पडता है, ?—अगरपीलेरंगका पडे तो पृथ्वीतत्त्व समझना, सफेदरंगका पडे तो जलतत्त्व—लालरंगका पडे तो अग्नितत्त्व हरेरंगका हो वायुतत्त्व—और—श्यामरंगका हो आकाशतत्त्व जानना. पृथ्वीतत्त्वकावेग (१२) अंगुल—जलका (१६) अंगुल—अग्निका (४) अंगुल—वायुका आठअंगुल—और—आकाशतत्त्वकावेग नाककेभीतर ही चलताहै, बहार नहीं निकलता. पृथ्वीतत्त्व नाकके सामने च-

लताहै. जल-नीचा-अग्नि-उंचा-वायु-देहा-और आकाशतत्त्व-  
नाककेशाय लगाहुवा चलताहै, पृथ्वीतत्त्वका आकार चोखूटा  
जलका गोल-अग्निका त्रिकोन-वायुका धजापताकाकेआकार और  
आकाशतत्त्वका शून्यआकार जानना. पृथ्वीतत्त्व (५०) पलतक  
चलताहै, जल-(४०) पल-अग्नि (३०) पल-वायु (२०)-और-  
आकाशतत्त्व (१०) पल चलताहै. पांचौतत्त्वकी कुल गिनती करे  
तो (१५०) पल हुवे, साठपलकी एकघड़ी-इसहिसाबसे देहसेपल-  
की अदाइघड़ी हुई, अदाइघड़ीका एकघंटा हुआ.

पांचतत्त्वोंमें पहले वायु-फिर अग्नि-पृथ्वी-जल-और-पांचवा  
आकाशतत्त्व-चलताहै, पृथ्वी-और-जलतत्त्व-अच्छे, अग्नि साधा-  
रण-और वायुआकाश-निष्फल होते है, लडाइमुकइमेंकेलिये घ-  
रसेंचले सूर्यस्वरमेंचले, अगर दुश्मनभी सूर्यस्वरलेकर चलाहो  
तो जो पहले चलाहो उसकी फतेह हो. सुखमनास्वरमें भूलकरभी  
नही चलना. नुकसान होगा, स्वरोदयज्ञानी अगर शुभाशुभप्रश्नका  
उत्तरदेनाचाहै तो देशत्ताहै, सामने-बायीतर्फ-या-उंचे-रहकर कोई  
प्रश्नकरे उसवस्तु स्वरोदय ज्ञानीका अगर चंद्रस्वर चलता हो-और  
पृष्ठकके प्रश्नका अक्षर समहो-कहदेवेकि-फतेहहोगी. पीछाडी-जीम  
ने-और-नीचे-रहकर कोईप्रश्नकरे उसवस्तु स्वरोदयज्ञानीका यदि  
सूर्यस्वर चलता हो और-पृष्ठकके प्रश्नका अक्षर विषम हो तो कहदेवे  
जरूरफतेह होगी. अक्षरोंके समविषमका विचार नभी कियाजाय तो  
भी झुज्जहर्ज नही, फतेहकहना, पूर्णदिशामें-रहकर-कोइमुख-दो-  
नोंकेनाम एक साथलेकर प्रश्नकरे उसमें जिसका नाम पहले लिया  
हो उसकी फतेह कहना.

(सोई) — इसशब्दका अर्थ यह है कि—वही धात्वा में ई- जो अजर अमर है—इडा—पिंगला—और—सुख्मनाका जब पुरा साधन होजाय—और तत्त्वोंकी पहचान ठीकठीकतोरसें मालूम देने लगे,—फिर आगे चलना चाहिये. शरीरकी बड़ीबड़ी नाडीयें कितनी और किसतरफ बहती है?—यहभी जानने योग्यहै, नाभिसें ( १० ) नाडी—उर्द्धगामिनी—(१०)—अधोगामिनी—और—चार चक्र गामिनी—सबमीलकर (२४) नाडी बड़ी है, इनमें दशनाडी प्रवाही संज्ञाकीकहीगयी जिनके नाम (१) इडा—(२) पिंगला—(३) सुख्मना—(४) गंधारी—(५) हस्तजीवहा—(६) पृषा—(७)—यशस्विनी—(८) अलंबुखा—(९) कुहू—और—(१०) शंखनी—है, इस चक्रकोंमी अच्छी तरह पहचानमें लावे. ज्युंज्युं इसका वर्ताव बढाते जाओगे आनंदका अनुभव मिलता जायगा. जिनको ज्यादा माहितमारहोनाहो बड़े ग्रंथोंका अवलोकन करं. यहां नाममात्र बर्नन लिखानयाहै.

## अष्टांगनिमित्त.

अष्टांगनिमित्त चौदहपूर्वकेज्ञान सें अलगनही. लेकिन ! पूर्वोंकाज्ञान अब नही रहा. एकपूर्वकेपाठीभो अबनही रहे. तथापि !—समयानुसार अबभीबहोतकुच्छहै, जैनमत सोताहुवाभी सिंहहै, निमित्तशास्त्र इसवरुत कइ देखनेमें आये—परंतु ओ—अंगविद्याशास्त्र आठहजारश्लोककेअंदाजकाहै इसके आगे दूसरे निमित्तशास्त्र—सब-तरहसें कमजोरहै, अंगविद्याशास्त्र इसवरुत—अबतुल्यमें—चांच-का-

सातसें ज्यादा नही रहे, सबब कि—कठिनशास्त्रके जब पढ़नेहीवाले थोड़ेरहेतो शास्त्र ज्यादा कहाँसे आशकतेहै? अंगविद्याशास्त्र हमारेपास मौजूदहै, प्राकृतपाठ इसकाहरेकके समझमें नहीं आशकता. एसीएसी विद्याये और आम्नाय इसमेंलिखीहै जो बहोतथोड़ोंके जाननेमेंहोगी. हमको इसका सोलह्वाहिस्साभी नहींआता, न उसका आधाबर्न-नभी हम खोलशकते है, जितना खोलशकते है उसका पुराबयान लिखनाभी—यहां मुनासिब नहीं समझते. जितना मुनासिब समझा लिखेहींगे, लेकीन !—समयबडाविचित्र है, मनुष्योंके दिल कमजोर होतेजातेहै, पुन्य पतले पड़तेहै अधर्मकी वृद्धि और धर्मश्रद्धाकी हानि देखकर कोइबात इसबख्त न लिखनाभी फायदेमंद समझते है. सुन्नेकेपात्र बिद्वान जवाहिरात दूसरेमें नहीं जडी जाती.

निमित्त कइतरहकेहै लेकीन !—आठ उनमें बडे है, इसलिये इनका नाम अष्टांगनिमित्तभी बोलदो कोइहर्ज नहीं. जैसे—अंगका फुरकना-स्वप्नदेखना-स्वरविज्ञान-याने मनुष्य-पशु-पक्षीकी बोलीसें भविष्यतज्ञानका भेद जानना. जमीनके ढीलनेसें थलाबुरा नतीजा सोचना. उत्पात-अंतरिक्ष-व्यंजन-और-लक्षणसें जोजो भेद जाननेके है आगेचलकर सबका खुलासा लिखेंगे.

## [ १ ]—[ अंगफुरकन निमित्त ]

( १ )—जीमनीतर्फका मस्तकफुरके राजासें इनाम मिले, फिकर दूरहो और दोलत जरूरमिले, बायीतर्फ फुरकेतो फायदाहो लेकीन थोडा. ( २ ) मस्तकका पीछलाभाग फुरकेतो परदेशमें दोलत मिले,

( ३ )—जीमनाकान फुरके अपनीतारीफ सुनाई दे, बामा फुरकेतो बुराह जाहिर हो,

(४)-कपाल फुरकेतो राजाकाबुलानाहो-या-हुकमहोदामिले.

(५)-जीमनागाल फुरके सुंदरस्त्रीसँ मिलाप हो. वामा फुरकेतो लडाइ हो.

(६)-जीमनी धू फुरके खुशीपैदाहो, वामी फुरके तो दोस्तोंसँ लडाइ हो.

(७)-दोनों भूवोंके बीच फुरकेतो प्यारेका मिलाप हो.

(८)-जीमनी आंख उपरसँ फुरके इरादा पूर्णहो, वामी आंख-उपर-या-नीचेकहींसँ फुरके फिकर पैदा हो.

(९)-उपरका होठ फुरके लडाइ हो.

(१०)-नीचेका होठ फुरकेतो सुंदरस्त्रीसँ मिलाप हो.

(११)-डाढी फुरके मुकद्दमा हारजाय,

(१२)-जीमनी गर्दन फुरके दोलतमिले. वामी फुरकेतो रंजहो.

(१३)-जीमनी छाती फुरके दुश्मनसँ फतेहपावे, वामी फुरकेतो फिकर पैदाहो.

(१४)-जीमनाखभा फुरके भाइका मिलापहो, वामा फुरकेतो फिकर पैदा हो.

(१५)-जीमनाहाथ फुरके मुकद्दमाजीतजाय, वामा फुरकेतो तकलीफ पैदा हो.

(१६)-जीमना पडखा फुरके खुशी पैदाहो वामा फुरकेतो रंजहो.

(१७)-पेट फुरकेतो फिकर दूरहो.

(१८)-नाभिफुरकेतो अपने-होदेसँ-गिराया जाय. .

(१९)-गुदा फुरकेतो दुश्मनकी हार हो.

(२०)-जीमनेहाथकी हथेली फुरके दोलत मिले. वामेहाथकी

फुरकेतो नुकसान हो.

(२१)-पुरुषविम्ह फुरकेतो स्त्रीसँ मिलापहो.

(२२)-स्त्रीका जीमनास्तन फुरके भर्त्तारसँ वियोग हो. बाबा फुरकेतो मिलाप हो.

जो जो फल पुरुषकेलिये जिमने अंगका कहा वही स्त्रीकेलिये बाबेअंगका जानना. और जो पुरुषकेलिये बाबे अंगका कहावही स्त्रीकेलिये जीमनेअंगका जानना, निदान !-स्त्रीका बाबा अंगफुरकना अच्छा. पुरुषका जीमना अच्छा.

## (२)-[ दूसरास्वप्ननिमित्त ]

१-अनुभूतकियीहुइ चीजका स्वप्नआताहै. लेकिन !-वह झूठा समझना चाहिये. कुछ फल न देगा.

२-सुनीहुइबातका स्वप्नआताहै. वोभी झूठा.

३-देखीहुइ चीजका स्वप्नआताहै वोभी झूठा.

४-सोचफिकरसँभी आताहै वोभी झूठा.

५-प्रकृतिकेविकारसे आताहै, जैसे पित्तप्रकृतिवालामनुष्य-  
बानी-फूल-अनाज-भोजन-जबाहिरात-मुँगे-और-छालपीलेरंगकी  
वस्तु ज्यादादेखताहै सारीरातसँकडे बागवनीचे और फुहारेकीशैर  
करतारहताहै. लेकिन !-यहभीझूठासमझनाचाहिये. सबबकि-प्रकृ-  
तिकेविकारसँ इसको पैदाश हुइ, इसलिये फायदा-या-नुकसान  
कुछ-न-होगा.

६-बादीकीप्रकृतिवाला मनुष्य स्वप्नमें-पहाडपरचढ़जाताहै-  
 वृक्षोंकेशिखरपर जाबेठताहै-मकानके ठीकउपरजाकर सरकजाताहै.  
 कुदना-फांदना-सवारीपरचढ़करहवाखोरीकों जाना-आकाशमें उ-  
 डना-बगेरा बनाव उसेस्वप्नमें ज्यादा दिखलाइदेतेहैं, लेकिन!-यहभी  
 झूठा समझना चाहिये. सबबकि-प्रकृतिकेविकारसें इसकी पैदाश  
 हुई इसलियेइसकाफल न होगा.

७-स्वप्न-वो-सच्चाहै जो धर्म और कर्मके प्रभावसें आयाहो-  
 चाहे भलाहो-या-बुराहो-इसकाफल जरूर होगा.

८-रात्रीकेपहेलेपहरमें देखाहुवा स्वप्न (१२) महिनेमें फलदे-  
 ताहै. दूसरेपहरमेंदेखाहुवा (९) महिनेमें-तीसरेपहरकादेखाहुवा(६)  
 और चौथेपहरकादेखा(३) महिनेमें फल देताहै. दोघडीरातरहते-  
 यासबरेमूर्योदयहोतेवरुत्तका देखाहुवा-स्वप्न जलदीफलदेताहै.

९-दिनमेंसोतेपडेहै और स्वप्नआया-वो झूठाहै, इसका फल  
 न होगा.

१०-अच्छा स्वप्नदेखा-और-नींदखुलगइ तो फिरसोनानही:  
 बर्मध्यानकरतेहुवे जागतेरहना चाहिये-याते फिरकोइ खोटा स्वप्न  
 आकर पहेलेका फल बीगाड न डाले.

११-बुरास्वप्नदेखकर जागगये औररातबाकी रहीहै तो सो-  
 जानाठीकहै. लेकिन ! अपशोष इसबातकाहैकि-भलेबुरेकी पहेछा-  
 नभीतो सबलोग नहीं जानते.

१२-पहेलेअच्छास्वप्नदेखा-और-पीछे-बुरादेखा तो अच्छेका  
 फल माराजायगा, बुरा फलेगा, सबबकी-वो-पीछे आया है.

१३-पहेले बुरादेखा-और-पीछेसें अच्छादेखा-तो-पिछलाही



फलेगा-याने अच्छा फलहोगा. क्योंकि पीछला पहेलेका फल उडादेता है.

१४-अच्छा-या-बुरा-जैसास्वप्न-आया जिनप्रतिमाकेसामने जा-करबयानकरदो-रस्तेमें किसीनेकुच्छदनथोले देखभुत्केसामने खाली हाथजाना मनाहै. फल-यानेवैद्य. प्रतिमार्जकिसामनेधरके स्वप्नका बयानकरना चाहिये. बाद निर्ग्रथमुनि शहरमें मौजूद होंतो उनके सामनेभी अदपकेगाथजाकर बयानकरना. और जो कुच्छ-वे-फरमावे उसपर गौर करना. पहलेकालमें पूंगत आम्नायकेजानकार निमित्तिये हाजरथे, लेकिन अब वे नहीं रहें. भिथ्यावादीयोंके सामने जाकर दर्याफ्तकरनालाभकंवदले हानि उठानाहै.

१५-स्वप्नमें जो हाथीपरचढ़कर समुंदरमें प्रवेशकरे वो थोड़े रोजमें राजा बने.

१६-मफेदहाथीपर सवारहोकर जो नदीकिनारे चावल्लोका भोजन जीमें बांधो थोड़ेदिनोंमें राजाहोजाय.

१७-स्वप्नमें समुंदरको हाथोंसेतीरकर पारहोजाय वो थोड़े दिनोंमें राज्य पदवी पावे.

१८-तीर्थकरकों-निर्ग्रथमुनिकों-और-तीर्थकीजगहकों-स्वप्नमें देखना निहायत उमदाहै, इरादापूर्ण होगा. तीसरीकलममें लिख चुकेहैकि-देखीहुइ चीजका स्वप्न आताहै वो झूठाहोताहै, सोचोकि किसीने कोई तीर्थको पहलेंदेखाहै और फिर उसीकास्वप्न आया, बतलाओ! उसे क्याफलहोगा? ( इसका उत्तर. )-यद्यपि-यहबात सचहैकि-देखीहुइबातका स्वप्नआना दृयाहोताहै लेकिन!-तीर्थकर की-मुनिकी और-तीर्थभूमिकीचिंतनाबनारहनाभी तो अच्छाहै.

फिर उसका स्वप्नमें भी दर्शावहोना क्यों न अच्छा हो, जरूर फायदेमंद होगा.

१९-हाथी-बैल-सिंह-लक्ष्मीदेवी-फूलोंकीमाला-चंद्रमा-सूर्य ध्वज-कलश-पद्ममरोवर-समुंद्र-देवविमान-जवाहिरातकाढेर-और-निर्धूमअग्नि-ये चौदहस्वप्न तीर्थंकरकीमाता जब तीर्थंकरकाजीव गर्भमें आवे देखतीहैं. तीर्थंकर उनको कहनेहैं जो साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-इनचारोंतीर्थकों स्थापनकर, जैसे रिषभदेव-अजितनाथ-वगेरार्चोइसहोगयें. उनकोमाताने यहचौदह एक साथ एक हीरात्रीमें देखेथे. बड़ेभाग्यवाला जीव गर्भमें आवे उसकी माता उत्तमवस्तुस्वप्नमेंदेखे उसमें आश्चर्यही क्या ?-भरतचक्रीवगेरा १२ चक्रवर्त्ती हुवे उनकीमातानेभी यही (१४) चौदहस्वप्नदेखेथे, लेकीन!-साफनही सबवकि-चक्रवर्त्तिका तक्रटीर तीर्थंकरकी बराबरी नहींकरसकता, वामुदेवराजा जो आधेभारतखंडका मालिक होताहै जबगर्भमें उत्पन्नहो उसकीमाता इनचौदहमेंसेसातस्वप्न देखकर जागतीहै. जैसे लक्ष्मणजी-और-कृश्रजी-आधेभारतवर्षके अधिकारीहुवे-वैभे सातवामुदेवराजे इनसेपहंलेभी होचूकेथे, कुछ नववामुदेव हुवे हैं. कृश्रजीको जैनसूत्रमें एकप्रतापीराजाहुवा लिखाहै, वाइसवैतीर्थंकर नेमनाथजीके चाचाकेबेटे भाइ थे. जैनसूत्र मुआफिक कृश्रजी-जैनप्रर्षीश्रावक हुवेहै, वेदधर्मकेकहनेमुजब-कृश्रजी-इश्वरपरमात्मा-चक्रवर्त्त-सर्वव्यापी हुवे.-बलदेवकीमाता बलदेवगर्भमें आवे उमवग्न इनमेंसे चारस्वप्न देखे, रामचंद्रजी-लक्ष्मणजीकेबड़ेभाइ थे जैनसूत्रोंकेकहनेमुजब-रामचंद्रजीको बलदेवकी पदवीथी-कृश्रजीकेबड़ेभाइ बलभद्रजीहुवे इनकोभी बलदेवपदवी-

थी. रावण-और-जरासिंध-प्रतिवासुदेव थे. नववासुदेव-नवप्रति-  
वासुदेव-और नवबलदेव-हरककालचक्रके-आधेहिस्सेमेंहोतेहैं, मं-  
डलिकराजा-गर्भमेंआवे उसकीमाता चौदहमेंसेएकस्वप्न देखे.

२०-स्वप्नमेंजिसकों वीणा इनाममें मिले उसको सुंदरस्त्रीसें  
मुलाकात होगी.

२१-धजापताका-या-छडी-जिसकोंइनाममें मिले उसकों थो-  
ड़ेरौजमें दोलत मिलेगी.

२२-स्वप्नमेंजिसकों लालरंगकापैशाब-और-लालहीरंगका-  
दस्तलगे-उसका दिवाळा निकलजाय.

२३-मीटीके हाथीपरसवार होकर जो समुंदरमें घुमे और  
डुबे नहीं वो थोड़े दिनमें राजा बने.

२४-स्वप्नमेंजिसकीगोंद-फूलोंसेभरजाय उसे दोलत मिलेगी.

२५-कोइपुरुषस्वप्नमें-स्त्रीवनजाय-और-स्त्री-अगर पुरुषवन  
जाय-उनको हरमुरतसेलाभहोगा-अच्छेदिनभोगेगे-और-परवा-  
रकी वृद्धि होगी.

२६-जिसके जीमणेहाथकों-सफेदरंगका सांपकाटजाय-उसे  
थोड़ेदिनमें दोलत मिले.

२७-स्वप्नमेंजिसके-हाथ-पांव-मुंह-कान-या-नाक-लंबे बढ-  
जाय उसकी-दुनियामेंतारीफबढेगी.

२८-स्वप्नमेंजिसकेहाथी-घोडा-रथ-आसन-गाड़ी-और-वस्त्र  
चौर लेजाय-उसकामानभंग होगा. इज्जतमें बटालगोगा.

२९-स्वप्नमें सिंह-हाथी-घोडे-या-नाहर-जुतेहुवेरथपर सवार  
होकर मुसाफरीकरे वो थोड़ेरौजमें राजा बने.

३०-स्वप्नमें जिसपुरुषका लिंग-और-जिसस्त्रीकी-योनि-छेद नहोजाय-उनको थोड़ेरौनमें विषयजन्य सुख मीले.

३१-गांवनगर-पहाड-या-मकान-अग्निसे जलरहाहै और उसके शिखरपर तुम सहीसलामत खड़े हो तो थोड़ेदिनोंमें खुशी पैदा करोगे.

३२-स्वप्नमेंजिसके नख-और-केश-लंबे-बढ़जाय उसे कई तरहकेफायदे होंगे.

३३-स्वप्नमेंजिसका-मुन्ना-चांदी-जवाहिरात-या-हथियार-चौर आनकर चोरीकर जाय-उसकी इज्जतमें धब्बालगे.

३४-स्वप्नमें-नदी-मरोवर-कुंड-या-समुंदर-पानीसें भरेहुवे देखे उसकोगहेराधनमीले, पांचमीकलममें लिखचूकेहै कि-पित्तप्रकृतिवाला जलकेनिवाण बहोन देखताहै. अगर पित्तप्रकृतिके विकारसेदेखाहोतो फल न होगा.

३५-स्वप्नमें उल्टीहोना बुरेदिनोंकी निशानी है.

३६-स्वप्नमें गाना गावे उसे रौना पड़े.

३७ स्वप्नमें नाटककरे वो बुरेदिन भोगे.

३८-स्वप्नमें गहनेआभूषण-कपड़ा-मकान-सवारी-या-आशन-जिसको इनाममें मीले-उसकाइरादा पूर्णहो.

३९-स्वप्नमें जिसके सफेदमलमूत्र आवे उसकी इज्जत बढ़े.

४०-सजेहुवेमकान-और-शिगारे हाथीघोड़ेदेखना अच्छेदिनोंकी निशानी है.

४१-स्वप्नमें-सर्प-या-बिलू-देखे और डरेनही उसे धन मीले.

४२-कालेकपड़ेपहेनीहुइ-कालेरंगकीऔरत-स्वप्नमें जिसको

दख्खनदिशातरफ घसीटलेजाय उसका मरना नजीक आया जानना.

४३-जिसके माथेमें खजूरका पेंड उगे वो थोड़े रौजमें मरजाय.

४४-कालेकपड़े पहनकर कालेघोंडेपरसवारहोके-जो-शख्श दख्खनदिशाकों जाय उसे बुरेदिन भोगने होंगे.

४५-स्वप्नमें-शाल्मली-या-कैलेकेवृक्षपरचढ़जाय उसे दो-लतमीले.

४६-स्वप्नमें कोईशख्श-गरमगरमपानी-पीइजाय-उसकों ब-दइजमीरोगपैदाहोगा.

४७-स्वप्नमेंकालेरंगकी जितनीचीजदेखीजाय-बुरीहै, लेकी-न!-हाथी-घोड़ा-गौ-और-देवीदेवता-कालेरंगकेदेखनेभी-बुरेनही.

४८-सफेदरंगकीजितनीचीजदेखीजाय-अच्छीहै, लेकीन!-क-पास-और-नमक-देखनाअच्छा नहीं.

४९-स्वप्नमेंजिसकी-जवान हथियारसें काटदियीजाय यद्य-पि-जाहिरातमें बुरीवात है, लेकीन!-इसकाफल अच्छाहोगा.

५०-सूर्यचंद्रकों जो शख्श हाथोंसें स्पर्श करे उसे हुकम होदा मिले.

५१-स्वप्नमें सूअर-भैंसे-गधे-या-ऊंटजुतेहुवे रथपरसवारहोके जो-दख्खन दिशाकों जाय-वो-जलदी मरे.

५२-स्वप्नमें मशानकेलकड़ेपर-सूकेवृक्ष-या-धनुष पर जो शख्श-चढ़बैठे उसकामरना नजीक आया.

५३-स्वप्नमें जिसकीस्त्रीकों चौर लेजाय उसेजाननाचाहिये किसीतरहकानुकशान होगा.

५४-स्वप्नमेंजिसका-पलंग-या-जूता चोराया जाय-उसकी-

औरत जलदो मरे.

५५-स्वप्नमें जो पुरुष अपने घरके दरवाजेकी अर्गला-दूटीहुइ देखे-उसकी स्त्री जलदी मरे.

५६-स्वप्नमें-बादाम-पीस्तेबगेरामेवा-जिसको-इनाममें मीले उसे खुशी पैदा हो, बीमारीसे आराम पावे.

५७-स्वप्नमेंजिसको-अंगुठी-मीले उसको स्त्रीसे फायदा हो.

५८-स्वप्नमें-अंगुठी-वेचदीयीजाय-उसको स्त्रीसे बिगाडहोजाय.

५९-स्वप्नमें सेलडीकासांठा-या-रस-देखना अच्छा है खुशीपैदा होगी.

६०-स्वप्नमेंकोइ-आकाशमें-उडे उसको बडाहोदा मीले.

६१-सितारे चमकतेदिखाइदे-तो-राजामहेरबान हो, इज्जतबढे.

६२-स्वप्नमें रोवे तो खुशीपैदा हो. हसे तो रौना पडे.

६३-अगरकोइपुरुष-स्वप्नमें-स्त्रीका-आलिंगनकियादेखे-उसको स्त्रीसे फायदा हो, स्त्री-अगर किसीपुरुषका-आलिंगनकिया देखे-तो-उसको पुरुषसे-फायदा हो.

६४-स्वप्नमें-मोर-देखेतो राजासे मुलाकातहो.

६५-स्वप्नमें-जिसको-मिश्रीकाढेर दिखलाइ देतो उसे खुश खबरीके-समाचार-मीलेंगे.

६६-स्वप्नमें कुत्तेका भोंकना देखे तो रंज पैदा हो.

६७-स्वप्नमें थोडेसवार होकरचले उसका इरादा पूर्णहो.

६८-स्वप्नमें गेंदसे खेलना देखे उसे थोडेदिनमें दोलतमीले.

६९-अगरकोइपुरुष-स्वप्नमें-किसीस्त्रीका-मुत्तचुंबनकिया देखे उसको हरतरहसे फायदाहो.

७०-स्वप्नमें-मोतियोंकेभरे थाल-दूसरोंको बांटदेवे वो दूसरोंको विद्या पढायगा-या-उपदेशदेकर धर्मकीतेजी बायगहा.

७१-स्वप्नमें नाचरंग देखे तो खुशीपैदाहो.

७२-स्वप्नमें अपनहाथोंसे-समुंदरको तीरगयादेखेतो उसी भवमें उसकोमोक्षहोजाय-लेकीन !-इसकालमें मोक्षहोना रहानही. इसलियेदेवलोक जाना कहो.

७३-स्वप्नमें अपनेआपको मरगयादेखेतो बुरा है तकलीफ होगी.

७४-स्वप्नमें-अपने आपकोगंदगीसें भरगयादेखे उसे फायदाहो.

७५-स्वप्नमें-छत्र मीले तो राज्यतरफसें फायदाहो.

७६-बागवमीचेकी हरियालीदेखना अच्छा-खुशीपैदा होगी.

७७-स्वप्नमेंजिसके जूत्तेगमजायउसेतकलीफकेदिन भोगनेपडेगें.

७८-स्वप्नमें-जिसके-दांत गिरपडे उसे रंज पैदाहो.

७९-स्वप्नमेंजिसके-केशखिर जाय उसे तकलीफहो.

८०-स्वप्नमेंजिसश्शस्त्रकी हथेलीपर केश उगे उसे कर्ज केना पडे.

८१-स्वप्नमें-महेल-कोटकीला-या-उचानकीजगह-चढना देखे उसकीइज्जत बडे, लेकीन !-छठीकलममें लिखचूकेहैकि-बादी-कीमकृतिवाला-ऐसेस्वप्नहमेशादेखताहै उसका उसे फल न होमा.

८२-स्वप्नमें-रींछजानवरका देखना नुकशानकारी है.

८३-स्वप्नमें-अपनेको पकडनेकेलिये आदमी चलेआते दि-खलाइदेतो-राजकाजरीमाना भोगना पडे.

८४-स्वप्नमें-गधेपरसवार देखे उसको रंजपैदाहो.

८५-स्वप्नमें-अपनेपरकिसीने छाछ छीटकदिवी देखे उसको

बुरेदिन भोगने होंगे.

८६-सफेदकपड़ेवाली-स्वप्नमेंदिखाइदे-तो-अच्छी है, कालेकपड़ेवाली बुरी. लेकिन !-हितकारिणी-चाहे-जिसरंगके कपड़ेवालीहो-बुरी नहीं.

८७-स्वप्नमें-उंट-या-बकरे पर-सवारहुवादेखे-उसेनुकशानहो.

८८-बीमारशस्त्र-चंद्रसूर्यका-स्वप्नदेखेजल्दी आरामपावे.

८९-स्वप्नमें उत्सव देखेतो खुशी पैदाहो.

९०-स्वप्नमें-दूध-दर्हा-या-घी-दिखाइदे अच्छा है इज्जत बढ़ेगी. दूधकेशायधमीलाकर-पीनाभी-अच्छेदिनोंकी निशानीहै.

९१-स्वप्नमें-सुंदरलडका-दिखाइदे-तो-अच्छाहै फायदाहोगा.

९२-स्वप्नमें-उल्लुका देखना अच्छा नहीं.

९३-अपनेपर वीजली गिरीदेखे उसे केंद हो.

९४-स्वप्नमें-अंधीआई-दिखाइदे-उसकों-टंटेगडमें फ-सनापड़े.

९५-स्वप्नमें-जिसके दांत सोनेकेहोजाय उसकों एश आराम मिले.

९६-स्वप्नमें-गेहू-यव-और-सफेद सरसोंका देखनाफायदेमंदहै.

९७-स्वप्नमें-जिसकेपेटपर वृष उगे उसे रोगपैदाहो.

९८-स्वप्नमें-जिसकों-नागरबेलकेपान-कपूर-चंदन-तगर या-सफेदफूल-दिखाइदे-या-एसामालूमपड़ेकि-ये-चीजें मेरेघर पैदाहुइ-तो-उसे-जाननाचाहिये फायदा होगा.

९९-स्वप्नमें-हाडके-और-राख-देखना बुरेदिनोंकी निशानीहै.



१००-स्वप्नमें जलसे भरे हुए सरोवरमें बैठकर जो शरुश खीर-का भोजनजीमें वो थोड़े रौजमें राजा बने.

१०१-स्वप्नमें-जो शरुश-अपने आंतोंसे-गांव-या-नगरकों-छपेट डाले वो भी थोड़े रौजमें राजा बने.

१०२-स्वप्नमें अपनेकों कोइ केदमें डाले-या-रसोंसे बंधन बांधे-तो-अच्छा है, फायदा होगा.

१०३-स्वप्नमें सफेद कपड़े वाली-स्त्री-जिस पुरुषको-आलिंगन करे-या-लेंप लगावे उसे दोलत मिले.

१०४-स्वप्नमें कोइ शरुश-ऐसा देखे कि-मैंने-तेल-या-घीसे माछीस करवाई-उसे बुरे दिन भोगने होंगे.

१०५-स्वप्नमें-कनेर-या-केशुक वृक्षपर चढ़ना टंटे फिसादकी जड़ है.

१०६-स्वप्नमें-वीणा-चवर-और-आरीसा देखेतो अच्छा है, हुकम होदा मिले.

१०७-स्वप्नमें-पींही-भेंस-और-गौके आंचलसे दूध पीयेतो इकुमत मिले.

१०८-स्वप्नमें-जो-शरुश-पहाड़ोंको उखेड़ डाले-वो-थोड़े दिनोंमें राजा बने.

१०९-स्वप्नमें-उंदरा-बिलाव-गोह-और-नोलिया देखना अच्छा नहीं. तकलीफ होगी.

११०-स्वप्नमें-सुन्ना चांदी केयालमें-खीरका भोजनजीमें उसे खुशी पैदा हो.

१११-स्वप्नमें-जो शरुश अपने शीरसे लोहीकी धारा गिरती देखे

बो-थोदेरौजमें राजा बने.

११२-स्वप्नमें-दिया देखेतो इरादा पूर्णहो.

११३-स्वप्नमें-आमकेवृक्षको-फल-लगदेखेउसको हरतरहसे फायदाहो.

११४-स्वप्नमें-मखीयां-या-डांसमच्छर-जिसको काटे-या-चौफेरघेरले-बो-थोदेरौजमें साधु बनेगा.

११५-स्वप्नमें-पकाहुवाफल-छत्र-कन्या-और-धजा-देखेतो इरादापूर्ण हो.

११६-स्वप्नमें-जहाजपरचढ़े-उसे दोलतमीले.

११७-(१९) नंबरकी कलममें लिखचुकेहैकि-बिनाधुंएकी अग्निदेखना अच्छा है, लेकिन! यहां इतना तफावत है कि-धुंए सहित अग्नि-या-एकीला धुंआ देखना अच्छा नहीं.

११८-स्वप्नमें-हजारपांखडीके कमलपरबैठकर-जोशस्त्र-स्त्री रकाभोजन जीमे वो थोडेदिनोंमें राजा बने.

११९-स्वप्नमें-लंबेलंबेशींगवालेजानवर जिसको भगायेफिरे-या-सूअर औरवानर-जिसको डरावे उसे राज्यकीतरफसे भयहोगा.

१२०-स्वप्नमें-कालेपीलेरंगका आदमी डसावनीसुरतबनाके-जिसको डरावे उसका मरना नेडे आया.

१२१-स्वप्नमें-मांसोपर अंजन लगावे उसे रोग पैदाहो.

१२२-स्वप्नमें-जो शस्त्र-मस्तकतक कीचडमें डूबजाय वो थोडे रौजमें मरजाय.

१२३-स्वप्नमें-खंडकदारगांवनगर दिखेइसे उसे खुशी पैदा हो.

१२४-स्वप्नमें-वानर-और-गींदड़-दिखाइदे बुराहै. फि-  
साद बढेगा.

१२५-स्वप्नमें-दावानल-लडाइ-बरसात-या-गर्जना-देखेतो  
राज्यकीतरफसें तकलीफ पैदा हो. जिसको-पित्तप्रकृतिकेविकारसें  
बरसात-गर्जना-दिखाइदियी हो उसे इसका फल न होगा.

१२६-स्वप्नमें-तारेंखीरना-उल्कापात-या-जमीनकंपनी-दि-  
खाइ दे-उसे क्लेश पैदा होगा.

१२७-स्वप्नमें-केलेके वृक्षपरचढना दिखाइदे तो हुकम-  
होदामीले.

१२८-स्वप्नमें-जिनप्रतिमाकोंहसती-रौती-या-खंडित होगइ  
दिखाइदे उसकों तकलीफ पैदाहो.

१२९-स्वप्नमें-हराघास-चावल-और-तांबूल-दिखाइदे उसे  
दोलत मीले.

१३०-स्वप्नमें-खीरनीवृक्षपरचढजाय उसे हरतरहसें फायदाहो.

१३१-स्वप्नमें वीणालेकर जहाजपर चढे उसे सुंदर स्त्रीसें  
मिलाप हो.

१३२-स्वप्नमें-वीर्यपात-होना अच्छानही. नुकशान होगा.

मलमूत्रकी बाधापीडासेंभी-कंड स्वप्नजाल दिखाइदेते है.  
लेकीन ! वह सच्चा नहीं समझना. सच्चा वही है जो ( ७ ) मी  
कलममें लिखचूके है. अगर कोईतर्क करे कि-इनमेंसे पांचदशस्वप्न  
हमनेभी कइदफे देखे लेकीन ! फल नहीं मिला, इसका समाधान  
यहीहै कि-जिसकाफल मिले वह सच्चा-और जिसका न मिले-  
प्रकृतिकेविकारवगेरासें आया जानना.

१३६-स्वप्नमें-अपने दिलपसंदगीकी चीज दिखाइदेना अच्छा है, फायदा होगा. नापसंद वस्तु दिखाइदेना अच्छानहीं.

१३७-स्वप्नमें-अपनीआंखकों जोजोचीज अच्छीलगतीहो-उन का दिखाइदेना किसीसुरतसें बुरानहीं, बुरीलगतीहो-उसका दिखाइदेना अलबते!-बुरा है.

१३८-स्वप्नमें-अपनेकानकों-नाककों-जबानकों-और-शरीरकों-सुहातीचीजका-इस्तिमाल करना दिखाइदे-तो-अच्छाहै, फायदा होगा.

## (३)-[ स्वरविज्ञान ]-



१-षडज-रिषभ-गांधार-मध्यम-पंचम-धैवत-और-निषाद-इनसातस्वरोंसें स्वरविज्ञाननिमित्त देखाजाताहै, जितनेमनुष्य-और-पशुपक्षीहै इनसातस्वरसें अलग नहीं बोलते. किसीकीअवाज षडजमें-किसीकी रिषभमें-और-किसीकी गंधारवगेरास्वरमें होतीहै.

२-मौरकी अवाज षडजस्वरमें निकसतीहै मुरधेकी-रिषभमें,-हंसकी गंधारमें,-गडरियाकी मध्यगमें,-कोकिलाकी पंचममें,-क्रौंच पंखीकी धैवतमें,-और-हाथीकी अवाज निषादस्वरमें निकसतीहै.

३-जिसमनुष्यकी स्वाभाविक अवाज षडजस्वरमें निकसती हो-उसकेपास दोलतझलाझल रहे, स्त्री उसे बहोत चाहे, और खानपानसें खुश रहे, अगर सवालकियाजायकि-मौरकीअवाजभी षडजस्वरमें कहीगयीहै, क्या!-उसेभी-यहफल होनाचाहिये!-(इस

का-जवाप,)-यह बात ठीक नहीं. सबब कि-मनुष्य और जानवर के नर्सीबेका बड़ा फर्क होता है, जो बात मनुष्यके लिये कही गयी जानवरोंके लिये नहीं समझना चाहिये.

४-जिस मनुष्यकी स्वाभाविक अवाज रिषभस्वरमें निकसती हो-उसे हुकमहोदा मीले, उसका खजाना तर रहे, इतरफुलेल-गेहवेगांटे-और-उमदाकपडे उसको पहनेके लिये मीले. स्त्री उसके ताबेमें रहे. और फुलोंकी शय्यामें शयन करनेवाला हो.

५-जिसमनुष्यकी स्वाभाविक अवाज गंधारस्वरमें निकसती हो-वो-गायनकलामें हुशियार-या-कवीश्वर हो-धर्मशास्त्रकामाहित गार-और-दूसरोको तालीमदेनेवाला होगा.

६-जिसको स्वाभाविक अवाज मध्यमस्वरमें निकसती हो-वो बड़ा खरचीला खुशमिजाज-और-एशआरामभोगनेवाला होगा-आप-हिम्मतवान् और दूसरोको हिम्मत देता रहेगा.

७-जिसकी स्वाभाविक अवाज पंचम स्वरमें निकसती हो-उसे राजाधिराजपदवी मीले, सारी दुनिया बदलजाय डरे नहीं, बेपरवाह एसा कि-किसीसे दवे नहीं, फोजका मालिक होकर इनाममें जहागिरी पावे.

८-जिसकी स्वाभाविक अवाज धैवतस्वरमें निकसती हो-वो-दूसरोको लडादे और आप अलगनिकलजाय-दगलबाज पूरा-और-जिसबातको पकड ले उसको छोडे नहीं, कुस्तीलडबेमें खे लारी-उसका जोर चलेतो दूसरेको जानसे मारडाले, मदिराके नशेमें मतवाला रहे. धर्मकी बात उसे सुहावे नहीं. और दाव लगेतो चौरीकरतेभी चूके नहीं.

९-जिसकी स्वाभाविक अवाज निषादस्वरमें निकसतीहै-वो-हमेशां टंटेंगगडोंहीसें राजी रहे, हिंसाके काममें कसाईसेभी बढकर पापीहो नोकरी करके पेटभरे, और-मजूरीकरके बड़ी तकलीफ उठावे. सातोंस्वरोंका बयान, ठाणांग-और-अनुयोगद्वारसूत्रमें-बड़े विस्तारसें लिखाहै, यहां हमने उसीसे उताराकरके लिया है, ज्यादा विस्तार देखनाहो उक्त आगमोंको देखलेना.

१०-षड्जस्वरकास्थान जबानका अग्रभाव-रिषवस्वरका छाती-गंधारका कंठाग्र-मध्यमका जबानके मध्यभाग-पंचमका नाशिका-धैवतका दांत होठ-और-निषादस्वरका स्थान भ्रुकूटिजानना.

११-परदेशजाते-या-किसीअछेकामकी नौव डालतेवरुत-मनुष्य-या-पक्षीकी-षड्ज-रिषव-और-गंधारस्वरमय-अवाज सुनाईदे तो जानना फतेह होगी.

१२-जिसघरके उपर रातकों सातदिनतक उल्लु बोले उस-घरमें रहनेवाला जलदी उजाड होजाय. घरके दरवजेपर बैठकर रातकों तीनदिनतक उल्लु बोले तो उसघरमें रहनेवालाका दिवाला निकल जाय.

१३-परदेशजातेवरुत पालेहुवे तोतेकी अवाज बामीतर्फ-और घरआतेवरुत-जीमनीतर्फ सुनाईदे तो अच्छाहै खुशी पैदा होगी. प्रयाणके समय घरसें निकले और पांचपचीसकदम अगाडीबढेबादवनके तोते उडउडकर सामने आनगिरे निहायत उमदा है. इरादा पूर्ण होगा. पिछाडीसें क्रांक्रांकरते रोतीअवाजसें अगाडीआनकर गिरे अच्छा नही. मुसाफरीमें फिसाद होगी.

१४-प्रयाणकेवरुत-या-अछेकामकी शरुआतकरतेवरुत-हं-

सकी अवाज सुनाईदे-या-हंस खुद नजरआजाय निहायतउमदा है काम फतेह होगा.

१५-परदेशजातेवरुत जिसका घोडा हनहनाटकरे-या-जीमने पांवसें जमीनको उकरेतो सवारकी फतेहहोगी. आराम मिलेगा.

१६-प्रवेशकरतेवरुत-जीमनीतर्फ गधा भोंके तो अच्छाहै खु-शीपैदा होगी.

१७-परदेशजाते-या-अच्छेकामकी शरुआतकरते वरुत-पो-रकीअवाज सुनाईदे तो ईरादापूर्ण हो, नाचताहुवा मौर दिखाई-देतो-निहायत उमदा है.

(१८)-परदेशजाते-या-अच्छेकामकी नींवडालतेवरुत-चको-रकी अवाज सुनाईदे-या-खुद चकोर वहांपर नजर आजायतो बहोतअच्छा है. कामजलदीफतेहहोगा, दुसराशरुश चकोर एसा-नाम मुंहसें बोलदे और तुमारेकान अवाज सुनाईदे तोभी निहा-यत उमदाहै.

(१९)-भारद्वाजपक्षीकि-जिमको मारवाडदेशमें रुपारेल बोलते है इसकी अवाजभी अच्छेकाममें-चकोरकीतरह अच्छी गिनीगई है.

(२०)-परदेशजातेवरुत-गींधपंखी-बामा-जीमना-या-सामने बोले तो अच्छा नही. जानेवालेको तकलीफ उठाना होगी. पिछाडी बोले तो अच्छा है.

(२१)-चलतेवरुत-या-अच्छेकामकी नींव डालतेवरुत-रौने-की अवाजसुनाईदे तो बुराहै. घंटेघडीयाल-सारंगीतबले-या-सुरी-लेवाजोंकी अवाज सुनाईदेना अच्छाहै, ईरादापूर्णहोगा.

(२२)-षडज-रिपभ-गंधार-मध्यम-पंचम-धैवत-और-निषा

द-येसातस्वर जो पहले लिखचूकेहैं इनके बिना पहेछाने संगीत कला एसोहै जेसा आस्मानमें चित्र बनाना-तीनग्राम-एकीसमुछ-ना-और-गुनंचासतान-बिनातालीस पाये नही आशकते. डरतेड-रेतगाना-या-बेताला गाना-गवैयोंकेलिये शर्मीदेहोनेकी बातहै. मो-ठीअवाजसे तालस्वरमें गाना ईसीमें गवैयोंकी तारीफ है.

(२३)-(सा-रि-ग-म-प-ध-नि-) ये सातस्वरकेबीजहैं. छराग-छत्तीसरागनी-और अड़तालीस पुत्र-कुलुपरिवार (९०) हुवे, भेरव-मालकोश-दीपक-हिंडोल-मलहार-और-श्रीराग-इनछहोंरागों कीपहलेजमानेमें बहताहसीरथीकि-असलीभेरवरागसें बिनाबैलघां-णीचलजातोथी-मालकोशमें पथ्थर पानीहोजाता था-दीपकसें दियाजल उठना,-हिंडोलसें झूलना खुद चलने लगजाना-मलहारसें बरसात बरसने लगना,-और-श्रीरागके गानेसें घरमें लक्ष्मी बढना सहजबातथी. नैयायिकोंके मतमें शब्दको आस्मानका एक-गुण माना है लेकीन ! जैनमतमें यहबात मल्लत समझीगईहै, क्यों-कि-शब्द आकाशका गुण किसीसुरतसें नही बनशकता. किंतु पुद्-गलका गुण बनशकताहै, ईसका खुलासा देखनाहो तो-रत्नाकरा-वतारिका-ग्रंथ देखो. निदान ! रागके पुद्गल उसब्रह्मत ऐसे छा-जातेहैं जो उपरलिखे बनाव आपही आप बनपडते थे. इसमें देव-कारण समझना भूलहै, अगर कोई सवालकरेकि-आजकलके गवैये क्या !-असलीराग नही गाशकते ?-अगरचे गाशकतेहैं तो फिर भेरवसें घांणीका चलजाना-मालकोशसें पथ्थर पानी होजाना-व-भेरवबनाव क्योंनही बनपडते ?-(ईसका जवाप.)-आजकल जमाना एसा आगयाकि-अच्छीबस्तु अपने-अपेपनकों-छोडती जारहीहै,



मंत्राकी ताकात कमजोर होनेलग गई-सच्चकी जगह झूठने आनकर दखल किया-और-धर्मका नाशहोकर अधर्म छागया-गानेवाले ऐसे नैक और पाक-न रहे-बस !-यही सबबहैकि-अच्छीबस्तुमें अब-अच्छापन नहीं रहा जैसा पहले था.

(२४)-भैरव-कालिंगडा-भैरवी-सिंधभैरवी-ललित-बिभास बेलावल-गुजरी-पटमंजरी-देवगिरि-रामगिरि-टोडी-आसउरी-हिंडोल-सारंग-गोडसारंग-नट-सिंधु-मारवी-मुल्तानी-धनासिरि-भीमपलासी-गोडी-पूर्वी-श्रीराग-दीपक-कल्याण-सुवासोगराई-कानडा-वागेसरी-जेजेवंती-केदारा-भोपाली-हमीर-अढाणा-बिहाग-खमाच-सारठ-मालकोश-परज-सोहनी-जंगला-झींझोटी-जीला-जोगिया-वसंत-देवगंधार-मल्हार-गोडमल्हार-सामेरी-तिलंग-छाया-बहार-ईमन-विलासखानीटोडी-जोनपुरीटोडी-गुनकली-माधवी-वेराडी-बंगाली-नटनारायण-छायानट-केदारनट-कोकभ-जेतसीरी-मालसीरी-देशकार-धुलियासारंग-शुद्धसारंग-बरवा-बडहंस-लछासाग-देवसाग-भवसाग-पुरिया-दरबारीकानडा-पंचम-राग-पंचमबहार-कामोद-तिलकामोद-मारुबिहाग-काफी-जलकेदारी-गोंडमल्हार-सुरकीमल्हार-मियाकीमल्हार-धुलियामल्हार-और-मालगुंज-वगेरा (३२०००) बत्तीसहजार देशीयरगणी दुनियामें अब मौजूद है, जिनको ईसकाशौख है हजारोलाखोंरुपये खर्चकर सीखते और सुनते हैं. कंजुसोंकी ताकातनहींकि-रागरागणीका आनंद उठाशके. जो देवलोककी गति भोगकर आयेहैं उनको गानेबजाने और सुननेका शौखहोताहै. उत्तम गाना-मध्यमबजाना-नेष्ट नाचना-विकट-बताना-यह मसाल उस्तादोंने ठीक-

ही है कि-गाना-सबसे उत्तम है, तालस्वरसे ईश्वरकी स्तूति किया-  
जाय तो यकीन है कि-पापोंका नाश होकर पुन्यानुबंधी पुन्यका लाभ  
होशके, बड़े बड़े गवैये दुनियामें मौजूद है जिनोंने सारी जींदगी इसी-  
में पूरी कर दिई-लेकीन ! अब तक उसके खोजी बनेहुवे कह रहे हैं  
हम कुछ नहीं जानते. बाजोमें सबसे बढकर देखना चाहो तो-बीन-  
से सब नीचे है, जितनी गुंजास इसमें रही है और बाजोमें नहीं.  
लेकीन !-गलेसे तो बोभी नीची है, सबब कि-गवैये लोग जितना का-  
म गलेमें करते हैं साजेंद-बाजोमें नहीं कर सकते. हां !-अगर चे-दों-  
नो-एकसे मील जाय तो अलबते !-अच्छा आनंद आ सकता है.  
गानेके मंगमें जो कुछ काम सरंगी देशकती है दूसरे बाजे नहीं देश-  
कते. बीन-भीतार-दिलरुवा-ताउस-मुरसींगार-रबाव-सरोद-ज-  
लतरंग-नशतरंग-या-हारमोनियम-कोई साज हो-लेकोन ! जो कु-  
च्छ काम गवैयेके साथ सरंगी देगी दूसरे नहीं देशकेगें. इसीलिये  
सरंगीका दूसरा नाम दूती भी कही गई है, सबब कि-गलेकी नकल  
करना इसीको आता है, अगर सवाल किया जाय कि-दूसरे बाजे  
फिर क्या कामके रहे ?-तो-इसके जवाबमें कह सकते हो कि-दूसरे  
बाजें-गत तोड़ा-और-आलाप-देनेमें बहुत ठीक लेकिन ! गानेके  
संग तो वही दूती काम देगी-अपशोष है तां. इतना ही है कि-दूसरे  
बाजोंके सामने इसकी आबरू बहुत कम है.

(२५)-गानेमें-और-बाजोमें-बो-ताहमीर रही है कि-जिसके बे-  
गसें लड़ाईमें नामर्द भी-मर्द-हो जाते हैं. करुणा-वीर-या-शींगार रसम-  
य गाना बजाना होता हो वहां अलबते ! कह सकते हो कि-आदमी  
का-दिल-और ही-हो जाता है, बाजे बाजे ऐसे बजानेवाले हैं कि-मु-

हसे बोलेनही और बाजोंमें बजाकर दूसरेको समझा सकतेहैंकि-तु-  
म-उसजगह जाकर वो चीज ले आओ.

(२६)-गानेमें आदमीके कंठसे औरतकेकंठकी नाजुकता  
ज्यादे वर्ननकिङ्गई है. एलममें अलषते ! जीतनी हदको आदमी  
पहोचशकताहै औरत हरगिज नही पहुँचशकती-लेकिन !-कंठमें  
उसके ज्यादा मुलामीयत रहतीहै. जवान औरत-मीठा गाना गाती  
है. श्याबलेरंगकी तेज गातीहै. गौरीऔरत स्पष्ट-कांणी ठहरठहरके  
और-अंधी-जलदीजलदी गाती है.

(२७)-बंशरी-अलगोजा-तूती-बेहला-और-नफरीभी-गाने  
के साथ अच्छासंग करती है, तीर्थकरदेव जब मालकोश-और-भी  
मपलाश-रागरागणीके जरीये धर्मोपदेश देतेथे-देवते उसवरुन दि-  
व्यबाजोंसे संगतकरतेथे. सोचोकि-तीर्थकर जैसे मुझगानेवाले  
और इंद्रादिदेव जैसे स्वरोकी संगतकरनेवाले जहां मिलजाय वहां  
फिर किस बातकी कमी रहशकतीहै ?-जिनशरुशोंके बड़े भाग्य  
हो-उनहीको जिनेंद्रोंकी वाणीसुननेका मौका मिलताहै, आर  
श्रद्धामें लाशकते है.

## ( ४ )-[चूकंप.]-

(१)-भूकंपके बारेमें कइकहतेहैं जमीनकेनीचे खारीपदार्थोंमें  
समुद्रकाजल घुमजानेसे-वे-उभरजातेहैं और उसकी भापसे जमी  
न कांप उठती है. कइ कहते हैं शेषनाग मथा हिछादे तो जमीन

कांपउठे. स्कोटलैंडमें सन (१७०८) में भारी भूकंपहुवाया, भूकंप क्यों हुआ !—इसका भेर जाननेके लिये—एवरडीननगरमें—कृष्ठां नपंडितोकी सभा जुडीथी, सभामें कइतरहके मत जाहिरहुबे—कोइकुच्छ और कोइ कुछ कहनेलगे—लेकीन? सबबाते ऐसीथी जो माननेमें न आशके, सचहैकि—सर्वज्ञोंके कथन बिदून सीखे षठे सच्चापार्ग कैसे पाशकताहै?—सर्वज्ञपणीत धर्मशास्त्रके मुताबिक—भूकंप—एकभारी उत्पात है. सब चीजका आधार जमीन—जब जमीनही कांप उठे इससे ज्यादा उत्पात और क्या होगा?—भूकंप का होना धर्मशास्त्रमें इसकारणसे लिखाहैकि—जबकभी—पाताल वासीदेवते आपसमें लडाइलडे—या—गुस्सा खाकर—जमीनपर छात मारे—तो—जमीनकांपउठे. अलबते—हजार दोहजार कोसतक कांप उठना कोइ आश्चर्यकी बात नही. क्योंकि—बडेदरजेकेदेवकी ताकात कम नहीं होती. यहवात जरूरहै कि—जब बुनियादारोंका नसीबा कमजोर आवे तभी ऐमे भारी उत्पात होताहै.

(३)—अगर निमकीनपदार्थोंकी भापसेहि जमीन कांप उठती होतो—बतलाइयें?—उछलकर उंची क्योंनही आजाती?—कइदके देखाजाताहै गांव के—गांव—फटकर—बल्किन् पातालमें गायब होजाते है, सोचो!—अगर उक्तबात सच्च होतीतो यह बनाव कैसे बनता? दूसरामत—शेषनागका कहा वहभी जूठहै. सबबकि—अगर जमीन शेषनागके मथेपर ठहरी हो तो बतलाना चाहिये!—शेषनाग—किसके मथेपर ठहरा है?—यह सबबाते लडकपनकी है, सच्च बात वही है जो धर्मशास्त्रका प्रमाण देकर पहले लिखचूके.

(४)—जमीनकंपनेका—फल,—राजाओमें लडाइदंगे—बडे—ब-

खार-हैजा-महामारी वगैरा रोग फैले-बरसात थोड़ा बरसे और हरतरह दुनिया दःख पावे,—अब न मिलनेसे हजारों आदमी भूखे मरजाय-लेकीन!—सारी दुनियाके लिये यह बात नहीं समजना. जिस चौखरेमें जमीन कांपी हो उसी चौखरेके लोगोंको फल होगा, ऐसा जानना.

( ४ )—जमीनकंपनेसे—लोग—त्राहित्राहि करदेते हैं—पांच सात बीमटी बजावे उतनी देरका भूमिकंप भी—गजब करहालता है अगर ज्यादा बरततक भूकंप होता रहे खबर नहीं क्या अनर्थ होजाय?—पहाड—नदी—सरोवर—वृक्ष—और—घर—टूटकर चूरचूर हो जातेहैं. कभी ऐसा भी होजाताहैकि—गांवके गांव जमीनमें दबजाते हैं. नदीयोंका जल उछलकर कहींका कहीं जागिरताहै, घरआंगण रास्ते—और—बागबगीचे फटकर बड़ेबड़े—जंगल—होजाते हैं, बेशुमार रौनापीटना—हाहाकार और जानका जोखम—इसी उत्पातसे उठाना पडताहै. कइ विज्ञानवाजोंने इसका भेद जानना चाहा, लेकीन ! चालाक भूकंपने अपनाभेद किसिसें जाहिर नहि किया और क्यों करे ? संसारमें अपनाभेद किसीकों कौन बतलाता है !—यह तो सर्वज्ञोंहोकी ताकातहै कि—बेपरवाहरूपसे सबजीजोंके गुणदोष और उत्पात विनाश अपने ज्ञानसे स्वतःजानशक्ते है.

## ( ५ )—[उत्पात.]—

( १ )—जबदुनियादारोंकानसीबा कमजोर आताहै अनहोते

बनाव बनने शुरू होतेहैं, इनहीअनहोतेबनावोंका दूसरानाम उत्पात कहदो कोइहर्जकोबातनही, जो जो उत्पात जमीनके तालुकहै / उनको यहां पांचवे निमित्तमें लिखलर-अंतरोक्षनिमित्तमें आकाश के उत्पात दिखलाये जायगे.

( २ )-जो जो उत्पात आमलोगोंकेलिये कहदेना मुनासिबहै वेंही इसपुस्तकमें लिखेजायगें, बाजे ऐसे योगभी है-जो-बडेही योग्य शुरुशुर्कों बतलानेके है-वें-यहां नही लिखेजायगें, उत्पात के कइतरीकेहैं जो संपूर्ण लेखकों पढलोगें मालूमहोजायगें. हकीकतमें जब खोटे दिन आतेहैं निमित्तभी उल्टे मीलना शुरूहोतेहैं.

( ३ )-जिसदेशके-जंगलमें-गांवमें-या-शहरमें-उत्पातकाहोना देखो वहां यकीन करलोकि-खोटेदिनोंकी निशानीहै.

( ४ )-जिसशहरकेदरबजेपर-या-देवमंदिरके शिखरपर बिजली गिरे-वहां-छमहिनेपें दुश्मनका जोर बढे.

( ५ )-जिसदेशमें नदीयोंकाजल जिसतरफ बहताहो-बदल कर-उल्टा बहनेलगजाय वहां एकवरसके भीतर राज्यकी बदली होजाय.

( ६ )-जहां देवमूर्ति-सुद्दहसनेलगजाय-या-रोतीहुइ दिखाइ दे-सिंहासनसें बिदून उतारे आपही नीचे उत्तरजाय-वहां-राजा ओमें तलवार चले-हजारों आदमी लडमरे-देशलूटजाय-या-आग लगे, और खजाना जलकर खाख होजाय.

( ७ )-जहां किसी दिवारपरबनीहुइ चित्रामकी पुतली रौने लगे-हसतीहुइ दिखाइ दे-या-भ्रकुटिचढाकर गुस्सा करे-वहां-उजाड होजाय. और आदमीयोंको घर छोडकर भगना पडे.

( ८ )-जहाँ रात्रीकों कागडे बोले वहाँ दुकाल पड़े-या-रा-ज्यमें हीलवल पैदा हो. सवेर हाने लगें जबतो कागडे हमेशां बोलतेही है. यहाँ उसका विचार नहीं किंतु आधीरात वगेरा की बात है.

( ९ )-जिस देशके राजेका-डंका निशान-लडाइके लियेचढते वख्त-बिदूनचोटलगे टूट जाय-उसकों बुरेदिन भोगने पडेगें.

( १० )-जहाँ देवमंदिरके-या-राजाके चवरमेंसें-बिदून अग्नि आगके इंगारे झरनेलगे वहाँ टंटेझगडेहोकर बहुतोंके मस्तक फुटेंगें.

( ११ )-जहाँ दिनकों शियाल और रातकों तीतर बोले वहाँ दुकाल पडेगा. तीतर दोरंगके होते है. यहाँ काले रंगका लेना.

( १२ )-वृक्षोंमेंसें लोहीकीधारा छुटना लडाइ होनेकी निशानी है.

( १३ )-जहाँ राजाके छत्रमें बिदूनअग्नि-आग-लगजाय-वहाँ राजविरोध जरूर हो.

( १४ )-जिसराजेके कोठारमें-या-आयुधशालामें-बिना अग्नि धुआं-निकलने लगे-वहाँ गदरहोगा.-और-हजारों आदमी-तलवारसें कट मरेगें.

( १५ )-जहाँ वृक्षोंमेंसें-दूध-दही-घी-या-सहेतकी-धारा छूटे वहाँ रोग चाला फैले.

( १६ )-जिस वृत्पातका फल-छ-या-बारांमहिनेमें-नहो-वह वृत्पात भूटा जानना.

## ( ६ )-[अंतरिक्षनिमित्त.]—



( १ )-जो जो उत्पात-आकाशके तालुक है-उनका बयान सुनिये !—

( २ )-चंद्र-सूर्यकी-चौफेर मंडल दिखाइ देना किसी सुरत अच्छा नहीं.

( ३ )-धूमकेतु-यानी-पूँछडीयातारा-दिखलाइ देना बहोत बुरा है, जिसदेशमें धूमकेतु दिखाइ दे उसी देशवालोंको तकलीफ होगी दूसरोंको नहीं.

( ४ )-लोही-मांस-हाड-तेल-घी-दूध-चरबी-सांप-बीजू-और-कीड़े मकोड़ोंकी वृष्टिहोना-भारी उत्पातका-कारण है, दु-कालपड़े-देशलूटजाय-या-रोग फैले, लोहीका वरसात फक्त लाल पानीहीसें नहींसमझना-सफेदवस्त्रपर गिराहुवा जल-अगर सुकेवा दभी लालरंगका बनारहे उसको लोहीका वरसात कहना ठीकहै.

( ५ )-ग्रहोंमेंसें धुएँ छुटना-सूर्यमंडलसें इंगारे झरना-दुकालकी निशानी है. चंद्रसूर्यका अकाले ग्रहण होना-किसी सुरतसें अच्छा नहीं.

( ६ )-संध्याके वरुत-सूर्यअस्तहोनेकेपीछे-और-चंद्रोदयसें पहले-अगर आकाश एकदम-लाल-होजाय-और कुछ समय बना रहेतां पृथ्वीपर प्रचंड युद्धका कारण जानना और उसमेंसें-एकमूर्ति-आदमीके आकार हाथोंको पसारकर निकले-बाद-छीपजाय और-फिर मथेपर हाथदेकर रोतीहुइ-निकले-वहां छपाहिनेये तल



वार चले. उजाड होजाय-या-हजारे आदमी वहां बैठकर रोवे.

(७)-जहां दिनमें सूर्यकी तेजीहोतेभी-तारें-दिखाइ दे-और रातकों बिल्कुल न दिखे-वहांके मनुष्योंकों-बुरोदिन भोगने होंगे.

(८)-आकाशमें-नकली बाजे-वज वहां गदर होगा.

(९)-उल्कापात उसकों कहते है जो जाजुल्यमान अंगारे-की तरह आकाशमें पैदाहोकर बढ़ती हुई-लंबी शिखा बनजाय और-पीछें-लॉप होजाय, अगर धजाके आकार होकर लॉप होतो अच्छाहै. हाथी-या घोड़ेकेआकारभी अच्छा-हंसकेआकार-चंद्रमाके आकार-पाहाड-शंख-वज्र-कमल-श्रीवत्स-और-मच्छके आकार होकर लॉप होनाभी अच्छाहै. इसके शिवाय दूसरी तरहकी-उल्का-बुरीहोतीहै, उल्कापात अक्सर दिनके अंतमें और रातके पहिलेही होताहै.

(१०)-उल्कापात-देवप्रातमापर-या-नगरके दरवाजेपर गिरे तो बुरा है.

(११)-उल्कापात जहांसे पैदाहुवाहों-वहां-पीछा लोट जाय अच्छाहै, लोटाहुवा-फिर पीछा आवे तो-बुरा, उंचानीचा-या सांपकी तरह बलखाता हुवा दिखाइदे बहोत बुराहै. जिसदिशामे जाकर उल्कापात गिरे उसदिशाके मनुष्योंकी हरतरह हारहोतीहै.

(१२)-तारे आकाशमें बड़ेजोरसें हीलते दिखाइ दे-या-उन-मेसें धुआं झूटता दिखपड़े-वहांके-मनुष्योंकों खोटेदिन भोगने पड़ेंगे.

(१३)-गांधर्वनगर-उसकों कहते है जो आकाशमें कइतरहके पुदगल-तदाकार-परिणमन-होकर-रंगबेरंगमें नगरके आकार-दिखाइ दे-कालेरंगका दिखाइ दे-तो-बुराहै-लालरंगका दिखाइ

दे तो जानवरोंको तकलीफ होगी. चाहे किसीरंगका हो पूरव पश्चिम-और-दखनदिशाका गांधर्वनगर अच्छा नहीं होता. उत्तर दिशाका-गांधर्वनगरकि-जिसमें गेहरा-साफ-और-चमकीला रंग हो-किला-तोरण-वृक्ष-और-पशुपक्षीके-आकार-जिममें उमदात-रीकेसे दिखाइदेतेहो-वह-अलबते !-अच्छाहै. लोगोंको सुखके दिन उपस्थित होंगे. ये संपूर्ण अंतरीक्षनिमित्त-जो-उपर लिख आये-जिस चौखरेमें दिखलाइ दे उमी चोखरेके-मनुष्यो-उक्त फल-होगा-सारी दुनियाको नहीं.

## ( ७ )-[ व्यंजननिमित्त. ]-



१-व्यंजनशब्दकरके तील-मसा-और-लहसन-तोनोही जाननाचाहिये.

२-शरीरकीचमडीपर तीलजैमे आकारका श्यामरंगचिन्ह जो होताहै उसको तील बोलते है.

३-चमडीसे कुछ ऊंची बढ़कर मांसकी छोटीसीगोलगांठ-राइ-या-बाजरीके-मुताबिक हो-उसको मसा बोलतेहै, इससे बड़ा मसा खूबसुरतनहीकहलाता.

४-लहसन-उसको कहतेहै जो कुंकु-या-कसुंबेके रंगमाफिक लालवर्णका चिन्ह-चमडीपर होताहै. तील-मसा-या-लहसन-को इहो-अगर खूबसुरत और अखंडित होगा अच्छाफल देगा. बढ़-

सुरत-खंडित-या-छिन्नाभिन्न-होगा-अच्छाफल न देगा-महानिशी-  
य-और-प्रवचनसारोद्धारमें-व्यंजनशब्दका-अर्थ तील-और-मसा  
लिखा है. तील-मसेका-रंग श्याम-और-लहसनका रंग-बहोतक-  
रके लाल और कुच्छ श्याम होताहै.

५-मस्तकपर-या-कपालमें-तील-मसा-या-लसनहो-वो-हर-  
जगह मान पायगा.

६-भ्रूपर-तीलहो-देशांतरमें फायदा उठायगा.

७-आंखपर-तीलहो-नायकपदवी पावे.

८-मुंहपर-तील होतो दोलत झलाझल मिले.

९-गालपर-तील हो खूबसुरत औरत मिले.

१०-नाकपर-तील हो-इतर बहोत सुंदर.

११-होठपर-तील हो-उसकीबात सवाइ रहे. नीचलेहोठपर  
हो तो कंजूस रहे.

१२-कानपर-तील हो उसे गेहने आभूषण बहोत मिले.

१३-गर्दनपर-तीलहो उसे ऐशआराम ज्यादा मिले.

१४-छातीपर तील हो-उसको अच्छी औरतमें फायदा हो-  
ता रहे.

१५-हाथपर-तीलहो-अपने हाथकी कमाइ भोगे, दुश्मनसें  
फतेह पावे.

१६-हथेली-या-पंजेपर-तीलहो-बडाखरचीला हो.

१७-पुरुष चिन्हपर-तील-होतो अच्छी स्त्रीसें मुलाकात ब-  
नी रहे.

१८-कोषग्रंथीपर-तीलहोतो-प्रतापी हो.

१९-जांघपर-तील हो उसे सवारीचढ़ना बहोत मिले.

२०-पांवपर-तीलहो-बो-परदेशमें ज्यादा फिरे.

२१-अगर कोई सुवालकरेकि-हमारे-उक्तजगह-तीलहोतेहु-  
वेधो-फलदायक क्यों नहीं होता?-(जबाब.) अखंड और खूबसु-  
रत-नहोगा इसलिये फायदा नहीं पातेहो, पुरुषकों जीमनेअंगपर  
तील-मसा-या-लहसन-अखंड और खूबसुरत होगेतोजरुर अच्छा  
फल करेगें, हां !-इतनाजरुरहेकि-नामर्द और कंजूस आ-  
दमीके कोईचिन्ह फलदायक नहीं होते, सबकि-उसके अच्छे  
लक्षण भी कमजोर होजाते है, हिंममत और उदारता पुन्यवानो  
के लक्षण है.

(अथ,)-[स्त्रीकों-वामेअंगपर-तील-मसा-या-लहसन  
अखंड-और-खूबसुरतहो-उसका-फल,-]-

१-माथेपर-तीलहोतो राजाकी रानी हो.

२-कपालपर-तीलहोतो-बडेघरानेकी स्त्री हो.

३-आंखपर-तीलहोतो-निजपतिकों अतिवल्लभ हो. ३

४-गालपर-तीलहोतो-ऐशआराम बहोतकरे.

५-नाकपर-तीलहो-फुलगजरे सुंघती रहे.

६-कानपर-तीलहो-जेवरबहोत पहने.

७-गलेपर-तीलहोतो-घरमें हकुमत चलावे.

८-स्तनपर-तीलहोतो पुत्रवतीहो.

९-स्तन का-मुखलालरंगका हो-उसकेपास दोलत झलाझ-  
ल बनी रहे.

१०-हाथपर-तीलहोतो घरवालोंकों प्यारी लगे.

- ११-योनिपर-तीलहो-नो-मैथुनकिया बहोत चाहे.  
 १२-जांघपर तोलहो-उसकेपास दासदासी बने रहे.  
 १३-पांवपर-तोलहो तो परदेशमें बहोत फिरे.  
 १४-जीमनेअंगपर-तील-ममा-या-लहसन-होतो कमजोर  
 फल देगा, सबबकि-स्त्रीका बामाअंगही प्रधान गिनागया है.

## ( ८ )-[ लक्षणविज्ञान, ]-



१-शरीरके लक्षण कइतरहसँ देखेजातेहै. जिसकेशरीरका रंग-चंद्रमा-सूर्य-बीजली-हीरा-माणक-मोती-मुन्ना-हींगलु-मूंगे-हरताल-मणसील-अग्नि-जल-चंदन-कमल-वरमात-प्रियंगु-शंखया चंपेकी तरह-रंगदार और चमकोला-हो वह प्रतापी होता है, चाहे मर्दहो-या-औरत-उमदाशरीरपाना भाग्यवानीका चिन्ह है—

अगले जमानेमें जैसा कुच्छ रुपरंग था अब वैसा नहीं रहा, इसलिये कहसकतेहैकि-पुन्यवानी अब विदा होतीजातीहै, उपर लिखे-मुताबिक-रंग रुपवाला-अलबते!-खानपानसँ-मुखी होताहै, इतरफुलेल-गेहने आभूषण-और-फुलजगरोसँ-मुशोभित रहताहै,

२-मेघध्वनि-बुंदुभि-हाथी-सिंह-शार्दूल-भ्रमर-सारस-कोकिल-चक्रवाक-क्रौंच-हंस-बीणा-सरंगी-और-घुंघरुकीतरह जिसकी मीठीअवाज हो-वह प्रतापी और मुखी होता है. चाहे मर्दहो-या-औरत-मीठीअवाजवाला हरजगह मानपाताहै, उसकी इज्जतआबरू अच्छी फैलतीहै. गधा-सूअर-और-काककेसमान जि-

सकी अवाज हो-वो-पापी-और दुखी होता है.

३-जिसकी चाल हंसकीतरह-या-सिंह-व्याघ्र-वृषभ-और-हाथीकीतरहहो-वह विजयीपुरुष होताहै. नोकरचाकर-और-मित्र परिवार उसकी सेवामें सदा बने रहेगे.

४-खूबसुरतरुपवाला चाहे मर्द हो-या-औरत काइ हो-अकसर!-सुखी और दोलतमंद होते हैं. उमदारुप पुन्य विदून् नही मिलता. दुनियामें सबसँभारी वशीकरणरुप है, शास्त्रमें बयान है कि-अमूककुमारका रुपदेखकर अमूककुमरी मोहित हो गई, अमूक कुमरीका रुपदेखकर अमूककुमर मोहितहोगया बल्किन्-रुपवान् प्राणीपर देवतेभी मोहित होजाते हैं, पुरुत्तासंठाण. और संघातन भी पुन्यविना-नही मिलता.

५-सत्त्व-नाम-हिंम्मतका है. जो शरूश बहोत हिंम्मतवान् हो वो-बडाभाग्यवान् होताहै, खालीबडाइमारनेवाले दुनियामें बहोत है लेकिन!-तकलीफ के वरूत-हिंम्मतरखे-हम उसे हिंम्मतवान् कहते हैं. तीर्थकर गणधर-चक्रवर्ती-वासुदेव-और-महर्द्धिकराजे-अवनहीरहे, सारीदुनिया दुग्मन होजाय और डरेनही वैसेभी कम है, आजकल जैसेकुच्छ हिंम्मतवान् रहे हैं आपलोगों किसीसँ छीपे हुवे नही, बस!-हमे यहां इतनाही कहना बहोत है कि-तकलीफके-वरूतभी गभराय नही और हिंम्मतरखे-उसीकों सत्त्वावान् की पंक्तिमें गिनलो. एकतर्फ एकत्तीस लक्षण-और-एकतर्फ-धी-रजगुण सबसँ बढकर कहा, अगर तुमकों सुखीरहनाहै-तो-हिंम्मतरखो-या-हिंम्मतवान् कहे उस माफिक चलो, दुनियामें क-इलावतभी मशाहूरहैकि-मर्दकी गिर्दमें रहना-लेकिन!-नामर्दकी

उगेहो-वो-बड़ाप्रतापीपुरुष होताहै. ललाटपर केशका होना जो उपर लिखआये वह आजुबाजुकीबात उपरकी नही. जिसका मस्तक बड़ा और खूबसुरत हो-वो-राजा-या-साधु होगा. छत्रके आकार मस्तक होना निश्चायत उमदा है.

१४-जिसकी आंखका सफेद भाग स्वभाविकरूपसे कुछ लाल हो-स्त्री उसको-चाहकर मीलेगी. जिसके नेत्रकी पुतली कुछ पीलासलियेहो उसकेपास दोलत बनी रहेगी. जिसके नेत्र-चमकी ले-यानी-तेजस्वीहो उसके बड़ेभाग्य समझना चाहिये, मुरघेके जै-से नेत्र हो वो-मूर्ख होताहै, बिलाइके समान मांजरी आंखवाला बड़ा दगाबाज और पीली आंखवाला खूनी होताहै. सर्पके नेत्र जैसे नेत्रवाला रोगी-स्निग्धलोचनवाला सुखी-दीननेत्रवाला निर्धन-उंडी आंखवाला दीर्घायु-और-टेढी आंखवाला मतलबी होता है. कमलसमाननेत्र उमदा होते है.

१५-जिसके-बत्तीसदांत हो-वो-मुनि-राजा-या-प्रतापी गृहस्थ होगा. एकत्तीस हो-वो-दिवान-तसिहो-वो-सुखी-और-इ-ससे कमहो-वो-सुखी कम रहता है.

१५-जिसके कपालमें पांच रेखा होवो-(१००) वर्ष-जीयेगा. चार रेखावाला-(८०) वर्ष-तीन रेखावाला-(६०) वर्ष-दो रेखावाला-(४०) वर्ष-और-एक रेखावाला-(२०) वर्ष-जीयेगा. जिसका कपाल उंचा और बड़ाहो उंचीपदवी पायगा, अर्द्धचंद्रमाके आकार कपाल उमदा कहा. जिसके कपालमें खड्डा हो-वो-अच्छा नही. बीचमेंसे थोडामा उंचा होतो अच्छा है.

१७-जिसकी दाढी मांससें पुष्ट हो-दोळतमंद-होता है, जि-

सकी पतली और लंबी-हो-वो-दूरीद्री जानना.

१८-जिसका मुख सदा हसता रहे-वो-कभी दुखिया न होगा. आंखों मीचकर हसनेवाला पापी होता है. जिसके आंखोंके पर्दे कनारेपरसें लाल हो-वो-द्रव्यवान् होता है. जिसकेकान लंबे और खूबसुरत हो-वो-सुखी रहेगा. छोटे कानवाला कंजुस होता है. जिसके गालमें हसते बख्त खड़े पड़ जाय वो-परायेधनसें धनवान् बने-और पराई औरतसें दोस्ताना करे तात्पर्य यह है कि-वो-निज मातापिताका मुख न भोगे.

१९-जिसकी छाती सपाट हो बड़ेबड़े आनंद भोगेगा. जिसकी बीचमेंसें उंडी हो-वो-रूपये पैसेसें तंग रहे.

२०-हरमनुष्यके हाथमें जो तीनरेखा-बड़ी होती है उनमें कनिष्ठा अंगुलीके नीचेसें चलकर तर्जनी अंगुली तक जानेवालीका नाम आयुष्यरेखा जानना. बीचलीका नाम विभवरेखा-और-मणिबंधसें निकलकर अंगुठे और तर्जनीके बीच जा मिलनेवालीका नाम जशरेखा है. विभवरेखाका दूसरा नाम मातृरेखा-और-जशरेखाका दूसरानाम पितृरेखाभी बोलते हैं, ये तीनोंरेखा अखंडित और लंबी होतो उसकी-इज्जत आबरू-दोलत-और उमर-पुरीजानना. खंडित होतो खंडित, कइ जगह विभवरेखासेंभी आयुष्यका विचार करना कहा है, अगर विभवरेखा छोटी हो-तो-छोटा-और लंबी हो-तो लंबा आयुष्य जानना.

२१-जिसके हाथमें शंखका चिन्ह हो-वो-दोलतमंद रहेगा. जिसके हाथमें छत्रका-या-धजाका चिन्ह हो-वो-देवकीतरह सत्कार पाता रहेगा. जिसके हाथमें-केवारीसिंहका-या-हाथीका चि-



न्ह हो-वो-राजा-या-राजकी तरफसे हुकमहोदा चलानेवाला होगा. जिसके हाथमें अंकुशका चिन्ह हो उसके घर हाथी बंधे. जिसके हाथमें सूर्यका चिन्ह हो-वो-हिंमतबहादूर होगा. जिसके हाथमें सिंहासनका चिन्ह हो-वो-उंच आसनपर बैठेगा. जिसके हाथमें चंद्रमाका चिन्ह हो-वो-भोगविलासी होगा. जिसके हाथमें बैलका चिन्ह हो-वो-बहोत मनुष्योंको पालन करेगा.

२२-जिसके हाथमें देवमंदिरका-या-नंद्यावर्तका-आकार हो वो-बडेनसीबेदार हांगा, धर्महीके प्रभावसे उसके सबकाम फतेह होते जायगे. जिसके हाथमें तलवारका आकार हो-वो-बडा जीदी होगा, जिसके हाथमें धनुष्यका आकार हो दुनिया उसे बहोत चाहेगी, दूसरोको उसके दर्शन होना भी मुश्किल होगा. जिसके हाथमें फुलमालाका आकार हो-वो इज्जतदारोसेंभी बढकर पूजा-यगा. जिसके हाथमें चवरका आकार हो-वो-राजाका दिवान होकर अपनेपर चवर ढुलायगा. जिसके हाथमें मुकुटका आकार हो वो-पूज्यपदवी पायगा. जिसके हाथमें रथका आकार हो उसके घर रथ बंधेगा. जिसके हाथमें कलशका चिन्ह हो उसके इरादे पूर्ण होते चले जायगे, जिसके हाथमें कमलका आकार हो-वो-भोगविलासी होगा. जिसके हाथमें सांपका आकार हो प्रकृतिका जल्लाद, लेकीन !-दोलतमंद जरूर बना रहेगा.

२३-जिसके हाथमें स्वस्तिकका चिन्ह हो-वो-पीछली उमरमें सुखी रहेगा, जिसके हाथमें पदमका चिन्ह हो-वो-बुद्धिमान सहस्रावधानी होगा. जिसके हाथमें मृदंगका चिन्ह हो-वो-धीरजवान् होगा. जिसके हाथमें भालाका चिन्ह हो-वो-लडाइखोर-और

तीरका चिन्हहो-वो-पंडित होगा. जिसके हाथमें विमानका चिन्हहो-वो-जिनमंदिर बनानेवाला होगा, जिसके हाथमें-वृक्ष-या-तोरणका-चिन्हहो-वो-जहागिरदार होगा. जिसके हाथमें जहाजका चिन्हहो-वो-कोटीध्वज-होगा. जिसके हाथमें हल-मुशल-या-त्रिकोणका चिन्हहो-वो-किसानहोगा-या-जमीन उसे इनाम मीलेगी. जिसके हाथमें पुष्करणीका चिन्हहो उसकीबात सवाइ रहेगी. जिसके हाथमें समुंदरका चिन्हहो-वो-राजाओकाभी राजा बनेगा. जिसके हाथमें त्रिशूलका चिन्हहो-वो-धर्मध्वज होगा. और धर्मचर्चामें बड़ेबड़े पंडितोंकाभी लाजवाब करेगा. जिसके हाथमें चक्रका चिन्हहो-वो-हरजगह फतेह पायगा. जिसके हाथमें मौरका चिन्हहो-वो-विजयी होगा, जिसके हाथमें कच्छुवाका चिन्हहो-वो-शांतस्वभावी होगा.

२४-जिसके हाथमें वज्रका आकार हो-उसे-बड़ाहोहा मिलेगा. जिसके हाथमें योनिका आकार हो-वो-प्रतापी हागा, जिसके हाथमें पहाडका आकार हो-वो-राजाका मंत्री होगा. जिसके हाथपर बहोतकेश उगे हुवे हो-वो-दुखसें जींदगी तैरकरेगा. जिसके हाथको दशअंगुलीयोमें दशचक्र हो- १-साधु-या-छत्रपतिराजाहोगा. नवचक्र हो-वो-राजा-दोलतमंद गृहस्थ होगा, आठचक्रवाला हमेशा रोगी रहेगा. सातचक्रवाला सुखी छचक्रवाला कामी-पांच-चार-तीन-दो-या-एकचक्रवालाभी-गणवान् होताहै, जिसके दोनों हाथोंकी अंगुली-और-अंगुठोंमें-जीमनेमें दक्षिणावर्त्त-और-बामेंमें बामावर्त्त-शंख हो-वो-हरतह सुखी रहेगा. जिसके हाथकी अंगुली और अंगुठोंमें साँपका चिन्ह हो-वो-तीनो अव-

स्थामें दुखी रहेगा.

२५—जिमने हाथकी आयुष्यरेखा जितनीअंगुली लंघजाय एकएक अंगुलीपर वीशवीश वर्ष गिनकर संख्या लगाओ. जैसे किमीकी तीनअंगुलीये लंघगइ हो उसकी साठवर्ष आयुः जानना. एकएक अंगुलीपर पचीस पचीस वर्षकी संख्या लगाना भी ठीक है, वीश वर्षकी बात कालहानिके सबब किइ गइ है. जिसकी आयुष्यरेखा बीचमेंसे दूटीफूटी हो उमर उसकी बहोतकम होतीहै.

२६—आयुररेखामेसें अंगुलीयोंकी तर्फकों जितनी रेखा निकसीहो—उतनी उस पुरुषकों विपदा भोगनी पड़ेगी. मणिबंधकी तर्फकों जितनी निकसीहो उतनी उसे धनसंपदा मीलेगी.

२७—मणिबंधसें पांचतरहकी उर्द्धरेखा—जो—अंगुली और अंगुंठेकी तर्फकों जाती है उसका बयान सुनिये!—प्रथम उर्द्धरेखा—जो—मणिबंधसें निकसकर अंगुंठेके नीचे तक जामीले उसकों राज्यकी तर्फसें फायदा होगा. जिसकी दूसरी उर्द्धरेखा मणिबंधसें चलकर तर्जनीतक जामीले—वो—राजा—या—राजका दिवान होगा. इसी तरह जिसकी तृतीय उर्द्धरेखा मणिबंधसें चलकर मध्यमातक जामीले—वो—अगर साधु हो जायतो आचार्यपदवी पावे गृहस्थ रहेतो सेनापति बने. इसी तरह जिसकी चतुर्थ उर्द्धरेखा—मणिबंधसें चलकर अनामिकातक—जा मीले—वो—दोलतमंद होगा और बहोतसें मनुष्याकों पालन करेगा. इसी तरह जिसकी पांचमी उर्द्धरेखा मणिबंधसें लगाकर कनिष्ठा अंगुलीतक जामीली हो—वो—बड़ा इज्जतदार और होसलेवाला होगा.

२८—जिसके जिमनेहाथकी विभवरेखा—अखंड बेधवर्जित—

और लंबी हो-वो-अपने खानदानमें-सबसे बढकर प्रतापी होगा, विभवरेखासे अंगुलीतर्फ जितनी पल्लवरेखा निकसी हो उतने उसके दुश्मन-और-जितनी अंगुठेकी तर्फ निकसी हो उतने साहाय्यकारक होंगे.—

२९-जिसके मणिबंध-यानी-पहोंचेकी जडमें तीनरेखा आडी पड़ी हों-वो-बड़ा प्रतापी होगा. अगर मणिबंधके उपरभी तीनरेखा पड़ी हो-तो-बहुत बड़ा राजा होगा. जिसके दोरेखा हो-वो-दिवान होगा, जिसके एकरेखा हो-वो-सामान्य मनुष्य गिना जायगा.

३०-अंगुठेके मध्यभागमें जिसके यवका आकार हो-वो-दो-दोलतमंद होगा, अंगुठेके उपरलेभाग-यानी-पिछलेपासे जिसके यवका आकारहो-वो-सदा सुखी रहेगा.

३१-जिसकी अनामिका अंगुलीकी अंत्यरेखासे कनिष्ठाअंगुली-और-मध्यमा अंगुलीकी अंत्यरेखासे-तर्जनी-बढगइहो-वो-दोलतमंद होगा. कमहोतो रुपये पैसेसे तंग रहेगा.

३२-जिसके हाथकी अंगुली खड़ीकरके देखो और परस्पर मिली हुई देखाइ दे-वो-दोलतको इकठी करेगा और जिसके बीचबीचमें अंतरपढा दिखाइ दे-वो-हरकार्यमें बहुत कुछ स्वर्च करेगा, याने दिलका दलेर होगा, अनामिकाके मूलसे-कनिष्ठाअंगुलीका मूल कुछ नीचेको हो-वो-बुद्धिमान होगा. इसी तरह जिसका मध्यमासे तर्जनीकामूल नीचेको हो-वोभी-अकलमंद और उपदेशक होगा. अनामिका अंगुलीके नीचे और आयुरेखाके बीच जीतनी खड़ी-या-तीरश्चीन रेखा हो उतना उसपुरुषको ध-

र्मज्ञ और शास्त्रवेत्ता जानना, कनिष्ठा अंगुलीके ठीक नीचे और आयुररेखाके सामने जितनी खड़ीरेखा हो-उतनी उस पुरुषको सुखसंपदा मिलेगी.

३३-अनामिका अंगुलीके-निचलेपोरवेमें-जितनी-आड़ीरेखा हो-उतनी-वो-पुरुष ठकुराई भोगेगा. जितनी खड़ीरेखा हो-उतनी उसकी धर्मश्रद्धा पृष्ठ रहेगी. मध्यमा अंगुलीके निचलेपोरवेमें जितनी आड़ी और उभी रेखा हो-उतनी उस पुरुषकी-ठकुराई-और श्रद्धा-कम-होगी. अनामिकासे मध्यमाका फल शास्त्रोंमें उलटा कहा है. कनिष्ठा अंगुलीके निचले दोपोरवेमें उर्द्धरेखाका होना अच्छा है.

३४-जिसके हाथमें अंगुठेके निचे-और-पितृरेखाके सामने जितनी आड़ीरेखा-हो-उतनी उसको आरामकी जगह मिलेगी.

३५-जैसे जिमनेहाथके लक्षण-पुरुषके देखते हैं वैसे वामेहाथके भी देखने चाहिये, जिमनेहाथके लक्षण संपूर्ण फल देते हैं, वामेहाथके न्यूनदेते हैं, बिल्कुलव्यर्थ नहीं जानना, कृष्णपक्षमें जन्मे हुवेके वामेहाथके लक्षण दाहनेहाथके लक्षण समान फलदायक होता है, इसलिये निश्चय है कि-वामेहाथके लक्षण भी कार्यकारी हैं, जैसे जिमनेहाथमें-पितृ-विभव-और-आयुरेखा सबके होती हैं वैसे वामेहाथमें भी होना स्वाभाविक नियम है, वामेहाथकी पितृरेखा जिसके निर्दोष हो-वो-देवलोककी गतिभोगकर आया जानना. इसी तरह विभवेरेखा निर्दोष हो तो मनुष्यकी गति-और आयुरेखा निर्दोष हो-तो-अधोगति भोगकर-यानी-तिर्यच होकर आया है ऐसा समझो. जिमनेहाथकी पितृरेखा जिसके निर्दोष हो-वो-यहांसे मरकर देवलोक जायगा, विभवेरेखा निर्दोष

हो-वो-मनुष्यगतिमें-और-आयुरेखा निदाष हो-वो-तिर्यचग-  
तिमें जायगा.

३६-जिस पुरुषके वामेहाथकी विभवेरेखा अखंड निर्दोष और लंबी हो उनको मनचाहा भोगविलास मिलेगा, जिसके वामेहाथमें कृपाणि अर्थात् खुरपीका आकार हो उसे बुद्धि मिलेगा. जिसके बजाका और चंद्रमाका आकार हो उसे चंचल और गौरवर्णका स्त्री मिलेगी. जिसके वामेहाथकी आयुरेखा और कनिष्ठा अंगुलीकी जड़के बीचमें जितनी आड़ी रेखा हो उतनी उस पुरुषके स्त्रीयें मिलेगी. जिसका विवाह सारी उमरतक नहुवा हो और उसके उक्तेरेखा मौजूद हो तो जानलौकि उतनी स्त्रियोंसे उसकी मोहवत हो चुकी है, जिनको दीक्षारेखा और स्त्रीरेखा दोनों मौजूद है-तो-कहदो-जो-अखंड और निर्दोष होगी. वही फलदायक होगी. दीक्षारेखा पुरुषके वामेहाथमें स्त्रीरेखाके अग्रभागमें होती है, दीक्षित हुवे बाद स्त्री मंगमका अभाव होता है इसलिये उक्त स्त्रीरेखा उनका दूसरी तरहकी प्रभुता देती रहेगी. स्त्रीको पतिरेखा उसके जिमने हाथमें आयुरेखा और कनिष्ठाकी जड़के बीचमें होता है. उसको देखकर उसके पतिके सुखका विचार करना. जो स्त्री संसार छोड़कर दीक्षा लेती है उसकी पतिरेखा उसे ज्ञानप्राप्तिद्वारा फलदायक होती है. पुरुषके वामेहाथकी कनिष्ठा अंगुलीके और आयुष्देरेखाके बीचमें जो राज्यरेखा होती है. उसमें भी दीक्षा-धर्म-और इज्जत आबरुका विचार किया जाता है. जिस पुरुषके वामेहाथकी आयुष्यरेखा अखंड और निर्दोष हो उसको अपनी स्त्रीसे अत्यंत प्रीति रहेगी.

३७-बामेहाथकी चारों अंगुलीयोंके बीचले पौरवेमें जितनी खड़ीरेखा हो उतने उसके बड़े दुश्मन-और जीमनेहाथकी अंगुली-योंके बीचले पौरवेमें जितनी खड़ीरेखा हो उतने उसके प्यारे मित्र होंगे.

३८-एकहजार आठ-एकमाँ आठ-या-बत्तीस लक्षणोंमें-एक भी लक्षण-पुगेपुग स्पष्ट-जिसके हाथमें-या-शरीरमें हो-वो-एकही बहोत कुच्छहै, सारी उमर तक वही फल देता रहेगा, हां! इतना जरूर है कि-जो-सुलक्षण-या-कुलक्षण-बहोत माफ-और-बलवान् होगा वह ज्यादा फल देगा.

३९-हस्तरखा दिखलाने वाला मनुष्य-उमदाफल-मीटाइ-या नगदरपया-हाथमें लेकर-रेखाज्ञानीके सामने जावे विनयके साथ-रूपया-या-फल-जो कुच्छ लेगया हो रेखाज्ञानीके मनुष्य रखे. यानी-भेट करे. रेखाज्ञानी उसकी जाति-कुल-और-धर्मश्रद्धा-देखकर फल कहे. पहले आयुष्यका हाल बयान करना चाहिये क्योंकि आयुष्य टुकी हो-तो-फल क्या काम आयगा. रेखाज्ञानी अगर-नास्तिक श्रद्धावाला हो तो धर्म पुरुषकों चाहिये उमकों अपना-हाथ न दिखलावे, अधर्मीओंकी विद्या सत्य नहीं होती. अधर्मीकों धर्मीपुरुष हाथ दिखलावे यह योग्य भी नहीं है.

४०-जिस पुरुषके स्त्रीरेखा मौजूद है और कोई कुयोगसें उसका विवाह नहुवाहो तो अनुमान करलोकि-स्यात् इसने पराइ स्त्रीयोंसें संभोग किया है-या-करेगा. रेखाका फल मारा नहींजाता. क्योंकि-आठबरहके जो-कर्म जैन आगममें बतलाये है उनमें ना-मकर्मकी प्रकृतियोंमें रेखा लक्षण बगेराकी पैदाश कही, निका-

चितकर्म निष्फल कभी नहीं जाते. जरूर भोगने पड़ते हैं, इसलिये कहे सकते हैं कि-रेखाविज्ञान-बहुत ठीक और प्रमाण करने योग्य चीज है. लेकिन!-देखनेवाला होशियार होना चाहिये.

४१-जो पुरुष-अपने हाथकी अंगुलीयोंसे (१०८) अंगुल प्रमाण उंचा हो-वो-तेजस्वी होगा. क्योंकि-उत्तम पुरुष अपने हाथकी अंगुलीयों एकसां आठ अंगुल प्रमाण उंचे होते हैं (९.६) छतुं अंगुल उंचा-मध्यम पुरुष-और चोरासी अंगुल-उंचा हो-वो-सामान्य-और इसमें भी कम हो. वो दुखसे जींदगी तैर करेगा खड़े होकर लंबी दूर लेना और जीमने पगके अंगुठेसे डवाकर मस्तक तक नापना-फिर उमे दूरको अपना अंगुलीयोंसे इस तरह नाप देखना कि-कितनी अंगुल प्रमाण दूर लंबी हुई,-इसतरकीबको कोई न समझ सके-ता-रेखाविज्ञानके भेदीको मिलकर पूछे. बिना शिखे पढ़े कोई काम ठीकठीक तौरसे मालूम नहीं होता.

४२-जिसके पाँवके तलवेमें (९) नव अंगुललंबी उर्द्धरेखा हो वो-निश्चय-राजा-या-निर्ग्रंथमुनि बनेगा. जिसके पैरमें वज्र-हल या-कमलका-चिन्ह हो वो भी-राजा-या-निर्ग्रंथमुनि जरूर हो, जिसकी जंघापर थोड़े केश हो-और-रंगें-न दिखाई देती हो-वो-अच्छा आनंद भोगेगा. जिस पुरुषकी जंघा-हिरनजंघाकी तरह हो-पुन्यवानीकी निशानी है. जिसके पाँवमें चक्र हो-उसके-बड़े भाग्य-समझना चाहिये जिसके पाँवके अंगुठोंमें-या-अंगुलीमें-यवका चिन्ह उसे हकुमत मिलेगी. जिस पुरुषका-शुक्र-वर्धनदार-होगा-वो-प्रतापी-या-पंडित होगा. जिसका शुक्रपात जलदी होता हो-वो-लंबी आयुष्य-भोगेगा. जिसके पाँवके तलवेमें-तोरण-



पद्म-अंकुश-और-वज्रका चिन्ह हो-वो-जहर राजा-या-मुनि हो-गा. जिस पुरुषकी चाल कागडेकी-उलुकी-या-कुतेकी तरह हो-वो-दुखसे जिदगी तैर करेगा. जिस पुरुषका वीर्य सुगंधवाला हो-वो-स्त्रीयोंको-बलभ-लगेगा.

४३-जिसकी नाभी उंडी हो-वो-सुखी रहेगा.-कान-नाक-पैर-हृदय-हाथ-और-नेत्र-लंबे हो-उसकी आयुष्य लंबी जानना. अत्यंत बुद्धिमान्-अत्यंत कीर्त्तिमान्-अत्यंत शूरवीर-और-अत्यंत सुखी थोड़ी आयुष्यवाले होते हैं. सबबकि-इस कालमें ज्ञानीयोंने उमदावस्तुकी नास्ति फरमायी, जिसका नाक-तोतेके नाककी तरह अनीदार हो अच्छा है, नाकके दोनों छिद्र छोटे होना निहायत उमदा है. जिसका नाक हमेशा मुका रहता हो लंबी आयुष्य भोगेगा. जिसका पुरुष चिन्ह वामीतर्फ झुका रहता हो-वो-स्त्री संभोगको बहोत चाहे लेकिन! मिले नहीं. ललाटमें जिसके-एक-या-दो रेखा हो-उसकी उमर छोटी जानना. तीन-या-चार-रेखा हो उसके बड़े भाग्य-और-बड़ी उमर समझना चाहिये. जिसके शरीरमें हाडके बजनदार हो-वो-दोलतमंद होगा. जिसके शरीरमें हाड-और-नख-न दिखाई देते हो-वो-सुखी रहेगा. जिसके शरीरकी चमड़ी मुलाइम हो ऐश आराम ज्यादा भोगेगा. जिसकी आंखे लक्षणवती होगी उसे भोगबिलास बहोत मिलेगा.

४४-लक्षणवती आंखे उसको कहना चाहिय-कमलसमान सुवसुरत हो. दोनों कौने लाल-कीकी-श्याम-और-बीचमें सफेदी होना यही लक्षणवती आंखोके चिन्ह है. सफेदीकी जगह जिसके लाली हो-उसे-स्त्रीकी तर्फसे आनंद रहेगा. हाथीके नेत्रकी तरह

जिसके नेत्र हों सेनापति पदवी भोगेगा. कबूतरकी आंख समान आंखवाला-कामी-होगा, मौरकी आंख समान आंखवाला शस्त्र न सुखी-न-दुखी. कागडेकी-और-मेंढककी-आंख-जैसी आंखवाला-पापी और चालाक होता है. लंबी आंखवाला लंबी उमर भोगेगा. सर्पके नेत्रकी तरह-नेत्रवाला-हमेशा रोगी रहेगा. दीन नेत्रवाला निर्धन-उंडी आंखवाला-दीर्घायु और-जल भरी आंखावाला दरिद्री रहेगा. एक आंखवाला दगलबाज-और-अँचाताणा-अपने मतलबमें पुरा हांगा. जिसकी आंखे विमारीके सववसे लाल-या-सफेद रहती हों-उसकी गिनती यहां नहीं है, यहां जितनी बात लिखी गई है स्वाभाविक नियमानुसार जानना.

४५-रेखा-चिन्ह-और-लक्षण-तीनोंको एक कह दो-कोई हर्ज नहीं. सबबकि तीनोंका मतलब एकही आता है, हां ! इतना जरूर कहेंगे कि-बाह्य लक्षणोंमें अंतःकरणका लक्षण ज्यादा फायदे मंद होता है. जिसका मन साफ और हिम्मपुरी है उसकी देव रक्षा करते हैं. चाहे उसके बाह्यलक्षण- कोई भी अच्छे-नहो-लेकिन! हिंमतमें पुरा हो-यानी-धीरजगुण करके निर्भय हो-उसको-अलबते! अच्छे लक्षणोंवाला कहना चाहिये. क्योंकि-सत्त्वगुण-सब लक्षणों से बढकर है. अनुयोगद्वार सूत्रकी टीकामें कहा है कि-(सर्व सत्त्वे प्रतिष्ठितं.) सब लक्षण सत्त्वमें आजात है.

( पुरुषोंकेलिये रेखाविज्ञान-पुरा हुवा. )

## -[ अब स्त्रीयोंका रेखाविज्ञान सुनिये ]-



४६-जिसस्त्रीका मुख-गोल-और-केश-लंबेहो तो समझलो-पदमनीके लक्षण है, जिसस्त्रीकेशरीरपर रौम थोड़ेहो-वो-दोलतमंद बनी रहेगी. पतले हृदयवाली-स्त्री-हरहमेश मीठाभोजन जीमेगी-और-स्वभावसे उदार होगी-जिसस्त्रीका कपाल छोटाहोगा-अच्छा नहीं, बड़े कपालवाली स्त्री-सुखी-रहतीहै. जिसस्त्रीके ललाटपर वामेपासे तीलहो-वो-हरजगह मान पावे. बहोत लंबी-और-बहोत ठींगणी स्त्री पतिका हुकम न मानेगी. और-कइतरहके दुःख उठायगी. जिसस्त्रीका नाक छोटा और खूबसूरत हो-वो-सुखसे जींदगी तैर करेगी. जिसस्त्रीके नाककी अणीपर तिलहो-वो-पतिका मुख थोड़ाभोगेगी. मांजरीआंखवालीस्त्री-बहोतबुरी होतीहै, कोइ शरूस उसकी संगतकर नफा न उठायगा. जिसस्त्रीकी-डाढी-या स्तनपर केश उगेहुवे हो-वो-पतिके सुखसेरहित होगी.

४७-जिसस्त्रीके हाथमें धजा-चक्र-छत्र-तोरण-अंकुश-कुंडल हाथी-घोडा-रथ-तीर-चवर-जव-पहाड-मछली-चावल-वेदी-महे-ल-कलश-पद्म-त्रिशूल-तलवार-नगारा-और-मालाका-आकारहो उसकी दुनियामें तारीफ बढेगी-रानीकीतरह संसारमें उसका आदरसत्कारहोगा. और धर्ममेंभी उसकी श्रद्धा अडोल रहेगी. ये लक्षण यदि किसीस्त्रीके पांवमेंभी मौजूद-हो-तोभी-वही फल कहो जो उपर लिखचुके. जिसस्त्रीके शरीरपर केश थोड़ेहो-नींद-और पसीनाभी जिसके थोडा आताहो-पदमनीस्त्रीके लक्षण है. जिस स्त्रीके स्तन गोलाकार-होठपतले-और-लालहो-वो-सदा सुखचैन

भोगेगी. जिसस्त्रीकी नाभी गंभीरहो-उसकेपास दोलत सदा बनी रहे, जिसस्त्रीके गालमें हसतेबख्त खड़े पड़जाय-वो-सदा दूसरेकी ताबेदारी करती रहेगी. जिसस्त्रीकी जांघपर केश उगे हुवेहो-वो पतिकों दुःखदेनेवालीहोतीहै. जिसस्त्रीकी-जांघ-लोहीसेभरी-और-केशकरके-रहित हो-वो-बड़ेबड़े ऐशआराम भोगेगी, जिसस्त्रीके हाथमें-काक-उल्लु-और-सर्पका-चिन्हहोगा बुरेदिन भोगेगी.

४८-कोयलके कंठसमान अवाजवालीस्त्रीके बड़ेभाग्य सम्झने चाहिये. उसका खजाना तर रहेगा. और-जहां जायगी आदर पायगी. जिसस्त्रीके दांत छोटे और पतले हो-वो-हरहमेश मीठाभोजन जियेगी. जिसस्त्रीकी नाशिकाके दोनों छेक-छोटे-केश-पतले-और-गेहरेहो-जिसके नेत्रोंमें शर्म हो-ये-सब पद्मनीके लक्षण है. जिसस्त्रीके स्तनपर-और-मुँछकी जगह-केश-उगे हुवेहो-वो-जलदी विधवा होजायगी. जिसस्त्रीके पांवकी तर्जना अंगुली अंगुठेसें लांबी हो-वो-व्यभिचारिणी होगी. जिसके पांवमें सातअंगुललंबी उर्दरेखा-वो-राणीकीतरह हकुमत चलायगी. जिसस्त्रीके केश लालरंगके हो-वो-छोटी उमरमें विधवा होजायगी. जिसस्त्रीकी पीठपर केश उगे हुवेहो-वो-पतिके सुखसें थोड़ेरौजमें हीन हो जायगी. पद्मनी-हस्तिनी-चित्रिणी-और-शंखनीस्त्रीके-गुण लक्षण आगेचलकर-मानवधर्मसंहितामेंभी लिखना है इस लिये दिग्दर्शन-मात्र बतलाकर इसविषयकों यहांही खतम करते हैं.

( रेखाविज्ञान समाप्त. )

( इति अष्टांगनिमित्त संपूर्ण. )

## [ शकुनशास्त्र. ]



१-शकुन-दोतरहके है, एकदृष्ट-दूसराशब्द-दृष्टशकुन-वो-है जो कार्यारंभ करते वखत-या-परदेश जाते समय-नेत्रद्वारा दिखा-इदे, दूसराशब्दशकुन-जा-शब्दद्वारा सुनाइ दे.

२-जैनकेनिर्ग्रन्थमुनि-राजा-हाथी-घोडा-मौर-बैल-राजहंस-और-पद्मनीस्त्री-या-स्त्रीपुरुषकाजोड़ला-परदेशजाते-या-घरआते हुवे मिले सबकाम फतेह होंगे, हुंठिये साधु-जोकि-मुंहके अगाडी कपडा बांध रखते है, वे-जैनकिताबोंकीरुहमें जैनी नही जैनाभा-सहै. सबबकि-जैनकिताबमें मुंहकेभागे कपडा बांधना किसी ज-गह नही लिखा.

३-परदेशजाते वखत-यदि-जिनप्रतिमा-फलफुल-मेहनेआभू-षण-घजापताका-छत्र-चषर-हाथी-घोडा-सुन्ना-चांदी-रथ-पाल-स्त्री-बाजा-वीणा-सरंगी-सितार-मृदंग-मलयागिरिचंदन-आरिसा जलभराघडा-रसोइकाबाल-दूध-दही-घी-मिठी-गोरोचन-सहेत-सुरमा-कमल-हथियार-पंखा-झारी-बैल-मौर-वनास्पति-सिंहासन रत्न-अंकुश-तांवा-विनाधुर्वेकी जग्गि-चावल-सरसों-धोये हुवे क-पडे लेकर आता हुवा धोवी-तांवूल-मिठाइ-इतर-उमदा वर्णगंध-रस-और-उमदास्पर्शवाली कोईभी चीज हो-सामने मिले तो फ-तेह होगी. इरादा पूर्ण होगा-और-किसीतहरकी तकलीफ नही होगी. कोई किसीका भलाबुरा करनही सकता, जितने उपर लिखे-निमित्त है-सब-शुभाशुभके सूचक और द्योतके है. होना न

होना सब अपने पूर्वसंचितकर्मके आधीन है, लेकिन! हां!—इतना जरूर कहेंगे कि—अच्छे निमित्त मिलनेसे अच्छे होनेका—और बुरे निमित्त मिलनेसे बुरेका अनुमान किया जाता है, मनकी गति अस्थिर होनेसे अच्छे निमित्त पाकर कुछ धीरज आसक्ती है,—कोई अज्ञानी निमित्तज्ञानकों झूठा समझे तो उससे सर्वज्ञप्रणित तत्व झूठा नहीं हो सक्ता.

४—खुबसूरतपुरुष—या—स्त्री—अज्ञातपहने हुवे—सामने मिले अच्छा है, गर्भवती—रजस्वला—या—विधवा औरत—सामने मिलना अच्छा नहीं. माता विधवा हो और सामने मिलेतो कोई हर्ज नहीं. क्योंकि—माता—पुत्रकेलिये सदाहितकारिणी होती है. उंट—गधे—या भैंसेपर सवार हुवा—मनुष्य—परदेश जानेवालेकों सामने मिले निहायत बुरा है. हिजड़ा—या—रोता हुवा आदमी—अगर सामने मिल जाय तो बहुतही बुरा है. गांवनगरमें प्रवेश करते वरुत्त हसना गाना मना है. पेशवाइमें आये हुवे हसे—या—गायन करे कोई हर्ज की बात नहीं. लेकिन खुद गाना हसना ठीक नहीं. परदेश जाते वरुत्त अपने पीछे खालीघडालेकर कोई—स्त्री—या—मर्द आता हो निहायत उमदा है, जैसे—बो—जलभरकर घर आयगा देशाटन जानेवालाभी दोलत लेकर घर आयगा. सर्प—किरकाटिया—पछी—और—गोह—परदेश—जानेवालेकों आडे उतरे तो बुरा है. काम फतेह नहोगा. परदेश जानेवालेकी बायीतर्फ भ्रमरा आनकर गुंजार करे—या—फुलकारस पीतादिखाइदे अच्छा है कामफतेह होगा. परदेश जातेवरुत्त मुरधेकी अवाज सुनाइ देना—या—खुदनजरआना बहोत ठीक है इरादा पूर्ण होगा.

६-लडाइके लिये जानेवालेके-निशान-या-रथपर-सखेरा-आनबैठे निहायत उमदा है जीत होगी. सखेरेको कइ लोग बाज-पंखीभी बोलते है. परदेश जानेवालेको चलते वस्त पहिलाकदम अटक जाय-हाथ पांवको ठोकर लगे-कपडा फंस जाय-या-बजा-बसाका गिरपड़े-तो-देशांतरमें तकलीफ होगी. लुला-लैमडा-का-णा-और-अंधा-सामने मिलना परदेश जानेवालोंके लिये तकलीफकी सुरत है. लकडीका भारा लेकर कठिहारा भिले-बिल्लीयां दंगा करती दिखाइ दे-या-दुर्गंधकी चीज-सामने आना-किसी सुरत अच्छा नही.

६-अंगारे-राख-हाडके-लकड़े-पथर-बिष्टा-तैल-गुद-चम-डा-चरबी-खाली और फुटा हुवा भांडा-नमक-सुकाघास-छाल-कपास-अनाजके छीलके-रसे-केश-कालेरंगकीबस्तु-लोहा-हुसकी छाल-दवा-अर्गला-लोहेकी सांकल-खल-अकालवृष्टि-अधुमवर्ण गंधरस-और-अधुमस्पर्शकी चीज परदेश जाते वस्त सामने मिले तो अच्छानही. तकलीफ होगी.

७-हाथमें फल लेकर-औरत-या-मर्द सामने मिले-तो-देशा-टनीको जानना चाहिये फतेह होगा. सारसका जोडला चाहेकिसी तर्फ दिखाइ दे-या-दोनों एकसाथ अवाज करे-तो-देशाटनीको-फायदा जरूर होगा. एकीलासारस दिखाइ देना अच्छा नही. छत्री हाथमें लेकर तंबोल खाता हुवा कोई शरुर्न सामनेबला आ-ताहो जानना चाहिये फतेह होगी. रोते हुवे आदमी शाय हा-वै-सा-मुर्दा-सामने मिलना बुरा है. कइ देशमें मुर्देका बाजेगाजेसँ ले जाते है उसका मिलना बुरानही किंतु अच्छा है.

८-परदेश जाते वरुत पिछाड़ी और दाहनी तर्फका पवन चलता हो-  
तो अच्छा है फतेह होगी. घर आते वरुत भी मही पवन अच्छे जानना,  
सन्मुख-या-बायीतर्फका-वायु देशाटनकों जातेवरुत अच्छा नहीं.  
परदेश जातेवरुत-या-किसी कामकी नींवडालते वरुत-नोलिया  
दिखाइ दे-या-उसकी अवाज सुनाइ देतो-अच्छा है, काम फतेह  
होगा. चलते वरुत-तीतर-या-मुरघा-दाहने हाथकों मिलेतो फ-  
तेह होगी. गधा-बायेहाथकों-भोंके तो देशाटनीकों जलदी फायदा  
हो. बंधी हुई रोटी लेकर कोई सामने मिले तो निहायत उमदा है.

९-घरसे चलते वरुत अच्छा शकुन हुवा-और-जहांगये वहां  
पहुंचते वरुत भी अच्छे शकुन हुवे तो जानना चाहिये इरादा पूर्ण  
होगा. पहुंचते वरुतके शकुनसे चलते वरुतके शकुन ज्यादा ताक-  
तवर होते हैं. जब अपना चंद्रस्वर चलता हो उसवरुत वामे पासे  
जो जो शकुन होयें पूर्णफल देयें. सूर्यस्वर चलते वरुत दाहने  
पासे जितने शकुन होयें पूर्णफल देयें. खालीस्वरमें अच्छे श-  
कुन भी कमजोर होजाते हैं, पूर्णस्वरमें कमजोर भी ताकतवर होकर  
पूर्णफल देते हैं. घरसे निकसे और तुरतही अच्छे शकुन हुवे तो स-  
मझ लो काम जलदी फतेह होगा, कोश दोकोश गये बाद चाहे  
जैसा शकुन हो वृषा है, शकुन उसीका नाम है जो अपने घर-या  
गांवके नजीकमें हो.-हां!-इतना जरूर कहेंगे कि-जो-शकुन नजीक  
दिखाइ देगा जलदी फल देगा. दूरगये बाद दिखाइ दे-वो-देरीसे  
फल देगा. एकदफे खोटे शकुन हुवे तो थोड़ी देर ठहर जाना ठीक  
है, दूसरी दफे भी ठहरना कोई हर्जकी बात नहीं, तिसरी दफे खो  
टे शकुन होतो जानना चाहिये मुसाफिरीमें जरूर बिगाड होगा,



शकुनशास्त्रका लेख है कि-सज्जन-शकुन-और-निमित्तिया-मना करे उसवरुत परदेश जाना अच्छा नहीं. तकलीफ होगी.

१०-शब्दशकुन उसकों कहते है जो शब्दद्वारा देखा जाय जैसे कोई शरूश किसी कार्यकी नींव डालने लगा-या-देशाटनकों चला-चलते ही किसी दुसरेके मुखसे मुनाकि-फतेह होगी बड़ा आनंद उठाओगे-तो-जानना चाहिये शब्दशकुन अच्छे हुवे. अ-गरचे-ऐसा मुनाकि-तुमारे काममें गलती है-दूब जाओगे-तुमारे भाग्यमें ही अंधेरा दिखता है-तो-जानना चाहिये शब्दशकुन अच्छे नहीं हुवे. इस लिये मुनासिब है कि-शब्दशकुन भी-खयालमें रखना. यह बातभी जानने योग्य है कि-निमित्त भी एकसे एक बलवान्-और-कमजोर-होते है. जैसे बारसें-तिथि-बलवान्-तिथिसें-नक्षत्र-बलवान्-नक्षत्रसें करण-करणसें लग्न, लग्नसें निमित्त निमित्तसें मनके भाव-मनके भावसें पूर्वसंचितकर्म-और-पूर्वसंचितकर्मसें धर्म-बलवान् होता है. सबबकि-धर्मके प्रभावसें सबकाम फतेह होते है. मुनासिब है कि-धर्मपर ज्यादा ध्यान रखे.

( इति शकुनशास्त्र. )

## [ कालज्ञान. ]



१-शुक्रके अस्त-और-बृहस्पतिके उदय अस्त-मंगलके च-  
लित-और-बनिशरके उदय अस्त-तथा-राशिप्रवर्चनके समय-ज-

हर वृष्टिहों, इसमें संदेह नहीं. वृष्टिकालमें जब कन्याराशिपर मंगल और बृहस्पति-इकठे मिले वरसातकों रोके, चौमासेकेकालमें ऐसा भी कहते हैं कि-आगे मंगल पीछे भान-फिर वर्षाकी निश्चय हान,—

२-असाढ़ सुदी एकमके रौज-जितना पुनर्वसुनक्षत्र-हों-उतना उस चौमासेमें वरसात होगा, अर्थात् ज्यादा होंतो-ज्यादे-और-कमहोतो कम-जानना. (भावार्थ)-पुनर्वसुकों पीछली अमावास्यामें जितना व्यतीत हुवाहों उतना पडवेके पुनर्वसुमें मिलाकर-सठ घटाना अगर कुछ बचे तो उमदावृष्टि होगी-और-घटे तो कम होगी, चैत्रमहिनेकी पंचमीके रौज-रोहणी-सप्तमीकों आर्द्रा-और-नवमीकों पुष्य-हों-और-इनतीनों ही दिन वृष्टि होजाय तो जानना चाहिये चौमासा-सुका-जायगा.

३-आषाढ सुदी पुनमके रौज अगर पूरवकी पवन चले तो वरसात अच्छा होगा-घास ठीक पैदाहोगा-और-लोक आनंद भागेगे. अग्नि कौनकी पवन चले तो-वरसात थोडा होगा-अन्न भी थोडा-और-रैयतकों तकलीफ पड़ेगी. दखनकी पवन चलेतो घास नहोगा-और-राजाओंको-कलेश होगा. नैरुत्यकी पवन चलेतो-वरसात थोडा होकर दुकाल पड़ेगा. पश्चिमकी पवन चले तो सुकाल, वायव्यकी पवन चले तो सारावर्ष प्रचंडवायु चलता रहेगा. उत्तरकी-या-ईशानकौनकी पवन चले तो अन्नबहोत पैदा हो और रैयत सुखी रहे. जिस देशमें जैसी पवन चले उस देशमें वैसा फल जानना.

४-मंगलके निचे गुरु-आर-गुरुके निचे-शनि-आजाय को

दुनियाकों भारी तकलीफ हों,—जैसे मेषराशिपर मंगल-मीनराशि पर बुरु-और-कुंभराशिपर शनि हो—(अथवा)—मेषराशिके विश्वसे तीस अंशतक मंगल-दशमें विश्वतक गुरु-और-शून्यसे दशअंशतक शनि हो—उपर लिखा योग जानना. तुल-वृश्चिक-धन-मकर-कुंभ-और-मीन-ये संक्रांति अपनी अपनी तिथिके रौज लगे तो दुनियाकों तकलीफ रहे-दुकाल पड़े-और-देश लुटजाय, अर्थात् सप्त-मी-अष्टमी-नवमी-दशमी-एकादशी-और-द्वादशीके रौज अनुक्रमसे लेना. मंगल-सूर्य-बृहस्पति-और-शुक्र ये-चारग्रह एकराशिपर इकठे हो-तो-दुनियाकों-तकलीफ रहे-रोग फैले-और-अन्न महँगा बीके. अगर कोई सवाल करेकि-संपूर्ण दुनिया कभी सर्वथा सुखी-या-दुखी-नही देखी जाती फिर उपर लिखी बात कैसे सच ठहरेगी! ( जवाब. )—यह बात ठीक है कि-सारी दुनिया एकसरखी नही होती उपर लिखी बात बाहुल्यता आश्रित जानना चाहिये,—और-ये उपर लिखे-तथा-अगाडी जो जो योग-योग लिखे जायगें-बहुधा करके आर्यखंडकेरी साथ ज्यादा संबंध रखते हैं. सबवकि-सूर्योदयद्वारा उपर लिखे योग ज्यादातर इसीसे संबंध धराते हैं, देशांतरकी गणित न्यायी भी है.

५-शनिश्चरके स्थानपर—( भावार्थ. )—मकर-वा-कुंभराशिये-सूर्य-मंगल और शुक्र-तीनों इकठे हों-और-उनमें चंद्रमाभी जामिकेतो दुर्भिक्षका सूचक है. वृषराशिपर मंगल-और-राहु-इकठे होवो छठे महीने दुकाल पड़नेका संभव है. सूर्य-चंद्र-मंगल-बुध-बृहस्पति-और-शनि-ये छग्रह एकराशिपर इकठे हो तो राजा व-जाकों तकलीफ पैदा हो. सहस्रोम संवत् ( १९५६ ) में आगया.

शुक्र-शनि-और-मंगल-ये-तीन ग्रह-वृषराशिपर आवे तो देशमें उपद्रव हो.

६-वृहस्पतिसें सातमें शनि-बारहमें राहु-पांचमें मंगल-और-दूसरे सूर्य-आजाय उस वख्त देशमें टंटे झगड़े फैले-तलवार-चले देश लूटजाय-और-बुकाल पड़े. इनचारों योगोंमेंसे एकयोग मि-कनाभी बुराहै चारोंही मिल जाय फिर कहनाही क्या!-आर्द्रा तथा स्वातिनक्षत्रपर शनि और राहु बैठे हों और उस वख्त च-ंद्रमा-रोहणी नक्षत्रको बेध डालेतो देशमें बुकाल पड़े. जिस संव-त्में कर्क-और-मकरसंक्रांति-रवि मंगल-या-शनिवारके रौज ऊमें उस वर्षमें कड़ाई दंगे बहोत हो. और बड़े हाकिमोंको तकलीफ रहै. जबतक मीनराशिपर शनि-कर्कपर वृहस्पति-और-तुलापर मंगल रहे दुनियाके बहोतसें लोग तकलीफ भोगे, किसी वर्षमें तीनोंही योग मिल जाय तो बहोत ही बुरा है, अषाढ बदी (१०) मीके-रौज-रोहणीनक्षत्र हों तो देशमें अनाज बहोत पैदा हो. दु-मियाका तीनहिस्सा सुखी रहे. ग्यारसके रौज होंतो बरस ठीक ठीक-और-बारसके रौज होंतो-बुकाल पड़े. यह अषाढ बदी(१०) मी-गुजरात देशकी अपेक्षा है. दिल्ली मंडलके निकट श्रावणबदी दशमी जानना.

७-आर्द्रानक्षत्रपर-जब-सूर्य-और-केतु मिलकर आवे उसके आगे एक महिने तक अनाज महंगा रहे, रेवतीनक्षत्रपर सूर्य हो-और-उस वख्त-स्वातिपर मंगल आजाय राजाओं द्वारा रेवतकों दुख भोगना पड़े. चैत्रमासमें-गुरु शुक्र-एकराशिपर इकठे होंतो-एकमास तक-धी-तैल-और-सूतका संग्रह करना चाहिये, अगले

महिनेमें फायदेमंद होगा. जब मीनराशिपर शनि-हों-उसवख्त कर्कका वृहस्पति और तुलका मंगल होतो-महादुकाल पड़े.

८-मूलनक्षत्रपर शनि आवे उन दिन<sup>१</sup>में अगर स्वातिपर बुध और-मघापर चंद्रमा आजाय-उस वख्तका संग्रह किया हुआ अनाज जरूर फायदेमंद हो. श्रवणनक्षत्रपर जब क्रूरग्रह-( भावार्थ ) सूर्य-मंगल-शनि-राहु-और-केतु-आवे तो अनाज और घास महेघा बीके, धनिष्ठानक्षत्रपर शनि-और-मंगल-दोनो इकठे होतो वृष्टिकी हानि-और-घासकों अभाव करे, यह योग संवत्(१९१४) में-था. चोतीसाकाल छिपा हुआ नहीं है. वृहस्पति-और-शनि-एकराशिपर-या-एक दूसरेके सातमें धरपर होतो रैयतकों दुख-और-अनाजका क्षय जानना. यह योग संवत् ( १९५६ ) के-मृग-शीर्ष महिनेमें आयगा. वृहस्पति-सूर्य-शुक्र-शनि-और-मंगल-एकराशिपर इकठे होतो-राजाओंको पीडा-लडाइकी तेजी-और-अनाज-महघा होगा. यह योगभी संवत् (१९५६) में-आयगा, शनि-और-राहु-एकराशिपर आवे जब अनाज महघा बीके-और राजे महाराजोंको-तकलीफ रहे, एकराशिपर कोईसे सातग्रह जब इकठे हो बहोतसे देश लूट जाय और दुकाल पड़े. जब वृहस्पति-का अतिचार हों तब राजाओंको भय-और-प्रजाको पीडा जानना. अधिकमासमें-मंगल-या-वृहस्पतिका राशि प्रवर्तन होना अधिकवृष्टि होनेका सूचक है.

९-तेरह दिनका पखवाडा भयजनक होता है. हरेक महिनेके कुभपक्षमें तिथिका बढना-और-शुक्लपक्षमें तिथिका घटना-अनाजकी तेजी होनेका द्योतक है. और कुभपक्षमें तिथिका घटना

शुद्धपक्षमें तिथिका बढ़ना-अनाजकी मंदी होनेका कारण है, जेठ महिनेमें आद्रासें लमाकर नवनक्षत्र सूके जायतो चौमासेमें बरसात बहोत बरसे. एकदो-या-उपर कहे हुवे संपूर्ण नक्षत्रके दिनोंमें अगरचे बरसात बरसे तो चौमासेमें बरसात बिल्कुल न बरसेगा.

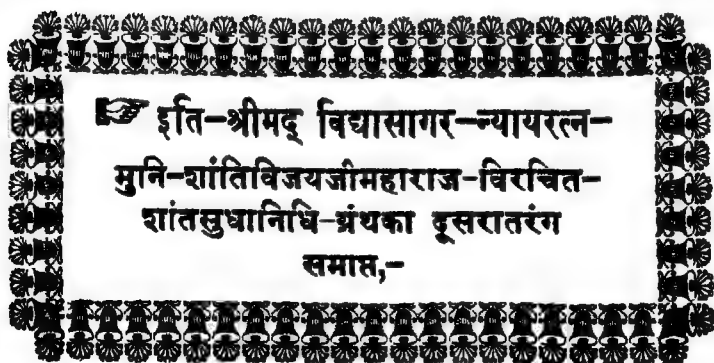
१०-आषाढ वदी पंचमी (गुजरातकी अपेक्षा जेठ वदी) के-रौज चंद्रमा बादलोंमें उदय हो-तो-बरसात अच्छा होगा. निर्मल आकाशमें उदय होतो बरसात थोड़ा होगा. तीज-चोध-अष्टमी-नवमी-और-चौदस-इन तिथियोंमें-(अथवा) रवि-मंगल-शनि-शुक्र-को-आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य आवे तो अच्छा नहीं, और शेष तिथिवा-रकों आवे तो अच्छा है तथा-भरणी-कृत्तिका-आर्द्रा-मूल-ज्येष्ठा-अश्लेषा-मघानक्षत्र-मूल-गंड-व्यतिपात-व्याघात-परिघ शिव-व-घृत-अतिगंड-इनयोगोंमें आवे तो अच्छा है और शेषमें आवे तो अच्छा नहीं. लेकिन!-जब सूर्य-आर्द्रानक्षत्रपर आवे और उसी रौज बरसात हो-तो अच्छा होतेभी देढ महिनेतक वृष्टिका अ-भाव जानना.

११-कार्तिक सुदी पुनमके रौज भरणीनक्षत्र हो-तो अच्छा नहीं. माघसुदी सप्तमी चंद्रवारी हो तो-बहोतसें देशोंमें दुकाल पड़े और-राज्यकी तर्फसें लेख रहे. फाल्गुन महिनेमें शुक्र अस्त हो तो भादवेमहिनेतक अनाज महंगा बीके. मघानक्षत्रपर-शनि बक्री हो-तो-छत्रपति राजाओंको भय पैदा होनेका कारण है. जिस महिनेकी पुनमके रौज मासनक्षत्र-घड़ीयोंमें-कमहो-तो अनाज व-गेरा शस्ते बीके. सय (अथवा) अधिक होतो महंगे बीके. जैसे

कातिकसुदी पुर्णिमा तीसघडी-बारांपल है उस दिन मासनसत्र पच्चीसघडी-सातपल हो-तो-अनाज बगेरा शस्ते बीके,-ऐसा जानना. अगर किसी समय एकराशिपर आठग्रह इकठे हो जाय-तो जानना चाहिये निहायत बुरा होगा.

१२-जितनी बातें उपर लिखी गई है भरसे करने योग्य है. इतनेपर भी कोई बात न मिले तो उसपर इठ करना मुनासिब नहीं. आजकल तादृशज्ञानी नहीं रहे-जो-भूल न जाय. भूल चूक सबके पीछे लगी हुई है. उपयोगी बात जानना और दूसरोंको विदित कराना यही ग्रंथकारोको इरादा रहता है. इसलिये-मैं-आशा करता हूं कि-सज्जन पुरुष तात्पर्यपर ध्यान देयेंगे.

( इति कालज्ञान समाप्त. )



## [ मानवधर्म संहिता. ]

(१)—मानवधर्मसंहिता हजारों ग्रंथोंका सार है. इसके पढ़नेसे अलबत्ते !—थोड़ा पढ़ा हुआ भी—बहुत कुछ फायदा उठा सकेगा. ज्यादा करके इसमें गृहस्थ धर्मका बहुत हाल है. धर्म—अर्थ—और—काम—यथासमय पालनकरना गृहस्थोंका जरूरी काम है. इस लेखमें कई बातें ऐसी आयगी जिसको पढ़कर अज्ञानी लोग उल्टा विचार करेंगे. लेकिन ! हमको यहां उनकी कोई परवाह नहीं. तीर्थकर—गणधरोंने यह नहीं फरमाया कि—सच्चा बात लिखते—अज्ञानी—को हानि पहुंचती होंतो नहीं लिखना. बल्किन !—घंटानादकेशाय फरमाया है कि—सच्चा बातको बेधड़क होकर लिखो. कई लोग कहेंगे—साधु होकर शृंगाररस वगेरा क्यों बयान किया ?—( इसके जवाबमें ) इतनाही कहना काफी है कि—तीर्थकर गणधर—साधुथे—या—गृहस्थ ?—अगर—साधु थे—तो—कहिये !—उनोंने—शास्त्रोंमें शृंगाररस क्यों वर्नन किया ?—क्या ! उसको वांचकर कोई शरुश काम भोगमें ज्यादा ध्यान देगा तो उसका पाप तीर्थकर गणधरोंको लगेगा !—कभी—नहीं !!—यथार्थ बात वर्नन करना ज्ञानीयांका धर्म है. समजनेवाले उल्टा समझे तो—बे—दूबेंगे. उनोंने ऐसा पाप—क्यों—किया ?—जिससे अज्ञानी हुवे ?—जो—जैसा करेगा वैसा फल पायगा, यह सिद्धि सडक है. इसे तोडनेवाला कोई नहीं जन्मा. जो बात सदाके लिये सर्वोपयोगी हों—उसका बयान करना ग्रंथकारोंका जरूरी काम है. दुर्जनोके नाक चढ़ानेसे क्या होता है ?—द्वादशांग-



बानीके ज्ञानसें कौइ बात छीपी नही. हां ! इतना जरूर है कि—जो बात जिस वख्त पकड़ने योग्य है पकड़ना—और—छोड़ने योग्य है छोड़ देना.

(२)—मनुष्यों के कर्तव्य धर्मका जिसमें वर्नन किया गया हों उसीका नाम—मानवधर्म संहिता—है, बस !—इमको यहां पहिले यही कहना मुनासिब आया कि—गृहस्थोंको किस वख्त—और—क्या क्या करना चाहिये ?—प्रतिदिनचर्या—जन्मचर्या—और—अंतिमक्रिया—इरे—ककों जानने योग्य हैं. सवेर वख्त—जब—चारघड़ी गत बाकी रहे नींद छोड़कर जाग्रत होना अवलदर्जेका काम है, दूसरा दर्जा दो घड़ी रात रहते—और—तीसरा सूर्य चढ़े बादका है. दिन चढ़े जाव और सौते रहना चतराईकी बात नही. जाग्रत होतेही पहिले—स्वरोदय ज्ञानका—विचारकरना चाहिये. चंद्रस्वर चलता होतो—बाया पांव—और—सूर्यस्वर चलता होतो दाहना पांव जमीनपर रखना अच्छा है. सुखुम्नास्वर चलता होतो पलंगपर ही बैठे रहकर परमेष्ठिका ध्यान करना ठीक है. सुखुम्नास्वर—दशमिनिटसें ज्यादा नही चलता—स्वरोदयज्ञानका भेद इसी ग्रंथमें लिखा गया है—दूसरेतरंगमें—वाच लो.

(३)—पलंगसें उतरकर मलमूत्रकी पीढाकों दूर करें—और—साफ होकर मंत्राधिराजका स्मर्ण करे. तीर्थवंदन—या—स्तोत्र वगेरा जो कुछ याद हो—मनमें पढ़े, कुछ भो याद न होतो निचे लिखे श्लोक पढ़ लिया करे.

( अनुष्टुप् इच्छम्. )

मोक्षमार्गस्य नेतारं—भेत्तारं कर्मभूभृतां,  
ज्ञातारं विश्ववस्तूनां—बंदे तद् गुणलब्धये. १

- जिने भक्ति जिने भक्ति:—जिने भक्ति दिनेदिने,  
 सदा मेस्तु सदा मेस्तु—सदा मेस्तु भवेभवे. २
- नहि त्राता नहित्राता—नहित्राता जगन्नये,  
 वीतरागसमो देवो—न भूतो न भविष्यति. ३
- वीतरागं स्मरन् योगी—वीतरागत्वमश्नुते,  
 सरागं ध्यायतः पुसां—सरागत्वं तु निश्चितं. ४
- दर्शनेन जिनेन्द्राणां—साधूनां वंदनेन च,  
 न तिष्ठति चिरं पापं—छिद्रहस्ते यथोदकं. ५
- अर्हमित्यक्षरं बह्व वाचकं परमेष्ठिनः,  
 सिद्धचक्रस्य सद् बीजं—सर्वतः प्रणिदध्मः. ६
- मंगलं भगवान् वीरो—मंगलं गौतमः प्रभुः,  
 मंगलं स्थूलभद्राद्याः—जैनधर्मोस्तु मंगलं. ७

इन श्लोकोंको—पढ़कर जो कुछ व्रतनियम धारना हो दिल-में धार लेवे. देवदर्शनको जाना तो शरीरसें साफ होकर जाना चाहिये, संभोगके वस्त्रकी अथुचि बिना साफ किये जो लोग दर्शनको जाते हैं अच्छा फल नहीं पाते, कइ देशोंमें ऐसी रक्षम भी देखी जाती हैकि—स्त्रीयें नापाक ही उठकर देवदर्शनको चली जाती है यह बात ठीक नहीं. संपूर्ण अंगका—या—पंचांग ज्ञान करके जाना चाहिये.

(४)—सवेरके वस्त्र जंगलकी हवामें घूमना बहोत फायदेमंद होता है. दोलतमंद गृहस्थ—या—राजा—बादशाह हो—तो—हाथी घोड़े—पर बैठकर—या—गड़ीपर सवार होके—जंगलकी—हवा लेना चाहिये.

साफ हवा सेवन करनेसे शरीरकी ताकत बढ़ती है. बीमारी मिटती है और दिलको आराम मालूम देता है. जो लोग पापके प्रभावसे दूसरेके ताबेदार-या-गरीब है उनको सवारीका योग नमिले तो पांवसे घूम आया करे. जो लोग गादी तकीयाके नोकर है उनको अलबते !-हमारी शिक्षा कभी नहीं रुचेगी, लेकिन !-उन्होपर हमारी निगाह नहीं है. हम यहां मनुष्योंके जरूरी काम लिखनेको बैठे हैं, जिनको न रुचे मत मानना. शास्त्रोंमें जो सुस्ती उठानेके लिये मलयुद्ध करना लिखा है उसीका दूसरानाम पहेलवानोंकी कुस्ती कह दो कोई हर्जकी बात नहीं. ऐसी कुस्ती करना कोई जरूरत नहीं जिससे शरीरको भारी नुक़शान पहुचे. गेंदखेलना-कोश दोकोश पैदल फिर आना-जलमें तैरना-या-जिस मेहनतसे शरीरपर थोढ़ामा-पसीना आजाय-वैसी कसरत करना मना नहीं. कसरतका नतीजा यही है कि-जिससे सवरगोंको मेहनत करना पड़े. सबसे अबल दर्जेकी कसरत वही है जो शुभह और व्याम-जंगलकी साफ हवामें घूमना. दंड पैलना लडकोंकी तरह उठ बैठ करना अच्छी कसरत नहीं. किंतु लडकपन है.

(५)-कसरत करनेसे अनाज अच्छी तरह पच जाता है, रक्त भ्रमण ठीक होता है. जिसदिन शरीरमें कफ ज्यादा मालूम दे उस दिन जरूर परिश्रम उठाना चाहिये. बिल्कुल भूखे-या-पेट भरकर भोजन जिमेबाद-तुर्त कसरत करना ठीक नहीं. बूढ़े आदमीओं-को-जोकि-खुद कमाता रूत हो चुके हैं उनको कोई जरूरत नहीं कसरत करे. कइ स्त्रीयें हरदम घरमें बंठी रहकर कोई काम नहीं करती यह भी एक बीमार होनेकी निशानी है. लाजिम है कि-घरके

काममें लगी रहे और चलती फिरती भी रहे. शरीरमें जब थोड़ा सा पसीना आजाता है उस बरत ठंडी हवासे बचना चाहिये. जैसे कामभोग सेवन करके बचते हो. पसीना आनेसे शरीरके बुरे द्रव्य बाहर निकल जाते हैं. अगर पसीना निकलना रुक जाय—तो—बे—बुरेद्रव्य शरीरमेंही रह जाय—और रोगकी जड़ लगे.

(६)—साफ हवा शरीरमें प्रवेश करे तो जानो लाख औषधि सेवन किइ, इसी लिये कहने वालोने कहा है कि—सो दवा—और एक हवा,—श्वासमार्गमें जब कोई रोग पैदा हो जाता है शरीर—का लोही भो बिगडने लगता है. इसी लिये साफ हवा लेनेकी जरूरत है. लोहीका खजाना हृदय है. वामे स्तनके निचे जठराग्नि तप्तमान हो रही है. उसीसे शरीरके सब द्रव्योंका जललन होता है. फेंफड़े छातीमें दोनों तर्फ स्वाश्वोस्वास लेनेके यंत्र है. बुरी हवासे इस यंत्रकों—और इस यंत्रसे संपूर्ण शरीरकों नुकशान पहुंचता है . कुबे—बावडी—नदी—नालियां—पाखाने—गंदे जलका तालाब—और जहां—गधे—सूअर—बैठते हों—वहांकी हवा जरूर बिगडी हुई रहती है. कसाइ—रंगरेज—और—चमार—जहां बसते हों—मर्दे गाढनेकी या—जलानेकी जगह जहां गांवके पास हों—वहांकी हवा भी जरूर बिगडी हुई रहती है. बिगडी हवाके पास रहनेसे विस्फोटक—दाह सिरमें चकर आना—बगेरा रोग पैदा होता है. इस लिये गंदी हवासे बचाव रखना बहुत ठीक है. यह बात सबसे अवल दर्जेकी है कि—पूर्व संचितकर्म रोग—किसीका रौका नहीं रहता. लेकिन!—यहां जो कुछ कहा गया है व्यवहार नयको आश्रितहोकर कहा है.

(७)—(मलमूत्र त्यागनेकी विधि)—दिशा जंगल जाना तो दूर

जगहपर जाना चाहिये. देवालयके पास-या-मशानमें दिशा जंगल जाना ठीक नहीं. मलमूत्रकी पीडाकों रोकनेसे आंखोंकी तेजी मंद होती है. सिरमें दर्द-बगेरा कइ उपद्रव पैदा होते हैं. छींक-उल्टी-चबासी-और-प्यास-रौकनेमें शरीरकी तंदुरस्ति बिगडती है. नींद बातोत्सर्ग-श्वास-वीर्य-और-आंसु-आते हुवेको रोकनेसे कइ त-रहके विकार पैदा होते हैं. जिसकों छींक आते ही एकशाय-वीर्य-पैशाब-और-मल-छूट जाय उसकों जानना चाहिये आयुष्य अब थोडा रहा धूपसे जलती हुई जमीनपर-छतपर-या-पथरकी शिलापैर-पेशाबकरना बहोत नुकशानकारी है. सबबकि-सूर्यके तापसे उसमें जितनी गर्म हवा इकठी हुई है इंद्रियद्वारा प्रवेशकरके बडेबडे रोग पैदा करती है. गुप्तमोरीमें जहांकि-सदा आर्द्रता ब-नी रहती हो पैशाब करना कोइ चइतराईकी बात नहीं. धर्मशास्त्र के कायदे मुजब बडा पाप लगता है. जो लोग नास्तिक श्रद्धावा-ले हैं इस बातको जूठ समझे तो उससे धर्मशास्त्र झूठे नहीं होसकते. सर्प-या-उंदरके-बिलमें पैशाब करना महामूर्खोंका काम है. नजरे देखी हुई बात है कि एक शखशने एक बिलमें पैशाब करना शुरू किया. उसकी धार जब भीतर पहुंची तुरंत उसमेंसे एक सर्प नि-कल आया. इधरसे पैशाब करनेवाला मारे डरके ऐसा भगाकि-सब कपडे खराब हुवे और लोगोने हांसी किइ, कहिये! क्या!! फायदा हुवा!—

(८)-दांतूनकिये बिदूनकोई चीज मुंहमें डालनी नहीं चाहिये. जो लोग हरहमेश दांतून नहीं करते हैं उसके मुंहमें ऐसी बदबू आती है कि-उसके पास बैठनेकों जी नहीं चाहता. जिसके क-

पडे और शरीर मैला उसकी बुद्धि भी मैली होती है. इस लिये उचित है कि—हरहमेश दांतून करके पीछे कोई चीज मुंहमें डालना. जिसरौन मुखमें छालें पडे गये हो उस दिन दांतून करनेकी जरूरत नहीं. जिसके मुखमें दाह होता हो—कंठ बैठ गया हो—होठ फट जाते हो—उनको चाहिये धीके कुरलेकर—या—हरेनालियरकी गिरि चावे, जरूर फायदा होगा. दंतकाष्ठ बबूलका करना चाहिये. अगर नमिले तो निचे लिखा हुवा मज्जन बनाकर अंगुलीसें दांतो-पर घिसना—जिससें वात-पित्त-और-कफ-तीनों तरहके रोग दूर होकर आराम मिलेगा. (दांतोके लिये मज्जन) —हरडे तोलाएक—बहेडे तोलाएक—आवले तोलाआधा—माजुफल तोलादेढ—सफेदकथा तोलाएक—छोटीइलाची तोलादो—कपूरकाचली तोलाआधा—मोल-सीरीकीछाल तोलादो—पठाणीलौध तोलाआधा—संखद्राव तोला-आधा—और—नागरमोथ तोलाआधा—इनचीजोंको—कुट पीसकरक-पडछान करना—और—बोतल भर रखना, सवेरबरत थोडासा ले-कर दांतोंकी जडमें मसलनेसें बिल्कुल आराम मिलेगा, बदबू मिट जायगी. और अनारके दानोंकी तरह दांत चमकीले बने रहेंगे.

(९)— दातूनकरके—चमेली—या—गुलाबके सुगंधि तैलसें शरी-रको मर्दनकर स्नानकरना चाहिये. तैलके मसलनेसें शरीरकी रंगें पुष्ट होती है, जिसको तैरना न आता हो गेहरे जलमें कुदना अच्छा नहीं. साफ और छाने हुवे जलसें नहाना और हरहमेश तिलक लगाना आर्यलोगोंका नित्यकर्त्तव्य है. नंगे होकर स्नानकरना म्ले-च्छोंका काम है, कितनेक देशोंमें ऐसी रसम देखी जाती है कि—स्त्रियों बिल्कुल नंगी होकर नहाती है, लेकिन!—यह रसम बहोत

बुरी है. एकसाड़ी-या-दुपट्टा-पहनकर पीछे नहाना चाहिये; नहान कर कपड़े साफ पहने-चाहे थोड़ी कीमतके हो-कोई हर्ज नहीं; लेकिन! मैले कपड़े पहनना बहोत बुरा है, जिसके कपड़े मैले उसकी बुद्धि भी मलीन रहती है. अगर कोई सुवाल करे कि-साधुओंके कपड़े बंधुघा मैले होते हैं तो-क्या!-उनकी भी बुद्धि मलीन समझना चाहिये? (जवाब.)-साधुओंके लिये भी बस्त्रका धोना और साफ रखना धर्मशास्त्रोंने फरमाया है कौन कहता है मलीन रहना! अनसमझदारोंके लिये सभी जगह अंधेरा है. कोई धर्म-शास्त्र-या-लौकिक व्यवहार-यह नही कहता कि-मलीन रहो,-

(१०)-अच्छे कपड़ोंसे मनुष्यकी इज्जत बढती है. शहीरी-और-इतर बेचनेवाला-जितने साफ वस्त्र पहनेगा उसके मालकी तारीफ होंगी. इतर गुलाबका-सब इतरोंका सिरदार है, इसकी ताहसीर ठंडी होती है. बाराहआनेसेलेकर तीन-या-पांचरुपयेतीले तकका आजकल ज्यादा इस्तिमाल किया जाताहै. यूँतो जितना बढाओ बढ सकताहै, लेकिन!-इतरकी परीक्षा हरेकसें नहीं हो सकती. जिनोंने बहोत इतर मुँघे हों-खरीदे-या-बनाये हों-बेही-अच्छी तरह पहिचान सकते है. अच्छे इतरकी परीक्षा यह है कि-थोडासा लेकर कागदपर डालदिया जाय-और-निचे अंगुल देढ अंगुल दूर अंगारा आगका दिखलाया जाय उसीदम मिनिट देढ मिनिटमें उड जायगा. जिसमें रोसे बगेराका बैल होगा देरीसें-यानी-पांच सात-या-दस मिनिटमें उडेगा, चंदनकी तैलकीभी परीक्षा इसीबजह समझलेना चाहिये. जिस इतरका फुमा दोनोंकानोंमें लगाकर रातको कपड़ा ओढकर तीजोंओ और शरीर उ-

सकी खुशबूसेतर होजाना वही अच्छा जानो. पनराह रौज जिस इतरके फुर्सेकी खुशबूवनी रहे उसकी जमावात है, १-बहइतर चार पांच रूपये तोलेसे कम नहोमा. मदिनेतक खुशबूरहे-बो-सात आठ रूपये तोलेका होता चाहिये.

(११)-इतरचंपेका-इसकी ताहसीर गर्म-बारांआने तोलेसे लेकर पांचरूपये तोले तकका ज्यादा इस्तिमाल कियाजाता है. इतरकेबडेका-इसकी ताहसीर ठंडी और परोपकारी है, जो शरूश केबडेकाइतर लमाताहै उसकी खुशबू उसेकम और दूसरेको ज्यादा मालूम देयगी, इतरमोतियेका-इसकी ताहसीर न-ठंडी-न गर्म,- इतरकेशरका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरचमेलीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरखसका-इसकी ताहसीर ठंडी,-इतरहीनेका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरसुइका-इसकी ताहसीर ठंडी और माहील, इतरमौलसीरीका-इसकी ताहसीर ठंडी, और माहील, इतर गुलदाखदीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरपनडीका-इसकी ताहसीर न ठंडी-न गर्म, इतरसमरेका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरसदनमालतीका इसकी ताहसीर ठंडी, इतरअरमजाका-इसकी ताहसीर गर्म, मंकीलोग इसको शुक्कअंबरकाइतर कहकर बेचते है. सबबकि-इसकी खुशबू अंबर और कस्तूरीसे कुछ मिलजाती है. इतर केतकीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरसेंदेका-इसकी ताहसीर माहील, चंपेके इतरसे लेकर इतरगेंदेतक जितने नामलिखे बारांआने तोलेसे लेकर तीज्जरूपये तोलेतक अच्छे मिलसकते है, ज्यादा दिन मदिनेतकरके उवाराजाना तो ज्यादा किमत भी होसकती है, अल्प किमीके घरका नही, जोको उसीका है, जैसे आर्यखंडसे सभीदे-



श आबाद है युरप-एसिया-अमरिका-रुस-चीन-जपान बगेरामें भी है, सभीदेशमें इतर बनते हैं. जिसकों जहांसे मंगाना हो मंगा सकते हो. पूरव-पंजाब-बंबइ-गुजरात-काठियावार-दखन-मारवाड राजपुताना-दिल्ली-लखनउ-कंबोज-अजमेर-जौनपुर-और-जहां-सी-बगेरा-इतरके लिये मशाहूरस्थान है. गर्मीकी प्रकृतिवाला ठंडा इतर और बादीकी प्रकृतिवाला गर्म-इस्तिमाल करे अच्छा है. कंजुसोंकी ताकत नहीं कि-इतरका-आनंद उठासके. जो लोग उदार प्रकृतिवाले हैं-वेही-उमदाचीज खरीद सकते हैं.

(१२)-जिनकों अपनेशरीर-या-कैशोपर खुशबूदारतैल लगाना मंजूर हो चमेलीका तैल इस्तिमाल करे. इसकी ताहसीर ठंडी और-नरहै. तैल-हीनेका-गर्म होताहै, जिनकी बादीकी प्रकृति हो हीनेका तैल लगाया करे, अरगजाका तैल भी गर्म होताहै. इसकी खुशबू तीनदिन तक केशोंसें नहीं जाती. गुलाबका तैल जितनी सुगंधरखता है दूसरा नहीं रखता. इसकी खुशबू ठंडी और तरहोती है. तैल केवडेका बहोत उमदा और ठंडा होता है. जिनकों मोगरेका तैल पसंद हो-बहोत ठीक-और-ठंडा है. इन सब तैलोंको बनानेकी तरकीब बेही जानते हैं जो हरवख्त बनाया करते हैं. तिलोंमें फुलोंको बसाकर बड़ी महनतसें फुलेला बनाया जाता है. दोरुपये सैरपका तैल अच्छा होताहै. तीन-चार-पांच-सात-या-दसरुपये सैर लेना चाहो मिल सकताहै. लेकिन!-उसकी पहिचान करना बड़ा मुश्किल है. सैरभरपके चमेलीके तैलमें तोलाभर केवडेका-इतर-ढालदिया जाय-वो-खुशबू-देगी सारा मकान महेक उठेगा. इसीतरह सैरभरपके तैल चमेलीमें-तोलाभर चमेलीका इ-

तर, हीनेके तैलमें हीनेका-अरगजेमें अरगजाका-गुलाबमें गुलाबका-और मोगरेमें मोमरेका इतर-डाल दिया जाय-खुशबू बढेगी. जिसको जैसा मंजूर हो करे. लेकिन! इतनायाद रहे-जितना इतर अपने शरीर-और स्त्रीपुत्रोंको-लगाते हो-उतना देवमूर्त्तिकों भी लगाया करो. आधा चोथाई भी लगाओगे तबभी ठीक-जो लोग अकेले हाडमांसके पुतलेको ही शिंगारना जानते हैं, उनके धन-माल और खजानेको धिकार है.

(१३)-जिनमंदिरमें जाना हथियारको और-उपानहको-बहार छोडकर जाना चाहिये, देवमूर्त्तिकी दाहनी बाजुसें तीनपरकम्मा देना और तीननमस्कार करना नित्यकर्तव्य है. साफ पानोसें मुकी जमीनपर बैठकर स्नान करना-और-उमदा कपडे पहनकर अष्टद्रव्यसें जिनमूर्त्तिका पूजनकरना सम्यक्तनिर्मल होनेका कारण फरमाया. पूजन करनेका जैसे पुरुषको अधिकार है वैसे स्त्रीको भी है. रजस्वला होनेके दिनोंमें अलबते! मना है, लेकिन! सदाकेलिये कोई शास्त्र मनादी नहीं करता, पूजामें मन-वचन-काया-और-पहेननेके कपडे पवित्र होना चाहिये. जिसकपडे पहनकर मलमूत्र किया हो-कामभोग सेवाहो-पूजाके वख्त बिल्कुल छीना नहीं चाहिये. नयेकायोग नहो-तो पुरानाही ठीक है. लेकिन! धोया हुवा और साफ होना चाहिये. पूजक पुरुष अपने शरीरमें चार जगह तिलक लगावे. ललाट-कंठ-हृदय-और-नाभि-इनके शिवाय दूसरी जगह तिलक लगाना नहीं कहा. जिनप्रतिमाके नवअंगपर तिलक लगाना इसतरकीबसे समजना चाहिये. पांवकेअंगुठे-जानु-हाथ-और-स्कंध-इनचार अंगमें तिलक आठ

हुने-हेकिन-गिततीमें ज़रही गिनेजायगे. अस्वक-लकड़-कंव-  
हकड़-और-नाभि-ये-नवसंय और तेरह बिलक हुने. पूजा-तीन  
प्रकारकी है. (१) अंगपूजा-(२) अग्रपूजा-और-(३) भागपूजा,  
नवसंगबिलक लगाना-विलेपन करना-कुछ चढ़ाना-और-मेहने  
आभूषण धारन करना-सब-अंगपूजाके भेदमें है. धूप-दीप-नैवेद्य  
पूज-अक्षत वगेरा अग्रपूजामें दाखिल है. और-गीतगात-ताटक  
चवर करना वगेरा भावपूजाके भेदमें है. चैत्यबंदन करते समय-  
पुरुष-जिमनीतर्फ-और-स्त्री-देवमूर्तिकी बायीतर्फ-बैठे,-बैठनेका  
अधिकार जसम्य सनाहाथ दूर-और-जुलुष्ट साठहाथ दूर तक है,  
(भावाभ) -मूलमर्भद्वारसें बहारके मंदपमें जितनी गुंजास देखे उ-  
तनी दूर बैठे. जिनमंदिरकी चौरासी आशातनासें सदा बचते  
रहना चाहिये. देवद्रव्य खाना महापाप है. देवमंदिरके रुपये पैसे  
अपनेको देने हो-तो-जल्दी देदेना चाहिये. जींदगीका शर-  
स नहीं-देवद्रव्य देना रह जायगा तो अगले जन्ममें बड़े दुख  
भोगने पड़ेगें.

(१४)-जिनपूजामें मन्त्रः परिणाम-हिंसकरूप-नहीं इसलिये-  
भाबहिंसा-नहीं. और भावहिंसा बिद्वन्मात्रबंध नहीं. अर्थात् पू-  
जाकरतेहुमे अशुभकर्मोंकी निर्जसा और-मुन्यानुत्पत्ती मुन्यका मा-  
ति होना सिद्ध हुवा. कोई मूर्त-इस आशयको न समझे और कु-  
तर्क करे तो उसके लोटे भाग्य-समझना चाहिये. धर्म-और-श्रुत  
जोरजोरी नहीं होती. अमर सत्ताल किया जायकि-अतिथिसें  
पूजन करनेसें तो न करना अच्छा, (जवाब.) यह बात ठीक न-  
हीं, कोई शरत्त जब किसी कामको करने लगता है तो शक्ति ही

व्यायर्ष नहीं बनता: मिहनत करते व्यायर्ष भी बन सकता है: इसी तरह पूजनमें भी अविधिसे करते विधि प्राप्त ही सकती है: लेकिन न! अविधिके बरसे बिल्कुल छोड़ बैठना अच्छा नहीं: केशर चन्दन फल नैवेद्य बगेरा हरहमेश नये चढाना चाहिये: घर चैत्या लयमें-घरसे लगा-थारह अंगुलतक उर्चीप्रतिमा रखना ठीक है: इससे बड़ीप्रतिमा घरमें रखना ठीक नहीं: बडेमंदिरमें पेशवा देना चाहिये: घरमें रखा जाय-बोभी-धातुकी-था-चित्रामकी होना ठीक है: पाषाणकी मूर्ति-बडेमंदिरमें रखना अच्छा: परदेश जाते बंहेते सिद्धचक्रकायंत्र साथ रखना बहोत ठीक है: बिंदून देवदर्शने भी-जन जिमना अच्छा नहीं: नया बनवाया हुवा-सिद्धचक्रबंत्र-बिंदून-गुरुकेवासक्षेप किये पूजनीक नहीं होसकता: जिममंदिरमें स्तोत्र-लावनी-स्तवन-पढना तो उमदा भावार्थवाला पढना चाहिये: शास्त्राज्ञासे बखिलाफ-रचनाका-पढना मुनासिब नहीं: पूजाचार्य रचित उमदा अर्चाज्ञवाले-स्तवन-पद-थोडे नहीं है:

(१५)-अगर ज्ञानी और-त्यागी गुरुका-योग होंतो-उनके पास-धर्मोपदेश सुननेको जरूर जाना चाहिये: शास्त्र श्रवणसे धर्मश्रद्धा दृढ होती है: जो-धर्मोपदेष्टा अधर्मी-और-नास्तिक है उसको पास धर्मोपदेश सुनना कोई जरूरत नहीं: असंख पूछीती उसको उपदेश देनेकी योग्यताही नहीं फिर उसका वचन दूसरेकी कैसे असर करसकेगा: !-प्रत्यक्ष देख लियेकि-अगर-बैद्याओं-को-वतिप्रता धर्मका उपदेश देनेके लिये नियत किया जाय तो-क्या !-उनकी उपदेश दूसरेकी असर करसकेता है? कभी नहीं !! बस !-इसी उदाहरणसे समझलीकि-धर्मोपदेष्टा गुरु कैसा होना

चाहिये ?—आजकल खुशामदीलोग रह गये. साधुजनभी अपने निस्पृह धर्मकों छोड़कर खुशामदी बनते चले जाते हैं, कहिये !—फिर सच्चे धर्म-का उपदेश कैसे हो सकेगा !—दोलतमंदकों—और—गरीबकों—एकसा धर्मोपदेश देना मुनिजनोंका मुख्यधर्म है. शास्त्रके पाठकों उध्यापन करना इसके समान कोई पाप नहीं. जिनजिनलोगोंने धर्मशास्त्रों-का—पाठ—उध्यापन किया उन्होंने अच्छाफल नहीं पाया. इसभवमें बेइज्जती—और—परभवमें दुर्गति—होना इसीका फल है, कह ऐसे मायावी है जो साधु होकर भी दगाबाजीकों नहीं छोड़ते, साधुलो-गोंने संसार छोड़ दिया तो अब मुनासिब है साफ दिल रहे और सच्चे धर्मका उपदेश देवे.

(१६)—जीवोंकावध न करना—सच्च बोलना—चोरी न करना—स्त्री संभोग न करना—धन धान्य सुन्ना चांदी रुपया पैसा वगेरा न रखना—इन पांचोंका नाम—महाव्रत है. भिक्षामांगकर खाना—और—रात्रीकों अन्न पाणी न लेना—मुनिजनोंका मुख्य कर्त्तव्य है. साधु साध्वी—श्रावक—श्राविका—इनचारोंकी समुदायका नाम—संघ—बोलते हैं. एक आचार्यकी वाचनावाले साधुओंके समूहका नाम—गच्छ—और बहोतसें एकसरिखे सजातीय गच्छोंके समूहका नाम—कुल—कहते हैं. आजकल पंचमकालमें—बकुस—और—प्रतिसेवना नियंठेके—मुनि—विद्यमान हैं, इन्हीके जरीये पंचमकालके अंततकधर्म चलेगा. अगर सवाल किया जायकि—निर्ग्रंथ—सनातन नियंठेके उमदामुनि जब इस कालमें नहीं रहे—तो—औरोंकों—मुनि—क्यों कहना ?—(जवा-ब.)—पहिले दिनोंमें चौदह पूर्वके पाठीकों—गीतार्थमुनि—कहते थे—तो—क्या !—आजकलके जघन्य आचारप्रकल्प—निष्पीथ—और—म-

ध्यम आचार प्रकल्प-वृहत्कल्पके-पाठीको-गीतार्थ न कहना चाहिये, ?-पहिले कालमें दश प्रकारके कल्पवृक्षकों वृक्ष कहते थे क्या ! आजकल आम्रकों वृक्ष कहना न चाहिये, ?-पूर्वकालमें सहस्रमल्ल-यादोंकों-योद्धा-बोलते थे-क्या !-आजकल किसीकों योद्धा न कहना चाहिये, ?-पूर्वकालमें बड़ेबड़े मंत्र और अंजनधारी चौर थे क्या !-आजकलके साधारण चौरोंकों चौर न कहना चाहिये ! बस !-इन्हीं दृष्टांतोंसे समझलो कि-आजकलभी मुनियोंका-अभाव नहीं है. हां !-इतना जरूर है कि-निस्पृहमुनि-थोड़े हैं. साधु होकर जो लोग-स्त्री-धन धान्य घर हाट हवेली मकानात-और-खजाना रखते हैं, और दुनियाकों मिथ्या उपदेश देते हैं उनकों साधु कहना मुनासिब नहीं.

(१७)-साधु-साध्वी-भ्रावक-भ्राविका-पुस्तक-प्रतिमा-और-जिनमंदिर-ये-सातधर्म-क्षेत्र-जो-शास्त्रोंमें बयान किये हैं इनके बचावके लिये धर्मोपदेश देकर साहाय्य करना मुनिजनोंके लिये उचित कार्य है, कोई गृहस्थ देव मंदिरका पैसा खाजाता हो उसकों रोकना-या-उसकों-संघबहार करादेना मुनियोंकों हुकम है. कोई धर्मशास्त्र नहीं फरमाताकि-इसमें बेपरवाह रहे. कोई जमह देव मंदिरका पूजारी खुद मालिक बनबैठा हो तो उसकों राज्यद्वारा प्रयत्न करके निकलवा देना, देव मंदिरमें मकड़ीकाजाल-या-श्लिखरपर-कोई वृक्ष-लग गया हो-तो-उसकों-दूर कराना.—भ्रावकश्लोम धर्मश्रद्धासे पतितहों तो खुद दूर करना. इसमें देव मंदिरकी रक्षाका इरादा होनेसे पुन्यानुबंधि पुन्य.—और-अशुभकर्मकी निर्जरा है पाप नहीं. अगर सबाल किया जाय कि-साधु त्यागी

है उसकों क्या गरजकि-मंदिरके काममें पड़े?-(जवाब.)-साधुने पांच इंद्रियके विषयका-और-पापारंभका त्याग किया है धर्मद्वेषोको हठाना नहीं त्यागा है, साधु-धर्मके थंभ है धर्ममें साहाय्य न देवे तो उनको अधर्मताका दोष आता है. भगवती सूत्रका-पाठ है कि-संघके लिये-साधु-अपनी-लब्धि-फोरवे, और-शक्ति मुआफिक धर्मकी रक्षा करे. जो-साधु-धनवानके-खुशामदी और धर्मका-सच्चा उपदेश नहीं देते-वे-साधु नहीं किंतु अधर्मी है.

(१८)-शास्त्र सुनने जाना तो हथियार-लकड़ी वगेरा छोडकर जाना चाहिये. राजा बादशाह वगेरा अपना राज्यचिन्ह-छड़ी चवर-मुकुट बहार रखकर जावे. गुरुद्वारभी एक पूज्यस्थान है, इसमें महत्वताके चिन्ह नहीं लेजाना गुरुकी अदप है, शास्त्र सुनते वरुत मनको एकाग्र रखना चाहिये. बातचित और अवाज करनेसे चित्त डामाडोल होजाता है. श्रोते-तीन तरहके (१) जानकार (२) अजानकार-और-(३) दुर्विदग्ध-नंदीसूत्रका लेख है कि-दुर्विदग्धश्रोता-ज्ञान प्राप्तिका अधिकारी नहीं. जहां सभीश्रोते दुर्विदग्ध मिले हों उस सभाको-शास्त्र सुनाना- कोई जरूरत नहीं, कागडेको दूधसें नहलायाजाय कभी सफेद नहोगा इस तरह दुर्विदग्धश्रोता-भी कभी न सुधरेगा. शास्त्रवचनपर श्रद्धावान्-और-उदार-श्रोता धर्मकी उन्नतिकरसकता है, धर्मशास्त्रका अवर्णवादीश्रोता-अगर कुतर्ककरके-अपनी मूर्खता जाहिर करताहोतो मुनासिब है कि-उसको ताडनातर्जना करना. आवश्यकसूत्रके पहिले अध्ययनका वचन है कि-विनय रहित शिष्यके साथ बलाभियोग (यानी) ताडना तर्जना करना. जो साधु-अपनी महत्वताके लोभी बनकर-

ताड़नातर्जना नहीं करते-वे अलबते!-इसलोगमें समतावान् कह-  
लाते हैं लेकिन!-ज्ञानीयोंके ज्ञानमें महाअन्यायी समझे जाते हैं.  
/क्योंकि-उनोंने-न्यायमार्गको लोप किया और अपनी वाह वा-  
ह!-करवाई.

(१९)-आजकल-वैसे-श्रोते नहीं रहे जो-बहुत बारीक बातें  
समझ शके,-इसलिये सूक्ष्म पदार्थोंका बयान थोड़ा-और-आव-  
श्यक-ज्ञाता-उवाइ-उपासकदशांग-उत्तराध्ययन-रिषभचरित-वा-  
सुपूज्य चरित-शांतिचरित-अरिष्टनेमिचरित-और-पार्श्वचरित व-  
गेरा-वाचना चाहिये. जिससे सबलोगोंको जल्दी समझमें आवे.  
शास्त्र सुनकर साधुजनोंको भिक्षाके लिये प्रार्थना करना चाहिये,  
साधुओंको भिक्षा देनेसे बड़ापुण्य होता है. अपना पेट तो सबलो-  
ग भरते हैं लेकिन!-साधुओंको-मातापिताको-और-अपने आ-  
श्रितलोगोंको-भोजन जीमाकर खानाखानेवाले बहुत थोड़े नि-  
कलेगें. एक दुर्विदग्धश्रोताकि-जिसका बयान उपर लिख चुके हैं  
एक साधुके पास जाकर कहने लगा-मैं-चेला होनेको आया हूं.  
कोई उपाय ऐसा बतलाइये कि-दिल-साफ होजाय. साधुमहाराज  
बदे चतर थे, उसकी चालाकी पहिचान गये और तुर्त जवाब  
दियाकि-भैया! यह कौन बड़ी बात है! जुल्लाब ले डालो. या-नि-  
मकपानीसे एकदो उल्टी कर डालो. दिल क्या!-सारा शरीर  
साफ हो जायगा. साधु महाराजने ठीक जवाब दिया. ऐसे चा-  
लाकोंको यही जवाब काफी है.

(२०)-जैसे गड्ढीके पैयोंमें तैल पहुंचाना जरूरत है देहरूपी  
यंत्रमें भोजन पहुंचाना भी जरूरी बात है. आटेमें थोड़ासा निमक-



और-घी-डालकर रौंटी बनाना-बहुत ठीक होता है, कच्ची रौंटी पचावमें बाधा डालती है मुनासिब है अच्छी तरह पकाकर बनाइ जाय. ताजा आटा मिले तो बहुत दिनका पुराना बिल्कुल छोड़ देना चाहिये. बाजरेकी-या-जवारकी-रौंटी भी अगर ठीक ठीक तौरसे बनाइ गइ हो अलबते!-ताकतवर होती है. जितने किसान लोग हैं इसीके आधार जीवन-बीताते हैं. काल दुकालमें यही जवार बाजरी-और-मक्की-सहारा देती है, गेहूँ अलबते!-पौष्टिक पदार्थ है, लेकिन!-सबलोगोंके खानेमें ज्यादातर जवार बाजरी-और-मक्की ही आती है. चावल बहुत हलका और जलदी पचने वाला अन्न है. बहुतसे देशोंमें चावलकाही खाना ज्यादा पसंद रखते हैं. बासमतीके-कमोदके-और-अंबामहोरके चावल अबलन-बरके गिने जाते हैं. उमदा चावल उसीको समझना चाहिये जं, पकनेकेबाद सुगंध देवे. चावलके शाब-दाल-घी-और सागभाजी ज्यादा फायदेमंद है.

(२१)-करेला-भींडी-तुरइ-परवर-सब तरहकी फलियां-व-गेरा कुलुभाजी-जो-खाने योग्य है इसलिये खाना चाहिये कि-इनमें सबतरहके क्षार रहते हैं. और-ये-क्षार शरीरको पुष्ट बनानेमें फायदेमंद है. जहां बिल्कुल सागभाजी न मिलती हो-वहां नींबुका रस सेवन करना जरूरी है. हरहमेश एक नींबुकारस सागभाजीमें मिलाकर खालिया जाय कोई बिगाडकी सुरत नहीं. हां!-दांत खट्टे पडजाय उतना खाना जरूर मना है. नींबुका रस-रोचक-और-पाचक-पदार्थ है. इसमें ऐसा गुण रहा है जो-शरीरके लिये उत्तेजक-और-बादीको-हरन करनेवाला-है, इसके पीनेसे तृषा

शांत होती है. सोडा और चोनी-नींबुके रसमें मिलाकर पीनेसें पित्त शांत होते है. तीनदिनके बाद कोई आचारखाना ठीक नहीं. धर्मशास्त्रका फरमाना है कि-तोन रौजबाद उसमें सूक्ष्मजीवोंकी उत्पत्ति हो जाती है. आमका-बांसका-कैरका-करोंदेका-इमलीका-ककड़ी-मीरच-और-गवारफलीका-वगेरा सब तरहके आचार-तिन रौजके बाद अभक्ष्य है. चौथेदिन इनमें बेइंद्रिय जीव उत्पन्न हो जाते है. अगर जूठा हाथ लगाया जाय तो सन्मूर्छिम जीवभी उत्पन्न हो जाय इसलिये अभक्ष्य कहा. नींबुका सुका आचारखाना बहोत फायदेमंद होता है.

(२२)-लाख औषधियोंका नतिजा दूध है. जो शरूश-इरह-मेश-दूध-पीता है कमजोरी उससे हजारकोश दूर रहती है. लेकिन!-दूध-ऐसा होना चाहिये जो जल मिलाया न हों,-बेचनेवाले जलमिला देते है इससें दोनोंकों बड़ा नुकसान पहुंचता है. गरम करते वरुत अगर उसमें मिश्री मिलादिइ जाय तो क्याही !-उय-दा बात है. वो-दूध-कभी अनपच न होगा. ताजामख्वन अंत मुहूर्त्तकालतक शास्त्रकारोंने जीवोत्पत्तिसें रहित कहा. अगर औषध भैषज्यकेलिये-ताजामख्वन (यानी) तुर्त्तका मथनकर निकाला हुवा-इस्तिमाल करे कोई हर्जकी बात नहीं. बाद अंतमुहूर्त्तके जीवकी पैदाश होजाती है इसलिये धर्मशास्त्रमें इसका त्याग रखना फरमाया. अंतमुहूर्त्तकालकी मर्यादा शास्त्रोंमें दो घड़ी तक कही,—

(२३)-अनाजकों पचानेमें दही ज्यादा फायदेमंद होता है, इसके खानेसें रुचि बढ़ती है, गर्मीके दिनोमें निम्क और जीराडा-

लकर खानेसें बहोत जलदी फायदा पहुंचाता है, मिश्री-साफ-चमकदार-सुखी-और-सफेद-होतो शरीरके लिये बड़ी पौष्टिक चीज है. चाहकीपत्ती पानीमें गर्मकर उसमें थोड़ी मिश्री मिलाके पीना सुस्तीको दूर करता है. हृदयव्यापारको बढ़ाता है और मगजमें फुर्ती पैदा करता है. लेकिन !-इतना याद रहे चाहका बनाना इरेकको नही आता, चाहदानीमें पहिले पानीको खुब तपाना-बाद उसमें चाहकी पत्ती छोडकर तुर्त ढकनेसें ढांक देना. और पांच मिनिटमें जब उसका असर हो जाय-छानकर दूध मिश्री मिलाके पीना-यही इसकी उमदा तरकीब है. बाजे आदमी बहुत चाह पीते है यह अच्छी बात नही. सबचीज मानप्रमाण अच्छी होती है.

(२४)-सवेर वरुत-थोडा खाना-खाकर काममें लगना अच्छा होता है. अच्छे लोग सवेर वरुत-चाह दूध-या-बदामकी-रोटी-बगेरा कुच्छनकुच्छ-खाकर बहार निकलते है, सवेरवरुत-दूध-या-कोई हलका-अन्न न खानेसें-पेट खाली रहता है और उसमें बुरी हवाका प्रवेश होकर बिमारी पैदा होती है. इसलिये सवेरवरुत कुच्छ चीज खाना जरुरी है. जिनको ब्रत नियम हों उनके लिये तो त्यागही रखना चाहिये. सागूदाना-दूध-और-मिश्री मिलाकर पकाना और थोडा ठंडा होनेके बाद पीना-तंदुरस्त-और-बोमार-दोनोंके लिये फायदेमंद है. नारियल खाना शारीरक परिश्रम करनेवालोंको बहुत फायदा पहुंचाता है. कई देशमें मजदूर लोग ज्यादा नारियलही खाते है. उरदकी दाल-घीकी-तरह-तर और-पौष्टिक बस्तु होनेसें शरीरकी ताकत बढ़ाती है. जिनको पसंद हो जरुर खाया करे.

(२५) — (रतुका खानपान) — वर्षारितुमें — निमक ज्यादा खाना अच्छा होता है. तरगरम भोजन — सीरा — मोतीचूरकेलाडु — मालपुवे — छुहारे — और — पानसुपारी — खाना ज्यादा फायदेमंद होता है. केशर — जायफल — लौंग मिलाकर — तता किया हुआ दूध पीना भी ठीक है. हीने — या — मोघरेके तैलकी मालिसकरके गर्मजलसें नहाना अच्छा है. (शरदरितुमें) शरदपुनमका चांद रितुका एक अनुपम शिंजार है. इनदिनोंमें — कडुवा — कसायला — और — मीठा भोजन — जीमना बहोत फायदेमंद होता है. जितनी तरहकी हरीवनस्पति इनदिनोंमें आती है गरममसालेके साथ — गहरेघी — या — तैलमें तलकर खाना ठीक है. जल डालकर खानेसें बिगाड लाती है. मक्कीके दानें घीमें — भूनकर — मसालेके साथ खाना — कच्ची ककड़ी — निमक जीरा और कालीमीरच — मिलाकर इस्तिमाल करना कोई हर्जकी बात नहीं. लेकिन ! — इतना याद रहे — गलेतक भोजन जीमना इन दिनोंमें बहोत बुरा है.

(२६) — (हेमंतरितुमें) — दूध पीना बहोत ठीक होता है. गरम — चीकना — और — मीष्ठ भोजन — ताजी मीठाई — घी — और — गहरेमसालेके साथ तली हुई भाजी तरकारी वगेरा जो चीज खाना — गरम गरम खाना चाहिये. जलकी कोताई रखना ठीक नहीं, (शिशिररितुमें) गरम और चरपरा भोजन जीमना ज्यादा फायदेमंद होता है. सा मर्ध्य वृद्धिके लिये केशरपाक — आसगंध — मुशली — या — शालमपाक वगेरा — इन दिनोंमें खाना अच्छा होता है. जायफल — जवत्री — लौंग — और — केशर मिलाकर तताकिया हुआ दूध पीना भी बहोत ठीक है. चाह — मेंवा — बादामकी रौटी वगेरा उमदा खाना और उमदा कपडे

इन्हो दिनोंके लिये है. हरेचने-साठें-जामफल-सीताफल-ताजे पिस्ते-दाख-चनेकीभुनी दाल-भजिये-और-सेब-बगेरा-इन्ही दिनोंकी सौकात है.

(२७)-(वसंतरितुमें)-वसंतराग गाना-रंगरंगके कपडे पहनकर बागबगीचोंमें घूमना-सबकों प्यारा लगता है, घृतका खाना इन्ही दिनोंमें फायदेमंद होता है. दूध घो-खाना सदाके लिये ठीक है लेकिन!-इन दिनोंमें-कुच्छ ज्यादा अच्छे है, खारा-और-थोडा मीठा भोजन जीमना इस रितुका शिंगार है. दही-गुड-इनदिनोंमें खाना अच्छा नही. कफ पैदा करते है! (गृष्मरितुमें) गर्मीकेमारे सबकों घबराहट मालूम देती है. कइसुकुमार शरीरवाले इन दिनोंमें निहायत तंग रहते है. अन्न खाना नही रुचता. पानी-या-शरबतपीनेहीपर मन ललचाता है. आवलेका सेंवका और-साठेका-मुरब्बा-इन्ही दिनोंमें अच्छा लगता है. मेंदेका सीरा-जिसमें मिश्री और घी-गहरेडाले गये हों शुभहके वस्त्र खाया जाय क्याही!-उमदा बात है, दिनभर प्यास नसतायगी. गृष्मरितु आमकीतो फसलही है, सबका दिल चाहता है कि-आम-खावे. लेकिन!-अकेला आम-या-उसकारस-बादी पैदाकरता है इसलिये मुनासिब है उसमें घी-और-कालिमीरच-डालकर खावे. कइ देशोंमें आम्रकेरसमें दूध मिलाकर खाते है. देशदेशकी ताहसीर अलग अलग है जिसकों जैसा रुचे वैसा करे. भोजन और कपडा दिलकी पसंदगीके ही ताबुक है. मीठाइ-केले-दही-और-घी-खाना इनदिनोंमें ज्यादा फायदेमंद है.

(२८)-गृष्मरितुमें क्या! गरीब-क्या!-अमीर-सभीलोग ब-

शरबत पीना चाहते हैं. अतारलोग जो सिर्फ मिश्रीकी चासनी बनाकर बेचते हैं उसकों फेंककर असली चिकित्सा प्रणालीसे बना हुआ शरबत व्यवहारमें लाना चाहिये, जिनकों प्रमेह बगेरा गर्मीकी बीमारी हो उनकों-चंदनका-गुलाबका-केवडेका-या-खसका शरबत इन दिनोमें जरूर पीना चाहिये. लेकिन !-कितना पीना ? किस वस्तु पीना ? इसकी सलाह हकीमलोगोंसे पुछो, चंदनका शरबत ठंडा और पीनेसे तबीयतकों खुश करता है, दस्त साफलाकर दिलकों कुबबत पहुंचाता है. कफ-प्यास-पित्त-और-लोहीके फिसादोंकों दूर करके दाहकोंभी मिटाता है. दो तोले चंदनका शरबत-दसतोले पानीके साथ पीना चाहिये. गुलाबका-या-केवडेका-शरबत भी इसीतरकीबसे पीना अच्छा है, गर्मी शांत होकर कलेजा तर करेगा. दोतोले नींबुका शरबत-दसतोले जलमें डालकर पीया जाय तो गर्मी शांत होगी. और-भूख-दुगुनी लगेगी. बीस नींबुके रसकों-चालीस तोले मिश्रीकी चासनीमें डालकर बनानेसे नींबुका शरबत बन सकता है. अनारका शरबत-चारतोले भरलेकर बीसतोले पानीके साथ-पीया जाय तो नजलेंको मिटाकर दिमागकों ताकत पहुंचाता है. जिस गांवमें असली शरबत न मिलसकता हों और गर्मीका जोर बहोत दिखाई दे-तो-पच्चीस बादामकी गिरी-घोटकर एकगिलासभरजल बनावे-और-उसमें मिश्री डालकर पीइ जाय-गर्मी बिल्कुल न सतायगी.

(२९)-चंदन-केवडा-गुलाब-हीना-खस-मोंतिया-जुही-और पनडीके इतरोसे बनाये हुवे-साबुन-गर्मीयोंके दिनोमें दिलकों खूबतर रखते हैं. जिनोंने पूर्वभबमें-देवगुरु धर्मकी सेवा किई है-इस

भवमें जिनोंका दिल धर्मपर-रजु है-और जो उदार स्वभाववाले हैं-उनहीका मनुष्यजन्म तारीफ करने योग्य है. शालदुशाल-कड़े कंठी-हुकमहोदा-और-मोंतियोंके हार-धर्महीकी बदोलत मिले है. लेकिन!-अपश्रोष है कि-इसवख्त उसकों तुम भूले हुवे-हो. इस कालमें ऐसा जमाना बर्तरहा है कि-धनवान् लोग-धनकेनशेमें-प-डकर-धर्मकों छोड बैठे है. कहते है हमें क्या! परवाह है किसीकी? लेकिन!-यह सब उनकों पुरेपुरी भूल है. जिससे फल पाये हो-उसकों-नमते रहो, और-आगेके लिये परलोकका रास्ता साफ करो. जो धनवान् और धर्मवान् है उनकी दोनों लोगमें तारीफ है, जिनोंने पूरवभवमें धर्म किया है उनकों रोटी कपडेकी तंगी नहीं रहती. पुन्यवानोंहीकों खानपानका सुख रहता है, कइ ऐसे भी है जिन्होंकों खानपानका भी सुख नहीं. दुनियामें इससेज्यादे तकलीफ और क्या होगी?—जिनकों रोटीका भी ठिकाना नहीं. आदमी सब तरहके दुख भुगत सकता है रोटीका दुख किसीसें नहीं सहा जाता.

(३०)—इमेश थोडी भूख रखकर भोजन जिमना अच्छा-ग-लेतक खाना कभी अच्छा नहीं होता-ताकतसें बढकर भूखे रह-नेसें और भूखसें बढकर खानाखानेसें तंदुरस्तीमें बिगाड पहुंचता है. चौइसघंटेमें एकहीदफे पेटभर लेनेके बदले उतनाही अन्न-दो या-तीनवख्त करके खाना अच्छा होता है. पानी जैसे थोडा पी-नेसें बीमारी आती है वैसे ज्यादा पीनेसे भी रोगकी जड लगती है. निमकके घडेमें ज्यादा जल गेरनेसें जैसे निमक जलमय हो जा-ता है वैसेही भोजन जिमकर तुर्च गहेराजल पीनेसें अन्न-जलमय

हो जाता है, कुवेका-या नदीका-चाहे जिसका मिले लेकिन!-साफ होना चाहिये. गंदाजल शरीरकी तैजी कम करता है. पानीकों खूबतपाकर ठंडाकर लिया जाय और उसीका पान किया जाय तो यकीन है उसकों-फोडा फुनसी या-वाला-कभी न निकलेगा. गंदाजल पीनेसे-और-गंदेजलसे-स्नान करनेहीसे-शरीरमें खुजली-दाद-और-फोडे फुनसी पैदा होते हैं. जिस-कुवे-या बावडीमें गंदी चीजे पड़ी रहती हो उसका जल पीना बीमार होनेकी निशानी है. कुवोंके मुंहपर ढकना रखा जाय तो बहोत ही अच्छी बात है. बुरी चीज उसमें गिरने न पायगी. कमरतक कठेरा होना-और-चौफेरकी जमीन उंची बनाना-कुवोंकी शोभा है. इससे जीव मरनेका-और-कींचड बढनेका-सबतरह बचाव रहता है. जिसकुवे-या-बावडीमें-मनुष्य थुकते और-कुरला करते हैं-लोट साफ करते हैं-और-फिर वहीजल रसोइके काममें भी लाते हैं कहिये!-फिर रोग-क्यों न पैदा हो!—

(११)—जबकभी बदहजमी होकर-या-और-किसी सबबसे पेटमें दर्द होता है-तो-नाइकेपास पेट मलवाते हैं-और-कहते हैं-नाभि-ठिकाने-आजायगी. लेकिन!-यह जूठी बात है. इस तरह न करके अगर पेटपर अच्छी तरह सेंककरा लिया जाय-या-बातशारक-पाचक-और-रेचक-औषधियां-खाइ जाय-तो-निहायत उमदा बात है. पेटकों बहोत मसलनेसे आंतोंकों बड़ा नुकशान पहुंचता है. और-अक्सर कइवार देखा गया है कि-उनमें गांठभी पड जाती है. मुखके पीछे जहां अन्नमार्ग मुखसे लगा है वहीसे उपरकी तर्फ श्वासमार्ग शुरु हुवा है, वह आगे दोशाखोंसे फेंफड़ोंमें



खाकर मिल गया है. जहाँ अन्नमार्ग-और-श्वासमार्ग-मुखमें शुरु हुये है वहाँपर-दोनोंके मध्यमें-एक तरहका-पर्दा है. मनुष्य जब कोई चीज निगलता है तब वह पर्दा श्वासमार्गके द्वारपर ढकना हो जाता है. और बाद निगलनेके उसी वस्तु श्वासमार्गको खोल देता है. कभीकभी कोई चीज खाते-या-पीते वस्तु-जलदी करनेमें जब उक्त श्वासमार्ग तर्फ चली जाती है उसवस्तु बड़े ही जोरसें खांसी उठती है. जीव घबराने लगता है, यह बात किसीसें छिपी हुई नहीं. इसलिये हरेकको खयाल रखना चाहिये कि-खानापीना बीरजके शाय करे. ठंडी रसोइ पेटमें दर्द पैदा करती है जहांतक-बने चुर्चकी बनी रसोइ जिमे.

(३२)-खाना खाकर मुंहको साफ करनेके लिये तांबूल-खानाभी-एक जरूरी बात है राजसभामें-या-जातबिरादरीमें-जाना-तो-पानबीड़ी खाकर जाना चाहिये. उल्टी हुवे बाद भी-पानबीड़ी खाइ जाय कोई हर्जकी बात नहीं, अच्छेलोग-रास्ते चलते भी-पानबीड़ी खाना बुरा नहीं समजते. जिनलोगोंको व्रत नियम हो-को-न-खाने-कोइ हर्ज नहीं. पानबीड़ी सभीलोग खाते है लेकिन! उसकी तरकीब क्या है उसको पहिले जानना चाहिये. पान-सु-पारी-भीमसेनीकपूर-कंकोल-लौंग-जायफल-जवत्री-एलाची-बा-दाम-केशर-कथा-और-चुना इतनी चीज मिलाकर पानबीड़ी बनाइ जाय सभी तांबुलके गुण उसमें पैदा हो सकते हैं. आसोमें तांबुल-के जो तेरहुगुण-बयान किये-हैं-इस तोरसें बनाइ हुई पानबीड़ीमें समझना चाहिये. चुना ज्यादा लगाया जाय तो जबानको बिगाड रहता है, सुपारी ज्यादा होगी तो-रंग-अच्छा न आवगा-इसलिये

कथा-चुना-और-सुपारी-माफिकसर होना चाहिये.

(३३)-खानपानकी चीजें देशदेशके लोगोंने अलगअलग पसंद किई है. लेकिन!-यह बात सबकी मंजूर रखनी पड़ेगी कि-सुधा वेदनीकर्मके उदयसे ही-जीवकों-आहार संज्ञा पैदा होती. धर्मशास्त्रके पाठकों देखा जाय तो मांसखाना सर्वथा मना है लेकिन! कइ देशवालोंने इसीको अवल नंबरका खाना समझा है. दूध-दही-घी-मीठाइ-और-अन्न-ये चीजें-भोजनका शिंजार है लेकिन!-मांसखानेवालोंके मगजमें-ये-अच्छी नहीं माकूम हुए. आर्यसिद्धांत आर्यलोगोंको-और अनार्यसिद्धांत अनार्यलोगोंको मंजूर हुवा, लेकिन! इतना जहर कहना मुनासिब आयाकि-आर्यसिद्धांत-सर्व प्रपणीत होनेसे सर्वथा प्रमाणीक है अनार्यसिद्धांत असर्व-प्रपणीत होनेसे सर्वथा प्रमाणीक नहीं. इसलिये कह सकते है कि-मांसखाना-अनार्यलोगोंका काम है.

(३४)-मांसखानेवालों दिलमें रहेम नहीं रहती, उमदाखाना छोडकर-मांसखाना-कौन तारीफ है!?-कइलोग कहते है मंत्र पढकर जीव मारा जाय तो पाप नहीं लगता. जैसे मुसलमानलोगोंके काजी कल्मापढकर हलाल करते है, इधर वेदमतवाले जब यज्ञकरते है तो मंत्र पढकर पशुओंको होयवे है. लेकिन!-मंत्र-वा-कल्मा पढकर जीवमारनेसे पाप नहीं लगता यह बात युक्ति प्रमाणसे सिद्ध नहीं होतो. धर्मशास्त्रोंका फरमाना तो ऐसा है कि-जीवकों मारनेवाला-मांसको बेचनेवाला-मांसको पकानेवाला-मांसखानेवाला-मांसको बिकात लेनेवाला-मांसखानेकी सलाह देनेवाला-और-मांसका दान देनेवाला-सुद घातक है. इसलिये कहाजा स-

कहा है कि—मांसखाना अधर्म है. इसका रिवाज अनार्य-और-ना-स्तिकोंसे ही-थुरु हुवा, जैसे अपना शरीर अपनेको प्यारा है जानवरोंको भी उन्हींका शरीर उन्हींके नजदीक प्यारा है. शिकार खेल्कर-या-अपने घरमें-लाकर-जीवोंका मारना-या-कसाइकी दुकानसें मौललाना-धर्मशास्त्रके कायदे मुताबिक-सभी पापहीमें दाखिल है, जिनका खयाल धर्मपर रजु है मांसखाना कभी मंजूर न करेंगे. कइलोग दलील करते है कि-मांस अगर खाने योग्य पदार्थ न होता तो दुनियाका तीन हिस्सा इसको खाना क्यों मंजूर रखता?-(जवाब.) यह कोई नियम नहीं कि-जो-बहोतसें अधर्मी लोग-जिस बातको मंजूर रखे-वह-धर्मीयोभी मंजूर रखना चाहिये. निदान!-किसी युक्ति प्रमाणद्वारा यह सबूत नहीं हो सकता कि-मांसखाना धर्मका अंग है. जब धर्मका अंग न हुवा तो पापअंग आपही कहना मुनासिब आया. जो जो गृहस्थलोग-भावकव्रत अंगीकार करना चाहे उनको मांसखाना पहिले छोड़ना होगा.

(३५)-जमीनके भीतर जितनेकंदहोतेहैं-सबअनंतकायके-सामोल जानना चाहिये. जैसे-प्याज-लसन-अद्रक-गाजर-सकर-कंदो-मुरण-रतालु-मूलीकाकंद-अरबी-सलगम-हरिहलदी-और-गिरमीर वगेरा-कंदमूल-धर्मज्ञानको खाना मुनासिब नहीं. इनके खानेसें-शरीरमें-जितनाफायदा पहुंचता है उससे ज्यादा नुकसान है. कइतरहके विकार पैदाहोकर शरीरकी तंदुरस्तीमेंभी फर्क आता है. और ज्यादाजीवोंका वधहोनेसें पापभी ज्यादा लगता है. जिनको धर्मशास्त्रोंपर श्रद्धा है जबानका-रसछोडकर-जीवोंकी रक्षा-

और-धर्मका पालन करते हैं. दही-छास-और-कच्चेदूधमें-द्विदल (यानी)-जिनकी दोदालहोती है जैसे-मुंग-मोठ-उरद-रवा-वाल तुअर-मटर-मसुर-और-चने वगेराकी चीज मिलाना इसकानाम द्विदल है. इसके संयोगसे फौरन उसमें बेइंद्रियजीव पैदाहोजाते हैं. कच्चेदही-और-छासमें-दालकेबड़े-या-पकोड़ी वगेरा डालकर बनायाजाय इसको भी द्विदलही समझना चाहिये. धर्मीमनुष्यको मुनासिब है कि-इसे नखावे. अगरचे सवालकियाजायकि-इसमें जीवपैदाहोते हैं इसमें प्रमाण क्या?-(जवाब.)-प्रमाण यही है कि-ज्ञानीयोंने इसमें जीवोंकी पैदाशहोतोदेखी. इसकोशिवाय दूसरा कोईप्रमाण नहीं. जिनको श्रद्धाहो माने. दही-या-छास-गरमकरके उसमें द्विदलचीज मिलाइ-जाय-कोइ हर्जकी बात नहीं.

(३६)-राइ-और-सरसों-द्विदलमें नहीं, सबबकि-इनमेंसे तैल निकसता है. जिनमेंसे तैल ननिकसता हों और दोदालहोजातीहो उसको द्विदल समझना चाहिये. रोटी-दाल-सागभाजी-खीचड़ी-नरमपुरी-खीर-और-सिरा-चारपहरकेबाद चलितरस होजानेसे अभक्ष्य है. जिनको बासीअन्नखानेका नियम है उनको मुनासिब है रात बासीरखीहुइ उपर लिखीचीजें न खावें. मीठाइमें जलका अंजनहोनेसे चौमासेमें पनराहरौजतक खानेयोग्य है. बाद अभक्ष्य होजायगी. पनराहरौजकाभीकुछ नियमनहीं-अगरचे दसदिनमें ही बिगडजायतो दसहीदिनमें फेंक देना चाहिये. उनालेमें बीस दिन-और-शीयालेमें-महिनेदिनतक-मीठाइ-नहीं बिगडती, कच्ची चासनी-हो-तो-तीनदिनमेंभी-बिगडजाती है. यहां जोबात लिखीगइ है बाहुल्यताको आश्रित होकर लिखी है. दही-और-छास

सोऽपहरत्क-नही विगडते. बाद विगडजाते है. मरुत्सनकेलिये पहिले लिखचूकेहै कि-मथनकरके निकालेबाद-खोपडीभीछे-उसमें जीवोंके उत्पत्ति होजानेसे अभक्ष्य है. नेमिचरितमें-हेमचंद्राचार्य-लिखते है कि—

( अनुष्टुप्चत्तम्. )

अंतर्मुहूर्तात्परतः-सुशूक्ष्मा जंतुराशयः

यत्र मूर्छति तत्त्याज्यं-नवनीतं विवेकिभिः १,

आचारकेसंबंधमेंभी पहिले थोडासाबयानलिखागयाहै यहां और भी खुलासादियाजाता है कि-चाहे-घीका-हो-तैलका-हो-या चाहे-पानीका हो-सब तरहके आचार तीन दिनकेबाद अभक्ष्य है. तीनदिनतकभी-वो-आचार-भक्ष्य है जो खट्टीचीजका बनाहुवा हो या-खट्टीचीज-उसमें डाली गइहो-जो-आपखट्टी नहीं है-या-खट्टी चीज उसमें डालीनहीगइ है उसका काल एकही दिनका जानना.

(३७)-कितनेक कहते है-मिरच-या-नींबुवगेराका आचार तीनदिनकेबाद यद्यपि हरारहता है-और-अभक्ष्यभी होगया कहेगें लेकिन !-चोथेदिन अगर कोइतिथिपंचमी अष्टमीवगेरा आजाय-और-वनास्पतिकेत्यागवाला-वो-आचार खावे तो वनास्पतिस्वा-स्वका दोष नहीं लगता. सबबकि-वो-तीनदिनकेबाद वनास्पति नहीं रही, (जवाब.)-यहबात गलत है. कोइ जैनशास्त्रमें नहीं लि-खकि-तीनदिनकेबाद-वो-वनास्पति-नहीं रहती. अगर कहाजा-य अचिच्छहोगइ- (जवाब.)-अचिच्छतो-शस्त्रलगेबाद दोषहीमें हो जावी है तीनदिनसे क्या मतलब रहा ?-तात्पर्ययह निकलाकि-

तिथिकेदिन बिबर्को हरीवनास्पति सानेका त्यागहो-को-उसको खास और दोष नहीं यह बात गलत हुई. और सिद्ध हुआ कि-नहीं खाना चाहिये. अगर इस बात को नहीं मानो तो-बतलाओ !-यही-ही-खोखले मेरा हरिवनास्पति-जो-चाकुसँकाटकर अक्षिपर पकाइ जा रही है उसका तिथिकेरौजवनास्पतिकायका सोगनवाला खासकत है-यस-नहीं, १-कहोमे नहीं खासकता-तो-पूर्वलिखितवात स-बूतहोचूकी कि-अचित्त होवेहुवे भी वनास्पतिकायका त्यागी उस-को नहीं खासकता. क्योंकि-उसमें हरीवनास्पतिका आर्द्ररस अबतक मिटा नहीं है. अगर कहाजायकि-तीनदिनका प्रमाण है-तो यह बात किसी शास्त्रमें बतलाना चाहिये. अगर कहोगे-शास्त्रमें भी नहीं लिखा-फक्त रुढ़ी-चलपड़ी है-तो-मनेकलिपतरुढ़ीकों-मानना कोई न्याय नहीं. जोजो हरीवनास्पतिके मुरब्बे बनाये गये हो-तिथिकेरौजवनास्पतिकेसोगनवाला-न-खावे. अगरचे सुकाकर भु-रब्बाबनायागया हो-तो-तिथिकेदिनभी खासकते हो. क्योंकि-उ-समें हरारसनहीरहा. तात्पर्ययह निकलाकि-जबतकवनास्पतिकाय-केरसकी आर्द्रता बनी रहेगी-तबतक तिथिकेत्यागवाला नखावेगा मुरब्बे और शरबतका-काल-तबतक है जबतक-वै-चलितरस न होजाय. जबउनमें दुर्गंधआने लगे-वेस्वाद-होजाय-तब न खावे. अगरसवाल कियाजायकि-यह बातकहाँलिखी है!-(जवाब.)-शा-स्त्रोंमें जगहजगह लिखाहै कि-चलितरसहुवेबाद-बस्तु-अयक्ष्य हो जाती है. देखो !-प्रवचनसारोद्धार वगेरा.

( ३८ )-हस्ते-बहेदे-पींपर-बाहाम-पीस्ते-दास-वगेरा मेंवा-जखानमें समुंदरद्वारा-सो (१००) जौजन मयेबाद अचित्तहोजाता

है. गेहू-बाजरी-जव-और-कपासवगेरा तीनवर्षकेबाद अचिच,-  
मूंग-मौठ-चने-उरद-कूळथ-पसूर-वाल-तिल-तूअर-अलसी-को-  
द्रवा-कांगणी-जवार-और-मक्की-इनसबका खुलासा शास्त्रोंमें है दे-  
खलेना. भोजनजिमनेसे पहिले उसकोंनाकसे घुंघलेना अच्छा  
होता है. याते माछूमहोसके कि-इसमें किसीनेघेरतो नहीमिलाया !  
बहोतखद्दाभोजन-शरीरकेबलकों-नाशकरता है. ज्यादा निमक आं  
खकी तेजीकों घटाता है. जिनकों कफज्यादे रहता हो-कोंडा-और  
चरपरा-खानाखायाकरे, जिनकों पित्तज्यादेहो-कसायला-और  
मीठाखाना खायाकरे, जोलोग रुखाखाना खातेहैं उनकी अकल  
तेजनही रहती. मुनासिब है-पांचतोलेघी-हरहमेश खाते रहना.  
ज्यादेशाख खाना अच्छानही. भोजनजिमकर तुर्त-दिशाजंगल-  
जाना-या-स्नानकरना निहायत बुराहै. जूतापहने भोजनजिमना  
अनार्यलोगोंकाकामहै. रजस्वलाके हाथका बनाया-या-परोसा  
हुवा-अन्न-खाना बिल्कुलमनाहै. देवमंदिरमें-गुरुकों-और-राजा-  
कों-तकलीफहो-तो-भोजनजिमना अच्छा नही. चिकित्साशास्त्रों-  
का बारवार फरमानाहैकि-अजीर्णकेवलत भोजन मत जिमो.

(३९)-ठाणांगसूत्रके सातमें स्यानमें भोजनसाततरहके बत-  
लाये है, मनगमता भोजन-मधुर-धातुकों बढानेवाला-जठराग्नि ते-  
ज करनेवाला-कामवर्द्धक-और-उत्साहबढानेवाला-इनसातोमें म-  
नगमता भोजन-बो-है-जो-धर्मशास्त्रके कहनेसे बखिलाफ नहो-  
और-अपनेमनकों रुचता हो. जिसपर अपना मन राजीनही-बो-  
भोजनलाखरूपयेका क्यों न हो-खानानही चाहिये. बिगाडहोगा.  
बेटोंकों मातापितासे पहिले, और-स्त्रीकों पतिसे पहिले-भोजनजि-

मना मुनासिबनही. कइदेशोंमें सधीकपडे पहनेहुवे भोजन जिमने बैठ जातेहै लेकिन!—यहबात ठीकनही. धर्मशास्त्रोंमें—धोतोबुपट्टा—पहनेकरही भोजन जिमना कहा. एकदूसरेका—जूठापानी—पीना—या—सामीलबैठकर—जिमना रोगवैदा होनेकी निशानी है. भोजन जिमकर—तुर्च—ज्यादेजल नही पीना चाहिये. दोतीनघंटेबाद जितनी प्यास हो बेशक!—पीओ. लेकिन!—इतना यादरहे चंद्र-स्वरमें जलपीना—और—सूर्यस्वरमें भोजन जिमना—तंदुरस्तरहने—की निशानी है.

(४०)—भोजनजिमतेकों अंतरायदेना—या—उठादेना—बहोतही बुरा है, क्या!—गरीब—और—तवंगर—सबकों भोजनप्यारा है. भूखसबकों सताती है. अगर भूख नलगती—तो—कोइ किसीकी नोकरी न करता. कइजगह देखागयाकि—जबकभी कोइशास्त्र—विवाह—या मृत्युसंबंधी—अपनेघर जिमनहार करता है पांचदस बिनानौतेभी आजाते है, उनकों उठादेना कोइबहादूरी नही. सोचो कि—उन बिचारोंकों—भोजनकी सामग्री—नही मिली होगी तभी तुमारेघर आये. ऐसेदीनहीनोंकों उठादेना किसीसुरत अच्छानही. जब ह-जाररुपये खर्चकिये—तो—पांचपचीसकेलिये टोटा नहीआता. लेकिन!—क्या! कहा जाय!!—कंजूसोंका स्वभाव कभी उदार नही होता. दिलकेदलेर होंगे उन्हीकों यश मिलता है.

(४१)—जैसे—हवा—और—खानपानसें—शरीरकी हिफाजतकरना कहा—वैसे—कपडोंसेंभी—करना मुनासिबहै. ठंडी—और—गरमहवासें बचानेकेलिये कपडेंही कामदेते है. मनुष्यों—अन्न—जल—हवा—और—कपडोंका—बडाआसान मानना चाहिये. अगर—बे—नहोते—



तो-मनुष्यका जीना सुखिकरमें होता. शीतकालमें ठंढीकपड़ा ठीक होता है. दोकतबंदखोम-फलाकेन-दुसाके-बनात कबेरोंमें-और-बरीबखोम-कंबल-मुद्दोंमें ठंड मिटाते हैं. बीमारोंको फलाकेनका कपड़ा अच्छाहोताहै. गरमीके-दिनोंमें सूतकाहलका-और-बारीककपड़ा पहनना चाहिये. सबरंगमें सफेदरंगका कपड़ा अच्छा होताहै. पद्मीस्त्री सफेदकपड़ोंहीमें खुश रहती है. देशदेशकी पोशाक देखोतो बड़ाही अचंभा होगा, लेकिन!-जिसदेशवालोंने जैसी पोशाक पसंद किईहै उन्होकेलिये वही ठीकहै. कईदेशोंमें-स्त्रीये-कांचली न पहनकर अंगीयां पहनतीहैं, लेकिन!-यह रसम अच्छेलोगोंने पसंद नहींकिई. स्त्रीको तो कांचलीपहननाही मुनासिब कहा. बहोततंग-या-बहोतढीला-कपड़ा पहनना अच्छानहीं. औढनेबिछोनेकेकपड़ोंकी-सफाईरखना चतरमनुष्योंका कामहै. दबपूजनके-रात्रीके-और-दिशाजंगलजानेके-कपड़ें अलगअलग रखना चाहिये. जोलोग अपनीइज्जतके मुआफिक मौलदारकपड़ें चढ़ीपहनते हैं उनकोबराबर कोईमुर्त नही. चारचीजे दुनियामें खूबसूरतीकी निशानी है. केश-कपड़ें-फुलोंकाशिमार-और जवाहरातके मेंइने-शरीरकीदुमुनी खूबसूरती दिखलाते हैं. अच्छेकपड़ें पहननेसें-खजानाकम-नहीहोता. खजानाका कमीबेसीहोना नसीबके तालुक है, जोलोम-गरीबहालमें हैं उनको चाहे बोदेमौलका कपड़ा मिलो-कोईहर्जकीबातनहीं, लेकिन!-साफहोनाचाहिये. मैलेकपड़ेवालोंकी बुद्धि तेजनहींरहती.

(४२)-जसे-इबा-जल-अन्न-और-साफकपड़ें-शरीरको फा-वदा पहुंचते हैं. कैसे रहनेका यकानभी अगर किरपयासकेफर-

माने कुत्ताबिक बना हुआ हो-निहायतउमदाबात है. तुरेमकानमें रहना और रोगकों बुलाना एकसरखा है. जिसमकानमें बद्बू आतीहो-बहोतअंधेरा रहताहो-और-जिसकेभीतरसे गंदीहवा निकलकरसाफहवा-न-आसकतीहो-उसमेंरहना और नरककुंडमें पडना कोईफर्कनही. मकानकी कुरसी गजभर उंची होना अच्छीहोतीहै. याते उसमें बहोतसरदी-या-बरसातका-जल-न-घुसने पावे. मकानकी-लिंपाइ-पोंताइ-हरसाल-करातेरहना चाहिये. वारीशकी-मोशममें-पानी-टपकताहो ऐसेमकानमे रहना बिल्कुलअच्छा नही. जिसमकानमें सदाउजाळाबनारहताहो-रौजमरें जिसमें बूहारी दिइजातीहो-और-जहांहरहमेश दानपुन्यकेकार्यकियेजातेहो-वो-घर-देवलोगका नमूनाहै.

(४३)-घरबनानेकी तरकीब देशदेशमें अलगअलग है. कहीं पथ्थरके-कहीं लकडके-और-कहीं लोहेके-घरबनायेजाते है. जिन लोगोंकों जो पसंदहुवा उन्हींकेलिये-वही ठीक है. अलबते!-लकडकेघरमें आगका बडाडररहता है. पथ्थरकेघरमें पथ्थरकी छत अगर अचानकटूटपडे आदमीयोंका बेमौतमरनाभी जरूरहोजाता है. इसलिये अगर-छत-लकडकीबनाकर दूसरासबकाम पथ्थरइंडका बनायाजाय कोईहर्जकीबातनही. लेकिन!-हमारे कहनेलिखनेपर कौन अपनेदेशकी रसमछोडता है!-जिसदेशमें जोजोबुरी रसम चलतीहै उसकोंछोडना बडेहीचतरमनुष्योंका कामहै. कइदेशोंमें चढावके भीतर-बडाहीअंधेरा और दरबजे बहोतनिचे रखेजाते है, लेकिन!-यह सबदुदाराओंका कामनही. हरवस्तु माथेमें चोट लगे-और-जिबानबनापडे-इससेतो पहिलेहीसे उंचेदरबजे रखे-

जायतो क्या बिगाड़है !—एकसोआठ ( १०८ ) हाथ—लंबा—घर—ब-  
होत अकलहुशियारीसे बनायागयाहो तो रहनेवालोंको बड़ाही  
आराम हासिल होतारहे, देवमंदिर—राजमहेल कचहरी—और—ध-  
र्ममाला—बढ़ेहोनाही अच्छे, अकेलीलंबाईचौड़ाईसे कोइगरजनही,  
संगीन—उमदा—और—हवादारहोना तारीफकीबात है. पचास—चा-  
लीस—या—तीसहाथलंबे घरभी—अगर ठीकठीकतौरसे बनेहुवेहो—तो  
जमानादेखते—अच्छेही है. यूँतो छोटीछोटीकोठरीयोंमेंभी गुजरान  
करनेवाले करतेही है.

( ४४ )—घरकी उंचाई उतनी बढ़ानाचाहिये. जितनी उसकी  
चौड़ाईहो. बहोतउंचे घर जल्दीगिरजाते है. सो ( १०० ) हाथसे  
ज्यादेउंचेघर अच्छेनहीहोते. सीढी चौड़ी—और—पावडीये—ऐसीब-  
नानाचाहिये जो—न—बहोतबड़ी—न—छोटी हो. क्या ! बुढ़ा—और—  
लडका—मजेमें चढशके. पहेलीमजलसे दूसरीमजल—बारहमाहिस्सा  
छोटीहोनीचाहिये. घरकी दिवारें जिनको साफरखाना मंजूरहो—  
साफ—रखे, चित्राम कराना पसंदहो—चित्रामकरावे. काक—बिनाग-  
र्दनका आदमी—सांप—या—लडाइका देखाव—बगेराबुरेचित्राम घरमें  
चित्राना कोइफायदा नही. अगर चित्रामहीकरानाहै—तो—स्वर्गवि-  
मान—सिंहासन—नाचतीहुइ अप्सरा—बागबगीचे—बगेराउमदाचित्र-  
कारी कराओ. जिसकेदेखनेसे दिलपसंदरहे. घरकेपास जिनको  
बड़ेवृक्ष लगाना मंजूरहो—एकसेदूसरावृक्ष—पनराह—बीस—हाथदूर  
लगानाचाहिये. पासपामलगानेसे—एकदूसरेका स्पर्श होगा—और—  
उनकेमूल जमीनमें एकमेंकहोजानेसे अच्छीतरह फलेगेंभी नही.  
ठंडीहवा—या—धाम—लगनेसे वृक्षोंकोभी बीमारी होजाती है. अंकुरे

न-आना-झाखा सूकजाना-पत्ते-सफेदपड़जाने-यही इनकेलिये बीमारी है. खजूरीका-बैरका-और-बबूलका-वृक्ष घरकेपास बीना अच्छा नहीं.

(४५)-जिनमंदिरके बामे-या-पिछाडीके पासे बसना फायदेमंद नहीं होता. जिमने-या-सामने-बसना ठीक होता है, लेकिन! तोभी-थोडादूर रहनाही अच्छा, ऐसासामने-बसनाभी ठीक नहीं जो-घरमें-भोजनजिमते जिनप्रतिमा नजर आती रहे. इससे बेअदबी होती है. जिनमंदिरकेशिखरकी धजाछाया जिसघरमें दूसरेतीसरेपहरको छोड़कर पड़ती हो-वो-घर फायदेमंद नहीं होता. विष्णु मंदिरकी बामीतर्फ-ब्रह्माजीके दाहने-और-चंडीदेवीके चौफेर-कि-सीतर्फ-घर होना-गृहस्थोंकेलिये तकलीफ होनेकी निशानी है. घर-केकाममें-लकड़-इंट-पथर-या-चूनावगेरा जोजो मसाला लगाना मंदिर-उपाश्रय-प्रशाण-या-कुवावावडीका उतराहुवा-नहीं लगाना चाहिये. इसमें दुनियादारलोग बुराइकरेंगे. और-धर्मशास्त्रकी हुकमअदुली भी होगी. अनार-इमली-और-बबूलका लकड़ घरकेकाममें पायेदार नहीं होता. जिसघरमें उमदागालिचे बिछाये जाते हो-तस्बीरोंसे-और-मुनहरीकामसे-दिवारें झलझल बनीहुइ हो-छतमें मीनाकारीकाम-तरहतरहके-झाड़फनुस-और-रोशनदानोंके चटकी ले देखाव-जिसमें दिखपड़ते हो-ऐसे घर-उन्हीलोगोंको हासिल हो सकते हैं जिनोंने पूरवभवमें धर्मकिया है. कइलोग कहदेते हैं धर्मतो कुछ चीज हीनही. जैसा प्रयत्न करो वैसा सुख मिलता है. लेकिन! यह उनकी बड़ी भूल है. दुनियामें कौन अपनेलिये सुखी होनेका प्रयत्न नहीं करता!-सभी करते हैं. लेकिन!-होते नहीं. इससे क्या सिद्ध-

काकि-कर्म-(यानी) पुन्यपाप-सबसे ज्यादा बलवान् है, पुन्यका उदय हो और उसवरुत जो जो प्रयत्न किया जाय वही फलवान् हो जाता है, पुन्यका उदय न हो तो-वही-उद्यम व्यर्थ हो जाता है, मरन सबतरहके-सुख-पुन्यके ताल्लुक है, और पुन्य-देवगुरुधर्मकी सेवा-के ताल्लुक है.

(४६)-जैसे मकानकी सफाई रखना फायदेमंद कहा-वैसे-शहरकी सफाईभी अगर रखी जाती हो-तो-क्याही!-उमदा बात है, कचरा कुड़ा-और-मलमूत्र-जहां बहोत जमार होता होगा वहां जरूर दुर्गंध फैलेगी. बड़े बड़े शहरोंमें दिशाजंगल जानेकी बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है. घरमेंही कोठरी बनाकर काम लेते हैं. लेकिन!-कोठरीभी चतराई के साथ बनवाना चाहिये. नहीं तो सारे शहरमें बदबू छा जाती है. घर बनवानेके लिये हजार रुपये खर्च कर डालते हैं लेकिन!-मलमूत्र विसर्जनकी जगह इतनी बुरी हिकमतसे बनवाते हैं कि-कुच्छ पुछो नहीं. अवल तो!-उक्त जगह मकानसे अलग होना चाहिये. उपरसे हवा आती रहे और निकलती रहे-तो-दुर्गंध कभी न बढेगी. जमीनसे हाथ भर उंचे-दो-पथर इस वजहसे चिने कि-जिसके निचे एक पथरकी शिला ढलभी बनी रहे. जिससे मलकों बहोत वरुत ठहरे रहनेकी दिकत न रहे. दूसरी तरफ एक छोटी गौरी इस ढबसे बनाइ जाय कि-जिससे गंदा जल-या-मुत्र वगेरा तुर्ब बहा निकल जाय. इस तरकीबसे कोठरी बनी होगी-तो-दुर्गंध कभी न बढेगी. और मकानकी खूब सुरतीभी बनी रहेगी. कइलोग ऐसी खुशी ढबसे उक्त जगह बनवाते हैं जहांसे बरसों तक बदबू नहीं उठती. बैल्य वगेरा-दो दो-दिन तकभी नहीं उठवाते. एक घरमें जहां रहते आ-

दमी बसतेहो मुनासिबहै एकदिनमें दोदफे सफाई कराया करें। जिससे बदबू बढेनही। मलमूत्रकी बाधाको रोकनाअच्छा नही। ब-  
होतदेरतक रौके जायतो मलकीगर्मीसे बातपित्तमिलकर तमाम श-  
रीरमें विकारपैदाहोताहै। मुनासिबहै दिनमें दोदफे दिशाजंगलजा  
ना और पेशाबकोभी जिसवख्त बाधाहो रोकना नही।

(४७)-शहरके रास्ते छोटेछोटे और बांकेटेढेहोनेसे बडाअन-  
र्थहोताहै। राजा-दिवान-सुबाजहागिरदारवगेरा जोकोई उसजगह-  
का अधिकारीहो मुनासिबहै रास्ते सिधे-और-चोटे बनवावे। ख-  
ड्डोंको पुरवाके दुरस्त करवावे। कुडारुचरा दूर फेंकवाकर  
नालियोंका-गानी-दूर-पहुचानेकी तजविज करे, चमार-रंगरेज-  
कसाई-और-मदिरावेचनेवालोंको-अलगअलग-निवास करावे। ब-  
जारमें बदबूदेनेवाला-या-आरोग्यविगाडेनेवाला कोइपदार्थ हो-  
उसीवख्त-दूर फेंकवादेवे। छोटेछोटेगांवमें सराईकाकाम-पटेल या  
पटवारीकेजिम्मे-रखना चाहिये। राजाओंको-और-हाकिमोंको-मु-  
नासिबहै अपनेशहरके दुकानदारोंको बिगाडेनही। अच्छाव्यापार  
चलता होगातो हजारोंइतरहकी रवंभक बढेगी। अलबते!-भूठेता-  
लेमापे-रखनेवालोंको-और-घरमें-धन रखकर दिवालाफुंकनेवालो  
को जरूर शिक्षादेनाचाहिये। अईसीतिवगेरा न्यायशास्त्रोंका फर-  
मानाहैकि-न्यायमें दया रखनेसे कामनही चलता। हां!-बिदूनम-  
योजन किसीको तंगकरना अच्छानही। अपनेशहरकी रवंभकबडा-  
नेकेलिये अगरखजानेसेभी पैसाखर्चनापडे कोइहर्जकीबातनही।  
राजमहल-कचहरीघर-और-कौतवालीका-मकान-रवंभकदार औ  
र भावेबंद-बनानाचाहिये। शहरमें सिपाहीखोगोंका पहरा हरव-

रुत चकलेचकलेपरतयार रहे-याते-दंगे फिसादकरनेवालोंकों तुर्च शिक्षा मिलजायाकरे. और सज्जनगृहस्थोंकों तकलीफ नपहुंचे वैसा प्रबंध बनारहे. कइराजे एशआराममें मस्त रहकर विद्या-लम नहीपढते और कहतेहै हमे पढकर क्यालेनाहै?—उनकीअज्ञानताका किस्सा सुनिये!—एकराजासाहबकेपास जाकरएकभाटने कवितसुनाया. राजाजीने खुशहोकर हुकमदियाकि—सवारूपया—इनामदियाजाय!—खजानचीने उसकों सवारूपया दिया. जब—बो—इनामलेकर लोटा तब राजानेपूछा, क्यौरे!—तुजे सवारूपया मिलगया. भाट बोला—हां!—महाराज!!—मुजे बोसआने मिलगये. राजा गुस्सेहोकर कहताहै खजानचीकों बुलवाओ!—खजानची आया, महाराज!—क्या! हुकमहै? राजाजी गुस्सेहोकर बेंतोंसें कुटने लगे. और कहतेहै हमनेतो तुजे सवारूपयादेनेकों कहाथा—बीस—आने क्यौं दिये?—इसीतरह तेने मेरेखजानेका नाश करदिया. राजाजीकी बुद्धिमानीकों देखकर भाटसें न रहागया, हाथजोडकर बोला!—महाराज!—सवारूपया—और—बीसआने—एकहीबातहै. राजाजी खजानचीकों—छोडकर—भाटकों तंगकरनेलगे. क्यौरे!! तेने पहिलेहीसें क्यौं नरुहाकि—सवारूपया—और—बीसआने—एकहीबात है. देखिये!—अनपदराज/ओंकी खूरी,!

(४८)—दुनियामें अतंरूपराजे बादशाह होगये—लेकिन!—ज-मोन किसीकेसंग नहीगइ, सबलोग अपनीकमाइ भोगकर रवाना होगये—इसीबातकों कोइ सौचले—तो—घमंड—कभी—न—करेगा. सबसें बलवान और दोलतपंद बढाराजा चक्रवर्त्तीहोताहै. अगरचे सारी दुनियाभी बदलजाय—क्या! हुवा!!—एकिलख सबकोंसिधा करस-

कता है. आजकलके राजे बादशाह कमताकत और इथियारसँल-  
डाइलडनेवाले रहगये. चक्रवर्ती किसीकी परवाह नरखकर भुजा  
बलसँ सबकों बधमें करता है. एकतर्फ सारी दुनियाका बल-और  
एकतर्फ एकीले चक्रवर्तीका बल-कहिये !-बिदून तकदीर एसा होहा  
कौन पासकता है ?-जिसने पूरवजन्ममें तप किया है-देवगुरुधर्मकी  
ताबेदारी किइ है-और-परोकारकरके धर्मकी बढवारी फेलाइ है-उ-  
सीकों धर्मज्ञता और राज्यपदवी मिलसकती है, पुन्यकाफल राज  
और-पुन्यधर्म-नकरे-तो-नरकगति तयार है.

( ४९ )-जिनके घर-नवनिधान-चौदहरत्न-सोलहहजार देवते  
नोकर-बत्तीसहजार मुकुट बंदराजे मुजराकरे-खूबसुरतरानीयां-  
कौतलघोडे-हाथी-रथ-दिवान-नायबदिवान-डंका-निशान-चौघ-  
डीये-गांवनगर-बागवगीचे-राजधानी-रत्नोंकी खांण-मुनाचांदी-  
और-लोहेकी खांण-दासदासी-नाटकमंडली-रसोइये-भीस्ती-तंबो  
ली-भांड-गोकुल-खच्चर-इल-बंदूक-तापें-मसालची-म्यानेपालखी  
और-अष्टांगनिमित्ताये-सदाहाजर रहतेये, छडीचवर-गवैये-और-  
वारांगना-जिनकी ताबेदारीमें हरवख्त उपस्थित रहतेये-और-जि-  
नकी जुतियोंमें अमौलजवाहिरातके नग-झलाझल थे-वेभी-चले  
गये-तो-दूसरोंकी गिनकी कौन करे ?-चक्रवर्ती जैसे नरहे तो औ-  
रोंकी क्याचलाइ ?-जंबूद्वीप-जो-लाखयोजनलंबाचोडा है उसमें द-  
खनदिशा कीतर्फ-भारतवर्ष-एक-सबसँ छोटादुकडा है. इसके दंडवि  
भाग गिनेतो छहखंड होवै है. चक्रवर्ती छहोंखंडका मालिक हो-  
ता है. वासुदेव तीनखंडका-मालिक-मंडलिकराजा-उससँ छोटा-  
मुकुटबंध उससेकम-और-छत्रवति उससेभी छोटा होता है. सामंत



राजा-ठाकर-जहागिदार-और-सिरदारवगेरा अपनीअपनी जमीनके राजेही है. दिवान-नायबदिवान-मुवा-राजानही नोकरहै. लेकिन! हां! रैयतके लेखे राजातुल्यही हैं. गवरनरजनरल-गवरनरवगेराहाकिमभी राजानही-राजाकेभेजेहुवे-नोकरहै. बडोकेभेजेहुवे होनेसें अलबते! छोटेकों राजातुल्यही गिनना चाहिये. सबअधिकारीयोंकों मुनाबिबहै न्यायकी सडक चले. एकदिन-वोजमाना था-जो-आर्यखंडकेराजोंकों अनार्यखंडके राजे मुजराकरतेथे,-और-आज-वो-दिनहै-जो-अनार्यखंडकेराजोंकों आर्यराजे मुजराकरनेहै, जब जिसका सितारा तेजहोताहैउसीका जोरशोर फैलजाताहै, कइलोग कहदेते है अपनी अकलहुशियारीसें राज्य मिलताहै, लेकिन!-यहबातगलतहै. जिमका नसीबा तेज हो-उसीकों राज्यका मिलना ज्ञानीयोंने कबूल रखा. हजार अकलहुशियारीकरो और भाग्यमें इकुमत न होता कभी न मिलेगी.

(५०)-आजकल कइलोग कहदेते है जमीन पचीसहजार मीलके घेरेमेंहीहै. आगे नही. लेकिन!-यह बात धर्मशास्त्रोंसें बर्खिलाफहै. उत्तरदिशाकों सिधे चलेजाओ तो बहोत जमीन-और-आबादी मिलेगी. लेकिन!-जानेवाले बर्फकेसबब-या-शक्तिकी हीनताकेकागण अगाडीजानही सकते. इसीलिये कहदेते है जमीन इतनीही है. लेकिन!-धर्मशास्त्रके फरमाने मुताबिक जमीन बहोत-और-उनकेमालिकराजेभी बहोतहै, राज्यके काममें हरेकों अकलहुशियारीसे चलना चाहियें, बिना दरयाफ्तकिये किसीके पक्षमेंसामीलहोना-या-बिदून तहकीकातकिये किसीलेखपर दस्तावेजकरना-बहोतबुराहै. वचनका घाव-तलवारके घावसेंभी

ज्यादेहोताहै इसलिये किमीकों कुच्छकहनाहोतो सौचकरकहो. जो आदमी दूसरेकों-रै-रै-तूं-तूं-करकेबुलाताहै वो खानदानके घरानेका नही राजाओंकोंभी-पुनासिबहैकि-जिसकों, बुलानातो उसके होहेंमुआफिककहकर बुलाना,—

(५१)—नमाकरना किसीकेलिये अच्छानही, लेकिन!—राजा ओकेलिये—तो बिल्कुलठीकनहींकहा. सबबकि—रैयतकेन्यायकीडोरी राजाकेहाथमें है. नसेके फंदमें पडकर कइलोग खराबहुवे है, अपनी फजिती और दुनियाकीहमी कराना मंजूरहो-वे-मदिरापान करे, संसारमें जितने कुव्यमनहै उनका आधाहिस्सा मदिरापान है. जिसने एकदफे मदिरा पीइली उसकों दूसरीदफेभी पीनकी इच्छा जरूरहोगी. जैसेकामभोगका सुख दूसरीदफे-जीकों-ललचाताहै मदिरापानभी दूसरीदफेलेनकीइच्छा जाहिरकरताहै. मगजमें और कलेजेमें दाहपैदाकरना और दिनरातजमीनपरलौटना कौन चतराइकीबातहै?—अगर मवालकियाजायकि-पहेलेजमानमें आर्यलोगभी मदिगपीनेथे-फिर बुराक्योंकर कहतेहो?—(जवाब.)—चाहे-आर्य-या-अनार्य-कोइहो मदिगपान किसीकेलिये अच्छानही. जो पियेगा बडेबडेअनर्थ पैदाकरेगा. मदिग कइची-जोंकी बनतीहै, जैसेगेहूकेआटका-सत्व-मेंदाहै-मदिराभी-एकतरहका सत्वहै. लेकिन! बनावटमें-और-पीनेमें जोजो नुकशानहै इसकेनतीजेपरखयालकर ज्ञानीयोंने इसकी मनादीकिइ, अगर को इकहे हमको भोगविलामका सुख मिलताहै इसलिये हम मदिरा पीते है. (जवाब.)—यहबात बिल्कूलगलतहै. वल्किन!—इसमेंतो वीर्यनाडीकों बहोतबडा नुकशान पहुंचकर साराशरीर निकामहोजा-

ताहै. वीर्यनाडीकों ताकतदेनेवालीचीजें दुनियामें थोडीनही है, दूध जायफल-जवत्री-केशर-आसगंध-और-शिलाजित-वगेराक-इचीजें ऐसीहै-जो-वैद्यकीसलाहसँ खाइजायतो आशाहै बहोतबडा फायदा पहुंचे, लेकिन! अपशोसहैकि-नसेबाजोकों यहचीज क्यों करपसंद होसकेगी?—जिनकों जबरजस्ती लडाइ मौललेना मंजूर है-वे-मदिरापीना कैसे छोडेगे?—

(५२)-अफीम-गांजा-भंग-और-तमाखू-वगेराजितनीनसी-ली चीजें है उसका खाना पीना-या-सुंघना-नसेबाजोकों-छोडकर कोइ अच्छानही कहता, नमीलीचीजें खानापीना पागल बनने-कीनिशानीहै. जिनकों अपनास्वभाव बिगाडकर सीरडीबननाहो वो-नसा-करे, कितनेक ऐमे शौकीनहैकि-अपनाव्यसन-अपनीस्त्री कोंभी-लगादेते है. हुका-चिलम-या-बीडी-आपपीइकर खुशीकेशा थ स्त्रीकोंभी पातेहै, न पीयेतो लोभलालचदेकर पाते है. लेकिन! सौचलो!—इसमें फायदाहै-या-नुकशान?—नसेबाजोंका-मुंह-हरब-रुत दुर्गंधवाला बनारहताहै. दूसराआदमी उसकेपासबैठना नही चाहता. अपशोषहै नसेबाजस्त्रीपुरुष जब पासबैठतेहोगें कैसे अच्छा मालूम देताहोगा. अफीम एकबडाविषहै, इसका बहोतखाना अ-लबते!—हानिपहुंचाताहै. जिसकों रिवाज पढगया हो उसकोंभी अफीमका छोडना कुच्छमुश्किलबातनही, अगरचे दिलमें धार ले-वे,—लेकिन!—एकदमछोडदेनाभी नहीबनपडेगा, इसलिये मुनासि-वहै थोडेप्रमाणसँ घटातेघटाते बिल्कुल छोडदे, दूध-और-उसमें थोडा केशरमिलाकर पीया जाय तो सबनसोंकों रदकरके शरीर-की दृगुनीतेजी बढायगा.

(५३)—एकअफीमची नसेकेतारमें छतसें गिरपडा. लेकिन ! यहमालूम नहींहुवाकि—कौनगिरा !—नोकरसें पुछताहै देखतो !—कौन गिरा !—नोकरने जबाबदिया, हज़ूर !—आपही गिरेहै, आपउठकर कहनेलगे—अच्छा !—कोइहर्जनही. मुजे तो तलाशकरना था सोहोगइ. फिर थोडीसीदेरकेबाद आप घोडेसवारहोकर जंगलकी हवाखोरो चले. रास्तेमें नोकर साथही था—आप पुछते है अबे !—सहीस !—घोडा किधर है ?—सहोसने जबाबदिया. आपहीतो सवार होकर चलरहेहो, अफीमची कहने लगे—अबे !—तोभी खयालरखना अच्छाहोताहै, कोइ—ले—न—जाय !—एकअफीमची एकदिन सामकेवल्लत दूधलेनेकेलिये अहीरकेघर गये. लोटा अहीरनके हाथ सोंपकर कहनेलगे इसमें दूधदेना—आप !—अहीरनकेघरकेसामने थोडीसीदूर एकदिवारकेशाय टेकालगाकर खडे होगये. अहीरनने दूधभरके पास रखदिया. लेकिन ! अफीमची नसेमें चकचूर हुवे कुच्छमालूमनहोकि—अहीरन घरकेभीतरसें दूध लाइ—या—नही !—नसेकेतारमें दिवारकेसहारे वहांहो खडेरहेगये. और सारोरात उंघतेरहे. सवेरका वल्लतहोनेलगा जब अहोरन पैशाबकरनेकेलिये घरसें बहार निकली, अंधेरेमें अफीमचीकेपास थोडीदूर पैशाबकरनेलगी. अवाजहोनेपर अफीमचीकी कुच्छनींद खुली. दिलमें सौचनेलगे हमारेलिये दूधमें पानी—न—मिलातीहों !—अवाजसें बोले अबे ! रंडी !!—हमारे लोटेमें पानो मतमिलाना. अहोरन हसकर कहने लगीआप यहांहो खडे हैक्या ! अफीमची शर्मिंदे होकर कुच्छनही बोले—और—घरकों चलेगये. अफीमचीयोंकी लोलाका कहांतकबयान करें.

(५४)-भंगपीनेवालाभी नसेमें चकचूर रहता है. लेकिन !-हां! मदिरा और अफीमसें कुछ इसमें नशा थोड़ा रहता है. भंगपीने-वालोंकी कोषग्रंथी पानीउतरनेमें बढनेलगती है. उसके वीर्यमें विकारहोनेसें औलादहोनेमें भी-खतरा है. और होभीजायतो किसी लाइक नहीं निवडती. राजाओंके वर्ननमें नसाकाबयानलिखना इसलिये मुनासिब आयाकि बहुधा राजेमहाराजेभी नसेमें पडकर बडीबडी तकलीफ उठाते है. अंग्रेजलोग-गांजा-और-भंगवगेरा-नसेकेपदार्थोंका व्यवहारकरनेवालोंमें कानून बनाते है और कमीशन नियतकरते है. लेकिन! शराबपीनेवालोंपर कानूननहीं बनाते-इसकासबब-यही जानपडताहैकि-वै-खुद-शराबप्रियहै. विलायतमें इतनीशराब खर्चहोतो है-जितनीमिठाइवगेरा खर्च नहींहोती.

(५५)-शिकारखैलनाहोतो-हमकहे उमका खैलो. क्रोध-मान माया-और-लोभ-ये-आत्माके असलीशत्रुहै इनकों मारना-इसी-कानाम-असलीशिकारहै, अगर तुमकोंशिकारही खैलनामंजूरहै इ-नहीका खैले. जैसे तुमाराशरीर तुमकों प्याराहै जानवरोंकों अ-पनाशरीरप्याराहै. उनपर हथियारचलाना कौनसी बहादूरीकी बात हुइ ?-कोइगुनेहगार मुहमें घासकेतुणकेलेकर सामने आजाय तो क्षत्रीपुत्र उसकों फौरन छोडदेते है-बिचारे खुद मुंहमेतृणलिये हुवे-उनकों मारना कितना अन्यायहै ?-क्षत्रीपना इसमेंनही जो बे गुनाहबेतकसीर किसीजीवका वधकरना, गुनेगारकोंभी उसके गु-नेमुआफिक ताडनादेना न्यायहै, लेकिन! शिकारखैलना कोइ न्यायनही. अगरकहाजायकि-पहिलेजमानेमें आर्यलोगशिकार क-रतेथे, (जवाब.)-यहबात गलतहै. हवाखोरीकों जाना शिकारन-

हीकहाजाता, राजे महाराजे-या-कोइ-दूसराहाकिम-हवालेनेकों-जाय और जीवोंकों नमारेतो-इसकानामशिकार नहीकहेगें. आव हवा बदलनाकहेगें. जिसजीवकों बधकियाजाता है वह फिरकभी अपनेकों बधकरेगा, जिनकों इसबातपर यकीन नही बेही-अनस-मजलोग-शिकार खेलते हैं.

(५६)-कइ राजे-शिकारके फंदये-पडकर जानछोडके चले गये, कइ ऐसेघायलहुवे जो सारी उमरतक यादकरते रहे-सिंहके सामने जैसे बहबिनाहथियारहै वैसे हथियारछोडकर कोइ राजा शिकार नही खेलता, बडेबंदोबस्तकेसाथ-मकानके घेरमें छीपकर छलकपटसें शिकार खेलते है. लोभदेकर मारते है. कहिये!-यहकौनसी बहादूरी और सत्रीपनेकी बात है?-सत्रीपन उसकानाम है जो धर्मकीरक्षाकरना, और दुखीमनुष्योंकों शरणदाता होना.जानवरोंपर लालआखकर तीखेंभालोंकी मारचलाना कहोतो सही!-कौनसीबहादूरीका काम है?-दिलकों पथ्थरबनानाहै-तो-तुमारे खोटेकर्त्तव्योपर क्यों नही बनाते?-राजनीतिभी यह नहीफरमातीकि-बिनाअपराधीकों मारो, नीतिशास्त्रका बचनहैकि-अपराधीकों भी मारो तो न्यायसें-उसपर सबूतीपहुंचाकर मारो. प्रथम श्याम-दाम-दंड-बगेरान्यायद्वारा शिक्षादो-इतनेपरभी नमाने तो हथियारसें लडो, लेकिन! तोभी उसकों इतलादेकर-नकि-दगल बाजीकरके-लडना. अन्यायसें किसीपर कदम न उठाओ. कहिये!-हिरन-शशे-सुअर-और-मछलीओंने तुम्हारा कौनसा गुनाह किया है?-जो-उनके प्यारे प्राणोंका विछोहा करडालतेहो.

(५७)-आपकी चढीहुइ भूकुटोदेखकर जब बनचरपशु-इधर

उधर दौड़ते हैं-शरीर उनका धरधरकांपने लगता है-तब-आनंद-तरंग-आपको खूब दिवाना बनाती है. इसीकानाम आप लोगोने- (जिनको शिकारखैलना मंजूर है)-शिकार समझरखा है, लेकिन! असलपुछोतो यह शिकार तही कुव्यसन है. शांतनुराजा इसकु व्यसनसे-बडा दुखभोगचूका है. शिकारी आदमी किसीकी दिइनसी यत नहीमानता. हां!-अगरशिकारमें गिरपड़े-या-कोइजानवर-आनंकर फाडखाय तभी सिधाहोता है. अगर कोइज्ञानी आदमी उसे मनाकरेतो-बह-कव मानता है?-पापी आदमी बिनाशिक्षापाये अपनापाप नहीछोडता. अगरसवालकियाजायकि-शिकारी-ह-जारोंजीवोंको मारडालता है लेकिन!-इसजन्ममें उसको रोग क्यों नहो सताता?-या-उसकेशरीरमें कीडे क्यों नही पडते?-(जबाब) जबतक उसकेपूरवजन्मको खरची पुरीनहीहुइ है तबतक उसको मुखकाअंभाव कैसे होशकता है?-जब खरचीपुरी होजायगी-पाप-का-फल-जरूर भोगेगा. वर्त्तमानमें चाहे नमानो-लेकिन!-अगा-डीको बडा दुख भोगना पडेगा. जो लोग-गुन्यपाप-और-स्वर्गन-रक-नहीमानते है उनको धर्मशास्त्रपर श्रद्धा बिल्कुल नही आती. बिद्वान् आस्ता धर्मकीजड लगना मुश्किल है, ऐसे नास्तिकलोग अगर अपनीकुतर्कोंसे ज्ञानीयोका-कहना-नमाने तो-उससे ज्ञानी-योका-कुच्छबिगाड नही, बिगाड उन्हीमूर्खोंका है जो-अपनेही पां-वपर कुहाडा मारते है. सञ्चानास्तिकहमउसको समझतेहैजो हमारे इसनीचेलिखे सवालका जबाब देवे. (सवाल,) अगरचे पांचतत्त्व-के संयोगसेही जीवकी पैदाशकहतेहो-तो-बतलाना चाहिये पांच तत्त्व-जडहै-पा-चेतन?-अगरचे चेतनहैतो उनमें आत्माकीसिद्धि

विदूत पांचतत्वके संयोगसें हुई!-तो तुमको मंजूर नहीं, अगर कहोगे जड़ है-तो-जड़सें चैतन्यकी पैदाश होना असंभव है. इधर भी तुमको मुंह खोलनेकी जगह नहीं, बस! इसीसें मालूम कर सकते हो कि-नास्तिकों का मत-झूठा है. शिकार खेलनेवालों का इरादा सदैव जीवमारनेमें लगा रहता है, और धर्मशास्त्र का फरमाना यह है कि-भलेबुरे इरादे हीसें पुण्यपापकी पैदाश है, इसलिये हर आदमी योंको मुनासिब है कि-शिकार खेलना पाप समझकर छोड़ देवे.

(५८)-नसेका-और-शिकार का-बयान-राजाओंके बर्ननमें इसलिये लिख दिया गया है कि-बहुधाराजे महाराजे इसी ब्यसनमें पड़कर दुखी होते नजर आते हैं. अगरचे छोड़ देवे तो निहायत उमदा बात है. आर्यावर्तके समस्त धर्मशास्त्र-और-इतिहासिक ग्रंथों का-आशय है कि-अवलसें-यहां-क्षत्रीजातिका स्वतंत्र राज्य-चला आया. कि तनेका विदेशी इतिहासकार-चीन-जापान-बगेराकों पुराना राज्य बतलाते हैं लेकिन!-नहीं!-सबराज्य-और-रीति रसम-पहिले भरतवर्ष हीसें (यानी.)-मध्यखंड हीसें प्रचलित हुई है. किसी जगह ज्यादा और-किसी जगह कम-लेकिन!-सबतरहके न्याय-कलाकौशल्य-विद्याविनोद-और-चतराई-इसी मध्यखंडसें जारी हुई ऐसे कहनेमें कोई हर्ज नहीं है, धर्मशास्त्रों का फरमाना है कि-सभी दिन एक सरीखे कि-सीके नहीं होते, पहिले जमानेमें आर्यराजाओं का ऐसा पुण्य था कि-वे-अनार्याधीशोंको अपनी छायामें रखते थे, और आज-वो-दिन है कि-आर्यराजे-अनार्याधीशोंकी छायामें डोर रहे हैं, इसीका नाम समय का-फेरफार है. जिस मुसलमानों ने इस जमीन पर इकुमत जमाई थी आज वही जमीन अंग्रेजोंकी इकुमतमें विराज रही है, सबेरे महरस-



जोकों जबतकन्यायका आधारबनारहताहै कभी उनकी पढतीदिशा नहीआती. जोराजा-न्यायसे-नाकचढाताहै-वो-शतरंजका राजा है. उसको असलीराजा कोइनहीकहता. यह संपूर्णधर्मशास्त्रोंका फरमानाहैकि-जबकिसीआदमीकों हदसेज्यादे घमंडआजाय जाननाचाहिये-इसकीपढतीकेदिन आये, रावणनें घमंडकिया राज्य-सेभ्रष्ट हुवा. मुसल्मानीअमल्दारीमें-बादशाहोंने-वजीरोंने-मुल्ला-ओने-जबबिल्कुलअन्याय किया उसीदिनसें उनकीघटवारी होती गइ, बाद दरुल्लनकेपेशवोंने कुच्छदिन अपनाप्रतापसूर्यप्रकाशित किया-लेकिन !-जब अन्यायपरपांव बढानेलगे उसीदिनसें सिकस्त खातेगये. कोइदिन पंजाबके सिखोंका सितारा तेज रहा. लेकिन !-जब-उनलोगोंनेभी प्रजापर अन्याय चलाया-और-आसपासके राजोंकों घासकेबतौर समझे-तभी-उनकाराज्य नष्टहोगया. निदान !-अन्यायकी सडकचलना किसीकेलिये अच्छा नही. जो चलेगा रंज उठायगा.

(५९)-अंग्रेजोका-निष्पक्षपातन्याय-इसवरुत जगत्प्रसिद्ध है. इनका अवलदर्जेकान्याय यहहै कि-जोशख्श जिसधर्मकाहै उसके शाय धर्मविरुद्धकाम नहीकियाजाता, संवत (१९१४) के बादगदरसें यहभीप्रतिज्ञाहैकि-हम-अपनेसभीधर्म-और-सभाजातिकीप्रजाकों-समदृष्टिसें देखेंगे. धर्म-तया-रंगमें-किसीतरहका पक्षपात नहीकरेंगे. आजकल जो किसीकिसीन्यायमें अन्यायांश दिखपडताहै इसमें कानूनका दोषनहीसमझना चाहिये, दोषहैतो-अयोग्यन्यायकर्त्ताओंका है, जोकि-थोड़ेअपराधपर ज्यादा-और-ज्यादेपर थोडादंड देकर फैसलादेते है. कभीकभी यहभीहोजाताहैकि

न्यायकर्त्तागण-विनासंतोषदायकप्रमाण मिलेभी-पकडलायेहुवेश-  
रुशकों-अपराधी ठहरादेतेहै. यह भी कानूनकादोष नहीं कहेमें.  
न्यायकर्त्ताओंकाही दोष कहाजायगा. दूसरे-जबकोई आदमी-अ-  
पनीबदचलनऔरत-मारडालनेकेलिये-दोषित-ठहरायाजाता है-त-  
ब-न्यायकर्त्तागण-उसकेचित्तकेभावोंमें-उसव्यभिचारिणीस्त्रीके कु-  
कर्मसें उससमय क्या भाव उत्पन्नहुवाहोगा-उसपर गौर नकरके-  
उसकों खूनकरनेका-अपराधी ठहरादेतेहै इसपर धर्मशास्त्रका क्या  
अभिप्राय है इसकों सोचना चाहिये. खेर!-हजार आक्षेप पैदाहो  
कोइर्जनही-लेकिन!-हां-वर्त्तमानमें राज्यनीतिप्रवर्तकोंका है इस  
कहनेमें कोई दोषनहीं है.

(६०)-इंग्लंडमें पार्लमेंटकीस्थापना इस्वीसन (१६४०) के  
अंदाजनहुइ. सन (१६६५) में-न्युजर्सेपर निकलना थुरुहुवा. इ-  
स्वीसन (१६९४) में-डाकखानेजारीहुवे. सारीदुनियामें जितने  
डाकखाने अलगअलगराजे महाराजे-रानी-बेंगम-बादशाह-और  
शहनशाहबगेराकी तर्फसेंजारी है उनमें-(६०००)-छहहजारतरह-  
कीटीकीट चलरहीहै. किसीपर राजारानीकीतस्बोर-कोइपरहाथी  
घोडा-सिंह-सांप-सवारबगेरातरहतरहके चित्र बनेहुवे मौजूदहै.  
बोलीका हिसाब लगाकर देखागयाहैकि-जगतभरमें (३४२४) त-  
रहकी भाषा बोलीजातीहै, इनमेंसें (९३७) एशियाखंडमें (५८७)  
यूरोपमें-(२७६) अफ्रिकामें-और-(१६२४) अमरिकाखंडमें-बो-  
लीजातीहै. सबभाषामें पुरानीभाषा कौनहै!-इसकेनतीजेपर ख-  
यालकियाजाय तो संस्कृतसें कोइबढकर नहींहोसकती. कइभाषा  
इसकेसामनेपैदाहोकर गिरचूकी है, सबमें फेरफार होताचला आ-

या इसमें एकमात्राकाभी कोई फेरफारनहीं कर सका. इसकेनिय-  
मही ऐसेहैंजो इस तोड़कर कोई नया नहींबनासके, भारतवर्षके  
मध्यखंडकी यही मातृभाषा है, और जितने कलाकौशल्यके ग्रंथ  
हैं इसीभाषामें बने हुवे हैं इसीकेजरीये-कहसकतेहैं कि-जितनी-  
कलाकौशल्य-विद्याविनोद-न्याय-और-चतराह दुनियामें फैली-  
यहांसेही उत्पन्नहोकर फैलीहै. ज्यादातर ज्ञानीयोंकी पैदाश पूर्व-  
कालमें यहांहीहुइ, उन्हींकेज्ञानसमुद्रका बिंदु दूसरेदेशवाले लेगये  
और-आज-सभ्यताकाझंडा-उड़ानेके अधिकारी बनेहैं. और क-  
हते हैं संस्कृतवाणी-अंग्रेजी-और-उर्दूके-आगेकुछचीज नहीं. ले-  
किन!-अंग्रेजी-तो-क्या!-उर्दूभी-जो अपनेआपको साफवर्ननक-  
र रही है संस्कृतकेआगे बहोतकमजोरहै. संस्कृत-और-प्राकृत-दो-  
वाणीको-सबसें अवलदर्जेकी कहदो-कोइहर्जकीबात नहीं. इनके  
गौरवको कोईभाषा नहीं घटासकती. उर्दूअक्षर ऐसे अपूर्ण और  
कठिनहोतेहैंकि-अगर-आलूबुखारा-लिखाजायतो-उसे-उल्टु बि-  
चारा-पढाजाताहै, धन्य!-उर्दूमहारानी!! तुम!-देववाणीको ह-  
रानाचाहितीहो?-लेकिन!-तुम्हीं हार जाओगी,—

(६१)-भारतके मध्यखंडकेअधिकारी आजकल-अंग्रेज-हैं.  
अंग्रेजोंको भारतकाही ज्यादा आसानमाननाचाहियेकि-जिससें-  
विकटोरियारानीको-राजराजेश्वरी (एम्प्रेस) कीं-पदवी-प्राप्तहुइ  
जितने उपद्वीप-अंग्रेजोंके-हाथमें हैं उनमें किसीकीताकतनहीं जो  
भारतके मध्यखंडकी बराबरीकरसके, जितनेधनकीप्राप्ति अंग्रेजों-  
को भारतसेंहोती है उससें अर्द्धांशभी दूसरे उपद्वीपोंसें नहींहोती.  
मिस्र-काबूल-और-आफ्रिका-बगेरा स्थानोंमें भारतीबीरोहोंने ल-

डकर अंग्रेजोंको विजयप्रदान किइ, जिससे अपनेको फावदाप-  
हुंचे उसका आसान मानना चाहिये. रैयतसमझती है राजाओंको  
बड़ा आराम होता है लेकिन!—शायमें यह भी समझना चाहियेके—  
ज्यादेहकुमतवालोंको—तकलीफ भी ज्यादा ही रहती है. संसारके रा-  
जाओंकी आमदनी—और—करजतरफ—खयाल करो—तो—यही जाहिर  
होमकि—बड़ोंको जितना आराम—उतनी चिंता भी—शायलगी है. रु-  
सके जारकी आमदनी—एकदिनमें पांचहजारपौंड—सुल्तानटर्कीकी  
(३६००) पौंड—शहनशाह आस्ट्रियाकी (२०००) पौंड—शहनशाह ज-  
र्मनीकी (१६००) पौंड—शाह इटली—भारतेश्वरी विकटोरिया—और—  
शाहवेलजियममेंसे—प्रत्येककी (१३००) पौंड—प्रेसीडेन्ट फ्रांसकी  
(१०००) पौंड—और—प्रेसीडेन्ट युनाइटेड स्टेट्स (संयुक्त अमरिका)  
की—(२५०) पौंड—दैनिक आमदनी है. एकपौंड आजकल (१६) सो-  
लहरूपयेमौलका समझना चाहिये.

(६२)—अंग्रेजीराज्यका प्रबंध—लंडनमें जहाँ मल्कामहेजमा र-  
हती है दोस्थान है. एककानाम लार्ड हाउस—दूसरेकानाम कामन्स हा-  
उस—पहिलेमें जो गवर्नर जनरल भारतसे पीनसल पाकर जाते है  
दाखिल होते है. और दूसरेमें बहुसंमतिद्वारा चुनेजाकर दाखिल-  
होते—और—ये—सब—पार्लमेंटके मेंबर कहलाते है. इनकेउपर मल्का-  
विकटोरिया—प्रेसीडेंट—है. (यानी)—प्रमुख है. उसपार्लमेंटके—आधीन-  
एकसेक्रेटरी औफ स्टेट्स है. जिसकानाम संस्कृतमें महामंत्री भार-  
तवर्ष है. उसपार्लमेंटकी तर्फसे भारतमें एकगवर्नर जनरल रहता है.  
और उसकेसाथ सेक्रेटरी ओफ स्टेटकी लिखापट्टी होती रहाकर-  
ती है. भारतमें गवर्नर जनरलकी तर्फसे एकसभा—(यानी)—कौन्सल

है. जिसमें बड़ेबड़ेशेरीराजेभी सामिलहै, और उसमें भारतसंबंधी कानुन बनायाजाताहै. गवर्नरजनरलके आधीन-एक कमांडरचीफ है. जिसको जंगीलाट कहतेहैं, यह संपूर्ण भारतमध्यखंडसेनाका अधिपतिहै. बंबई-और-मद्रासमें एकएक गवर्नर रहतेहैं. इनका पद-गवर्नरजनरलके पदसे-इतनाछोटाहै जितना पार्लमेंटके पदसे गवर्नरजनरलका-और-सबसामग्री-इनकेपासभी अपनेअपने हाते में स्वाधोनहै, इसकेशिवाय-कलकत्ता-इलाहाबाद-लाहोर-ये-तीनछोटेहातेहैं. इनमें एकएकलेफ्टेंटगवर्नर रहतेहैं, जो संपूर्णकार्योंमें गवर्नरजनरलकी आज्ञा पालन करतेहैं. और लखनौ-नागपुर-आसाम-ब्रह्मा-लंकामें-एकएकचीफकमीश्वर-रहतेहैं. इंदोरमें एक एजंटगवर्नरजनरलभी रजवाड़ोंपर रहतेहैं. ये-सब-गवर्नरजनरलके आधीनजानना. बड़ागवर्नरजनरल-और-कमांडरइनचीफ-श्री-तकालमें कलकत्ता-और-उत्तरकालमें-शिमला रहतेहैं, या-देशा-टन-करतेहैं. और बंबई-मद्रासके-गवर्नर अपनेअपने इलाकेमें इसीतरह करतेहैं. लेकिन!-कलकत्तेका लेफ्टेंटगवर्नरउत्तरकालमें कलकत्तेके किलेकी अंग्रेजीकमेटीका प्रमुख कहलाताहै और उसके इलाकेका नाम बंगाल-इलाहाबादके इलाकेका नाम पश्चिम-उत्तर-लाहोरवालेके इलाकेका नाम पंजाब-ब्रह्माआसामका ब्रह्माआसाम-नागपुरका मध्यप्रदेश-लंकाका सिलौन-लखनौका अवध-और-इंदोरका राजपुताना-कहलाताहै. इनकेताबेमें कमीश्वर-और-उनकेताबेमें कहीं कलकटर-और-कहीं डिष्टीकमीश्वर-एकएकजीलेके मालिक होतेहैं. अपनेअपने सूबोंमें जैसे गवर्नर-या-लेफ्टेंटगवर्नर-बड़ेहाकिमहैवैसेही कलकटर-या-डिष्टीकमीश्वरको-समझो.

(६३)-कबीनविकटूरियाने इंग्लैंडकाराज्य (६०) वर्षसे ज्यादा भोगा. साठवर्षसे पहिले इंग्लैंडमें रैल नही थी. तार-न-था, ज-हाज-न-था, विकटूरीयाहीकेराज्यमें अंग्रेज-भारतके सर्वप्रथम-कर्त्ता-हुवे. अफ्रिका-और-आष्ट्रेलियामें प्रभुत्व-बढा, यहाँतककि-क्रि-मियाकी-लडाइमें-रुसको-निचादेखाकर-अंग्रेज-दिग्विजयी होग-ये. जिसवरुत जिसकासितारा तेजहोताहै उसीकी रौशनी झला-झल चमकने लगती है. जगहजगह-रैल-और-तारकेहोजानेमें एक स्थानकीबनीहुइचीज-दूसरेस्थान जलदी पहुँच सकतीहै. कितनेक बहुदर्शी-अंग्रेजव्यापारी-कहरहे हैकि-विलायतका माल भारतमें-बंबई-था-कलकत्तेमें-जाकर-जहाजकेजरीये उतरताहै, वहाँसे पं-जाब-राजपुताना-अवध-बुंदेलखंडवाले-रैलद्वारा-अपनेदेशोंमें ले-जाते है, इससे उनको दुगुनाकिरायावगेरा स्वर्च होताहै. अगरवि-लायतसे जहाजद्वारा माल-करांची-उतारदियाजाय-और करां-चीसे-दिल्लीतक रैल बनादिजाय-तो-उक्तदेशवालोंको-थोडेस्वर्च में-विलायतका माल पहुँचसके.

(६४)-अखबारोंमें जाहिर होचूकाहैकि-जगतमें रैलके अंजन एकलाख और नवहजार चलतेहै. इनमेंसे यूरोपमें (६३) हजार एशियामें (३) हजार-आष्ट्रेलियामें (२) हजार-आफ्रिकामें (७००) और-बाकीरहे-सो-अमेरिकामें चलतेहै. कितनेक कहदेतेहै जो जो विद्या और ऐलम-आजहै-पहिलेजमानेमें नही थे. (जवाब.) यह बात गलतहै, बल्किन्! जोजो विद्या-चातुरी-पहिलेथी-अब नहीरही. त्रिकालप्रपुरुष पहिलेजमानेमें होगये अबनहीरहे. जोजो कलंकौशल्य-और-चातुरीकेग्रंथ-पहिले कालमें थे उसकेहजारमें

हिस्सेंभी अब नहीरहे. पहिलेकालमें रैलनहीथी तो मनुष्योंकों आकाशगामिनीविद्या सिद्ध थी. विद्याकेबलसे विमानबनाकर उसमें लाखोमनुष्योंकों बैठाके एकगांवसे दूसरेगांव लेजातेथे. शास्त्रोंमें सुनतेहीहोकि-अमूकविद्याधर-अमूकशस्त्रशर्को-यहांसे-वहां लेगया रामचंद्रजी-लंका-जीतकर अयोध्या आये जब विमानद्वारा आकाशमार्ग आये. सोचो!-अगर उसवरुत आकाशगामी विमान नही चलतेथे तो-यह लेख क्यों होता!-रैलकों रौकनेकेलिये एकपथर काफी है विद्याधरके विमानकों पहाडभी नहीरौकसकताथा. देशनमास्तरोंकी असावधानीसे जब-दोनोंरैल-आपसमें-लडती है. या-पटरीसे गिरजाती है-उसवरुत-जोकुच्छतकलीफ उठानीपडती है विद्याधरोंके विमानमें यह बात कब होतीथी!-रहा-तार-घडी-फोटोग्राफ-और-छापखाना-सो-जैसे-दूसरीकइचीजे-चतराइकेता ल्लुकहै-येभी-चतराइसे बनाइगइहै. जिसकेपास-बुद्धि-और-दोलत-दोचीजे-मौजूदहो बडेबडेसंचे-और-कारखाने-बनासकता है, इसमें चकितहोनेकी कोइबातनही, अनादिसंसारमें कइरीतिरसमें चलती-और-बंदहोती चलीआइ, हां! इतनाजरूर कहेंगेकि-कोइ रीति-मध्यखंडकेलोगोंसे जारीहुइ और-कोइ अन्यखंडकेलोगोंसे हुइ. कइ कलाकौशल्य और चतराई-आर्यखंडसे बंद होकर अनार्यमें-और-कइ अनार्यखंडसे-बंदहोकर आर्यखंडमें चलती रही. किसीवरुत आर्यखंडकेवासीदोंका पुन्य प्रबल रहा-किसीवरुत अनार्यखंड निवासीयोका रहा. सदा एकसरीखे दिन किसीके नहीरहते.

(६५)-कइलॉग समझरहे हैकि-रूपडेबूननेकी-कल-अंग्रेजोंसे चली है लेकिन! यहबात गलतहै, चीनदेशमें इसामसीहके जन्मसे

(३०००) तीनहजारवर्ष पहिले कपडेंबूननेकी कल मौजूद थी और इसमसीहसें (३०००) तीनहजारवर्ष पहिले-चीनमें-नोटभी-चलता था, रुसके-अजायब घरमें-अबतक-एक-इसामसीहसें (२) दोहजारवर्ष पहिलेका-नोट-रखा हुआ है. ये-नोट-रेशमीकागजपर-नीलीस्याही-सें छपते थे. कइलॉग-समझ रहे हैं-नोटका-चलाना-अंग्रेजोंहीसें जारी हुवा है. लेकिन !-नहीं !-पहिलेभी चलता था. इससें कह सकते हैंकि-अनादिसंसारमें अपारकलाकौशल्य चला आता है, कभी-कम-और-कभीज्यादे होना यह तो एककुदरतीनियम है, लेकिन !-जो लोग कह रहे हैंकि-पहिलेजमानेमें अंधेरा था अब उजाला हुआ है उनको सोचना चाहिये कि-हमारा कहना कहांतक सच है, ?—

(६६)-काठकेकबूतर उड़जाना-और-फिर वहांही आजाना-काठकी मख्खी-अंगुठेपरसें उड़कर घरमें घुम आना. बोलनेवाली पुतली-जिसको कहो अवाजसें बुला ले, काठका वानर सारंगीब-जाकर गान करे, दरवजेपर काठका कुत्ता-बंदूक उठाकर पहरादे-वे. और कोई उसे हाथलगावे तो दांत किड़किड़ाकर उंची अवा-जसें भौंके, शतरंजका खिलारी शतरंज बिछाकर संदूकपर बैठे और सच्चे आदमीके सामने खेलखैले. अगर आदमी भूलकरे तो काठका-खिलारी संदूकपर थापदेकर हंसे, जैसे-ये-चीजें-शिल्पशास्त्रोंके जान-नेवालोंने भारतमध्यखंडकी शिक्षासें बनाई हैं-वैसे-तार-फोटोग्राफ-ब-गेराभी परमाणुओंके-संयोग-और-आकर्षणद्वारा बनाइ गई है. जैनशा-स्त्रोंका लेख है कि-हरेक चीजमेंसें हरवरुत-आठस्पर्शी परमाणु निकसते और प्रवेश होते रहते हैं, अगर यह बात न होती हो-तो कालांतरमें जवान बूढ़ा-और-नयीचीज-पुरानी-क्योंकर हो सके ?-अगरीसेमें जब-अज्ञान



मुखदेखाजाताह तो शरीरसे निकसेहुवे जो परमाणुं उसपर जा-  
गिरेहै वही अपनेको दिखते है. बस ! वही परमाणुं दवाकेजोरसे  
वहांहीलगारहनेकी तरकीब बनादिगइ-इसीकामाम-आलोकयंत्र  
या-फोटोग्राफ-कहागया.

(६७)-यह ज्ञानीजनोंका फरमानाबहोतठीकहैकि-मांसआ-  
हारीयोंकेदिलमें रहेमनहीहोती. अबपानीखानेवाले-अध्यात्मिक-  
यानी-धर्मी-ज्यादे-और-मांसाहारी-भौतिक-अर्थात् वैभवके चा-  
हनेवाले ज्यादेहोते है, ज्यादे पापारंभकरके दोलतपैदाकरना अ-  
ध्यात्मिकों को नार्मजुर और भौतिकोंको मंजुरहोताहै. ज्ञानीयोंके  
वचनोंपर खयालकरते है तो दौलत शाय नहीचलती-धर्म-शाय च-  
लेगा. देशका हितचाहना-और-वाणिज्य व्यापार अच्छाचले-वै-  
सा-प्रबंधकरना-राजाओकेलिये बेशक ! मुनासिबहै लेकिन !-धर्मको  
साबतरखकर-नकि-खोकर कोइ कामकरना, औरकुच्छ-नबनेतो  
मांस-मदिरा-शिकार-चोरीयारी-और-दगाबाजी-तो-जहर-छोडना-  
चाहिये-जोलोम-धर्मको कुच्छचीन-न-समझकर कोरीजवानजोरीक-  
रते है-वे-आदमी-नही-जानवर है, जोजो राजेमहाराजे नीतिसें  
चलते है उनकी सबलोग तारीफकरते है, धर्मशास्त्रके फरमाने मु-  
जब उनको स्वर्गलोककी गति मिलेगी. राजाओंको रानीयें कइ-  
होतेहै लेकिन !-अपशोष हैकि-वे-सबको एकसरखी खुश नहीर-  
खते. मुनासिबहै सबको एकसरखी-पोंशाक-गहने-और-जहागोरी  
देवे. कमीबेंसी करनेसे दुनियामें तारीफनहीहोती, यद्यपि किसी-  
पर-ज्यादे-और-किसीपर-कम-मोहबतरखना यहतो होसकताहै  
लेकिन !-तोभी-चाहियेकि-जिसकोहमपकडकर लायेहो-उसे-वे

गुनाह-बेतकसीर छोड़ना नहीं, हां!-जो-बदचलन-या-हुकूम-अ-कुली-करती हो-उसे-बेशक ! छोड़देना कोईहर्जकी बातनहीं. ले-  
 • किन!-वैश्याओंके वशमें पड़कर खासरानीयोंको-तकलीफदेना  
 किसीसुरत अच्छानहीं. कितनेक ऐसेभी देखेगयेहैंकि-वैश्याओंके  
 ताबेदार बनकर बड़ेबड़ेअन्याय करचूके हैं, वैश्याओंको-गांव-न-  
 गर-जमीन-या-अपने पहेननेका गेहना देदेना कोई न्यायमार्ग नहीं.  
 अगरचे आपको यहीमंजूर है कि-अपनी पासवनकों खुश करना-  
 तो-खैर!-उसे-लाख-दोलाख-पांखलाखरुपये देदो, नोकरचाकर  
 रखदो-अपनी मरजरीकीबात है, लेकिन!-महैलसें अलग-और दू-  
 ररखना अच्छाहै. याते अपनी खासरानी और बेटोंकों तकलीफ  
 नपहुंचे. चक्रवर्ती-और-वासुदेव-वगेराकों हजारें रानीयें होतीथी,  
 लेकिन!-वे-न्यायवान् किसीकों दुखनहींदेतेथे. उनके शरीरमें य-  
 हभी ताकतथी कि-रात्रीकेवल-रानीयोंकेपास-वैक्रियलब्धिकेप्र-  
 भावसें-एकहीवल-अनेकरूपकरके जाते थे. अर्थात् जितनी रा-  
 नीयें उत्तनेस्वरूप-बनाकर-उनकेपास जाते थे. हजारोंरानीयोंके  
 साथ भोगकरनेसेंभी उनकों रोग नहींहोताथा. आजकल वह पुन्य-  
 वानी कहाँरही?-जितनी है उससेंभी घटवारी होतीचली जारहीहै.  
 पुन्यकियाथा तो राजे-बनेहो-अब मुनासिबहै न्यायसें चलना. बें  
 गुनाह-बेतकसीर-किसीकों कैद करना-गोलीसें मार देना-तल-  
 वारसें कतल करादेना-या-जरीमाना लेकर उसकी इज्जतमें धब्बा  
 लगाना. किसीसुरत अच्छानहीं है.

(६८)-इह्वाकुवंश-सूर्यवंश-चंद्रवंश-हरिवंश-यादववंश-मो-  
 र्खवंश-चौलुकवंश-चावडावंश-शौलंकीवंश-कदंबवंश-परमारवंश

शकवंश-और-गुहिलवंश-बगेरा कइवंश दुनियामें मौजूदहै, लेकिन !-इनमें-इक्ष्वाकु-सूर्य-चंद्र-हरि-यादव-और-मौर्यवंश-ज्यादे प्राचीन है, रिषभदेव-इक्ष्वाकुवंशके थे. उनके (१००) बेटेहुवे. भरत सबसेबड़ाथा, उसके सूर्ययशा बेटाहुवा, उससे सूर्यवंशीराजोंकी शुरुआत हुई. बाहुबली-जोकि-भरतसे दूमरेनंबरका था उसके चंद्रयशा बेटा हुवा. उसकी औलादमें जोजो राजेहुवे-वें-चंद्रवंशी-कहलाये, इसीतरह-अपनेबडेरोंके नामसे-या-उनकोकिइहुइ नैकी-से-उनकेवंशकी पैदाशहोतीचली आइ. जैसे श्रीपालजीके वख्तमें सातसेसुभटोंने बहादूरी किइ जिससे-राणे-कहलाये. इसीतरह असंख्यबातें है, कौन कहांतक गिनतीकरे ?-अपारसंसारमें वंश और गोत्र बेगिनत होचूके. रिषभदेव-काश्यपगोत्रके थे. मुनिसुव्रत-और-नेमिनाथजीकों छोडकर-और तीर्थंकरभी-काश्यपगोत्रमें-हुवे, बारह चक्रवर्त्तीभी इसीगोत्रमें हुवे है, जितने यादववंशीलोगहुवे सब गौतमगोत्रमें समझना चाहिये.

(६९)-कइराजे-गायनकलामें लीन रहकर न्यायकों भूलजाते है, कइ-वैश्याओंके-नाटक देखनेमें राजीरहते है, कइ-कामभोगमें आसक्तहोकर हजारोंहऔरतोंसे महोबत करते है, कइ-चित्रांपदेखने बनानेहीमें लगेरहते है, और कइ-देशाटनकरनेमें सारी उमर पूरीकर राज्यकार्यकों एकतर्फ रखदेते है, लेकिन !-नहीं !-राजाओंकों सबसे ज्यादा यहीबात मुनासिबहैकि-प्रजाके-न्याय-करनेमें-हरवख्त खयाल रखे. नाटक-रंगराग-स्त्रीसंभोग-और-देशाटन-कौनकों अच्छानहीलगता ?-सभीकोंप्यारा लगताहै, कौन नहींचाहताकि-हम-पेशआराम-न करे !-लेकिन !-तारीफ उनकी

है जो-ऐशआरामके वरुत ऐशआराम-और-न्यायके वरुत-न्यायमें उपस्थित रहे. राज्यमें जितनाधर्म होताहै-राजा-अगर उसका साहायक और रक्षकबना रहे-तो-शरीरसें बिनाधर्म किये भी-धर्मकाफल-पासकताहै. सबबकि-उसका इरादा धर्मपररजु रहा. अगर पापकेकाममें साहाय देगा तो इरादा अधर्ममयहोनेसें पापफल हासिलकरेगा, जिनको धर्म-प्याराहो-धर्मकेसाहायक बने, पाप-प्याराहो-पापके साहायकबने.

(७०)-न्यायसें किसीशख्शपर गुना सबूतहोजाय-और-राजा उसको बिनापक्षपात दंड देवे-तो उसमें पाप नहींलगता. सबबकि-न्यायमार्गभी-धर्ममें सामीलहै. दंडदेना-सोभी-धर्मकी रक्षाहीकेलिये देनाहै. जीवहिंसा-चोरीयारी-और-दगाबाजीवगेरा अन्यायकरनेवालोंको दंड न दियाजाय तो अधर्मकी वृद्धिहोकर धर्मकानाश होजाय, इसलिये कहाजासकताहैकि-न्यायधर्मसें बिनापक्षपात किये दंडदेना पापनही. हां!-अगर बैंगुनाहू बेंतकसीर किसीको दंड दिया जाय-या-रागद्वेषकेप्रभावसें-कमीबैसी-कर-दिया जायतो अलबते!-पापहै. हरेकराजेमहाराजोंको-और-न्यायाधीशोंको-मुनासिबहैकि-सत्यपर खड़े रहकर न्यायसें कामकरे. जाँदगी थोडेदिनकी है, और सबको विदाहोनाहै. जो जो राजेमहाराजे और हाकिमलोग-धर्मको जूठा समझते हैं उनकेलिये न्यायसें चलतेभो कुच्छ धर्म नहीं होसकता. सबबकि-उनकेलिये-तो धर्म-कुच्छचीजही नहीं फिर किसकी रक्षाकेलिये न्याय करेंगे, असलमें उनसें न्यायहोनाभी मुश्किल है. एकमुसाफिरने किसी गांवके एकमसकरेसें पूछा कि-भैया!-इसगांवका मालिक कौनहै?

मसकरेने जवाबदिया-अपनेअपने-घरके मालिक सबहै, मुसाफिरने कहा नही !-भैया ! !-मैं-यह पुछताहूँ इसगांवका ठाकुर कौन है ?-मसकरेने जवाब दिया-किसकिसकों बताउ, !-अपनेअपने घरमें सबकेवहां ठाकुरजी है. किसीके शिवजी-किसीके घर कृष्णजी-किसीके घर रामचंद्रजी-और-किसीकेघर गणेशजी विराजरहे है, आप किसकों पूछते है, !-उसने कहा !-भैया !-मैं-इनठाकुरोंकों नही पूछता, इसगांवका राजा कौनहै ? मसकरेने जवाबदियाकि-कल इसगांवमें एकचमार मरगयाथा-सो-उसकी स्त्री-यह कहकर रोतीथीकि-हाय ! मेरे राजा ! हाय मेरे राजा ! !-इससें यह-मैं-जा नताहूँकि-अपनेअपने घरके सभीराजा है, मुसाफिरने कहा-यह क्याबातहै, !-मसकरेने जवाबदिया-आप समझे !-इसगांवका राजा अन्यायी है इसलिये मुजे इतनी तरकीबे मुनानी पडी.

(७१)-जहां-राजा-न्यायवानहोगा उसकी रैयतभी अकसर न्यायवती होनीचाहिये. यह नहीकहा जासकताकि-सभी-लोग एकसे बनजायगें. लेकिन ! हां !-इतनाकहना बनसकताहैकि-जैसा राजा-वैसी रैयत-युंतो संसारमें ऐसेऐसे अधर्मी पड़े है जिनका बयान सुनकर कलेजा कांप उठताहै, लेकिन ! खैर !-यही कहना बनसकताहैकि-सभी एकसरखे नही होते. दौलतका भूखा संसार है. आदमी इरादे बड़ेबड़े बांधताहै लेकिन ! पार पाना मुश्किल है. ज्ञानीलोग-उसका सौचफिकर नहीकरते-अज्ञानी करते है. बस ! ज्ञानी और अज्ञानीका यही तफावतहै. असलमें सौचफिकरनेसें कुछ बनता नही, बनता वहीहैजो-जिसके भाग्यमें है. कई लोग दौलतकों जोड़जोड़कररखते है लेकिन ! जबजानेवालीहो

एकपंटेमें चलीजाती है. बड़ेबड़ेराजे दौलतकेलिये लडमरे औरमरते हैं रैयत बिचारी कौनगिनतीमें? लेकिन! तारीफ़ उन्हींकी है जो धर्ममें खरचकरते हैं. कइलोग ऐसे हैं जो आप खरचकरना चाहते हैं बैठे खरचने नहींदेते. कइ ऐसे हैं जो दूसरेकी दौलतदेखकर झुरते हैं और अपनेको कोटी एक नहींमीलती. दौलतकेलोभसें नकरवेकैकाम करगुजरते हैं, युवानीमें औरतसें और धनसें बेपरवाह रहना बड़ेहीनसीबेदारका कामहै. दौलत मोलना पुन्यकेताल्लुकहै. दौकतपाकर सबर नकियातो उसकेसमान कोई बेबकुफ़ नहीं.

(७२)—धर्मीजीव-चंदनकीतरह अच्छे-और-पापीजीव भोहरकीलकड़ीकीतरह बुरे होते हैं. कइआदमी ऐसे हैं जो अपनेआपको खोटेकचर्चियोंसें इठासकते हैं दूसरोंको नहींहठा सकते. कइअपनीऔरतको अपने हुकममें चलासकते हैं कइ नहीं चलासकते, कइ ऐसे हैं जो-आप-नाराजहैं लेकिन! दूसरोंको नाराज नहींकरते, जोसख्त विद्यामें और ऐलममें बढाहै उमरमें अगरछोटाहो-तोभी-उसकोबडा समझनाचाहिये. जैसे राजहंस जिसनदी-या-सरोवरके कनारे पानी नहींदेखते वहांसे चलेजाते हैं तुमभी अगर जहां तुमारी कदर न होतीहो चलेजाया करो, दुनियामें इज्जतसमान कोई धन नहीं, ऐलमदासेंकी कदर जितनी पहिलेजमानेमें होती-थी अब नहींहोती, बल्किन्!-आजकल ऐलमदारोंके दुश्मन बहोत, सारीजींदगी एकसरखे दिन किसीके नहींहोते. बंदेको चाहिये सदाहिम्मत रखे. हिम्मत बराबर कोईचीज नहीं. एकतर्फ बत्तीस लक्षण-और-एकतर्फ धीरजगुण सबसें बढकर कहा. वें-बेबकुफ़ है

जा दौलतके चलेजानेपर बेहोश होजातेहैं. हिंममतहारनेवालोंकी दूसरीदफे तेजी नहींहोती.

(७३)-कइ ऐसे शख्सहैं-जो अच्छेखानदानकेघरानेमें-जन्मे-लेकिन! इरादा उनका हमेशां निचे कामोंमें लगा रहता है. कइ ऐसेहैं-जो-निचेकुलमें पैदाहुवे लेकिन! इरादा उनका उंचेकामों-मेंरजु रहताहै. कइ रुपरंगमें बडेखूबसुरत-लेकिन!-विद्यामें रहित है. कइ दौलतमें झलाझल-लेकिन!-चलन अच्छानही. कइ चलन अच्छाचलते हैं लेकिन! दौलत उनकेपास नहीं. कइ परोपकारकरनेमें होशियार-और-कइ अपचेही पेंटभरनेमें मस्त है. कइ आंखोंमें अंधे हैं लेकिन! अकलमें अंधे नहीं. कइ अकलमें अंधे हैं आंखोंमें अंधे नहीं. कइ ज्ञानगुणमें बढ़तेजाते हैं लेकिन! मान गुमान बिल्कुल नहीं करते. कइ बिल्कुल मूर्ख हैं लेकिन! घमंड इतनारखते हैंकि-कुछ पूछोनहीं. कइ ऐसेहैं-जो-अपनी-औरतमें निगाहभी नहीं मीलाते-और-पराइऔरतमेंपसंद रहते हैं, कइ अपनीऔरतशिवाय दूसरीपर कभी खयालही नहींकरते. कइ-दूस-रोकों-सच्चाउपदेश देसकते हैं आप उसमुजब नहीं चलसकते. कइ शरीरमें कमजोरहैं लेकिन!-घमंडमें कमजोर नहीं है, कइरुपवान् है शीलवान नहीं-कइ शीलवान् है रुपवान् नहीं.

(७४)-कइलोग-म्यानेपालखीमें बैठेहुवे तकलीफ मानते हैं-और-कइ पैदलचलनेहीमें-राजी है. कइलोग घरमेंबहार कदमरखनाभी नहीं चाहते-और-कइ जंगलमेंही पडे मस्तहै. कइ-खूबसुरत औरतकेशाय पलंगमें सौतेहुवेभी दुखी है कइ झोंपडीमेंही बैठे आनंदमानरहे हैं. कइ हाथीघोडेपर सवारहोना नहींचाहते-और-कइ

उसीकीमाला फरतेरहते है कि-कब हमकों मीले. कोइकों हजाररु-पयेभी कुच्छचीजनही-और-कोइकों सोरुपयेभी बहोतकुच्छ है,दौ-लतमंद बाजरीकी रौटी खानाचाहताहै गरीब-मेंवेके-लहु चाहता है. कोइकों शहरका रहना पसंद-कोइकों बिल्कुल नापसंदहै. कोइ गुडसें राजी-कोइ मीसरीसें राजी, कोइकों एकरतिभर अफीम न-हीसुहाता-कोइ तोलेभर खाजाताहै. एककों लाठियोंसें कुटो-ले-किन!-कुच्छपरवाह नही, और एककों फूलकीछडीभी बहोत है, घमंडकरनेसें और ज़ूडीबातका इठकरनेसें आदमीकी इज्जतमें ध-न्वा लगताहै.

(७५)-आदमीकों हुकमहोदेका सुख उसवस्तुमालूम देताहै जब उससें गिरजाय, इसीसें कहाजाताहैकि जोकुच्छकरनाहो व-स्तुपर करलो, नहीतो पीछेसें पस्ताना पडेगा. आजकलके जमा-नेमें सारीउमरतक भाग्योदयवनारहना बहोतही मुश्किल समझो. किसीके पहिलीउमरमें सुख-और-किसीके पीछलीमें सुखहोताहै, कह.ऐसेभी है जिनोंने सारीउमरतक तकलीफ उठाइ आराम एक दिनभी नहीपाया. जिसने पूरवभवमें पुन्यानुबंधिपुन्य उपार्जन कियाहै-वो-यहांभी सुखी-और-परभवमेंभी सुखीहोगा. जैसे अ-च्छेसाधु-अच्छा गृहस्थ-और-अच्छाराजा. जिसने पूरवभवमें पा-पानुबंधिपुन्य उपार्जनकियाहै-वो-यहां सुखी-और-परलोकमें पा-पकेप्रभावसें बुखीहोगा. जैसे वैश्या अन्यायीराजा-और-अन्या-यीगृहस्थ, इसका मतलब यहहुवाकि-पूरवकेपुन्यसें तो यहां सुखी हुवे लेकिन! उस पुन्यकेभोगतेभोगते बांधलिया पाप-इसलिबे उ-क्तपुन्यका नाम-पापानुबंधिपुन्य-कहागया. पुन्यानुबंधिपाप-वो-है



जो-पूरवकृतपापसें यहां दुखीहुवे लेकिन !-यहां पुण्यकेकामें कैर-  
ताहै इसलिये अगलेभवमें सुखी होगा. जैसेकोई गरीबआदमी यहां  
खानेपीनेसेंभी तंग है लेकिन !-पुण्यकेकामकरनेसें अमाढीभवमें  
सुखी होगा. पापानुबंधिपाप-बो है-जो पूरवकृतपापसें यहां दुखी  
और यहांभी फिर पाप करताहै इसलिये परभवमेंभी दुखी होगा.  
जैसे कसाइवगेरा हिंसकजीव होते है,—

(७६)—जिसराजासें-या-बडेहाकिममें तुमारा विरोध हो  
गया-तो-मुनासिबहै उसकेराज्यकों छोडकर दूसरेराज्यमें च-  
लेजाना, बडेलोगोकेदिलमें गुस्साभी बडा रहताहै. जहां एक  
बीजपर, दोशरुश मालिकहोंगे वहां कभीनकभी जरूर दंगाहोगा.  
इसलिये मुनासिबहैकि-पहिलेहीसें उसके दोहिस्से करदियेजाय.  
अगर किसीस्त्रीसें दोशरुश मोंहवत रखना चाहतेहो-तो-यह कभी  
न-होगा, समझदारकों मुनासिबहै उसस्त्रीसें अपनी दोस्तीकों ख-  
तम करे. और यह सौचतारहेकि-मर्दकेलिये औरत-और-औ-  
रतकेलिये मर्द-प्रोतिहोनेसें इसीभवमें हितकारीहै, लेकिन !-पाप-  
बंधके हेतु होनेसें परभवमें हितकारी नहीं, कइ शरुश ऐसे है जो  
बोलीसेंमीठे-लेकिन !-कामपडे बुरे, कइ बोलीसें कठोर लेकिन !-  
कार्यपडे अच्छेहै, और कइ दोनोतरहसें निकामहै. जहां बहोत  
लोग-गप्पमारनेवाले-बैठेहो वहां अकलमंदकों मुनासिबहै चूप रहे.  
जिसकों समझानेपर हसदेताहै उसे बैशरम समझो. जो मालिक  
नोकरोंका हक नहींजानता-बो-खता खाताहै. दौलत और जवा-  
नीका ठहरना बहोतदिन नहींहोता, मुनासिबहैकि-अपनीमेंकच-  
कन न छोडना.

(७७)—भारतकेमध्यखंडको छोड़कर इसवस्तु जितनेदूसरेदेश मशहूरहै तरहतरहकेलोगउनमें बसते हैं, उनकी जातबिरादरी-और-कुटुंबकेभेद गिननेलगे तो कब पारपासकते हैं, उनकीचालचलन और-खानपानका-व्यौरा-यहाँलिखनाशुरूकरे तोभी-अंत न आ-सकेगा. एकदेशवाले जिसवातको पसंदकरते हैं दूसरेदेशवाले फौ-रन उसे नापसंद करदेते हैं. इसीसेकहाजाताहैकि-खानपान-और चालचलन-चाहे जिसतर्फसे लिखनाशुरूकरोगे पार न पासकोगे. इंग्लंड-अमरिका-अफ्रिका-आस्ट्रेलिया-न्युसौथवेल्स-चीन-होलैंड बेलजियम-नरवे-स्वीडेन-युनाइटेडस्टेट्स-न्यूफॉडलैंड-डेनमार्क-स्पेन-रूस-ग्रीस-इटाली-पर्तुगाल-जामेका-बहामा-जंगरी-जर्मनी-जापन-इवाइ-हंगरी-वगेरा जोजो देशहै उनकी जातबिरादरीवंश और-चालचलन हजाराहतरहके हैं. कइदेशवाले झींगामछलीको जीतीही खालते हैं, एकगिलासमें जल भरके उसमें मछलीको डालदेते हैं, फिर उसमें शराबका सिरका और तैल डालकर थोड़ी सीदेरबाद जब मछलीयां नशेमें आके कूदनेलगती हैं उनको पकड़पकड़कर जीतीहीको खाजाते हैं. धन्यहै ! उनके हृदयको-उनकी लीलांको कहांतक वर्नन करे ! जिनको जीतेजीव खानेसेभी नफ-रत नहीं. कइदेशमें बीमारघोडेको गोली मारदेना दया समझते हैं. कइ देशवाले पक्षीयोंकेअंडेको सुइलगाकर उसका रसपीजाना अच्छासमझतेहैं. कइदेशकी पढीगुनीस्त्रीयोंको-थियेटर-सैर-का-बिल-सिंगार-बनाव-नाच-बाल-खेल-तमाशोंसे एकघड़ी फुरसत नहींभीलती. कइदेशकी स्त्रीयें-पतिसँ-जरानाराजहुंकि-तलाकके लिये अदालतमें हाजिर होजाती हैं. कइदेशकीस्त्रीयोंने पुरुषोंकेकाम

छीनलिये है जैसे-डाक्टर-एडिटर-बारीष्टर-जज-कप्तान-इंजिनि-यर-वकील-मास्तर-बल्लमटेर-कलर्क-मजदूर-सबकुछ स्त्रीयां है. अ-मरिकाकी स्त्रीयें कइ बातोंमें पुरुषकी बराबरी करसकती है. विला-यतमें कुच्छपद ऐसेभी है जो अबतक स्त्रीयोंको नहीमीले, पार्लमें-टकी मेम्बरी-फौजकी करनैली-और-जहाजकी कप्तानी-अबतक उनको नही मोला है. हां!-फ्रांसकी स्त्रीयोंको मर्दाना कपड़े पह्ने-नकर निकलनेकी आज्ञा मीली है.

(७८)-कइदेशकी स्त्रीयोंने शराबपीनेमें पुरुषोंको मात दीइहै. कइदेशकी स्त्रीयोंने चुरटपीनेमें-और-पैरगाडीपर बैठकर शैरकरने-में पुरुषोंको पीछाडी करदिये है, कइदेशवाले कह रहे है स्त्रीकी-स्वाधीनताको रोकना चाहिये, लेकिन! क्या करे! रुकती नही. देशदंशमें विवाहकी रीति अलगअलगहै. कइदेशमें सरेबाजार स्त्री-यां बिकती है. कइदेशवाले कुत्तोंको और कइ बिल्लीको-पालना पसंदकरते है, चीनदेशके अनेकस्थानमें-लोग-कागजके बख पहे-नते है और कहते हैकि-कागजकेकपड़ेकी ताहसीर रुइके कपड़ेसे ज्यादा गर्महोती है. पानीसेतो सबलोग नहातेही है लेकिन!-कइज-गह दूधसेभी नहाना पसंदकरते है-बतलाते है दूधसे नहानेसे श-रीर स्वच्छ और खूबसुरत होजाता है, इमीमतलबसे आजकल अ-मरिकाके न्यूयार्ककी-मेंमें-दूधसे नहायाकरती है, एकऔरतके न-हानेकेलिये दससेरदूध चाहिये, कइदेशोंमें गर्मजलकेकुंड-और-ज्वालामुखीपहाडोंको-करामात-समझते है, और कइदेशकेलोग-अम्रिकायकेजीवोंकी पैदाश वहां ज्यादासमझकर-करामात नही स-मझते. हमारी रायभी यही हैकि-करामात नही-जमीनकी ताहसी-

रहै. कइ देशकीजमीन हरसाल आधावर्ष बर्फसेढकी रहती है और कइदेशमें बर्फका नामनिशान तक नहीं, कहीं ढेरआबादी और कहीं बिरानपडाहै, कइदेशके वाशिंदे कालेरंगके-और-कइके-लाल या-गौरेहै. कइदेशवाले-दूसरेदेशवालोंको नयीदुनियाकी पैदाशके कहते है और कइ अपनेआपको नयेकहकर दूसरोंको पुरानेबत-लाते है. कइदेशवाले खुलेमैदानपडी हुइ दूसरेकी चीज नहीं उठाते और-कइदेशकेलोग नजरकेसामनेसे चीजलेजाय और मालूम न-होनेदे. कइमहाशय फरमाते है-( जुओ-बडारोजगार-जो-हार-न-होती,)-( चोरी-बडाव्यापार-जो-मार-न-होती,)

(७९)-जगतभरमें मुसलमानोंसे इशाइलोग दुगुने है, इस्वीसन (१८८२) की-मर्दमसुमारीको-देखतेहै-तो-जगतभरमें-बारहकरोड चौदहलाख-मुसलमान-और-बाइसकरोड-सीत्तेरलाख-इशाइ-गि-नतीद्वारा मालूमहोतेहै, संपूर्णवंगालहातेमें सातकरोड आदमी ब-सते है और इंग्लैंडमें कुल चारकरोडही बसते है, लेकिन !-जिन-का पुन्यप्रबल उन्हीका जोरशौर पसारहोताहै, आदमी बडानही है तकदीर बडाहै. हां! किस्मत और उद्यमका जोडा जरूरहै ले-किन ! तोभी इतनाजरकरहेगेंकि-किस्मतबडा-और--उद्यमछोटा है. सबबकि-उद्यम झूठाभीहोजाताहै किस्मत झूठा नहींहोसकता-मनुष्यका भव-आर्यावर्तमें पैदाश-शरीरसे तंदुरस्त-लंबीउमर-ध-र्मपर आस्ता-और-न्यायमार्ग-इतनीबस्तु अच्छेपुन्याबिदून नहींमि-लती, जिन्होंने पुन्यकिये है सबतरहकेसुख-और-धर्म-उन्हीको प्राप्त होसकते है,—

( ८० )-भारतकेमध्यखंडमें-क्षत्रीय-ब्राह्मण-वैश्य-और-शुद्र-

येचार कौम अनुक्रमसे उत्तम-मध्यम-गिनीगड़है. इनकेभी भेदानु-  
 भेद कईहै लेकिन!-वे-सब-चारमेंआजाते-है इसलिये बड़ेभेद चा-  
 रहीकहे. जिनमेंभी क्षत्रीयजाति सबके सिरताज इसलिये कहीगइ  
 कि-वें-लोग हिम्मतबहादुर सबसेअवलदर्जेके होतेहै. क्षत्रीयोंका  
 यहधर्महो हैकि-अन्यायीपुरुषोंको धर्मका विध्वंसकरते रौके. देव-  
 मंदिर-धर्मकेस्थान-साधु-सती-और-दीनदुखीका जहांतकबने ब-  
 चावकरे. परमेष्ठीमहामंत्रका जाप-और-जिनेंद्रदेवका पूजन-हरह-  
 मेशा करतारहे. रातको खानपान न करे. धर्म-अर्थ-और-कामको  
 यथासमय पालनकरे. अन्यायकी लड़ाई-न-लड़े-और-न्याययु-  
 द्धसे कभी पीछा-न-हटे, देवगुरुधर्म-और-प्रजाकेरक्षणमें अपनी  
 जान देनेकोभी तयाररहे. शरणागतकी रक्षा करे-लेकिन!-अन्या-  
 यीका शरणदाताभी-न-बने, शिकार-न-खैले. अगर खैलनाहोतो  
 क्रोध-मान-माया-और-लोभ-जो-जीवकेअसलीदुश्मनहै उनकेसा-  
 थ खैले. कितनेही क्षत्रीयपुत्रोंने अपना कुलधर्म छोड़दियाहै. ले-  
 किन! दुनिया बिल्कुल निर्वाज नहीं, कई ऐसेभी है जो अपने व्र-  
 तनियममें अडौलरहकर सदा नैकीसे चलते हैं. बड़ेबड़े राजेमहा-  
 राजे-और शूरवीरपुरुष इसीवंशमें हुवै है. हरेकक्षत्रीयको अपनेवं-  
 शकी कीर्तिपर खयालरखना चाहिये.

(८१)-मांसखानेकेलिये आर्यधर्मशास्त्रकी किसीको संजूरी  
 नहीं है. चीड़ीया-तोते-कबूतर-हिरन शशे-सूअर-बगेराके-प्राणों-  
 का बिछोहाकरना और-उनकामांसढालकर पुष्टाईचाहना कौनसा  
 न्यायमार्ग है. जीवोंकी हिंसाकिये बिद्वान मांस उत्पन्ननहींहोसक्ता?  
 जीवोंकोमारना स्वर्गमुखको देनेवाला नहीं. इस वाक्यसे मांसखा-

ना पाप ठहर सकता है. जीवोंकी बांधना-मारना-निर्दयोंका काम है, जिसके दिलमें रहंम नहीं उसे-धर्मी आदमी-कौन कह सकता है? इसवाक्यसे मांसखानेवाले अधर्मी सबुत हो सकते हैं. बस!-इससे ज्यादा क्या कहे!-और कहेंगे भी तो बुरा मानेंगे. मांसखानेसे शरीरमें रोगभी पैदा होता है, सबबकि-वह-भारी चीज होनेसे ठीक-ठीक नहीं पचता. तर्क करनेवाले कहेंगे क्या! घी-दूध-भारी-नहीं है!-इसेभी नखाना चाहिये!-(जवाब.)-मांससे बढकर घी-दूध-भारी नहीं कह लोग कहते हैं यज्ञमें मांसखानेसे दोष नहीं लगता ऐसा मनुस्मृतिका वचन है-(जवाब.)-यह बात गलत है-सबबकि-दोष नहीं लगता इसमें प्रमाण क्या?-विना प्रमाण-कहना सुनना-वृथा है. क्या! जो कुछ मनुस्मृतिमें विना विचार के कह दिया वही प्रमाण हो सकता है? कभी-नहीं, देखिये!-मनुस्मृतिके कई वचन-अविचारशील-है, जहां पिछले अध्यायोमें मांसका वर्णन लिखा है (५६) में-श्लोकमें पाठ है कि-मांसभक्षणमें दोष नहीं. मदिरा पीनेमें दोष नहीं, तथा-मैथुन करनेमें दोष नहीं-यह प्राणियोंकी-प्रवृत्ति है. इसमें दोष नहीं. लेकिन!-इनसे निवृत्तिकरना तो महाफलदायक है. इसपर सवाल किया जाता है कि-जिसकी प्रवृत्तिमें पाप नहीं लगता उसकी निवृत्तिमें पुण्यफल कहाँसे आया!-इसको गौरकर सौचना चाहिये, बड़ा नाम धराना सहज है लेकिन! पूर्वापर विरोध रहित वचन बोलना सहज नहीं. अगर कोई मनुस्मृतिकारागी-इससे-नाराज हो-तो-शास्त्र वचनसे लड़े. कह लोग कहते हैं मनुस्मृतिका अभिप्राय आपने नहीं जाना, उसका अभिप्राय ऐसा है कि-मांसभक्षणमें दोष नहीं ऐसा नहीं कहना-बल्किन्! दोष है ऐसा कहना, (जवाब.)-मूल पाठमें ऐसा

र्थ नहीं निकलता—अगरचे निकलता होता—तो—प्रवृत्तिरेषा—भूतानां यह पाठ—न—होता. विनाप्रमाण प्रतिपक्षीलोग कब मानेंगे. अगर कहा जायकि—कस्तूरी गौरोचनभक्षणकरना मांसभक्षणमें आगया—इसलिये मांसभक्षण किससे छूटा है?—(जवाब, )—कस्तूरीगौरोचन—मांसनहीं, किंतु—जैसे केश—वगेराहें वैसे कस्तूरीगौरोचनभी—मांससे अलग चीज है. सोभी प्राणीकी बिद्वन हिंसाकिये मोलसकते है, लेकिन!—मांस—प्राणियोंकी हिंसाबिद्वन नहीं मोलता, अगर कहा जायकि—माहिंस्यात् सर्वभूतानि—यहवचनभीतो स्मृतिवगेरामें मौजूदहै—(जवाब, ) मौचो!—फिर क्या सिद्धहुवा?—इससेतो यह पायागयाकि—किसीजीवकी हिंसा नहींकरना. फिर!—यज्ञमें हिंसाकरना किसस्वर्गकेलिये कहागया?—क्या पितृदेवताओंकी—पूजा—जलचंदनकेशर—और—घो—दूधवगेरासें नहींहोसकती? अगरचे होसकती है—तो—त्रसजीवोंकी हिंसाकरना कैसे मुनासिब ठहरसकता है. निदान!—त्रसजीवोंकी हिंसाकरना मांसखाना—शिकारखैलना और—मदिरापानवगेरा अयोग्यवर्तावरखना कोइ आर्यधर्मशास्त्र नहीं फरमाता. क्षत्रीयपुत्र वडेनसीवेदार और राजस्वीतंजवालेहोते है, मुनासिबहै आर्यधर्मशास्त्रके फरमाने मुताबिक चले. और अपनेवंशकी कीर्त्ति कायम रखे.

(८२)—ब्राह्मणोंको शिक्षा—आप—धर्ममेंपावंदरहे और दूसरोंको पावंदरहनेकी तालीमदेवे. अर्हन्देवकी—त्रिकालपूजा—करे, परमेष्ठिमहामंत्रका हरहमेशपाठकरे. और निर्ग्रन्थमुनियोंकी सेवाभक्तिमें सदैव हाजिररहें. गृहस्थधर्मके—जो—गर्भाधान वगेराह—सोलहसंस्कार है उनमेंसे एक—व्रतारोपसंस्कारको—छोडकर बाकीके पनराहसं-

स्कार गृहस्थ लोगोंके घरजाकर करावे. सत्यबोले-प्राणीरक्षामें ह<sup>४</sup> रवस्तस्वयाल रखे-और-खेतीवारीका-काम-खुद नकरे. जलकों छानकर पीए-कंदमूलफल-न-खावे-रातकों खानपान न-करे-क्ष-त्रीय-और-वैश्यके घरका पवित्रभोजन जीमे-तो-कोइहर्जनही; ले-किन! बनतेप्रयत्न अपनेहाथकाही बनायाभोजन खानाअच्छाहै, जो ब्राह्मण कियावान् नहीं है उसकों ब्राह्मण कहना मुनासिबन-ही. तोनतंतु-गलेमें-गारखनेसं ब्राह्मण नहीं बनसकते. ब्राह्मणहो-कर-जो-मांसमदिराखातेपीते है उनकों कसाइकटना कोई हर्जकी बात नहीं, शुद्रकेघरका अन्न-और-देवकेसामनेचढायाहुवा-नैवेद्य ब्राह्मणके लिये खाना मनाहै. जोलोग खातेहं शास्त्रके बखिलाफ कामकरते है. अपनीज्ञातांविरादारीका कोईशस्त्र मांसभक्षीहोजा-य फौरन उसे अलगकर देंवे. क्रियासं पाकरहनेहीसे अपनाउपदेश दूसरेपर असरकरसकताहं. राजेमहाराजे-और-दूसरेलोग-अगर क्रियासं नापाकरहोंगे कब इज्जत करेंगे?-इसलिये मुनासिबहै श-रीरसें और मनसें-साफ-रहे.

(८३)-अगर सवाल कियाजायकि-ब्राह्मण-किसकों सम-झनाचाहिये ?-क्या !-शरीरकानाम-ब्राह्मणहं ?-या-जीवका नाम ब्राह्मणहं ?-अगर जीवकानाम ब्राह्मणहै तो सारीदुनियाकों ब्रा-ह्मणकहनापडेगा. सबवाक-जैसाजीव ब्राह्मणकेहै-वैसा-सबकेहै, अगर कहोगे शरीरकानाम ब्राह्मणहै तो सभीदुनियादारोंकों शरी-रहै, इसलिये शरीरकानाम ब्राह्मण नहींबनसकता. अगरकोइ ब-होतहीठठकरबैठेकि-शरीरकानामही ब्राह्मणहै तो बतलावे !-जब ब्राह्मणकेबेटे अपनेमातापिताके मरजानेपर उनके मुद्दोंकों जालते



है तब क्या!—ब्रह्महत्याकरनेके पातकी बनते है?—अगर कहा जाय पातकी तो नही बनते फिर शरीरकानाम ब्राह्मणमानना कैसे सबुत होसकता है? अगर जातिकानाम ब्राह्मण माने तो यह बात भी नही बनसकती. क्योंकि—ब्राह्मणकी जातिके शिवाय दूसरेभी तपकरके ब्राह्मण कहलाये है. इसलिये ब्राह्मणपना जातिके ताल्लुक नही ठहरसकता. महाभारतके शांतिपर्वमें—बयान है कि—

( अनुष्टुप्वृत्तम्. )

कैवर्तीगर्भसंभूतो—व्यासो नाम महामुनिः  
तपसा ब्राह्मणो जातः—तस्माज्जातेरकारणं १  
उर्वशीगर्भसंभूतो—वशीष्टु महामुनिः  
तपसा ब्राह्मणो जातः—तस्माज्जातेरकारणं २  
श्वपाकीगर्भसंभूतो पारासरमहामुनिः  
तपसा ब्राह्मणो जातः—तस्माज्जातेरकारणं ३

धीवरकीलडकीके पेटसे व्यासजी पैदाहुवे—लेकिन ! तपकरके ब्राह्मण कहलाये. उर्वशीके गर्भसे वशीष्टजी और—चांडालीके गर्भसे पारासरजी—पैदाहुवे, और तपके जोरसे ब्राह्मण कहलाये. इसप्रमाणसे जाहिरहुवाकि—ब्राह्मणहोना—नहोना—जातिके ताल्लुक नही. अगर कहा जाय कि—पंडितकानाम—ब्राह्मण है—तो—यह कहना भी ठीक नही. सबब कि—क्षत्रीय—वैश्य—और—शूद्रभी—विद्यापढनेसे पंडित होसकते है. विद्या—जोकोइ—पढे उसीकी है, कुछ ब्राह्मणोंने उसका ठैका नही लिया इसलिये कहसकते है कि—ब्राह्मणपना—शरीरजातिवगेराके ताल्लुक नही. किंतु व्रतके ताल्लुक है. महाभारतमें बयान है कि—

( अनुष्टुप्वृत्तः. )

न योनि नापि संस्कारो-न श्रुतं नापि संततिः

कारणानि द्विजत्वस्य-व्रतमेव तु कारणं १

ब्राह्मस्वभावः कल्याणि !-ममः सर्वत्र दृश्यते

निर्मलं सकलं ब्रह्म-यत्र तिष्ठति सद्बीजः २

एकस्मात् स्थानतो जन्म-क्रियाः षष्ठ्यादिकाःसमाः

पश्चात्तंतुत्रये क्षिप्ते-द्विजोहं इति किं मदः ३

उत्पत्ति-मंस्कार-विद्या-और-औलाद-ब्राह्मणहोनेका हेतुन-  
ही-ब्राह्मणहोनेका हेतु-व्रत-है. जिसमें निर्मलब्रह्मस्वभावहो-वही-  
ब्राह्मणहै, तीनतंतु गलमें डालदिये उससे ब्राह्मणहोनेका दावा  
नही होसकता. किसी धर्मशास्त्रमें नहीलिखाकि-मरनेवालेकेपीछे-  
उसके निमित्त-दियाहनादान-उसे पहुंचमकताहै. लेकिन ! ब्राह्म-  
णलोग उसबातकों क्यों जाहिरकरे ?-इससे तो उनकों चीजबस्त  
मीलनेकी हानि पहुंच-लेकिन ! हां ! दुनियामें सभीब्राह्मण एक  
सरखे नही है. कइ ऐसेभी है जो शास्त्रकेफरमाने मुजब चलते है-  
और मिथ्याउपदेश कभीनही देते, वैसे ब्राह्मणोंकों-अलबते !  
सज्जन समझना ठीक है,

(८४)-वैश्यपुत्रोंकों शिक्षा न्यायसे व्यापार करे, अन्यायसे  
पैदाकिइहुइ दौलत बहोन वरुततक ठहरतीनही है. झूठबोलना-या  
देवधर्मकी कसम खाना किसीसुरत अच्छानही, जिनप्रतिमाकी  
बिदूनपूजाकिये-दुकानपरजाना मनाहै, निर्ग्रंथपुनि-व्याख्यान-दे-  
तेहोतो-मुनातिवहै उनकीमभामें शास्त्रमुननेकों जाना, सबकाम  
शास्त्रमुननेकेनोचे है. जिनपूजाभी शास्त्रमुननेहोसें जानीजाबी है,

इसलिये अगर शास्त्र पहिले सुनलियाजाय और पूजन पीछे हो-  
तो-कोई हर्जकी बात नहीं. बड़ेबड़े पापारंभ-न-कर-थोड़ेमें अपना  
गुजरान चलसकताहो-तो-बहेतर है उतनेहोमें संतोष रखना, ऐसा  
देशहित-और-पापारंभकरना कोई जरूरत नहीं-जिससे अपना-  
जीव पापमें लिपटकर नरककुंडका अधिकारी बने-आठपहरमें तो-  
नघंटे-तो धर्मकाममें-जरूरलगाना चाहिये. इसकेबिना परलोकका  
रास्ता साफ-न-होसकेगा. किसीकी बुराइकरना अच्छानहीहोता.  
जिसमेंभी-राजाकी बुराइकरना बिल्कुलठीकनहीं. राजाकी अपने  
परबहोत रहेमनजरहो-तोभी-उनसेहंसवरून खोफरखना चाहिये,  
सबबकि-राजस्वीतेजवालोंको गुस्सा आतेदूर नहींहोती. होदेदा-  
रोसे हरबख्त बचकर चलना चाहिये. मांसमदिरा-रात्रीभोजन-  
और-कंदमूल-खाना बड़ेपापोंकी गिनतीमें-है, अगर औरकुछ  
न-बनसके-तो-बड़ेपापोंसे जरूर बचना मुनासिबहै.

(८५)-ओशवाल-श्रीश्रीमाल-श्रीमाल-पोरवाल-पट्टीवाल-जै-  
सवाल-खंडेलवाल-हुंबड-मोंढ-वायडा-गोलालारे-श्रावगी-पर-  
वाल-बीजावगी-मीमा-भटेरा-बगेरा-वैश्योंकेकईभेदहैं. जो जिस-  
भेदमें-हो-न्यायमार्गसे उल्टा न चले.-जींदगी थोड़ेदिनकी है.  
दौलत किसीकी थीर नहींरही. गृहस्थोंकेलिये दानपुन्यकरना नि-  
हायत उपादाकामहै. घरसे बहारनिकसना-तो-हमबख्त-पांचदस-  
रूपये-पासरखकर निकसना चाहिये. एकदो रूपयेसे-तो-कम-कभी  
रहना ठीकनहीं. तुमको अच्छेगृहस्थ समझकर किसी दिनदुखीने  
कुछ याचना किई और तुमारेपास कुछ-न-निकसा-तो  
कितनेशर्मादेहोनेकी बातहै?-राज्यका महसूल न देना चोरीकेभेद-

में दाखिल है. जो जिसचीजका व्यापार करता हो जैसे-जवाहिरात-सुन्ना-चांदी-कपड़े अनाज-रुई-अफीम-सराफी-तांबा-पीतल-कोहा-रेशम-हुंडी-घी-तैल-आटा-दाल-मीथी-सूत-दियासलाह-लौ-नमीरच-तमाखू मेंवा-मीठाई-रंगरोगन-सालदुसाले-गोटे कीनारी पघडी-दुपट्टे-कागज-छापखाना-दवाबुटी-शेयर दलाली-इतर-फुल्लेल-घडी-चश्मे-नकलीसुन्नाचांदीकेगेहने-गालीचे-पानसुपारी-चीनीरुसी-या-अंगरेजीमाल-बगेरा-जिसजिसचीजकी दुकानदारी चलतीहो उसमें-दगाबाजी-हथफेंरी-या-अदलबदलकरना-अच्छानही, इज्जतके कांकरे-और-दौलतका नाशकरनाहो-तो दगाबाजी करो. दगाबाजो बहोतदीनतक नहींचलती, कोइनकोइदिन जाहिरात जरूरआतीहै. अपनीचौरी अपनेसें-तो-छीपीही नहींरहती, दूसरे केवलज्ञानी देखतेहैं, तोसरे जब चौरीकाभेद खुलजाताहै तब दुनियाभी देखलेतीहै, इसलिये मुनासिबहैकि-चौरी दगाबाजी-न-करना.

(८६)-एक-बापबेटा-दूसरेकेखेतमेंजाकर हरहमेश चौरीकरलिया करतेथे. एकदिनकीबातहै दोनों मिलकर खेतमें चौरीकरनेकों गये. बापने चारोंतर्फ नजर फैलाकर देखा-जब-कोई-नहींदिखनेमें आया चौरीकों हाथ चलाया. लडका कहनेलगा सबतर्फतो आपने देखलिया-लेकिन!-एकतर्फतो भूलही गये. पिताने विचारा इसने किसीकों आते देखलियाहै, उसीविरुद्ध चौरीहुइ बहुत इधरउधर फैंकदिइ-और-पूछनेलगा किधर कौन आताहै?-बेटेने कहा उपरदेखना तो भूलही गये. परमेश्वर देखताहै-या-नहीं?-पिता ! बोला!-सचहै यहतो हम भूलहीगयेथे. बस ! उसदिनकी बात

है और फिरकभी चोरी नहींकिड़. इसतरह अगर हरकिसीकों  
असरहोनेलगे-तो-क्याही ! अच्छीबातहै.

(८७)-~~१७~~ (अकलके फुव्वारे.)

-सच बोलो,	-बारुदसें दूररहो,
-विद्या पढो,	-सांपकों छुओ मत,
-धर्मपर श्रद्धा रखो,	-दिलकों साफ रखो,
-पूरा तोलो,	-बकवाद मत करो,
-बढेसें अदप रखो,	-दुश्मनसें बंदोवस्त रखो,
-गातेबख्त खुलकर गाओ,	-बहेमी मतवनो,
बढेकेघर बढाअंधेरहोताहै,	-शास्त्रकी बातें यादरखो,
-नकलोफमें होशियार रहो,	-कालका भर्गोसा नही,
-सोचकर बोलो,	-बदनकों साफरखो,
-गयाबख्त फिर नही आता,	-आंखें हृदयके आइनेहै,

(८८)-सभामें जाते शर्म मतकरो, शास्त्रकहुकमपर सबकोइ

लाचार है,

दुनियामें बोली सेंकडोंतरहकी है लेकिन!-चतराइबिदून एक  
भी कामकी नही,

दौलतमंदहोकर खानेपोनेमें कौताइकरे बडानालाइक है,  
किमीयागिरी आजकल बिदाहोगइ इसतीतलाशकरना सो-  
रहीआदमीयोंका कामहै.

दूसरेके मकानपर जाओ-तो-इतलादेकर जायाकरो, क्या  
जाने घरवाले किसतरहवेठेहो ?

जितनीताकत उतनाही बौजाउठाना चाहिये,

जो शस्त्र-लुगाइकेकहनेमें चलताहै, उसकी इज्जत नहींबढती.  
दिलकीबात दोस्तकोंभी एकदम मतकहो, नमालूम! किसव-  
स्त दुश्मन होजाय,

एकदिन ऐसाभी आयगा जिममें दोस्तभी दुश्मन बनजायगें,  
आजका काम कलपर मतढालो एकदमकाभी भरोसा नही,  
इशारेसें न समझे-वो-आदमीनही गधा है,  
जोशस्त्र बहोतमौलकीचीज थोडेमेंदेताहै-जाननाचाहियेचौ-  
रीका मालहै,

चलतीगाडीसें कुदना किसीसुरतअच्छा नही, अगर कुदना-  
ही है तो फुरती करो,

आदमी जैसा दुश्मनसें डरताहै अगर पापसेंडरे तो क्याही!  
उमदा बात है!

(८९)-तकलीफदार कपडे-और-जूते-पहेनना समझदारोंका  
काम नही.

रजस्वलाऔरतसें भोगकरना रोगकों बुलानाहै,  
मुख-बालक-और-बीमार-गालीदेबैठे उसपर खवाल मतकरो,  
दौलतमीलनेपर बहोतआदमी अकलसें अंधे होजाते है,  
दूसरेकों नंगाकरना-या-आप-नंगेहोना बडीबेइज्जती है,  
कुच्छरूपयेपैसें हरवस्त पासरखनाचाहिये-नजाने किसवस्त  
कामपडजाय,

दोआदमी बातकरतेहो बिनाबुलाये जानानही,  
कोइशस्त्र-चीठो-या-खत-लिखरहाहो बिदूनहूकम उसेमतदेखो,  
पैसेकेलालचसें इज्जत हलकी मतकरो,

बेवकूफोंके सामने जीदकरना ठीकनहीं, अगरचे अपनीबात सच्चीभी-हो,-

किसीके धमकानेसें दिलकों रंजमें डालना कोईजरतनहीं,  
अगर कोईशरूख तुम्हारीबहोतहीखुशामद करे-तो-समझलो !

कुच्छमतलबहै,

कदरदान अगरचे गरीबहै-तोभी-उसकेपास जानाचाहिये,  
(९०)-जैसे लडाइकेवरत सुन्नेसें-लोहा-ज्यादेकामदेताहै अ-  
कलभी वरतपर दौलतसें बढकर कामदेतो है,

गुनेहगारकों माफी जब देना अगर-वो-अपनीभूल कबूलकरे,  
स्त्रीकारुपदेखकर जिसपुरुषकों-और-पुरुषकारुपदेखकर जि-  
सस्त्रीकों विकारनहींआया उसकी तारीफ है,

भोगकेवरत योगयाद आवे उसे पक्का सम्यक्तवान् समझना,  
जिसकों बुरीबात समझकर छोडनाचाहो-और-छूटेनहीं तो  
उसमें-पापकाउदय-जानना,

हरहमेश दातूनकरना-और-हाथपांवधोकर रसोइजिमना-च-  
तरआदमीका कामहै,

मित्रकों-या-अपनेप्यारेकों-पहिनेमें एकदफे चीठीलिखना  
फायदेमंद होताहै,

धर्मादेके पैसैकों जलदी लगादेनाचाहिये, नालाइकबेटे पी-  
छेसें लगायगें नहीं,

घरमें गहेराधनहै फिर क्या ! चाहते हो ?-इतनेपरभी कंजूस-  
बननाहै-तो-तुमारे जैसा कोई मूर्ख नहीं,

मीठाभोजन-और-मीठीबोली सबकों प्यारी लगती है,

जोशुरूश अपनेको नहीचाहता उसकी मुलाकातको जाना  
फजूल है,

धर्मकी बराबर कोई करामात नही,  
छोभीआदमीको बेवकूफ कहना सच्च है,  
हिंम्यववान् आदमी हजारोंमें एकहोता है,  
जहां बेमतलब अपना मानभंगहोताहो वहां रहना अच्छानही,  
बाहियातखर्च करनाभी मूर्खोंका कामहै,  
(९१.)—जहां खुशो वहां नाराजीभी आयगी,

आगामी-संचित-और-प्रारब्ध-यहतीनाहिस्से कर्महोके सम-  
झना चाहिये,

भविष्यकालमें जो जो कर्म बांधोंगे उसकानाम आगामी-पू-  
र्वकालमें बंधेहुवेकानाम-संचित-और-वर्त्तमानमें मोहममत्वकर रहे  
हो-इसकानाम प्रारब्धकर्म है,

उत्तम-मध्यम-और-अधम-येतीनदर्जे हरवस्तुपर कायम हो  
सकते है,

दुखीको सताना कोई बहादूरी नही,

जिसको अपनीइज्जतबढाना मंजूरहो-नेकचलन-चले और  
हाथका उदार रहे,

जिसशरीरकी इतनीहिफाजत किइजातीहै-बोभी-अपनानही  
(तो-दूसरेको अपना कैसे समझे, ?

नास्तिकलोग कहते है पृथ्वी-जल-वायु-अग्नि-और-आका-  
शके योगसे जीव पैदा होताहै, हससे न्यारा परलोकसे जीव नही  
आता, लेकिन! यहकहना झूठहै,



सबबकि-पांचतत्त्वमें-जोजोगुणहै चैतन्यगुण किसीमें नहीं,  
यह सीधोसडक है कि-जोगुण जिसमें नहीं-बो-संयोगसेंभी नहीं  
पैदाहोता,

अपनेवस्तुकी नियमावलीबांधनेसें सबकाम फुरतीसें बन  
सकते है,

हाथमें लकडी रखनसें हरतरह अपना बचाव होसकताहै,  
पुरुषार्थ कमजोर होजानेसें कइरोग पैदाहोते है मुनासिब है  
इसे कमहोने न देना,

प्रेमकेबंधनकों हजारहाथी-और-हजारघोडेभी-नहीं तोडसकते,  
उल्टेअर्थकरनेवालेकों शास्त्र-शस्त्ररूपहै,

(९२)-जोलोग दुनियामेंभी नहोसमातेथे, तीनहाथजमीनमें  
समागये-बडे आश्चर्यकी बात है,

कामविकारसें फतेहपाना बडेहो भाग्यसें मिलता है,

रुपसें विद्याका दर्जा बडाहै,

दुश्मनकाभी दुखदेखकर हसना नहीचाहिये,

जिसका मालिक अंधा उसकी फौज कुवामें,

एकविद्याभी जिसको अच्छीतरहआतीहो-दूसरी-उसे जल-  
दी आसकेगो,

धर्मका मूल श्रद्धा-और-पापका मूल कदाग्रह,

जिसकेपास पैसानही उसको दुखीकहनाठीकहै-लेकिन!-

जिसकेपासहै और खर्चे नही उसको अबलदर्जेका दुखी कह-  
ना चाहिये.

जिसकाममें इज्जत न बडे और धर्ममेंधकापहुंचे-बो-कामकर-

ना मुनासिब नही,

जोशुल्का अपनेसें प्रीतिरखे उससें टंडे रहना अच्छानही, मू-  
खोंका कामहै,

रातको स्नान और भोजनकरना मनाहै लेकिन!-कामभोग  
करके स्नानकरना मना नहो,

जोलोग नंगेहोकर स्नान-और-स्नानकरते हैं-वे-आर्यपुत्र  
नही है,

जैसे-दूधमें घी-तिलमें तेल-और-काष्ठमें अग्निरही है वैसे श-  
रीरमें आत्मा रहाहै,

आत्माको प्रत्यक्षपने संसारीजीव नही देखसकते, सर्वज्ञ दे-  
खसकते हैं,

जबतक रोंमरोंममें धर्म नही फरसा तबतक मुक्ति न होगी,  
अगर दुनिया इश्वरने बनाइहै-तो-एकदुखी-एकमुखी क्यों?  
क्या-वो-किसीपरनाराजभी रहताहै?-अगर मुखदुखकाहोना त-  
कदीरसें है-तो-फिरउसनामर्दन क्या किया?

मन-मोती-और-काच-ढूँटेपीछे मीलतेनही,  
मन-तो-फिरभी मीलसकताहै अगर साफसाफ बातें हों,  
एकअवगुणको देखकर बहोतगुणवान्को छोडनानहीचाहिये,  
अग्निमें धुआंनिकलनेका अवगुण है लेकिन!-छोडनेसें काम  
नही चलता,

देवमंदिरका पैसा जिसकेघरमें रहजायगा उसघरका नाश  
होजायगा,

(९३)-नयातीर्थ-और-नयेसाधुओंको-जरूरदेखने चाहिये,

लेकिन! कूतीर्थ-और-धर्मभ्रष्टसाधुकों देखना कोई जरूरतनहीं,  
अगर छायापुरुषदेखनेका ऐलम सीखेहो-तो-उसकादेखना  
भी बहोतठीकहै,

अधर्मीपुरुषकों छायापुरुषका ऐलम तकलीफ देताहै,  
किसीकामकेलिये स्थानसे चलना तो-जो-स्वरचलताहो-उ-  
सीतर्फकेपांवकों पहिले उठाकर चलना-जरूरफतेहहोगी. कर्मयोग  
फतेह न-हुइ-नुकसान-तो-कभी नहोगा,

जिसशहरमें बहोतकंजुस-लोभी-और-क्रोधीआदमी बसतेहों  
वहां-धर्मकी तेजीहोना मुश्किलहै,

साधुलोगोंको वैसे शहरमें-न-जानाचाहिये-जहां बाहियातझ-  
गडे आनपडतेहो,

जहां दुश्मनोंका जोरहो-वहां-अकेलेजाना मुनासिबहै,  
सत्यधर्मके उपदेशकोंको जरूरसाहाय्यकरना चाहिये,  
अपने अवगुण आपहोसें हठते है दूसरेके हठाये नहींहठते,  
समुंदर अपनीलहेरआपही संकोचकरसकताहै. दूसरेकी ताकतनही.

औरतकी ताबेदारी और बेटोंको कुलधनमाल सोंपदेना अ-  
खीर पस्ताना होगा,

भाटलोगोंकी तारीफसें फुलजाय-वह-बिनापूंछका बैल है,

(९४)-बिदूनरोग दवाखाना क्या जरूरत!

नोकरोंसें डरे-वो-मालिक नहीं ताबेदारहै,

हांसीखुशीमें गुस्साकरे-वो-मूर्ख है,

माधुहोकर भोगविलासका सुख चाहे-बड़ीभूलहै,

बडेबडे ज्ञानीहोगये लेकिन!-अधर्म-किसीसें नहीं हठा-इस

लिये अधर्मभी बड़ा है ऐसा समझना बेवकुर्फोका है, क्या! चां-  
डालकों कोइ स्पर्श नहींकरसकता इससे वह बड़ाहोसकताहै?-

काम ऐसाकरना चाहिये जिससे सज्जनलोग स्वतःअपनेपर ,  
भक्तिमान् बने रहे,

(९५)-जर्मनीवालोंके हिसाबसे-दुनियामें-एकअब्ज-(७०)  
करोड मनुष्यकी आबादी है,

इस्वीसन (३५०) में-पाणिनि नामके पंडितने अष्टाध्यायी  
व्याकरण बनाया,

इस्वीसन (७१०) में-शंकराचार्य जन्मे-और-बत्तीसवर्षकी  
उमरमें मरगये, कितनेक कहते है शंकराचार्यने जैनीयोंको इरायें  
और देशनिकाला दिलाया था-लेकिन!-यह बात जूठहै, शंकरा-  
चार्यका वादानुवाद बौधसगोंसेहुवाहै, जैन-और-बौद्ध-एकनही  
न्यारेन्यारे है, जोलोग एकसमझते है बड़ीभूल करते है.

इस्वीसन (१०००)में-मुसलमानलोग-भारतकेमध्यखंडमें आये  
और-उन्होंने हिंदुस्थाननाम रखा, पहिले भारतवर्ष नामथा,

इस्वीसन (५७) में-विक्रमसंवत्-और-(७८) में-शालिवाहन-  
शक-जारीहुवा;

(९६)-उससभामें बिल्कुल नबोलनाचाहिये जहांअपनीधा-  
तकी कदर नहोतीहो,

बैमौके बातनिकालना मूर्खोंका कामहै,

अच्छेलोग तुमको वरसोंसे समझतेरहे लेकिन! तुमने अप-  
नीबकवाद नहीछोडी,

तुम्हाराभगज कुत्तेकेभगज जैसाहो तो बेशक!-बकवाद करो;

लेकिन! याद रखो । भैंसके सामने भैरवीरागनीमाना कोई फायदानही,  
 जहां सूखोंका समाजमिलाहो-वहां-नसीयत-क्यों देना ?  
 शरीर थोड़ेदिनकाहै-दुखपड़े दुखसहो-सुखमें घमंड मतलाओ,  
 मनकों धीरजवाला बनाओगें बड़ा फायदा होगा,  
 वैश्याके साथ व्यापारकरना अच्छा नहीं,  
 कामीपुरुषके चित्तमें धीरजनहीहोती,  
 विरहिन लुगाइका मन उसके बशमें नहीं रहता,  
 तामसीआदमीके दिलमें छलकपट ठहर नहींसकता.

( ९७ )-सुनार-दरजी-लुहार-सुतार-नाइ-कुंभार-धोबी-क-  
 सारे-नीलगर-छोपे-घाँची-कलाल-भील-चारण-भाट-सीकलीग-  
 र-पींजारे-भटभुंजे-गुजर-अहीर-माली-गंधी-रंगरेज-चूडागीर-नट  
 जुलाहे-मोंची-और-चमार-वगेरा कोई हो अपनेअपने ऐलममें द-  
 गलबाजीकरे उसकों अकलमंद नहीं समझना, अकलमंद-वो-है-  
 जो-नैकीसें चले. जोलोग दगाबाजीकरके दौलत मिलाना चाहते है  
 वे-कभीनकभी पकड़ेजायगें, छलकपट जाहिरहोगा इतनेशर्माँदे  
 होनापड़ेगा-जो-उनका दिलही जानेगा.

( ९८ )-ज्योतिष्-चिकित्सा-स्वरोदयज्ञान-अष्टांगनिमित्त-  
 और-मंत्रविद्या जाननेवाले सबजगह-सन्मानपाते है. वैद्यलोगोंकों  
 मुनासिबहैकि-बीमारआदमीसें औषधकेदाम पहिलेसे लेलियाकरे  
 बीमारी मीटेबाद कोई नहीं पूछेगा, व्याकरण-काव्य-कोश-न्याय  
 और-अलंकारका पढाहुवा-सबशास्त्रोंका-अर्थ करसकताहै, शास्त्र  
 पढकर सभाकों रंजनकरना-बहोतही तेजबुद्धिका कामहै, मूर्खलोग  
 धर्मकों नहींपहेचान सकते, बडेलोगोंने इसीलिये कहाहैकि-दाना

दुश्मन अच्छा-लेकिन ! मूर्खमित्र अच्छानही.

(९९)-मूर्खशब्द यद्यपि विद्याहीनोंकाही वाचकहै लेकिन !-  
न-मालूम-इनअढाईअक्षरोंमें क्या !-ताकतरहीहैकि-इसकेसुननेसें  
जगतभरके मनुष्य गभराजाते है, कभीकभी यहशब्द पंडितोंकीस-  
भामें लडाइभी करादेताहै, यह शब्द जितना उसके वाच्यार्थकों  
दुखदायी नहीहोता पंडितोंको होपडताहै, जरा किसी पंडितकों-  
मूर्ख-ऐसाकहदोकि-तुर्त्त-लडाइ होजातोहै, इसलिये कहसकते है  
कि-मूर्खशब्दमें एकतरहकी ऐसीबडीभारीताकत रहीहुइ है जो दू-  
सरेमें होना मुश्किलहै, एकरास्तेहोकर तीनमूर्ख कहींकोजारहेथे  
थोडीदूरपर उन्होंको एकउंचा मीनारा दिखाइदिया, जबपासगये  
और उसके बननेका विचारकरनेलगे. एकमूर्खनेकहा-देखो ! अगा-  
डीकेआदमी कितनेलंबेहोतेथे जो ऐसी ऐसी ऊंचीमीनारे बनाकर  
तयारकरदेतेथे, दूसरेनेकहा तूं ! बडामूर्ख है !-कुच्छभी नही सम-  
झता, अगाडीकेआदमी इतनेलंबे नहीहोतेथे, बल्किन् !-पहिलेदि-  
नोंमें ऐसे ऐसे लंबेमीनारे जमीनपर बनाकर खडाकरादिया करदेते  
थे. तीसरेनेकहा तुमदोंनो मूर्खहो-तुमने इसकाभेद नहीपाया-अ-  
सलमें यह मीनारा नहीहै, किंतु कुवा है-जो उल्टाकरके खडा  
करदियागयाहै, अगर इसको सुल्टाकरदियाजाय तो बनाबनाया  
कुवाही है,

(१००)-(औरभी-मूर्खोंके दृष्टांत सुनिये-)-एकरौजकीबातहै  
एकआदमीकी भैंष मरगइ-जब उसको बहोतदिलगीरी आइ और  
रोनेलगा-पडोंसीने आनकर पुछाकि-भैया ! क्यों रोतेहो ?-वो-  
बोला !-मेरी भैंष मरगइ जो सारे कुणबेको पालतीथी-पडोंसी क-

हनेलगा-धीरजधरो-हमे तुमे कालेरंगकी वस्तुसें कायदा नही-मैरे भी आज काली हंडीया-फूटमइहै. इसबातकों सुनकर सबलोग-ह-सनेलमे, मूखोंकी लीला अपरंपारहै, (दूसरा दृष्टांत.) एकसमय-कीवातहै कचहरीमें जजसाहबके सामने एकशख्सका. मुकदमाचलताथा, जजने पुछा! तुम व्याहेहो-या-नही? वो-कहताहै हजूर! मै तो नही व्याहा, मैरी औरत व्याहीहुइहै, जजने कह्य कया! अ-दालतसेंभी मश्करी करते हो?-वहकहताहै हजूर! मैरी क्यामयाह है?-जो मश्करी करूं? असलबाततो यहहैकि-मैरी औरतने मुमे छोडकर दूसरेसें पुनर्लग्नकर लियाहै. इसबयानकों सुनकर सब लोग हसने लगे.

(१०१)-बेटेकी-और-चेलेकी-तारीफ उसकेखबमें करमा अच्छानही अलबते! औरतकी तारीफ उसकेखबमें करना ठीक है.-याते-बह-ज्यादे-ताबेदारी करतीरहेगी, बापकों-और-गुरुकों मुनासिबहै कि-बेटे-और-चेलेकों अपनासंपूर्ण ऐलम सीखला दे, हां!-अगर नालाइकहो कोइजरुरतनही, लाइकवरोहीकों ऐलम सीखलाया जाताहै. दुर्जनकों विद्यापढाना और सांपकों पालना एकसरखाहै, मुनासिबहै योग्यकों बिद्या देना,-किसी लेखककों या-पबंधकों लिखने बैठना तो एकचित्तहोकर बैठना चाहिये, ध्यानकों इधरउधर डोलानेसें अच्छालेख नही लिखा जाता. चीं-ठीलिखनेमेंभी बढीचतराइ चाहिये. बिनाविचारे कुच्छलिखदिया जाय तो पीछेसें शर्पीदा होनापडताहै, एकमहाक्य!-अपनी औरतकों चींठीलिखने बैठे. लिखते लिखते उपरसें चींड़ियाजे काम-जपर बीठ करदिइ, आपने उसीतर्फ ध्यान लगादिना-और गु-

स्तेमें आनकर पत्रमेंभी लिखादियाकि-क्या कर! दूरहै-अगर पा-  
सहोती तो टंगपकड़के सीधी करता-चीठी जब स्त्रीकों पहुंची-  
बचकर बहोत नाराज हुइ-और जबपतिकेपास आइ ओलंभा दि-  
या-आपने चीठीमें क्यालिखा था,/-महाशय! शमींदिहुवे-और-  
कइनेलमे मेराध्यान उसवरुत चीँडियामें था.

(१०२)-जिसकों वरुतपरजवाबदेना नहीआता-उसकों मू-  
खोंकीपंक्तिमें गिननाचाहिये. हाजिरजवाब आदमी बाजेवरुत बड़े  
मौकेकों साधलेताहै, (एकवरुतकी बातहै)-बादशाहने हुकमदिया  
कि-रातकों कोइशरूश शहरमें रास्ता न चले. तमामलोंगोंने बा-  
दशाहके हुकमसें मकानकेबहार पग नही रखा. लेकिन!-एकयु-  
वान-लडका-सस्ते चलता-सिपाइयोंकों मिला. सिपाइने ठौका  
कि-क्यौरे!-तेने बादशाही हुकम नही सुना!-लडकेने कहा, बे-  
शक! सुनाहै, सिपाइ बोला!-फिर हुकम अदुली क्यौ! किइ!-  
लडकेनेकहा-तुजेमालूमभी है? मैं! किसका लडका हूं!-याद रख!  
मैं-उसका लडका हूँकि-जिसके सामने तमामबादशाह-सरदार-  
और-शाहजादे-गर्दन झूकातेहै. सिपाइकों मालूमहुवाकि-खलिफ-  
हजाम-नाउका-लडका था. हजामकी औलद बडीसैतान होतीहै.  
यहां उसके हाजिरजवाबकी तारीफ लीइयहै.

(१०३)-हरइमेश खुशमीअजरहनेकी आदतढालना बुद्धि-  
मानुशखुशोंकामकामहै, हरबातपर बहोत फिकरकरना कोइजरुब  
नही, जैसा जिसकाभाग्य होगा अस्तीरमें वैसाहीबनाव बनेया.  
बाजेआदमी ऐसे बहेमीहोतेहैंकि-भूत-ढाकिन-या-जादूकेडरखों-  
फमेंही दिनराब दबेरहतेहै. किसीरौज-पेंस-या-गौने-दूध-नही



दिया तो बहेमलाते हैकि-नमालूप-इसपर किसीने जादू किया होगा, लेकिन! यह बात अच्छी नहीं. किसीका मुंह-टैड़ा-बांका-होजाय तो-कहदेते है किसी देवताका इसपर कोपहुवा है, लेकिन! यह नहीं सौचतेकि-इसको रोग क्या है?-ज्ञानीयोंने बारबार कहरखा हैकि-जबतक जिसके भाग्य अच्छे है-कोई-रोग-या-तकलीफ नहीं होसक्ती,-रोगी-औषधमें अच्छा न हो-तो-उसमें वैद्यका-या-औषधका-दोषनिकालना कोई जरूरत नहीं. वैद्यलोग इलाज करनेके अधिकारी है आयुष्यके अधिकारी नहीं. एकतरहकी गर्भके रोग-कों मूर्खलोगोंने शीतलाकारोग कहरखा है लेकिन!-बड़ीभूल है कि रोगको-देवीका कोपसमझना. शीतलादेवीका पाखंड अकसर और तोंहीसे चला है, आजकल जमाना ऐसा बर्त रहा हैकि-जिसमें औरतोंका कहना मंजूर रखनेवाले ज्यादा-और-उनको अपने कहनेमें चलानेवाले थोड़े हैं. शीतलादेवीके नामसे मानता करना-सप्तमी-के रोज बासी भोजन जिमना-और-शीतलादेवीको-औलाद बचानेवाली समझना बड़ीभूल है, असलमें शीतलादेवी-कोई बस्तु नहीं औरतोंने अपनी मूर्खतामें एककल्पित बात जाहिर कर रखी है. समझदार औरत कभी इसमें सामिल नहीं होती.

(१०४)-सुन्ना-चांदी-मुंगा-हींगलु-पारा-हरताल-लोहा-कथीर-तांबा-पीतल-सीसा-मीटी-पथर-सुरमा-नमक-अबरख-हीरा पंभा-मानक-नीलम-वगेरा पृथ्वीकायके भेदमें है, मतलब कि-इनमें पृथ्वी कायके जीव पहिले उत्पन्न होचूके है. हथियार लगनेसे जीव मरगये और कलेवर रह गया. कुवा-नदी-समंदर-कुंड-वगेरा के जितने पानी है सब अपकायके भेदमें जानना चाहिये. धनोदधि-

एकतरहका जलपींड है, लेकिन !-जमेहुवे घीकीतरह पृथ्वीके नीचे रहाहुवा-यहभी-अपकायकेहीभेदमें समझना चाहिये. जलकों तताकियेबाद उसमें जीव नहीरहते, ( यानी)-अग्निकेजरीये जीव मरजातेहैं, दवाबुटी-मिश्रीवगेरा मिलानेसेंभी जल-अजीव-होजा ताहै. जोलोग उश्नजल बनाकर ठंडाकिये बाद पीतेहैं उनकों फौ-डेफुनसी-वाला-कभी नही निकसता. जगहजगहकेपानी उसकों बिगाडभी नहीलाते. सबबकि-उसकाविकार अग्निकेयोगसें नास होजाता है. उश्नजलपीनेवालेकों कामविकारभी नही सताता. सब तरहकी हवा-वायुकायके भेदमें जानना चाहिये. वृक्ष लता-ब-ल्लरी-सबतरहके छोटेछोटेपेड़-बीज-अंकुरा-फल-फूल-पत्ते-और जितनी औषधिये है-सब-वनस्पतिके भेदमें-समझना चाहिये-(यानी) उनमें जीव-उत्पन्नहोना-और-सुकजानेमें उनमेंसें नास हो जाना सहीबात है.

( १०५ )-पृथ्वीमें-अगर जीव नहोते तो-पूंगे-नमक-और-पथ्थरमें-जो समानजातिके अंकुर उत्पन्नहोतेहैं-न-होनेचाहिये. होते जरूरहै इसलिये कहसकतेहो कि-पृथ्वीमें-जीवकाहोना स-हीबातहै. पानीमें जीव-न-होते तो जमीनके खोदनेमें आपहीआप बहार-न-निकलआता. और दर्दूरकीतरह निकल जरूर आताहै. इसलिये जलभी जीवमयहै ऐसाकहना झूठबात नही. अगर-अ-ग्निमें जीव-नहोते तो घी-वगेरा उसमें डालनेसे उसकी बढवारी न-होती, और हांती जरूरहै इसलिये अग्निमेंभी-जीवका होना सही है. वायुमें जीव न होते तो-बिदून मेरणाकिये-उसमें नियत तीरथीनगति नहोसकती. और होतीजरूरहै. इसलिये इसमें जीव

मांसवाभी सहोदुषा-(यानी) जीवमय पवनहै ऐसा कहना-कोई हर्ष की बात नहीं. बनास्पतिमें जीव-न-होतेतो-लाजवंशीवनेरके पैद हाथलगानेसें संकोच-न-होजाते, जलकेसंयोगसें लताचट्टरिबोंकी बढवारीहोना यहभी जीवकी पैदाशकों सबूतकरताहै. शिथिलता-न-स्त्रीलताहो ओर पदमनीस्त्री-उसे प्रोतिकेशाथ स्पर्शकरेतो स्त्री-लजायगा. अशोकवृक्ष-पदमनीस्त्रीके नैवरपहनेहुवेपांचके प्रहरसें विकासमानहोजाताहै, तोलक-और-कुरवकवृक्ष-पदमनीस्त्रीके-क-टाक्षमारने-और-आलिंगनकरनेसें विकस्वर होजाते है. कर्पिकवृक्षके नीचे पदमनी नृत्य करे तो आवादहोजाय. बगेरालक्ष्णोंसें जानाजाताहै कि-वनस्पतिमेंभी-एकइंद्रियजीवहै. एकइंद्रियजीव उ-सकों समझनाचाहिये जिसकों-जवान-नाक-आंख-और-कान-न हो, फक्तएकीलाशरीरधारीही हो.

(१०६)-अगर सवालकियाजायकि-जमीन-पानी-हवा-और वनस्पतिमें जीवहै-तो-वें-धूपकेवरुत छांवमें और छांवकेवरुत धूपमें क्यों नहीं चले आते?-(जवाब.) जीव दोतरहके-एकस्थायवर दूसरेअस्थ-जो एकइंद्रिय-यानी-केवलशरीरधारीही होते है-वें-स्थायवरजीव कहेगये, दूसरे अस्थजीव-वें-द्विंद्रिय-त्रिंद्रिय-चतुरिंद्रिय-और-पंचेंद्रिय-है. वें-धूपमेंसें तकलीफहोनेपर छांवमें-और-छांवमेंसें धूपमें चलेजाते है, अस्थजीवोंका यही भेद हैकि-वें-जास-पाकर इधरसें उधर चलेजाय-स्थायवर नहीं जाय. जंस्-कुमि-पानीमें पै-दाहोनेवाले पूरे-और-जोंक-ये-द्विंद्रियजीवोंकेभेदमें है, शरीर-और जवाब-इनकोंहोती है, कनखजूरे-खटमल-जू-चौंटी-मकोंडे-कुंभुमें और-जोंवरकेकीड़े-ये-तीनइंद्रियवाले जीवहै, शरीर-जवान-और

नाक-इनको होते है। तीखू-भवरा-भक्ती-डांस-मच्छर-तीड-पात-  
गोबे-और-मल्ला-वे-चारइंद्रियवाले जीव है, इनको-शरीर-जवा-  
न-नाक-और-आंखें होती है, सांप-मच्छली-पौर-कौवा-चीलतो-  
ता-चीला-चींड़ी-कुत्ता-मवा-मौ-बैल-घोडा-हाथी-सिंह-और-बहु-  
एक-ये-पांचइंद्रियवालेजीवहै। इनको-शरीर-जवान-नाक-आंख-  
और-कान-होते है। जीव जैसीकरनीकरतहै वैसफल पाताहै, ए-  
कजन्मसें दूसराजन्म-और-दूसरेसेतीसरा-इसतरह जबतक निरपृ-  
हृत्यकरके सबपापोसें मुक्त नहोगातबतक-वह-संसारमें अटक-  
रता रहेगा। जीव अनंतहै यानी उनकी गिनतीकरे तो पत्तनही  
थाता। एकसुखी एकदुखी-एकराजा-और-एकरंक-यहसब अपने  
अपने किये हुवे पुन्यपापका फलहै,

(१०७)-आकाशमें ग्रहण होताहै तब कइलोमकहते है चंद्र  
जब-पृथ्वी और सूर्यके बीचमें आताहै और उसवरुतजब चंद्रकी  
छाया सूर्यपर पडतीहै तब-सूर्यग्रहण होताहै। और जब पृथ्वी-  
सूर्य और चंद्रकेबीच आती है उसवरुत जब-पृथ्वीकीछाया चंद्र-  
पर पडती है चंद्रग्रहण होताहै। (जवाब.)-यह कहना मजत है,  
सबकि-यहबात तब बनसकती है जब पृथ्वीको अस्थीर यानी  
फिरतीहुइ माने। पृथ्वीका फिरना युक्तिप्रमाणसें साबीतनहीहोता  
को लोम साबीतकरते है-वे-सूडेप्रमाणसें कुतर्कद्वारा करते है, पृ-  
थ्वीकी-दैनिक-और-वार्षिक-दोतरहकी गतिमानकर कहना कि-  
अपनी धूरीपर-वह फिरती है यह बात सही नही ठहरती। क्योंकि  
वह धूरी किसके आधार है! अबलतो इसका जवाब कोई नही दे  
सकता।-और-कोई देताभी है। बोलताता है कि-वह धूरी-एक-

कल्पितरेखा-समझो-( जवाबमें ) कहनेवाले कहसकते हैं कि-जब धूरी कल्पितरेखाहै तो उसपर रहकर पृथ्वीका फिरना-कल्पित-क्यों नहीं?—बस! इत्यादि प्रमाणोंसे पृथ्वीका फिरना और उसकी छायासे चंद्रग्रहणहोना वगेरा सही नहीं होसकता. ग्रहणहोनेका सबबयहहैकि-आकाशमें-एकपर्वराहु-और-एकनित्य राहु-यहदो-विमान भ्रमण करते हैं जैसेकि-और-ग्रहोके भ्रमण करते हैं, उक्तदोनोराहुके विमान श्यामरंगके हैं-और चंद्रसूर्यके विमान तेजस्वी हैं, प्रकाशवाले विमानकी बराबरीमें जबश्यामरंगके विमान आजाय तो अलबते! उनपर श्यामताका प्रतिबिंब दिखाइदे, बस! ग्रहणहोनेका यही सबबहै दूसरा कोई नहीं, पृथ्वी स्थिर-और-चंद्रसूर्य वगेरा ज्योतिषचक्र-अस्थिर-(यानी)-आकाशमें फिरता हुआ है, पृथ्वी स्थालीके आकार गोल और इसके कनारे आकाशमें उपररहकर ज्योतिषचक्र-जैसे घाणीके चौफेर बेल फिरे-वैसे-मैरुकी चौफेर फिरताहै. जो लोग-पृथ्वीको-गेंदके आकार गोलमानकर मसालदेते हैंकि-अगर पृथ्वी गोल-न-होती तो समुद्रके जहाजकी धजा पहिले क्योंदिखती?—(जवाब.)-यह बातगलतहै, पहिलेधजाही नहीं-किंतु-जहाजही खुद एकछोटासा आकारका दिखाताहै, सबबकि-दूरकीचीज छोटी दिखना यह नेत्रोंकी ताहसीरही है, जैसे जंगलमें सीधीसड़कपर खड़ेहोकर दूरनिगाहसें देखोतो पांवोंकीजगह सड़क चौड़ी-और-दूरपरवही सड़क-सकड़ी मालूमदेतीहै, कहिये! सड़कतो वहांभी एक सरस्वी चौड़ी है फिर सकड़ी क्यों दिखी?-सौचो-तो-यंही सबबहैकि-दूरकीचीज छोटी दिखना, मैदानमें खड़ेहोकर देखनेसें यहभी मा-

लूपहोताहैकि-आकाश-पृथ्वीके चौफेर मोलाहुवा-एकतंबुकी ब-  
राबर गोलहै, अगरकहाजायकि-पृथ्वीकी गोंलाईसे आकाशभी  
गोल दिखताहै-तो-यहबात गलतहै, सबबकि-पृथ्वीकी इतनी दू-  
रमें इतनीगोंलाई नहीहोसक्ती. बल्किन्! नेत्रोंहीकी ताहसीर है  
दूरकीचीज थोड़ीदिखना, इसीसबबसे जिधर देखो! गोंलाकार  
मालूम देताहै,

(१०८)-तीर्थकर-चक्रवर्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव-और-मंड-  
लीक राजे जब मौजूदथे उसजमानमें उनकेनामसे संवत् चलता  
था. इसलिये कहसकतेहैकि-दुनियामें संवत्-कइ-चलचूके. और  
आगेको-कइचलेगें. जिसबख्तमें जो राजा प्रतापी हुवा-उसबख्त  
उसीकेनामका संवत् जारी होगया और अगला लॉप हुवा. कइ-  
लोग अपनेअपने धर्मप्रवर्तकोंके-नामको अगाड़ीरखकर संवत् च-  
लाचूके है, इनदिनोंमें चारतरहके संवत्-भारतकेमध्यखंडमें जारी  
होरहे है. अवल-विक्रमसंवत्-बाद-शालिवाहनशक-इस्वीसन-  
और-हिजरी—

(१०९)-कोइशख्स जब कैद होजाताहै-या-दौलत-चलीजा-  
तोहै उसबख्त बडाही अचंभामानकर कहताहै हाय!-ये-दिन-मै-  
रेलिये कहांसं आये!-लेकिन! अगरसोचाजाय तो-सबदिन एक-  
सरखे किसीके नहीरहते. जैसेजैसे-कर्म-किये गयेथे-वैसे-सामने  
आये-अब घबडाना क्यों!-कियेहुवेकर्मके उदयसे रिषभदेवजीने  
वर्षदिनतक भोजन नही पाया, मल्लिनाथ-स्त्री-हुवे, रामचंद्रजीको  
वनवास करना पडा, रावणकी लंका हाथसे गइ, मुभूम चक्रवर्ती  
समुंदरमें डुबा, कलावतीसतीके; दोनोंहाथ छेदन हुवे, सब अपने

अपने किये हुये-कर्मोंका फल है, खेती करो और किमडजाय-किसीके घर भोजन जियने जाओ और-परोसनेवाला कंजूस मिले-अपनेकर्मोंका दोष समझना चाहिये. अच्छाखाना खाया और उसमें मखखी-खाइगइ-सब उल्टानिकालना पड़ेगा. साधुलोग भिक्षामागनेगये-और-योग-न-मिला. किसीशख्शकों धनदौलत बहोत है-लोकिन!-अच्छी औरत-नही-मिली. अच्छी औरत मिली-तो-धनदौलत नही,-सब-अपनेअपने खोटे कर्मोंहोका फल है. ज्ञानोशख्श दिलगिरी नहीलाते अज्ञानी लाते है, बस!-समझदारोंमें और मूर्खोंमें इतनाही फर्क है,

(११०)-हरबात बोलनेसे पहिले सौच लेना चाहियेकि-जो कुछ-मैं-बोलता हूं-दूसरेलोग उसको समझ सकेंगे-या-नही!-अगर न समझसके वैसे लोग जहां मिले हो-वहां-उसबातका बयान करना कोइजरुरतनही आदमीकों हरबात बोलते पहिले सौचलेना चाहियेकि मुजे इससे क्या फायदा-और-नुकसानहोगा ?-इसवरुत कौन मेरेदुश्मन और कौन दोस्त है!-किसराजाके राज्यमें मैं बैठा हूं?-जमाना कैसा है?-लंगोंकी हवा किसतर्फ चल रही है!-और कौनकौन मेरे यहां मदतगार हैं!-इनबातोंकों सौचकर बोलनेवा कभी खता नही खाता, सबबात बुद्धिके ताल्लुक है. बुद्धिमान आदमी विकारकों प्राप्त होजायगा तो भी अपने आपको संभाल सकेगा. देशाटनकरनेसे-और-सभामें भाषणदेनेसे बुद्धि तेज होती है, देशाटन किये बिदून देशदेशकी चालचलन मालूमनहीहोती. लेकिन! इतना यादरहेकि अपनाधर्म-खोकर-देशाटनकरनाभी कोइफायदा नही. धर्म रखा उसने सबकुछ रखा, दौलत धर्मकी

दासी है, एकशरूश-दौलतके घमंडमें अंधाहोयाहुवा-बगीपर स-  
वारहोकर हवाखोरीकों जारहाथा. रास्तेमें कुछ रातपडगइथी  
और दरबजेकेपास एक अंधा उसके सामने मिला, जो एकलडके  
के कंधेपर हाथदेकर दूसरहाथमें लालटेंनलिये हुवे आरहाथा. ब-  
गीपर बैठनेवाला घनाट्यशरूश-उस-अंधेसे-पुछताहैकि-अबे ! अं-  
धे !!-तुझे-लालटेंन रखनेमें क्या ! फायदा पहुंचता है ?-अंधेने-  
जवाबदिया-लालटेंन-मैरेलिये नहीं है, लेकिन !-जो-पैसेके घमंडमें  
अंधे होरहे है उनकेलिये है. मबबकि-दौलतमंदआदमी आंखोंके  
होते हुवे भी अंधे होजाते है. वो-चूपहोकर-आगेकों चलागया.

(१११)-दोस्ती उसकेशाय रखना मुनासिबहै जो-हिम्मत-  
बहादूर-उदार-और-चतरहो. मूर्खमित्र जानका जोखमहै. अपनी  
खूबसुरतीकी तारीफ करे-या-दुनियामें मैरी बराबर कोई अकल-  
मंद नहीं ऐसा घमंडकरे-वो मूर्ख है. दुनियामें एकसेएक बढ़कर  
पडे है, जो मनुष्य मनःपरिणामसें खोटेइरादे कररहाहै ज्ञानीजनोंने  
उसकों भावहिंसक कहा, अगर इरादाकरेकि मैरे दुश्मनके घर  
आगलगे. हैजा-होजाय, उसका धन चौर लूट जाय, वो-नदीमें  
डूबमरे, वगेरा खोटाध्यानकरनेसें उसका कुछ नहीं होता, ब-  
ल्किन् ! अपनेकों पापलगता है, मनवचनसें कियाहुवापाप-अगर-  
पश्चात्तापद्वारा-आत्मशास्त्रीसे-या-गुरुशास्त्रीसे-आलोचे-नींदे-नही-  
तो अगले जन्ममें कायासें भोगना पडे, जिसका मन विरक्तहै-वो  
सदा त्यागी है, क्रोध-मान-माया-और-लोभ-इनचारोंकों जिसने  
कमकिये-उसनेधर्मका रास्ता पहिचाना ऐसाकहनेमें कोईहर्जनही,  
देवमंदिर-या-धर्मका-पैसा देनाहो-तो-जलदी देनाचाहिये. न-



मालूम-कल क्या होगा!-देवके-केशरचंदनसें तिलक नहींकरना-  
 देवकजलसें स्नान नहीं करना-और देवके भांडेवर्त्तन-सारंगोत-  
 बले-भैरो-सितार-नगारेवगेरा कोइचीज-हो-अपने काममें नहीं  
 लानाचाहिये. इससें देवकी बेअदबी होती है, मनःपरिणाम मली-  
 न होनेसें पाप लगताहै, और लौकिकमेंभी बुराइ जाहिरहोती है.  
 देवकेसामने चढाहुवा-फल-नैवेद्य-चावल-बादाम-नालियेर-सोने-  
 चांदीकेवरक-गेहनेआभूषण-अंगीयां-छत्रचवर-और-नगदरूपये  
 पैसे-जोकुच्छहों देवपंदिरेके भंडारमें रखनाचाहिये, फक्त-फल-  
 और-नैवेद्य-जोकि-रात्रीको रखेनहीजाते-वे-मालीवगेरा जो देव-  
 केलिये फुलवगेरालातेहो उनको देदेना चाहिये. सोभी एकहीको  
 नहीं, आज एकको तो-कल-दूसरेको-इसतरह जो नैकीसें काम  
 करताहो उसको देना ठीकहै, एकहीको देनेसें-वो-धमंडमें आकर  
 जहागीरदार बनजाताहै, कोइदिनपिछें कहनेलगेगा-मैंही-इसका  
 मालिक हूं-इसीलिये. धर्मशास्त्रोंमें फरमायागयाहै कि-देवपंदिरोमें  
 पूजारीलोगोंको रखो तो उनकी तनखाह मुकरर करके रखो,  
 चढापा उसको देकर बें तनखाह मत रखो.

(११२)-कंजूसआदमी सबको बुरालगताहै. उसकीतारीफ  
 कोइनहीकरता. कंजूसआदमीको धर्मपाना बहोतमुश्किलहै, जबत-  
 कउसको मिट्टीपर मोहब्बतहै धर्म प्यारा कैसे होसकताहै!-बिबून  
 धर्मके प्यारेबने मुक्तिहोना कोइधर्मशास्त्र नहींफरमाता, कंजूस-  
 और-लक्ष्मीके दोएक-मुवाल-जवाब-सुनलिजिये!—

## [ सोम-लक्ष्मीके-सुवाल-जवाब. ]

( लावनी. )

सोमलक्ष्मीदोनोंका झगडा-सुनजो पंचों! चित्तलगाय,  
 कहती लक्ष्मी सुनो! सोमसें-ना खरची ना खाइ जाय, १  
 कहता सोम तूं! सुनवें लक्ष्मी!-तुजे कभी नहीजाने दूं,  
 खाडाखोदके रखूं तुजेकों-ना खरचूं ना खाने दूं, २  
 योगीजंगम आवे मांगने-ना मुठीभर दाने दू.  
 बजारमेंमें रे! कभी पैसेकी-चीज नही लाने दूं, ३  
 ऐसी जुगतसें रखूं तुजेकों-तूंभी जाने रखी छिपाय,  
 कहती लक्ष्मी सुनो! सोमसें-ना खरची ना खाइ जाय, ४  
 कहती लक्ष्मी सुनवें! सोम तूं-है मूरख पापी नादान,  
 परपुदगलका मोह त्याग दे-करले निज आत्म पहिचान, ५  
 कहता सोम तूं सुनवे! लक्ष्मी-महापापिनी हत्यारी,  
 दौलतखातर वहेनने मारी-भाइपर कटहारी, ६  
 भाइभाइमें शिशकटावे-बेटा बापसें लडता री!,  
 तेरे कारने विचारे!-कइहुवे दुर्गतचारी, ७  
 तूं! पापी चंडाल सोम-तेरेसें कलु नही धर्मदेवाय,  
 कहती लक्ष्मी सुनो सोमसें-ना खरची ना खाइ जाय, ८

(११३)-बचनाचाहिये कंजूसोंकी दोस्तीसें-दुर्जनकी संगतसें  
 कुपढके व्याख्यानसें-वैश्याओंकी कीतानसें-बारूदकी कोठीसें-जु-  
 आरीओंकी मुठीसें अजीर्णरोगसें-और-बचनाचाहिये बदचलन  
 औरतके नखरोंसें,-जो शरूस फक्तजबान जोरीही करना जानते

है और-रूपथापैसाहोतेहुवेभी-खरचनहीकरते-वै-कभीनकभी-वैइ-ज्जतीका फल उठायगें. गृहस्थोंको चाहियेकि-वस्तुपर-धनखरच नेमें कंजुसपना नकरे, साधुओंको चाहिये कि-धर्मशास्त्रका पठन-करे याते कोइउसं धर्मचर्चामें लाजवाब न करसके, अखबारवाले हमेशा लेखनीकीलडाइलडते है, लेकिन!-हां! तलवारोंकीलडाइसं लेखनीकीलडाइ-ज्यादेमुश्किलहै इसमें कोइशक नही. जो सभा-जिसकामकेलिये-उठीथी-वह-काम-न-करसकी तो उसको बिट्टि-योंकी बरात समझनाचाहिये. अखबारोंको पढनेवाले-बहोतकुच्छ अकलहोशियारी पासकते है इसलिये, सबमहाशयोंको मुनासिबहै कि-अखबार रोजमरें-पढा-करे.

(११४)-आजकल भारतकेमध्यगंडकी खेतीकाव्यापार-और देशीचीजोंका-आदर इसलिये घटगयाकि-देशीचीजोंपर उनकी अरुचि-और-बिंदशीवस्तुओंपर रुचि बढती गई, यद्यपि कमदा-मोंकी चटकीलीचीज-स्वदेशकीबढिया और पापेदारचीजोंके आगे कुच्छभी ताकतवर नहीहै, लेकिन! इसतर्फ उनका ध्यानही-नही-ठहेरता इसका क्या! कहाजाय,!! पारिसशहरमें-दुपहिया-तीनपहिया-पैरगडीपर-बैठनेका बढारिवाज है, वियोसनामके मै-दानमें-इतबारकेरौज तीसतीसहजार पैरगडीयां देखीजाती है. इनमेंबहोतसी गाडियां स्त्रियोंहीकी-और-थोडी-मर्दोंकी सबबकि-पुरुषोंमें-स्त्रियोंको-वहां-हरबातका ज्यादाशोक है, कइदेशोंमें लोग, कुत्तोंको पालकर हरवस्तुपामरखते है लेकिन! ज्ञानीजनोंने-जानवरोंको हरवस्तु पासरखना अच्छानही फरमाया. नमालूम कि-सबस्तु बैइज्जती-करवैठे?-एकसभ्यबीबीको-कुत्तापालनेका-बहोत

ही शौक था. हरवख्त उसकों प्यार करतीथी, लेकिन!—एकवख्त बेंसमझकुत्तेने उसकेपुंहपर ऐसादांतमाराकि—उसविचारीकों दवा-खानेजाना पडा. यद्यपि पशुओंमें कुत्ता बहोतहीचतर-परिश्रमी-और-स्वामीभक्त-होताहै, मालिकका खोंफ रखना, सिपाहीके बतौर घरोंमें पहरा देना—जो मिले उसीकों सबररखके भोजनकरना, अपनेमालिककी हमेशा तर्फदारीमें—रहना—और—हमेशा—चौ-रोसें—मालिककों—बचाना वगैरा कइगुण—कुत्तेमें—मौजूदहै लोकेन!—अखीरमें जानवर जानवरही है, इसका बहोतसंगरखना फायदेमंद नहीं.

(११५)—बारहआदमीकाबल एकबैलमेंहोताहै, दसबैलोंकाबल एकघोडेमेंहोताहै,—और—बारहघांटोंका बल एकभेंसेमें होताहै. पांचसोभेंसाकाबल एकहाथीमें—पांचसोहाथीकाबल एकसिंहमें—दोसें—सिंहकाबल एकअष्टापद जानवरमें दोसेंअष्टापदोंकाबल एकबलदेवमें—दोबलदेवोंकाबल एकवायुदेवमें—नववासुदेवोंकाबल एकचक्रवर्त्तीमें दशलाखचक्रवर्त्तीका बल एकदेवतामें—एककरोडदेवताओंकाबल एकइंद्रमें—और—तीनकालके इंद्रोंकाबल एकअरिहंतमें होताहै, आजकल एसेबलवानपुरुष नहीरहे, कोइशख्श घमंडकरेतो उसका घमंड ब्रूठाहै, आदमीओंमें—और—जानवरोंमें—जोजो—ताकत पहिले जमानेमेंथी अबनहीरही, पहिलेकालकेराजे ऐसे बलवानथे—जो—रै-षत बदलजायतो अकेले उसकों बशमें लासकतेथे, इसवख्तकेराजे अगर फौज बदलजाय कुच्छनही करसकते, ताकतभी एकबहोत बडीचीजहै, कइ पहेलवान ऐसेभीमौजूदहै जो जमानादेखते उनकां दूसरेलोगोंसे बलवानकहना ठीकहै, लेकिन? वैसेनहीरहे जो पहिले कालमें थे.

(११६)—सातव्यसनोंमें जुआव्यसन सबकासिरदार है, जिसको जाइअममें जाना हो जुआकों खेलें। जुआरीआदमी जहां मिलते हैं आपसमें कहते हैं खेलो भाइ! जुआ, जुआसें भाग्यकी परीक्षा होती है, आज तो दिवाली है हम एकरात जुआ खेलकर वर्षभरके भाग्यकी परीक्षा न करे!—अमृतमें मीठा जुआ, जुएमें मीठा संसारमें कौन है!—दुनिया भूलमें पड़ी है जो जुआ नहीं खेलती। बेंमौके दूधकी मलाईभी फायदा नहीं पहुंचाती। लेकिन! जुआ बेंमौ केभी फायदा पहुंचता है, किसीवस्तुमें जुआ बेंचैनी नहीं देता, हम-तो-राज्य-खजाना-औरत-और-बेटाबेटी-तिलांजलि कर देवे, लेकिन! जुएकों न छोड़े। साबासीदेना चाँहये पांडवोंकी छातीकों-जिनोंने अपनीऔतरकोंभी धरदिइ, इससें ज्यादा और क्या होगा! हमारेपास हारनेजितनेकों क्या रखा है!—लेकिन!—तोभी—हम जुआ-तो जरूर खेलेंगे। जुएबाजोंकी लीला अपार है, कहां तक समझावे! अगर जुआही उमदा होता तो सारी दुनिया जुआही खेलकरती, लेकिन! सबजहान मूर्खनहीं है, मूर्ख-वैही-है-जो-जुआ खेलते हैं, जुआखेलनेसें पांडवोंने जो जो तकलीफ पाई उनको-न-सौचकर द्रौपदी हारजानेकी बहादुरीपर जिनको साबासीदेना मंजूर है उनको कौन समझासकता है!—जिनको नीतिपर लातमारकर चौरीयारीको मौललेना हो-या जिनको बेंइज्जतीका तूकमाहासिल करना हो-जुआको-खेले, नलराजा जुआके खेलसेंही राज्य हा-र गया था।

(११७)—(स्त्री-शिक्षा,)—(१)पन्ननी (२)चित्रनी (३)हस्तनी और—(४)शंखनी—ये चार भेद जहान भरकी स्त्रीयोंपर दाखिल हो स-

कते हैं, पदमनीस्त्रीकी बोली मीठी होती है, आंखोंमें शर्म-मुख चंद्रमाकीतरह गोल-नाक तोतेकाचंचसमान खूबसुरत-दांत अनारकी कली-केश पतले-शरीर चंपेकेरंगकीतरह, चमकीला-कमरपतली-नाभी बिचमेंसे उंडी-हृदय खूबसुरत-शरीरकी चमड़ी मुलाइम अंगुलीलंबी-नख लाल-निलाड पांचअंगुल उंचा-अर्द्धचंद्रमाके आकार-होठ लाल-और-पतले-पसीनेमें चंदनकी तरह खुशबू आवे-हंसनीकीतरह अच्छीचाल-नींद थोड़ी-काम थोड़ा-घमंड बिल्कुलनहीं-इतरफुलेल बहोत चाहे. पदमनी स्त्रीकेरजमें फुलोकीतरह खुशबू आवे-रातको पदमनीके शरीरकी शलक ऐसी दिखाइदे जैसी बीजलीकी चमक हो-शींगारपहेनना बहोतरुचे-गहने अच्छे लगे-स्वभावसे बड़ीदलेरहो-रुपयेपैसेको कंकरकीतरहसमझे-अवाजकरके कभीहसेनहीं-हसे तो थोड़ासा हसे-पदमनीके औढनेमेंभी खुशबू महेकती रहे-धोकर सुकावे तो खुशबूकेमारे भवरें उसपर आनबैठे-पदमनीका खजाना तर बना रहे-देवदर्शन-और-तीर्थयात्रामें खुशरहे-धर्मपर श्रद्धा अटल होय-साधुलोग बहोतप्यारे लगे धर्मस्नेही पुरुषोंको साहायदेतीरहे-शास्त्रमुनना और पुस्तकपंनेबाचना पदमनी बहोत चाहे-धर्मकेकाममें खर्चकरके पुरुषोंकोभी मातकरडाले-पदमनीस्त्रीको धर्मकीपुतली कहदो कोईहर्जकीबातनहीं पतिकेदिलको कभी नाराज नकरे दासदासीसें लड़ाई न लड़े-बचन ऐसाबोले जो सबलोग खुशहोजाय-बायें अंगपर उसके अच्छे लक्षण मौजूद रहे. पदमनीस्त्रीके स्तन सुंदर-पोनि लक्षणवाली-और-आंखें-कमलकीतरह रसीली-होती है,-जिसके अच्छे भाग्य हो-पदमनीस्त्री-मिले,-पतिसें जुदाई कभी नहींसमझती-रसोइबना

नेमें चतर-पानबीड़ी खायेचिदून चैन-न-पड-सदा-तावेद्वार बनी रहे-ये-सब पदमनीस्त्रीके-लक्षण बर्ननकिये गये. स्त्रीकेलिये पतिकेकहनेमें चलना इसकेशिवाय दूसराकोइबशीकरण नही-पदमनी स्त्री-चौसठकलाकी पूरी जानकार होती है.

(११८)-चित्रणीस्त्रीको रंगरंगीलेकपडे अच्छेलगे-शरीर ब-होतछुंदर हो हिरनीकी तरह नेत्र उसके चकितरहे-स्वर्चकरनेमें दलेरहोय-चतराइकरके सबका मनमोहलेवे-मुख चंद्रमाकीतरह गोल-शरीर गौरा-छलाट चारअंगुल उंचा-भू-तीसन-फुलोंका शिंगार बहोतचाहे-चित्रणीका-वीर्य-सहेतकीतरह खुशबूवाला-केश पतले लंबे-चित्रकारी औढना उसको अच्छालगे-चित्रकारीकाममें चतर हो-दांत खुबसुरत-होठ पतले-स्तन गोल-बोली रसीली-बनास्पति खाना बहोत चाहे-कामकलामें चतर-कटासमारकर पुरुषको बश करे-बातबातमें पतिकों रिझावे-नाटककरनेमें बड़ीचतर-वीणाब-जाकर मोहितकरे प्रेमकरना पदमनीसें चित्रणीको ज्यादा आताहै पतिका मन फुलकीतरह विकासमान करे-इतरफुलेलसें खुशबूदार रहे-बामेअंगमें तील हो-तरहतरहकेपाक बनावे-मोतियोंकेहार और जवाहिरातलगे गहने चाहकर पहने-देवदर्शन-और-तीर्थयात्रामें राजीरहे साधुलोगोंकी सेवाभक्ति बहोतकरे-धर्मशास्त्रका सुमना ज्यादा रुचे-जिसके अच्छेभाग्यहो उसके चित्रणीस्त्रीका योग मिले चौसठकलामें चित्रणीभी पुरीमाहितगार होती है-पदमनी मोले-स्वभाववाली चित्रणी कुछ स्वभावसें चालाक होती है.

(११९)-इस्तनीस्त्री-पदमनी चित्रणीसें-अलबते ! कमदर्जेपर है, लेकिन ! तोभी अच्छीहोती है, इस्तनीस्त्रीका शरीरसुंदरहोता है,

हयनीकी तरह सदा मतवाली-और-मंदमंद चाल चले-शरीरका रंग-गँहूबर्ना-कामभोगसे दुस्ति नपावे-लाज मोडीरखे-हस्तनीका वीर्य-हाथीके मदकीतरह गंधवालाहो, धर्मभ्रष्टा होवेभी-ना-भी-होवे-जैसीसंगतमोले बैसाधर्मकरे-कला-और-चतराइ हस्तनी के मंद होय-(शंखनीस्त्रीका वर्नन सुनिये!)-शंखनीस्त्री सरलबो-लीबोले-प्रेम क्याचीजहै बिल्कूल पहिचानेनही-शरीरका रंग तथा अंगोपांक ठीकनही-लिखनापढ़ना न-जाने-लाज बिल्कुलनही-बे-धर्महोकर हसे-शंखनीका वीर्य मरीदुइमछलीतरह बदबू मारे-नींद बहोत-अच्छेलोगोंकी संगत उसे पसंदनही-अपना अवगुन-न-प-हिचाने-धर्मपर श्रद्धानही-साधुलोग उसकों बुरेलगे-दान-पुन्य क रना जाने नही प्रीतकरनेकी तरकीब यादनही-येसब शंखनीकेल क्षण है. आजकल पद्मनीस्त्री दुनियामें बहोतकमहै, चित्रणीभी कमही है लेकिन! तोभी जिनकेअच्छेभाग्यहो मिलभी जाती है,- आजकल ज्यादातर हस्तनी-और-शंखनीही नजर आती है, अस-कमें चाहे पुरुष-हो-या-स्त्री-हो रूपपाना पुन्यके आधीन है, अ-कलहुशियारीपाना उससेभी ज्यादा पुन्यके आधीन कहा; और धर्मपाना सबसे बड़े पुन्य हो तब मिल सकता है.-आजकल मनु-ष्य पुन्यहीन रहगये, अच्छे आदमी या अच्छीस्त्री ज्यादा कहाँ से मिलसके, ?—

- १ (१२०)-पद्मनी चित्रणी हस्तनी और शंखनी इनके अभां-तरभेद गिने तो एकएकके सोलहसोलहभेद होते हैं. चारोंके सि-लानेसें (६४) भेद होसकते हैं, जाति लक्षण और गुण तरहतरहके हैं, विद्वान् ज्ञानी उसका पुरेपुराहाल कौन साधूमकरसकताहै ? इस



लिये बड़े चार-और-उसकेनीचे चौसठ कहेगये वही बहोत है, ज्ञातयौवना अज्ञातयौवना प्रौढा मध्या धीरा वासकशय्या अभि-सारिका कामकंदनी मुग्धा विप्रलब्धा विस्रब्धा और प्रौषितभट्ट-का वगेरा जिसजिसतरहकीस्त्रीये कामशास्त्रोंमें बर्ननकिइ है यहां कहांतक लिखे, ?-जिसशास्त्रकों बर्ननदेखा अपार है, और हमकों वहां थोडेमें बहोतकुच्छ कहनाहै इसलिये इतनाही लिखाण यहां पर ठीक समझा गया.

(१२१) स्त्रीकों विद्यापढना जरूरचाहिये, जैसे कच्चेथडेपर जोजो चिन्ह कियेजाय वह कभी नही मिट सकते वैसे छोटीउम-रकी पढीहुइविद्या जौंदगीतक यादरहती है, विद्याबिदून मनुष्य अंधाहै अगर अंधेकों अंधी मिलजाय फिर बिगाडकीसुरत पैदा-होगी या नही? स्त्रीकों पढानेवाली स्त्री होनाचाहिये, धर्मपुस्तक और कलाकौशल्यताकेग्रंथ स्त्रीकों पढना ज्यादा फायदेमंद है, जो लोग स्त्रीकों पढाना बुरावताते है वे असलमें मूर्खोंकेसिरदार है, अगरकहाजायकि स्त्री विद्यापढेगी तो खोटेकामोंमें खयाल करेगी, (जवाब.) पुरुष पढाहुवा अगर खोटेकामोंमें खयालकरेतो इससे पढना बुराकहसकते हो?—अगर नहीकहसकते तो फिर पढनेसे क्या!—बिगाड आया! हां! ऐसी स्वाधीनता स्त्रीकों न दो जि-ससे वो मतवाली बनकर पुरुषकों कुछ न समझे, आर्यलोगोंके कायदेही ऐसे है जो स्त्री कभी स्वाधीन होही नहीसकती, हमारा कहना यहनही हैकि स्त्री केवल अंग्रेजी और फार्सीही पढे, स्त्री-कों धर्मशास्त्र और कलाकौशल्यताके ग्रंथ पहिले पढना चाहिये जो कि-संस्कृतभाषामें-बनेहुवे है. स्त्रीशिक्षाका मतलब यह नही है कि-

स्त्री-किताबें बगलमें दबाकर मिशनस्कूलोंमें जाके बायबिल पढ़े, बी०ए०-एम०ए०पासकर हाइकोर्टकी वकालत और डाक़्तरी करे, कांग्रेसकी डेलीगेंट बनकर स्पीचोंका गौला छोड़े, और विलापतजाकर सिविलियन बने, वरन्!-स्त्रीशिक्षाका यह मतलबहै कि-स्त्रीयां-संस्कृतपढ़कर धर्मग्रंथ बांचतीरहे, गृहस्थधर्मके कार्य सीखें, पतिसैं किसतरह बर्ताव रखना, अपने होनहारबेटाबेटीकों किसतरह बिद्यापढ़ाना, धर्ममार्ग कौनसाहै-वगेराबातोंमें माहित-गारबने, माता पढ़ीहुइहोगी तो अपनीऔलादकों खोटेमार्गसैं रौकेगी. और ऐसी शिक्षा देगी जिससे-वें-अंग्रेजीपढ़करभी होटलमें टोटल देकर बोतलकेवशीभूत नबनेगें. और ऐसा मंत्रभी-वह-उनके कानमें फुंकदेगी जिससैं-वे-कभी-अपनेधर्मसैं भ्रष्ट न होसकेंगें.

(१२२)-बहुतेरे अकलके अंध-जो-कहरहे हैकि-स्त्रीकों-पढ़ना-अच्छानही उनसैं पूछा-जायकि-बतलाइये!-उपरलिखे गुणपढ़नेसैं हासिलहोसकते है-या-मूर्खरहनेसैं-पढीलिल्लीस्त्रीयोंमें सेंकड़े एक-बदचलन निकलेगी-मूर्खणीस्त्रीयोंमें सेंकड़े ननानुं बदचलन निकलेगी.-कहिये! यह फायदा हुवा-या-नुकशान?-स्त्री-पुरुषकी अर्धांगनी कहलाती है और दुखमें मित्रवत् पतिकों सहायता पहुंचातीहै, कहिये! कौन ऐसा मूर्खहोगा-जो-आधेअंगकों साफ और आधेअंगकों, मलीन रखना मंजूररखेगा?-जो आपही कुवेकीमेंडकी है वह पतिकों क्या! फायदा पहुंचासकेगी? पुरुष तो चौदह बिद्याका खजाना और स्त्री कालाअक्षर भेंस बराबर गिने, कहिये! उनका बेल कहांतक ठहरसकताहै?-और-उनका-प्रेम कहांतक वृद्धिकों पहुंचसकताहै?-इनबातोंकों सौचकर अगरकोइ कुच्छ

कहेतो-असपर-गौरभी होसकतहै, लेकिन! जो कोरा संस्वनाइ करजानते है उनका क्याकहाजाय?-सबशास्त्रोंमें लेखहैकि स्त्रीकों विद्या-जरूर पढ़ना चाहिये, चौसठकलामां लिपिविज्ञान-एककला लिखी हुइहै, मूर्खोंके फरमाने मुजब अगरस्त्रीकों शास्त्रकारोंने मूर्ख रखना मंजूर था-तो-ऐसालेख क्यों लिखते?-अगेरापमाणोंसे स-बूतपाया जाताहैकि-स्त्रीशिक्षाकी परिपाटी ज्ञानोयोंकों मंजूरथी, मूर्खलोगही इसबातसे नाक चढाते है,

(१२३)-स्त्रीकों ऐसाखैल न-खैलनाचाहिये जिससें बेशर्म-भरीबात मुंहपर चढजाय. विद्यापढ़नेका बरुत छोटी उमरही है, छोटीउमरमें मातापिताके हुकममें चलना-और-विवाहितहोयेबाद पतिके हुकमकों शिरचढाना-स्त्रीकेलिये निहायतउमदाहै. पतिसें छलकपटकी बात कभी-न करना स्वामीकेदियेहुवे धनकों बाहि-यातकाममें नही लगाना. मनसेंभी परायेपुरुषकी चाहना न रखना पतिहीकी सेवामेंदाखिलहै. पीठेंबचनबोलना-और-पतिके उपभोगमें अनुकूलरहना-खानदानस्त्रीकी निशानी है, कोईस्त्री अपनेस्वा-मीकों वशीकरणकरना चाहे सच्चीपतिव्रता होकर रहे, स्वामीके हुकमकों फूलकी तरह सिरपर चढावे. शय्या-रूपडें-और-मकान साफरखना-चतरस्त्रीयोंका कामहै. रूपवतीस्त्री-अगर अपनेरूपका धमंड-करेतो-पतिकों मुनासिबहै उससें अपना मन खेंचलेवे. बो-लना बंदकर उससें अलगशय्यामें सोवे. बहस्त्री-कौनकामकी-जो स्वामीके हुकमपर-न-चले, बैसीस्त्रीकों-रोटीकपडें जितना खान-पान-देकर-अलगकरदेना चाहिये. सोभी-अमर-सदाचारिणी-रहे-तो-अगर-व्यभिचारिणी-होजाय-तो खानपान-देनाभी-मु-

नासिब-नहीं,—जोलोग स्त्रीको अपने शिरपर चढालेते हैं—वे—अंतमें बड़ीबेइज्जती—और—तकलीफ उठाते हैं, अच्छेलोगोंने बारबारकर-मायाहै कि—स्त्रीको—बहोत—शिरपर—न—चढाओ, एकस्त्रीके मरजाने-पर जब कइपुरुष—दूसरीस्त्रीको विवाहते हैं तब पहिलेवालीके बेटेको बड़ीतकलीफ—पहुचाते हैं, नयीस्त्रीको खुशकरनेके लिये उस लडकेको मारपीट करते हैं, घरसे अलगकर जितनाहिस्सा उसको देनाचाहिये नहीं देते हैं. लेकिन!—यहबात न्यायमार्गसे बर्हिष्ठाफ है. संसारव्यवहारमें जितनानाम—बेटेसे—चलता है स्त्रीसें नहींचलता मुनासिबहै उसपुत्रको—नयीस्त्रीसें—ज्यादेआनंदमें रखे, उसके पुन्य उदयमें—स्वामीयी—जो उसकी असलीमाता मरगइ. अब बल्किन्! उसलडकेको ज्यादे दिलासा देनाचाहिये,—नयीस्त्रीके प्रेममें लंप-टहोकर जो लोग बेटोंको कुछ चीज नहीं समझते उनकी दुनियामें बुराइ—और—परलोकमें दुदर्शा होतीहै.

(१२४)—कामविकार मोहनीकर्मका—एक—अवांतरभेद है, इसमें फसकर—स्त्री—पुरुष—अंधेहोजाते हैं. तारीफ उनकी है—जो—अंधे न—बने, हाव—भाव विलास और विभ्रम ये चार—कामविकारके बढानेके हेतुहै, कामीमनुष्यका चित्त मलीनइरादोंसें—गर्क—रहताहै, कइलोग कहदेते हैंकि—स्त्री जितना पुरुषको नहींचाहती उतना—पुरुष स्त्रीको चाहताहै. (जवाब.) यह बात गलत है, सबबकि—काम विकार—एसीवस्तु है—जो—इसमें पडकर दोनों बेहोश होजाते हैं, संसारमें निगाह फैलाकर देखलो—खुद मालूमहोजायगा. हां! इतना कहसकते हो—कामविकार—जितना बढामुश्किल है. जिनोंने इसको जीतलिया तारीफ उनकी है. अगर सवालकिया जायकि—किसीने

जीताभी है?—जवाबमें—इतना कहसकते होकि—हां!—ज्ञानीजनोंने इसकों—जीतभी—लियाहै, जो लोग—कामविकारतर्फ दिल बहोतब-  
ढाते है उनकों अलबते! इससें फतेहपाना—मुश्किल है. कोइएक दु  
नियामें ऐसाही जिसकों हवा—न—लगीहो, जैसे यह मसाल ठीक  
ठीक सही है—वैसे कामविकारकीहवा लगनाभी मनुष्यकेलिये एक  
कुदरतीनियमहै, लेकिन! तारीफ उसकी है—जो—टूटेफूटे नही.

(१२५)—पूरवजन्मके—कियेहुवे—सुकृत्यसें मनुष्य रूपवान् होते  
है. चाहेस्त्री—हो—या—पुरुषहो,—जैसे अकल होशियारी एकतरहका  
वशीकरण है वैसे अच्छारूपभी एक वशीकरण समझो. रूपदेखकर  
कइपुरुष—और—कइस्त्री मोहित होगये हैं. घरछोडके एककेपोछे एक  
चलेगये—यहबात किसीसे छीपीहुइनही. जिसपुरुषकों जिसस्त्रीके-  
साथ रागहै उसकों धर्मशास्त्रका वचन जितना असर नहीकरता  
उस स्त्रीका वचन असर करता है. अगर कोइ—मुनि—उस-  
पुरुषकों धर्ममें धनखर्चनेका उपदेशदेवे तो खर्चे—या—नभी-  
खर्चे, लेकिन ! अगर वहस्त्री उसपुरुषकों—कहेकि—आप—इतने  
रुपये—इसकाममें देदो—तो—उसी वरुत्त देदेगा. इसीतरह जि-  
सस्त्रीकों जिसपुरुषकेसाथ रागहोगा—उसकों—अगर—वहपुरुष कहे  
कि—तुम!—इसकाममें—इतनाधन देदो उसीवरुत्त देदेगी. राग—बो-  
चीजहै—जो इसकेवशमें पडकर बडेबडे चकरा जातेहै. संसारके  
तीनहिस्से ऐसे नजर आतेहै—जो ऐशआराममें गर्कहै. मुठीमें पारा  
रखना और कामविकारसें दिलकों बचाना एकसरखाहै, जिसपु-  
रुषका या जिसस्त्रीका धर्म तुमने देखलियाहै उसकोंभी बनतेम-  
यत्त जाहिरकरनेसें बचाव रखो, दूसरेका धर्म जाहिरकरनेसें अ-

स्त्रीमें बड़े झगड़े आनपड़ते हैं. स्त्रीका पक्षकरके जो जो पुत्र अपने मातापितासें लड़ते हैं वे आदमी नहीं जानवर हैं, मातापिताकी बे अदबी करना या अपनी स्त्रीसें उनका मानभंगकराना बेवकूफों-का काम है, तुमको लाजिम है कि मातापिताकी ताबेदारी करो. उन्होंने तुमको पाला है, पैशावपाखाना उठाया है, रातरातभर तुमारे लिये जागे हैं, तुम अब उनके सामने बोलते हो या स्त्रीसें उनको गालीयां दिलवाते हो, -तुमारे समानकोइपापी अधमी और भाग्यहीन नहीं, शिरपरचढ़ानेयोग्यपदार्थकों खाखकीबतौर समझते हो.

(१२६)-जो शल्लभ मातापिताकी ताबेदारीकरते हैं उनकी स्त्रीभी मारेडरके साससुसरेसे कभी सामना नहीं करती लेकिन ! अपशोष है कि-आजकल ऐसे लाइकवर पुत्र बहोत थोड़े रहगये. स्त्रीकी और अपनीमाताकी लड़ाइहोजाय तो मुनासिब है पहिले अपनी स्त्रीकों हठाना. सबबकि माताका दर्जा बड़ा है, मातापिताका अन्याय हो-तोभी-आप-स्त्रीका पक्षपकडकर-उनकेसामने-न बोलें-मुनासिबसमझेतो-उनकेदोस्तोंसें-ताबेदारीकेशाय-कुच्छविज्ञ-सिकरावेकि-आप-क्षमाकरे, जो-पुत्र-मातापितासें-ऐसाजवाबदेता है कि-बहू-छोटी है आपतो बड़ेहो-समता करो, वह-पुत्र-नहीं-दुश्मन है, इससें तो अपनीस्त्रीका पूरेपूरापक्ष सबूत होजाता है, स्थानांग-सूत्रके तोसरेस्थानमें लिखा है कि-मातापिताका-भौर-धर्माचार्यका बदला-कभी-नहींदियाजाता. अगर कोईपुत्र-मातापिताकों-फुल्लै-लतैलसें मालीसकराके-हरहमेश-स्नानकरावे-अच्छेकपड़े पहनाकर छत्तीसतरहकेभोजन जिमावे, और सारीउमरतक सेवा करे तो भी उनकाबदला-न-देसके हां !-अगरचे ! सर्वज्ञकथितधर्ममुनाकर

उनको धर्मश्रद्धामें पकड़े करे-तो-अलवते! उनका बदला देसकता है, जिनको ऐसे बचनोपर श्रद्धा है कभी मातापिताका सामना न-हीकरते. कितनेक ऐसे शुरुश है-जो-स्त्रीकेवशमें पडकर भाइका अपमान करते है, लेकिन!-तकलीफकेवरुत-भाइही-कामआताहै, रामचंद्रजीको भाइनेही-कामदिया था. रामचंद्रजी ऐसे शूरवीर थे जो कभी कच्चेदिल नहीहुवे, लेकिन!-जब लंकायुद्धमें लक्ष्मनको मूर्छाआइथी-रों-दिया था, भाइहो-तो-ऐसेहो, बेटामरजायतो दू-सरीस्त्री विवाहनेसें-दूसरा-पैदाहोसकता है, लेकिन!-सगीमातासें जन्माहुवा-भाइ-मिलनामुश्किलहै. वों-नालाइकहै-जो-भाइकेशाय दुश्मनीरखते है. हरेकआदमीको मुनासिबहै देवगुरुधर्मको अवल नबरमें समझे-और-उनकेशाय वर्तावभी ऐसाही रखे, बाद माता-पिताको दूसरेनंबरमें-समझे-भाइको तथा बेटोंको तीसरेनंबर और स्त्रीको-चौथेनंबरपर समझे. और उसमुजब वर्तावभी रखे. स्त्री-के-रागमेंपडकर उपरलेदर्जेवालोंको कुच्छचीज-न-समझना. बडी भूलहै.

(१२७)-एकशेठकेबेटेको एकवैश्यासें बडीमोहबतथी. सबधन उसको खीलादिया, जब स्वर्चसेंतंगहुए शहरछोडकर देशांतरको गये, नसीबकेकारण वहां नोकरी मिलगइ, तहसीलदारहोगये. दो चारमहिनेकेबाद अपनेनोकरसेंकहा-यह-(५००) रुपये लेजाओ.- इसमेसें-(४००)-हमारीवैश्याको-और-(१००) रुपये-हमारीघरबा-लीको देना, रसीद लेते आना. नौकर चतरथा पहिलेही वैश्याके घर गया. कहनेलगा तुम्हारे सबसें ज्यादाप्यारेदोस्तने-(४००)-रु-पये-भेजे है, सो-लेलो!-और-उसकेनामकी रसीद देदो, वैश्या

बोली!-रूपये किसने भेजे है!-नौकर कहता है तुम्हारे प्यारे दोस्त ने-  
वैश्या-बोली-उसका नाम-क्या-है?-नौकर बोला! क्या! तुम नहीं  
जानती हो?-वैश्या बोली-मेरे बड़े प्यारे दोस्त तो नहै. नौकर ने उ-  
नतीनों के नाम लिखलिये. लेकिन?-अपने मालिक का नाम नहीं आ-  
या, वैश्या ने फिर-तेरह-और-फिर-छप्पन भी-नाम लिखवाये. ले-  
किन!-किसी में अपने मालिक का नाम नहीं आया. नौकर ने फिर  
पुछा कि-अब भी कोई बाकी रहता है?-वैश्या ने कहा!-यू तो-सैंकड़े  
भडवे मैरी गली में फिरा करते हैं. नौकर चला आया, और-(५००)  
रूपये ही अपनी मालकीनकों दे दीये. रसीद लेकर मालिक के पास  
आया, रसीद दिइ, मालिक नाराज हुवे. कहने लगे उसके हाथ की  
सही क्यों नहीं?-नौकर बोला!-हज़ूर! हिसाब सुन लिजिये!-न  
तीन में-न-तेरह में, न-छप्पन में-बहत्तर में. बतलाइये!-आप किस ग-  
ली के भडवे हो,? वैश्या की दोस्ती का यह नतीजा है जिसकों अप-  
नी इज्जत में कलंक लगाना हो वैश्या की दोस्ती करे.

(१२८)-उपदंश वगेरा बीमारी जो-अक्सर मर्दों को-होजाती है  
वैश्या का संग भी एक-रोग की जड है. बात सच भी है कि-जहां बहोत सें  
आदमी ओं का वीर्य मिलेगा रोग क्यों-न-होगा?-जिस जगह उपदं-  
शकारोगी पैशाब करे उस जगह पर पैशाब करने वाले कों भी यही रोग  
लगजाता है. इस बीमारी वाले कों चाहिये छिपावे नहीं. शर्म के मारे दू-  
सरे कों-न-कहोगे-बीमारी बढ़ती जायगी. उपदंशकारोगी कों मुनासि  
ब है वैद्य की सलाह सें इन्द्रिय जुलाव लेकर रोग का इलाज करावे. जब-  
तक आराम-न-हो-स्त्री के पास-न जावे, मन के ढंग सें खाइहुइ दवा-  
कार-नही करती. वैद्य की दिइहुइ थोड़ी चीज भी फायदा पहुंचाती



है, मासिकधर्म कमीवेंसीहोनेसें स्त्रीकों-कमरमेंदर्द-वेंचैनी-सिरमें दर्द-बगेराबीमारीजारीहोता है. कभी-काला-या-बहोतगर्म-रक्त-निकलना,-हमेशा शरीरगर्म रहना,-हाथपांवके तलवोंमें पसीना आना,-कलेजा धडकना-कमर और जांघमें दर्द-पेटकेनीचेभीदर्द रक्तजारीहोनेसें पहिले तकलीफहोकर फिर मोटजाना-ये-सब मासिकधर्म कमीवेंसीहोनेके लक्षण है.

(१२०)-स्त्रीकों-पुरुषकीबनीस्पत कामविकार ज्यादेहोना फरमाया. पुरुषकीतरह जाहिरातमें मुखसें नहीकहती, लेकिन! छलकपटकेजरीयें आंखोंके इशारेसें मालूमकराती है, पुरुषका काम-विकार थोड़ीदेरतक-और-स्त्रीका-बहोतदेरतक रहताहै. स्थानांग सूत्रके तीसरेस्थानमें स्त्रीकी योनि तीनतरहकी बर्नन किइ,-(१)-कूर्मोन्नता-(२)-शंखावर्त्ता-और-(३)-वंशपत्रिका-जिसकी कुर्मोन्नतर्यानिहो उसस्त्रीके-गर्भमें-तीर्थकर-चक्रवर्त्ती-बलदेव-और-वासुदेवबगेरा उत्तमपुरुष पैदाहोते है. चक्रवर्त्तीकी चौसठहजारस्त्री-बोंमें-जो-पटरानी-होती है उसकों शास्त्रमें रत्नस्त्री कहा. रत्नस्त्रीक-हनेसें यह मतलबहैकि-दूसरीस्त्रीयोंसें उक्तस्त्री-ज्यादे-रूपवतीहोती है, इसकी योनि-शास्त्रोंमें-शंखावर्त्तके आकार फरमायी. इसके गर्भ नहीरहता, चक्रवर्त्तीराजा-जब-संभोगकेलिये इसकेपासआता है तब मूलशरीरसें आताहै, और दूसरी-जो-तेसठहजार-नवसें-ननानुंस्त्रीरही उसकेपास जाताहै तब वैक्रिय लब्धिकेजरीये न्यारे न्यारेरूपबनाकर जाताहै.

(१३०)-स्थानांगसूत्रके पाचवेस्थानमें विनासंभोगकियेभी-कों-गर्भरहनाफरमाया, यद्यपि यहबनाव बहोतथोड़ीजगह बन-

ताहै लेकिन !-जोबात-बनने योग्यहै उसका बयानकरना कोई ह-  
 र्जकीबातनही, अगर सवाल कियाजायकि-विना-वीर्य-गर्भस्थिति  
 कैसेहोसकेगी,?-(जवाब.)-कौनकहताहै? विना वीर्य-गर्भ-रहे. अ-  
 लवते !-संभोगकिये बिदून-गर्भ-रहनाकहासो ठीकही है. सुनलि-  
 जिये !-कोइस्त्री-किसीपुरुषका-वीर्य-मंगाकर अपनीयोनिमें स्था-  
 पनकरे और वह गर्भाशयतक जाकरस्थितहोजाय-तो-गर्भरहना  
 संभवहै. दूसरा यहभी सबबहैकि-जबकभी-किसीमरोवरमें-या-कुं-  
 डमें-स्त्री-स्नानकरनेजाय वहां समझो कोइपुरुष-पहिले स्नानकर-  
 गयाहै और उसका स्खलितहोयाहुवा-वीर्य-उसजलमें तैररहाहो-  
 वो-वीर्य-लोहचूंबककीतरह आकर्षणहोकर गर्भाशयमें संचार हो-  
 जाय तो गर्भ रहना संभवहै. इसीलिये स्त्रीकों-नग्नहोकर स्नानकर-  
 ना मुनासिब नहीफरमाया. आदमीभी अगर नग्नहोकर स्नानकरे  
 तो उसेभी कौन अच्छा कहताहै,?

(१३१)-[अप्राप्तयोवना]-बारहवर्षसे कमउमरवाली-  
 स्त्री-आजकलकेजमानेमें-अप्राप्तयोवना-कहीजाती है, एसी कमउ-  
 मरवालीस्त्री-पुरुषकेसंयोगसेंभी-गर्भधारण-नहीकरसकती. सबब-  
 कि-छोटीउमरमें उसकों रितुधर्म नहीआता, पचवनवर्षकी उमर-  
 वालीस्त्रीकों आजकल [अतिक्रांतयोवना]-कही, उसकों रितुधर्म-  
 केअभावसें गर्भ नहीरहसकता. किसीस्त्रीकों खानपानकी सामग्री  
 अच्छीमिलनेसें ज्यादाउमरतक ताकतवर बनीरहे-तो-उसकों गर्भ-  
 रहभी सकताहै, लेकिन ! बहोतस्त्रीयोंकों-न-रहनेसें-यहीकहना मु-  
 नासिबआयाकि-पचवनवर्षके बाद-स्त्री-अतिक्रांतयोवना है. स्त्री-  
 पुरुष-दोंनों-युवाअवस्थाकेहो-गर्भाशय-मार्ग-रक्त-शुक्र-अनिल-

और-हृदय-येछहचीजनिर्दोषहो-तो-ताकतवरपुत्रपैदाहोनेकासंभवहै उक्त छहचीज दोषितहोतो कमताकत होगा. स्त्रीका-रज:-ज्यादेताकत वरहोतो गर्भमें-लडकी-और-पुरुषका-वीर्य-ज्यादेताकतवरहो-तो-लडका-होनेकासंभवहै. जन्ममें लगाकर-जो-स्त्री-निर्बीज-(यानी) बंध्याहो वह पुरुषकेसंभोगमेंभी गर्भ-न-धरेगी. सबबकि-उसने पू-रवभवमें एसेहीकृत्यकिये है जिसमे उसके गर्भाशयमें औलादहो-नेकी ताकत-न-हासिलहुइ. जिसस्त्रीकों हरहमेश रक्तप्रवाह बहता रहे उसकोंभी गर्भरहनेका संभवनही जानना. रितुधर्म-आयेबाद पनराहरौजबतीतहुवेपीछें बाकीके-जो-पनराहरौज-अगलेरितुधर्म-आनेकेबीचमें-रहे उनमें संभोगकरनेमेंभी गर्भ नहींरहता, स्त्रीकों जब रितुधर्म आवे तीनरौजतक संभोगकरनाठीकनही, करनेमें स्त्री और-पुरुष-दोनोंकों रोगपैदाहोताहै, कइ एनेभी है-जो-इनदिनों-मेंभी संभोगकियं विदूननहीरहते. और अम्बीरमें बीमारीपैदाकर हकीमोंके घर तलाशकरतेहैं, रितुधर्म-भायेपीछें तोनदिनकेबाद-जो-बारह-रौज-रहे उनदिनोंमें संभोग-न-कियाजायतो-गर्भ-नही रहे. सबबकि-गर्भस्थितिहोनेके-यही-दिनहै. जिसस्त्रीकों रक्त-पि-त्तकेप्रकोपमें गर्महोगयाहो उसकोंभी गर्भस्थिति नहींहोसकती. क-इस्त्री-जडीबूटीखाकर अपनेगर्भाशयकों शक्तिहीन करदेती है उस-कोंभी गर्भरहना संभवनही जैसे-कइवैश्या-और-विधवा-कामावि-कारकी चाहनामें ऐसा करलेती है,

(१३२)-बाजेआदमी कहदेतेहैकि-दुनियामें-एक-स्त्रीही-उ-हा चीजहै. (जबाब.)-यहबात गलतहै, क्या!-स्त्रीकेलिये पुरुष चीज नहीं!-जब एकदूसरेकेलिये एकसरस्त्रीबातहै फिर-ए-

ककों उमदा-और-एककों नहीकहना कौन चतराइ, ?-कितनेक कहते हैं स्त्रीका-स्पर्शकरनेसें जब आरामपैदाहोताहै-तो-फिर-बो-अच्छीचीज क्यों नही!-(जवाब.)-क्या! स्त्रीकों-पुरुषका स्पर्शकरनेसें-आराम-नहीहोता! अगरचेहोताहै-तो-फिर-एकहीकों अच्छीचीजकहनेसें क्या! जरूरत?-हां!-इतनाकहना मुनासिबहैकि कामजन्यसुख-दोनोंकेलिये एकसरखाहै. कितनेक कहते हैं पुरुषकी पैदाश-स्त्रीसें-है, इसलिये उसकीनींदा करना मुनासिब नही. जवाब.)-क्या!-स्त्रीकी पैदाश पुरुषसें नही!-अगरकहाजाय एकदूसरेकोमिलापसें दोनोंकी पैदाशहै-तो फिर सौचो! क्याबात सिद्ध हुई? और नींदा किसचीजका नामहै पहिले उसे सौचलिजिये! महाशय! सचबातकों सचकहना नींदा नही. नींदा उसकानामहै जूठाआरोप कियाजाय, पुरुषकेपुन्यसें स्त्रीका-पुन्य हीन-है, इसलिये उसकों छोटेदर्जेपर कहीगयी. अगरइसबातकों नींदासमझे-तो-अलगबातहै, -या-आपकों स्त्रीकापक्षपकडनाही मंजूरहैतो-उससें हमे कोइपरवाह नही. कइलोग कहतेहै-महिनेमहिने-स्त्रीकों-जो-रितुधर्म आताहै वही उसकेसबपापकों दूरकरदेताहै. (जवाब.)-यहबात गलतहै, अगर इसीसें उसका पाप चलाजाताहो-तो-फिर-उसे धर्मकरनेकी क्या! जरूरत रही?-महिनेमहिने रितुधर्म आना उसके रुधिरदूरहोनेका-हेतुहै-पापदूरहोनेका हेतुनही. नास्तिकलोग काम क्रीडाहीकों उमदाचीज समझे-तो-मरजीकीबात है. लेकिन!-धर्मशास्त्रके फरमानेवाले बेंजा बातकों सच नहीकहसकते. कितनेक कहते हैं संभोगकेवख्त-पुरुष-स्त्रीसें-प्रियभासन-करता है पीछेसें नहीकरता. (जवाब.)-क्या! स्त्री-पुरुषसें-प्रियभासन-नहीकरती!

अगरचे करती है-तो-फिर-पुरुषकेही शिर बौज क्यों!-क्या! पुरुष-और स्त्री-सदा एकसे रहनेवाले बहोतथोड़े निकसेगें. महाशय! जितनी धीरज पुरुषमें होती है उसके हजारदर्जेकमभी-स्त्रीमें नहींहोती. पतिकेपीछे जलमरना कोइउमदाबात नहीं. वरन्! खोटी गतिजानेका कारनहै,

(१.३३)-कितनेक कहते हैं-स्त्रीकेलिये-पुरुष-कइतरहेके मंतर जंतर करता है इससे-स्त्री-कुच्छअच्छीचीज समजना चाहिये, (जवाब.)-जैसे मंतरजंतरके उपाव-पुरुष करताहै-स्त्रीभी-करती-है, यहबात दोनोंकेलिये एकसरस्त्री है, चाहे-स्त्री-हो-या-पुरुषहो इसबातमें एकदूसरेको कमीबेंसी कहना नहीं बनसकता. कितनेक कहते हैं दूसरेकेदोष-बयानकरे-वो-दुर्जन-और-गुणवर्नन-करे-वो, सज्जन जानना.-(जवाब.)-यहबात शास्त्रकेहुकमसें बरखिलाफहै, हरेकवस्तुके गुण-और-दोष-यथार्थ बयानकरना-ज्ञानीजनोका-कामहै. दोषवर्ननकरनेका नाम-मूर्खलोगोंने नींदा कहरखाहै, लेकिन! नींदा उसका नाम नहीं. नींदा-वो-है-जो-जूटीवात कही जाय. अगर एकीलेगुणही बयानकियेजाय-और-दोष-न-वर्नन करे-तो-वो-यथार्थवक्ताही क्या!-खुशामदीहुवा, -कितनेकलोग अपनीलडकीका मॉललेकर स्यादीकरते हैं लेकिन!-जिसने मॉल-लिया उसने कन्यादान नहींदिया-बल्किन्! लडकीवेचनेका-एक धंदा-शुरुकिया जानना. कहिये! शास्त्रज्ञपुरुष इसबातको कैसे अच्छाकहसकते हैं, ?-आजकल मनुष्य धर्मपरदृष्टिरखनेवाले थोडेरहे-ये, बूढेहोकरभी-लोग-विवाहकराना चाहते हैं इधर लडकीका चाहताहै-बेटी-बडीहो-और-मुजे धन मिले. लेकिन!-अच्छे

लोग इसबातको पसंद नहीकरते,

(१३४)—जापानदेशमें गेहूँआरंगकी-स्त्री-बहोतरूपवती सम्पत्ती जातीहै. असलमें ज्यादागौरापनभी अच्छानहीहोता. ज्यादागौरीचांम कोढीमनुष्यों होती है-तो-वै-बुरेही-कहेजाते है. भारतकेमध्यखंडकी-स्त्रीयें-अपनदांतोंको-मसाला-लगाकर-काले-करलेती है, और चीनदेशकी-स्त्रीयें-हरें-और-पोलेंरंगोंसे रंगाकरती है. इसीसे कहा जाताहैकि-शींगार-और-पोंशाकमें-अपने अपने दिलकी रुचिहो प्रधानहै. रसोइबनाना-कुबेसें जललाना-और-शय्या बिछाना-बगेराघरकाकाम-स्त्रीके-तालुकहै, जो-लोग-स्त्रीकों-इतनी महेनत-सेंरहित करदेते हैं उनकीस्त्रीये अभिमानके शिखरपर चढ़कर स्वामीकों यत्किंचित् गिननेलगजाती है, जोलोग दौलतमंदहोते हैं उनकेघर नौकरचाकरांकी कमी अलबते! नहीहोती, लेकिन! तोभी उनको इतना जरूरचाहियेकि-अपनेखानेकी रसोंइ अपनीस्त्रीसेंही बनवावे, याते उसकेलिये एक-उद्योग-बनारहे, बिल्कुलबिठायेर-खनेसें दोनोंकेलिये बिगाडकीसुरतहै.

(१३५)—विषयसमुद्र अगाधहै, धीरपुरुषभी इसमेंपडकर कायरहोगये, देवता देवांगना, नरनारी, सिंहसिंहनी, हाथीहथनी, शुकसारिका, हंसहंसनी, -और-चीडाचीडीतक-इसकरंगमें गाफल होचूकेहै, जिनोंने कामविकार ज्यादा सेवन कियाहै उनको पिछलीउमरमें बडीतकलीफउठानी होगी. आंखोंका तेज कमहोजाना कानोंसें बहेरेहोना-और-दम चढना-बगेरा इसीकेबुरे नतीजे है. जो-पुरुष-या-स्त्री-कामविकारसें बचनाचाहतेहो-मुनासिबहै एक मकानमें-इकठे-न-रहे, एक शय्यामें-न-सोवे, कामविकार पैदाहो

वैसे शब्दों से-पेम की बातें-न-करे, विकार की दृष्टि से-न-देखे, माजू-मवगेरा-न-सँकी चीज-न-खावे, और-जहाँ तक बने चित्तकों डामा-डोल-न-होने दे, तपकरना-जंगलवासी बनना-और-हजारों आदमीओं के सामने बहादूरी से लड़ाइलडना-मुश्किल नहीं, लेकिन!-युवानो में कामविकारकों जितना मुश्किल है, रूपवती स्त्री-पुरुषका-और-रूपवान् पुरुष-स्त्रीको-मोहपैदा होने के हेतु है। तथापि जिनको मोह-नहीं-आता-तारीफ उनकी है।

(१३६)-पहिले काल में जैसे सुखी-गृहस्थ-होते थे अब नही रहे, लेकिन!-तो भी-नास्ति-नही कह सकते, कइसे सुखी भी है-जो-वर्त्तमान में-होने चाहिये। दौलत इतनी है-जो-स्नानपान से खुटेन-ही। नोकरचाकर-गँहने कपड़े-मेवामीठाइ-और-इतरफुलेल-सब है, शरीर तंदुरस्त-और-शींगार-जैसा करना-चाहे कर सकते हैं, किन्तु! जिनका स्वभाव कंजूस है उनकी लीला-तीन लोग से-निराली है। दौलत पाकर जिनोंने धर्म में-और-शरीर के आराम में-खर्च-नही किया उनको पूछना चाहिये तुमको दौलत पाने का क्या फल हुवा?

(१३७) —[ अनुष्टुप् चतुष्टुप् ]—

सुगंधो वनिता वस्त्रं-गीतं तांबूलभोजनं,

मंदिरं वाहनं चैव-अष्टौ भोगाः प्रकीर्त्तिताः १,

(अर्थः)-सुगंधिचीज-स्त्री-कपड़े-गीतगान-तांबूल-भोजन-मकान-और-सवारी-ये-आठ चीजें भोगविलास के अंग हैं, जैसे स्त्री-के लिये सोलह शींगार शास्त्रों में बयान किये हैं-वैसे-पुरुषों के भी-वर्णित है, लेकिन!-चतराई-और-उदारता-दोनों ही शींगार सबसे बड़े समझे गये हैं। यूँ तो ये भी शींगार ही हैं-जैसे-स्नानकरना इतरफु-

लेल लगाना-केशोंको सवारकररखना-अच्छेकपड़े पहनना-हाथमें अमुठा रखना. सदा हिंमत्तबहादूर रहना-हाथका सस्तीहोना-वचनदेकर बदलनानही-सबशोलना-और-देशाटनमें होशियारहोना-बगेरा औरभीकइहै लेकिन! चतराइ-और-उदारतामें सभी अंतर्गतहोजाते है. स्त्रीकेलिये-स्नानमज्जन-अच्छेकपड़े-कढ़ें-कंठी-बाजुबंद-कंकण-पांवोंमें नैवर-आंखोंमें लाजशर्म-और-चतराइ-ये-सब-शींगारहीके भेदहै.

(१३८)-स्थानांगसूत्रके पांचमें स्थानमें-कामसेवन-पांचतरहमें होना फरमाया. (१) पुरुष-या-स्त्री-मनमें-कामभोगकी चाहना करे इसकानाम-मनःपरिचारणा-बयान किया, (२)-काम बिकार जागे वैशेषब्दोंसे वार्तालापकरना इसकानाम-शब्द परिचारणा-कहा, (३)-परस्पर रागजागे वैसी दृष्टिसे देखना इसका नाम-रूपपरिचारणा-(४)-आलिंगन बगेरा केवलस्पर्शमात्रसे कामसेवना इसकानाम-स्पर्शपरिचारणा-और-(५)-एकशय्यामें संपूर्णअंगसे अंगामिलाकर-कामभोगकरना-इसकानाम-कायपरिचारणा-फरमाया. संभोगकियेबाद तुर्च जलपीना मनाहै, सबबकि-उसवस्तु-वीर्यनाडी-खालीहोजाती है उसमें जलगिरनेसे रोगपैदा होगा. शरबत-कहुआ-कसायला-और-खट्टाखाराभोजन जीमना भी उसवस्तु ठीकनहीं. तुर्च ठंडीहवामें चलेजानेसेभी रोगपैदाहोताहै मुनासिबहै कुछकाल ठहरकर जावे. उभरुतुमें कामभोग थोडासेवनकरना चाहिये, रुतुकास्वभाव गर्महानेसे शरीरमें कइतरहकेरोग पैदाहोजाते है.

(१३९)-संभोगकियेबाद गर्भमे लडका-या-लडकी-जोकुछ



होनाहो तुर्त आजाताहै, जोलोग-महिने दोमहिनेबाद जीव उत्पन्नहोना बतलाते है झूठे है, गर्भरहेबाद जिसस्त्रीकों अच्छेस्वप्न दिखाइदे-समजना चाहीए पुन्यात्माजीव गर्भमेंआयाहै घुरेस्वप्न दिखाइदे-जानना-बुराजीव गर्भमें आयाहै. गर्भवतीस्त्रीकों-सताना ठीकनही. ऐमेभी-जोस्त्री-अपनेकहनेमुजब चलतोहो-अपनेकों देखकर खुशहोतीहो-उससे नागजरहना मुनासिबनही. प्रसूतक्रियासें बिना तकलीफ पारहोना स्त्रीकेलिये-एक-दूसराजन्महै. इस अवस्थामें उसका गौररखना जरूरत है.

(१४०)-गर्भवतीस्त्रीकों बहोतमार्ग चलना-रातकों जागना-बातपित्तकों बढ़ानेवाली चीजखाना-दोमहिनेहुवेबाद मैथुनसेवना-और-जुल्लाबलेना किसीसुरत अच्छानही, गर्भवतीकों सातमहिनेहुवेबाद स्तनमें दूध पैदाहोनेलगताहै, आठनवमहिने होजाय-तो-भोजनदेखकरअरुचि आवे, भोजन जिमतेजिमते उल्टीहोजाय, वगेरा कइतरहकी बेंचैनी पैदाहोती है. हंसीकीजगह चूपहोजाना मौनकीवरत हंसउठना-अकेलीरहनेकी मनसाहोना-और-मानसिकविकारसें कइतरहकी तकलीफरहना-एक-स्वभाविकनियमहै, इनबातोंसें-गभराना नहीचाहिये. किसीकिसीस्त्रीकों बालकजन्मनेमें पहिले शरीरमें मूँजन आजाती है, इसवरत असलपुछोंतों स्त्रीकेलिये मौतकीनिशानी है, जिसके बडे भाग्यहो गर्भप्रसूतहोतेसमय सुखचैन रहे. जिमस्त्रीके दहिनेस्तनमें दूध पहिले निकसे-चलतेसमय दहिनापांव पहिले उठावे-जिसके-पेटका दहिना पासा उचाहो-और-दहिनेपासेकी रोंमपंक्ति उठीहुइहो-जानना-चाहि इसके लडका पैदाहोगा, जिसस्त्रीमे-इससें उल्टेलक्षण पायेजाय-जानना इसकेलडकी पैदाहोगी.

(१४१)-स्त्रीकीनाभिके नीचे-दोनाडी-कमलकूलकीतरहबनी हुइ अधोमुखकमलाकार है, गर्भका ठहरना इसीमेंहोताहै, इसके नीचे-जैमे आंमकीमांजरहो-एक-मांसमांजरहै. और उसमांजरके नीचे योनिहै, महिनेमहिने जो-स्त्रीकों-रुतुधर्म-आताहै इसीमांजर-सैं लोही गिरकर योनिकेरस्ते बहार आताहै, रुतुस्नानकियेबाद चौथेदिनमें लगा बारहदिनतक गर्भठहरनेका काल पहिले लिख चुके है. कायपरिचारणामें कामभोग सेवेबाद-उस-वीर्यश्रोणितमें कच्चीचोइसघडी (नवघंटे और छत्तीसमिनिट) तक-गर्भठहरनेकी ताकत रहसक्ती है, बादनही. सबबकि-फिरजब दूमरीदफे संभोगकियाजायगा तब होगी. इसीमानवधर्मसंहिताकी (१३९) मी-कलममें जो-लिखआये हैकि-संभोगकियेबाद-जीव-उत्पन्नहोनेवा-लाहो-तो-तुर्त्त-होजाताहै इमका मतलब यहहैकि-महिनेदोमहिने-बाद नही किंतु चौइसघडीके भीतरभीतर उत्पन्नहोजाताहै, गर्भमें जीव आतेही-पिताके वीर्य-और माताकेरुधिरका आहार लेकर-अपना शूक्ष्मशरीर-जो-अगलेभवमें शायलायाहै जिसकेशायमें त-रहतरहकीकर्मप्रकृतिभी-है-उसको गर्भाशयमें डालकर उसकेजरीये स्थूलशरीरकी रचना शुरूकरताहै, जीव-एकगतिसें मरकर जब दू-सरीगतिमें जाताहै तैजस-कर्मणरूप-शूक्ष्मशरीर-उसकेशाय रहता है. पुन्य-पाप-वगेरा कर्मभी उसमूक्ष्मशरीरके शाय लगेरहते है. बस!-इसीतरह जबतक-संसारमें-जीव-अ्रमणकरताहै तबतक उ-सके उक्तशूक्ष्मशरीरका अभावनही होसकता. जबमुक्तहोकर श-रीरहितहोगा जन्ममरण-शरीरवगेरा-न-करनेपडेगें. जिसके राग द्वेषमोहवगेरा उपाधि कमहोतीजाय उसकेपूर्वसंचितकर्म जल्दी झूट

सकते हैं, दुनियाकेपदार्थोंका-और-आत्मतत्त्वका-सच्चाज्ञान होनेसे सगद्वेषमोहवगेरा उपाधि कमपड़तीजायगी, किसीचीजकी-ममता न-रखकर-तपकियाजाय-तो-सबतरहकेकर्मोंकी उपाधि छूटसकेगी और-जीवकी मुक्ति होमकेगी जबतक कर्मउपाधिमें लिप्तहै तबतक जीव-संसार-यानी-दुनियादार है कर्मउपाधिसँ रहितहोजाय-तब वहीजीव-मुक्तहुवा-कहलाताहै। जीव-शरीरके संपोगवियोगकी अपेक्षा-अनित्य-और-आत्मधर्मकीअपेक्षा-नित्यहै। जैसे-दीयाका चाँदना छोटेमकानमें संकोच-और-बड़ेमकानमें-विस्तारमें फैलताहै वैसे आत्मा-पूरवकृतकर्मानुसार छोटेबड़ेशरीरमें विकासमानहोता है, जब आयुष्यकर्मकी पूर्णताहोनेपर दूसरेजन्मका आयुष्य उपा-र्जनकरके इसशरीरको छोड़ताहै लोग कहते हैं-मरगया, जीव अ-सलपूछोतो मरतानही है यानी उसका नाशनही होता। हाँ! स्थूल शरीरका नाश जरूरहोताहै।

(१४२)-गर्भठहरेबाद सातदिनमें उसवीर्यश्रोणितका गर्भा-शयमें कुछ गाढ़ापन बनताहै, बाद सातदिनकेपीछे उसका और ज्यादातर कठिनपींड बंधकर आँमकीगुठलीकीतरह बनताहै, बाद सातदिनकेपीछे उसपींडकी कठिनमांसग्रंथी बनकर महिनेभरमें-बढ़-स्मेलहताले-वजनदार होजाती है, दूसरेमहिने कुछज्यादे क-ठिनहोकर तीसरेमहिने-दूसरेलोगोंकोभो-गर्भकाआकार मालूमदे-नेलगताहै, पाँचवेमहिने हाथपाँव-और-मुख-तयार होते हैं, छठेस-हिने पित्त-और-लोहीबननेकीशुरुआतहोती है, सातवेमहिने छोटी नसें-और-आठवेमहिने पूरेपूराशरीर तयारहोजाताहै, नवमेंमहिने हाड-केश-और-नखवगेराबनते हैं। माता-जोकुछ खातीपीती है

उसका-रस-पहुचकर गर्भकों ताकतमिलतीरहती है. अंधिरकोठरीमें पड़ेहुवे आदमीकी तरह अकसर उसकों तकलीफही उठानीपडती है, गर्भकों गिरादेना बडाहीपापहै, कइखीयें-और-वैद्यलोग-इस-कामकों करते हैं और अपनेआपकों नरककुंडमें डालते हैं. गर्भमें जीव-रोमकेजरीये खानपानकरताहै. जैसेहमतुम खाते हैं-वैसे-नहीं करता. तीसरेमहिने गर्भवतीकों-दोहद-उत्पन्नहोनेलगते हैं, अर्थात् कइतरहके इरादे पैदाहोते हैं, पुन्यात्माजीव गर्भमेंआयाहो अच्छे इरादे होंगे. पापीजीव आयाहो बुरेइरादे होंगे, कितनेक कहते हैं ईश्वरने बुतलाबनाकर औरतकेपेटमें डाला और नवमहिनेबाद वह जन्मा-(जवाब,) यहबात जूठहै, सबबकि-सबजीवोंका शरीरबमे-राबनाव उसके पूरव जवके कियेहुवेकर्मके जरीयेसे बनते हैं. ऐसा न-होताहोतो-एक-दौलतमंद-और-एक-गरीब क्यों!-एकराजा-एकरंक क्यों!-एकखूबसूरत-एकझानी एकमूर्ख क्यों!-क्या ईश्वरका उन्होंने कुछ बिगाड-सुधार-कियाथा!-अगरचे नहींकिया था तो विचित्रबनाव क्यों!-अगरकहोगे जैसेजैसे जीवके कर्मये-वैसे-रूप-रंग-आकार-सुख-दुख-हुकमहोदा-ज्ञान-और-अज्ञान-उसकों प्राप्तहुवे-तो-बतलाइये! फिर उस ईश्वरने क्या! किया!-असलपुछोतो-काल-स्वभाव-कर्म-और-उद्यम-इनकेसमागमसे सब बनावबनते हैं, जिनमेंभी, पूरवकृतकर्म-सबसे-ज्यादेताकतबरहै, पूरवभवके कियेहुवेकर्मानुसार जैसा कर्मका संचा-जीव-शाण्डलेता आयाथा उसकेजरीये माताकेपेटमें अपना रूप बनाया, जैसे खां-डकोखेलौने संचेकेजरीये बनायेजाते हैं जीवभी अपनाशरीर पूरव संचितकर्मरूपसंचेद्वारा बनाताहै. ईश्वरकर्त्ता माननेवालोंकों यहकथ

नापसंदहुइ-और-निर्दूषण परमात्मा रागीद्वेषी बनकर कुंभारकी तरह हमारातुमाराशरीर दिनरातबनाता रहे यह पसंद हुवा.

(१४३)-जगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामाननेवाले-नवीनवेदांती-नैयायिक-वैशेषिक-पातंजल-नवीनसांख्य-इशाइ-और-मुसल्मान है, जैन-बौध-प्राचीनसांख्य-वगेरा-जगतकाकर्त्ता इश्वर है, ऐसा नहीं मानते. अगरजगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामानाजाय-तो-पहिले यहस्वाल पैदाहोगाकि-इश्वर-देहधारी है-या-देहरहितहै-?—अगर कहोगे देहधारी है-तो-उसके पुन्यपाप होनेचाहिये. बिदून पुन्य-पाप-शरीर-नहीबनसकता. अगरकहाजाय-देहरहितहै-तो-बिना हाथपांव किसीसें कोईचीजकी रचना नहीहोसक्ती. अगरकहाजाय इश्वरने लीलामें आनकर दुनियाबनाइहै-तां-वह-रागवानहै, इश्वर नहीकहाजायगा. सबबकि-रागद्वेषहोना इश्वरकेलिये दूषणहै. अगरकहाजाय कृपाकरके रचनाकियीहै तो एककोमुखी और एकको दुःखी क्यों बनाये ? अगर कहाजाय मुखदुःख काहोना जीवोंके कर्माधीनकीवातहै-तो फिर-बतलाना चाहिये उस इश्वरने क्याबनाया ?—इतनेपरभी कोईइश्वरवादी हठवादकरे उसको यह सवाल पुछनाचाहियेकि-जब उसने जीवोंको बनाये तब-बतलाओ !—निर्मल-बनायेथे-या-मलीन ?—अगरकहोगे सब-कों निर्मल बनायेथे-तो-बतलाना चाहिये फिरकौनकों निर्मलहो-नेकेलिये धर्मशास्त्र रचेगये ?—अगरकहोगे मलीन बनायेथे-तो-बिनाही पापकिये उनकों पापरूपमलीनता क्यों लगादिइगइ ?—ऐसे अन्यायीकों इश्वरकहनाभी नहीबनसकता. कितनेकहते है इश्वर अपनीइच्छासें सबजीवोंको मुखदुःखफल देताहै. (जवाब.)—वो इ-

५ च्छा-इश्वरसें भिन्नहै-या-अभिन्नहै ?-अगर भिन्नहै-तो-वह-इश्वर-का कुछ नहीकरसकती. अगर अभिन्नहै-तो-उसका घडीमेंउ-  
त्पन्नहोना-और-घडीमें नाशहोना-नित्यइश्वरमें नहीहोसकता.

(१४४)-अगर इश्वरवादीयोंकी खातिरसें जगतकाकर्त्ता इ-  
श्वरहै ऐसामाने-तो-उपादानकारण कौन रहा ?-अगर इश्वरकीश-  
क्तिकों उपादानकारण माने-तो-सवाल पैदाहोताहै-बो-शक्ति-इ-  
श्वरसें भिन्नहै-या-अभिन्न ?-अगर अभिन्नहै-तो-बतलाना होगा  
बो-जडहै-या-चेतन ?-अगर जडहै तो-कहिये !-नित्यहै-या-अनि-  
त्य ?-अगर भिन्न-और-नित्यहै-तो-यह जो कहनाहोताहैकि-सबसें  
पहिले-एक-इश्वरही-नित्यपदार्थ था-यह झूठ हुवा, अगरकहोगे-  
बो-शक्ति-अनित्यहै-तो-उसका उपादानकारण कौन ?-और-यह  
नियमहैकि-नित्यसें अनित्यकी पैदाश नहीहोती. अगर-बो-शक्ति  
इश्वरसें अभिन्नहै-तो-फिरसबवस्तुकों इश्वरहीकहानाचाहिये. उंच  
नीच-राजारंक-नरकस्वर्ग-धर्मअधर्म-सबइश्वरही बना. फिर इश्व-  
रने जगत-क्या !-रचा-बल्किन ! अपनास्वरूपही बिगाडलिधा,  
ठीकहै महाशय ! आपका इश्वर ऐसाही होनाचाहिये, जो अवतार  
बनकर सुंदर स्त्रीयोंसें भोगकरे. चौरबनकर चौरीकरे-दूसरेसें-स-  
गाइकिइहुइस्त्रीकों भगाकर लेजावे-दूसरोंकों दिलासादेकर ठगाइ  
करे-बाजा बजावे-नाचेखैले-और-फिर-निर्मलज्योति स्वरूपबन-  
जावे, धन्यहै !-ऐसे इश्वरकों !-अपनीस्त्रीकों-कोइ हरणकरजावे-तो  
उसकेपीछें रोताफिरे एकभाइबनाकर उसकों जब लडाइमें-घाव  
लगे-बहोतरोवे, उसकों आरामहोनेकेलिये जडीबूटी मंगावे-जो-  
इश्वर-बैलपर चढे-एकस्त्रीकों अपने अर्द्धांगमें रखे-किसीके आगे

नंगाहोकर नाचे किसीकों वर और किसीकों सराप देवे. तथा जो-अप्सराकारूपदेखनेके लिये चारमुखबनावे-और-अपनीबेंटोसे भोगकरे धन्यहै जो ऐसे अन्यायीकों जगतकेकर्त्ता-हर्त्ता-तथा-इ-श्वर-मानते हैं, कइलोग कहते हैं इश्वरने जलमें अपनावीर्य छोडा उसका-अंडा-बना-फिर उसअंडेके-दोहिस्से-बनकर-एककानाम पृथ्वी और एककानाम स्वर्ग कहलाया, कितनेककहते हैं इश्वरही जगतमें घुसकर सबखैल खैलरहाहै.

(१४५)-कितनेकहते हैं-मनुष्योंकों अपनेउद्धारका कोइरस्ता नहीं मिलताब वें रौने लगे तब करुणानिधान विश्वपिताने उसकों सुनकर एक-वैदज्ञारिषिके हृदयमें प्रकटहुवे, ऐश्वरीयशक्तिसें बलवानहोकर महर्षि खडेहुवे और संसारकों कहनेलगे हे ! विश्वपुरवासीलोग !-सुनो ! मैने उसभनादिपुरातनपुरुषकों जानाहै, आदि-त्पकीतरह उसका वर्ण है. अज्ञानीलोग उसकों स्पर्शनही करसक-ते. उसकों जाननेसें तुमलोग मृत्युकेहाथसे छूटोगे. इसकेशिवाय दूसरामार्ग नहीं है. धन्यहै ! क्या ! कहना यहभी खूबदंगहुवाकि इश्वर रिषियोंकेशरीरमें घुसकर बोले-सत्यबातवही ठहरसक्तो है कि-जीव और-जड अनादिसें मिलेहुवे इनकों किसीने बनायानही. अगरबनायाकहे-तो--उसका मसाला (यानी) उपादानकारणरूपप-दार्थ कौन था जिससे वें बनाये गये ? अगरकहोगे मसाला पहिले बनाहुवा अनादिसें था-तो महाशय ! फिर इश्वरने क्या बनाया ? यौगिक-या-मिश्र पदार्थोंके सूक्ष्मअणु दो-तीन-हजार-लाख-करोड-संख्यात असंख्यात या अनंतपरमाणुओंके बने स्कंध कभी अल-गअलगभी होजाते हैं, लेकिन ! मूलपरमाणुओंका विश्लेष नहीं

होता. (यानी)-एकपरमाणुके दोहिस्से नहीहोते, इससे-सिद्ध हुवाकि-मिश्रपदार्थ विनाशशीलहै, असलीपदार्थ-विनाशशील-नही, जीवअनादिअमरहै-एकदेहसे दूसरीदेहमें जानेका नाममृत्युहै, वर्तमानअवस्था पूरवकृतकर्मके अनुसार-और-आगामीअवस्था-वर्तमानमें-जो-कियेजाते है-कर्म-उसके अनुसारहै. यह आत्मा जब तक-सबतरहके-कर्मोंसेरहित-न-होगा-जन्ममरणकेचक्रमें-घूमतारहेगा. शक्तिमान् होतेहुवेभी-मदिरापीये हुवे मनुष्यकीतरह निर्बल हो रहाहै.

(१४६)-कितनेककहते है-इश्वर-वायुचलाताहै-बरसात बरसाताहै-जीवोंको-जन्म देताहै-मारताहै-और-जोकुच्छकरताहै उसीकी रचनाहै.- (जवाब.)-क्या !-इश्वरको ऐसे करनेसे कुच्छफायदाहै-जो-इसतरहकी महनतको उठाताहै ?-अगर कहोगे-हां !-उसेफायदा है-तो-बतलाइये-क्या ! अबतक-उसके असलीस्वरूपमें कुच्छकमी रहगइहै-जो-इसफायदेसे पूरीकरना चाहताहै ?-अगर कहोगे बिनाफायदे ऐसा करताहै-तो-सोचो !-उसकेबराबर अज्ञानी कौन रहा-जो-फायदे बिदून तकलीफ उठावे. पुरुषविना-स्त्री-नही, स्त्रीविना-पुरुष-नही, बीजविना वृक्षनही, वृक्षविना बीजनही-हवा-पानी-जमीन-और-आकाश-इनकेविना-मनुष्योंकी-और-वृक्षोंकी स्थिति-होनामुश्किलहै, जड़-और-चैतन-इनदोपदार्थोंमें सबपदार्थ-अंतर्गत-होसकते है, हरपदार्थमें अपनाअपनागुण रहाहुवाहै, मिट्टीमें यहगुणरहाहै कि-वा-अग्निमेंपडकर कठोर-और लालरंगहोजाती है. लेकिन ! कागजको अग्निमेंजलाकर कोइ कठोर-नहीकरसकता, इसीतरह लकड़ीमें यह गुणहैकि-उसपर



दूसरी लकड़ीधरकर मेंख ठोंकदिजाय-तो-दोनों जुड़जायगी, किंतु धूलपर धूलरखकर मेंख लगानेसे-जुड़ नहीसकती. इसीतरह संसारकेसंपूर्ण पदार्थोंकी परीक्षाकरनेसे सिद्धहोताहैकि-इनवस्तु-ओंमेंही जुड़ेजुड़ेस्वाभाविकगुण रहेहैं, जिनके मिलनेविच्छेदनेसे अनेकनवीनभाव उत्पन्नहोते हैं, जैसे श्याम-और-पीतरंग मिलकर हरितभाव पैदाहोताहै, घासका बीज-जमीनमें-कौन-डालनेजाता है?-जैमे-वह-बरसातकायोगपाकर खुद पैदाहोताहै इसीतरह संसारमें पदार्थोंका अलट पलट प्रवर्तन होकर कइतरहके नवीनभाव उत्पन्न-और-नाशहोतेरहते हैं, वस!-इसीकानाम-थोड़ी बुद्धिवालोंने ईश्वरकीरचना समझ रखाहै..कइलोग कहदेतेहैकि-ईश्वरकों जगतरचनाकी क्यों इच्छाहुइ!-तथा-बैठेबैठाये किसीकीनिंदास्तु-तिका क्यों पात्र बना?-इसका भेद कौन बतासकताहै,!-(जवाब.)-महाशय!-जब इतनाभी नहीबतासकते-तो-मालूमहोताहै तुमकों ईश्वरका कुच्छपक्षपातहै. न्यायप्रियहोतेतो-झूठबातको पकड़-न-बैठते. अगरकहाजायकि-निराकारहोकरभी-जगतरचनाकरनेकी उसमें ताकत-न-हो-तो-वह-सर्वशक्तिमान् कैसे ठहरे?-(जवाब.) सर्वशक्तिमान्-उसकानाम-नही-जो-अपना स्वरूपबिगाडकर-कोइ काम-करे, जगतरचनाकरनेसे उसकों रागीद्वेषीबननेका दोष आताहै, कितनेक कहते हैं जगतकों ईश्वरने नही बनाया-तो-क्या! आपहीआपबनगया?-(जवाब.)-हां-जैसे-तुमारा-ईश्वर-आपही आपबनाहुवा अनादिसिद्धहै-वैसे-जड़-चेतनपदार्थभी आपहीआपबने हुवे अनादिसिद्धहै, जीव-जैसेजैसे कामकरते हैं तदनुसार उनकों फलप्राप्त होते रहते हैं ईश्वरकों इसमेंफसनेकी कोइजरुरतन-

ही. कोई ऐसा न्यायीशूद्र दुनियामें नहीं-जो-रागद्वेषरहित-इ-  
श्वरकों जगतका बनानेवाला सबूतकर सके, जोलोग पक्षपातरूप  
गुद्दी औढकर बैठे है युक्तिप्रमाणकों कुञ्चचीज नहीं समझते-वे  
अगर अपनी वक्तृतासें सबूतकरदेवे-तो-उसकों बुद्धिमानलोग  
मान्य नहीं करसकते. इतना कहनाबनसकताहैकि-कारणरूप दु-  
निया-(यानी)-जड़-चैतनपदार्थ-अनादिमें है-और-कार्यरूप दु-  
निया-(यानी)-तरहतरहकीचीजें जो बनीहुइ नजरआरही है उ-  
नके बनानेवाले सबसंसारजीवहै. इश्वर इनका कर्त्ताहर्त्ता नहीं.

[ अनुष्टुप् ]

स्वयं कर्म करोत्यात्मा-स्वयं तत्फलमश्नुते,

स्वयं भ्रमति संसारे-स्वयमेव विनश्यति, १

कर्त्ता कर्मभेदानां-भोक्ता कर्मफलस्य च

संमर्त्ता परिनिर्वाता-सह्यात्मा नान्यलक्षणः

(अर्थः)-आत्मा अज्ञानकेउदयसें बुरे-और-ज्ञानकेउदयसें  
अच्छेकर्म आपही करताहै. आपही संसारमें भ्रमणकरताहै और  
उमरपुरीहोनेपर आपही एकगतिसें दूसरीकों जाता है, जिसकों  
जाहिरातमें लोग कहते है मरगया. जब सबबातसें निस्पृहहोकर  
धर्मसाधनकरेगा जन्ममरणसें छूटकर सबकर्मोंसें मुक्तहोजायगा.  
और संसारमें न-रुलेगा.

(१४७)-निदान ! माताके-पैटमें-जीव-जब दूसरीगतिसें आ-  
ताहै-पूर्वभवके पुन्यपापानुसार भला-या-बुरा-शरीर बनाता है.  
शरीरपूर्णहोनेपर जन्मपाताहै. आयुष्य थोडाहोगा तुर्त्त मरजाय-  
गा-ज्यादेहोगा बहोतअसेतक-जीयेगा. अच्छेभाग्य होंगे-सुखी-

बुरहोगे-दुखी-होगा-यह सीधीसडकहै, इसको छोडकर चलेगा खता खायगा. इश्वरवादीयोंकी-चीं-पीं-इसलिखाणसे बंदहोसक-तो है, उनकी खौपडी ठंडीहोकर कंधेसे कुतर्करूपीभूत नीचे उतर सकताहै, व्यर्थबकवादमें बचनाचाहै तो बचभी सकतेहै, लेकिन! अपशोष इतनाही हैकि-हठवादीयोंका मन निर्बल होनेमेंभी-वें-मुखमें कब-हां!-करसकेगें?-खैर!-तोभी-इतनाफायदा जरूरहो-गाकि-जामेमें बहारहोकर-जो-पगज माराकरते है स्यात् नहीमा-रेगें. इश्वरलीलाकी-तान-नही उडावेगें, जिनका मस्तक खराब होगया होगा इसलिखाणमें कुछ दवा मिलसकेगी, कइमहाशय फरमाते है जो जो चीजें इश्वरने बनाईहै उसका सबबयहहैकि-उ-नको देखकर लोग मुजपर विश्वासलावे, लेकिन ! यहवातभी ग-लतहै सोचोकि-उसको दुनियामें विश्वासहासिलकरानेकी क्या ! जरूरत थी?-इतना विश्वासका लालची क्यों! बना?-दुनियाके विश्वास न लानेमे उमका क्या ! बिगडता था?-अगरकहोगे-उस-का इसवातसे कुछ बिगाड था-तो-महाशय !-वो इश्वर नही हो-सकता. सबबकि-उसको परतंत्रताका दोष आताहै. इश्वर अपने स्वरूपमें स्वतंत्र होनाचाहिये.

(१४८)-[ गर्भाधानवगेरा सोलहसंस्कारोंका-बयान -]

संस्कारकरना एकधर्मरूपमर्यादाका किलाहै, इसकाविधान कइशास्त्रोंमें देखागया-आजकल कइलोगोंने भाषामेंलिखकर छप-वायाभी-लेकिन ! लेखप्रणाली अच्छीनहोनेसे कइ लोग उसे स-मझभी-न-सेकें, संस्कृतसे भाषा किइ और उसभाषासेभी-जब पुरेपुराफायदा-न-पहुंचा-तो-उसके बनानेसेभी क्या लाभहुवा ?

निदान! भाषा ऐसी बनाना चाहिये जिससें हरकोई समझसके. संस्कारकराना असलमें कुलगुरुका अधिकारहै-जो-धर्मज्ञ-और-धर्मपरश्रद्धावान्-हो, धर्मभ्रष्ट-अनाचारीकुलगुरुसें कोईकार्य कराना मुनासिबनहीं, कुलगुरु गृहस्थ होताहै, ऐसा धर्मज्ञ कुलगुरु-न-मीले-तो-जानकार श्रावक-हीं-करादे कोईहर्जकीबातनहीं है, संस्कार गृहस्थधर्मके सोलहहोते हैं. (१)-गर्भाधान, (२)-पुंसवन, (३)-जन्म, (४)-सूर्यचंद्रदर्शन, (५)-क्षीराशन, (६)-षष्टिपूजन, (७)-शूचिकर्म, (८)-नामकरण, (९)अन्नप्राशन, (१०)-कर्णवेध, (११)-केशवपन, (१२)-उपनयन, (१३)-विद्यारंभ, (१४)-विवाह, (१५)-व्रतारोप-और-(१६) अंतकर्म.

(१४९)-(१)-गर्भाधानसंस्कार गर्भठहरेबाद पांचवेमहिने कराया जाताहै, गर्भस्थिति होनेकी मालूम चतरस्त्रीकों-तो-उसीवरुतहोजाती है, लेकिन !-उसकानिश्चय जब एकमहिनेकी अस्त्रीमें रजस्वला-न-हो-पुरेपुरा होसकताहै. दोतीनमहिनेबाद-नो-सभीकों-जाहिरहोजाताहैकि-इसेगर्भ-रहा. पांचवेमहिने-जिसरौज सोम-बुध-गुरु-या-शुक्रवार-हो,-दुज-तीज-पंचमी-सप्तमी-या-दशमीतिथीहो,-रोहिणी-हस्त-स्वाति-अनुराधा-श्रवण-शतभिषा-तीनों उत्तरा-या-रेवती-नक्षत्र हो,-उसरौज मेष-और-मकरलग्नकों छोडकर-दूसरेलग्नोंमें ग्रहशुद्धिदेखकर गर्भाधानसंस्कार कराना-चाहिये. अगर स्त्रीकों स्वरोदयज्ञानकी पहचानहो-तो-अच्छे रौज चंद्रस्वर चलतेसमय उक्तसंस्कार करायाजाय निहायतउमदाहै. जितने स्थिर और प्रभावशालीकार्य है चंद्रस्वरमें करने अच्छेहोते है, गर्भाधानसंस्कारकरानाहो उसरौज कुलगुरु-नहाधोकर अच्छे-

कपड़े पहनें के केशरकातिलक लगाकर गृहस्थके घर आवे. गर्भव-  
तीस्त्री-और-उसकापति-साफजलसें-स्नानकर अच्छेकपड़े पहनेके  
जिनमंदिरमें जाय, उसवरुत अगर बाजेगाजे सहित-मंगलगान  
गाती हुई सोहागनस्त्रीयेंभी साथचले बहोतठीकहै. जिनमंदिरमें  
जाकर कुलगुरु-स्नात्रपूजनकरावे-और-जिनप्रतिमाका स्नात्रजल  
एक बर्तनमें लेकर सबलोग घरकों आवे. फिर गर्भवतीस्त्रीकों एक  
सोहागनस्त्री-केशरवगेरासुगंधीचीजका-विलेपनकरे, कुलगुरु-पतिके  
दुपट्टेकेशाथ-गर्भवतीके औढ़नेकी साडीसें ग्रंथीबंधनकरे. और इ-  
समंत्रको पढ़े-(ग्रंथीयोजन मंत्र)-ओं अर्ह-स्वस्ति संसारसंबंध-ब-  
द्धयोःपतिभार्ययोः-युवयोरवियोगस्तु भववासांतमाशिषा, फिर ग-  
र्भवतीकों-और-पतिकों अलगअलग चोंकीपर पासपास बिठावे-  
आप उनकेसामने बैठकर-जिनप्रतिमाका स्नात्रजल-तथा-दूसराप  
वित्रजल जिसमें गुलाब या केवडेकापानीभी मिलायाहो लेकर कु-  
\*शाग्रसें गर्भवतीस्त्रीके शरीरपर थोड़ाथोड़ा सिंचन-करे. और  
नीचेलिखेहुवे मंत्रकों सातदफे पढ़े, [मंत्रः]-ओं अर्ह-जीवोसि जी-  
वतत्वं असि-पाणी असि-जन्मी असि-जन्मवानसि संसारादिसंसर  
न्नसि-कर्मवानसि-कर्मबद्धोसि-भवभांतोसि-भवविभ्रमिषुरसि-पूर्ण  
पिंडोसिजातोपांगोसि जायमानोपांगोसि स्थिरोभव नंदीमान् भव  
वृद्धिमान् भव पुष्टिमान् भव ध्यातजिनो भव ध्यातसम्यक्तो भव त-  
त्कुर्यात् न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवासं-गर्भवासं-प्राप्नोसि  
अर्ह ओं,-पढ़कर सातही दफे जलसिंचनकरतारहे. बाद ग्रंथीबंध-  
नकों छोड़कर ग्रंथीमोचनमंत्र पढ़े, [मंत्रः] ओं अर्ह ग्रंथौ वियोज-

मानेस्मिन्-स्नेहग्रंथिः स्थिरोस्तु वा शिथिलोस्तु भवग्रंथिः-कर्मग्रंथि  
दृढीकृतः-इतनाविधानहुवेवाद पहिले पति और पीछे स्त्री उठे, कु-  
लगुरुकों रुपया श्रीफल या मोहोर वगेरा शक्तिहो देवे, कुलगुरु  
इसमंगलकाव्यकों पढ़कर अपनेघरकों जाय [काव्यं]-ज्ञानत्रयं म-  
र्धगतोपि विदन् संसारपारैकनिबद्धचेताः-गर्भस्यपुष्टिं युवयोश्च तुष्टिं  
युगादिदेवः प्रकरोतु नित्यं, -इति०-सोहागनस्त्रीयें जो मंगलगीतगा-  
नेकों आइथी उनकों मेवाभिठाइ बांटना और जिनमंदिरमें अंगी-  
रौशनीकराना मुनासिबहै.

(१५०)-(२) दूसरा पुंसवनसंस्कार गर्भवतीके आठवेमहिने  
करायाजाताहै. जिसरौज मृगशिरा पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-मूल-या-श्र-  
वणनक्षत्रहो, षष्टि-अष्टमी-द्वादशी-अमावास्या-रिक्ता-दग्धा-क्रूर-व-  
दीहुइ या दूटीहुइ तिथि न हो, किंतु दुज-तीज पंचमी-सप्तमी-द-  
शमी त्रयोदशी या पौर्णिमा तिथिहो, रवि भौम या बृहस्पतिवार  
हो उसदिन लग्नशुद्धिदेखकर पुंसवनसंस्कार कराना चाहिये. ल-  
ग्नशुद्धिमें-केंद्र-त्रिकोणस्थित-बृहस्पति-होना निहायतउमदा है.  
पापग्रह-केंद्र-त्रिकोण-अष्टम-और-द्वादशस्थानमें रहित-अन्यकि-  
सीस्थानमें बैठेहो-तो-बहोतठीकहै-बस !-इसतरहकीलग्नशुद्धिदेख-  
कर उक्तसंस्कार करायाजाय-बहोतअच्छाहै. जिसरौज पुंसवनसं-  
स्कारकराना मुकररकियाजाय उसरौज सवेरेही सोहागनस्त्रीयें  
गर्भवतीकेघर इकठीहोकर मंगलगीतगान करे, गर्भवतीकों चमेली-  
केतैलमें मालीसकरके अच्छेजलमें स्नानकरावे, और अच्छेमहने  
कपड़ें पहनाकर बाजेगाजेकेशाय जिनमंदिरकों दर्शनलिये लेजा-  
य, जिसगांवमें जिनमंदिर-न-हो-वहां-एक-अलगमकानमें-चांदी

या-पीतलका-बनाहुवा सिद्धचक्रयंत्र-काष्ठकीचौकीपर स्थापनकरके उसके सामने लेजाय. मंदिरमें-या-सिद्धचक्रयंत्रके सामने जाकर तीनपरकम्मादेकर गर्भवतीस्त्री नमस्कार करे, कुलगुरु-स्नात्रपूजन करावे, और जिनप्रतिमाका स्नात्रजल एक भाजनमें लेकर घर आवे, गर्भवतीके हाथमें एकश्रीफलदेकर एकचौकीपर बिठावे, और स्नात्रजल तथा दूसरा पवित्रजलकि-जिसमें गुलाबकेवड़ेका पानी मिलायाहो-लेकर-दूर्वासों गर्भवतीके शरीरपर थोड़ाथोड़ा छांटताजाय और इस मंत्रको पढतारहे. [मंत्र]-ओं अर्हन्मः-तीर्थ-करनामकर्मबंधसंप्राप्तमुरासुरेद्रपूजार्हते-आत्मन्-त्वं-आत्मायुःकर्मबंधप्राप्तमनुष्यजन्मगर्भावासमाप्तोसि-तद्-भव-जन्मजरामरणगर्भवासविच्छित्तये-प्राप्तार्हदमो-अर्हयुक्तः-सम्यक्तनिश्चलः-कुलभूषणः-मुखेन तव जन्म-अस्तु-भवतु त्वन्मातापित्रोः कुलस्याभ्युदयः-ततः शांतिः पुष्टिः तुष्टिः ऋद्धिः वृद्धिः कांतः सनातनी-अर्ह ओं-इसमंत्रको सातदफे पढे, फिर गर्भवतीस्त्री-चौकीपरसे उठकर-कुलगुरुको-रूपया-श्रीफल-मोहर-जोकुच्छेदेनाहो देवे. जिनमंदिरमें नैवेद्यका थाल भेजे, शक्तिहो-तो-उसरौज पंचकल्याणिककीपूजा अंगी-रौशनीवगेराधर्मके कामकरनेमें ध्यानदेवे, अपनीअपनी जातबिरादरीकी रसम सबलोग करतेही है लेकिन !-शाथशाथ धर्मकीबढवारीकेकामभी जरूरकरतेरहना चाहिये. गीतगाने आइहुइ स्त्रीयोंको मेंवामिठाइ बांटना-और-अपनेकुटुंबपरिवारको मिष्ठान्न-भोजनजिमना-गृहस्थोंके कर्तव्यकार्य है. जिनमहाशयोंको इस भोजनजिमनेका नियमहो-वे-न-जिमें.

(१५१)-(३)-तीसरा जन्मसंस्कार-जिसवख्त पुत्रकाजन्महो

अच्छे ज्योतिषीकों बुलाकर जन्मग्रहस्पष्ट कराना-और-उसकों-रु-  
पया-श्रीफल-मोहर-जो कुछमुनासिब समझाजाय देना गृहस्थध-  
र्मके उचितकार्य है. सूर्यवगेराग्रह-किसीका भलाबुरा नहींकरते.  
किंतु शुभाशुभके द्योतकहै. जैसेकिसीकार्यकों चले-और-सामनेही  
ढंकानिशान-मिला-तो-कहाजाताहै काम अच्छाहोगा, वैसेही ज-  
न्मके वरुत ग्रहोंकीअच्छीस्थितिदेखकर कहसकते हैंकि-इसलडके  
के पुन्य अच्छे है. ज्योतिषी जन्मग्रहस्पष्टकरके उसकाफलादेश ब-  
र्ननकरे-और-आगेलिखेहुवेमंगलकारी वाक्य मुनावे, ओं अर्ह-  
कुलं वो वर्द्धतां-संतु शतशःप्रपौत्राः-अक्षीणमस्त्वायुर्धनंयशः सुखं  
च-अर्ह ओं-[काव्यं]-आदित्योरजनीपतिः क्षितिपतिः सौम्यस्तथा-  
वाक्यतिः-पुत्रः सूर्यमुतोविधुंतुद इतिश्रेष्ठाःग्रहाःपांतुवः-अश्विन्पादि  
कमंडलं तदपरोमेषादिराशिक्रमः-कल्याणं प्रतनोतु वृद्धिमधिकंसं-  
तानमप्यस्य च-१,-[ दूसरा काव्य. ]-योमेरुशृंगेत्रिदशादिनाथै-दै-  
त्यादिनाथैस्सपरिछदैश्च-कुंभामृतैःमंस्नपितःसदेवः-आद्योविदध्या-  
त् कुलवर्द्धनं च,-[२]-इसतरह ज्योतिषीके मंगलवाक्य पूर्णहुवेबाद  
कुलगुरु-बालककोस्नानकरानेकेलिये-नीचेलिखेहुवे मंत्रमें पानीकों  
मंत्रितकरके तयारकरे,-[मंत्रः]-ओं अर्ह-नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्या-  
यसर्वसाधुभ्यः-[ काव्यं,]-क्षीरोदनीरैः किलजन्मकाले-यै मेरुशृंगे  
स्नपितो जिनेन्द्रः-स्नानोदकं तस्य भवत्व्विदं च-शिशोर्महामंगलपु-  
न्यवृद्धयै-१,-इसमंत्रकों (७) सातदफेपढकर जलकों अभिमंत्रित  
करे-और-सूतिकाकर्मकरनेवाली-कुलवृद्धा-इसजलकों लेकर सु-  
तिकाघरमें जाके पुत्रकों स्नानकरावे, और-नाल-छेदनकरे. प्रसू-  
तास्त्री-किंचित्उष्णजलसे स्नानकरे-इसहालतमें शरीर कमजोर



होजाताहै इसलिये मुनासिबहै सबतरहसावधान रहे, जन्माक्रियासे आरामकेसाथपारहोना-स्त्रीकेलिये-दूसराजन्महै. खानपानमें पौष्टिकपाकवगेरा-जोकुच्छ-वैद्यलोग सलाहदे खानाचाहिये, अशौचनिर्णयकेलिये-निशीथसूत्रके सोलहमे उद्देशमें-और-व्यवहारसूत्रकीभाष्यमें-जन्म-तथा-मृत्युकेघरकों-अशौचयुक्त-कहा. जिसके घर पुत्रजन्मे दसदिनतक अशौच-यानी-दसदिनतक उसघरमें भोजनजिम्मेनेवाले-मनुष्य-जिनेंद्रभगवानकी पूजा-नकरे, धर्मशास्त्र-न-छुहे, और मुखसे स्तवनपाठवगेरा-न-बोले, अगरकोइशखश भोजन दूसरेकेघर जिम्मे-और-अलगरहे-तो-उसकों-अशौच-न-लगनेसे जिनपूजावगेरा करनेकी मनाद्वी नही. जिसकेघर लडकी जन्मे उसके वहां ग्यारहदिनका अशौच-सगेभाइके घर बालकजन्मे और पासपासरहनेसे कइतरहके खानपान वगेरामें-संयोगसंबंध-होतेहो-तो-मुनासिबहै सगेभाइकों पांचदिनतक अशौचमानना, अगर संयोगसंबंध-न-होताहो तो-अशौचनही, परदेशमें अपनी औरतकों बालकपैदाहो-तो-जिस दिनमुने उसीएकदिनका अशौच, जिसघरमें रहतेहो उसमें किसी दासदासीकों बालकपैदाहो तो-चौइसपहरका अशौच, गौ-भैंस-उंठणी-घोडी-या-बकरी-घरमें प्रसूतहो-तो-एकदिनका-अशौच मानना. निदान!-पुत्रजन्मका दसदिनतक अशौच कहा-इसलिये-जिनमंदिरमें पूजन-अंगी-या-रौशनीकरनेकों-नगदरूपये भेजने अच्छेहै, राजेलोग पुत्रजन्मकी खुशीमें-जितनाचाहे उत्सवकरसकते है. केदखानेसें केदीयोंकों छोडदेना-गरीबलोगोंकों भोजन जिमाना-और-कइतरहके राज्य कीय-महसूल-माफकरना-रैयतकेलिये-बडीखुशीकी बातहै. कुल-

गुरुकों दानदेकर खुशकरना-और-प्रभूतास्त्री-तथा-पुत्रकों-साक मकानमें-रखना बहोतठीकहै, याते उनकी तंदुरस्ति अच्छी बनी रहे.

(१.५२)-(४)-चोथा-सूर्यचंद्र दर्शनसंस्कार,-जन्मदिनसें दो-रौजबतीतहुवेबाद तीसरेरौज कुलगुरु सूतिकाघरके नजदीक अलगमकानमें-जिनप्रतिमा-या-धातुमय सिद्धचक्रकायंत्र स्थापनकर अष्टद्रव्यसें पूजनकरे. पोछें एक दूसरीचौकीपर-सुर्नेकी-या-ताबें-कीबनी सूर्यकीमूर्त्ति स्थापनकरे-और-आगे-लिखाहुवामंत्र पढ़कर अष्टद्रव्यसें उसकी पूजाकरे.-[ मंत्रः ]-ओंनमः सूर्याय-सहस्रकिरणाय-जगत्कर्मसाक्षिणे-इहजन्ममहोत्सवे-सायुधः-सबाहनः-सपरिरुद्धः-आगच्छआगच्छ-इदंअर्घ्यं-पाद्यं-वलिं-गृहाणगृहाण-सन्निहेतो भवभव स्वाहा जलं गृहाण-गंधं-पुष्पं-अक्षतान्-फलानि-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-मुद्रां-सर्वोपचारान् गृहाण-शान्तिकुरुकुरु-तुष्टिकुरुकुरु-ऋद्धिं-वृद्धिं-सर्वसमीहितंदेहिदेहि स्वाहा-इसमंत्रसें सूर्यमूर्त्तिकीपूजाकरके-साक्षात्सूर्य-जो-आकाशमें उदय होरहाहै-पुत्रकों-मातासहित-उसका दर्शनकरावे. और-कुलगुरु-इससूर्य मंत्रकों-जो भगाडीलिखाहै पढ़े,-[ मंत्रः ]-ओं अहं-सूर्योसि-दिनकरोसि-तमोपहोसि-सहस्रकिरणोसि-जगच्चक्षुरसि-प्रसीद-अस्यकुलस्य-तुष्टिपुष्टिप्रमोदं-कुरुकुरु शान्तिहितो भव-अहं ओं,-और-इस भगाडीलिखे हुवे-छंदकों-पढ़कर-आशीर्वचन बोले, [ आर्या छंदः ]-सर्वसुरासुखं-कारयिता पूर्वसर्वकार्याणां-भूयात्रिजगचक्षु-मंगलदस्ते स-पुत्रायाः-१,-फिर जिनप्रतिमाकी-तथा-सूर्यमूर्त्तिकी-स्थापना-जो किइथी विसर्जनकरे, अशौचके सबबसें-घरवाले उनकों छुवे नही.

फिर जब संध्यासम आवे-चंद्रदर्शनसंस्कारकेलिये-पुनः-उसीतरह जिनप्रतिमास्थापनकरके अष्टद्रव्यसें पूजनकरे. और-दूसरी चौकी-पर-चांदीकी-या-सफेदचंदनकी-बनीहुइचंद्रमूर्ति-स्थापके-अगाडी लिखाहुवा-मंत्रपढकर-अष्टद्रव्यसें उसकी पूजाकरे,-[ मंत्रः ]-ॐ नमश्चंद्राय-तारागणाधीशाय-मुधाकराय-इहजन्ममहोत्सवे-सायुधः-सवाहनः-सपरिच्छदः-आगच्छआगच्छ-इदंअर्घ्यं-पाद्यं-बलिं-गृहाणगृहाण-सन्निहितो भवभव स्वाहा-जलंगृहाण-गंधं-पुष्पं-अक्षतान् फलानि-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-मुद्रां-सर्वोपचारान् गृहाणं-शांतिकुरुकुरु ऋद्धिंवृद्धिंसर्वसमीहितं देहिदेहिस्वाहा. इसमंत्रसें चंद्रमूर्तिकी पूजा करके साक्षात् चंद्र-जब उदयहोवै-पुत्रकों-मातासहित-उसकादर्शन करावे. और कुलगुरु इमचंद्रमंत्रकों जो-अगाडी लिखाहै पढे,-[ मंत्रः ]-ॐ अर्हं चंद्रोसि-निशाकरोसि-नक्षत्रपतिरसि-मुधाकरोसि-औषधीगर्भोसि-प्रसीद-अस्य-कुलस्य-तुष्टिपुष्टिप्रमोदं-कुरुकुरु शांतिहितो भव-अर्हं ॐ,-और इस अगाडीलिखेहुवै-काव्यकों-पढकर-आशीर्वचन बोले. [ काव्यं, ]-सर्वोपधीमिश्रमरीचिराजिः-सर्वापदांसंहरण प्रवीणः-करोतुवृद्धिं सकलेपि वंशे-युष्माकमिंदुः सततं प्रसन्नः-१,-फिर कुलगुरु जिनप्रतिमा तथा चंद्रमूर्तिकों विसर्जनकरे, घरवाले-रूपया-मोहरवगेरा-जो कुच्छ कुलगुरुकों देना हो-देवे. रुपये पैसैकों अशौच नहीहोता. आजकल-इस संस्कार कीजगह-लोग-आरीसाही-लडकेकों दिखलादेते है.

(१५३)-(५)-पांचवासीराशनसंस्कार-जिसरौज चंद्रार्कदर्शनसंस्कार करायाजाय-उसीरौज-या-उसके दूसरेदिन-बालकों स्तनपानकरानाचाहिये. जन्मकालमें तीनरौजतक प्रभूतास्त्रीकादूध

विकारवालारहताहै, इसलिये उनदिनोंमें औषधीद्वारा-या-गौके-  
 दूधमें-बालकका रक्षणकरना ठीकहै, जोलोग जलदी करते हैं उ-  
 नके बालककों-कइतरहके रोग पैदाहोते हैं. स्तनपानकरानेमें प-  
 हिले कुलगुरु-इसमंत्रद्वारा-ओं-अमृते-अमृतोद्भवे-अमृतवर्षिणी-  
 अमृतं श्रावयश्रावय-स्वाहा-(१०८)-दफे-पानीकों अभिमंत्रितक-  
 रके प्रसूतास्त्रीकों-देवे, प्रसूतास्त्री-उसजलमें स्नानकरके-जिसत-  
 र्फकास्वर-चलताहो उसतर्फका स्तन-लडकेकों-पहिले पिलावे.  
 कुलगुरु उसवरुत एक चौकीपर सामनेवैठकर इसमंत्रकों पढे.-  
 [ मंत्र: ]-ओं अहं-जीवोसि-आत्मासि-गुरवोसि-शब्दज्ञोसि-गंधज्ञो  
 सि-रसज्ञोसि-स्पर्शज्ञोसि-सदाहारोसि-कृताहारोसि-अभ्यस्ताहा-  
 रोसि-कावलिकाहारोसि-लोमाहारोसि-औदारिकशरीरोसि-अने  
 नाहारेण-तवांगं वर्द्धतां-बलंवर्द्धतां-तेजोवर्द्धतां-पाटवं वर्द्धतां-सौ-  
 ष्ठवंवर्द्धतां-पूर्णायुर्भव-अहं ओं.-तीनदफे इसमंत्रकों पढे, बस! इ-  
 तनाहीविधान इससंस्कारमेंकियाजाताहै, कुलगुरुकों रुपया-मोहर  
 जोकुच्छदेनाहो-देवे.

(१५४)-(६)-पष्टिपूजनसंस्कार-जन्मसेछठेरौज करायाजाता  
 है. उसरौज श्यामकेवरुत-न्यातगोतकी-स्त्रीयें-इकठीहोकर प्रसूता  
 स्त्रीके स्थानपर मंगलगीत-गानकरे, और काठकी एकचौकी ले-  
 कर चांदी-या-कांसेका स्थाल स्थापनकर उसमें केशर-या-कुंकु-  
 मका साथिया बनावे, फिर उसपर चावलोंद्वारा चक्रेश्वरी देवीके  
 चरणोंकी स्थापनाकरे. फिर सोदागनस्त्रीयें कुंकुम अक्षत धूप दीप  
 नैवेद्य फुल वगैरासें उनकी पूजाकरे, और प्रसूतास्त्रीकों सुगंधकी  
 धूप देवे. फिर कुलगुरु-परमेष्टिमंत्रमें जलकों मंत्रितकरके बालक-

पर दुर्घासैं अभिषेक करताहुवा-इसमंत्रको पढे,-[ मंत्रः ]-ओं-अहं जीवोसि-अनादिरसि-अनादिकर्मभाक् असि-यत्त्वया-पूर्वे-प-कृति स्थितिरसमदैशैः-आश्रववृत्याकर्मबद्धं-तद्वन्धोदयोदीरणा स-त्ताभिः-प्रतिभुंक्ष्व-माश्रमकर्मोदयफलं भुंक्ष्व-उच्छेदंदध्याः-नचाशु भकर्मोदयफलभुक्त्या-विषादमाचरे-तवास्तु-संवरवृत्या-कर्मनिर्ज-रा-अहं ओं,-कुलगुरुको-रूपया-मोहर-जोकुच्छदेनाहो-देवे.

(१०५)-७-सातवा शूचिकर्मसंस्कार-जन्मसमयसैं दशदिन बतीतहोनेकेबाद-ग्यारहमें-रौज करायाजाताहै. लेकिन!-अगर-उसरौज-भरणी-कृत्तिका-आर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-अश्लेषा-मघा-चि-त्रा-विशाखा-मूल-श्रवण-धनीष्ठा-और-पूर्वाभाद्रपद-ये-नक्षत्र-या रवि-मंगलवार-आजायतो उसरौजको बचाकर एकदोरौज आ-गेको करना चाहिये. जिसरौज शूचिकर्मसंस्कारकराना-हो-उस रौज-अपनेघर उमदावाजा बजवाना-और-दीनहीनलोगोको-अ-नुकंपादान-देना-जरुरीकामहै. जिसमकानमें जन्महुवाहो-उसको लींपापौताकर साफकरना-मबतरहसैं दुर्गंधको हटाकार-सुगंधी धूपसैं पवित्रबनाना-और-प्रमूनास्त्रीको-तथा-पुत्रको-उबटनालगा-कर स्नानकरानाचाहिये. साफकपडें पहनकर अशौचदूरकरना-बहेनभाजेजको-वस्त्रआभूषण देना-और-न्यातविरादरीको-मिष्टान्न भोजन जिमाना-गृहस्थधर्मके उचितकामहै. ज्यादाशक्ति-न-हो-तो श्रीफल-मोहर-मीठाइवगेरा देना, धनवान-और-राजेलोग-तरह-तहरके-भोजनजिमाकर-जातविरादरीको-तथा-संपूर्णरियासतको-सत्कारकरनाचाहे-तो-करसकते है. लेकिन!-जितनाधन-संसारके कामोंमें लगागाजाय-उतनाही-धर्ममेंभी लगायाजाय तभी तारीफ

की बात होगी. पंचम कालकादोष बताकर कोइमहाशय !-कहना चाहे-आजकल-ऐसे धर्मीशुरूश कहाँ है !-जो इतना धन धर्ममें लगावे ?-( जवाब. )-इतना-न-लगासकेतो-आधा-या-चौयाइ हिस्सातो अलबते ! लगाना चाहिये. क्या ! जिनमंदिरमें अंगीरौशनी कराना-स्वधर्मीवात्सल्यकरके-धर्मकों उच्चेजनपहुंचाना-इतना-भी-न-बनसकेगा !-जितनाबने उतना बनाना चाहिये, जगतमें सारबस्तु-धर्मही-है.

( १५६ )-८-आठवा-नामकरणसंस्कार-यह-संस्कार उसीरौज करदियाजाताहै जिसरौज शुचिकर्मसंस्कारकरना उपर लिख आये. अगर उसरौज लडकेकानाम-न-रखागया हो-तो-जिसरौज मृदु-ध्रुव-क्षिप्र-और-चर-संज्ञावाले नक्षत्र हो. चंद्र-बुध-बृहस्पति शुक्रवारहो-चौथ-अष्टमी-नवमी-चतुर्दशी-अमावास्या-पौर्णिमा-संक्रांतिकेदिन-तथा-पंचककेदिन. न-हो-और-लग्नशुद्धिमें-गुरु-शुक्र चौथे भुवनमें-बैठेहो-ऐसे-अच्छेरखतपर-नाम-रखना चाहिये. बहो तरौजतक बिदून-नाम-रखना अच्छानही. ज्योतिषशास्त्रके फरमाने मुताबिक-जिसराशिका-चंद्रमा-उसके जन्म समय-हो-उसराशिकेहफोपर-लडकेका नामरखना ठीकहै. चू,चे,चो,ला, (अश्विनी १) ली,लू,ले,लो, (भरणी-२) अ,ई,ऊ,ए, (कृत्तिका-३) ओ, वा,वी,वू, (रोहिणी-४) वे,वो,का,की, (मृगशिरः-५) कू,घ,ऊ, छ, (आर्द्रा-६) के,को,हा,ही, (पुनर्वसु-७) हू,हे,हो,डा, (पुष्यः-८) डी,डू,डे,डो, (अश्लेषा-९) म,मी,मू,मे, (मघा-१०) मो,टा,टी,टू, (पूर्वाफाल्गुनी-११) टे,टो,प,पी, (उत्तराफाल्गुनी-१२) पु,ष,ण,ठ (इस्तः-१३) पे,पो,रा,री, (चित्रा-१४) रू,रे,रो,ता, (स्वातिः-१५

ती,तू,ते,तो, (विशाखा-१६) ना,नी,नू,ने, (अनुराधा-१७) नो,  
या,यी,यू, (ज्येष्ठा-१८) ये,यो,भ,भी, (मूल-१९) भू,ध,फ,ढ, (पू-  
र्वाषाढा-२०) भे,भो,ज,जी, (उत्तराषाढा-२१) जू,जे,जो,खा, (अ-  
भिजित्-२२) खी,खू,खे,खो, (श्रवण-२३) ग,गी,गू,गे (धनिष्ठा-  
२४) गो,सा,सी,सू, (शतभिषक्-२५) से,सो,द,दी, (पूर्वाभाद्रप-  
दा-२६) हू,अ,झ,थ, (उत्तराभाद्रपदा-२७) दे,दो,च,ची,  
(रेवती-२८)

अश्विनीभरणीकृत्तिकापादे [मेषः] कृत्तिकाणां त्रयः पादारो-  
हिणीमृगशिरोर्द्धे [वृषः] मृगशिरोर्द्धे आर्दीपुनर्वसुपादत्रयं [मिथुनः]  
पुनर्वसुपादमेकं पुष्य-अश्लेषांतं- [कर्कः] मघाच पूर्वाफाल्गुनी उ-  
त्तराफाल्गुनी पादे [सिंहः] उत्तराफाल्गुनीपादत्रयं हस्तचित्रार्द्धे  
[कन्या] चित्रार्द्धे स्वातिविशाखापादत्रयं [तुला] विशाखापादमेकं  
अनुराधा ज्येष्ठांतं [वृश्चिकः] मूलं च पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादे  
[धनुः] उत्तराणां त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्द्धे [मकरः] धनिष्ठार्द्धे श-  
तभिषक् पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं [कुंभः] पूर्वाभाद्रपदापादमेकं उत्तरा  
भाद्रपद रेवत्यांतं [मीनः]-

इसतरह ज्योतिषकेकायदे मुजब नाम रखाजाय तो अच्छाहै,  
नामशब्दका संबंध जबतक आत्मा शरीरमें बनारहताहै तबतक  
रहताहै. इसलिये नाम ऐसा उमदा और सार्थक रखनाचाहिये-  
जो-बोलतेही खुशी पैदाहो. बहोतसे लोग-अपनेबालकका नाम-  
(यह समझकरकि-इसपर किसीकी खोटीनजर असर-न-करे)-  
कुडा-छीतर-गोबर-गांढा-घेला-बगेरा रखदेते है यह ठीकनही.  
बल्किन्!-उनको बडेहोनेपर संसारमें सदाकाल अयमानितशब्दोंका

सहन करना पड़ता है. इसलिये नाम-बढ़-रखना चाहिये-जो कुम्हार-  
व्यक्त-और-आलहादजनक हो. नामका निश्चयकरके पीछे स्वजन-  
कुटुम्बपरिवारके सामने बोलदेना चाहिये कि-इसबालकका नाम-  
यह-रखा गया.

(१५७)-९-नवमा अन्नप्राशनसंस्कार-लडकेको-छमहिने-  
और-लडकीको-पाँचमहिनेबाद कराया जाता है. जिसरौज-अभिनी  
रोहणी-मृगशिरः-पुनर्वसु-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनु-  
राधा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये-  
नक्षत्र-निर्दोष-(यानी)-कुराक्रांतवगेरा दोषवाले-न-हो, रवि-सोम  
बुध-गुरु-और-शुक्रवारहो, रिक्ता-अमावास्यातिथि-और-व्यति-  
पात वगेराखोटेयोग-न-हो, उसरौज लग्नशुद्धिदेखकर अन्नप्राशन  
कराना चाहिये, [ लग्नशुद्धिः ]-लग्नमें सूर्य-मंगल-शनि-या-कृश-  
चंद्रमा-पड़ाहो-तो अच्छानही, बुध-पड़ाहोतो-लडका-ज्ञानवान्-  
होगा, शुक्रपड़ाहो-तो-एशआरामकरनेवाला-होगा. बृहस्पति-या  
पूर्णचंद्र-हो-तो-दातारहोगा. येही बुधशुक्रबृहस्पति-केंद्रत्रिकोण-  
या-आठमें-बारहमें-एकशाय-या-अलगअलग-पड़ेहो-तोभी-अच्छे  
हैं, चंद्रमा-छठे-आठमेंभुवनमें पढ़ना ठीकनही. जन्मराशिकी गि-  
नतीसमें चंद्रमा-चोथे-आठमें-या-बारहमेंहोनाभी अच्छानही. इस-  
तरह लग्नशुद्धि देखकर अन्नप्राशनका वस्तु मुकरर करना. जि-  
सरौज यहसंस्कारकरानाहो-जिनमंदिरमें स्नात्रपूजन कराना चा-  
हिये. नैवेद्यकीजगह-क्षीर-लड्डु-पैडे-पुरीकचौरी-या-चावलवगेरा  
जोकुच्छ-अपनेघर बनायाहो-एकथालमें रखकर जिनप्रतिमाकेसा-  
मने चढ़ाना, जिसगांवमें जिनमंदिर-न-हो-वहां-धातुमयसिद्धच-



क्रयंत्र-रखकर उसके सामने यह विधान करना, फिर घर आकर कुलमें जो बड़ेरीहो-लडकेको एकचौकीपर बैठाकर मुखमें भोजनका कवल देवे. और कुलगुरु उसवस्तु सामने बैठकर इसमंत्रकों जो-अगाडी-लिखाहै तीनदफे पढे,-[मंत्रः]-ॐ अर्ह-भगवानर्हन्-त्रिलोकनाथः-त्रिलोकपूजितः-सुधारितशरीरोपि कावलिकाहारं आहारितवान्-तपस्यन्नपि पारणाविधौ-इक्षुरसपरमाश्रमभोजनात्-परमानंदात्-आपकेवलं-तद्देहिन्-औदारिकशरीरमाप्तः-त्वमपि-आहारय आहारं-स्ते-दीर्घमायुरारोग्यमस्तु-अर्ह ॐ,-इसतरह अन्नप्राशन-संस्कारकरायेबाद कुलगुरुको रुपया-श्रीफलवगेरादेना चाहिये. आजसे लडकेको-अन्न-खाना शुरुहुवा.

(१५८)-१०-दसमा-कर्णवेधसंस्कार-तीसरे-पांचमें-या-सातमें-वर्षकराना ठीकहै जिसरौज-अश्विनी-रोहणी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनुराधा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-या-रेवती-नक्षत्रहो-रिक्तातिथिको छोड़कर अन्यतिथि-रवि-मंगल-बृहस्पति-शुक्रवार-और-अच्छायोग हो-उसरौज-लग्नशुद्धिमें-तीसरे-ग्यारहमें शुभग्रह बैठेहो-और-शुभग्रहकेस्थानमें पापग्रह-न-बैठेहो-एसेवस्तुपर-अच्छे-कर्णवेधक पुरुषको बुलाकर लडकेके कान बांधना चाहिये. और-उसको रुपया-या-बख्त-देकर खुशकरना मुनासिबहै.

(१५९)-ग्यारहमा-केशवपनसंस्कार-जिसरौज-मृगशिरा-पुनर्वसु-हस्त-चित्रा-स्वाति-ज्येष्ठा-श्रवण-धनिष्ठा-और-रेवतीनक्षत्र हो-१-२-३-५-७-१०-११-१३-ये-तिथिहो-सोम-बुध-और-शुक्रवारहो-उसरौज चंद्रबल-तया-ताराबलदेखकर-लडकेके प्रथमके-

श उतराना चाहिये. जिस रुमालमें केशपड़े उसमें रुपया वगेरा कुच्छद्रव्य लडकेकेशिरपर उबारकरके डालना-और-नाइकों शि-रोपावदेकर खुशकरना मुनासिबहै, क्योंकि-उसने-लडकेके-केश पहिलपहिले उतारे है, केशउतरायेबाद-दहीं-या-दूधसें-लडकेका मस्तक धुलाकर साफपानीसें उसकों नलहानाचाहिये. शक्तिहो-तो-जातबिरादरीकों मिष्टान्नभोजन-जिमाकर सत्कारकरना-और जिनमंदिरमें-अंगी-रौशनी-कराके-धर्मको उत्तेजन देना-जरूरी कामहै.

(१६०)-१२-बारहमा-उपनयनसंस्कार-आठवर्षकी उमरहुये बादकरायाजाताहै, जिसरौज-अश्विनी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-चित्रा-स्वाति-श्रवण-धनिष्ठा-और-रेवती-नक्षत्रहो-२-३-५-७-१०-१३-ये-तिथिहो-बुध-गुरु-या-शुक्रवारहो-उसरौज-त्यागी गुरुकेपास आनकर-स्वधर्मका मंत्र लेना चाहिये. पहिले कालमें जिनोपवीतरखनेका रवाज था-लेकिन!-इसकालमें वह रवाज रहानही, वर्त्तमानमें उसके मुकाबिला निर्ग्रंथगुरुसें वासक्षेपकराके निजधर्मका मंत्रलेना यही रवाज देखाजाताहै इसलिये उसीमुआफिक वर्त्तना ठीकहै, कइलोग पहिले विद्यारंभ संस्कारकराना जरूरत समजते है, लेकिन!-नही!-पहिले उपनयनकराकर फिर विद्याध्वनकराना योग्यहै. जिसरौज उपनयनसंस्कारकरानाहो-लडकेकों-स्नानमज्जनकराके-अच्छे कपड़ेपहनाकर-वाजेगाजेकेशाथ निर्ग्रंथगुरुकेपास-लाना, और उनकेसामने नमस्कार कराके-एक चौकीपर चावल्लोंका स्वस्तिक बनाना-उसपर-श्रीफलवगेरा चढाकर ज्ञानपुस्तककी पूजाकरना,-(यानी)-पुस्तकपर-रुपया-मोहरब-

मेरा-कुच्छद्रव्य चढाना, निर्ग्रन्थगुरु त्यागीहोते है उसद्रव्यकों ज्ञानमें लगादियाजाय कोइहर्जकी बात नही. इतनेकार्य होजानेबाद निर्ग्रन्थगुरु जब अपनाचंद्रस्वर चले-वर्द्धमानविद्या-पढकर शिष्यपर वासक्षेप करे, और परमेष्ठिमंत्र सुनाकर उसकेमुखसे तीनदफे उच्चारण करावे. वर्द्धमानविद्या-और-परमेष्ठिमंत्र-यहां इसलिये नहीलिखेकि-वें-गुरुओंके कंठहीहोते है. हां!-परमेष्ठिमंत्रकी तारीफ सुनाकर-बयानकरेकि-यहमंत्र सबशास्त्रोंका-सार-और-सबतरहके पातककों दूरकरनेवालाहै, हरवरुन इसकों यादरखना, इससे तेरी धर्मश्रद्धा अचल रहेगी-और-धर्मकेप्रभावसे सबकाम अच्छे होते रहेंगे. जगतमें सारबस्तु धर्म है. पुनप्रसिबहै कि-हरहमेश जिनप्रतिमाका दर्शन-और-निर्ग्रन्थगुरुकों-नमस्कारकरके फिर दूसराकाम करना. जितलियेहो-रागद्वेषवगेरा-दुश्मन जिसने-उसकानाम-जिन है, और-निर्गता-( यानी ) दूरहोगइहो-लोभलालचरुप-ग्रंथि-जिसकी-उसकानाम-निर्ग्रन्थ-है. इसतरह उपनयनसंस्कार पूर्णहुयेबाद जिसतरह बाजेगाजेके शाय गयेथे-वैसेही-पुनःअपनेघरआना-और-जो-लोग-शाय-गयेथे-उनकों श्रीफल-या-मिठाइवगेरा बांटकर विसर्जनकरना चाहिये. इधर निर्ग्रन्थगुरुकों आहारकी निमंत्रणाकरके उनकों आहार प्रदान करना-और-जिनमंदिरमें अंगीरौशनी बनाकर धर्मकों उच्चेज्जन पहुंचाना-अवश्यकर्तव्य-है.

( १६१ )-१३-तेरहमा-विद्याभरसंस्कार, -जिसरौज-अश्विनी-मृगशिरःआर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-अश्लेषा-पूर्वाफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति-मूल-पूर्वाषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-शततारका-और-पूर्वाभाद्रपद ये-नक्षत्रहो-२-४-५-७-१०-११-१२-१३-ये-तिथिहो-रवि-सोम-

बुध-गुरु-और-शुक्रवारहो-उसरौज अच्छेलममें-बालकों-विद्या पढाना ब्रुहकरना चाहिये. विद्यारंभकरतेवख्त-अगर-पढनेवालेका सूर्यस्वर-चलताहो-तो-अच्छाहै, विद्या जल्दी आयगी. जोलोग-पढानेवालेपंडितकों-अपने घरबुलाकर लडकोंको तालीम दिलवा-तेहै उससे पाठशालामें भेजकर तालीम दिलाना ज्यादा फायदेमंद है, जितनीविद्या उसको पाठशालामें हासिलहोगी घरमें बैठकर पढनेसे-न-होगी, विद्याविदून मनुष्य जानवर बराबरहै. विद्वान्मनुष्य हरऐलमको सप्रज्ञसकता है. विद्यासे बडेबडे होदे मिलसकते है, विद्याको हानीलोगोने जवाहिरातसेभी बढकर कहा. विद्याके बलसे आदमी दिग्विजय करसकताहै. पढनेकी मिहनत पहिलेतो तकलीफदेतीहै लेकिन! अखीरमें बडेबडेफायदे पहुंचायगी.

[ पाठशालामें लडकोंको-ये-बाते जरूर सिखलाना चाहिये. ]

जीव अनादि है,-संसारकी आदि नहीं,-

दुनियाका बनानेवाला कोई नहीं.-

सुखदुख-अपने पूर्वभवके कियेहुवे-कर्मोंका-फलहै,

पुन्यकर्मसे स्वर्ग मिलताहै-पापकर्मसे दुर्गति होती है.

धर्मभवर्त्तक-तीर्थकर-सर्वज्ञ-होते है,

मनुष्य-आज-महेलमेंहै-कल-न-मालूम कहांहोगा,?

चाहे राजाहो-या-रंकहो-मरना सबकेलिये है,

दौलत विद्याकी दासी है-इसकाघमंड-न-करनाचाहिये,

राजे लोगोंने पूर्वभवमें पुन्य कियेथे-लेकिन! यहां-न-करमें तो-उनकेलिये बुराहै,

जिसवरुत जिसकाराज्यहो-उनकी विद्याकोभी जरूरपढना चाहिये,

जितनी उमर-जीव-पूर्वभवसे-बाँवलायाहै उतनीही भोगेगा,  
 रास्तेचलते आकाशतर्फदेखना मूर्खोंका कामहै,  
 बरूत चलाजायगा फिर-न-मिलेगा,  
 सोकर मोरही उठो-और-मुँहाथ धोडालो,  
 मातापिताकों मुजरा करो. और-फिर-जंगलकी हवाखानेकों  
 जायाकरो,  
 सवेरकी हवा बड़ी फायदेमंद होती है,  
 कपड़ें साफ पहनों-और-माथेके केशोंकों चमकदार रखो,  
 भोजनजिम्मे बरूत बोले मतकरो-चवाचवाकर खाओ,  
 खाकर थोड़ीदेर सोजाओ-तुर्तही मत खैलो,  
 पिताका कहना हंसीमें मत उड़ाओ,  
 गहरेजलमें मत खैलो-डूब जाओगे,  
 तमाखूकी-डिब्बी-मत खोलो,  
 अफीम-भंग-माजूम-तमाखू-चिलम-और-हुका-मतखरीदो,  
 छतपर चढ़कर मतबैठो-छूरीकटारी मत खोलो,  
 झूठतुफानकरना नालाइकोंका कामहै,  
 जैसीचातहो-वैसी-साफ कहो-झूठ मत बोलो,  
 दूधका गढवा खुला मतखो-बिछी-आकर पीइजायगी,  
 मांसखाना बढापापहै, मदिरापीना बडा दोषहै,  
 शिकार खेलना पापीलोगोंका कामहै,  
 आरामकेबरूत सब तुमकों चाहेगें-तकलीफमें कोई-नही-चाहेगा,  
 बहुरकलाजाननेवाले शरूश बहोत थोडे होते है,  
 चौसठकलाकी माहितगारस्त्री-इजारोंमे-एकहोती है,  
 बर्ताब पेसा रखो-जो-सदा एकसरसा चलाजाय,

अगरकोइशरूख सिधादखनदिशातर्फ समुंदरमें चलाजाय-  
फिर-पिछा-न-आसकेगा-यानी-दोलाखयोजनतक समुंदरहीसमुं-  
दरहै-जातेजाते मरजायगा-उससमुंदरके आगे दूसरीदुनियाभी है,  
जिसकों शास्त्रोंमें धातकीखंड कहा.

जिसमें हमतुम रहते है उसकानाम भारतवर्ष है, जो जंबूद्वीप-  
का एकछोटाभाग समझना चाहिये.

राजधानी उसकों कहते है जहां राजा रहताहो,

शहर उसकों कहते है जहां व्यापार-और-आबादी ज्यादाहो,

कस्बा उसकों कहते है जो छोटीवस्तीहो, गांव उसकों बो-  
लते है जहां फक्त पांचदस झोंपडेंही आबाद हो-व्यापारका नाम  
निशान नही,

जो राजा अपनीरैयतकों तकलीफ पहुंचाताहै कभी स्वता  
स्वायगा.

आकाशमें जो सूर्य-चंद्र-तारावगेरा देखतेहो इश्वरकेबनाये  
हुवे नहीहै, द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा नित्य और पर्यायार्थिकनय-  
की अपेक्षा अनित्यहै, उनमें देवतालोग बसते है और-वैही-देव-  
उनकों चलाते है, थोड़ी बुद्धिवाले उसकामका बौजा इश्वरकेमाथे  
हालते है, शरीर-हाथपांव-कान-नाक-दांत सभी अपनीअपनी?  
तकदीरसें बने है, बंदेकी तकदीर और तदबीर उसे सबतरहके  
भलेबुरे नतीजेपर पहुंचाती है, अगर इश्वरमें ताकतथी तो सबकों  
'एकसरसे सुखी बनाता, एककों अंधा-और-एककों-आंखोंवाला  
क्यों बनाया?-क्या! इश्वरभी पक्षपाती है?-जैसे रैलगाडी जमी-  
नपर चलती है पहिलेजमानेमें विद्याधरलोग आकाशमें विमान च-

लातेथे, लोगोंको एकगांवसे दूसरेगांव पहुंचातेथे. रैलमें जैसे मृत्युका खतराहै विमानमें नहींथा. जैसे डाककेजरीये चीड़ीयां आजकल एकगांवसे दूसरेगांव आदमी पहुंचाते है पहिलेकालमें विद्याधरलोग आकाशद्वारागमनकर पहुंचातेथे. जोलोग कहते है दुनियामें पहिले अंधेरा था-अब-उजयाराहुवाहै बड़ीभूल करते है, बल्किन-पहिलेकालमें ज्यादा उजयारा था-बडेनसीबेदार और बड़ीउमरवाले आदमी होतेथे. धनदौलत रुपरंग और पुण्यवानी लाखदर्जे तेजथी, आजकल धर्मकेघटजानेसे सबतरहकीपुण्यवानी भी घटने लगगइ. भारतवर्षके-छह-खंड जो जैनग्रन्थोंमें लिखेहै उनमेंसे वैताढ्यकी दखनतर्फके जो तीनखंडहै इतनेहीको आजकलके लोग संपूर्णदुनिया समझरहे है, सबबकि-वैताढ्यवर्षतकों छ-छंखके अंगोंको-आजकल कोई नहीं जासकता. असलमें भारतवर्षकी दखनहीकी तर्फ समुंदरहै, लेकिन!-सगरचक्रवर्ती नहरखोदकर जब समुंदरकेजलको उरे लाया-तबसे-उरछीखाबीकोहीलोग समुंदर कहने लगगये. इसीसे भारतवर्षक्षेत्रकी मर्यादा चलविचल होगइ. जैसे आजकल नदीको कांटकर अलग नहर खेजानेसे-क्षेत्रकीमर्यादा छिन्न भिन्न होगइ है-वैसे-सगरचक्रवर्तीके बरतसे बड़ा फेरफार होगयाहै, पहिलेकालमें बारुदको अधिकूर्ण कहतेथे, तोषोंको सहस्रग्री कहते थे, अग्न्यास्त्र-वज्रास्त्र-मोहनास्त्र बनेरा कइतरहकेहथियार पूर्वकालमें होतेथे. जो आजकलके हथियारोंसे लाखदर्जे बढ़कर थे. भारतवर्षका मध्यखंड आजकल-दारा-कंदर मुसल्मान-और इशाइयोंके युद्धसे निर्बल होकर पराधीन हुवाहै. नकशा उसको कहते है जिसमें देश, राजधानी, नगर,

गाव-पहाड-नदी-वन-भौर-जंगलका आकार बतायामवाहो.

पृथ्वी गेंदकीतरह गोलनही-स्थालीकी तरह गोलहै,

एकघडेमें बादाम भरीहुईथी एकलडकेने उसको देखा और  
उसमेंसे बादाम लेनेको हाथ डाला, मुट्ठीभरकर निकालने लगा,  
लेकिन ! घड़ेका मुंह छोटाथा, हाथ न निकल सका. उस्तादने  
कहा इतनीबादाम एकशाय कैसे निकलसकेगी ? थोड़ी ले, लड-  
केने आधीमुट्ठी छोडदीई-और-हाथ तुर्त बहार निकल आया. इ-  
सीलिये कहते हैकि-लोभको घटातेरहो.

देखो !-हाथी कैसा बडागंभीरहे. किसीको मारता नही, चाहे  
कोइ पास जावे, आदमी तो उसपर बैठतेही है, गधा देखो ! कैसा  
खराबहै जो जरा उसकेपास जाओकि-छात मारदे, कहो ! तुम-  
को हाथी बनना है ?-या-गधा ?-सौचकर जवाब दो, बिदून सौचे  
जवाब देना मूर्खोंका कामहै,

मातापिताको गाली बोले सो मुर्ख,

बिदूनमतलब दूसरेके घर जाय सो मुर्ख,

तैरना न आताहो और जलाशयमें कुदे सो मुर्ख,

गुप्तबात करतेहो वहां बिनाबुलाये जावे सो मुर्ख,

सभाका काम सभाकी सलाह बिना करे सो मुर्ख,

नग्नहोकर श्रयनकरे सो मुर्ख,

दोस्तके साथ दगलबाजीकरे सो मुर्ख,

देवगुरुधर्मकी कसम खावे सो मुर्ख,

पंडित होकर मर्ब करे सो मुर्ख,

भयकी जगह एकीला जावे सो मुर्ख,



सर्पकेशाय खेल खेले सो मुख,  
 धर्मीपुरुषकी नींदाकरे सो मुख,  
 हांसीखुशीमें गुस्ताकरे सो मुख,  
 बातकरते आप हंसे सो मुख,  
 किये उपकारकों न पहिचाने सो मुख,  
 देवदर्शन बिना किये भोजन जिमे सो मुख,  
 अनमिलती वस्तुकी चाहना करे सो मुख,  
 देवद्रव्य भक्षणकरे सो मुख,  
 स्त्रीकों गुप्तवात कहे सो मुख,  
 बिना हुंकारा बातकरे सो मुख,  
 अजीर्णहुवे खाना खावे सो मुख,  
 बिना सवार उंठ घोड़ेपर चढ़े सो मुख,  
 वैश्याकेशाय व्यापार करे सो मुख,  
 नाइके घरजाकर हजामत करावे सो मुख,  
 धूपमेंबैठकर भोजन जीमे सो मुख,  
 मृत्युके दिनकों हरदम याद न रखे सो मुख,  
 तकलीफके वखत परमेष्टिमेंत्रकों भुलजाय सो मुख,  
 दुखआनेपर गभराजाय सो मुख.  
 बुखार खांसीवगेरा रोगमें मैथुनसेवे सो मुख,  
 ज्ञानदर्शनचारित्रके उपकरणकों परिग्रह समझे सो मुख,  
 न्यायाधीश होकर अन्यायकरे सो मुख,  
 नमस्कारकरनेवालेसे आकड़ रहे सो मुख,  
 पैशाचमें मुखदेखे सो मुख,

पैदाशर्मसें सोलहपा हिस्साभी धर्ममें न लगावे सो मुखे,  
 व्याकरणपदकर संस्कृतबोलते न जाने सो मुखे,  
 युक्तिप्रमाणकों न माने सो मुखे,  
 भोजन जीमकर तुर्च दिशाजंगल जावे सो मुखे,

पढ़ानेवाले गुरुसें हंसीमशकरीकरे सो मुखे,—एकमास्तरसाहब  
 मदसेंमें लडकोंकों पढारहेथे, उनमें एकलडका ऐसाथा जो हरवख्त  
 सामनेबौलदियाकरता था—और—मास्तरकीबातकों कुछ खयालमें  
 नहीलाता था, मास्तरसाहब एकदिन बेंतकों सिधाकरके बोले!—  
 हमारे बेंतके कौनेके सामने एकगधा बैठाहै, जो लडका बेंतके  
 ठीकसामने बैठाहुवाथा बोल उठा, अजी! मास्तरसाहब! बेंतके  
 दोकौने होते है! आप किसतर्फके कौनेका जीकर करते है!—मा-  
 स्तरकों इस बेंअदबीसें ऐसा गुस्सा आयाकि—उसलडकेकों खूब  
 पीटा—और—मदसेंमें निकाल दिया. पढ़नेवालोंकों चाहियेकि—उ-  
 स्तादके सामने न बोलना—और—हरवख्त ताबेदारी करते रहना,  
 विद्या जभी आयर्गा.

मनुष्य जितना दिनभर मजदूरीकरनेसें नही थकता उतना तीन  
 घंटे लगातार मानसिक परिश्रमकरनेसें थक जाताहै, जिनलोगोंकों  
 लिखने पढ़नेका—और—वाचनेका बहोतकाम पढता है, जो हरवख्त  
 धर्मशास्त्रका उपदेशदेते रहते है, लडकोंकों तालीमदेते है, अदाल-  
 तमें बकालतकरते है, समाधिखगाते है, और—जो—न्यायकरनेकी  
 मिहनत उठाते है, उनकों जरूर मानसिक परिश्रम उठाना पढता  
 है, उनकाशरीर ताकतवरहोनेसेंभी थक जाते है; उनकों चाहिये  
 कि—स्नानपानकी सावधानी—रखे, दूध—घी—मीथी—द्राख—केशर—शि-

छाजित्-मेडूकेबवे पदार्थ-उर्दकीदात-ताजीमिठाई-ताजीसीर-ता-  
जासीरा-पके फल-भनबीदी-और-तवी रसोइ-हरहमेश खायाक-  
रे; और चीजोंका समागम न मीले तो खेर !-लेकिन! रसोइ  
तो जरूर तवीजिमना चाहिये; ठंडीरसोइ बिल्कुल फायदा  
नहीं पहुंचाती,

हरहमेश आठघंटे शयन करो; बायीकरबट सोजाओ-जी-  
भनाकरबट सोना तो घंटा आधघंटाहो सोना चाहिये, बहुधा बा-  
यीकरबट सोना फायदेमंदहै, सबबकि जठराग्निका स्थान इसी-  
तर्फकों है, सोनेकेमकानकी खिडकीयें खुली रखाकरो, पलंगकों  
दिवारसैं लगाकर मत बिछाओ, पगकों साफकरके बिछौनेपर  
बैठो, स्वारापानी कभी मत पीओ-अगर तुमारेशरीरमें अच्छीता-  
कतहै-तोभी-हरहमेश पांचतोले-धी-जरूर खायाकरो, शरीरके  
संचे इससैं तेज रहते है,

अबतक लोग जानतेथेकि-चीनदेशका-किनपान-अखबार  
सबसैं पुराना छपाहुवा मिलताहै, लेकिन!-अब मालूमहुवाहैकि-  
चीनराजधानी पेकिनका-स्थिपपाव अखबार उससैंभी पुराना छ-  
पाहुवाहै, किनपानकों छपते अभी एकहजारवर्ष ही बीते है, परंतु  
स्थिपपाव बराबर (१४००) वर्षसैं छपरहा है. इसमें सब बादशाही  
खबरे रहती है,

चीनदेशमें अगरकोइ शरूब दूसरेको टोपीछतारकर खलाश  
करे तो मइकरी किह समझीजाती है, अमेरिकामें एकदृष्ट ऐसा  
पायागयाहै जिसमेंसैं रात्रीकेवख्त मसालकीतरह मकाब निकल-  
ताहै, सारा जंगल चांदनासैं-सालासल बनजाताहै, कामिस्तको रा

स्वयं परिणयलके दातृनेपासे जो पाइया है वहाँ वनकृतपुत्र-  
बुद्धी पैदा होती है, वहाँ कइ वृत्त देखे है जिनसे रात्रीकेवल दी-  
येकीतरह अग्निकी लाट निकलती भाव्य होती है, मणिमंत्र-  
धीनां अचित्प्रभावः-ठीक है, आसनोंमें मणिमंत्र और औषधी-  
योंका अचित्प्रभाव इसीलिये जानीयाने बयान किया,

(१६२)-१४-चौदहमा विवाहसंस्कार तब कराया जाता है  
जब स्त्रीपुरुष उमरछाड़क हो, जैसे कच्चाफल खाना ठीकनहीं वैसे  
कच्चीउमरमें विवाहकाहोनाभी ठीकनहीं फरमाया, विवाह दूरदे-  
नामें होना अच्छा है, एकगांवमें कन्माकों दिइगइहोस्ते-पिताकोंभी  
कइतरहकी तकलीफ रहती है, जबजब कन्मा पित्तकेघर भायगी  
कुच्छनकुच्छ देनाही पड़ेगा. एकगांवमें विवाहहोनेसे स्त्रीकों अपने  
पिताकी सहायताका भी धमंड रहेगा. जब जब लडाइ दंवा होमातुर्ब  
आपने पित्तकेघर चलीजायगी, पतिके संबंधी स्त्रीके संबंधीयोंसे लगे  
में, जिनके मातापिताकों बवासीर-सय-दमा-पीरगी-और-कोठका-  
रोगहो उनके बेटाबेटीसे विवाहहोना ठीकनहीं, माजरीआंखवाली  
तथा भुरेनेत्रवालीकन्या कुलक्षणी होती, पुरुषभी माजरीआंखवा-  
ला बड़ा दमलवाज होता है, इसकालमें पनरांह-सोलह वर्षकी कन्या  
और बीसवर्षका पुरुष अगर विवाहगृहलासे योजितकिये जाय तो  
समयानुर ठीक है, लेकिन !-अपशोष है कि सत्तरवर्षकी लडकी और  
बारहवर्षका लडका-विवाहितकरदिये जाते हैं, आजकल जल्लके  
हुकूमत कोइ खयाल नहींलाता, जमाना बारीक आरहा है, इस  
लिये-कोइदिनोंमें यहभी बर्ताव देखोमे जो बहोतही-बेमुनासिब  
होता, स्त्रीसे-पति-उमरमें सवाया-देवा-या-दुबुनारो-कामक वि-

वाहका होना फिरभी ठीकहै, लेकिन! पचास साठवर्षके बुढेसँ दश ग्यारवर्षकी लडकी विवाहदेना किसीधुरत अच्छा नही. अपशोषहै कि-आजकल इसबातकाभी कोई खयाल नहीकरता. अगर सवालकियाजायकि-जिसस्त्रीके भाग्यमें-जो पति-होनाहो-वो कैसे मीटे!-(जवाब.) तथापि व्यवहारमें तो यहबात अयोग्यही कहीजायगी. जहांतकबने व्यवहारनयभी प्रमाण करने योग्य है, असलमें-तो-निश्चयनय-मुजबही-बनावबनेगा लेकिन! तोभी बर्तावतो व्यवहारनयमुजबही रखनाचाहिये, निश्चयनय जाननेयोग्यहै और व्यवहारनय प्रवर्त्तिमार्गमें लानेयोग्यहै,

(१६३)-जिस स्त्रीकी बोली अच्छी-न-लगतीहो-और-जिसका रूप सोहावना-न-हो-उसकेशाय विवाहकरना ठीकनही, अच्छीबोली-और-अच्छारूपभी-भाग्यवानीकी निशानी है, आजकलके जमानेमें पुरुषकों अच्छीस्त्री और-स्त्रीकों-अच्छापुरुष मिलना वडाहीमुश्किलहै, जबतक स्त्रीपुरुषका मन नहीमिलता सुखकी स्थिति नही होती. मन जभी मिलताहै दोनोंमें चतराइ-या रूप-हो, इसलिये मातापिताकों-मुनासिबहैकि-अपने बेटाबेटीकों पहिले पुछलेवे, और उनकी रुचीमुजब विवाहकी बातकरे, अगर दोनोंमेंसँ किसीकी इच्छा बखिलाफ देखे तो उनकेशाय स्या दी न करे, अगर कोई सवालकरेकि-ऐसी-शर्मभरीबात-कैसे पुछीजाय!-(जवाब.)-अगर आप न पुछशके तो उनके मित्रोंसँ तलाशकरावे, बिदून इच्छा विवाहकरनेसँ अगाडीपर विरोधपेदा-होगा, जिनकों मित्रोंसँ दरयाफतकरातेभी शर्म आतीहो-उनकों-हमारा कहना-अलबते! न-रुचेगा, खेर!-उनकों चाहिये अपनी-

मरजीपर आधार रखे, हमको तो यहां जो पुनासिबवातहो लिख देनाचाहिये इसइरादेसें उक्तवात लिखीगइहै, जिसको मंजूररखनाहो रखे-न-रखनाहो-मत रखे, कइदेशवाले कहते है एकस्त्री-एकहीपुरुषकेसाथ-या-एकपुरुष-एकहीस्त्रीकेसाथ-उमरभर विवाह-की रस्सीसें बंधे रहे यहवात अच्छीनहीं, वल्किन्! जब शर्तमें फर्क आजाय तुर्त विवाहबंधन छूठजानाचाहिये, आर्यलोगोंने यह बात फिसादकी जड समझकर मंजूर नहींरखी, संसार अपारहै, यहनहीकहसकतेकि-अमूकरसमें अमूकदेशमें सनातनसें चलतीआतीहै कभी नही बदली, हरजमानेमें रीतिरसम बदलतीरहती है, लेकिन!-अच्छेलोगोंने पुनर्लगकी रसम फिसादकीजड समझकर अच्छीनहीकही,

(१६४)-पुनर्विवाहसें इतनेदोष पैदा होंगे. अबलतो स्त्रापुरुषमें पुरेपुरा प्रेम-न-रहेगा, जहचाहे तब पुरुषको-स्त्री-और-स्त्रीको पुरुष-छोडकर दूसरेसें विवाहकरलेगें, अगर एक दूसरेके मरनेके बाद दूसरा विवाहकरलेना ऐसानियम जारीकियाजाय तोभी क-इतरहके दोष पैदाहोंगे, स्त्री-जब विधवाहोकर दूसरेसें विवाहकरलेगी-तब-पहिलेवालेपतिकी चीजवस्तुको उडालेजानेका-उपाव करेगी, उनकेकुटुंबीलोग उसस्त्रीसें लडेगें, बहोतसें धार्मिककुलोंका नामनिशान न रहेगा, और उनके पदार्य छिनभिन्न होजायगें.अच्छेलोगोंने इसीलिये पुनर्विवाहकी मनादी किइहै, अच्छेलोगोंने जोजो कायदे बुरे समझकर नामंजूर रखे है उनको अब चलाना चाहतेहो-तो-सौचकर चलाओ, अगरकहाजाय कि-पुनर्विवाहकी रसम जारी-न-होनेसें व्यभिचार दोष बढ़ताहै, ( जवाब. )-क्या!

पुनर्विवाह होनेसें व्यभिचार नहोगा?—अगर कहोगे—इस बातका ठै-  
का हम कैसे ले सकें?—तो—फिर सौचलो उक्त बातके जारी होनेसें भी  
क्या फायदा निकला!—अगर कहा जाय—गर्भपात होते बचाव होगा  
इसका जवाब भी—यही है कि—चाहे उक्त रसम जारी करो—या—न—करो,  
पापकर्म तो संसारमें सदा ही होता चला आया—यह तो जभी मीट  
सकता है धर्मपर श्रद्धा बढेगी, बिदून धर्मश्रद्धा पापकर्मका इठना  
मुश्किल है, अगर सवाल किया जाय कि—स्वदार संतोषव्रती पुरुष—  
किसी वेश्याको मौलदेकर कोइ काल तक अपनी स्त्री—बनावे—और—उ-  
सके साथ भोग करे तो उसके व्रतमें दोष लगे—या—नहीं?—( जवाब )—  
दोष जरूर लगे, क्योंकि—वेश्या अपनी स्त्री—नहीं. स्त्री—बो—है—जो पं-  
चोंकी साक्षीसें शास्त्रोक्त विधानद्वारा विवाही न हो. अगर कहा  
जाय कि—स्वदार संतोषव्रती पुरुष अपनी स्त्रीके मौजूद होते हुवे—या—प-  
र जानेके बाद दूसरी स्त्रीसें विवाह करे तो—उसको अतिचार—या—अ-  
नाचार—लगे—या—नहीं?—( जवाब. )—उसको अतिचार—या—अना-  
चार—न—लगे, सबब कि—उसको अपनी स्त्री—खुली है, ( सवाल. )—इ-  
सी तरह कोई स्वपुरुष संतोषव्रतधारणी स्त्री—अपने पतिके मौजूद होते  
हुवे—या—उसके मर जानेके बाद दूसरे पुरुषसें पुनर्विवाह करे तो उस  
स्त्रीको अतिचार—अनाचार—लगे—या—नहीं?—( जवाब. )—जैसे पुरु-  
षके लिये पुनर्विवाह करना मर्यादा है वैसे स्त्रीके लिये भी अगर पु-  
नर्विवाह करनेकी मर्यादा सर्वसंघ मिलकर जारी कर देवे तो स्त्रीको  
भी अतिचार—अनाचार न लगे,—( सवाल. )—सर्वसंघ मिलकर उ-  
क्त मर्यादा जारी न करे—और—कोइ स्त्री—अपनी स्वछंदतासें—पुनर्वि-  
वाह कर लेवे—तो—उसको कैसी समझना चाहिये?—( जवाब. )—उसको

बदचलन-समझना चाहिये, क्योंकि-उसने अच्छेलोगोंकी प्रशंसा उल्टा-धन कीइ, अगर सवालकियाजायकि-आपने खूबब्रंधनहाला-सबसंघकी सलाह एकसरस्वीहोवे नही-और पुनर्विवाहकी रसम जारीहोनही. ( जवाब. )-श्रेष्ठपुरुषोंके बांधेहुवे कायदेकों रदकरके नयीरसम जारीकरना चाहतेहो-तब-इसतरहसबकी संपत्तिछिये बिदून समाधिकैसे रहेगी. चाचे-तायेकी-बेटी-या-मामा-फुफीकी बेटी-एकअपेक्षा बहेनही हुइ, लेकिन!-पहेलेजमानेमें ऐसे बहेन भाइयोंका विवाहना अच्छे कुलवाले लोगभी बुरा नही समझतेथे, और अब ऐसे बहेनभाइयोंका विवाहना बुरासमझते है, कहिये! पहिलेकालके कायदे जब रदकिये होंगे तो सबकीसलाहसैं किये होंगे-या-एकदोश्रुसोनेही मिलकर करदियेहोंगे!-अगर एकदो-श्रुसनेही किये होते-तो-सब-संघ-कभी मंजूर न करता, इसीलि-ये कहाजाताहैकि-सबकी सलाहसैं कामकरना चाहिये, यहवात सबकोइ कहसकतेहैकि-पंचमकालके प्रभावसैं दिनप्रतिदिन-धर्मकी हानि-और-अधर्मकीवृद्धिहोना बढताजायगा, देवगुरुधर्मकों लोग कुछचीज नही समझेगें, सबबोलना छोड देयगें, राजेलोग रैयत-कों तकलीफदेयगें, साधुलोग लोभी होजायगें, अच्छेघरानेकीस्त्री व्यभिचारिणी होजायगी, पुनर्विवाहकेलिये लोग हठवाद करेगें, बेटे बापका सामनाकरेगें, धर्मीलोग दुस्वी और अधर्मी मौज उ-ढायगें, कालदोषसैं ऐसेऐसे बनावबनेगें जो-बहोतहीबुरेहोंगें, ले-किन! तैर!-अबतकतो फिर भी दुस्वमयकालका पहिलाही-हि-स्सा-बर्त्तरहाहै, अबसेही-क्यों!-इतिश्री-करने बैठेहो-जहांतकबन पडे धर्मभर्यादाका पालन करनाचाहिये, इसन्यायसैंभी मुनासिब



आयाकि-वनतेप्रयत्न अच्छेकाममें पावन्द रहना.

(१६५)-कोइस्त्रीपुरुष प्रेमानुरागसे आसक्तहोकर मातपिता-  
की विद्वनरजामंदी गुप्तविवाह करलेवे इसकानाम गांधर्वविवाह  
कहते है, किसी मकानमें एकांत मिलकर औरत कहेकि-मैं-आ-  
पकी-स्त्री-हूं-और-पुरुषकहे-मैं-तुम्हाराभर्ता हूं-बस! इतनेविधा-  
नसेही विवाहहोगा मानलेवे-इसकानाम विषयासक्तलोगोंने गां-  
धर्वविवाह रखाहै, लेकिन! ज्ञानीलोगोंने इसको प्रमाणीक नहीं  
कहा, सबबकि-शास्त्रकेहुकमसे बर्खिलाफहै, शर्त्तलगाकर कन्या  
देना इसकानाम अमुरविवाहहै, जैसे जुआखेलतेवरुत कोइशरुश  
शर्त्तलगावेकि-मैं-इसमे हारजाडमातो अपनी लडकी तुमको देदूंगा,  
जोराजोरी दूसरेकी लडकी लेकर अपनी स्त्री बनालेना इसकानाम  
राक्षसविवाह कहते है, छलकपटसे-या-विद्याकेजोरसे-किसीकीलड-  
कीको उडालेजाना इसकानाम पिशाचविवाह कहते है, कइमतावलं-  
बीबाको मंतव्यहैकि-घरछोडकर वनमें जारहना और-स्त्रीपुत्रकोभी  
शाथरखना कोइहर्जकीवात नहीं. घरछोडनेसे वेभी मुनी कहेजायगे,  
लेकिन! ज्ञानीलोगोंका फरमाना इससे विरुद्धहै, वे-फरमाते है  
जबतक धनदौलत-बेटाबेटी-और-स्त्री-नहीछोडी तबतक मुनि न-  
हीकहेजासकते-खेर!-हमको यहां-आर्षविवाहका भेद बतलानाहै  
इसलिये समझलो वैसे वनवासीमुनि-अपनी लडकीको दूसरे वन-  
वासीमुनिके लडकेसे विवाह ते समय फक्त एकगौ-या-बछडा-देकर  
पाणिग्रहणकरावे इसकानाम आर्षविवाह बोलते है, माजापत्यविवाह,  
जो-मातापिताकी रजामंदीसे पंचोंके रुबरु शास्त्रोक्त प्रमाणसे क-  
रायाजाताहै बुद्धिमानोंको यही विवाह मंजूररखना चाहिये, यही  
विवाह जगत् प्रसिद्धहै,

(१६६)-विवाहमुहूर्त्त किसतरह शोधनकरनाचाहिये?—उसका बयान,—रोहिणी—मृगशिरा—मघा—उत्तराफाल्गुनी—हस्त—स्वाति—अनुराधा—मूल—उत्तराषाढा—उत्तराभाद्रपद—और—रेवती—ये नक्षत्र—विवाहके योग्यहै, लेकिन!—इसमें लक्षा—पात—एकार्गल—वेध—उपग्रह वगेरादोष नहोनेचाहिये, नक्षत्रगंडांत—तिथिगंडांत—भद्रा व्यतिपात और—वधूति वगेरा खोटेकालकोभी विवाहमुहूर्त्तमें बचाकर शोधन करना चाहिये, जानकारज्योतिषी क्रांतिसाम्य—दग्धातिथी—अधिक—मास—चौमासा—वगेरा बचाकरकेही शोधनकरते है, बढीहुइ—या—दूटीहुइतिथि—रिक्ता—अष्टमी—षष्ठिद्वादशी—और—अमावास्याकों छोड़कर जिसरौज—२—३—५—७—१०—११—१३—१५—तिथिहो उसरौज विवाहमुहूर्त्त शोधनकरना चाहिये, जिसवख्त सिंहराशिका वृहस्पति—और—धनमीनका सूर्यहो—तथा—गुरुशुक्रग्रह अस्तहो—उसवख्त विवाह—दीक्षा—और—प्रतिष्ठा—करनामुनासिव नही. संक्रांतिके रौज तथाउसके दूसरेरौज—ग्रहणहो—उसरौज—तथा—उसकेबाद सातरौज तक—विवाहकरना मनाहै, जन्मलग्न—जन्मवार—जन्मनक्षत्र—जन्मतिथि—और—जन्ममासमेंभी—विवाहकराना निषेधहै, जन्मलग्नकास्वामी अस्तंगतहो—या—कूरग्रहकरके पराजितहो उसवख्तभी विवाहकराना अच्छानही, जन्मराशिसें और जन्मलग्नसें आठमें लग्नमें विवाहहोना नेष्टहै, बुध—गुरु—या—शुक्रवार इनमेंसे कोईहो—विवाहकेलिये अच्छे है, स्थिर—द्विःस्वभाव—या—चर—इनमेंसे कोईसा लग्नहो अच्छे है, हां! उत्पात वगेरादोषकरके—नाहित—और—लग्नशुद्धिमें उत्तमता जरूर देखलेनाचाहिये, विवाहलग्नकी उदयशुद्धि और अस्तशुद्धि भी अच्छे लोग जरूर देखलियाकरते है, लग्नकास्वामी—और—लग्नके

नवांशकास्वामी-नवांशकों देखताहो-या-नवांशमें युक्तहो-उसको उदयशुद्धि बोलते है, सप्तमनवांशकास्वामी-सप्तमनवांशकों देखता हो-या-सप्तमनवांशमें युक्तहो-उसको अस्तशुद्धि बोलते है, लग्न-दोपापग्रहोंकेबीचमें होनाठीक नही, चंद्रमाभी दोपापग्रहोंके बीच या-पापग्रह करके दृष्टहोना अच्छानही, लग्नमें शुभग्रहका नवां-शहो-और-उसको शुभग्रह देखातेहो-वैसे-लग्नपर विवाहकरना अच्छाहै, सूर्य-तीसरे-छठे-या-दशमेंभुवनमें होना अच्छा, चंद्रमा पहिले-छठे-और-आठमेंभुवनको छोडकर अन्यभुवनमें होना श्रेष्ठ, मंगल-तीसरे-छठेभुवनमें होना अच्छा, बुध-पहिले-दूसरे-चौथे-पांचमें-छठे-आठमें-या-दशमेंभुवनमें होना ठीक, बृहस्पति-पहिले-दूसरे-पांचमें-सातमें-नवमें-या-दशमेंभुवनमें होना अच्छा, शुक्र पहिले-पांचमें-छठे-या-दशमें-भुवनमेंहोना अच्छा, शनि-तीसरे-छठे भुवनमेंहोना उमदा, ग्यारहमें भुवनमें सभीग्रह श्रेष्ठहोते है, छठे-या-तीसरेभुवनमें राहू-हो-और-पांचमेंभुवनमें कोई पापग्रह न हो-और सप्तमभुवनमें शुभाशुभ कोईभी ग्रह-न-हो-ऐसे लग्नपर विवाहका मुहूर्त्त शोधनकरना ठीकहै, स्त्रीकेलिये बृहस्पतिकाबल देखनाचाहिये-पुरुषकेलिये सूर्यबल देखना अच्छा, और-चंद्रबल दोनोंकेलिये देखना अच्छा-और-चंद्रबल दोनोंकेलिये देखना-बहोतठीक होताहै, इसतरह शोधनकरके विवाहमुहूर्त्त निश्चय करे,

(१६७)-अगर ऐसा शुद्धलग्न-न-मिलेतो-सामान्यदिनशुद्धि देखकर चंद्रस्वरचलते वस्तु विवाहकार्यमें प्रवर्तना चाहिये, बरात चढतेवस्तु जरूर चंद्रस्वर लेकर चलना-तोरणछवतेवस्तुभी चंद्र-स्वर होतो उमदाहै, चंद्रस्वर अमृतनाडी फरमायी, इसमें गृहस्थ-

धर्मके जितने स्थिर और प्रभावशाली कार्य हैं अच्छे होते हैं, जिस पुरुषका विवाह अच्छे लग्नमें-या-चंद्रस्वरमें नहीं हुआ है उसको अपनी स्त्रीसे प्रेम नहीं रहता, इसलिये मुनासिब है अच्छे लग्न और अच्छे स्वरमें विवाह करे, अगर लग्न कमजोर भी हो-कोई हर्जकी बात नहीं, स्वर चंद्र होना चाहिये, हस्तमेलनके वस्तु तो चंद्रस्वर जरूर होना चाहिये, अगर सवाल किया जाय कि सारी रात चंद्रस्वर न-चले तो क्या करना ?-(जवाब.)-स्वरका बदलना घंटेघंटे भरमें हुआ करता है, सारी रात चंद्रस्वर न चले यह नहीं बन सकता, अगर सवाल किया जाय कि-ऐसी देखादा स्त्री करके खाली बहे में पड़ना क्या फायदा ?-(जवाब.)-जिसकी इच्छा नहीं मत देखो, शास्त्रकारोंका फरमाना जो माने उनको लिये है, न माने उनको लिये शास्त्र क्या ?-सर्वज्ञ भी कुछ चीज नहीं है, ज्ञानीयोंका फरमाना अच्छे लोगोंने हजारदफे शिरपर चढ़ाया है, और अब भी लाखों करोड़ों लोग शिरपर चढ़ाते हैं, कुछ गिनतीके लोगोंने नमाना तो कुछ परवाह नहीं.

(१६८)-विवाहका मुहूर्त मुकरर हो जाय जब वरके संबंधी लोग कन्याके संबंधीयोंको लिखे कि-अमूकरौज विवाहका मुहूर्त है, फिर कन्याके संबंधी ज्योतिषीको बुलाकर लग्नपत्र लिखावे कि-हमारे कुलकी अमूकनामकी कन्या तुम्हारे कुलके अमूकनामके वरको पंचोंकी साक्षीसे दिइ जायगी. उसका यह लग्नपत्र भेजा जाता है, वह लग्नपत्र जब वरके मातापिताके पास पहुंचे आदरपूर्वक लेवे, उस वस्तु वरकी तर्फका कुलगुरु इस आगे लिखे हुवे मंत्रको पढ़े, [मंत्र:]—ओं ईं परमसौभाग्याय-परमसुखाय-परमभोगाय-

परमधर्माय-परमयशसे-परमसंतानाय-भोगौपभोगांतराय-व्यवछेदा-  
य-इमां अमूकनाम्नीकन्या-अमूकगोत्रा-अमूकनाम्नेवराय-अमूक-  
गोत्राय ददाति प्रतिगृहाण अँई ओं,—फिर वरके मातापिता-गेहने  
कपड़े और इतरफूलेल कन्याकेघर भेजवावे, जब विवाहकेपहिले  
अंदाजन पनराहरौज रहजाय-अच्छेवरुतपर सोहागनस्त्रीयें मि-  
लकर बाजेगाजेशाय कुंभकारके घरजाय,—और-चार मंगलकलश  
बधायकर अपनेघर लावे, मीटीका घड़ा सबकार्यमें मंगलीक मा-  
नागयाहै, सोनाचांदीके कलश अलबते! मौलमें ज्यादे है, लेकिन!  
अच्छेकाममें पहिले मीटीका घड़ाही अच्छासमझागयाहै, दूसरा  
यहभी कारण हैकि-इसअवसर्पणोर्कालमें रिषभदेवभगवान्के वरुत  
पहिलपहिले कुंभकार शिलरही जारीहुवाथा, इसलिये गृहस्थावा-  
सके अवसरमें उसका सत्कारकरना पहिले बयानकियागया, इस-  
तरह चाकबधायकर कुंभकारके घरसे चार मंगलीकघड़े अपनेघर  
लाना-और-उसकों अच्छेकमरेमें स्थापन करना चाहिये, इसरौ-  
जसे समझो विवाहका आरंभहुवा, कुंभकारकेघरसे मंगलकलश  
लाना जैसे वरकेघरसे होताहै कन्याकेघरसेभी होनाचाहिये, दो-  
नोंके घर गीतगान होना-पीठीबटनालगाकर स्नानमज्जनकरना-  
और-शिगारपहेनना-ये-कार्य गुरुहने चाहिये, जब विवाह  
गृहूर्तके आडे सात-या-पांच रौज रहजाय वरके तथा  
कन्याके दोनोंके घर जवारारोपन करना चाहिये, पांचप्याले मी-  
टीके लेकर उसमें जबधान्यकों बौना और उनकों उसमंगलीक  
घड़ेकेपास स्थापनकरना, इसतरह जवारारोपन कियेबाद वहांही  
उसकेपास एकचौंकीपर सातकुलकरोंकी-और-एकचौंकीपर शा-  
सनदेवीकी स्थापना करनाचाहिये,

(१६९)-सप्तकुलकरोंकी स्थापना इसतरहकरना, स्थापनकी-  
 सेहुवे चार मंगलकलश-और-जवारारोपनके पास-सौचेनांदीका-  
 या-काष्ठका-पट्ट-स्थापनकरे, स्थापनकरतेवकत-[ ओं आभारसज-  
 मः आचारवृत्तयेनमः आसनायनमः ] इसमंत्रको सातदफे पढ़े, फिर,  
 [ ओं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतं वर्षय वर्षय स्वाहा, ] इ-  
 समंत्रको पढ़कर कुंकुमचंद्रन असतसें पढ़का अभिषेककरे, (मन्त्री)  
 उसकी पूजाकरे, और उसपर इसतरह .०.०. सातपुंज चावलों-  
 का बनावे, फिर एकएकपुंजपर एकएककुलकरका मंत्रपढ़कर उ-  
 सकी स्थापना श्रीफल और पुष्पमालसें करे, प्रथमकुलकरकी स्था-  
 पनाका मंत्र इसतरहहै,—[ मंत्रः ]—ओं नमः प्रथमकुलकराय-कांचव  
 वर्णाय-इमामवर्णचंद्रयशाम्रियतमासहिताय-हाकारमात्रलवापित-  
 न्यायपथाय-विमलबाहनाभिधानाय-इहविवाह महोत्सवादौ-आम-  
 च्छ-आमच्छ-इहस्थानेतिष्ठतिष्ठ-समिहितोभवभवक्षेमदोभव-उत्सव-  
 दोभव-आनंददोभव-भोमदोभव-कीर्त्तिदोभव-अपत्यसंतानदोभव  
 स्नेहदोभव-राज्यदोभव-अर्थ-पार्थ-बलि-अर्चा-आचमनीयं गृहाण  
 गृहाण-सर्वोपचारान् गृहाणगृहाण-ऐसामंत्र पढ़कर सातपुंजोमेंसें  
 उपरकेप्रथमपुंजपर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापनाकरे और उ-  
 सपर एकरुमाल-रूपया-या-शक्तिहोतो-एकमहोर-चढ़ावे-फिर धूप  
 दीप-नैवेद्य-फल-फूल-और-इतर-चढ़ाकर-उसस्थापनाकेपास-दो  
 पानवीदी धरे, यह प्रथमकुलकरकी स्थापना और पूजाहै, [ इ-  
 सरेकुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै. ]-(मंत्रः)-ओं नमः द्विती-  
 यकुलकराय-स्यामवर्णाय-चंद्रकांताम्रियतमासहिताय-हाकारमात्र-  
 लवापितन्यायपथाय-जम्बुध्वान्तभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ

आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरहमंत्रपढ़कर श्रीफल और-पूष्मालकी स्थापना पूजा उपरलिखेमुजब करना, [ तीसरेकुलकरकी ] स्थापनाका मंत्र इसतरह है. [ मंत्रः ]-ओंनमःतृतीयकुलकराय-श्यामवर्णाय-सुरूपामियतमासहिताय-हाकारमात्ररूपापितन्यायपथाय-यशस्मानभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्) इसतरह मंत्रपढ़कर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखे मुजबकरना, [ चौथे कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरह है ]-(मंत्रः)-ओंनमःचतुर्थकुलकराय-श्वेतवर्णाय-श्यामवर्णमियतमासहिताय-माकारमात्ररूपापितन्यायपथाय-अभिचंद्राभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्) इसतरह मंत्रपढ़कर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपर लिखे मुजब करना. [ पांचवें कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरह है, ]-(मंत्रः)-ओंनमःपंचमकुलकराय-श्यामवर्णाय-चक्षुःकांतामियतमासहिताय-धिकारमात्ररूपापितन्यायपथाय-प्रसेनजिदभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थानेतिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरह मंत्रपढ़कर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापनाका पूजा उपर लिखे मुजब करना--[ छठेकुलकरका-मंत्रइसतरह है, ]-(मंत्रः)-ओंनमःषष्ठमकुलकराय-स्वर्णवर्णाय-श्यामवर्णमियतमासहिताय-धिकारमात्ररूपापित न्यायपथाय-मरुदेवाभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ-आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरहमंत्रपढ़करश्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखेमुजब करना, [ सातवें

कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै, ]-( मंत्रः )-ओंनमःसप्तपकु-  
लकराय-कांचनवर्णाय-श्यामवर्णम्रियतमासहितायधिकारमात्ररूपा-  
पितन्यायपथाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने  
तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-( श्लेषं पूर्ववत्. )-इसतरहमंत्र पढ़कर श्री-  
फल और पुष्पमालकी स्थापनापूजा उपरलिखेमुजब करना, सप्त-  
कुलकरोंकी स्थापना कियेबाद उनकेपास दूसरी चौकीपर शास-  
नदेवीकी स्थापना करनाचाहिये, सोनेचादी-या-काष्ठका-पट्ट स्था-  
पनकरना-और उसका अभिषेककरनावगेरा जैसे-कुलकारोंकी  
स्थापनाकेलिये लिखआये-वैसे-करके एकचौकी स्थापनकरना-  
और-उसपर चावलोंका एककमल आठपांखड़ीका बनाना, [शा-  
सनदेवीकी-स्थापनाका-मंत्र इसतरहहै. ]-ओंनमोभगवतीशासनदे-  
वि!-चतुर्थगुणस्थानवर्तिनि-जैनैन्द्रधर्मालंकारसज्जितांमि-पुन्यमुखि!  
अस्मिन्विवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-स-  
न्निहिताभवभव-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-अलंकारं गृहाणगृहाण-सर्वसिद्धिं  
कुरुकुरुस्वाहा. इसमंत्रको पढ़कर उसकमलपर श्रीफल-और-पुष्प-  
माल स्थापनकरना-और-धूप-दीप-नैवेद्य-मुद्रावगेरा चढाना,-  
फिर षोडशविद्यादेवीयोंके नामसें जिसतरह दिवारपर सोलह टीके  
लगाना-और जिसतरह चित्रमय स्वस्तिक तथा मंगलकलश ब-  
नाना उसकी स्थापना निचेमुजबबतलाइ जाती है,



## [ कौतुकाचारकी स्थापनाका आकार. ]



## ( षोडश विद्यादेवीकी स्थापना, )

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*

मंगलकलश—२,  
जवाराकेप्याले—२,सप्तकुलकरकी  
स्थापना.

\*

जवारेकाप्याला—२

शासनदेवीकी  
स्थापना.

\*

जवाराकेप्याला—२,  
मंगलकलश—२,

चार मंगलकलश-सातकुलकर-शासनदेवी-जवारारोपन-षो-  
डशविद्यादेवी-चित्रमयस्वस्तिक-और-मंगलकलश-उपरलिखेमुजब  
देखलो, चारमंगलकलश-पांचजवाराकेप्याले-सप्तकुलकर-और-  
शासनदेवी-इनकीस्थापना भूमिपर करनाचाहिये, और षोडश-

विद्यादेवी-स्वस्तिक-और-चित्रमयकलश-इनकी स्थापना दिवार-पर करना चाहिये, षोडशविद्यादेवीयोंके नाम-रोहिणी प्रज्ञप्ति-व-ज्रशृंगला-वज्राकुशी-अमतिचक्रा-नरदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गंधारी-महाज्वाला-मानवी-वैरुंध्या-अल्लुप्ता-मानसी-महामानसी इनमें-जो-काली-महाकालीनामकी देवी है उनको समस्तवतीही जानना, जिस कालीमहाकालीको मिथ्यात्वश्रद्धावाले मानते हैं, मांसमदिरा चढ़ाते हैं उसको-यहां नहीं समझना, भूमिपर चारमंगलकलशकी स्थापनाकरना जो उपरलिखआये-वो-इसतरह समझनाकि-दोनोंबाजु दोदो कलश-एकपरएक उपरनीचे धरना-नीचेकाकलश कुच्छबड़ा और उपरका कुच्छछोटाहोनाचाहिये, घाते खूबसूरती मालूम दे, उपरलेदोनोंकलशोपर एकएकश्रीफल और गजलक्ष्माल-लच्छेसहित बांधदेनाचाहिये, उनकलशोंके बीचमें-जमीनपर जो दोहाथका फासला छोड़ा है उसमें कुलकर-और-शासनदेवीकी स्थापनाकी चौकी-तथा जवारेके पांचप्याले उपरबतलायेमुजब स्थापनकरना. इसस्थानकानाम शास्त्रोंमें कौतुकागार फरमाया है, जहांजहां विवाहसंस्कारमें कौतुकागार नाम लियाजाय वहां यही स्थान जानलेना, इसकी स्थापना बरके तथा कन्याके दोनोंकेघर किइजाती है, और विवाहपूर्णहुवेबाद सातदिनतक रखीजाती है,

(१७०)-विवाहके प्रारंभमें जिसदिन पुनासिषष्ठमश्राजाय वरकेपास साफजगहपर एकमंडप बनानाचाहिये. स्थंभोंपर आरीखे दरवजोंपर-तोरण-धजापताका-मंडपके उपर चांदनी-हांडीतखते वनेरा मकानकीसजावट अकसर विवाहकाममें जरूरकरना पड़ती

है, कन्याके घर मंडप ऐसा बनाना चाहिये कि-जिसमें-ठीक सी चमैं-  
 एक बेंदी और चौरी बनानेकी जगह तयार रहे, कइलोग विवाह  
 कार्यमें लाखों रुपये लगा देते हैं और कइलोग इज्जतमें कलंक लगा-  
 कर कंजुसाइका टीका लगवा लेते हैं असल पूछो तो दोनों बातें ठीक  
 नहीं, घर बेंचकर संसारमें वाहवाह कराना, या-धनवान् होकर  
 कंजूस बनना दोनों काम अच्छे नहीं, आदमी उसका नाम है-जो-अ-  
 पनी शक्ति-और-इज्जतकों संभालकर चले, हां!-इतना जरूर कहे-  
 किमें-फजूल खर्च करना मुनासिब नहीं, लग्न दिवससे पहिले जब  
 बरात चढ़े तब अच्छे गेहने कपड़े पहनकर वर अश्वारूढ़ होके चले,  
 सचके अगाड़ी बाजा-उसके बाद-बराती लोग-और वरके-पिछाड़ी  
 सोहागन स्त्रीये मंगल गीत गाती हुई प्रयाण करे, कइदेशोंमें गवैये लोग  
 और वारांगना नृत्य गान करती हुई बरातमें साथ चलती है, यह दे-  
 शदेशकी रसम न्यारी न्यारी है, लेकिन! हां!-ज्ञानी लोग इसको  
 पसंद नहीं करते, बल्किन्! मना फरमाते हैं, असलमें यह बात ठी-  
 क भी है कि-इसका नतीजा अच्छा नहीं. अकसर करके नयी उमर-  
 वाले युवान मोहित होकर घरका धन जरूर उड़ा देते हैं, आतिस्वा-  
 जो-(यानी)-बारूदखाना-छोड़ना भी अच्छे लोगोंने पसंद नहीं कि-  
 या. इसमें दोतरहके नुकसान हैं एक तो फजूल खर्च लगना-और-  
 दूसरे जीव हिंसाका पाप शिर चढ़ना-इसलिये मुनासिब है कि-बारू-  
 दखाना-न-छोड़ना चाहिये, क्या!-राजा-या-रंक-कोइहो-विवा-  
 ह होनेकी खुशी दोनोंके लिये एकसी है, गरीब होगा उसको भी ए-  
 कदफेतो खुशीकी लहरे असर कर जायगी. जैसे लड़का पैदा होने-  
 की खुशी राजाको और गरीबको एकसा होती है वैसेही विवाह-

कीखुशीभी एकसा समझनाचाहिये, इसमें दौलतमंद अपनी दौलतका घमंड लावेकि-जैसी गुजेखुशीहुइहै वैसी गरीबकों नहुइ होगी तो उसकाघमंडलाना फजुलहै. यह खुशीतो गरीबकों भी वैसीही होती है,

(१७१)-इसतरह बरात चलतीहुइ अगाढोबढे. और कुल-गुरु शांतिमंत्रपढताहुवा शायचले,-[ शांतिमंत्र:-]ओं ऐंह-आदिमो अईत्-आदिमो नृप:-आदिमो दात-आदिमो नियंता-आदिमो गुरु:-आदिमः श्रेष्ठ:-आदिमो भर्ता-आदिमो जयी-आदिमो नयी-आदिमः शिल्पी-आदिमो विद्वान्-आदिमो जल्पाक:-आदिमः शास्ता-आदिमः सौम्य:-आदिमः काम्प:-आदिमः शरण्य:-आदिमो बंध-आदिमः स्तुत्य:-आदिमो ज्ञेय:-आदिमो भोक्ता-आदिमः सोढा-आदिमो एक-आदिमो नेक:-आदिमो स्थूल:-आदिमः कर्मवान्-आदिमो ऽकर्म-आदिमो धर्मवित्-आदिमो ऽनुष्ठेय:-आदिमो ऽनुष्ठाता-आदिमः सहज:-आदिमो दशवान्-आदिमः सकलत्र-आदिमो विबोढा-आदिमो ज्ञापक:-आदिमः कुशल:-आदिमो वैज्ञानिक:-आदिमः सेव्य-आदिमो गम्य:-आदिमो विमृश्य:-आदिमो विमर्ष्टा-सुरासुरनरोरगप्रणत:-प्राप्तविमलकेवल:-दयालु:-गरोपेक्षारहित:-परात्मा-परंज्योति:-परं बह्य-परमैश्वर्यभाक्-जगदुत्तम:-सर्ववित्-सर्वजित्-सर्वप्रशस्य:-सर्वबंध:-सर्वपूज्य:-सर्वात्मा-असंसार:-अव्यय:-हृतशंस-यदूत:-विश्वसारो निरंजनो निर्ममो निकलंका-निःपापः निःपुन्यः निर्मना-निर्देही-निःशंसयो निराधारो निरवधि प्रमाणप्रमेयमाता-जीवजीवपुन्यपापश्रावसंवरबंधमोक्षप्रकाशक:-सएवभगवान्-शांतिं करोतु-तुष्टिं करोतु-पुष्टिं करोतु-रुद्धिं करोतु-वृद्धिं करोतु-सुखं करोतु

सौख्यं करोतु-लक्ष्मीं करोतु-ॐ ईं औं,-[ इति स्नातिमंत्रः ]-इस तरह चलती हुई बरात-जिनमंदिरमें और निर्गमगुरुके पास नमस्कार करने-कों जाय, फिर अगाड़ी बढे जिसगांव जाना हो एकगांवसें दूसरे-गांव प्रस्थान करतेहुवे जाय, जब उसगांवमें पहुंचे-कन्याके संबंधी लोग-बरातकी-पेशवाइकरे, बरातसहित-वर-जब तोरण छबने जा-य-उसवख्त कन्याके दरवजे पर-जो-आम्रपत्रका तोरण लगा होता है उसको अपने दाहने हाथसे स्पर्शकरे, राजालोग तलवारसें स्पर्श करते है, उसवख्त बाजेगाजेवालोंको और याचकोंको प्रीति-दान देना चाहिये, अच्छे लोगोंका कायदा है कि-भपनेको खुशी हो उसवख्त-दूसरोंका भी खुश करना तोरण छवकर पीछा फिरे और जहां बरातका डेरा मुकुरर किया गया हो वहां जाय,

(१७१)-जब विवाहमुहूर्तमें घंटाभरका फासलारहे-वर-बरा-तीलोंगोंके साथ-घोड़े पर सवार होकर-कन्याके मंडपद्वारपर जाय, व-हां सामु-एककोरा मोटीका घड़ा और कुंकुमवगेरा तिलक करनेकी सामग्री लेकर सामने आवे और-वरको-तिलककरे, वर-उसमीठी-के घड़ेमें रुपया या-मोहर-वगेरा डाले, फिर वरके पांव-सामु-दू-धसें प्रक्षालनकरे,-और-मंथान-हल-मुशल-धूसर-तथा-चरखेकी आकसें वरको-पौखे,-(यानी)-इन चीजोंको लालकपड़ेमें लपेट कर अलगअलग तीनदफे वरके मस्तक तक फिरातीहुइउतारे, ये चीजें बहोत छोटीछोटी बनीहुइ-इसी कामके लिये तयार रहती है. हानीलोग, इसपौखनेका मतलब इसतरह फरमाते है कि-सामु-जो-तुमको मं-थान दिखलाता है इससें जानलो-विवाहहुवेबाद तुम गृहस्थावासमें मथे जाओगे, हल दिखलानेका यह मतलब है कि-तुम-जमीनकी तर-

खेडात्तेरहोगे, मुसल दिखलानेका मतलब तुम अनाजकीतरह खंडात्तेरहोगे, धूसर दिखलानेका मतलब तुम बैलकीतरह जोतेरहो- और चरखेकीत्राक दिखलानेका तात्पर्य तुम मायाजालसें लपेटे- रहोगें, सासु इसतरकीबसें तुमकों होशियार करती हैकि-अबभी- सौचलो-और-समझजाओ-विवाहमें कोइफायदा नहीं. वर-इसका अर्थ-ऐसे समझताहैकि-सासु-जो-हमकों येये चीजें दिखलाती है इससें हमारे येये फायदे होंगे, मंथानकेदिखलानेसें-जानाजाताहै हमारेघर दूधदर्हीं बहोतहोगा. हलदिखलानेसें जानाजाताहै हमारे खेतीवाडी बहोतहोगी, मुसल दिखलानेसें जानाजाताहै. हमारेघर अनाजबहोत खंडातारहेगा, धूसरदिखलानेसें जानाजाताहै हमारे अनाजवाडी बैल बहोत चलतेरहोंगे, और चरखेकीत्राकके दिखलानसें कहसकते हैकि-हम-इसकी लडकीकेशाथ स्नेहतंतुसें बंधहुवेर- होंगे. इसलिये विवाहकाहोना अच्छा है ऐसा मानकर परवानगी देताहै, इतनेकामहुवेबाद-सासु-चूपहोकर वरकों भीतरआनेकी- अगाइ देती है, इसतरह अगाइहुवेबाद-वर-भींतिरप्रवेशकरे, और जहां सप्तकुलकरवगेराकीस्थापना फिइहुइहो उसजगह कौतुका- गारमें जाय,-

(१७३)-वहां शींगारपहनकर कन्या पहिलेसें आनकर हा- जिररहे, कुलगुरु उसकों वरकीदाहनीतर्फ और कुलकरोंकी स्था- पनाके सामने बैठावे, फिर कुलगुरु-केशरचंदन-श्रीफल-और-सु- पारीवगेरासें-कुलकरोंकी और शासनदेवीकी पूजाकरावे, (यानी) सातश्रीफल-सातकुलकरोंकी स्थापनापर-और-एक-शासनदेवीकी स्थापनापर चढावे, केशरचंदनकुंकमके टीकेदिलावे, बाद लालसू-

त्रकी वरमाल बनाकर वरकन्याकों धारणकरावे, और फिर वरके दुपटेमें कन्याकी चुंदरीकी ग्रंथीबंधन करे, और पीसीहुइ शमीट्ट-क्षकीत्वचा-तथा-पोपलवृक्षकीत्वचा-मिलाकर वरकन्याके दाहने हाथमें देकर दोनोंका हस्तमेलन करावे, और इसमंत्रकों पढे, [हस्तयोजनमंत्रः]-  
 ओं अहं-आत्मासि जीवोसि-समकालोसि-सम-  
 कर्मासि-समाश्रयोसि-समदेहोसि-समक्रियोसि-समस्नेहोसि-समचे-  
 ष्टितोसि-समाभिलाषोसि-समेच्छोसि-समममोदोसि-समविषादोसि-  
 समावस्थोसि-समनिमित्तोसि-समवचोसि-समक्षुत्तृप्नोसि-समाग-  
 मोसि-समविहारोसि-समविषयोसि-समशब्दोसि-समरूपोसि-सम-  
 रसोसि-समगंधोसि-समस्पर्शोसि-समोद्रियोसि-समाश्रवोसि-समसं-  
 वरोसि-समबंधोसि-समनिर्जरोसि-सममोक्षोसि-तदैकत्वं इदानीं  
 अहं औं,-इतिहस्तयोजनमंत्रः,-फिर कन्याके संबंधीलोग मंडपमें  
 वेदीबनानेकीतयारी करे, वेदी चारहाथलंबी होनाचाहिये, उसके  
 चारों कोनेपर हरेवांशकी चौरी बनावे, सात-या-नव-छोटेछोटे  
 मोटीकेघड़े एकएकतर्फ क्रमसे बड़ेपरछोटा इसतरहरखे,-और-त्रि-  
 कोण हरेवाससें उनको बंधन करे, इसतरह चौरी बनाकर चारों  
 तर्फ आभ्रपत्रकातोरण बांधे, वेदीके ठीकबीचमें त्रिकोणाकार  
 अभिकुंड बनावे, फिर कुलगुरु कौतुकागारसें मंडपमें आनकर उ-  
 सवेदीकी प्रतिष्ठाकरे, पुष्प-चावल-कुंकुम-हाथमैलेकर वेदीकाप्र-  
 तिष्ठाकामंत्र पढे,-[वेदीप्रतिष्ठा मंत्रः]-  
 ओं नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै ।  
 साँक्षीधूँक्षौक्षः-इहविवाहमंडपे आगच्छआगच्छ इहबलिपरिभोगं गृ-  
 न्हगृह-भोगंदेहि-सुखं देहि-यशोदेहि-संतर्तिदेहि-रुद्धिदेहि-वृद्धि-  
 देहि-सर्वसमोहितं देहिदेहिस्वाहा, इसमंत्रकों पढकर चारोंकोनेपर

(१७४)-बेंदीकामें पहुँचेबाद वरकन्याकों चौकीपर पूर्वकी-  
र्षमुखकराके बैठावे, कुलगुरु उत्तरदिशातर्फमुखकरके पास बैठे,  
कइदेशोमें ऐसारवाजहैकि-वरकन्याका-हस्तमेलन-इसवख्त-बेंदी-  
कामें आयेबाद करातेहै, लेकिन!-आवश्यकसूत्रकी टीकामें जहां  
रिषभदेवजीकेविवाहका वर्ननचलाहै वहां हस्तमेलन कौतुकागार-  
मेंही करनेका लेखहै, इसलिये वहांही करना मुनासिबहै, चौरीमें  
बैठेबाद कुलगुरु त्रिकोणाकारकुंडमें-जो-पहिले अग्नि स्थापनकि-  
इहै उसकों पींपल-या-कपिथ्यवृक्षके काष्ठोमें प्रज्वलितकरे, और  
उसमें घृत-मिश्री-जव-तील-इंद्रजव-नागरमोथा-छाडछडीला-लॉग  
एलाची-रूपूरकाचली-और-चंदनकाबुरा वगेरा हवनकीसामग्रीमें  
होम करे, फिर वरकीदाहनीतर्फ बैठीहुइ कन्याकों उठाकर वरके-  
सामनेबिठावे, और यह मंत्र पढ़े, [मंत्रः]-ॐ अहं-इदमासनम-



ध्यासीनौ-स्वध्यासीनौ-स्थितौ-सुस्थितौ-तदस्तु-वां-सनातनःसं-  
 गमः अर्हँ औं, -इसतरह मंत्र पढ़कर दुर्वासों पवित्रजलद्वारा वरक-  
 न्याकों अभिषेक करे, फिर कन्याका दादा-पिता-बड़ाभाइ-या-  
 कोई वृद्धपुरुष-हो-वरकन्याकेपास बैठे, उसवरुत-कुलगुरु-नमोर्ह-  
 त्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः-ऐसापढ़कर कहेकि-आपके गौ-  
 त्रोंकासंबंध मैंने जाना-लेकिन ! इससमय सबकेरुबरुभी प्रकाशित  
 होनाचाहिये, ऐसासुनकर वरके संबंधीलोग अपना गौत्र-जाति-वंश-  
 प्रकाशकरे, फिर कन्याके संबंधीलोगभी इसीतरह गौत्रजातिवंशादि  
 प्रकाशकरे, तद अनंतर कुलगुरु इसतरह गौत्रका उच्चारणकरे, औं अर्हँ  
 अमुकगोत्रीय इत्यत्प्रवरः अमुकज्ञातिः-अमुकान्वयः-अमुकप्रपौत्रः-अमु-  
 कपौत्रः अमुकपुत्रः अमुकगोत्रीयः इत्यत्प्रवरः अमुकज्ञातीयः अमुका-  
 न्वयः अमुकप्रदौहित्रः अमुकगोत्रीयः इत्यत्प्रवरः अमुकज्ञातीयः अमु-  
 कान्वयः अमुकप्रपौत्री-अमुकपौत्री-अमुकपुत्री-अमुकगोत्रीयः इत्यत्प्र-  
 वरः-अमुकज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुकप्रदौहित्री अमुकमात्रीयः-इत्य-  
 त्प्रवरः अमुकज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुकप्रदौहित्री अमुकावधू-तद्यु-  
 वयोर्निविडो विवाहसंबंधोस्तु-शांतिरस्तु-तुष्टिरस्तु-पुष्टिरस्तु-धनसंता-  
 नवृद्धिरस्तु-अर्हँ औं, फिर वरकन्याकेहाथसें गंधपुष्प-धूप-नैवेद्यव-  
 गेरासें अग्निकी पूजाकराके चावलक्रीधाणी अग्निकी प्रक्षेपकरावे,  
 और अपनीदाहनीतर्फ वरकों-और-बामीतर्फ कन्याकों बैठाकर  
 इसमंत्रको पढ़े, [ मंत्रः ]-औं अर्हँ-अनादिविश्वं-अनादिरात्मा-  
 अनादिकालः-अनादिकर्म-अनादिसंबंधो देहिनां-वेदानुमतानुग-  
 तानां-क्रोधाहंकारलज्जलोभैः संज्वलमनप्रत्याख्यानाप्रत्याख्याना  
 नंतानुबन्धिभिः शब्दरूपरसगंधस्पर्शच्छापरिसंकलितैः संबंधो

सुबंधःप्रतिबंधःसंयोगःसुगमःसुकृतःस्वनुष्ठितःसुप्राप्तःसुलब्धो द्रव्य-  
भावविशेषेण अहं औ,

(१७५)-फिर कुलगुरु ऐसावाक्य उच्चारणकरे-तदस्तु-वां-  
सिद्धप्रत्यक्षं-केवलिप्रत्यक्षं-चतुर्निकायदेवप्रत्यक्षं-विवाहप्रधानाग्निप्र-  
त्यक्षं-नामप्रत्यक्षं-नरनारीप्रत्यक्षं-जनप्रत्यक्षं-गुरुप्रत्यक्षं-मातृप्रत्यक्षं  
पितृप्रत्यक्षं-मातृपक्षप्रत्यक्षं-पितृपक्षप्रत्यक्षं संबंधःसुकृतःसदनुष्ठितः  
सुप्राप्तःसुबंधःसुसंगतः-तुमारा विवाहसंबंध सिद्धप्रत्यक्ष केवलीप्र-  
त्यक्ष मातापिता सर्व जनप्रत्यक्ष उत्तमप्रकार हुआ, अग्निकीचौत-  
र्क प्रदक्षिणा दिजिये, फिर वरकन्या ग्रंथीबंधनसहित अग्निकी  
चौतर्क प्रथम फेराफिरे जिसमें कन्या आगे और वर पीछे रहे,  
णहिलाफेरा फिरकर पूर्वोक्त आसनपर बैठे, चावल-या-चावल्लोंकी  
धाणी हाथमें रखे, तदनंतर कुलगुरु इसमंत्रको पढ़े,-[ मंत्रः ]-औ  
अहं-कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निविडमस्ति-दुच्छेद्यम  
स्ति अष्टाविंशतिप्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति  
संज्वलनोस्ति-प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानावरणोस्तिअनं-  
तानुबंध्यस्ति-चतुश्चतुर्विधोस्ति-हास्यमस्तिरतिरस्ति-अरतिरस्तिभ-  
यमस्ति जुगुप्सास्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति-स्त्रीवेदोस्ति नपुंसकवेदो-  
स्ति-मिथ्यात्वमस्ति-मिश्रमस्ति-सम्यक्तमस्ति-सप्तकोटाकोटीसागर  
स्थित्यस्ति-अहं औ, तदस्तु-वां-निकाचितनिविड बद्धमोहनीयक-  
र्मोदयकृतः स्नेहसुकृतोस्तु सुनिष्ठितस्तु-सुसंबधोस्तु-आभवमक्षयो-  
स्तु-अग्निकीचौतर्क प्रदक्षिणा दिजिये, फिर वरकन्या ग्रंथीबंधन  
सहित दूसरा फेरा फिरे, धाणीकीमुष्टि अग्निमें प्रक्षेपकरे, इसमेंभी  
कन्या अमाडीरहे, फिर उसीतरह चावल्लोंकीधाणी मुष्टिमें लेकर

पूर्वोक्त आसनपर बैठे, और कुलगुरु इसमंत्रकों पढ़े,—[ मंत्रः ]—औं  
 अहं-कर्मास्ति वेदनीयमस्ति सातमस्ति असातमस्ति सुपुंवेद्यंसातं दु-  
 पुंवेद्यं असातं-सुवर्गणाश्रवणंसातं-दुर्वर्गणाश्रवणं असातं-शुभपुद्गल-  
 दर्शनंसातं-दुःपुद्गलदर्शनं असातं-शुभपुद्गलास्वादनंसातं-अशुभपुद्ग-  
 लास्वादनं-असातं-शुभपुद्गलस्पर्शनंसातं-अशुभपुद्गलस्पर्शनं-असातं  
 सर्वसुखंकृतं सातं-सर्वदुःखंकृतं असातं-अहं औं, तदस्तु-वां-सातावे  
 दनीयं-माभूदमातावेदनीयं-तत्प्रदक्षिणी क्रियतां विभावसुः-फिर  
 वरकन्या उसीतर तीसरा फेरा फिरे, धाणीकी मुष्टि अग्निमें प्रक्षे-  
 पकरे, इसमेंभी कन्या भगाडी रहे, और उसीतरह पूर्वोक्त आसन  
 पर बैठे, फिर कुलगुरु इसमंत्रकों पढ़े, [ मंत्रः ]—औं अहं सहजोस्ति  
 स्वभावोस्ति संबंधोस्ति-प्रतिबंधोस्ति-मोहनीयमस्ति वेदनीयमस्ति  
 नामास्ति गोत्रमस्ति आयुरस्ति हेतुरस्ति आश्रववद्धंअस्ति-क्रिया-  
 बद्धमस्ति कायवद्धमस्ति-तदस्ति संसारिकसंबंधः अहं औं,—इसमंत्रके  
 पूरेहोनेपर कुलगुरु-कन्याके-पिता-चाचा-बडाभाइ-या-जोकोइ-  
 कुलमेंबडाहो उसकेहाथमें तिल-जव-कुश-और-जलदेकर ऐसेकहे,  
 अद्यअमुकसंवत्सरे-अमुकायने-अमुकऋतौ-अमुकमासे-अमुकपक्षे-  
 अमुकतिथौ-अमुकवासरे-अमुकनक्षत्रे-अमुकयोगे-अमुककरणे-अ-  
 मुकमुहूर्ते-पूर्वकर्मसंबंधानुबद्धवस्त्र गंधमाल्यालंकृतां-सुवर्णरूपमणि  
 भूषणभूषितां-कन्यां-ददात्पयं-प्रतिगृन्हीथ-ऐसाकहकर वरवधूके  
 हाथपर जल निक्षेप करावे, उमवरुत-वर-कहे-प्रतिगृन्हामि-कुल-  
 गुरु-कहे-सुप्रतिगृन्हितास्तु-शांतिरस्तु-तुष्टिरस्तु-पुष्टिरस्तु-ऋद्धिरस्तु  
 वृद्धिरस्तु-धनसंतानवृद्धिरस्तु-इतनाकहकर-वरकों-भगाडी और क-  
 न्याकों पिछाडीकरके कहे-अग्निकीचौतर्फ प्रदक्षिणा किजिये, प-

हिलेके तीनफेरेमें वरकाहाथ कन्याकेहाथसें नीचे रखागयाथा-इ-  
 सचौथे फेरेमें-वरकाहाथ-उपर-और-कन्याकाहाथ-उसकेनीचे र-  
 खनाचाहिये, फिर वरकन्या अग्निकीचौतर्फ चौथाफेरा फिरे,धा-  
 णीकीमुष्टि अग्निमें प्रक्षेपकरे, चौथे फेरेके अंतमें कन्याकों वरके  
 बामीतर्फ पूर्वोक्त आसनपर बैठावे, इसवरुत-कन्याका-पिता-या-  
 उसकेकुटुंबका-औरकोइवृद्धपुरुषहो-वस्त्र-आभूषण-हाथी धोडा-रथ  
 पालखी-दासदासी-जोकुच्छदेनाहो-शक्तिमुआफिक देवे, औरभी  
 कुटुंबीलोग जोकुच्छ देनाहो-इसवरुत-देसकते है, फिर कुलगुरु-  
 दुर्वा-अक्षत-वगेरा सुगंधिवस्तु हाथमेलकर-येनानुष्ठानेन-आद्योअ-  
 र्हन्-शक्रादिदेवकोटि परिवृतो भोगाय-संसारजीवव्यवहारमार्गसंद-  
 र्शनाय-मुनंदामुमंगले-पर्यणैषीत्-ज्ञातमज्ञातं-वा-तदनुष्ठानानुष्ठितम  
 स्तु, -ऐसा कहे और वरकन्याके मस्तकपर प्रक्षेपकरे, फिर कन्या-  
 कापिता-जव-तील-कुश-और-जलकों हाथमेंलेकर वरकेहाथमें दे-  
 वे. और ऐसेकहेकि [ दायंददामि ] अर्थात् दायचादेताहूं-वर-कहे  
 [ प्रातिगृह्णामि ]-अर्थात् लेताहूं, इसवरुत कुलगुरु कहे [ सुगृहित-  
 मस्तु-सुपरिगृहितमस्तु ] इसवरुत जमीनजहागीर भांडेबर्तन जोकु-  
 च्छ देना हो फिर देवे, इसतरह दायचादियेबाद कुलगुरु ऐसेकहे  
 वधूवरौ-वां-पूर्वकर्मानुबंधन निविडेन-निकाचितबद्देन-अनुपवर्त्त-  
 नोयेन-अनुपायेन-अश्लेषेन-अवश्यभोग्येन विवाहःप्रातिबद्धो बधूव  
 तदस्तु-अखंडितो अक्षयो अव्ययो निराबाधःसुखदोस्तु-शांतिरस्तुपु-  
 ष्ठिरस्तु ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु धनसंतान वद्धिरस्तु, ऐसे वचनबोल-  
 कर तीर्थजलसें कुशाग्रद्वारा वरकन्याकों अभिषेककरे, इतनेकार्य  
 हुवेबाद चौरीमेसें उठाकर कौतुकागारमें जहां कुलकरोकीस्थाप-  
 नाहै वहां लेजाकर बैठावे,

( १७६ )—वहाँ कुलकरोकी स्थापनाके रुबरु कुलगुरु ऐसे कहे अनुष्ठितो—वां—विवाहः—समस्नेहौ—समभोगौ—समायुषौ—समधर्माणौ—समसुखदुःखौ—समशत्रुमित्रौ—समगुणदोषौ—समवाङ्मनःकायौ—समाचारौ समगुणौ भवेतां—इसप्रकारकहकर—करमोचनकरनेका मंत्रपढ़े, [ करमोचनमंत्रः ]—ओं अँह—जीवस्त्वं कर्मणाबद्धः—ज्ञानावरणेनबद्धः—दर्शनावरणेनबद्धः—वेदनीयेनबद्धः—मोहनीयेनबद्धः—आयुषाबद्धः—जात्याबद्धः—गोत्रेणबद्धः—अंतरायेणबद्धः—प्रकृत्याबद्धः—स्थित्याबद्धः—रसेनबद्धः—प्रदेशेनबद्धः—तदस्तु—ते—मोक्षोगुणस्थानक्रमारोहक्रमेण—अँह ओं, मुक्त्योः करयोस्तु—वां—स्नेहसंबंधो अखंडितः—एसाकहकर वरवधूका हस्तमोचन करावे, इसवखत—कन्याकापिता—जमाइकों—जोकुच्छदे—नाहो देवे, फिर कुलगुरु इसकाव्यकों पढ़े—[ काव्यं ] पूर्वयुगादिभगवान् विधिनैव येन—विश्वस्य कार्यकृतये किल पर्यणैषीत्—भार्याद्वयं तदमुनाविधिनास्तु युग्मं—एतत्सकापपरिभोगफलानुबंधि—१,—इसतरहमंगलवाक्य उच्चारणकरके ग्रंथीमोचन करावे, [ अचलसौभाग्यं अस्तु भवतां ] ऐसा आशीर्वचन बोले, फिर कौतुकागारसें चलकर वरवधू बहार आवे और—बरातीलोगोंकेसहित जिसआडंबरसें आयेथे वाजेगाजेकेशाथ अपने डेर पर जाय, दोचाररौजकेबाद जब बरातकी विदागीरीहो—वहांसें—चलकर अपनेशहर आवे, और वाजेगाजेकेशाथ अपनेघरमें प्रवेश करे, याचकलोंगोंकों दानदेवे, जिनजिन नोकरचाकरोंकी जितनीजितनीतनखाह ठहराइहो तु देवे, बरात घरआये बाद सातरौजपीछे—कुलकरकी स्थापनाकों—विसर्जनकरे, विसर्जनकरतेसमय प्रत्येककुलकरकी पूजाकरना और प्रत्येककुलकरका मंत्र जो ( १६९ )मी कलममें लिखआये है देख-

कर पढ़ना-मंत्रपुराहोनेपर-[पुनरागमनाय स्वाहा]-इतनापद बोलकर प्रत्येककुलकरकी स्थापनाकों विसर्जन करना, इसीतरह शासनदेवीकीभी पूजाकरके-मंत्र-जो-उसी ( १६९ ) मो-कलयमें-लिखआयेहै देखकर पढ़ना, मंत्रपुराहोनेपर [पुनरागमनाय स्वाहा] कहकर शासनदेवीकी स्थापनाकों विसर्जन करना,

( १७७ )-विवाहकी रसम कइदेशोंमें न्यारीन्यारी है लेकिन ! उपरलिखीहुइ विधि सबकों मान्यरखनेयोग्यहै, विवाहकाकाम पुराहोजाय तब धर्मके उत्तेजनमेंभो ध्यानदेनाचाहिये, विवाहमें तरहतरहके खानपानकिये, तरहतरहके आनंद भोगे,-और तरहतरहके गायन सुने, तो अबधर्ममेंभो ध्यान देना चाहिय,-स्वधर्मावात्सल्यकरके धर्मज्ञजनोकों जीमानाचाहिये,-जिनमें दिरमें तरहतरहके नैवेद्यधरके रागरागणीसैं पूजन करानाचाहिये, तीर्थयात्रामें और साधुसाध्वीयोंकी सेवामें द्रव्यव्ययकर धर्मकीबढ़वारी करनाचाहिये, संसारीककाममें हजारोंहै रुपये लगाये तो आधाचोथाइ दशांशषोडशांश धर्मकाममेंभी लगाना मुनातिबहै, अपशोषहैकि-आजकलकेजमानेमें धर्मतर्फ लोगोंकी निगाह घटती जाती है, धर्मकी बातें बतलानेवालोंकों-लोग-हंसोंमें उड़ाते है, लेकिन ! यादरहे ! सुख और आनंदजितना तुम पायेहो धर्मरूपी कल्पवृक्षका फलहै, सुंदरस्त्री-अच्छेमकान-अच्छासवारी-और-अच्छाखानपान सब धर्मकी बढ़ौलतमिलाहै, पूरवजन्ममें तुमने धर्म कियाथा उंसीका यह नतीजाहै,

( १७८ )-विवाहहुवेबाद स्त्रीपुरुषमें स्नेहवृद्धि जरूरहोती है, लेकिन ! ऐसा स्नेह किसकामका जो अपनेइज्जतमें कलंक लगे,

स्त्रीकों मुनासिब है पतिके हुकममें चलना, जो पुरुष अपनी स्त्रीकों अपने हुकममें नहीं चलाते उनकों पुरुष नहीं बल्किन् ! स्त्री-कहना चाहिये, ज्यूज्यू स्त्रीकों शिरचढाओगे बहोतपस्ताना पड़ेगा, जिनके घर दोस्त्री है उनकों महाविहंबना रहेती है, आजकल वैसे पुन्यवान् नहीं रहे जिनके घर बत्तीसबत्तीसस्त्रीयें होतेहुवेभी टंटेझगड़ेका कुच्छकामनही था, दोस्त्रीकी चाहना छोडकर एकहीमें संतोषकरो तो अच्छा है, राजाओंकी देखादेखी तुम राजे मत बनो, अपनी पुन्यवानी तर्फ खयालकरो, ज्यूज्यू स्त्रीकों बहोतमनाते जाओगे-तुमारे शिरचढतीजायगी, स्त्री-पुत्र-नोकर-और-चोला-पहिछे दिनसेही अंकुशमें रखोगे तो अच्छा है, अगर तुम समझतेहोगें पीछेसे अंकुशमें करलेगें तो यह समझना फिजुल है, इसपर अनुयोगदार सूत्रकी टीकामें जो एककथा लिखी है यहांपर सुनादेते है, सुन कर अमलकरना, एकस्त्रीकों तीनलडकीयें कवारी मौजूद थी, जब उसमेंसे एकलडकीका-विवाहहुवा माताने उसकों सिखलायाकि-बेटी ! जब तूं अपनेपतिके पास जाय उसकीपीठपर पांवसे एक-लात मारदेना, और वह जोकुच्छ तुजेकहेसुने सवेरे आनकर मुझे कहना, लडकीने विवाह हुवेबाद पहिलेराज उसीमुताबिककिया, (यानी)-लात मारदी, पति-कुच्छनहीबोला, उल्टाकहनेलगा तेरेपांवमें लगीतो नहीं ! बस ! इसीतरह चार्तेकरते हुवे-रात पूरीहुइ जब लडकी अपनीमाताकेपास गई, माताने सबबात सुनी औरकहा बेटी ! तेरे पतिमें कुच्छदम नहीं है, तेरे आधीनमें रहेगा, जो तूं नाच नचावेगी नचेगा, खुश रहना, दूसरी बेटीका विवाह हुवा तब उसकोंभी सिखलायाकि-तूंभी जब तेरेपतिके पासजाय

उसकीपीठपर एकलात मारदेना, उसनेभी पतिकेपासजाकर उसकीपीठपर एकलात मारदीइ, पतिने गुस्साखाकर कहा-नालाइक ! तूं किस चांडालकी लडकी है ?-क्या ! पतिसें पहिल पहिले मिलतेबख्त ऐसे करना चाहिये ?-खैर ! आजका गुनाह माफकर-ताहूं, लडकीने सवेरे जाकर अपनी माताकों सबबातकही, माताने कहा बेटी ! तेरापति कुच्छ हिम्मतबहादूर और कुच्छनार्मद है, इसलिये कुच्छ डरतीभी रहना और कुच्छ हुकमभी चलाना, फिर तीसरी लडकीका विवाह हुवा और उसकोंभी सिखलादियाकि-पतिकी पीठपर लातमारदेना, उसने उसीमुआफिक पतिकेपासजाकर उसकीपीठपर लात मारदीइ, पतिने उसीवक्त स्त्री के मुंहपर दोतमाचे ऐसे धरेकि-मुंहमेसैं लोही निकल आया, लालआंखकरके कहनेलगा नालाइक तूं किसचांडालकी लडकी है ? स्त्रीवख्त मेरेघरसैं चली जा, ऐसाकइकर गलापकडकर बहार धकेलदिइ, सारीरात-वो-रोतीरही, लेकिन ! पतिने मुंहसैंभी नही बुलाइ, सवेरहोनेपर उठकर अपनी माताकेपाम्न गई और कहने लगी तेने अच्छीसिखा दिइ, आज मेरातो मरनाहोजाता, माताने कहा क्या हुवा ?-बेटीने सबबात बयानकिइ, माताने कहा-बेटी ! मैंतो-तेरे अच्छेकेलिये यहबात सिखलाइयी, याद रख !-तेरापति बडा बहादूरआदमी है, उससैं सदा डरती रहना, कभी सामने नहीबोलना, जोकुच्छ-वो-कहे उसमुजबकरना इसीमें तेरा अच्छा है, महाशय ! इसकथाका मतलब समझसको तो समझ लो, और तुमकों जिसमें दाखिलहोनाहो उसपंक्तिमें बैठजाओ, स्त्रीकों अपनेहुकमसैं बखिलाफ चलनेदेना अच्छानही, मुनासिबहै हुकममें



रखना, जो लोग कायर हैं उनको यहकथा कभी-न-सोहायगी, और जो बहादुरशस्त्राई हैं उसको आपहीआप रुच जायगी.

(१७९)-पनराहमा-व्रतारोपसंस्कार-जिसपुरुष-या-स्त्रीको व्रतलेनाहो-स्नानमज्जन करके अच्छेकपड़े पहनकर निर्ग्रन्थगुरुकेपास जाय-और-नमस्कारकरके प्रार्थना करेकि-महाराज! मुजको-व्रतलेनाहै, तब गुरु उसकीयोग्यतादेखकर यदि वह दीक्षाकेयोग्य और अभिलाषीहो-दीक्षा-देवे, और जो दीक्षालेनेकी ताकत-न देखे-तो-उसको गृहस्थधर्मके बारहव्रतमेंसे जितनेव्रतकी इच्छाहो अंगीकारकरावे, और समझावेकि-इसवस्त्र-तुम्हारीयोग्यता इतनीही है, कितनेकसाधु जोराजोरी व्रत प्रत्याख्यान दिलवाते हैं यहबात ठीकनहीं, कितनेकसाधु-गच्छकेपक्षपातसे-दूसरेगच्छके श्रावकों अपनेगच्छमें खेंचते हैं यहभी मुनासिबनहीं, कोइगच्छ-का साधु-या-श्रावकहो-जो-सर्वज्ञप्रणीतवचनानुसार धर्मपालनकरेगा उसका निर्वाण होगा, हां! जो सर्वज्ञप्रणीतशास्त्रके पाठको उध्यापन करेगा उसका निर्वाणहोना मुश्किलहै, दुनियामें जितनेमतमांतरवाले हैं सब अपने आपको सत्यवादी बतलाते हैं लेकिन-न! सत्यवादी वही है जो सर्वज्ञप्रणीतशास्त्रसे बाँझलाफ-न-हो, सर्वज्ञ-उसको समझना जिसकेवचनमें पूर्वापरविरोध-न हो, मिथ्या-भाषण न-करताहो सत्यसत्यवातका बयानकरनेवालाहो-आज-कल-सर्वज्ञपुरुष नहीं रहे, उनके कथन कियेहुवे शास्त्र-जो-मौजूद है उन्हीके फरमाने मुजब चलना चाहिये, सर्वज्ञोंको इसकालमें प्रत्यक्ष कोई नहींबितासकता सबबकि-वै-रहे नहीं, हां! अनुमान प्रमाणसे संवृत्तकरसकते हैंकि सर्वज्ञ-जकरहुवे,वहीहै-

दुनिपामें-जितनेपदार्थ है-वें-प्रमेयरूपहै-जो-जो प्रमेयरूप है वे-  
किसीकोजरूप मत्पक्षहोनेचाहिये, इसलिये जानाजाताहैकि-य-  
मेयवस्तुका-जाननेवाला सर्वज्ञपुरुष जरूर हुवा.

(१८०)-दीक्षामुहूर्त्त-जिसरौज-अभिनी-रोहिणी-मृगशिरा-  
पुनर्वसु-पुष्य-पूर्वाफाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति-  
अनुराधा-ज्येष्ठा-मूल-पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-शत-  
भिषा-पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये-नक्षत्रहो-रवि-बुध  
गुरु-शनिवारहो-रिक्तातिथियों छोडकर और कोई तिथि-व्यति-  
पात वैधृति भद्रावगेराकुयोगसे रहित हो-उसरौज दीक्षादेनेका मु-  
हूर्त्त शोधनकरनाचाहिये,-गणिविज्जापयन्त्रमें जो-संध्यागत-रवि-  
गत-विटेर कुराक्रांत-बिलंबी-राहुगत-और-ग्रहभिन्न-ये सातदोष  
जो नक्षत्रके बयानकिये है-उनको-तथा-वेध-लत्ता-पात-और-ए-  
॥ अर्गलवगेरादोषोंको बचाकर शुद्धनक्षत्रको लेनाचाहिये, हां!कोई  
अच्छायोग मिलजायतो नक्षत्रचाहे जो हो-इर्जनही जानना. धन-  
मीनके सूर्यमें बृहस्पतिके अस्तमें-अधिकमासमें जो पहिलाहै उस-  
में-तथा-चौमासेकेकालमें दीक्षादेना मनाहै, मिथुन-वृश्चिक-धन-  
और-कुंभलग्न दीक्षाकेलिये अच्छे है, वृषभ-और-तुलालग्न अ-  
च्छेनही. वृषतुलाका नवांशकभी दीक्षाकेलिये निषेधहै, और लग्न  
दीक्षाकेकालमें साधारणहै, लेकिन! लग्नशुद्धिमें बलवान् निकले  
तो लेना मनाभी नहीं, लग्नकी उदय और अस्तशुद्धि देखना  
चाहिये, दोनों एकसरस्वी-न-मीलेतो-उदयशुद्धि तो जरूर देखना  
चाहिये, दीक्षालग्नमें सूर्य-दूसरे-पांचमें-छठे-या-ग्यारहमेंभुवनमें  
देखाहोतो अच्छा, चंद्रमा-दूसरे-तीसरे-छठे-बारहमें होतो अच्छा,

मंगल-तीसरे-छठे-दसमें-ग्यारहमें होतो ठीक, बुधभी-तीसरे-छठे-दसमें-ग्यारहमें होना अच्छा है, बृहस्पति-केंद्र-या-त्रिकोणमें होना उत्तम, शुक्र-तीसरे-छठे-नवमें-बारहमें होना अच्छा, शनि-दूसरे पांचमें-आठमें-ग्यारहमें होना ठीक, सूर्य-तीसरे-भुवनमें बैठना अच्छानहीं। चंद्रमा-दसमें ठीकनहीं, बुध-या-बृहस्पति-आठमें-बारहमें अच्छे नहीं, शुक्र-केंद्रमें-या-आठमें-ठीकनहीं, शनि-तीसरे-छठे-अच्छानहीं, मंगल-शुक्र-और-शनिसं-सातमें चंद्रमा ठीकनहीं, चंद्रमासं सातमें-राहु-केतुभी अच्छेनहीं, मूर्यकेशाथ चंद्रमा बैठजाय तो राज्यकी तर्फसे भय पैदा हो, मंगलके साथ चंद्र बैठे तो कलेशकारी जानना, बुधके साथ चंद्र बैठे तो-तकलीफकी निशानी है, बृहस्पतिके साथ चंद्र बैठे तो बड़ी तकलीफ होगी, शुक्रके साथ चंद्र बैठे तो मान भंग होना पमे, शनिके साथ चंद्र बैठे तो-विपत्ति पैदाकरे, चंद्र बुध गुरु-या-शनिका-लग्न-और-इन्हीका नवांशक दीक्षाके वरुत होना अच्छा है, होराद्रेष्काणवगेरा षड्वर्गभी इन्हीका होना ठीक होता है,

( १०१ )-दीक्षा किसी अच्छे स्थानमें जाकर देना चाहिये, बाग बगीचेमें-या-किसी दूसरे रमणीक स्थानमें तीन चौकी एकपर एक रखकर उसपर सिंहासन धरके जिन प्रतिमा स्थापन करना, और दीक्षा लेनेवाले शिष्यकों वहां ले जाना। वहां पहुंचनेपर नमस्कार कराके जिन प्रतिमाके सामने चार पांच हाथके फासलेपर उसको खड़ा रखकर पांच सात फुल उसके हाथमें देना-और-जिनप्रतिमाके सिंहासनपर क्षेपन कराना, अर्थात् सिंहासनपर फल उछालना, अगर एकभी फुल सिंहासनमें न पड़ेतो

जानना इस श्रृंखलासे दीक्षा न पल सकेगी, फिर दूसरी दफे प्रसेप कराके देखना, और फिर तीसरी दफेभी इसीतरह देखना, अगर एक दफेभी सिंहासनपर फुल जागिरे तो जानना अच्छा है, तीनोंही दफे फुल खाली जाय तो मुनासिब है अयोग्य समयकर उसको दीक्षा न देना, अगर सवाल किया जायकि-इतना महोच्छव-करकेभी क्या वृथा जानेदेना चाहिये? ( जवाब. ) हां!-नै शक!-वृथा जानेदेना, कोई हर्जकी बात नहीं. जिस काममें अगाडी जाकर बुरा नतीजा पाना है उसको पहिलेहीसे क्यों करना!-यह अधिकार पंचाशक सूत्रकी टीकाके अधिकारसे लिखा गया है, जिनको संसय हो देखलेना. अगर कोई सवाल करे-कि-साधु होकर श्रावकके पास सचित फूछ कैसे उछलवावे?-(जवाब.) शास्त्रोंमें कइ जगह ऐसा बयान है कि-शिष्यकी परीक्षा के लिये-गुरु बहार भूमिका जाते हुवे रास्तेमें जान बुझकर आप वनास्पतिपर कदम देते हुवे चले. अगर चेला गुरुके पीछे पीछे वनास्पतिही उपर चला आवे और विनयके साथ कहेभी नहीं कि-आप रास्तेकी मौजूदगीमेंभी वनास्पतिपर किस कारणसे चलते है? तो-जानना चाहिये कि-चलेके दिलमें रहेम नहीं है, अगर सवाल किया कि-इसमें गुरुको दोष लगाया नहीं!-(जवाब.) हरगिज नहीं लगा, सबबकि-इरादा उनका शिष्यकी परीक्षा करनेका था, इसीतरह यहांभी शिष्यकी पुन्यवानीकी परीक्षा करनेके लिये फूल उछलवाना कोई हर्जकी बात नहीं. कोई श्रृंखला बहैमलावेतो उसकी भूल है, पहिलेसेही किसीकार्यकी परीक्षाकरना और कानियोंके-कहनेपर बहैमलाना यही भूलोंका काम है. यहां तक

परीक्षाकरना लिखा है कि दीक्षादेते वस्तु-प्रतिमाकी चारोंतर्फ जो-  
 चारदीपक बरेजाते हैं उनमें जीतने दीपकोंकी शिखामंद हो जाय-या-  
 बुझ जाय उबनेही अंश उसकी दीक्षाकी कमजोरी जानना, अगर  
 दीपशिखा ज्युंज्युंते ज होती जाय त्यूंत्यूं उसकी दीक्षाकी तेजी होगी  
 ऐसा जानना. ज्योतिषके कायदे मुजब अगर लग्न कमजोर मीले तो  
 उसको छोड़कर सामान्य दिन शुद्धि देख लेना, और जिस वस्तु दी-  
 क्षालेनेवाले का चंद्रस्वर चलने लगे उस वस्तु उनको दीक्षा देना, चंद्र  
 स्वर अमृतसमान फल देनेवाला है, उसमें भी अगर पृथ्वी-या-जल  
 तत्व-चलता हो तो निहायत उम्दा जानना, अगर सवाल किया जाय  
 कि-जिन प्रतिमाके सिंहासन पर फूल उछालनेकी परीक्षामें उत्तीर्ण-  
 न-हुवा हो-उसको भी-चंद्रस्वरमें दीक्षा देना ठीक है ?-(जवाब.) नहीं !-  
 बोतो-पहिले ही अयोग्य हो चुका, -यहां उसकी बात है जो उस परीक्षा )  
 उत्तीर्ण हुवा हो-वैसा-शुरूश-अपने चंद्रस्वर चलते वस्तु-अगर-दीक्षा-  
 लेगा बहुत उमदा तरहसे पालन कर सकेगा. उसके धर्मोपदेशसे बड़े  
 बड़े अच्छे काम बनेंगे. और उसके ज्ञानकी ख्याती सब लोग मंजूर करेंगे.

(१८२-)-जिसकी ताकत दीक्षालेनेकी न हो वो गृहस्थधर्मके  
 बारहव्रत अंगीकार करे, मुहूर्त्तके लिये दीक्षामें जो जो नक्षत्र बारबगेरा  
 बयान कर चुके-उस मुजब अच्छा योग देख लेना-चंद्रस्वर सबमें अच्छा है.

सब देव-सब गुरु-और-सब धर्म पर श्रद्धालाकर उनको मानना  
 पूजना-इसका नाम-सम्यक्तत्व है, झूठे देव-झूठे गुरु-और-झूठे धर्मको-  
 मानना पूजना या उन पर श्रद्धालाना उसका नाम मिथ्यात्व है. अपने  
 कियेहुबेकर्मको कोइ फेर नहीं सकता, फिर क्या फायदा संसारीक फा-  
 यदेके लिये भी कूदेबादिकको माननेसे ?-बड़ी भूल है कि-अपने पुण्यके

शिवाय दूसरेको फायदादेनेवाला समझना, दुंदियापंथीलोग स-  
वालकरतेहैकि-बारहव्रतमें प्रतिमाकीपूजाकरना कौनसेव्रतमेंसमज-  
ना ? (जबाब)-प्रतिमाकीपूजा सम्यक्त्वमेंही दाखिलहै और सम्य-  
क्त्व सबव्रतकामूलहै, इसलियेजिनप्रतिमाकी पूजा गृहस्थोंको करने  
योग्यहै, (१) निरापराधीत्रसजीवको बिनाकारण नहीमारना इसका  
नाम प्राणातिपातविरमणव्रतहै, (२) झूठबोलनेका त्यागकरना इ-  
सकानाम मृषावादविरमणव्रतहै, किसीकोधरीहु थापनको नामुकर  
जाना-झूठालेखलिखना-और-अठीगवाहीदेना इसव्रतबालेको छोड  
देनाहोगा, (३) बाढा मारना, रास्तेचलतेको लूटनाजोराजोरी कि-  
सीकीचीजखोसलेना, किसीकोधरीहुइ अनामतचीजपचाजाना,  
चीजकीअदलबदल करदेना, एकचीजमेंदूसरीझूठीचीज मिलाकर  
बेंचना, विनामंजूरीकिसीकीचीजउठाजाना, यहसब चौरीकेभेदमें  
दाखिलहै, तीसरे अदत्तादानविरमणव्रतवालेंको न करना चाहिये,  
जंगलमें पडीहुइचीजभी व्रतधारीपुरुष नउठावे, (४) परस्त्रीविरमण  
व्रतवालापुरुष-दूसरेकीस्त्रीको न भोगे किंतु अपनीस्त्रीपरही संतोष  
रखे, इसीतरह स्त्रीभी अपने पतिकेशिवाय दूसरेको नभोगे, वेइया  
कोइकी स्त्री नहीहै-तो-अपनीभी नही, इसलियेउसकोभी न भोग-  
नाचाहिये. सारांशयहहुवाकि-कवारो-विधवा-सोहागन-वेइया-  
और अपनीविवाहितास्त्री-इनमे एकअपनीनिजस्त्रीको छोडकर  
सबपरस्त्रीहै, जोलोगविधवास्त्रीका पुनर्लग्नकरनाचाहतेहै उनसेपूछ-  
नाचाहियेकि-आपलोगकिसका पुनर्विवाहकरनाचाहतेहो ? क्या !  
-जोस्त्री पतिके जीतेजीभीउससेनाराजरहकर अलगकोठरीमें सोती  
है उसका-या-जो-पतिसे पुराभेदरखतीहै उसका-? बतलइये !

किसका पुनर्लग्नकरना चाहते हो ?—अगर कहा जाय कि—जो—नाराज रहती है उसका—तो—महाशय ! बोतो पहिले ही से दूसरे की है. अगर पति से प्रेम युक्त है उसका कहोगे—तो—सौचो ! वो पतिके मरने बाद भी दूसरे को कैसे चाहेगी ?—जिसकी कामाग्नि नहीं बुझी है वो तो पहिले ही से अनेक गुप्त पतिकर चुकी है, जिसकी कामाग्नि बुझ गई है वो क्यों दूसरा विवाह करना चाहेगी ?—खैर !—अगर विधवा का पुनर्विवाह किया और कर्मयोग—वो—दूसरा पति भी भ्रम गया—बतलाइये ! फिर वो तीसरा करे या नहीं ? अगर तीसरा भी भ्रम जाय तो चौथा करे या नहीं ? इस तरह कितने प्रतितक करते जाना इसका भी भेद खोलकर पुनर्लग्नकी रसमजारी करना चाहिये. विधवा विवाहजारी होने से देशकी उन्नति नहीं नाश होगा. ज्ञानी लोगोंने जो विवाहकी रसमजारी कर रखी है बहोत सौच समझकर रखी है, आर्य लोगोंका मस्तक जो अनार्यों से उंचा है इसी उमदाकार रवाइयों से है. आर्य लोगों में भी अगर यह खोटी रसमजारी हो जाय तो जो स्त्रियोंकी महाभक्ति पतिपर रहा करती है यह उठ जायगी. क्योंकि—वह समझेगी कि—इसको छोड़कर दूसरा पति चाहे जब कर लुंगी. (सवाल.) क्या ! पुरुष नहीं चाहेगा कि—मैं—दूसरी विवाह लुंगा—(जवाब.)—चाहेगा, लेकिन ! यह मालूम है कि—दोनों में से किसको अपना घर छोड़कर दूसरे के घर आना पड़ता है ?—स्त्री को अपने पिताका घर छोड़कर पतिके घर आना पड़ता है, इसी से कहा गया है कि—स्त्रीका—पुन्य कमजोर है, उसको मुनासब है कि—पतिके आधीन रहे. अगर आर्यों में भी पुनर्लग्नकी रसमजारी हो जाय तो इंग्लैंड देशकी तरह तलाकके मुकदमों से अदालत को फुरत तक नमीले. हम इसी अवस्था में कभी

सहमत नहीं हो सकते कि—इस मर्यादानाश्रक पुनर्विवाहकी रसमजारी  
 किइजाय.जोलोगविधवास्त्रीयोंका दुखदेखकर दयावान बनतेहैं सो  
 ठीकहै,लेकिन ! यहनही सौचतेकि—इससे नतीजाक्या आवेगा.  
 काम बोकटना जो दूरदेशीअच्छेनतीजेवालाहो,

### [ सवैया. ]

देवगुरुशास्त्रकी श्रद्धासैं प्रीतिकरों—  
 यही सबसूत्रसिद्धांतोंका मूलहै,  
 इनमेंजो शंशयकरे चारोंगतभ्रमफिरे  
 धिग्धिग्संसारकहेकेसी बड़ीभूलहै,  
 आदरसत्कारनहीहोयऐसेजीवनका  
 अपजशकापंजबने शीशपडे धूलहै  
 राजमेंभी उनही मुनवाइ कहाकैसेहोय ?  
 धर्मसैंप्रतिकूल जाके दुनियांप्रतिकूल है,

(५)पांचमें परीग्रहप्रमाणव्रतमें अपनीइच्छामुजब.दोलतकाप्र-  
 माणकरनाकि—लाख—दोलाख—या—पांचलाख—रुपयें—मैं—रखुंगा,इस  
 सेंज्यादेहोजायगें तोधर्मकाममें खर्चदूंगा,कोइबडाआदमी—या—रा-  
 जाहो—तो—वो—करोड—दोकरोड—अबजतक रखे,

( १८३ )—छठेदिशापरिमाणव्रतमें पूर्व पश्चिम उत्तर दखनचा-  
 रोतर्फ—दोदोहजारकोम—पांचहजार—या—उससैं कमीबेंसी—जितनार-  
 खनाहो—रखे,(७)पांसमदोरा—रात्रोभाजन—जमीकंद—बगेराअभक्ष्य  
 चोजोंका त्यागकरना और चौदहनियमधारनकरना—इसकानाम—  
 भोगोपभोगविरमणव्रतहै,(८)—आर्चरौद्रध्यान करनां—हाथी—बैल—



मुरघे-मैढे-और-भैसे-वगेरालहाना, विनाकारण वृक्षपरछाडीमार देना, किसीकों फांसी दिइजाय-और-उसमेंखुशीमानना, इसका नामअनर्थदंडहै, इसमेंबचना चाहिये, (९)नवमासामायकव्रत-दिनमें कमसेकम एकसामायिक जरूरकरनाचाहिये, (यानी)दोघडीतक एकस्थानपर बैठकर वाचनापढ़ना-याध्यानकरना, (१०)दशमा देशावकासिकव्रत-(११)ग्यारहवा-पौषधव्रत-पर्वतिथिकेरौज जरूरकरनाचाहिये, (१२)-बारहमें अतिथिसंविभागव्रत-इसकानामहै जो साधुजनोंकों आहारपानीदेकर भोजन जिमना-अगर-योग-न-मिलेता-भावना रखना,

(१८४)-जैनपर्व,-दीवालीकेरौज महावीरतीर्थकरका निर्वाण हुवा, कार्तिकसुदीपंचमीकेरौज ज्ञानपंचमीपर्व, कार्तिकपौर्णिमाकेरौज शत्रुंजयतीर्थकीयात्रा, मगसीरसुदी एकादशीकेरौजमौनएकादशी पर्व पौषवदी दसमी-गुजरातीमहिनेकी अपेक्षा मगसीरवदी दसमीके रौज पौषदशमीपर्व,-माघवदी-(गुजरातीकीअपेक्षापौषवदी)त्रयोदशीके रौज मेरुत्रयोदशीपर्व-वैशाखसुदी तृतीकेरौज अक्षयतृतोयापर्व, भाद्रपदवदी-(गुजरातीकीअपेक्षा श्रावणवदी)द्वादशीसें भाद्रपद सुदीचौथतक पर्युषणपर्व, पर्वकेरौज देवपजा-व्रतनियम-या-ज्ञान भंडारकी वृद्धिकेकाम ज्यादाकरनाचाहिये,

(१८५)-जनक (१०८)तीर्थोंके नाम, १, शत्रुंजयताथ सौराष्ट्र-देशमें पालिताणानगरकपासहै, पहाड चढाइमें बडासहजहै, वृक्षोंकी घटा-जलकेकुंड-पानीकेझरने-औररंगबेरंगीलताबल्लीयोंसें सारा पहाड मानों बागकीतरह फूलरहाहै, चारोंतर्फ फलफूल हंसरहेहै, इसपहाडकीमुंदरसोहावनीजगह मनकों मोहे लेतीहै, जोयात्री इस

तीर्थका संयोगकरलेताहै फिर नहीचाहताकि-इसका बिरहहो, क्र-  
पणसे अधिकक्रपण क्यों नहो ! यहां आनकर दिलका दरिबाब-  
होजाताहै, इसतीर्थपर जैनमंदिरोंकी योजना और अगणितधनकी  
लागत कौनकेदिलकों चकितनहीकरती.कौन ऐसासुंदरमंदिरहै जो  
इसतीर्थपर नहो ?-कौन ऐसीसुंदर जैनमूर्तिहै जो यहां नहो ?-वी-  
तरागकी निरागमयमूर्ति मनकों वीतरागबनाडालतीहै,मंदिरोंकी  
धजा पवनको झकोरसे नाचरहीहै,जब रिषभकूटकेमध्य बीमलवसी  
टोंकपर जातेहै तो मानो मंदिरोंकी श्रेणी औरआस्मानकी छब  
एकहोजातोहै,दिलनही चाहताकि-नीचे उतरें, वर्षमें चैत्री और  
कार्तकी पौर्णिमाकेरौजयहां दोदफेमेंलाभरताहै,जिसमें कार्तिक  
पौर्णिमाका मेंला देखनेलाइकहै,(२)गिरनारतीर्थ इसीसौराष्ट्रभू-  
मिकादूसराशींगारहै,जुनागढसे दोकोश अगाडीबढो तो गिरनार  
पहाड गुरुहोताहै,वृक्षोंकी शाखापर वानर कलोलें करतेरहतेहै,  
जलकेकुंड-पानीके झरने-और-सरोवर ठोरठोरपरनजरआताहै,  
मयूर-क्रौंच-तोंते-बगेरापक्षी लतावल्लरीयोंमें आनंदकररहेहै, तरह  
तरहकी वनास्पति यहांपर मौजूदहै,आदमीकी ताकतनहीकि-य-  
हांकी जडीबुटीयोंकापारपासके,गिरनारकी गुफायें दुनियामें म-  
शाहूरहै,इसतीर्थपर नेमनाथभगवानकेदर्शन-सहस्राभवन-और-पां-  
चमीटोंक-देखनेलाइकहै,

(१८६)-३,-सम्मेतशिरस्वतार्थ-पूरवदेशमें-अतिउत्तमजगहहै,  
इसकोंवहांके आमलोग पारसनाथकापहाडकहकरबोझतेहै,इसपहा-  
डमें हरड बहेडें आवलें सतावरी सफेद स्याममुशली-चीरोंजी-  
और-कम्बुबाबगेरा कइचीजेंपैदाहोतीहै, मधुवन-गंधर्वनाला-सी-

तानाछा-बंदाममुकीटोंक-शामलीयामहाराजकामंदिर-और-तीर्थ-  
 करोंके चरणपादुकाकी छतरीयें यहां देखनेलाइकहै, ४, आबुती-  
 र्थ-भारवाडमें एरावली घाटीमें मीलाहुवाहै, इसकी हवा बड़ीनि-  
 रोग और पुष्टिकारकहै, देलवाडेमें विमलशाहनेठका-बनायाहुवा  
 रिषभदेवभगवानकामंदिर-और-उसकेपास-वस्तुपाल तेजपालका  
 मंदिर-कारीगरीमें भरपूरहै, संगमर्भर पथ्थरमें कारीगरोंने जो जो  
 कामकियाहै देखकर दिल चकितहोजाताहै, जिसजिस इतिहासमें  
 देखोगें आबुकेजैनमंदिरकी तारीफ लिखीहुइ नजर आयगी, अ-  
 चलगढ जो इसीपहाडका एकउत्तंगशिखरहै इसमें धातुमय जिन-  
 प्रतिमा बहोतखुबसूरतहै, तरहतरहकी वनस्पति-यहांपर मौजूदहै,  
 मुन्नाचांदी-तांबाशीशा-रांग-और विलोरीपथ्थर-यहांकी खानिमें  
 पैदा होते है, ५, केशरीयाजीतीर्थ मेवाडदेशमें उदयपुरके प. ति.)  
 इसतीर्थकीयात्रा करनेकों आमलोग जाते है, असलमें इसीलिये इस-  
 कानाम केशरीयाजीतीर्थ कहागया, हुंढियापंथीलोग मूर्तिकों नही  
 मानते-लेकिन ! यहांपर आनकर केशर फुल नगदीरुपया चढाते  
 है और नहाधोकर पूजाभी करते है, सवाल होनेकी जगहहैकि-  
 जब मूर्तिकों मानना मंजूरनहीं था-तो-वहांजाकर पूजा कैसे किइ ?  
 अगरकहाजायकि-हमन अपने संसारीक मतलबकेलिये किइतो ब-  
 तलानाचाहिये तुमकों धर्म प्यारा रहा-या-लडकालडकी प्यारे र-  
 हे ? बड़ीशर्मकी बातहै कि-जिसकेधर्मकों मानना उसीकी मूर्तिमें  
 नाकचढाना. ६, हस्तिनापुरतीर्थ-कुरुक्षेत्रमें दिल्लीमेरठके पासहै,  
 ७, अंतरिक्षतीर्थ-वराटदेशमें मौजूदहै, ८, मकसीतीर्थ-मालवादे-  
 शमें उजेनकेपासहै. ९, तारंगातीर्थ-गुजरातकी उत्तरसीमापर-वा-

लन्पुरके पास है. १०, फलोदीपार्श्वनाथका तीर्थ-मारवाड में अजमे-  
रके पास है. ११, शंखेश्वर तीर्थ-गुजरात में राधनपुरके पास है. १२,  
स्थंभनपार्श्वनाथका तीर्थ-गुजरात में खंभात शहर में है. १३, वरका-  
णा, १४, घाणेराय, १५, नाडोल, १६, नाडलाइ, १७, राणक-  
पुर-यह छोटी पंचतीर्थों-मारवाड में पालीके पास है, १८, लाटदेश में  
नर्मदाके किनारे भरुच में मुनिमुव्रत स्वामीका तीर्थ है, अश्वामोघ तीर्थ  
भी इसीका दूसरा नाम समझीये, बंबई इलाके में नाशिक शहर चंद्र-  
प्रभुका तीर्थ है. २०, दखन देश में सोपारक पत्तन-यहां पर-रिषभदेव  
भगवानका तीर्थ है, २१, दखन हेदरावाद से तीसकोस दूर कुल्पषा-  
का तीर्थ-इसमें माणिक्यदेवका मंदिर है, इसको श्वेतांबर-दिगंबर-  
दोनों मानते हैं, मूलमूर्ति श्वेतांबर और आसपास दिगंबर मूर्ति है,  
लकेटेशन से तीनकोस आगे जाना पड़ेगा.

(१८७)-२२, किष्कंधा पर्वत में शान्तिनाथका तीर्थ है, २३, लं-  
का में शान्तिनाथका तीर्थ-मंदोदरी देवता वसर पहिले था-अब नहीं  
रहा. २४, महाराष्ट्र देश में गोदावरीके किनारे प्रतिष्ठानपुर तीर्थ है-  
इसका दूसरा नाम पेंठण बोलते हैं, २५, त्रिकूट पर्वत में शान्तिनाथ-  
का तीर्थ है, २६, विंध्याचल पर्वत में गुप्तपारसनाथ-तथा-श्रेयांसना-  
थका तीर्थ है. २७, माहेंद्र पर्वत में छायापार्श्वनाथका तीर्थ है-२८, जै-  
कार पर्वत में सहस्रफणापार्श्वनाथका तीर्थ है. २९, पुंढ्र पर्वत में महावी-  
र स्वामीका तीर्थ है-३०, मलयगिरि में पार्श्वनाथका-तथा-श्रेयांसना-  
थका तीर्थ है. ३१, सेगमती गांव में-(जहां से नर्मदा नदी निकसी है)  
अभिनंदन स्वामीका तीर्थ है, ३२, उदंड विहार महानगरी में रिषभ-  
देव भगवानका तीर्थ है-३३, हेमसरोवर में बह्मचरविनालयका तीर्थ है

३४, चारिणसी-और-३५, दंडखातमें-पुष्करावर्चपार्श्वनाथका तीर्थ है. ३६, कोयाद्वारमें-सुविधिनाथका तीर्थ है. ३७, तारणमें-और-३८, बंदरीमें-अजितनाथजीका तीर्थ है-३९, काशहृदमें-त्रिभुवनभंगलकलशआदिनाथका तीर्थ है. ४०, अंगदिकानगरीमें-अजितनाथ-शांतिनाथका तीर्थ है, ४१, खेंगारगढमें-उग्रसेनपूजितमेदिनीमुकुट-आदिनाथका तीर्थ है. ४२ अणहिल्लपुरपटनमें-पंचासरा पार्श्वनाथका तीर्थ है. ४३, करहेटकमें-उपसर्गहरपार्श्वनाथका तीर्थ है. ४४, ढाकुलीभीमेश्वरमें-पार्श्वनाथका तीर्थ है ४५, भायलस्वामीगढमें-देवाधिदेवपार्श्वनाथका तीर्थ है, ४६, गुजरातदेशमें हरिकंखीनगरमें-पार्श्वनाथभगवान्का तीर्थ है, ४७, आंवुरीगांवमें श्रीमतीदेवका तीर्थ है, ४८, हारवतीमें-अनंतनाथजीका तीर्थ है. ४९, माणिकदंड-स्थानमें-मुनिसुव्रतस्वामीका तीर्थ है, ५०, प्रभासपटनमें-शशिभूषणचंद्रप्रभुका तीर्थ है,

(१८८)-५१, हिमालयपर्वतमें-छायापार्श्वनाथ-मंत्राधिराज-और-स्फुलिंग पार्श्वनाथका तीर्थ है, ५२, नेपालभोटानमें जैनका तीर्थ था-अब नहीं रहा-५३, पांचालदेशमें उत्तर दिशातर्फ सौवीरदेशमें जहां उदयनराजाहुवा-वहां-बीतभयपत्तनमें-महावीर-स्वामीका तीर्थ था-आजकल बीतभयपत्तननगर नहींरहा. उस जगह-जेहलमनदीकी दखनतर्फ भेंरागांव बसता है, कौशांबीनगरीका-उदयनराज-दूसरा हुवा-और-उक्त-बीतभयपत्तनका-उदयनराजा दूसरा हुवा, ५४, काबुलगजनीतर्फ तरुतशिलानगरीमें पहिलेकालमें-रिषभदेवकेपुत्र बाहुबलीजीका बनायाहुवा धर्मचक्र-तीर्थ था-अब-नहींरहा, ५५, गंगायमुनाके संगममें जहां अब इला-

इलाहाबाद है मिथंगुप्तकेजीचे जैनतीर्थ था-अब-नहीं रहा, अबभी किलेमें जैनमूर्ति मौजूदाहै, ५६, बनारससेछकोश-सिंहपुरीमें विमलनाथजीकातीर्थ है. ५७, ज्वालामालिनी देवतावसरमें-गणधरगौ-तमस्वामिप्रतिष्ठित-चंद्राप्रभुकातीर्थ है. ५८, हिमालयकेपास-गंगा-कीक्षीलयें-विमलनाथजीकातीर्थ है. ५९, पूर्वतर्फ कोशलदेशमें अयोध्यानगरी-जैनकातीर्थ है-बिनीतानगरी-कौशला-और-साकेतपुर-इसीअयोध्याके-दूसरेनामहै, ६०, पूरवमें मगधदेशकी राजधानी-राजगृही-जैनकातीर्थ है. विभारगिरिपहाड यहांही है. ६१ इलाहाबादसेदखनकीतर्फ (४०) मीलदूर-कौशांबीनगरीमें-छठे पद्मप्रभुतीर्थकरका तीर्थ है, आजकल कौशांबीकीजगह कौमुंभगांव बसताहै, पहिलेजमानेमें वत्सदेशकीराजधानी-कौशांबीनगरी ब-ग़ीआबाद थी, उदयनराजा जो सतानीकका बेटाथा. इसिकौशांबीका-मालिक था, ६२, अयोध्याकेपास-सरयूनदीकेकनारे-रतनपुरीमें-धर्मनाथकातीर्थ है. ६३, अयोध्याका शास्त्रानगर-पुरिमताल जैनका तीर्थ है. ६४, पूरवमें अंगदेश चंपापुरी-वासुपूज्यभगवान्-का तीर्थ है. सुभद्रासतीने कुवेसें चालनीभरकर पानी इसी चंपानगरीमें निकालाथा, ६५, पूरवमें विदेहदेशकी राजधानी मिथिलानगरी-जैनकातीर्थ है, जो दरभंगा और चंपारनके पासहै, आजकल उसजगहका नाम तीरहुत्तदेश बोलते है, ६६, इलाहाबादके और भरवारीदेशनकेपाससावथ्यीनगरी-संभवनाथका तीर्थ है, ६७, मुरसेनदेशमें मथुरानगरीकेपास-शौरीपुरनगर-जैनकातीर्थ है यहां बाइसमें नेमनाथ तीर्थकरका जन्म हुवा था, आजकल इसजगहका नाम-बटेश्वर-बोलतह, यहां-चरणपादुका और छतरी बनी

हुइ है, ६८, विहारभूमिमें लखीसरायके पास काकंदी नगरी जैनका तीर्थ है, ६९, पूरवमें राजगृहीनगरीकेपास क्षत्रीय कुंडगांव-जैनका तीर्थ है-यहां महावीरभगवानका जन्म हुवाथा, ७०, चंद्रावती नगरी-जिसको-आजकल चंद्रपुरी-बोलते है बनारसके पास-जैनका तीर्थ है, ७१, पूरवदेशमें शीतलनाथजीकी जन्मभूमि-भदीलपुर-जैनका तीर्थ है, कइलोग कहते है भोपालके पास जो भेलसागांव-है यही भदीलपुरथा, लेकिन ! यहबात गलत है, सबकि-यहां-कोइ चिन्ह-ऐसा नही मिलता जो उक्त बातको सबूत करता हो, भेलसागांव-हमने देखाहै, ७२, मुरसेनदेशकी राजधानी मथुरामें-कल्पद्रुम पार्श्वनाथका तीर्थथा-आजकल मथुराकी गिर्दकों ब्रजभूमि बोलते है, मथुराके जैनटीलेमेंसे अबभी जैनभूमि निकसती है, ७३, पूरवमें कायमगंजके पास-कांपिल्यपुर-विमल तीर्थकरकी जन्मभूमि-जैनका तीर्थ है. ७४, माणिकदंडक स्थानमें मुनि सुव्रत स्वामिका तीर्थ है ७५, श्री पर्वतमें-मल्लिनाथजीका तीर्थ है,

( १८९ )-७६,-पूरवमें मगधदेश-पावापुरीमें-महावीर तीर्थकरका निर्वाण तीर्थ है. ७७, कलिंगदेशमें-रिषभदेवभगवान्का तीर्थ है, ७८, कादंबरी अटवीमें कुंडसरोवरके कनारे अहिच्छता नगरीमें कलीकुंडपार्श्वनाथका तीर्थ है, ७९, शंखजिनालयमें पातालगंगाभिध-नेमनाथ भगवानका तीर्थ है. ८०, श्रीरामशयनमें प्रद्योतकारी वर्द्धमानस्वामीका तीर्थ है. ८१, नंदीवर्द्धनकोटीभूमिमें-महावीर भगवानका तीर्थ है. ८२, चर्मणवतीनदीके कनारे-होपुरीनगरीमें जैनका तीर्थ है. ८३ क्रौंचद्वीपमें तथा ८४, हंसद्वीपमें-सुमतिनाथभगवान्की चरणपादुकाका तीर्थ है, ८५, श्रीमाल

पत्तनमें तथा ८६, उपकेशपुरमें-महावीरभगवान्का तीर्थ है. ८७, गुजरातमें अहमदाबादके पास भोयणी जैनका तीर्थ है, इसमें मल्लिनाथ भगवानकी प्रतिमा अतिशययुक्त है, ८८ पाटलीपुत्र ( पटना )-जैनका तीर्थ, स्थूलभद्रमहर्षि इसी पटनाके रहनेवाले थे, सुदर्शनशेठका मकानभी यहांपर मौजूद है, ८९, ताम्रालिप्ती नगरी जैनका तीर्थ है. ९०, मारवाडमें नाणेबेडेमें-महावीर भगवान्का तीर्थ है. ९१, मालवादेशकी राजधानी उज्जैनमें अवन्तीपार्श्वनाथका तीर्थ है. ९२, कच्छदेशमें अंजारके पास भद्रेश्वर-जैनका तीर्थ है, ९३, मारवाडमें पिंढवाडेके पास वंभणवाल जैनका तीर्थ है, ९४, कच्छदेशमें दूसरा तीर्थ-सुथरीगांवभी-प्रभाविक तीर्थ है, ९५, गुजरातमें खंभातके पास कावीगंधार जैनका तीर्थ है, ९६, द्वारकामें-नेमनाथ भगवान्का तीर्थ-पहिले जमानेमें था-अब नहीं रहा, ९७, मालवेमें धारानगरीके पास मांडवगढ जैनका तीर्थ है, ९८, मारवाडमें सांचौरगांव-महावीरभगवान्का तीर्थ है. ९९ कुंकणमें श्रीपालराजा का स्थापित जैन तीर्थ था-अब नहीं रहा, १००, विशालानगरी-जैनका तीर्थ-पटनेसे उत्तरकी तर्फ तिरहुतमें आजकल (बुस्स) नामसे मशहूर है, चेडाराजाके मरनेबाद कौणिकने उजाड कर डाली थी अब-नाममात्र रह गई है, १०१, पूरवतर्फ श्वेतंबिकानगरी जैनका तीर्थ था, अब नाममात्र समझीये, १०२, मालवदेशमें दशपुरनगरसे चारकोस दूर वही पार्श्वनाथका जैन तीर्थ है, दशपुरका दूसरा नाम मंदसौर समझना चाहिये, १०३, दशार्णभद्रराजा की राजधानी दशार्णपुर-जिसका दूसरा नाम आवश्यक सूत्रकी टीकामें एढकासपुर लिखा है दशार्णभद्रने महावीर तीर्थकरकों नमस्कार करते बख्त थे



हांही अपनी राजरिद्धिकामान कियाथा, इंद्रने अपनीदेवसेनासहित यहांही समवसरणकी चौफेर प्रदक्षिणादिइयो, हाथीयोंके पं-वसें जमीनमें खड़े पड़जानेकेलिये लोगोंने इसनगरका नाम गज-पंथाभी बोलना शुरूकरदियाथा पहिले यहां श्वेतांबर जैनतीर्थथा, अब पहाड़में दिगंबरोंने दिगंबर मूर्तियें उकेरवालिइ इसलिये हा-लमें दिगंबरोंका तीर्थ मशाहूर होगयाहै, आजकल इसकानाम ग-जपंथातीर्थ बोलाजाताहै, नाशककेपासजोअब मौजूदहै क्या जाने ! यही दशार्णपुरकी जगहहो ? कितनेक मंदसौरकों दशार्णपुर बतलातेहै लेकिन ! यहबात गलतहै, १०४, बनारसमें-१०५, चि-तोड़में, १०६, काश्मिरमें, और-१०७, गौड़देशमें-पहिलेजमानेमें प्रभावशाली जैनतीर्थ थे, अबनाममात्र रहगये है, १०८, अष्टाप-दतीर्थपर भरतचक्रवर्त्तोंने चौइसतीर्थकरोंकेमंदिर बनवाये थे, आज कल वहां-जाना मुश्किल है.

( १९० )-सिंधमें-वराहमें-माढेरमें-टंकास्थानमें- रस्थलमें- मुंडस्थलमें-और-मेतुंडकस्थानमें कइजगह जैनकेतीर्थथे, अबनहीं रहे, अनार्यदेशोंमें जैनतीर्थ कमहोनेकासबब-यहहैकि जैनमें मांस मदिराका त्यागस्वना फरमाया, और अनार्यलोग मांसमदिराके प्रेमी ज्यादा ठहरे, फिर उनलोगोंमें धर्मका-या-तीर्थका फैलाव कै से होसकताहै ?-[ वर्षचर्यामें ]ज्ञानी लोगोंने फरमायाहै कि-आ-दमीकों-एकवर्षमें एक नयेतीर्थकी यात्रा जरूर करना चाहिये-अ-पनी पैदाशमेसें-अर्द्धांश-चतुर्थांश-दशांश-या-षोडशांश-धर्मकेलिये स्वर्चकरना, अपने गुरुकेदर्शनकरनेकों जाना, और एक नवीन पु-स्तक मौललेकर धर्मकीपुस्तकालयमें धरना यहस्थल्लोगोंकी फरज

है, [ जन्मचर्यामें ] लिखा है कि-सारी जींदगीमें एकदेवमंदिर-सा-  
 देवमूर्ति-जहर बनाना चाहिये, व्रतनियमलेकर पालन करना चा-  
 हिये, देवद्रव्यभक्षणका त्याग-दीनदुखीका उद्धार-पुर्णमासोंको  
 मदत-और मातापिताकी सेवाकरना जींदगीका सार है, अगर  
 ताकतहीतो एक-अपूर्वग्रंथ-बनाकर दुनियामें रखजाना चाहिये कि-  
 जिससे अपने भरोबादभी-लोगोंको उससे फायदा पहुंचतारहे,  
 बनतेप्रयत्न संसारछोडकर दीक्षाभीलेना चाहिये-जिससेपर लोग-  
 का रास्ता साफहो, इतनेकार्यमेंसे जिसने एकभीकार्य सचेदिकसे  
 कियाहो उसको बारंवार धन्यवादहै,

(२००)-तीर्थनाम उसकाहै जहांजाकर आदमी संसारसमु-  
 द्रसें तीरे, जैनतीर्थको जैनी बौधतीर्थको बौध-वैदिकतीर्थको वेद-  
 मतावलंबी-महामदीनाको मुसलमान-और-अपने-गिरजेघरको अं-  
 ग्रेजलोग-तीर्थ-(यानी)-पवित्रजगहसमझकर उसमें जातेहै, वहां ईश्व-  
 रकाध्यान और प्रार्थनाकरतेहै, इसाईलोग जरूजलमस्थानकोतीर्थ  
 मानतेहै. कोइलोग मनोमयमूर्तियों-और-कोइलोग साक्षात् मूर्तियों  
 नमतेहै, मूर्तिविदून किसोकाकाम नहीचला, मशजिद और-गिर-  
 जा-क्याचिजहै?-सौचोतो!-यही कहना बनेगाकि-ईश्वरकाधर है,  
 जब ईश्वरकाधर माना तो उसकी मूर्तिमाननेमें क्याबिगाडथा ?-अगर  
 कहाजाय-निराकार ईश्वरकीमूर्ति नहीबनसक्ती-(जवाब.) जैसेमूर्ति  
 नहीबनसक्ती वैसे निराकारईश्वरकाधरभी नहीबनसक्ता, ईश्वरकाधर  
 मानना और उसकी मूर्ति नहीं मानना एक जिदहै, जिद्दी आदमी-  
 को कौन समझाशकता है. ? कुरान और बाइबल क्याचीजहै ? इसको  
 सौचतेहै तो यही कहना बनताहै कि-वह-पाकपरवर्दीमारकी जबाबदारी,

कहने वाले कह सकते हैं कि—जब जबानका इतना आदर करना तो मूर्तिके आदर करनेमें क्या हर्ज था ? जब जुबीलीका जलसा हुआ था अपने देशके हजारों लोगोंने जो कि—मूर्तिमाननेसे नाराज भी थे भारतेश्वरीविक्टोरियारानीकी मूर्तिकों मुजरा किया था और फुलोंकी मालाभी पहनाई थी, कहिये ! उस वस्तु मूर्तिमाननेकी नाराजी कहाँ चली गई थी ?—दयानंदसरस्वतीके मतानुयायी दयानंदजीकी मूर्तिका आदर करते हैं और ईश्वरकी मूर्तिसे नाराज रहते हैं यह उनकी जिद है—या—नहीं ?—हुंदायापंथी लोग अपने मुहबंदे गुरुओंकी मूर्तिको नमस्कार करते हैं और जिनेद्रोंकी मूर्तिसे नाराज रहते हैं यह भी उनकी जिद है या नहीं ?—शिखर लोग—उनके ग्रंथ साहबका आदर करते हैं—और—देव मूर्तिसे नाराज रहते हैं यह उनकी जिद है या नहीं ?—लेकिन ! क्या कहा जाय ! जो लोग अपनी अकलके सापने दूसरेको कुछ चीज न समझे—उनको कौन समझा सकता है. ?—अदालतमें हर एक मनावलंबीको कहा जाता है कि—अपने अपने धर्मकी—किताबको—या—अपने ईश्वरकी मूर्तिकों—हाथमें लेकर कहो कि—मैं—सच बोलता हूं, उस वस्तु सब लोग उसी मुआफिक करते हैं, मूर्तिमें नाराज रहने वालोंको पुछना चाहिये उस वस्तु आपकी नाराजी कहाँ गायब हो जाती है ?—अगर कहा जाय कि—यह काम तो अदालतके खोफसे किया जाता है—तो—बतलाना चाहिये—क्या—ईश्वरकी हुकमअदुलीके खोफसे भी अदालतका खोफ ज्यादा है ?—आजकलके नयीरोशनीवाले कुछ अंग्रेजी फारसीपढकर मंदिरमूर्तिसे नाराज रहते हैं लेकिन ! यह नहीं सोचते हमारे ही तालीमदेनेवाले बड़े बड़े समझदार अपने गिरजे व-

रमें जाकर ईश्वरकी प्रार्थना करतेहै, मशजिदमें जाकर शिरझुकाते है, कहिये ! गिरजाघर औरमशजिद कुछ चीज नहीथी तो ये कारवाइ क्यों करते ?-निदान! तीर्थकी जगह भी ईश्वरकों और धर्मकों-याददिलानेवाली है, उसमेंजाकर देवमूर्तिकी पूजा करना, उसजगेह बैठकर ध्यानसमाधिकरना धर्मका एक अंग है, मेरुशिखरपर-मानुषोत्तर वगेरार्पवर्तोंपर-नंदीश्वरद्वीपमें-और-रुचकद्वीपमें जो जैनतीर्थ है उसका बयान यहांइसलिये नहीलिखाकि-वहांजा-नेकी ताकतवाले मनुष्य इसजमानेमें नही रहे, विद्या और लब्धि-योंके कारणसें जो आकाशगामिनो विद्या पहिले जमानेमें लोगों-कों थी अब नही रही, पवनके यंत्रसें आकाशमें उडना एकनकली आकाशगमन है, इससें वैसा फायदा नही होता जैसा विद्यापढकर आकाशमें उडनेसें होताथा, बेलूनमें बैठकर आजकल कइ लोग उडते है लेकिन ! इसमें खतरा बहोत और फायदा थोडा हासि-लहोता है. बल्किन् ! कइ लोग इसकाममें जान खो बैठे है एकअ-खबारमें एक शख्सने लिखाथाकि- कइ बेलूनबाजसाहब-बेलूनमें चढकर मेरुपर्वतकी तलाशकों गयेथे, लेकिन ! पीछे नही लौटे, एक साहब गुब्बारेमें बैठकर पधारेथे, अपनी पहोचकी खबर-कितने-करौजतकतो-वे-अपनेकबूतरोंद्वारा भेजतेरहे, लेकिन ! अखीरमें कबुतर आनेभी बंदहुवे, सौचो !-मेरुकी तलास क्या इसतरह हो सकती है ?-उतनी ताकतका नहोना ज्ञानीयोंने पहिलेही फरमा दिया, फिर क्या फायदा इसतरह जानकी जोखममें पडना, ब्र-तारोपसंस्कारमें तीर्थका बयान इसलिये लिखा है कि-तीर्थम जा नाभी मनुष्योंकी एक फरज है, अभिग्रहप्रत्याख्यानभी कइतरहके

है जिनकी खायेसही आवश्यक सूत्र और प्रवचन सारोद्धार ग्रंथ देखे, व्रतारोपसंस्कार पूरा हुआ-अब अंतकर्म संस्कारका बयान सुनिये.

( २०१ )-१६-सोलहमा-अंतकर्मसंस्कार, अंतकर्मका दूसरा नाम-मृत्यु-है, संसारमें कोई ऐसा नहीं जो मृत्युसे बचा हो, जितना आयुष्य कर्म पूर्व भवमें जीव बांधलायाहै उसका पुरा होजाना इसीकानाममृत्युहै, क्या राजा-और-रंक-सभीको मरना है, मनुष्य अपनी जीवित दशामें धन्यवाद और मुख्याती प्राप्त करसकते है. लेकिन ! गुणाविदून मुख्याती कभी नहीं फैलती, फुलनही लेकिन ! गुणोजनोंकी न्युशबू बनीहुइ है, दुनियामें आदमीको-मान अपमान-मुखदुख-और-हंसीखुशी-अलबते ! प्राप्त होतीहै लेकिन ! तारीफ उनकी है-जो-समभाव रहे, जलमें डूब मरना-या-झेर खाकरमरना बेचकुफोंका कामहै, क्या ! इसतरह मरनेसे स्वर्गमिलता है !-कभी नहीं ! बुरीगतिहोकर जन्म जन्ममें तकलीफ उठानी पड़ेगी, अगर अच्छे लोगोंकी तालीम पाइ है तो याद रखो इस तरह जानखोना बुरा है, स्थानांग सूत्रकेदूसरे स्थानमें लेखहै कि-क्रोध-मान-माया-और-लोभ करके आत्मघातकरना दूर्गतिका हेतु है, अज्ञानी अव्रतीका मरना बालमरणमें दाखिल है, ज्ञानी और सर्व विरतिका मरना पंडितमरण है, देशविरतिका मरना बालपंडितमरण है, आराधना करके अच्छे ध्यानमें मरना अच्छी गति पानेका सूचक है, स्थानांगसूत्रके सातमें स्थानमें-और-आवश्यकसूत्रका निर्युक्तिमें-सात कारणसे आयुष्य दूटजाना फरमाया, जैसे अकाले किसीदृष्टकों फलआजाता है वैसे खोटे निमित्तमिल-

नेपर अकालमरनाभी होजाताहै, जैसे भस्मरोगी मनुष्यों बहोत कालमें पचनेवाला भोजन थोड़ेकालमें पच जाता है वैसे निमित्त पाकर आयुष्य भी थोड़े कालमें भोगलिया जाता है, जैसे पचास हाथलंबीढोंर एकतर्फके कनारेपर अग्निलगानेसें बहोतकालमें जलकरखाखहो सकती है, लेकिन-वहीढोंर इकठी करके अगर आगमें धर दीइजाय तो जलदी जलजाती है वैसे आयुष्यभी उपक्रम लगनेसें जलदी भोग लिया जाता है, यानी टूट जाता है, ऐसा कहनाभी कोई हर्जकी बातनही, १, अतिराग और-अतिखोफके मारेभी आयुष्यटूटजाता है, २ चाबक-तलवार-बरछी-बंदूक-ताँप वगेरा निमित्तसें भी आयुष्य टूट जाता है, ३, ज्यादा खाना खानेसें और ज्यादा भूखारहनेसें-४, मर्मप्रदेशमें अत्यंततकलीफहोनेसें ५, दीवार परसें या-पहाडकोशिखरसें-गिरजानेसें-कुवावाब-डी-नदीसरोवर समुंदरमें पडजानेसें आगमें गिरनेसें-वगेरा कारणसेंभी आयुष्य टूट जाता है, ६, सर्प काटखाय-या-झेरकाप्याला पोइकीया जाय तोभी आयुष्य टूट जाता है, ७, स्वासरुकजानेसें (यानी) फांसी वगेराके निमित्तसेंभी आयुष्य टूट जाताहै, अगर सवाल किया जायकि-वैसाही होनहार था जिससें वैसा निमित्त मिला और मर गया-इसमें आयुष्य टूट गया-वैसा क्यों कहना!-(जवाब.)-अगर वैसानिमित्त न मिलता तो वो शरूस न मरता ऐसाभी ज्ञानीयोंने अपने ज्ञानके जरीये देखाथा-इसीलिये उन्होंका फरमाना हुवाहै कि-वैसा निमित्त मिलनेसें आयुष्य टूट भी जाता है, अगर सवाल किया जायकि-कइलोग-प्राणांत करनेवाले निमित्तमिलनेपरभी जितेरहगये है, फिर आयुष्य टूटना कैसे स-

वृत्तरहा, ( जवाब. )-जितेभी रहजातेहैं और मरभी जाते हैं, इस लिये यह निश्चय नहीं कहाजासकताकि-जितेही रहे-या-मरही-जाय, हां ! इतना कहना बनसकता हैकि-उपरलिखे निमित्त मिलनेसें मरजानेकी संभावना है, इसलिये बनतेप्रयत्न इन निमित्तोंसें बचना चाहिये,

( २०२ )-जिसरोगीको रात्रीमें नींद न आवे, सभी इंद्रियें अपने अपने कार्यको छोड़देवे-तो-जानना रोग असाध्य है, स्वास चलना, मूल उठना, हीचकीचलना, तृषा बहोतलगना-सभी पदार्थ छालरंगके दिखनेलगना. वृक्षोंतर्फदेखनेसें जलते हुवे मालूमदेना-ये-सबलक्षण असाध्य रोगके समझना चाहिये-लेकिन ! इतना यादरहेकि-बहोतदिनके बिमारकेलिये-ये-बातें हैं, तंदुरस्त्वको किसीकारणसें एकदम ऐसा हो जाय तो उसके छिये एकदम नहीं समझनाकि-यह असाध्यरोग होगया. जिसरोगीके पांच गर्भरहे और सावधानीसें बातेंकरे उसको असाध्यरोग हुवा नहीं जानना, आंखकी चमक मोतीके पानीकीतरह उतरजाय, और किसीको पहचाने नहीं तो जानना कुछ असाध्यरोगके लक्षण शुरुहुवे, जिसको अपनी जबान-आर-नाककी अणी-अपनी आंखोंसें-बिदून आरीसे न दिखे उसको जानना चाहिये मरना नजदीक आया, जिसको अपनी छायामें अपना मस्तक न दिखाइदे-तो-जानना-मृत्यु-नजदीक आया, जिस बीमारका खाना पिना बिल्कुल छूटजाय या-जिसकी गर्दन आपही आप स्थिर न रहसके-उसेजानना रोग असाध्य है, दोनों कानमें एकसाथ दोनोंअंगुली दबाकरदेखनाकि-भीतरका धोर शब्द अपनेको सु-

नाइदेता है—या नहीं ?—मुनाइदेवे तो ठीकहै नहींतो मरना नजदीक आया जानना, बीमारआदमीकी—भू—टेंडी होजायतो—जानना नवदिन जीनारहा, कानसें अवाज न मुनाइदेवेतो सातादिन—नाकसें किसीचीजकी खुशबूलेना बंदहोजाय—यानी—घ्राणइंद्रियकी ताकत हठजायतो—पांचदिन—आंखोंसें—हाथकी रेखा दिखनी बंद होजायतो—तीनदिन—और—जबानसें—किसीचीजका गुणमाहूम होनाबंदहोजाय तो—एकदोदिन जीना रहा ऐसा जानना, छोंक और मलमूत्र एकसाथ खलास होजाय—यानी—छोंक आइ औरउसीदम मलमूत्रके द्वारभी खुलगये तो जानना मरना निकटआया, जिसको ध्रुवकातारा रात्रीके चरुत न दिखाइदे—तो समझना मृत्युपास आगया.

( २०३ )—जब वृद्ध अवस्था होनेपर आवे तो मनुष्यको चाहिये अपने किये हुवे पापोंकी आलोचना लेवे, जीवहिंसा किइहो, शूठ बोलाहो, चोरीजारी किइहो, व्रतनियमलेकर तोडडालेहो, सामायिक—प्रतिक्रमण—पौषधव्रतवगेरामें दोष लगाया हो—तीर्थयात्रामें दोषलगाया हों—देवद्रव्यभक्षण किया हो, श्रूठीगवाइ दीनी हो—कि—सीपर शूठा दोष लगाया हो—वगेरा जोजो खोटेकाम अपनेसें बन पडेहो—निर्ग्रंथगुरुकेपासजाकर मुनाना चाहिये, मनवचनसे किया हुआ पापभी अगरआलीयानींदा नजायतो कायासेंभोगनापडताहै. निर्ग्रंथ गुरुउसकोमुनकर शास्त्रमेंदेखके उसे प्रायच्छित्तदेवे, प्रायच्छित्तदेनेके कइरस्ते है, जिसकी ताकत तपकरनेकी नहो उसको ज्ञानध्यानकरनेका फरमावे, जिससें ज्ञानध्यानभी न होसकता हो उसको द्रव्य खर्च करनेका फरमावे, जिसकेपास द्रव्यखर्चकरनेको ताकत नहो उपवास—वगेरा करनेको फरमावे,



स्वाध्याय-तीर्थयात्रा-मंदिर-धूर्ति-पुस्तकालय-वगेराकार्यमें तनमनधनसें जितना उससेवनसके उतना कार्यकरना फरमावे, बस ! इसीकानाम प्रायच्छित है, कितनेकलोग इज्जतकेमारे आ-लोचनानहीलेते-लेकिन ! यह उनकी भूल है, गुरुकेपास अपना पाप जाहिरकरनेसें-बड़ाफायदा है, मनमेंशल्यरहजाना अच्छानही गुरुकों मुनासिबहैकि-एककी आलोचना दूसरेकेपास जाहिर न करे, शिष्य कौंचाहिये जोकुच्छ प्रायच्छित गुरु बतलावे दूसरेकेसामने बयान करे.

( २०४ )-बीमारभादमीकों चाहियेकि-अपनेमरनेसें पहिले धर्मकामकेलिये द्रव्यनिकालकर देवमंदिरमें-या-धर्मसमाजमें भेजदेवे. पीछेसें बेटाबेटी न मालूम कैसे निवडेगें-कइलोगोंके घरमें धर्मका द्रव्य रहगयाहै, और वे पापसें डूब गयेहैं-नालाइकबैटे बापका निकालाहुवा धर्मद्रव्य पीछेसें देतेनहीहै, इसलिये मरनेवालोंकों मुनासिबहैकि-अपनी हयातीमें सप्तक्षेत्रकेलिये धन निकालकर तुर्ब जहांकातहां भेजवादेवे, लेकिन ! अपश्रोष है कि-हीनपुण्यलोगोंसें धर्मकाम होता नही-बल्किन् ! बेटाबेटीकेमोहमें पडकर हाथपांव त-डफातेहुवे मरजाते हैं, लाइकवर बेटे-वें-है-जो-अपने मातापिताके फरमाने मुजब-रूपयोंकेतोडे उसीबरुत देवमंदिरमें-या-धर्मसमाजमें भेजदेवे, कितनेकलोग-बड़ाइकेलिये कहदेतेहैकि-हमने-हमारे मातापिताकेपीछे इतनेरुपये धर्मकामकेलिये निकाळे है, लेकिन ! पीछेसें कुटीकोडीभी नहीदेतेहै, धिक्कार है उनके जीबकों,-मरनेका वरुत नजदीक आगया मालुमदेवे तब कुटुंबपरिवारके लोमोंकों मुनासिब है कि-उसकों धर्मशास्त्रका बयान सुनावे, देवगुरुका शरण दिखावे, और बारवार कहतेरहेकि जगतमें सारबस्तु धर्म है,

उसके श्वर कोइ तरेहकी नाराजी न बतावे, लाडकबर बेटा बो है जो अपने मातापिताकों धर्मकाभत्ता शायदेवे, अच्छी औरत-बो है-जो-अपने खाविंदकों मरनेकेवरत धर्म सुनावे, रोवेनही और कहेकि-आपकी काररवाइसें-मैं-सुखीहूं-किसीतरहकी चिंता आप अपनेपास न आने देवे,

( २०५ )-जिमवरत मनुष्यका मृत्यु हो अच्छाध्यान रहे तो जानना चाहिये उसका अच्छीगति प्राप्तहुइ, मरनेबाद जीव तुरंत दूसरीगतिकों प्राप्त होजाता है, रास्तेमें उसकेसाथ पुन्यपाप बगेरा कर्म साथलगेरहने है जबतक जीवकी मुक्ति नही होती कर्म अलग नही होते,-कर्म-क्याचीजहै उसकाभेदजाननाहो-तो-कर्मग्रंथ-देखो अगर उसकोंभी तुमने नहीपढाहैतो थोडेमेंउसकाबयान समझलो कि-जीवके साथ जो शुभपुदगललगे है उसकानाम पुन्य है-अथुभ पुदगललगेहै उसकानाम-पापहै, जीवकों भलीबुरीगति वेही लेजा-तेहै, यानी लोहचूबकके न्यायसें खेंचायाहुवाजीव कर्मकेही उदयसें भलीबुरीगतिकों जाताहै, अगर पुन्यकिये होमेंतो स्वर्ग मिलेगा, लेकिन ! अपशोष है अस्वीरमें वहांसेंभी मरना पडेगा, जहां कं-कर-कंटक-रज-कींचड-पशु-पक्षी-नहीहै, निर्मलवायु अच्छेबाग बगीचे साफजलकी बावडीयां-फ्रिडा करनेकेलिये मौजूद है, जहां पुन्यविपाकसें-तरहतरहकेरत्न-तरहतरहकेनाटक-गीतगान-और-श्रृंगारके भोगविलास मौजूद है. जहांदेवांगनाकों गर्भ रहनेका कु-छकाम नही बल्किन्-उत्पातशय्यामेंही एकमुहूर्त्तभरमें पैदाहोकर जवानी आजाती है, जहां बड़ी बढीलंबी उमर है, लेकिन ! अप-शोष है अस्वीरमें उनकोंभी मरना है, हां ! जिनोने-सगद्वेषबगेरा

सबतरहके कर्म दूर करके देव-मनुष्य-नरक-और-तिर्यचगतिसे छुटकारा पाया है अलखते ! उन्हींको मरना नहीं है, दूसरे सबको मरना है तो इसकी चिन्ता करना भी फिजुल है, इसलिये मुनासिब है, कि-धर्मतर्फ खयाल रखकर किसी चीज पर मोहममत्व नहीं लाना, इसीमे अपना भला है,

(२०५)

( दोहा. )-

- जैसे कंचुकत्यागसे-विनसत नाही भुजंग,  
देहत्यागसे जीवफुन-तैसे रहत अभंग. १
- जो उपजत सो तूं नहीं-विनमन मो पिणनाह,  
छोटा मोटा तूं नहीं-समज देखदिलमांह. २
- तूं सबमें सबसें अलग-न्यारा अलख सरूप,  
अकथकथा तेरीमहा-चिदानंद चिद्रूप. ३
- जनममरण जहां हैं नहीं-ईतभीतलवलेश,  
नहीं सिर आण नहीं दकी-सोही अपनादेश. ४
- बेंदी लोहकनकमयी-पापपुन्य युग जान,  
दोनोंसें न्यारा सदा-निजमरूप पहिचान. ५
- युगलगति शुभपुन्यमें-इतर पापसें जोय,  
चारोंगति निवारिये-तब पंचमगति होय. ६
- पंचमगति विन जीवकों सुख तिहू लोकमझार,  
चिदानंद नहीं जानजो-ये मोटा निरधार. ७
- मैं मेरा इसजीवकों-बंधन पुरुता जान,  
मैं मेरा जाकों नहीं-सोही मोक्ष पहिचान. ८
- रागद्वेष जाकों नहीं-ताकों काल न खाय,  
काल जीत जगमें रहें-मोटा विरुद्धराय. ९

( २०६ )-सबकामका मुहूर्त्त लोग देखतेहै लेकिन ! मरनेका मुहूर्त्त कोई नहीं देखता, देखे कौन ? मरनेकी आफतही ऐसीहै. मृतकलेवरकी अंतिमक्रिया देशदेशमें अलगअलगतोरसें किई जाती है, लेकिन ! जो जलादेनेकी रसम है सबसे उमदाहै, कइलोग मुर्देकों जमीनमें गाडदेते है, कइ समुंदर-या-नदीमें-डालते है, कइ सूर्यके तापसें सुखानेकेलिये या सडगलजानेके लिये जंगलमें छोड आतेहै, कइलोग मसालाभरके संदूकमें रखते है, कइ मकानमें-और कइलोग इंटचुनेके कमरेबनाकर उसमें सोलादेते है, लेकिन ! सबसे अच्छीरसम आगमें धरकर जलादेना ठीकहै, किसीजमानेमें जंगलमें रखआनाभी लोग पसंदरखतेथे लेकिन ! इसजमानेमें तो जलादेनाही अच्छासमझागयाहै, छोटेछोटे बालकोंकेलिये अबभी जमीनमें गाडदेनेकी रीति जारी है, दो-या-तीनहाथलंबा-खड्का खोदवाकर उसमें गाडना चाहिये, सूक्रीपीटी उसपर ढालना अत्यंत जरूरीहै, जब मनुष्य मरजाता है नजर नहीं आताकि-कहां गया ?-नजर कैसे आवे ?-जीव अरुपी डहरा, और उसके साथ जो कर्मलगे है वे चारस्पर्शी है,-जो-छदमस्थोंके दृष्टिगोचर आन-हीसके, जैसे मकानबंदकरके तलघरमें नगारा बजाओ-और-उसकी अवाज बहार निकलआतीहै वैसे जीवभी-भीतके बीचमें होकर निकलजाताहै, अवाजके पुदगल आठस्पर्शी हैं और आठकर्मके पुदगल चारस्पर्शी ठहरे, फिर दिवारके आरपारहोते क्या बढीबात है ?-जीवके चलेजाने बाद मुर्देकों नहलाकर अच्छे कपडे पहना नाचाहिये नइबनाइहुइ बांसकी शय्यापर घासबिछाके मुर्देकुं सुलाना और कंधेपरधरकर मञ्चाणभूमिकामें लेजाना यह

अंतर्कर्मसंस्कारकी बातें किसीसे छिपी हुई नहीं है, मुर्दे-  
केपीछे रोतेपीटतेजाना इससेतो गंधर्वलोगोंको बुलाकर  
सारंगीतबलेकेसाथ बैराग्यरसके पद गातेहुवे जाना हजार  
दर्जे अच्छा है, कइदेशोंमें यह रसमें जारी है, जबकोइ शरणा मरता  
है तब उसके पीछे इभीतरह गायन करतेहुवे लोग जाते है, हमारी  
ही समुदायके एकसाधु जब मरगयेथे बैराग्यरसकेपद गातेहुवे लोग  
उनको लेगयेथे, उसवरुत पाषाणहृदयपुरुषोंनेभी रोदिबाधा, मो-  
हनीकर्ममें पडकर रौना इससें यहरौना हजारदर्जे अच्छा है, इस-  
सें सबलोगोंकी निगाह धर्मपर बढ़तीहै, अगर सबसंसारीलोग इ-  
सी मुजब करतैरहेतो कैसी उमदाबातहो !-लेकिन ! अपशोषहैकि  
बुरीरसमको रोकनेवाले लोग इसजमानेमें बहोत थोड़ेरहगये, ब-  
ल्किन् ! इसबातको कइमूर्खलोग हंसीमें उडादेयगे, लेकिन ! अ-  
च्छेलोगोंको चाहिये कि उनका एकतिलमात्रभी खोंफखयालमें  
न लावे. ज्ञानीयोंकी बातको मूर्खलोग हंसीमें न उडावे तो फिर  
उनकी मूर्खता कैसे जाहिर हो ?

( २०७ )-एकनालाइक बेटा जुआरीओंके संग जुआ खेलता  
था-उसवरुत किसीने आनकर कहा-तेराबाप मरगया, चल !-  
उसनेकहा तुम तयारीकरो-मैं-आया, थोडीदेरकेबाद फिर आन-  
कर उसशख्सने कहा-चल ! भैया !-तयारीभी होचूकी, तब जु-  
आरी बोलाकि-चलना-तो-इसीरास्तेसें है, तुम लेआओ, मैंभी  
यहांसें साथहोचलुंगा, महाशय !- ऐसेबेटसे तो न होनाही अच्छा  
है, सबलोगोंको चाहिये कि दुश्मनकोभी तकलीफके वरुत सहा-  
यतादेना, दुश्मनकेघरभी शोककेवरुत जरूर मिलनेको जाना चा-

हिये, सबको मरना है, सुख और आरामका घमंडलावे सो मूर्ख है हां ! अधर्मी-और-नास्तिकोंके पासजाना कुछ जरूरत नहीं. म-  
शाणमें पहुंचनेपर काष्ठकी चितामेंधरके-मुर्देको-आगलगाना चा-  
हिये, साधुलोगोंका मृतकलेवर होतो उसको काष्ठके विमान ब-  
नाकर उसमें बैठाके लेजाना-और-चंदनकेकाष्ठसे अग्नि संस्कार  
करना चाहिये, तीर्थकरके कलेवरको अग्निसंस्कार कियेबाद उनके  
अस्थिक्षीरसमुद्रमें देवोंद्वारा वहनकरादिये जातेहैं, उनको ढाढां  
इंद्रलोगलेजाते हैं और उनको रत्नकेडब्बोंमें रखकर पूजते हैं, अ-  
गरकोई ग्रहस्थ अपने मातापिताके अस्थि लाकर तीर्थस्थानमें प-  
हुचादे तो कोई हर्जकी बातनहीं, तीर्थस्थानमें कोईनदीहो तो उ-  
समें वहनकरादेना, नदी-न-होतो-तीर्थस्थानकी जमीनमें-पहाडकी  
कंदरामें-या-गर्तमें खड्डा खोदकर उसमें रखकर मीठीढालके पुर  
देनाचाहिये, पूज्यभूमिमें कालांतरसे परिणामांतरहोकर तदाकार  
होजायगे निहायतउमदाबातहै, मुनिजनोंके मृतकलेवरको शींगारे  
हुवे विमानमें वेठाकरजब गृहस्थलोग श्मशानमें लेजातेहैं तो-वहां  
पहुंचनेपर ध्वजावगेरा उतारलेतेहैं और अपनेघर इसलिये लेआ-  
तेहैंकि-इससे हमारा अच्छाहोगा, लेकिन ! यहरीति शास्त्रोक्त न-  
हीहै, इसमेंधर्मकी और गुरुकी बेअदबी होतीहै इसलिये मुनासिब  
है जिनको दिया जाता हो उनलोगोंको देदेना,

( २०८ )-मरनेवालेकेपीछे बहोतदिन शोककरना अच्छा न-  
ही, जिसकेघर मृत्यु हो उसकेवहां बारहदिनतक अशौच जानना,  
बारहदिनतक उसघरके मनुष्य जिनप्रतिमाकी पूजा न करे, दर्शन  
दूरसे बेशककरे, मृतकलेवरको कंधालगानेवाला ( २४ ) पहरतक

जिनप्रतिमाकी पूजा न करे, वेष बदलकर शीर्षोंगोंको बुलाकर  
 पहरतक अशौचमाने, दासदासी जो अपनेघरमें मरे जाय हज़ार  
 अशौच, जिनदिन बालक जन्में अगर उसीदिन मरजाय मरता  
 दिनका अशौच,—आठवरसका या आठवर्षके निचेका बालक मरे  
 रेतो आठदिनका अशौच. जितनेमहिनेका गर्भ पड़े उतनेदिनका  
 अशौच, हाथी-घोडा-उंट-उंठणी-गौ-भैस-कुत्ता-बिल्ली-अपनेघ-  
 रमें मरे तो जबतक कलेवर बहार न पहुंचायाजाय तबतक अशौच,  
 साधुलोगकालकरजाय वहां एकदिनकाही अशौच जानना, पुरुषके  
 पीछे सतीहोना यानी जीतेहीउसकेसाथ जलमरना बड़ापाप है,  
 मोहनीमें पड़कर कइस्त्रीयें इसतरह जलमरी हैं लेकिन ! यह महा  
 मूर्खताकाकाम उन्होंनेकिया है, किसीमतावलंबीयोंके धर्मशास्त्रमें  
 यह बात नहीं लिखो-न-मालुम यहरसमकहांमें चलपडोथी, कि-  
 तनेककहतेहैं सतीहोतेवरुत उसकों मृत चढजाताहै, उसवरुत अ-  
 गर वो स्त्री किसी बंदकियेहुवे मकानकों या तालेकों हाथ लगा-  
 देतां उसीदम खुलजाता है, ( जवाब. ) यह बात बिल्कुल गलत  
 है, कषायके उदयसे मरनेचली और उसमें सत आजाय यह स-  
 मझना बेवकुफोंका काम है, अच्छेलोग इसबातकों कभी नहीं मा-  
 नसकते, आजकलतो बहोतही अच्छीबातहुइहैकि-यह रसमही उठा  
 दिइगइ, कइबातमें स्वार्थीलोगोंने अपना मतलब बनालियाहै कि  
 मरनेवालेकेनामसें हमकों जो कोइ पलंग-थाली-लोटा-पौशाक-  
 और-गौ-बगेरा देयगें उनके पितरोंकों स्वर्गमें-बे-चीजेंमिलेगी,  
 लेकिन ! यहबात अच्छेलोगोंने बिल्कुल झूठ फरमाइ, हां जोकुच्छ  
 वो मरनेवाला अपनेअंगसे करगयाहै वहीधर्म उसके शाय मया जान-

हिये, सबकों मरनेकीकुच्छ धर्मकार्यमें खर्चकरना कहदिया हो और हां ! अधर्मी-औरसावधानीहोनेपर अपनेदिलसे उसवातकी अनुमो-  
 शाणमें ह्वा-तो-उसका-पुन्य उसवरुत बोबांधकर शायलेगया जान-  
 ना, विदून् कियेकराये अनुमोदे-आत्माकों कर्मबंधनही होता, मन-  
 चन विना-एकीली कायासें कियाहुवाकर्म-इरादा नहोनेसें आत्माके  
 साथ बंधकोप्राप्त नहीहोसकता, बेटे अगर उसवरुतके निकालेहुवे धर्म  
 द्रव्यकों पीछेसेंभी खर्च करे तो उनकादोषहै, लेकिन ! यहां जो उनके-  
 नामसेंदूसरोंकोदेवे वोउसकोंस्वर्गमें जाकरमिलेयसमझनाबडोभूलहै,

( २०९ )-बेलजियमदेशमें मुर्देकों जैसीधूमसें लेजाते है वैसी  
 धूम दूसरेदेशोंमें विवाहके वरुतभी नही होती होगी, मरनेकीखबर  
 कुटुंबीनातेदारोंकों नोटिशद्वारा दिइ जातो है, और जब-बें-लोग  
 आतेहै,-तो मरनेवालेकेघर अपने अपनेनामके क्याई देकरआते  
 है, मुर्देकी गाडी गहनेकपडोंसें खूब सजाइजाती है, हांकनेवाला  
 टोंपी चांगा पहनकर बैठता है, गाडीमें कालेघोडे जोतेजाते है,  
 सबसामान काला होताहै, गाडीकेपीछे दोचारआदमी नोकदार  
 टोंपी और कमरतक झंडीयोंके फरहरे लगाये चलतेहै, टोंपीयोंपर  
 काले तुरें फरफरातेरहतेहै, इनकेपीछे जितनीगाडीयांहो मरनेवाले  
 कीतारीफ है, किसीस्त्रीका प्यारा पुरुष-या-स्त्री मरजाय उसके  
 जलानेकों स्त्रीकेबदले उसकापति जाता है, गाडीकेसाथ जोलोग  
 घोडेपरचढकरजातेहै रास्तेमें जुलुटपीतेरहतेहै. देशदेशकी रसम  
 न्यारी है, कहांतक बयानकरे ?-हरशखशकों यादरखना चाहिये  
 एकदिनमेरेशरीरकी खाखहोजाना है, कहां पैदा हुवे औरन मा-  
 लुम कहां मरनाहै, जिनके जन्मसमय किसीने खुशीनही मनाइ  
 और मरनेके वरुत किसीने रोयानही-ऐसेशखशभी दुनियामें ला-



खोंकरोहें होगये और जिनके जन्ममरणमें अद्वैत हर्षशोकसे संसार चकित होगया ऐसेभी लाखोंकरोहें होगये, किसकिसकी गिनती करे ?-छत्रपति और कंगालपति-दोनोंकेलिये मरनेकी सड़क एकसीहै, अगर दुनियामें मरना न होता तो न मालूम लोग क्या क्या अन्याय कर गुजरते ? जो-जो-राजेमहाराजे दुनियाभरमें नहीं समातेथे वीनहाथजमीनमें समागये, जिनपर चवरछत्र होतेथेउनपर गींदह पैशाब करते हैं, संबंधीलोग मीठीके ढेंलेकीतरह मुर्देकोछो-डकर पीठदेके चले आतेहैं कोई किसीके साथ नहीं जाता, समझ शकोतो समझलो मोहममता और घमंड किसपर करते हो, !

( २१० )-जोशस्त्र बिना औलाद मरगया हो-उसकी दौलतका बारीसकौनहो ?-उसकाबयान अर्हन्नीतिके कानून मुआफिक यहां लिखाजाताहै,-जैनशास्त्रोंमें पुत्रपांच तरहके फरमाये, दोतरह के मुख्य और तीनतरहके गौण-

( अर्हन्नीतिका-दायभाग प्रकरण. )

औरसो दत्तकश्चव-मुख्यौ क्रीतः सहोदरः  
 दौहित्रश्चेति गौणास्तु-पंचपुत्रा जिनागमे. ६८  
 धर्मपत्न्यां समुत्पन्नः-औरसो दत्तकस्तु सः  
 यो दत्तो मातृपितृभ्यां-प्रीत्या यदि कुटुंबजः ६९  
 कथं क्रीतो भवेत् क्रीतः-लघुभ्राता च सोदरः  
 सौतः सुतोन्नवश्चेमे पुत्रा दायहराः स्मृताः ७०

( अर्थः )-औरस-और-दत्तकपुत्र ये-दोनों मुख्यके भेदमें दाखिलहैं द्रव्यदेकर लियाहो-सो-क्रीत-और-छोटाभाइ तथा ल-इकीका लड़का ये तीन-गौणपुत्रकेभेदमें दाखिल हैं, निजजीसें

पैदाहुवाहो-उसकानाम औरसपुत्र है, मातापिताने खुशहोकर दियाहो उसकानाम दत्तकपुत्र है, दत्तकके ग्रहण करनेके पीछे आत्मजपुत्रपैदाहोजायतो पघडो आत्मजपुत्रके बंधेगी, और दत्तककों ज्यायदादसें चोथाहिस्सा मिलेगा, अगर पहिलेसेंही दत्तकपुत्रकों पघडी बंधादिइ गइ होतो दोनोंकों बराबर भाग मिलेगा, निचे छिखेहुवे आठतरहके पुत्र जैन आम्नायमें हिस्सेदार नही माने, दूसरेमतवालोंने माने है.

पौनर्भवश्चकानीनः प्रच्छन्नःक्षेत्रजःतथा,

कृत्रिमश्चापविद्धश्च-दत्तश्चैव सहोदजः, ७१

अष्टावमी पुत्रकल्पा-जैन दायहरानहि,

तीर्थीतरीयशास्त्रे च-कल्पिताः स्वार्थसिद्धये, ७२

( अर्थः )-भर्त्ताकेमरेबाद अन्यसें उत्पन्न हुवाहो सो पौनर्भवपुत्र-कवारीसें पैदाहुवाहो सो कानीनपुत्र-भर्त्ताकेजीतेहुवे परपुरुषसें पैदाहुवाहो सो प्रच्छन्न पुत्र-देवरवगेरासें पैदाहुवाहोसो क्षेत्रज ग्रामवगेराआजीवकाका लोभदेकर पुत्र बनालिया हो सो कृत्रिम मातापिताका-निकाल दिया हुवा जिमतिस उपावकरके पुत्रबना लिया हो सो अपविद्ध-मातापिताने छोडादियाहो-या-उसक माता पिता मरगये हो-वो-खुदआकरपुत्र बने सोदत्त-और-कन्या अवस्थामेंही गर्भवतीहोगइहो-उसकाविवाहहुवेबाद चन्म हो सो सहोदजपुत्र-ये-आठतरहकेलडके जैनशासनमें प्रमाणीक नही गिने, इसीलिये इनकाहिस्सा नहीहोता, मिताक्षरावगेरा अन्यमतावलंबीयोंने इनकों हिस्सेदार फरमाये है, लेकिन ! यह बड़ी अंधेरकी बात समझना चाहिये, इनका हिस्सा किसहेतुसें होसकता है सो

बतलाना चाहिये, लेकिन ! क्या बतलावे ?-जिनके घरमें सबामन-  
तैल होतेहुवेभी अंधेरारहताहो उनको कहांतक तारीफ करे ?-

( १११ )-कौडिग्रस्त मरजायतो उसकेबाद उसकी स्थावर-  
जंगम मिलकतपर हक किसका पहुंचे उसकाबयान-अर्हन्नीतिके  
काननमुजब-ऐसेहै,

पत्नीपुत्रश्चभ्रातृव्याः-सर्पिडश्च दुहितृजः

बंधुजो गोत्रजश्चस्व-स्वामो स्यादुत्तरोत्तरं, ७३,

तदभावेच ज्ञातीयै-स्तदभावे महीभुजा

तद्धनं सकलं कार्यैर्धर्ममार्गे प्रदाय च, ७४,

( अर्थः )-पुरुषकेमरनेबाद उसकीकुलज्यायदादकी मालकी-  
न अवल उसकी स्त्रीहै, दूसरेनंबरमें उसका बेटा-उसक नहोनेपर  
भतीजे-चौथेनंबरमें सर्पिडकहनेसे उसकी सातपीढीतककाभाइ पां-  
चवेनंबरमें बेटा-छठेनंबरमें बेटाकाबेटा-सातमेंनंबरमें चौदहपीढीत-  
कका भाइ-आठमेंनंबर गोत्रज-नवमेंनंबर ज्ञातिवाल-और जब बं-  
भी नहो-तब-उसद्रव्यकों राजा लेकर धर्मकाममें लगादेवे, अपने  
खजानेमें नढाले, पतिकेमरनेबाद विधवास्त्रीकों अखतियार हैकि  
पतिकी कुलज्यायदाद अपनेतालुकरखे, अगर पुत्र किसीकाममें  
स्वर्चकरना चाहेतो माताकी सलाह बिदून नकरसकेगा, माताकी  
मौजूदगीमें दत्तपुत्रकों या आत्मजपुत्रकों अखतियार नहीकि-स्था-  
वर जंगममिलकतकों दान-या-विक्रय करसके, मिताक्षरादिवगेरा  
अन्यमतावलंबीयोंके ग्रंथमें पुत्रके अभावमें स्त्रीकोंपतिकी ज्यायदा-  
दकी मालकीन होना लिखा, लेकिन ! यह अन्याय है, स्त्री नि-  
राधार होजाय और उसकों धनदौलतकाभी आधार न दियाजाय

तोफिर उसे आश्रय किसचीजका रहेगा, इधर पति मरगया और इधर लडकोंने धनमालका अखतियार लेकर उसकों निराधार कर डाली, कहिये ! यह अन्याय है या नहीं ?—अगर कहाजायकी—स्त्रीकापुन्य—पुरुषके पुन्यसें कमकहा फिर पुत्रकोंछोडकर स्त्रीकों, पतिकेधनकी अधिकारिणी क्यों किइजाती है ? ( जवाब. )—पुन्य अलबते ! स्त्रीका कमहीहै लेकिन ! पतिकी मिलकतमें पुत्रसें पहिले स्त्रीका हकपहुचना न्याय है, क्योंकि—जबपतिकेजीतेहुवेभी पतिकीअर्द्धांगीथी तो पीछेसें उसके धनमालकीमालकीन क्योंनहो?

( २१२ )—अगर कोई संतानरहित पुरुष बीमारीवगेरासें दुस्तीहोकर अपने घरके बंदोबस्तकेलिये वसीयतनामा लिखनाचाहेतो उसकेनाम लिखसकता है जो स्त्रीकी आज्ञापालनेलाइकहो, पतिकेमरनेबाद अगर वसीयतनामावाला बदनीयतहो जाय तो—वो विधवास्त्री उसवसीयतनामेकों खारीजकर दूसरेकेनाम दूसरा वसीयतनामाकरसकती है, धर्मकामकेलिये या ह्वातीव्यवहारकेलिये पतिकी मिलकतको गिरवीरखसकती है और बेचभी सकतीहै आत्मजपुत्र—या दत्तपुत्र विनयवान् मातृभक्त और विद्याध्य नतत्परवगेरा गुणोकरके सहित है तोभी—वो—कुलागतव्यवहारके शिवाय—ज्यादे काम माताके हुकमबिदुन नहीं कर सकता, अगरसवालकियाजायकि—माता—उसे—न—चाहतीहो—और हमेशा नाराज रहती हो—तो—क्याकरनाचाहिये ?—(जवाब.) उसका हुकम उठाना बे—फिर—कैसे—नाराजरहेगी—अगर कहाजायकि—वो—शूठेधर्मकीश्रधावाली है और लडका सच्चेधर्मकाश्रद्धावान् है—तो क्याकरनाचाहिये. ( जवाब )—धर्मकामकों छोडकर दूसरेसंसारों

काममें मुनासिब है माताकेहुकम मुआफिक करतारहे, मातापिता-  
कों अखतियार है कि-अगर-आत्मजपुत्रभी-अपनेसे विरुद्धहोजाय  
या-धर्मभ्रष्टहोजाय तो उसकों निकालदेवे और दूसरापुत्र रखलेवे,  
दत्तपुत्र लेकर उसका विवाह-करदिया हो-और-कुलअधिकारभी  
देदियाहो-तोभी-अगर-मातापितासें प्रतिकूल होजायतो अधिका-  
रहै मातापिताकों उसे बहारनिकालदेवे, अर्हन्नीतिका फरमानाहै  
कि-उसका अभियोग राजाकोंभी मुननेका अधिकार नही,

[ अर्हन्नीतिका दायभागप्रकरण. ]

पितृभ्यां प्रतिकूलःस्यात्-पुत्रोदुष्कर्मयोगतः

ज्ञातिधर्माचारभ्रष्टो यवा व्यसनतत्परः ८५

संबोधितोपिसद्वाक्यै न त्यज्येद् दुर्मतिं यदि

तदा तद्वृत्तमाख्याय ज्ञातिराज्याधिकारिणः ८६

तदीपाज्ञां गृहित्वा च सर्वे कार्यो गृहात् बहिः

तस्याभियोगः कुत्रापि श्रोतुं योग्यो न कश्चित् ८७

इसका अर्थ उपर आगयाहै, जबपुत्रकोंभी अगर प्रतिकूल  
होजायतो घरसें निकालदेना फरमाया तो-चेल-नोकर-पूजारी-  
और सेवकोंकी क्यागिनती रही?-इसीकानूनसें उसकाअधिकार  
खोसकर निकालसकते हो, कितनेक मारवाड-मेवाड और माल-  
वेके श्रावक-सेवकलोगोंकों अधिकारीसमझकर सिरपर चढादेते  
है कितनेक ऐसेभीहै कि-जो-सेवकोंकों नमस्कार करतेहै, कित-  
नेककहते है सेवकलोग हमारेहाथकी रेखाहैकैसेदूरहो? लेकिन! यह  
नहीमालूमकि-हमारे धर्मप्रवर्तकतीर्थंकरगणघर क्या फरमाते है?  
कइजगह सेवकोंने जैनमंदिरमें अपने अपने देव घरदिये है, कित-

नेक सेवकोने जैनधर्महो छोड़ दिया है, मौचनेकी जगहहै कि जब जैनधर्मही उन्होंने छोड़ दिया तो फिर उनका जैनीयोंके साथ किसबातका सगपन है ?—अगर कहाजाय कि—हमारेबड़े जैनीयोंके साथ बटलेहै. (जवाब.) क्यों बटले ?—किसनेकहाथा कि—तुम—जैनी बनो ?—अगर कहाजाय—जैनाचार्योंने उपदेश दियाथा जिससे हमजैनी बने—(जवाब.) तो—फिर जैनधर्मपालो, और अपनी मेहनतसे अपना गुजरा करो,—किसजैनाचार्यने तुमको परवाना कर दियाहै कि—तुम—जनसंघसे हकदारहो ?—अगर कहाजाय कि—हम लोगोंने—जैनमंदिरोंकी पहिले सेवा किइथी—मूर्त्तिकों सिरपरलेकर फिरेथे. (जवाब.)—जोनोकरहोताहै मालिकका कामकरताही है, उसकी एवजीमें नोकरी पाइथी. लेकिन ! हकदार कहाँसे बने?—कइजगह सेवकलोगोंने पारवाड मेवाडवगेरा देशमें मंदिरमूर्त्तिपर दावा करके मालकी जाहिरकिइ फिरभी मूर्खलोगोंने उनको निकालकर अलगनहीकिये बड़ीभूल है. इसबातमें गुजरातके जैनसंघकी तारीफ करना चाहिये कि—उन्होंने पहिलेहीसे सेवकोंके पाखंडको अलग कर दिया. जब तीर्थकरगणधरोने जैनकानूनमें खुले-खुला बयानकरा दिया कि—बेटाभी—अगर बर्खिलाफ चलेतो उसको निकाल देना—फिर—दूसरोंकी क्या गिनती रही ?—कानून सच्चे सच्चा बयान फरमाता है फिरभी अकलके अंधोंको नही सुझता क्या कहाजाय, ?

( २१३ ) स्त्रीभी अगर पतिसँ बदलजाय तो कानूनफरमाताहै निकाल दो, बदचलन औरतकोलिये रोटीकपड़ेंकाभी दावा नही है, कइविषयासक्तपुरुष स्त्रीके बदचलनचलतेहुवेभी उसकी

ताबेदारी उठातेहैं, और कहते हैं क्या करे ? स्त्रीकों कैसे निकाले ? लेकिन ! कानून फरमाता है निकालदेना चाहिये, जोलोग नहीं निकालते हैं और पश्चात्ताप करके बैठेरहते हैं ज्ञानियोंने उनकों मनुष्य नहीं जानवर फरमाया, कोईपुरुष बिनापुत्र मरगया और उसकी स्त्रीने दत्तपुत्रलिया, वो पुत्र पिताका कुछ अस्वतियार पाकर कवाराही मरगया तो माता उसदत्तपुत्रके नाम दूसरालडका गोंद नहीं बैठासकती, किंतु अपने गोंद लेसकतीहै, सासुकी मौजूदगीमें मरेहुवे बेटेकीबहूकों कुलागतद्रव्यमें रोटीकपड़ेके शिवाय दूसरा कुछ अस्वतियार नहीं है, पुत्र गोंदलेना वगेरा सर्भीकाम सासुके मनोनुकुल करनेमुनासिब है, क्योंकि-सासुका अधिकार बडाहै, मातापिताकेमरनेबाद पुत्र अपनेअपने हिस्से अलगकरना चाहे तो सबकेहिस्से एकसरसे होने चाहिये, जीतेहुवे हिस्साचाहे तो पिताकी इच्छा मुआफिकहोगा, पिताक्षरावगेरा अन्यमतावलंबीयोंके ग्रंथमें कइतरहके मतभेदहै, भाइयोंमें जो भ्राता अविवाहित हो उसकाविवाहकरके बाकी बचाहुबाधन सबभाइ बराबरहिस्से बांटलेवे, बहोतसें भाइयोंके बीचमें एक-या-अनेक बहेनहो-तो-सभीभाइ अपनेअपने हिस्सेसें चोथा हिस्सा निकाल कर उनका विवाह करे, भाइयोंमेंसें कोईभ्राता पिताकेधनकों न खर्चकर नोकरीकरके लडाइमें बहावूरीपाकर-या-अपने एलमके जोरसें लाभ उठाकर जो कुछ धनदौलत हासिल करे उसमें दूसरेभाइयोंका कुछ हक नहीं पहुंचसकता, कोईदोस्तसें इनाम पावे, विवाहमें सुसरालसें-जोकुछधन पावे उसमेंभी दूसरे भाइयोंका कुछहकनहींपहुंचता. पिताका दूबाहुवा धन पिताने बा

भाईबोने नही बिकाळा उसकों अपनीताकतसे किसीभाईकी स-  
दक्षविना निकाले यानी हासिलकरे तोभी उसमें किसीभाईका ह-  
कनही पहुंचता, मिताक्षरा बगेराग्रंथोंमें अनेकमतभेद है, विवाहि-  
तापुत्री मरजाय और उसकों मातापिताने जोकुच्छ धन दिया हो  
उसके मालिकउसलहकीके मातापिता नही किंतु पति उसका मा-  
लिकहै, जिसस्त्रीकों विवाहमें-या-विवाहकेपीछे-गांवनगर-या-गे-  
हनेकपडे जोकुच्छ उसके मातापिताने दियाहो-चाचाने-बड़ी ब-  
हेनने-भूआने-मासीने-भाइने-या-उसकेपतिने-जोकुच्छ दियाहो-  
वो-उसीका है, किसीका उसमें दावानही, दुर्भिक्षबगेरामें आपदा  
आनपडे उसवरुत अगर बोरजामंदीसें देवे तो लेना बनसकताहै,  
हां ! पतिको अखतियारहै कि-संकटके वरुतस्त्रीसें मांगलेवे, स्त्रीका  
भी धर्महैकि-संकटकवरुत साहायतादेना, जुआवगेराखोटेकामोंमें  
धनहारजाना और स्त्रीके गेहनेकपडेउतारलेंनायह लाइकवर आ-  
दमीका कामनही.

( २१४ ) मातापिताकी मौजूदगीमें आत्मजपुत्र भी-कोइ-  
ज्यायदादकों-गिरवी-या-विक्री नहीकरसकता, कोइ भ्राता दी-  
क्षालेकर साधुहोजाय तो उसकी स्त्रीको-स्त्रीधन-शिवाय अविध-  
क्तधन जो उसके जेठदेवरोंकेपास मौजूद है उसमेंसें उसकेपतिके  
हिस्से मुआफिक मिलनेका हक है. भाइयोमेंसें बडाभाइ पुत्ररहि-  
नहो-तो-वो-ज्यायदादमेंसें किसीकार्यकेलिये बिदूनभाइयोंकी-या  
भ्रातोंकी-सलाह-धन नहीदेसकता. अगर बहोतसें भाइ हो और  
उसमेंसें कोइभाईकी स्त्री-न-हो-और वो मरजाय-तो उसका धन  
उसकेभाइ या भतीजे सबभागकरके बांट लेवे. बहोतसे भाईबो-



मेंसें कोईभाइ पंगु-उन्मत्त-या-अंधत्वादिदोष युक्तहो तो उसका भाग उसकेताल्लुक न करके अपनेपास रखे-और-सबभाइ मिलकर उसका पालन करे, जिससें उसकों तकलीफ नहो और उसकाधनभी कोई ले न जाय. पतिकी मौजूदगीमें जो गेंहना स्त्री पहनेहो-या-उसीके पासहो उसकों कोई नही लेसकता. विधवा स्त्री अपनेपतिका धन जोकि-सामु सुसरंके कबजेमें हो उसकों नही लेसकती. किंतु पति जीतेजी जो देगयाहो उसीहीमें उसका अधिकार है, अगर वो विधवा स्त्री लडका गोंदलेना चाहेतो सामु सुसराके हुकम बिदून नही लेसकती. मातापिता जो चीज जिस दूसरे शरूखकों-या-अपने कुटुंबपरिवारकों देजाय उसकों बेठा नही लेसकता,

( २१५ ) जहां यवन-अधर्मी-कसाइ-वैश्या-नट और-जुआरीलोग ज्यादा बसते हो उसमहोलेमें अच्छेलोगोंकों निवासकरना ठीकनही. दुर्गंधवालीजमीनमें-वसना पहिछेलिखचूकेहैकि-नरककुंडमें पडना एक सरखा है. जिसजमीनके नीचे मनुष्यका हाड डटाहुवाहो वहां वसनेवाला सुखीनहीरहता. गधेका हाड डटा हुवा हो तो राज्यभय-कुत्तेका हाड होतो संतानकी हानि-और-जहां गौका हाडहोतो जानवर उसघरमें वृद्धि न पावे, जब कभी तुमकों धर्मचर्चाकरनेका काम पडे तो-वादी-प्रतिवादी-सभादक्ष-दंडनायक-और-शास्त्रीद्वारा कियेकरो, शुष्कवादकरनेमें कोई फायदा नही. जिसराजाके राज्यमें न्याय नहो वहां रहना जिंदगीकों ? दुखानेमेंडालनाहै, एकराजाकी अदालतमें एकशरूखने इसबात, नालीशकिइकि इसने मेरी स्त्रीकों-इतना मार मारा जो उसके पां चमहिनेका गर्भपात होगया, मूर्खराजाने न्यायकियाकि-अच्छा !

मुद्दईकी औरत तबतक मुद्दाइलेके घरमें रहे जबतक उसको पांच महीनेका गर्भ नहोजाय, धन्यहै राजासाहब ! खुब न्यायकिया ! ऐसे राजाओंके कोठारीभी ऐसेही होतेहोंगे, एकदफे ऐसे अकल मंद कोठारीसाहब राजाजीके पास बैठे हुवे थे, नोकरने आकर कहा, चलिये !-अनाजके कोठोंमें आगलगी है, कोठारीजी हसकर बोले, लगाकरे-कुंचातो मेरेही पास है, किसरस्ते होकर-वो मकानमें घूमेगी ?-कोठारीजी गयेनही-और-वहां अग्निने सबकाम पुराकरदिया. धन्य हैं! ऐसे कोठारीयोको कहांतक तारीफकरे.

( २१६ )-रात्रीको सोतेवरुत-देवगुरुका स्मरणकरके सोना चाहिये, सब पापारंभसें निवृत्ति सूचक त्यागप्रत्याख्यानकरके जो शुरुश सोवेगा अगर रात्रीमें मरना भी होजाय तोभी अच्छी गतिकों जायगा, स्त्रीसें अलगहोकर दूसरीशय्यामें सोना बलवृद्धि होनेका हेतु है, सारीरात स्त्रीसें मीलकर सोना ज्ञानीयोंने अच्छा नही फरमाया, ऐसंस्त्रीकोभी विवेक रखना चाहिये, कामभोगमें जैसा रागके परिणामसें पुरुषको पापलगता-वैसा-स्त्रीकोभी लगता है, स्वप्नमें अगर किसीस्त्रीको या पुरुषको वीर्यपात होजाय तो उसको अतिचार दोष लगता है, उसके निवारणकेलिये साफहोकर सवेरे कायोत्सर्ग ( १०८ ) स्वासोत्स्वासतक करना चाहिये, अनादिकालसें जीव अज्ञाननिद्रामें सोता हुवा पडा है, क्रोधादि दुश्मन उसे खराब कर रहे है, ज्ञानी लोग ज्ञानरूप खडगके प्रहारसें विद्धत करते है. [ अनुष्ठुत्तम् . ]

क्रोधमानमायालोभा-देहे तिष्ठन्ति तस्कराः

ज्ञानखड्गप्रहारेण-तस्मात् जायत जायत. ९

मातानास्ति पितानास्ति-नास्ति भ्राता सहोदरः

अर्थो नास्ति गृहनास्ति-तस्मात् जागृत जागृत. २

जन्मदुःखं जरादुःखं-मृत्युदुःखं पुनः पुनः

संसारसागरे दुःखं-तस्मात् जागृत जागृत. ३

आशा हि लोकान् बध्नाति-कर्मणा बहुचित्तया

आयुः क्षयं न जानासि-तस्मात् जागृत जागृत. ४

निद्रा एकतरहकी विश्रांतिस्थिति है. निद्रामें प्राणी अचेतन पड़ा रहता है. रक्त भ्रमण और श्वासोत्श्वास-ये-दोकार्यही होते रहतेहैं. नबघंटे-पा-छघंटे रातकों नींद नलिइजायतो बदहजमीरोग पैदाहोजाता है. जिसाजिसतरहके स्वप्नआते है उसमें कौनसा स-धा और कौनसा झूठा-इमका बयान इमीकिताबके अष्टांगनिमि-त्तविषयमें देखो. आतीहुइ नींदकों मतरोंकों. जहां नींदलेनाहो वहां साफ हवा आनेका बंदोबस्त जरूर रखो. खालीजमीनपर सोंने-सें बीमारी पैदाहोतीहै. जमीनपर या पलंगमें नरम बिछौना ढा-छकर सोना चाहिये. कइलोग सोतेवरत अपने सब शरीरकों ढा-कलेतेहैं मुखकोंभी खुला नहीरखते, इससे बुरीहवा जो उत्स्वास द्वारा शरीरसें बहार आतीहै उसीका अंश फिर स्वासलेतेवरत भीतर जाताहै, थोडीदेर पैसाहोनेपरहर्ज नही लेकिन ! बहोतदेर पैसाहोनेसें बीमारीआतीहै, इसलिये सोतेवरत मुखकों खुला-या-आधा-खुला रखेकरो, रातकों जल्दी सोंना और सवेरकों जल्दी जागना सुखकी निशानीहै,

( २१७ )-पहिलेजमानेमें मनुष्योंकी उमरबडीबडीलंबी होती-थी, ज्युंज्युं उतार होतागया उमरभी कमहोतीगइ, कारककाभी उ-

तारचढाव अकसर होताहीहै, जैसे गाडीकाचक्र उपर नीचे चढ़ता उतरताहै वैसेकालचक्रभी समझनाचाहिये, पहिलेजमानेकी बातें जाने दिजिये ! आजकल मनुष्योंकी उमर बाहुल्यतासे देखीजाती है तो (१२०) वर्षके अंदाजपर है, कइदेशोंमें दोसें देदसेंवर्षके मनुष्वभी अबहै लेकिन ! थोड़ोंकी गिनती नहीकिइजाती, जो बातकही जातीहै बहोतोंकी अपेक्षा किइजातीहै. तुमको अगर अखबारपढनेका शौकहै तो कइजगह पढाहोगाकि-बडीबडी जमरवालेभी शरूश देशांतरमें है. जापानदेशमें एकआदमी इसबरत देसा मौजूद है जिसकी उमर (१३५) वर्षकी है. उसकी स्त्रीकी (१३३) वर्ष और बड़ापुत्र (१०८) वर्षका है, इसीलिये कहसकते हैं कि-१२० वर्षकी उमरजो कहीगइ है वो बहांतोंकी अपेक्षा समझना. आजकलकेबरतमें स्त्री (५५) वर्षबाद-और-पुरुष (७५) वर्षबाद निर्बीज होजातेहै. (यानी) उनके रजोबीरमें संतानपैदाहोनेकी ताकत नही रहती. कोइकोइको सो (१००) वर्षतक लडके पैदाहोते है लेकिन ! बहोतसे लोगोंको तो वही बातहोतीहै जो उपर लिखचूके, संभोगकरतेबरत पिताका जैसा मन होगा लडका वैसा स्वभाववालाहोगा, कइ हसमुखे देखतेहो यही सबबहै उनके मातपिताजसबरत खुशमिजाज थे. आजकल हाथी (१२०) वर्ष जीतेहै. घोडे (४८) वर्ष, गधे (६०)-(६४) वर्ष, कुत्ते (१२) वर्ष, हिरन-शियाल-(२४) वर्ष, बिलाव (१२) वर्ष, हंस (१००) वर्ष, तोंता (१३)-(१३) वर्ष, गेंडा (२०) वर्ष, बुगला (६०) वर्ष, सांघ (१२०) वर्ष, उंदरा दोवर्षसें लगाकर (२०) वर्ष, ससावारां चौदावर्ष, चींटी (१)वर्ष, सूअर (५०) वर्ष, बंठ-गौ-भेंस(२५) वर्ष

जू-तीनमाहिने, बीछु-छमाहिने कागडे (१००) वर्ष, सिंह (१००) वर्षसें ज्यादा जीता है, बडेमगरमच्छभी जो मध्यसमुंदरमें होते है लंबी उमरवाले होतेथे.

(२१८)-आजकलके हरेकतंदुरस्तमनुष्यके शरीरमें दशशैर लोही-पांचशैर चरबी-दोशैर मलमूत्र-एकीसतौलेपित्त-दशतौले वीर्य-और-दश तोले कफ रहताहै. भारीशरीरवालेके मांस ज्यादा-पतलेको कम, लेकिन ! यहवात एकअंदाजनसें कही गई है, सोभी लडके और बुढेको छोडकर जवानकी बनीस्पत जानना. पहिलेजमानेमें बडाशरीरथा उसमुआफिक गिनतीथी अबके लोगोंकी इसजमाने मुजब है, कइदेशके आदमीकमजोर और कइ देशके जोरावर होते है, लेकिन ! हां इतना कहसकते है पहिले जमानेमें जो ताकत-और-धनदौलतथा इनदिनोंमें नही रही. इ-स्वीसनसें (३३१) वर्ष पहिले युनानके बडेबादशाह सीकंदरने जब भारतमध्यखंडपर चढाई किइथो उसवख्तकेबयानमें-वो-लिखता हैकि-मगधदेशका राजा-नंद-पुरीतेजीपर था, उसकी फौजमें छलाखयोढे पैदल थे, बीसहजारसवार-और-नवहजार हाथीये. चीनके मुसाफिरलोग जब भारतमें शैरको आयेथे उनोंने भी अपने इतिहासमें भारतकी तेजी लिखी, जगहजगह सडके-वृक्षोंकी श्रेणियां-जगहजगह धर्मशाला-थी, हजारोंहमंदिर और हजारोंहमूर्ति मुन्नेचांदीकी मौजूदथी. अनाज-घी-गुड-मिश्री-मेंवा-मिठाई, इतने शस्ते बीकतेथे जो आजकलके जमानेसें आठदसगुने ज्यादा थे. कइनगरीयां ऐसीथी जिसमें तीसतीसहजारतमोलियोंकी दुकानथी,-जहां इतने तमोली होंगे वहां शौकीन कितनेहोंगे इसका

खयाल करना चाहिये, कोटकांगडोंकी लूटमें महमूद गजनवोने (२००) मण सुन्ना-( २००० ) दो हजार मण चांदी-(२०) मण जवाहिरात लूटा, मथुरासे पांचमूर्ति फक्त सुन्नेकी-जिसमें एकमूर्ति चारमण पक्केकीथी लूटी-चांदी इतनी लूटी जो (१००) उठोंपर लादीगई थी, कइजगहतीर्थोंमें मंदिरोंके थंभोपरसे जवाहिरात इतना लूटा जो उठाना मुश्किल था. शाहबुदीनगौरीने हजारोंहमंदिर तोडवा दिये, शम्शुदीनअलतिमशकि-जिसन मालवेमें धारानगरीकेपास मांडवजीके जैनमंदिर तोडें, जगहजगहसे सुन्नाचांदी और जवाहिरात लूटा-इसलिखनेसे मतलब कहनेका यहहैकि-पहिले जमानेमें देश रिद्धसिद्धिसे भराथा. बडेबडे एलमदार और आकाश गामिनीविद्यासिद्धपुरुष मौजुदथे, ज्यू ज्यू पुरानेवस्तुकी तलाश करोतो निःसंदेह मालुम होताहै कि पहिले जमानेमेंदेश-पुन्यवान जीवोंसे भरपुर था, मानवधर्मसंहिताका वाच्यार्थ पूराहोताहै, इसमें सवेरेसे लगाकर रात्रीतक जोजोकार्य करनेमुनासिब थे बतलादिये गये-यंतो शास्त्रसमुद्रकापारनही, लेकिन ! हां ! जो बडेबडे विषय जाननेयोग्य थे बयानकियगये, इतना और रहगयाकि-जातबी-रादरी-या-धर्मसे भ्रष्ट होगया हो उसको क्या दंडप्रायश्चितदेना-सो-अर्हन्नीतिके कानुनसे यहां लिखना था-लेकिन!विस्तार बहुतबढ़ गयाहै इसलिये नहींलिखा. दिनचर्या-रात्रीचर्या रिनुचर्या-वर्षचर्या-और-जन्मचर्या इसमेंठीकठीकतोरसे लिखीगई, ज्योतिष मंत्र-और-मतमतांतरके भेद चोथेतारंगमें बयान करेंगे.

इति श्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-  
शांतिविजयजीमहाराज-विरचित-मानवधर्मसंहिता-  
वा-शांतसुधानिधिग्रंथका-तीसरा तरंग-समाप्त,-

## [ ज्योतिष शास्त्रका वयान. ]

१-ज्योतिर्विद्या-एकदिव्यवस्तु है, जितनाफायदा मातापिता और मित्र नहीं पहुंचासकते उतना ज्योतिर्विद्या पहुंचासकती है तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण-और राशिके नाम पहिलेकंठकरना चाहिये, चंद्र-सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-और-शनिवगेराग्रह किसकिस नक्षत्र और राशिपर कबकब आते है, उदयअस्तकब होते है, इसकी पहचानभी सिखनाचाहिये, इष्टशोधनकरके लग्न निकालना और उसपर ग्रहोंको स्थापनकरना जिसको इतना आजायगा ज्योतिर्विद्या रुपकिलेमें उसकाप्रवेश ठीकतोरसें होसकेगा.

२-गणितविद्याप्रकीर्णकमें नक्षत्रकेसप्तदोष इसतरहबयानाकिये है पुन लो, (१)-सूर्यअस्तहोते वरुत जिसका उदयहुवाहो उसको संध्यागतनक्षत्र बोलतेहै, इस रोजकोइकार्य शुरुकियाजाय क्लेश पैदा होगा, (२) जिसनक्षत्रपर सूर्य बैठाहो उसको रविगतनक्षत्र बोलते है, इसमें जोकार्य प्रारंभकियाजायगा पूरा नहोगा, (३) विटेरनक्षत्रमें फतेह नहोगी.(४)जिसपर क्रूरग्रह बैठाहो उसको सग्रहनक्षत्र बोलते है, इसमें कोइकामका मुहूर्त्तकिया जायगा तो बिघ्नहोगा, (५) जिसपर सूर्यबैठा हो उसकेपीछाडीके एकनक्षत्रको विलंबीनक्षत्र बोलते है इसमें कोइनयाकाम किया जाय तो विशदपैदाहोगा, (६) जिसपर ग्रहणहुवाहो उसको राहुगतनक्षत्र बोलते है, इसमें नयेकार्यकी शुरुआत किर्याजाय तो मरणांतकष्ट होगा, (७) जिसके बीचमें होकर कोइसाग्रहनिकसे उसको ग्रहभिन्ननक्षत्र बोलतेहै, इसमें मुहूर्त्तकियाजाय तो लोहीबमन होगा,

३-जिसनक्षत्रपर सूर्यहो-उससे दैनिकनक्ष-४-६-९-१०-१३-या-२०-मा होतो उसरौज रवियोग कहा. बडाउमदा है. इसरौज जोकामकरोगे अच्छाहोगा, जिसरौज सोम-मंगल-बुध-या-शुक्रवारहो, १-५-६-१०-११-ये तिथिहो, भस्वनी-राहिणी-पुनर्वसु-मघा-हस्त-विशाखा-मूल-श्रवण-या-पूर्वाभाद्रपद-ये-नक्षत्र हो, इनमेंसे किसीतीनोकायोग मिलजाय उसदिन कुमारयोग होता है. इसमें जिसकामकी शुरुआतकरोगे फतेहहोगी, रवि-मंगल-बुध-शुक्रवार हो, २-३-७-१२-१५-ये तिथिहो, भरणी-मृगशिरा पुष्य-पूर्वाफाल्गुनी-चित्रा-अनुराधा-पूर्वाषाढा-धनिष्ठा-या-पूर्वाभाद्रपद-येनक्षत्रहो, इनमेंसे किसीतीनोंका-योगमिले उसरौज जिस कार्यकी शुरुआत किइ जायगी हकुमतके साथ पार पड़ेगी.

## [ जन्मपत्रिकाके बारहभुवनके नाम. ]

४, (१) तन, (२) धन, (३) सहज, (४) सुख, (५) संतान, (६) शत्रु, (७) जाया, (८) मृत्यु, (९) धर्म, (१०) कर्म, (११) लाभ, (१२) व्यय, -पांचमा-नवमाका नाम त्रिकोण, पहिला-चोथा, सातवा, दसवाका-नाम केंद्र, केंद्रके अगाडीके चारभुवन पणफर-और-पणफरके अगाडीके चार-आर्पोक्लिम-कहेजातेहै, कौन ग्रह किसराशिका मालिकहै?-किसराशिपर आनेसे उंचनीच और किसकिसराशिपर शत्रुमित्रक्षेत्री कहलाताहै? इतनीबात जानेगा उसको जन्मपत्रदेखनेकी राह मालूमदेगी,

५-जबकोइशख्त किसीअच्छे जामकारज्योतिषकेपाम जाय तब उसको मुनासिबहैकि-खालीहाथनजावे. जैनआम्नायमें चंद्रम



ज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-गणित विद्याप्रकीर्णक-ज्योतिषकरंडक-त्रैलोक्यप्र-  
कश-जन्मांभोषि-आरंभसिद्धि-और नारचंद्र वगेरा-कइग्रंथ ज्यो-  
तिर्विद्याके बयानकरनेवालेहै, आजकल इस विद्याकी कदर इस  
लिये कमहोगइकि-उत्तमग्रंथ पढ़नेवाले बहोतथोड़े रहगये और  
पुछनेवाले बिनाखर्चकिये मतलब निकालनेवाले बनगये,

६-जन्मग्रह-देखकर मालुमहोमकताहै कि-इसशख्सकी बुद्धि  
कैसी होगी ?-धर्मश्रद्धा ध्रुवहोगी या नही ? जींदगीमें एशआराम  
कबकब भोगेगा ? मोहनीकर्म कमजोरहै या भारी ? इज्जतकितनी  
बढेगी ? स्त्रीका सुख इसके होगा या नही ? पुत्रपुत्री कितने होंगे ?  
उमर कितनी लंबी भोगेगा ?-दौलत कितनी बढेगी ? किसगतिसे  
आया और किसमें जायगा ? जींदगीमें इसको राजयोग होगा या  
नही ?-बीमारी कबकब आयगी-देशाटन कितना करेगा-मंत्रविद्या  
सिखेगा या नही ?-भोजनकी तकलीफ रहेगी या आनंद ?-स्त्रीसे  
प्रेमरहेगा या लडाइ-? केंदहोना-आगमें पडकर जलमरना-नदी-  
समुद्रमें गिरपडना-फांसी होना-या-झेरखाकर मरना-अैसे अैसेकु-  
योग इसके है या नही ?-व्यभिचार योग इसकेहै या नही ? जी-  
ंदगीमें कितनी स्त्रियों विवाहेगा ?-दीक्षा उदयआयगीया नही ?  
इसकेघर हाथीघोड़े बंधेंगे या सवारोंसेभी तकलीफ रहेगी ? देव-  
मंदिर-मूर्ति-बागवगोचे-या-नयेनयेमकान बनवायगा या नही ?-  
स्त्रीकोपतिमें प्रेमकैसा रहेगा ? कौनसीस्त्री राज्यभोगेगी-कौनसीस्त्री  
दिवानगिरि करेगी-कौनसीस्त्री दीक्षालेयगी-कौनसीस्त्रीको लखपति-  
करोडपति-भर्तारमिलेगा-कौनसीस्त्री बालविधवा होजायगी-कौन-  
सी बंध्यारहेगी-और-कौनसीस्त्री राजाकी रानो बनेगी ?-वगेराबातें

जन्मग्रहदेखकर मालुमहोसकती है, लेकिन! देखनेवाला पुरापढाहुवां होनाचाहिये किसीकी जन्मपत्रिकामें फर्कहोगातो-गणितकरके-उसकों अच्छाज्योतिषी निकाल सकताहै,

७-एकज्योतिषीकेपास एकशरुश गया-और-पुछनेलगा बतलाइये ! पंडितजी ! आपके ज्योतिषमें जमाना कैसा मालुमदेताहै?—पंडितजी कुच्छ पढेहुवे नहीथे-शेखीमें आनकर कहने लगे-मेरे ज्योतिषमें ऐसामालूम देताहैकि-बलवान् कमजोरकों मतायगें, देशमें फूट मचेगी, किसोदेशकी जमान कपंगो, चौइसघंटोंकेबाद दूसरा-दिन लगेगा, दिनमेंचांदना और रात्रीमें अंधेरा रहेगा. मित्रोंमें प्रीति और दुश्मनोंमें नाराजी रहेगो. इसबातकों सुनकर पुछनेवालाशरुश कहनेलगा धन्य ! पंडितजी-धन्य ! तारीफहै आपकी अकलकी, ऐसेऐसेफल तो हम बिनापढेही कहसकतेहै, इसमें आपने कौनसी अपूर्वबात कही ?-निमित्तज्ञ उसकानामहै जो अपूर्वबात कहे,

८-गर्भाधान-पुंमवन शूचिकर्म-नामकरण-अन्नप्राशन-कर्णवेध-केशवपन-उपनयन-विद्याध्ययन-विव ह-आर-व्रतारोपवगेराके मुहूर्त्त-सोलहसंस्कारकेबयानमें लिखचुकेहै, यहां आरभी जो ज्यादे उपयोगीहै लिखदेयगें. [ दुकान खोलनेका मुहूर्त्त, ]-जिसरौज अश्विनी-रोहिणी-मृगशिरा-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनुराधा-उत्तराषाढा-उत्तराभाद्रपद-अभिजित-और-रेवती-ये-नक्षत्र हो, चौथ-नवमी-और चतुर्दशीकों छोडकर दूसरीतिथिहो, उसरौज अपना-चंद्रस्वर चलतेवरुत दुकान खोलना चाहिये, गदी बिछाकर मुहूर्त्तकरना, और सवासैंर सवापांचसैंर-या-सवामन मीठाइ बांटना-जिनमंदिरमें स्नात्रपूजन-अंगीरौशनो कराना, साधुजनोंकी

भक्ति-और-स्वधर्मीभाइयोंको-प्रभावना देना, दुकानमें फायदा होगा. जोशरुस सूर्यस्वरमें दुकानखोलेगा, फायदा न उठायगा, ज्योतिषमें स्वरोदयज्ञान बलवान् होता है. [ नौकरीके अधिकार लेनेका मुहूर्त्त. ]-जिसरोज अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य-हस्त-चित्रा-अनुराधा-अभिजित्-और-रेवती-ये नक्षत्र हो, बुध-वृहस्पति-शुक्र-या-रविवारहो-उसरौज जब अपना चंद्रस्वर चले नौकरी रहनेको मालिकके घर जाना-और-जिमकामका अधिकार अपनेको सोंपे बह लेना, फायदा होगा और इनाम पाओगे.

९-[ प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त. ]-उत्तरायणसूर्यमें प्रतिष्ठाकरना अच्छा होता है, मृगशीर्ष माघ फाल्गुन वैशाख जेठ और अषाढ ये महिने प्रतिष्ठाकेलिये ठीकहोते हैं, अधिकमाममें गुरुशुक्रके अस्तमें और प्रतिमाबैठानेवालेके जन्ममासमें प्रतिष्ठाकराना अच्छा नहीं. संक्रांतिका दूसरादिन-ग्रहणदिन-ग्रहणहुवेपाँछके सातदिन-रिक्ता-षष्ठी-अष्टमी-द्वादशी-अमावास्या-घटीबढीतिथि-भद्रा-नक्षत्रगंडांत-तिथि-गंडांत-दुष्टवार-व्यतिपातवैधृतिवंगेरा कुयोग-प्रतिमा बैठानेवालेका जन्मनक्षत्र-जन्मतिथि-जन्मवार-जिसरौज नहीं उसरौज प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त मुकररकरना चाहिये. नाडीका अविरोध, षडाष्टकपरिहार, योनिका अविरोध, वर्गका अविरोध, गणका अविरोध, लभ्यालभ्यसंबंध, राशिकेस्वामीका अविरोध, प्रतिष्ठाकारकगुरुको चंद्रबल, और शिष्यको गोचरशुद्धिभी देखना चाहिये.

१०-रोहिणी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-मघा-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-स्वाति-अनुराधा-मूल-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये नक्षत्र प्रतिष्ठाकेलिये अच्छे हैं, लेकिन ! गणि-

विज्ञापयनेके दिखलायेहुवे सप्तदोषोंकरके वर्जित होनाचाहिये. प्रतिमाबैठानेवाले पुरुषके जन्मनक्षत्रसे प्रतिष्ठाकानक्षत्र-१०-१६-१७-१८-२३-और-२५-मा होना ठीकनही. तिथियोंमें-शुक्लपक्ष-को दसमीसें कृष्णपक्षकी पंचमोतक अच्छोकही. जिसमेंभी-१-२-५-१०-१३-१५-ज्यादेतर अच्छीहै, वारमें सोम-बुध-गुरु-शुक्र ठीकहै. योग अगर अच्छा मीलजायतो-तिथिवार चाहे जैसे हो कोईहर्जको बातनही, कुंभस्थापनाकेलिये सूर्यनक्षत्रसे आगेके पांचनक्षत्रछोडकर उसकेआगेके आठनक्षत्रलेना, फिर आठ छोडकर आगेके छनक्षत्र लेनाठीकहै. जिसनक्षत्रपर सूर्यहो-उससेसातमान-क्षत्र भस्मयोगवाला कहलाताहै,

११-प्रतिमाजी बैठानेसें घंटादोघंटा पहिले कोई उत्पात हो-जाय-तो-मुनासिवहै उसदिन प्रतिष्ठाकाकाम बंदरखना, उत्पात किसको कहतहै इसकेलिये इसीकितावमें अष्टांगनिमित्तका विषय देखलो-बीजलीका कडाका होना,-अग्निके किणके आकाशसें गिरना-धूलकरके आकाशमंडल छादित होजाना-दिवारपर चित्रांमकीमूर्तियां कुचेष्टा करनेलगजाना-हसनैरौने लगना-आंखिफाडकर डरानेलगजाना-येसब उत्पातके लक्षणहै, उसदिनके मुहूर्त्तको बदलदेना चाहिये, अगर सवाल कियाजायकि-इतनाकामकरकेभी क्या ! प्रतिष्ठाबंदरखना ठीकहै ?-(जवाब.) हां !-जरूरबंदरखना. ज्योलोग इसमुआफिक नहींकरते खना खातेहै.

१२-प्रतिष्ठालग्नमें ग्रह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश, इनमें सौम्यग्रह आवेतो-अच्छाहै, पांचवर्ग-या-चारवर्ग शुद्धितकभी ठीक, इनसेंकम होतो ठीकनही. मेष कर्क तुला और

मकर ये चरराशिहै. वृष सिंह वृश्चिक और कुंभ ये स्थिरराशिहै, मिथुन कन्या धन और मीन ये द्विस्वभावराशिहै, प्रतिष्ठालग्नकी उद-यास्तशुद्धि देखना जरूरीकार्यहै,

[ प्रतिष्ठालग्नशुद्धि:- ]-[ शार्दूलविक्रीडितं- ]

सौरार्क क्षितिसूनवास्त्रिरिपुगा द्वित्रिस्थितश्चंद्रमा  
एकद्वित्रिखपंच बंधुषु बुधःशस्तः प्रतिष्ठा विधौ  
जीवः केंद्रनवस्वधीषु भृगुजो व्योमत्रिकोणेगतः  
पातालोदययोः सराहुशिखिनः मर्वेप्पुपति शुभाः (१)  
खेर्कः केंद्रनवारिगः शशधरः सौम्यो नवास्तारिगः  
षष्ठो देवगुरुः सितस्त्रिधनगो मध्याः प्रतिष्ठाक्षणे  
अर्केदुक्षिजिताः सुतेसहजगो जीवो व्ययास्तारिगः  
शुक्रो व्योमसुते विमध्यमफलः सौरिश्च सच्चिर्मतः २

( अर्थः )-शनि सूर्य-या-मंगल-तीसरेछठे बैठेहोतो अच्छेहै, चंद्रमा-दूसरेतीसरे अच्छा, बुध पहिले दूसरे तीसरे चौथे पांचमें-या-दशमें-होतो ठीक, वृहस्पति केंद्रमें दूसरे-पांचमें-या नवमें होतो अच्छा, शुक्र-पहिले पांचमें सातमें नवमें-या-दसमें-होतो ठीक, राहुकेतुकेशाथ ग्यारहमेंभुवनमें सभीग्रह अच्छेहोतेहै, पांचमें-या-दसमें सूर्यहोतो मध्यम, केंद्रमें-पांचमें-छठे-या-नवमें-चंद्रमा होतो मध्यम, बुध-छठे-सातमें-या-नवमें-होतो-मध्यम, तीसरे छठे वृहस्पति मध्यम, शुक्र-दूसरे तीसरे छठे सातमें-या-बारमें मध्यम, मंगल-पांचम-और-शनि पांचमें-या-दसमें होतो मध्यमजानना,

१३. प्रतिष्ठालग्नमें सूर्य निर्बलहोतो प्रतिमा बैठानेवालेका नाशहो, चंद्रमा-निर्बल होतो प्रतिमाबैठानेवालेकी स्त्रीका नाशहो,

शुक्र-निर्बलहोतो उसके घनका नाशहो, केंद्र-या-त्रिकांणमें-सूर्य-  
शनि-या-मंगल बैठेहोतो थोड़े कालमें उसमंदिरका नाशहोजाय-  
मंगल-शनि-राहु-सूर्य-और-केतु-इनमेंसें कोईसाभी-ग्रह-सप्तमस्था-  
नमें शुक्रकेशाय बैठाहो-तो-कारिगरकों-प्रतिमाबैठानेवालेकों-और-  
प्रतिष्ठाकारकगुरुकों-तीनोंकों नुकसानकारकहै, केंद्र-या-त्रिकोणमें-  
शनि-बलवानहोकर बैठजाय और उसकों मित्रग्रह देखतेहो-तो-  
उसवस्तु अच्छेकामकी नींव डालना ठीकनही,

१४-प्रतिष्ठालग्नमें मंगलअगर आठवे-नवमें-बारमें-या-केंद्रमें  
बलवानहोकर बैठाहोतो समझलो हजारद्वंद्वकी तकलीफ पैदा-  
होगी, चंद्रमा-क्रूरग्रहकरके दृष्टयुक्तहो-वैसे लग्नमें प्रतिष्ठा कराइजाय  
तो प्रतिमाबैठानेवालेकों मरणांतकष्ट होगा, प्रतिष्ठालग्नमें शनि-  
बलवानहो-मंगलबुध-बलहीनहो-मेषवृषका सूर्य-या-चंद्रहो-अैसे  
वस्तुपर जिनप्रातमा बैठाइजायतो निहायत उमदा है, प्रतिष्ठा-  
लग्नमें तीसरे छठे-या-ग्यारहमेंभुवनपर सूर्य बैठाहो-तो-तिथिवार-  
नक्षत्र बुरेभीहो-कोइहर्जकीबातनही, चंद्रमाभी अनूकूल नहोतोभी  
कुच्छपरवाह नही, सभीतरहके दोष दूरहोजायगें, प्रतिष्ठालग्नमें  
पहिले चौथे पांचमें नवमें-या-दसमें-शुक्र-या-बृहस्पति बैठेहोतो  
निहायतउमदाहै, सूर्य-चंद्र-मंगल-शनि-या-केतु-तीसरे छठे-या-  
ग्यारहमें बैठेहोतोभी निहायतउमदाहै, बुधबृहस्पति-या-शुक्र-इनमेंसें  
कोइभी बलवानहोकर केंद्रमेंबैठजाय और उसकेसाथ कोइ क्रूरग्रह न  
हो-तोभी-बहोतठीकहै, लग्नमें-या-केंद्रमेंबुध बैठाहोतो-लग्नसंबंधी  
सकडेदोष निवारन होसकतेहै, शुक्र-लग्नमें बैठाहोतोहजारदोषदूरहो-  
सकतेहै-और-बृहस्पति-अगरलग्नमें बैठाहोतो लाखदोषदूरहोसकतेहै,

१५-असीलप्रशुद्धि मिलजाय और उसवख्त प्रतिमाबैठाने-  
वालेका चंद्रस्वर चलताहो-तो-निहायतही उमदायोगहै, चंद्रस्वरमें  
किइहुइ प्रतिष्ठा बहोतही फायदेमंद होतीहै, सूर्यस्वरमें प्रतिमाबै-  
ठानेसें कइतरहके विघ्न पैदाहोगें. (सवाल) फिर ज्योतिषशास्त्र  
कौनकामका रहा ? ( जवाब. )-स्वरोदयज्ञानके आगे ज्योतिषशास्त्र  
अलबते ! कमजोरहीहै, गणिविज्ञापयन्त्रमें खुलासाबयानहैकि-नि-  
मित्तज्ञान सबसें बढकरहै, ज्योतिषशास्त्र निष्फल नहीं लेकिन !  
हां ! इतनाजरूर कहसकतेहैकि-स्वरोदयज्ञानकेआगे जरूर कमजोर  
है, चंद्रस्वर अमृतनाडीकही. जितने प्रभावशाली और स्थिरकार्य  
करनाहो इसीमें करने चाहिये, याते सबतरहसें आनंदरहेगा.

१६-प्रतिष्ठाकरानेवाले आचार्य-उपाध्याय-साधु-या-व्रतधा-  
रीश्रावक-कोइहो उसकाभी प्रतिमाबैठातेवख्त चंद्रस्वर चलताहोगा  
तभी अच्छाहै, प्रतिमाबैठातेवख्त-गुरु-जबअपना चंद्रस्वर आवे  
तब संघमेंसें जिसशख्सका उसवख्त चंद्रस्वरचलताहो-उसीकेहा-  
थमें प्रतिमा तरुतनशीन करादेवे. प्रतिष्ठाका मुहुर्त्त जिसरौज मुक-  
ररकियाहो उसलग्नकेसमयपर अगर-गुरुका-या-प्रतिमाबैठानेवालेका  
चंद्रस्वर न चले-तो-बेहतरहै उसवख्त प्रतिष्ठा न करना, ज्योति-  
षशास्त्रका जिसको ज्यादाज्ञान न हो-वो-अगर सामान्यदिनशुद्धि  
देखकर चंद्रस्वरचलतेवख्त प्रतिमा बैठावेतो कोइहर्जकीबातनही.  
हां ! लग्नभी अच्छा मिले-और-गुरुका तथा प्रतिमाबैठानेवालेका-  
उसवख्त-चंद्रस्वरचलताहोतो निहायत उमदाहै, प्रतिष्ठामें-दीक्षामें-  
और-विवाहमें-चंद्रस्वर चलना बहुतअच्छाहोताहै, इतिप्रतिष्ठा-  
मुहूर्त्त समाप्त.

१७-देशाटनकरनेका मुहूर्त-अश्विनी मृगशिरा पुनर्वसु पुष्य हस्त अनुराधा ज्येष्ठा मूल औ. रेवती ये नक्षत्र देशाटनकेलिये बहो-तउमदाहै, तीनोंपूर्वा-रोहणी चित्रा स्वाति श्रवण धनिष्ठा और शततारका-ये नक्षत्र देशाटनकेलिये मध्यमहै, इनकेशिवायके नक्षत्र, अच्छे नहीं. जिसमेंभी तीनोंउत्तराभरणी कृत्तिका आर्द्रा मघा अश्लेषा और विशाखा-ये-बिल्कुल अच्छे नहीं, जोजोनक्षत्र उमदा और मध्यम उपर लिखचूके वेंभी सप्तदोषकरके रहितहोनेचाहिये. रोहिणीनक्षत्रमें पूरवदिशाकों जाना ठीकनहीं. हस्तनक्षत्रमें उत्तरदि-शाकों जाना अच्छानहीं, चित्रानक्षत्रमें दखनदिशाकों और श्रव-णनक्षत्रमें पश्चिमदिशाकों जानाठीकनहीं, शनिवार सोमवारकों पूरवदिशातर्फ दिग्शूल हांताहै, गुरुवारकों दखनतर्फ-रविवारशुक्र-वारकों पश्चिमदिशातर्फ-और-मंगलबुधकों उत्तरदिशातर्फ-दिग्शूल होताहै, मुकदमेके और लडाइकेकामकों छोडकर और सबकामके-लिये देशाटनकरना तो चंद्रस्वरमें घरसँ चलना ठीकहोताहै, जो-शरूश देवगुरुकों नमस्कारकरके-या-परमेष्ठिमहामंत्रकों पढकर देशाटन करेगा फतेह पायगा,

१८-[रोगावलीचक्र.]-जिसरौज रोगपैदाहो उसरौज नक्षत्र और वार कौनसाहै?-इसकों देखकर इसचक्रकों बांचलेना-और-मालूमकरलेनाकि-यहरोग इतनेरौजतक रहेगा. मरनेकी बी-मारी आतीहै वोतो कभी नहठेगी. लेकिन ! हां ! जो आगंतुकरो-गहै उसकीस्थिति कितनेरौज रहेगी ? इसचक्रके पढनेसँ मालूम होसकेगी. नक्षत्र-मीले-और-इसमें लिखेमुजब-वार-न-मीले तो बीमारी साधारण जानना.-जिसरौज अश्विनीनक्षत्रहो-और-रवि-



सोम-या-शुक्रवारहो-उत्तररौज बीमारी आवेतो जानना एकीसरौ-  
 जतकलीफरहेगी. पीछे आरामहोगा. भरणीनक्षत्रकेरौज बीमारी  
 आवे तो मरणांतकष्टजानना, कृतिकानक्षत्र-गुरुवारके रौज बीमारी  
 आवेतो (८) आठदिनतकलीफ रहेगी, रोहणीनक्षत्रकेरौज बीमारी  
 आवेतो (७) रौज तकलीफ फिर आराम, मृगशिरानक्षत्रकेरौज  
 कोइवारहो-बीमारीआवेतो (१) महिना तकलीफ-फिर आराम,  
 आर्द्रानक्षत्रकेरौज-मंगल या-शुक्रवारहो-और बीमारी आवेतो म-  
 रणांतकष्टहोगा, पुनर्वसुनक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारीपै-  
 दाहोतो (२५) दिनतकलीफ फिर आराम, पुष्यनक्षत्र-सोम-बृह-  
 स्पतिवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (१३) तकलीफ फिर आ-  
 राम, अश्लेषानक्षत्र-सोम-शुक्रवारकेरौज बीमारीपैदाहोतां मरणां-  
 तकष्टहोगा, मघानक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो  
 दिन (१९) तकलीफ फिर आराम, पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र-सोम-  
 गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (११) तकलीफ फिर आराम,  
 उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र-सोम-शुक्रवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन  
 (२५) तकलीफ फिर आराम, हस्तनक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारके  
 रौज बीमारी पैदाहोतो-दिन (१५) तकलीफ फिर आराम, चि-  
 त्तानक्षत्र-सोम-गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (१५) तक-  
 लीफ फिर आराम, स्वातिनक्षत्र रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारी  
 पैदाहोतो दिन (१०) तकलीफ फिर आराम, विशाखानक्षत्र-रवि-  
 मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्टहोगा, अनुरा-  
 धानक्षत्र-बुधवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (४) तकलीफ  
 पीछे आराम, ज्येष्ठानक्षत्र-गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन

(२०) तकलीफ फिर आराम, मूलनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारके रौज बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, पूर्वाषाढानक्षत्र-सोम-बुधवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( ५ ) तकलीफ फिर आराम, उत्तराषाढानक्षत्र-गुरुवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( ३ ), तकलीफ, श्रवणनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( २५ ) तकलीफ फिर आराम, धनिष्ठानक्षत्र-कोइवार हो-उसरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( २५ ) तकलीफ फिर आराम, शततारकानक्षत्र-गुरु-शुक्र-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो ( १०० ) दिनतक तकलीफ फिर आराम, पूर्वाभाद्रपदनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी आवेतो मरणांतकष्ट हांगा, उत्तराभाद्रपदनक्षत्र-सोम-बुधवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( ८ ) तकलीफ फिर आराम, रेवतीनक्षत्र-गुरु-शुक्रवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन ( १०० ) तकलीफ फिर आराम,

( १९ )-जिसमनुष्यकी जन्मराशि मेषहो-उसको अगर पूर्वा फाल्गुनी-पूर्वाषाढा-या-पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, वृषराशिवालेको हस्तनक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो-मरणांतकष्ट, मिथुनराशिवालेको स्वातिनक्षत्रमें, कर्कराशिवालेको अनुराधामें, सिंहराशिवालेको पूर्वाषाढामें, कन्याराशिवालेको श्रवणमें, तुलाराशिवालेको शततारकामें, वृश्चिकराशिवालेको रेवतीमें, धनुराशिवालेको भरणीमें, मकरराशिवालेको रोहणीमें, कुम्वराशिवालेको आर्द्रामें, और मीनराशिवालेको अश्लेषानक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, इतिरोगावलीचक्र,

( २० )-तुमारसचंद्रस्वर चलताहो उसवस्तु-कोइशुक्र-या-

नकर बामीतर्फ खड़ाहोके पुछेकि-वरसात होगा-या-नही?-(ज-  
बाब.) कहदेना होगा. दोशखुशकी लड़ाइहोरहीहो-और किसी  
तीसरने आनकर पुछाकि-दोनोंमेंसे किसकी फतेहहोगी? उसव-  
खत अगर तुमाराचंद्रस्वर चलताहो-तो-जिसका पहिले नाम लि-  
या उसकी फतेह होगी कहना, खेतमें बीजडालतेवखत अगर डा-  
लनेवालेका चंद्रस्वर चलताहोतो अनाज वहतहोगा. कोइशखुश  
आनकर पुछेकि-हमारा-एकआदमी केदहुवाहै छुटेगा-या-नही?   
उसवखत अगर तुमारा सूर्यस्वर चलताहो और उसने पूर्णदिशामें  
स्थितरहकर प्रश्नकियाहोतो कहदो छूटजायगा. इसीतरह रोगदूर  
होनेका प्रश्न-अधिकारसें गिरेहुवकों फिरपानेका प्रश्न-और-च-  
र्चामें जयपराजयका प्रश्न-सूर्यस्वरमें पूर्णदिशातर्फ रहकर कोइ  
पुछे तो-कहदो फतेहहोगी, कोइशखुश पूछेकि-मैं-दुश्मनसें मीलने  
जाताहूं-मैरी बात ठीकरहेगी या उसकी?-उसवखत अगर तुमारा  
सूर्यस्वर चलताहो-और पूर्णदिशाका प्रश्न होतो कहदो-तुमारी  
बात अच्छीरहेगी. अकस्मात् किसीकों कोइ डर आनपडा उसके  
दूरहोनेका प्रश्न पूछे-या-लड़ाइमें हमारी जयहोगी-या-हार? -  
ऐसा पुछे-उसवखत अगर तुमारासूर्यस्वर चलताहो-और-प्रश्न-  
पूर्णदिशाका होतो कहदो-फतेहहोगी.

## [ मंत्रशास्त्रका खुलासा. ]

( अनुष्टुप्चत्तम्. )

निर्वीजं अक्षरं नास्ति-नास्ति मौलमनौषधं

निर्धना पृथिवी नास्ति-आम्नायाः स्रलु दुर्लभाः १,

( १ )-अक्षरोंके संयोगका नाम-मंत्र-है, मंत्रके उच्चारणसे जो जो परमाणु फैलते हैं उससे एकतरहकी असर पैदाहोकर फायदा पहुंचताहै, कइअक्षरोंके संयोगमें ऐसी ताकतरही है जिसके पढ़नेसे सर्पका झेर उतरजाताहै दूसरेका मन अपनेअनुकूल हो सकताहै, और दुष्टदेवोंका स्थंभनभी होसकताहै. पहिलेकालमें ऐसे मंत्र थे-जिनकापाठ किया और तुर्त फल हुवा. ऐसे पाठसिद्धमंत्र आजकल नहींरहे. रहेभीहै-तो-उनके जाननेवाले नरहनेसे विछेदहोते जाते हैं, कइमंत्र ऐसे हैं जिनके पढ़नेसे देवता आसके, लेकिन ! आजकल तो कालदोषसे देवतेही आने बंदहोगये-फिर उसका जिकरही क्या ?-पंचमकालमें देव-प्रत्यक्ष-नहीं-आते, हां ! आंखोंमींचकर बैठो और मंत्रपढोतो सामने खड़े होकर बातेंकर जाते हैं, लेकिन ! आंखे खोलनेसे दिखाइ नहीं देयेंगे, कइमंत्र ऐसे हैं जिनके पढ़नेसे आत्माका भलाहो-जैसे परमेष्ठि महामंत्रका पाठकरनसे आत्महित पैदाहोताहै,

( २ )-वर्द्धमानविद्या-सूरिमंत्र-अपराजितमहाविद्या-जो जैन सूत्रोंमें लिखीहुइहै मुनिजनोंको जरूर पढतेरहना चाहिये, इससे शिथिलनिकाचित अशुभकर्मकी निर्जरा होसकती है, अगर सवाल कियाजायकि-जैनस्वास्त्रोंमें-तो-कर्मही बलवान्कहेफिरमंत्रक्याकामके रहे ? ( जवाब. )-जब अच्छेकर्मका ( यानी ) पुण्यका उदय हो तभी अच्छे मंत्रका योगमिलता है, मंत्र-अगर ध्यानदेकर स्वाध्यायरूप पढेजायतो-वै-शिथिलनिकाचित अशुभकर्मोंकी निर्जरा के हेतु होसकते हैं, इसीअपेक्षा मंत्रोंकी साफल्यता समझी गई है, रिषिमंडलस्तोत्रके बीज अक्षरोका विधिसहित पाठकियाजाय तो

स्वप्नमें अरिहंतकी प्रतिमाका दर्शावहोकर अधिष्ठातादेवसें कइबा-  
तोंके खुलासें मिलसकते है, उंचपंक्तिकेदेव दिव्यज्ञानी होते है उ-  
नकों सबबात अपनेज्ञानसें मालूम होसकती है, उपसर्गहर-तिजय  
पहुत्त-भक्तामर-और-शक्रस्तव वगेराके बीजमंत्र अशुभकर्मकी नि-  
र्जराके हेतुहोकर फायदे जनक होसकते है,

( ३ )-कइ बीजाक्षर ऐसे है जो अटवीमें संकटकेवरुत पड़े  
जायतो भय दूरहोसकताहै. समुद्रमें-अग्निमें-या-सिंह-सर्प वगेरा  
दुष्टजानवरोंके सामने लडाइदंगेके वरुत-राज्यसंबंधी भयमें-और  
केदस्तानेमें अगर मन-वचन-और कायाकों स्थिरकरके पड़े जाय  
तो-सबतरहसें साहायकारक होसकते है, मंत्रोंकी ताकत इसीवरुत  
हीतो कामदेती है, जबकि-दुनिया सारी बदल जाय,

( ४ ) ज्योतिषद्वारा-सुन्ना चांदी-अनाज-और-अफीमवगेर.  
चीजोंकी-मंदीतेजी होना मालूमहोसकता है, लेकिन!-जोकाम-मं-  
त्रसाधनकरके देवोंसें दरयाफत किये जाते है वो-ज्योतिषसें नही  
होसकते, आजकल संसारमें मतलबी शरूश ज्यादा रह गये. मत-  
लबबिदून बात नहीकरते, धर्ममें धनखर्चनेको कबूलकरके मुकर  
जाते है, इसलिये शास्त्रवेत्ता मुनिजनकों मुनासिबहेकि-धर्मकेका-  
ममें-( यानी ) सप्तक्षेत्रमें पहिले धनखर्चकराके पीछे उनकों कोई  
चीजका साधनबतलाना, दुनियादारोंका आजकल भरोसा नही  
वैसे-श्रद्धावान् नही रहे जो अवलमें अखीरतक एकसरखे रहे,  
जमाना बदलाहुवाहै, बाप बेटेसें परहेज रखताहै, इसलिये समझ  
सौचकर बातकरो. अगर सवाल कियाजायकि-साधुलोग-त्यागी  
होते है उनको धनदौलसें क्या मतलब!-( जवाब. )-साधुलोग

अलबते! संसारीक कामके त्यागी है लेकिन ! धर्मवृद्धिकेकाम करानेकेतो त्यागी नहीं है, पूर्वाचार्योंने कइकार्य इसतरह कराये है, विधिवादमें तोर्थकर गणधरोंका हुकमभी हैकि-धर्मकी बढवारीके छिये साधुलोग अपनीलब्धिभी-स्फुरायमान-करे और अधर्मीकों " शिक्षादे-तो-योग्यबातहै, अयोग्यनही, तोर्थकर गणधरोंने शास्त्रोंमें जगेहजगह क्यों मंत्र-ब्रह्मा-धर्मकेलिये चलानी बर्ननकिइ ? तीर्थ-करगणधर साधु थे-या-गृहस्थ ? अगर साधु थे-तो-सौचो !-क्या ! सिद्धहुवा ?-आजकल दुनियादार ऐसे रहगयेहैकि-मतलबभी निकालजाय और पीछेसे अवर्णवाद बोले, लेकिन ! जो-ज्ञानी मुनिहै कभी उनके फंदेमें नहींफसते, पहिलेसे सप्तक्षेत्रकी पुष्टि पढ़ुंचाकर बतलातेहै,

५-अगर सबालकियाजाय कि-जिनकेपास-द्रव्यखर्चकरनेकी ताकातनहीहै-तो-क्या उनकेलिये क्या करनाचाहिये ? ( जवाब. ) उनकेलिये अपनेभाग्यकी कमजोरी समझकर उसकामकों नकरना चाहिये. जैसे कोइ किसान खेत बोंकर अनाज पैदाकरना चाहता है लेकिन ! बीजडालनेकों सामग्री नहोनेसे बढ-अनाज पैदानही करसकता-वैसे धर्मक्षेत्रमें बीजडालेबिदून मंत्रसाधनभी नहींकरसकेगा, अनाज बोंवेगांतो पीछेसे फलमिलेगा-बोंवेहीगा नहींतो फल कैसे हासिलकरसकेगा, इसलिये मुनासिबहै कि-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-पुस्तक-प्रतिमा-और-मंदिर-इनसप्तक्षेत्रमेंद्रव्यव्यय करनेका प्रथम ध्यानदेना, हुंदियेपंथीलोग जो मुंहबांधरखतेहै और जैनीकहलातेहै-वे-इसीलिये जैनी नहींकि-उनोने सातक्षेत्रमेंसे प्रतिमा-और-मंदिर-ये-दोक्षेत्र उडादिये, कइ गृहस्थ ऐसे चालाक

होतेहैं-जो-धनस्वर्चनेमें नपुंसकहै और साधुलोग जब उनको धन स्वर्चनेका उपदेशदेवे तब नींदाबोलनेपर कपूरकसतेहैं-उनको अ-धर्मासमझकर लाजिमहैकि-मुंह-नलगावे, जोशरुख दौलतमंदहै-और-वह-कोई देवसाधनकरना चाहे तो-मुनासिबहै पहिले धर्म-काममें स्वर्चकरे, राजाबादशाह-हो-या-कोई लखपाति करोडपति गृहस्थहो-उनकेलिये उनकीताकतमुजब-और-पांचपचीसहजाररुप-येवाला साधारणगृहस्थ-या-इससेंभी कोईगरीबहो-उसकेलिये उसकी ताकतमुजब-धर्मकाममें स्वर्चकरनाचाहिये, जोलोग इसतरह नहीकरते है उनकादिल लोभीलालचीहोनेसें उनको अच्छाफल नही होसकता.

६-( मंत्रके बीजाक्षरोकाअर्थः )-१, नमःसंपत्तिकरं, २, ँद्गी-जगन्नयवशीकरणं-परमेष्ठिवाचकं-जिनपतिबीजं वा, ३, श्री-लक्ष्मी-बीजं-ज्ञानबीजं वा, ४, अहं-सिद्धचक्रबीजं-जिनपतिबीजं अष्ट-महासिद्धिबीजं, वा, ५, क्लीं-कामबीजं, ६, क्रौं-अंकुशबीजं-निरो-धबीजं वा, ७, ब्लूं-द्रावणबीजं, -८, हूं-विद्वेषणबीजं, ९, स्वाहा-पुष्टौ, १०, स्वधा-तुष्टौ-११, घेंघें-मारणे, १२, हः-सहस्ररुक्-१३, खंशखं, १४, हौं-ज्ञानं, १५, वषट्-वश्यकरं, १६, बौषट्-आकर्षणे, आह्वानेच, १७, संबौषट्-आमंत्रणबीजं, १८, फुट्-विसर्जने, १९, फट्-अस्त्रबीजं, २०, ओं-प्रणवः-ध्रुवविनयप्रदीपतेजो बीजं, -२१, द्रांद्गीक्लींलूसः-पंचसायकाः-२२, स्वा-वायुबीजं-२३, हा-आ-काशबीजं, २४, हंसं-विषापहारबीजं, इत्यादिबीजाक्षरोंके अर्थ-अनेकतरहके है, यहां कहांतक लिखें, मंत्रशास्त्रका जिनको शौख है-वें-शास्त्रांतरसेंभी तलान्न करलेयगें, इसलियेयहांइतनाहीलिखना मुनासिब समझा गया.

७-हरमनुष्योंकों चाहियेकि-सर्पके जहेरदूरकरनेका मंत्र जरूर सीखलेवे. इसमें अपना और दूसरेका दोनोंका भलाहै, परविद्या उच्छेदनमंत्र-और-दूसरेप्रभाविकमंत्र-भी-किसी ज्ञानीपुरुषसेमिलकर सीखलेना जरूरीहै, जिसशस्त्रकों जो-मंत्र-सिद्धहोगा-उसका दिया हुवाही-जलदी चलेगा-पोथीमेंसे निकालकर वाचलिया और मंत्र-वादी बनगये यह कभी नहोगा. हमने यहां कइउपयोगीमंत्र लिख-देनेका इरादाकियाथा-लेकिन ! इसलिये-वो-मोक्षफरखाकि-मंत्र-गुरुकेमुखसेही लेनाअच्छाहै, जबतक ठीक ठीक भेदबतलानेवाला नमीले तबतक-लिखाहुवा मंत्र फायदेमंद नहीहोता-इसलिये अच्छे लोगोंसे मिलकर उनकी सेवाकरो और जब-वै-खुशहोकर तुमकों बतलावे-तब उनकेफरमानेमुआफिक विनयभक्तिसे सीखो, तभी तुमारा मनोरथ सिद्धहोगा.

८-अगर मनुष्योंकी पुनपवानी कमजोरहोनेसे कलिकालमें कोईमंत्र तात्कालिक फल नदिखलावे तो दूसरी-या-तीसरीदफे उसका साधन करना चाहिये-जो तीनदफे साधनकिया और फलित नहुवा तो उसे छोडदेनाठीकहै, इसकालमें मंत्रतंत्र औषधि और फलफूलोंकी सत्ता कमहोना ज्ञानियोंने पहिलेही बयानकर-रखाहै. रुपसौभाग्य जैसे पहिलेये अबनहीरहे, जातिस्मर्ण-अवधि-मनःपर्याय-और-केवलज्ञान विच्छेदहोगये. जवाहिरात नाममात्र होगइ, सत्वसंहनन-यशःकीर्त्ति-और-दौलतकमहोतीजातीहै, दातार मनहीन-और-धनाढ्य सुम बनतेदेखतेहो, धर्म श्रद्धा [ इतिश्री ] होगइ, जिनकल्पमार्ग बंद हुवा. राजेलोग रैयतकों फिजुल दंडतेहै, बरसात अकालमें होतीहै, जमीन थोडाफलदेतीहै, मतमतांतर इतने



फैल गये जिनोने धर्मकों चकनाचूर कर डाला. लोभी मिथ्या भिमानी-  
पाषंडी और धूर्तों की तारीफ बढी. पुन्यवान् धर्मवान् और मन्नावान्  
थोड़ी जींदगीमें मर जाते हैं, बापकों बेटे और गुरुकों चेले तमाचे  
मारते हैं, देवोंमें देवत्व-और-सतीमें सतीत्व विनाश होता जाता है,  
और साधु लोगोंमें भी पाषंड वृद्धि चल रही है, कहिये ! ऐसे बुरे ज-  
मानेमें अगर कोई मंत्र फल न दे-तो-कोई क्या करे ? तुमारे भाग्यो-  
दय की कमजोरी समझो,



## [ छंदःशास्त्रका वर्नन. ]

( छंदःशास्त्र बिदून पढ़े कविता करना ठीक नहीं. )

१-छंदः-स्तवन-बनाने वाले ऐसी शिघ्रता करते हैं कि-उसके  
नियमों पर कुछ भी ध्यान नहीं देकर कविता बना डालते हैं, लेकिन !  
याद रहे !! अच्छे लोगों के सामने उनकी कविता मीठी समान गिनी  
जाती है. यद्यपि छंदशास्त्र बहुत बड़ा है और उनके भेदानुभेद अपार  
हैं तथापि जिसके जाने बिदून छंदस्तवनादिकका बनाना फिजूल  
है-वो-थोड़ा सा भेद यहाँ लिख देते हैं,

वर्णमाला के (५२) अक्षर हैं उनमें (१६) स्वर-और (३) क्ष-त्र-ज्ञ-  
अंतर्के मिश्रित व्यंजन हठाकर जो बाकी (३३) व्यंजन रहते हैं उनमें  
(१७) अक्षर नीचे लिखे मुआफिक दग्ध हैं,

[पूर्णदग्ध.] -ख-छ-ठ-थ-फ-र-ष,

[अर्द्धदग्ध.] -घ-झ-ढ-ध-भ-व-ह,

[चतुर्थांशदग्ध.] -ट-ड-ण,

इनउपरलिखे दग्धअक्षरोंको देवस्तुतिमें अगर-आद्य-लगादिये जाय-तो कोइहर्जकी बातनहीं है, लेकिन ! कविका धर्म है जहांतक होशके जरूर बचावे. जोजो चतुर्थांश और अर्द्धदग्ध है-न-बचेतो-खेर !-कुच्छ हर्जकी बात नहीं-लेकिन ! जो पूर्णदग्ध है उनको जरूर बचाना चाहिये, यद्यपि दग्धअक्षरोंका विस्तार-फलाफल-शुभाशुभ-और-भेदानुभेद-इतना है-कि जो लिखनाशुरूकरे तो पार न आवे-इसलिये छोटेकविकों इतनाही जानना ठीक है.

२-अब थोड़ासा गणभेदभी बतला दिया जाता है.

मगण—भगण—जगण—सगण—नगण—यगण—रगण—तगण,  
चोराशी—काजल—विहार—चरखा—गगन—दिवाना—श्राविका—बाजार,  
SSS—SII—ISI—IIS—III—ISS—SIS—SSI,  
लक्ष्मी—कीर्त्ति—रोग—भय—आयु—वृद्धि—नाश—अफल,

तीनअक्षरमिलनेसे एकगण कहलाता है. सो यदि-तीनअक्षर-गुरुहो-जैसे ( चोराशी ) तो-इसको मगणगण कहते हैं-जिसछंदकी आदिमें यह रखा गया हो तो-बनानेवालेको अच्छा है, दौलतकी बढ़-वारी होगी. जहां एकअक्षरगुरु-और-दो-अंतके लघुहो जैसे ( काजल ) इसको भगण कहते हैं. जिस छंदकी आदिमें यह रखा जाय उसछंदसे बनानेवालेकी दुनियामें इज्जत बढ़ेगी, जहां तीनअक्षरोंके बीचमें आद्यअंतकाअक्षर लघु और मध्यका गुरुहो-जैसे ( विहार ) इसको जगण कहते हैं. जिसछंदकी आदिमें यह रखा जाय बनानेवालेको बीमारी आनेकी सुरत है, जहां आद्यके दोअक्षर लघु और अंतका एकगुरुहो-जैसे ( चरखा ) इसको सगण कहते हैं, जिसछंदकी आदिमें

यह रखाजाय बनानेवालेको कुटुंबीयोंसे भयहोगा, जहां तीनोंअक्षर लघुहो-जैसे ( गगन ) इसको नगण कहतेहै, जिसछंदकी आदिमें यहरखाजाय बनानेवालेको शरीर तंदुरस्तीका हेतुहै. जहां आद्यका एकअक्षरलघु और अंतको दो-गुरु-हो-जैसे ( दिवाना ) इसको यगणकहतेहै, जिसछंदकी आदिमें यहरखाजाय बनानेवालेको अच्छेकामोंकी वृद्धिहोगी. जहां आद्यअंतमें गुरु और बीचमें लघुहो-जैसे ( श्राविका ) इसको रगण कहतेहै, जिसछंदकी आद्यमें यह रखाजाय बनानेवालेको हरसुरतसे-नाशहोगा. जहां आद्यके दोअक्षरगुरु और अंतका एकलघुहो-जैसे ( बाजार ) इसको तगण बोलतेहै, जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेको कुछ फायदा नहोगा.

३-इसतरह देखकर अच्छेगणका ग्रहण-और-बुरेका त्याग करनाचाहिये. चार यगण मिलानेसे एकचरण और-सोलह यगणका पुरा भुजंगप्रयातछंद बनजाताहै,

### [ भुजंगप्रयातछंदः ]-( उदाहरण. )

तमाखू तमाखू तमाखू तमाखू-पियेसो दिवाना दिवाना दिवाना,  
जुआकों जुआकों जुआकों जुआकों-नखेले वहीहै सयाना सयाना,१

४-दोहाछंदमें प्रथमचरणकी (१३) मात्रा-दूसरेकी (११)-फिर तिसरेकी (१३) और चौथेकी (११)-मात्रा रखीजातीहै.

[ दोहाछंदः ]-ज्ञानीध्यानी संयमी-सुराधीरा अनेक,

तपिया तो दीसे घना-शीलवंत नर एक.

दोहाको आधाकरके पहिलापद पीछे-और-पीछलापद पहिले

पढ़नेसें सोरठाछंद होताहै. सवैये दोतरहके-एक-तेइसा-और-एक-  
 एकत्तीसा-इनमें गणका भेद नहींहोता-हरिगीतछंदमें एकपदकी  
 अठाइसमात्रा रखीजातीहै, जैसे. चारचरणोंके मिलानेसें पुरा एक  
 हरिगीतछंद बनजाताहै. विमलकेवलज्ञानकमलाकलितत्रि,  
 भुवनहितकरं-सुरराजसंस्तुतचरणपंकज नमो आदि  
 जिनेश्वरं-यहजो शत्रुंजयतीर्थका चैत्यवंदनहै इसको हरिगीतछंद  
 जानो. चौपाइछंदके लक्षणमें जाननाचाहियेकि-एकएकचरण पन-  
 रांहपनरांह मात्राका होताहै जैसे चारचरण मिलानेसें चौपाइछंद  
 बनजायगा. जिसचौपाइके हरेकचरणमें सोलहमात्रा रखीगइहो-  
 उसको रुपकचौपाइ जानना, जैसेही छंदोंके अनेकभेदहै जिनको  
 खायेसहो बड़ेग्रंथोंसें तलाशकरलें, यहांतो फक्त उसविषयकाबर्नन  
 जरूरीसमझागया था-जो-छोटेकविकों जाननेयांग्यथा, इसलिये  
 इतनाही समझलेना काफीहै.

## [ जैन और दयानंदसरस्वती ]

■ इसलेखमें हमारा और दयानंदजीका लेखनीद्वारा  
 युद्ध होगा. सावधान होकर देखना.

१-आर्यसमाजके आदिकर्त्ता दयानंदसरस्वतीने जो-सत्यार्थ  
 प्रकाशग्रंथ-रचा और उसके बारहवैसमुल्लासमें जैनधर्मपर जोजो

आक्षेपकिये उसपर यह लेख बतौर जवाबके समझना चाहिये इसको बांचनेसे समाजीलोगोंको जैनोंको-और दूसरेभी जो धर्म केझाताहै फायदा पहुंचसकेगा, लेकिन ! पक्षपातरूप चश्मा हठाकर इसको देखना चाहिये-इसमें कोई बात झूठ मालूमपड़े-और-उसका कोई जवाब लिखना चाहे बेशक ! लिखे-धन्यवादकेशाय दूसरी आवृत्तिमें उसका शोधन कियाजायगा, दयानंदसरस्वतीजीकीतिरह कहकर बदलेंगे नही. लेकिन ! हां !-जो कोई वृथा कुवचनकहकर हमारे इष्टदेवकों-या-धर्मकों-आक्षेप करेगा उसको हम क्या ?-सब कोई अज्ञानी कहेगा. दयानंदजीके जीवनचरित-और-उनकीतर्फ-दारीके लेखोंके पढ़नेसे जाहिरहोताहैकि-वै-गुजरातकाठियावाडकी सीमापर राज्यमोरबीइलाकाके रहनेवाले ब्राह्मणथे. दयानंदजी खु- कहतेथे मेरापिता धनाढ्य जमीदारथा. दिलकुशायंत्र-फतहगढर्क. छपी. दिनचर्याका छेलापत्र देखतेहैतो जाहिर होताहै दयानंदजीका नाम गृहस्थपनमें मूलशंकर था. दयानंदजी अपने जीवनचरितमें लिखतेहैकि-जब-मैं-घरसें चला संवत् ( १९०३ ) विक्रमी था. उनके फरमानेमुजब मैं कइ साधुसंन्यासीयोंसें मिले-विद्या पढी-और सन्यासी हुवे.

२-दयानंदजी संस्कृतविद्याके जानकरपंडित थे. प्राकृत-अर्वा-या-अंग्रेजीभाषा-व-नही जानतेथे. संस्कृतविद्याकेभी पूरेजानकार नहीथे-क्याकि-संस्कृतवाक्य प्रबोध-नामकी एकछोटीसी किताब उनोंने रची उसमें कइजगह व्याकरणके नियमविरुद्ध रचना किइ है. पंडित अंबिकादत्तव्यासजीने इनकीअशुद्धियां-एक-अबोधनि-वारण किताब बनाकर जाहिर किइ है-जो काशीके भारतजीवन-

प्रेसमें छपीहुइ मौजूदहै, जिनकों संदेहहो देखलेना चाहिये. दयानंदजी वैदिकमतके संन्यासी थे-और हमकों यहां उनकेमतकाकुच्छ ख्यानलिखनाहै इसलिये पहिले वेदोंका हाल सुनलो!-असलमें वेद जडमूलसें एकनहीथा. हजारोंह रिषियोंके-पास-हजारोंहमंत्रथे उनकों व्यासजीने इकठे किये. और उनके चारहिस्से बनाये, कोइ कहताहै निराकार इश्वरके कहेहुवेहै-कांइ कहताहै ब्रह्माके मुखसें प्रकटहुवे-और कोइकहताहै अनादिभीहै. खर ! हालतो तुम शुक्ल-यजुर्वेदकीभाष्यमें जोकुच्छ कहाहै सुनलो!-वहां अैसापाठहैकि-ब्रह्माकी परंपरामें वेदकों व्यासजीने पाया. और मनुष्योंकी अकल कमहोतादेखकर उन इकठेकियेहुवे मंत्रोंके चारहिस्से कायम किये, जिनकेनाम (१) रिग् (२) यजुः (३) साम-और-(४) अवर्थहै, फिर इनकों पैल-वैशंपायन-जैमिनि-और-सीमंतुकों यथाक्रमसें दिये. कइरौज गुजरेबाद वैशंपायनजी अपनेशिष्य याज्ञवल्क्यपर गुस्सा खाकर कहनेलगे-मेरेसें पढाहुवा यजुर्वेद त्याग करदे, कहतेहै उसने योगसामर्थ्यसें उसका त्याग किया, और सूर्यकों आराधनकर दूसरा यजुर्वेद हासिल किया. उस त्यागेहुवेका नाम कृष्ण-और-हासिलकियेहुवेकानाम शुक्ल-यजुर्वेद कहागया,

३-चारवेदके चारब्राह्मणविभाग अैसे जानना चाहिये-रिग्वेदका अैतरेयब्राह्मण-यजुर्वेदका शतपथ-सामवेदका तांड्य-और-थर्ववेदका गोपथब्राह्मण-ग्यारह उपनिषदके नाम सुनिये ! इशानि-कठ-प्रश्न-छांदोग्य-वृहदारण्यक-मुंडक-मांडुक्य-श्वेत-तैत्तरीय-और-अैतरेय, वेदके छःअंगोंके नाम इसतरहहै. शिक्षा-कल्प-व्याकरण-निरुक्त-छंद-और-ज्योतिष्, स्मृतिशास्त्रके करनेहारे कइहै

लेकिन ! उनमेंसे नीचे बतलायेहुने आचार्य ज्यादा मझाहूर है, मनु-  
 याज्ञवल्क-विष्णु-हारित उशना-अंगिरा-यम-आपस्तम्ब-संवर्त-का-  
 त्यायन-वृहस्पति-पाराशर-शंख-लिखित-दक्ष-गौतम-शातातप-  
 और-वशिष्ठवगेरा. अवतार उमकों समझना चाहिये-जो-निर्गुणका  
 समुणहोना अर्थात् बड़ेपदमें छोटेपदमें उतरना. मच्छावतार-कच्छा-  
 वतार-वाराहावतार-नरसिंहावतार-पशुरामावतार-रामचंद्रका अव-  
 तार-कृष्णावतार-गौतमबुद्धावतार-और-कल्कीका अवतार-ये(१०)  
 दसअवतार वैदिकधर्मवालोंने मानेहैं. सत्य-त्रेता-द्वापर-और-कलि,  
 यहचारयुग क्रममें परिवर्तनहोतेरहतेहैं. और यहभी कहतेहैंकि-धर्म  
 रुपवृषभ-सत्ययुगमें चारोपांवमें खड़ाथा-त्रेतामें तीन-द्वापरमें दो-  
 और-कलमें एकपांवपर खड़ाहै. ब्राह्म्यपुराण-विष्णुपुराण-शिव-  
 पुराण-पद्मपुराण-नारदीय-भारकंडेय-भविष्य-ब्रह्मवैवर्त्त-लिंग-वा-  
 राह-स्कंद-वामन-मत्स्य-गरुड ब्रह्मांड-और-भागवतवगेरापुराण-  
 वैदिकमतवालोंके धर्मग्रंथहैं, महाभारत-रामायण-गीता-वगेराभी  
 उनकेही ग्रंथहैं, गायत्रीमंत्र वैदिकमनावलंबीयोंका मूलमंत्रहै. वेदके  
 भाष्यकार-तथा टीकाकेकरनेवाले-उच्छट-सायनाचार्य-महीधर-और-  
 रावणवगेरा प्राचीनवैदिकाचार्यहैं, मूर्तिपूजा तीर्थ स्नान-तथा  
 श्राद्धतर्पण-वैदिकलोग मननकरतेहीहैं यहता किसीमें छिपाहुवा  
 नहीं. बस ! आप इतनी बातें यादरखकर अब दयानंदजीके कहनेपर  
 खयाल किजिये.

४-दयानंदजीने जितनेशास्त्र मत्स्यमानेहैं उनकेहाथका लिखाहुवा  
 विज्ञापनपत्र जो कानपुरके शोलेनूर छापखानेमें छपाथा उसीकेमु-  
 ताबिक यहां लिखदेतेहैं, इतनायादरहे उनोंने संस्कृतमें लिखाथायहां

उसकी भाषाकिइहै. सुनो !-१. रिग्-२, यजुः ३, साम ४, अथर्व-  
येचारवेद, ५, आयुर्वेद, ६ धनुर्वेद, -७, गंधर्ववेद, ८ अथर्ववेद,  
इसमें शिल्पविद्याहै, ९, शिक्षाग्रंथ, १० कल्पशास्त्र, ११ व्याकरण,  
१२, नैरुक्तं, १३, छंद-इसमें गायत्रीवगेराहै, १४, ज्योतिषमें एक  
भृगुसंहिता. १५, इश-केन-कठ-प्रश्न-मुंड-मांडूक्य-तैत्तिरी-छां-  
दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेता-स्वनः-कैवल्य-इत्यादिबारह उपनिषद,  
१६, शारीरकसूत्र, १७, कात्यायनादिमूत्र- ८, योगभाष्य, १९,  
वाकोवाक्य, २० मनुस्मृति, और-२१. महाभारत-में एकीमशास्त्र  
सत्यहै, मनुष्यराचित ब्रह्मवैवर्त्तादि (१८) तरहके पुराण पहिला  
गण्य-पाषाण वगेराकी मूर्त्तिकों देवबुद्धिकरके पूजना दूसरागण्य,  
शैवशाक्त वैश्रवणपतिवगेरासंप्रदाय तीसरागण्य, तंत्रग्रंथोंमें कहा-  
हुवा वाममार्ग चौथागण्य, भंगपीनावगेरा नशाकरना पांचवागण्य,  
\*पराइस्त्रीगमनकरना छठागण्य, चोरीकरना सातवागण्य-और-छल-  
कपट अभिमानतथा झूठ बोलना आठवागण्यहै. रिग्वेदवगेरा(२१)  
एकीमशास्त्र +परमेश्वरकेबनाये यहपहिला सत्य. ब्रह्मचर्याश्रममें  
गुरुसेवा और अपने स्वधर्मपर चलकर वेदोंका पढ़नादूसरा सत्य,  
\*वेदमेंकहेहुवे वर्णाश्रम धर्मसंध्यावंदना अग्निहोत्रादि तीसरासत्य,  
यथोक्तस्त्रीगमन पंचमहायज्ञोंका अनुष्ठान-रितुकालकेसमय अपनी  
स्त्रीकेपास जाना-और श्रौतस्मार्तआचारवगेरा अनुष्ठान चौथासत्य.

\* फिर -सत्यार्थ प्रकाशमें-एकस्त्रीकों ग्याहटपतिहोनेका आज्ञा कैसे दिह गइ,

+ निगकागइश्वरने रचना किम मुखमें किइ ?

× वेदमेंकहाहुवावर्णाश्रम और धर्म सत्य-और-दूसरेका वर्णाश्रमधर्म झूठ, क्या

स्वयं पक्षापातरूपजामा पहनाया ?



अमदमतपःचरणयमादिसमाधितकउपासना और मशाहूर है, मनु-  
प्रस्थादि पांचवामत्य. विचारविवेकवैराग्यविद्याभ्यास नंब-संवर्त-का-  
संग्रहणपूर्वक संपूर्णकर्मोंकेफलकों छोड़देना छठामत्य. ज्ञानो<sup>शातातप-</sup>  
सर्वअनर्थ-जन्ममरणदुःखशोक कामक्रोध लोभमोहसंगदोष त्यागवै-  
गेराअनुष्ठान मातवासत्य, अविद्यारागद्वेष अभिनेवेश तमःरजः  
\*सत्त्वगुण-सर्वक्लेश निवृत्ति-पंचमहाभूतसें न्यारा-मोक्षस्वरूप स्व-  
राज्यप्राप्तहोना आठवा सत्य. [ दयानंदसरस्वत्पारव्येनेदं

पत्रं रचितं, तत्सज्जनै वेदितव्यम्- ] शोलेतूरमें छपा.  
यहविज्ञापनपत्र दयानंदजीने छपवायाथा इसमें ( २१ ) शास्त्रसत्य  
मानेथे लेकिन ! पीछे जब नवानसत्थार्थप्रकाश लिखा तब बदलेथे,

५-संवत् ( १९२६ ) में-जब दयानंदजी काशीगयेथे <sup>स्वा</sup>  
विश्वद्वानंदजी तथा बालशास्त्रोक्तेशाय उनका वादानुवाद हुवा।  
लेकिन ! प्रकटरूपसें किसीकी विजयनहीहुइ. दोनोंदल अपनीअपनी  
विजय मान बैठरहे. इसविषयमें भारतेंदु-बाबू हरिश्चंद्रजीने  
अपनोबनाइ दूषणमालिकाकी भूमिकामेंइसतरह लिखा कि-“दया-  
नंद नामी-क्याजाने कौनजाति-वा-किसआश्रमके कोइनप्रपुरुष  
सबदेशोंमें भ्रमणकरतेहुवे-मनावनधर्मरूपीसूर्यकों राहुकोभांति ग्रा-  
सकरतेहुवे-मूर्खों और आलस्यभरेजीवोंकों अपनेरंगमेंरंगतेहुवे-और  
अपने वाक्यबाणोंसें माधुलोंगोंके हृदयकों दाहकरतेहुवे काशीमें  
आये. मन १८७० ईस्वी-काशी-( हरिश्चंद्र, )-संवत् ( १९२९ ) में  
जब दयानंदजी पुनःकलकत्ते गये थे-वहांभी पंडित ताराचरणजी

\* यहाँ सत्त्वगुणभी त्यागने योग्य कह दिया. ठीकहै-जो मनःकल्पितमतवाले-  
होतेहैं जरूर भूलजातेहैं. बतलाना चाहिये विना गुणभीकोइ पदार्थ होसक्ताहै ?

उसकी भाषाकि/डंके रहनेवाले थे शास्त्रार्थ किया था. लो'कन! नती-  
येचारवेद, ५ ही निकला. दोनो दल अपनीअपनी विजयका डंका  
इसमें हि रहे. संवत् ( १९३० ) में जब द्रव्यकीमहायतामिली लंगोट  
बाध नंगा फिरना छोडकर अच्छेकपडे और बहुमूल्य जूता पह-  
नने लगे.

६-संवत् ( १९३१ ) में उनका प्रथम सत्यार्थप्रकाशग्रंथ छप  
करतयारहुवा-उसमें लिखाथा कि-सृष्टिकी आदिमें अग्नि वायु आ-  
दित्य और अंगिराके हृदयमें वेदोंका प्रकाशहोना, दसपुरुषों त-  
कसें नियोगकी आज्ञादेना, मांसादिपदार्थोंसें सवेरसांझ दोनोंव-  
रुत होमकरनेकी आज्ञा फरमाना, मांसभक्षणकी पुष्टि करना, य-  
ज्ञमें बंध्यागौ और बैलआदि नरपशुओंके बधकी विधिकरना,  
स्वर्गनर्कलोकका नमानना, प्रत्यक्षादि आठ प्रमाणमानना, इत्यादि-  
बाते विद्वान् लोगोंमें-छिपीहुइनहीहै. इसकेबाद दयानंदजी बंबइ  
गये-और-इन दिनोंमें यह इरादाकियाकि-विद्यमानचारोंवे-  
दोंकी मनमानी टीकाबनाकर फेलाइ जाय तां ठीकहै, दयानंदजीका  
प्रथमआर्यसमाज बंबइमें स्थापितहुवा, और दसनियमभो बनायेगये,  
तोसरेनियममें लिखाकि-वेद-सत्यविद्याओंका पुस्तकहै, वेदोंका  
पढनापढाना मुननामुनाना सबआर्योंका धर्महै. संवत् ( १९३२ ) में  
दयानंदजी पुनातर्फ गये. फिर वहांसें पीछेलोटे, और-दिल्लीहोकर  
पंजाबमें लुधियाना लाहोर-अमृतसरवगैरातर्फ विचरतेरहे, संन्यासी-  
योंकेलिये पैदलचलनाकहा लेकिन ! आप सवारीसें देशाटनकरतेथे.  
लाहोरमें जब दयानंदजी व्याख्यानदेनेलगे पुरानेवेदिकमतवाले  
इनसें नाराजहुवे, एकजगहनहीहरजगहयहोहालथा. सबबकि-पुराने

वैदिकमतसें इनका इरादा भिन्नथा। जहां जातेथे यही फरमातेथे कि—उब्हट—मायन—महोधर—और—रावणवगेराके बनायेहुवे—वेदभाष्य महाभ्रष्ट और अंधकार बढ़ानेवालेहै। मूर्तिपूजा गप्प—और—तीर्थोंमें भटकनाभी निरा झूठहै। इधर पुरानेवैदिकमतवाले जाहिरकरतेथे कि—दयानंदजीका व्याख्यान—वेदसें—विरुद्ध है, सुननानचाहिरे. —

७—मंगलदेवपराजय पृष्ठ(१९)पंक्ति(१३)मेंछपाहैकि—दयानंद-जीनेप्रथमसत्यार्थप्रकाशमें विस्तारपूर्वकयुक्तिमहित—मृत्युहुवेपुरुषोंके श्राद्ध और तर्पणकीविधि लिखी, फिर जबकि—उसका खंडनकरने लगे—और—लोगोंने आक्षेपकियाकि—आपने अपने पुस्तकमें क्या लिखाहै!—और—व्याख्यान क्या !देतेहो !—तब वेदभाष्य अंक (२) के टाइटलपेजपर झूठावज्ञापन जाहिर कियाकि—सत्यार्थप्रकाशमें—तर्पण और श्राद्धके विषयमें जो छपागयाहै सो लिखने औरशोधनेवालोंकी भूलसें छपगयाहै, खूब ! कहा ! कहकर बदलना इसीका नामहै। अपनो लिखीबातसें मुकरना और दूसरेको दोषदेना संन्यासधर्मधाराको मुनासिब नहाथा संवत्—(१९३४)में—फिल्लोर—जिला—जालंधरनिवासी—पंडितश्रद्धारामजीसें दयानंदजीका शास्त्रार्थहुवा। उन्होंने दयानंदजीकी खूब खबर लिई, लेकिन ! जो शरुश जानबुझकर जिमबातको स्थापनकरना चाहताहो उससें कैसे हटेगा ?

८—दयानंदजीने सत्यार्थप्रकाशके बारहवसमुद्रासमें जो जैनमतका खंडनलिखाहै उसमें नास्तिकमतके लेकर—जैनधर्मकेलोगोंको कलंक दिया और—कहाकि—देखो ! ये श्लोक जैनोंने बनारखेहै, सत्यार्थ-प्रकाशके पृष्ठ (४०२) पंक्ति (२०) से पृष्ठ (४०३) पंक्ति (१८) तक लिखाहैकि—

[ श्लोकाः ]

यावज्जिवं सुखं जीवेत्-नास्ति मृत्योरगोचरः  
 भस्मीभूतस्य देहस्य-पुगरागमनंकुतः, ? (इत्यादिसँलगाकर)  
 त्रयोवेदस्य कर्तारो-भांडधूर्त्तनिशाचराः,  
 जर्जरौ तुर्जरौत्यादि-पंडितानां वचःस्मृतं,  
 अश्वस्यात्रहि शिश्रं तु-पत्नीग्राहं प्रकीर्तितं,  
 भंडैस्तद्वत् परं चैव-ग्राह्यजातं प्रकीर्तितं,  
 मांसानां खादनं तद्वन्-निशाचरमभीरितं,

(यहांतक तेरांह श्लोक) लिखकर कहदिया ये श्लोक जैनोंने बनारसवै, लेकिन ! यहवात सरामर झूठहै, ये श्लोक जैनकेनहीं किंतु सर्वदर्शनसंग्रहग्रंथ जो वैदिकमतानुयायीमाधवाचार्यने रचाहै उसके है. जिनकों शंशयहो कितावसर्वदर्शनसंग्रह मंगाकर देखले, कलकत्ताके सारमुधानिधियंत्रमें छपीहै. सत्यार्थप्रकाशमें असा घोखादेनेवाला लिखाणदेखकरपंजाब-गुजरांनवाल निवांसी-लालाठाकुरदासजी जैनधर्मावलंबीने-चीठीद्वारा जब दयानंदजीमें प्रमाणमांगा-और पुछाकि-बतलाइये ! ये श्लोक कौनसे जैनआगममें लिखेहै ? तब कुच्छममयतकतो अनेकप्रपंचभरे जवाबदेतेरहे, कभी पुस्तक \*विवेकसारका सहारा लिया, कभी कल्पभाषाको जा देखा, कभी यह जवाब लिखा आपको शुद्धभाषा लिखनाही नहीं आता, इसतरह अपने हठधर्मकोंही पालन करतेरहे. अंतमें लालाठाकुरदासजीने बंबई जाकर-[जबकि-दयानंदजीभी बंबई आयेहुवेथे] तारिख (१३) जून-सन (१८८२) इस्वीकों-मिस्टर स्मिथ-अंड-फ्रियर-हाइकोर्टके सोलिस्टरकीभारफत दयानंदजीकों

नोटिस दिया. उसके जवाबमें दयानंदजीने तारिख (१९) जून-सन (१८८२) इस्वीकों मिस्टर पेंनी-अॅड-गिल्वर्ट मारफत उत्तरदिया, - जिसका मतलब नीचे मुजबहै. हमारे मवक्किल स्वामी दयानंद सरस्वती यह समझरहेहैं जैनमतके किसी विद्वानके रचितहीयहश्लोक है-इसलिये तुमारा मवक्किल या कोईदूसरा जैनी हमारे मवक्किलकों यह सिद्ध करदेगाकि-पूर्वोक्त श्लोक जैनधर्ममें विरुद्धहै तो सत्यार्थप्रकाशपुस्तकके छपानेवाले-राजाजयकृष्णदास-सी-एस-आई-मुरादाबादनवासी दूसरीबारछपनेके समय उनश्लोकोंको पृथक् करदेवेंगें. इसमें हमारे मवक्किलकों कुछ उजर नहींहै. महाशय !- देखिये ! क्या उत्तर दियाहै !-यहतो दयानंदजी खुलाखुला कैसे कहशकेकि-हम-भूलेहैं, लेकिन ! ममझनेवाले समझसकतेहैं कि-जब उनश्लोकोंको उक्तग्रंथमें पृथक्करदेनेमें कुछ उजर नहींरखते-तो जानाजाताहै कि-उनकेदिलमें सबूतहोगया येश्लोक जैनके नहीं. महाशयदयानंदजी ! इतनी कमजोरी क्यों बतागये ? अगर पहिलेसेही ऐसी आदत नढालतेतो कितना अच्छा था ? यह सबूत-होचूकाकि-ये-श्लोक नास्तिकमतके है, जैनके नहीं. इसकी गवाही सर्वदर्शनमंग्रह किताबहै शंभयहो देखलो-अच्छाहुवा जो दयानंदजीने नवीनसत्यार्थप्रकाशमें इनश्लोकोंको जैनका नहीं कहा, किंतु नास्तिकमतका मान लिया, नहींतो हमको इसका यथार्थ भेद और दयानंदजीकी अधिकपॉल खोलनी पडती, सत्यार्थप्रकाश तीन-चारदफे छपाहै इसलिये परस्पर पृष्ठसंख्या नमिले तो बारहवा सगुल्लास देखलेना जिसमें जैनकावर्नन जैनबौधऔर नास्तिककों मिश्रितकरके लिखाहै.

९-संवत् (१९३९) में-दयानंदजी जब उदयपुर गयेथे वहाँ-  
 जैनभेतांबरधर्मोपदेष्टा-संवैगीसाधु-श्रीमान्श्वेदसागरजीमहाराजसें  
 उनका जोकुच्छ वादानुवाद हुवा यहाँलिखाजाताहै. श्रीमान्श्वेद-  
 सागरजीकों जब यहसमाचार मिलाकि-दयानंदजी जैनोंकेनास्ति-  
 कबतलातेहै एकआदमीकों उनके पास भेजकर यहपुछाकि-तुम,  
 जैनोंकों नास्तिक किसग्रंथके प्रमाणसें कहतेहो ? अगर प्रमाण रखतेहो  
 तो लिख भेजो-या-विदितकरो. नहीरखतेहो तो यह तुमकों अथवा  
 कोईभी विद्वानकों मुनासिबनहीकि-विनाप्रमाणके किसीकों अनु-  
 चितशब्द कहे, इसपर दयानंदजीने अपने दोनवीनशिष्य जो उद-  
 यपुरमेंही कियेथे सहजानंदादिकों श्रीमुनिश्वेदसागरजीके पासभेजे,  
 उन्होंने मूर्त्तिपूजा-और-जीवराशिपर प्रश्न किये-जिनका जवाब  
 उक्तमहाराजने दिया. फिर कुछदिनोंकेपीछें-श्रीमान् श्वेदसाग-  
 रजीने दयानंदजीकेपास एकशस्त्रकों भेजकर यह कहलायाकि-  
 आपने जो निजरचितसत्यार्थप्रकाशके द्वादशसमुल्लासमें जैनोंके  
 नामसें झूठे श्लोक लिखेहै सो-यातो-उनकों अपनेग्रंथसें निकालडालो.  
 और जो उनकों किसीजैन शास्त्रसें सिद्धकरनेकी सामर्थ्यरखतेहोतो  
 सन्मुखहोकर शास्त्रार्थकरलो, यह समाचार सुनकर स्वामीजीके  
 छके छूटगये. मनमें विचाराकि-ठाकुरदासतो अल्पज्ञी भिड़नेकों  
 तयारथा-यह-साक्षरपुरुष शास्त्रार्थकों स्वतःउद्यमीहुवा. अब क्या  
 कहाजाय ! बस ! इसबातके घमंडमें आनकरकि-यहाँके महाराणा  
 साहिब हमारेरागीहै श्रीश्वेदसागरजीका कुछभी उत्तरनहीदिया.  
 जबयहसमाचार श्रीश्वेदसागरजीको विदितहुवे तो उन्होंने एक  
 विज्ञापन बडेहफोंसें लिखा-और-काष्ठकी तखतीपर लगाकर अपने

उपाश्रयके दरवाजेपर (जहाँ) सर्वलोगोंकी दृष्टिपडे लटका दिया. उसमें यह लिखाथाकि-दयानंदसरस्वतीने अपने बनायेपुस्तक सत्यार्थप्रकाशमें कुच्छनास्तिकमतके श्लोकलेकर उनको जैनमतका कह दियाहै. इसविषयमें हम दयानंदसरस्वतीस शास्त्रार्थकरना चाहतेहै. और यह प्रतिज्ञाभी करतेहै कि-यदि शास्त्रार्थमें हमारी पराजयहुई तो हम दयानंदजीके शिष्य होजायगें-और-जो हमारी विजयहोगी तो दयानंदजीको हमारा शिष्यहोना पडेगा,

१०-जिसदिनसें यह साइनबोर्ड (तखती) लटकाइ गई दयानंदजीको बड़ा कष्ट हुवा. श्री झवेरसागरके संबंधमें मनमानेअपशब्द बोलने लगे. कइप्रकारका डरभय दिखलाया-जब कोई कामठीक नहुवा तो महाराणाजीसेंही कहना पडा कि-आपके अखंडप्रताप राज्यमें-झवेरसागरसंवेगीने विज्ञापन लगाकर हमको महान्कष्ट दिया. इस विज्ञापनकेतखतेको जबतक नहटाया जायगा हमको बडाकष्टहै. इसको महाराणाजीने स्वीकारलिया, तब-एक-श्रीझवेरसागरजीका शिष्य श्रावक उस समय दयानंदजीकेपास उपस्थित था इससमाचारको सुनकर चलपडा-और श्रीझवेरसागरजीके पास आनकर कहनेलगा-यह विज्ञापनका तखता स्वतःउतारदियाजाय तो ठीक है नही तो महाराणाजीकी आज्ञासें उतार देना पडेगा, आज दयानंदजीने उनसें आपकी बहुत बुराई किइहै.-तब-श्रीझवेरसागरजीने कहा कुच्छ फिकरनही सबकार्य ठीक होजायगा. श्रीझवेरसागरजी सवेरे और श्यामको दोनोवख्त बहार दिशाजंगलको जायाकरतेथे सो इसरोजवें इसतरफ पधारे जहाँ उदयपुरके एजंट साहेबकी कोठीथी, दीशाजंगल होकर सीधे एजंटसाहबके

बंगलेपर चले गये. पहरेवालेने साहिब बहादूरको खबर दिई कि-कोई फकीर बहार खड़ा है. साहिब बहादूर बहार आये-श्रीझवेरसागरजीको सलाम किया. कुरसीपर बिठलाकर पूछा-पूज्यसाहिब ! क्यों आनाहुवा ? श्रीझवेरसागरजीने कहा-हजूर ! आपके स्वतंत्रनिर्मलराज्यमें एकअनुचितकार्य तो यह होगयाकि-दयानंदजीने हमारे धर्मसंबंधी झूठे श्लोक नास्तिकमतके लेकर उनको हमारा कहकर हमारा दिल दुखाया, दूसरा अनर्थ यह होनेवाला है कि-मैंने एकपाटिये ( साइनबोर्ड ) पर एक विज्ञापन इसविषयका लिखकर अपने मकानपर लटकाया है कि-दयानंदसरस्वतीने जो श्लोक अपने पुस्तकमें जैनियोंके कहकर लिखे हैं वह जैनके किसी ग्रंथके भी नहीं हैं. सो दयानंदजीको हमसे शास्त्रार्थ करना चाहिये, जो हम हारेंगे उनके शिष्य होंगे. वह हारे हमारा शिष्य होजाय. इसपर दयानंदजी शास्त्रार्थ तो नहीं करते किंतु राणाजीसे कहकर वह तखता ( साइनबोर्ड ) हटाना चाहते हैं-सो क्या ! यह अन्याय नहीं है ? इसपर साहबबहादूरने कहा-हम समझ गये-तुम कुछ भय मतकरो. हमारे देखेबिदून तुमारा साइनबोर्ड (तखता) नहीं हटैगा. और कलरौज शुभह हम उसको जरूर देखेंगे. श्रीझवेरसागरजी अपने स्थान चलेआये. दूसरेरौज निजवचनानुसार एजेंटसाहब-श्रीझवेरसागरजीके उपाश्रयपरआये. विज्ञापनको पढ़ा-और कहा-इसमें राज्य विरुद्ध कोई लेख नहीं है. और अपने सत्त्वकी रक्षाकेलिये सबकोई ऐसा करसक्ता है. यह नोटिस राज्यके हुकमसे नहीं उताराजायगा. और इन्होंने तो अपने निजस्थानपरही लगाया है, इसमें कुछ राज्यका हर्जनही, बराबर लगा रहने दो,



यह कहकर एजंटसाहिब चलेगये. और दयानंदजीकों चुप होजाना पडा. कुछ बननहीपडा. और इसबातका ज्यादातर खेद हुवाकि- एकछोटेमें कार्यमें बहुतबडे प्रतिष्ठित महाराणासाहबकी सहायता चाही और अफल हुई,

११-संवत् ( १९३९ )में-दयानंदजीकों अपनी पूर्वोक्तसंपूर्ण रचना तथा व्याख्यानोका विश्वास त्यागकर नवीनसत्यार्थप्रकाश-लिखना पडा. जो प्रथम सत्यार्थप्रकाशमें बहुत विरुद्धहै. जैसे जैनमें दुंदियेलोग बदलतेहै पुरानेवैदिकमतमें दयानंदजीबदलतेथे. अच्छा ! अब हमकों यहां वहबात दिखलानाहै जो जैनोके संबंधमें दयानंदजीने लिखाहै, पुराना सत्यार्थप्रकाश-तथा नवीनसत्यार्थ-प्रकाश जो ( १९३९ )में दयानंदजीने लिखा-और-तीसरी-चोथी-दफे प्रयाग वैदिकयंत्रालयमें छपा है यहां उनतीनोंकी पृष्ठसंख्या लिखकर जवाब दियाजायगा. मबबकि-हमारे पासतीनों सत्यार्थ-प्रकाश मौजूद है,

१२-सत्यार्थप्रकाशपृष्ठ ३९८ पंक्तिमें दयानंदजी लिखतेहै-जैन बौध-और नास्तिक-इन तीनोंकामत कोइकोइबात छोडकर एकसा है, फिर सत्यार्थप्र. पृष्ठ ४०९ पंक्ति १६ में-कहतेहै राजा शिवप्रसाद सितारेहिंदने इतिहासतिमिरनाशकग्रंथमें लिखाहै कि-इनके दो नामहै. एक जैन और दूसरा बौध ये पर्यायवाची शब्द है फिर सत्यार्थप्र. पृष्ठ ४१० पंक्ति १० में लिखाहै कि-अबदेखो ! अमरकोशमें बुध जिन औरबौध तथा जैन एकके नामहै वा नही ? क्या ! अमरसिंहभी बुध जिनके एक लिखनेमें भूल गया ?-( जवाब. ) महाशय ! अमरसिंहजीने दोनोंमत एक नहीकहे. नाम एकहोनेसे

मत एक नहीं होसकता, तनक दोनों मतके शास्त्रोंको देखकर लिखते तो अच्छाथा. अमराचार्य नहीं भूले आपही भूले हो. जो जो देव-गुरु-शास्त्र-और-तत्व \*जैनकेहै बौधके नहीं. नास्तिक दोनोंसें अलग है. आपने इतनी ओछीतहकीकातपर क्यों एक कह-नेकी बहादूरी जाहिरकिई ?-यहतो-साधारण विद्वान्भी जानते है कि-जैन-और-बौध-न्याराहै. पर्यायवाचीशब्द जो राजाशिवप्रसादजीनेकहा उसपर जो आपकोइतनाहठहैतो देखो ! उन्हीकीलि-खीचीठीमें वे क्याकरहेहै ?-जो पंजाब-गुजराणवालेके जैनोने मंगवाई थी. [चीठीकी नकल]-श्री,पं-सकल जैनपंचायत गुजारा न्वालाकों शिवप्रसादका प्रणामपहुंचे, कृपापत्र पत्रोंसहितपहुंचा.

( १ ) जैन बौध मत एकनहींहै,सनातनसें भिन्नभिन्न चले आये. जर्मनीदेशके एकबड़े विद्वान्ने इसके प्रमाणमें एकग्रंथ छापाहै,(२) चार्वाक और जैनसें कुछ संबंधनहीं.जैनकों चार्वाक कहना ऐसा है जैसा स्वामीदयानंदजीमहाराजकों मुस्लमान कहना.(३)इतिहास तिमिरनाशकका आशय स्वामीजीकी समझमें नहींआया.उसकी भूमिकाकी नकल.इसकेशाय जातीहै उससें विदित होगाकि-संग्रहहै, बहुतबात खंडनकेलिये लिखीगइ.मेरे निश्चयके अनुसारउसमें कुछ-भी नहीं है ४ जोस्वामीजी जैनकों इतिहास तिमिर नाशकके अनुसार मानतेहै तो-वैदोंकोंभी असके अनुसार क्यों नहींमानते ? [श्री कादास शिवप्रसाद.] बनारस-?जान्युआरी. सन १८७३ ई. देखिये ! राजाप्रसादजीने जैनबोधमत एकनहींकहा. चौथी कलममें वें लिखतेहैकि-इतिहासतिमिरनाशकके अनुसार स्वामीजी

\*जैनबोधका मेद-जोइसक्रितावके (१४१)पृष्ठसे(१८१)पृष्ठतकलिखाहै देखा जाे.

बेदोंकोभी क्यों नहीं मानते ?-अर्थात् मैंने जो बतलायाहैकि-वेद थोड़ेकालके रिषियोंकेबनायेंहुवेहैं उसको-इश्वरप्रणीत और सृष्टिकी आदकेबने क्यों फरमातेहैं ?

१३-दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४१० पंक्ति १६ में-लिखते है कि-सर्वज्ञ-वीतराग-अर्हन्-केवली-तीर्थकृत-जिन-ये छःनास्तिकों के देवताओंके नामहै. ( जवाब. ) बतलाना चाहिये कोनसे नास्तिकग्रंथमें ये छःनाम उनके देवताके लिखे है, बडे अफशोषकी बातहैकि-जो लोग देवही नहींमानते-वें-सर्वज्ञ-वीतरागकों क्यों मानने लगेथे ?-यहतो दयानंदजीकी इर्षाका नमूनाहैकि-किसी सुरत जैनकों नास्तिकहकर अपना इठधर्मपालन करना, फिर सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४११ पंक्ति ११ में दयानंदजी लिखते हैकि-अगर अनादिइश्वर नहोता तो “ अर्हन् ” देवके मातापिताआदिके शरीरका सांचा कौन बनाता ?-( जवाब, ) यह चिंताजैनोंकों नहीं वें-जगत्कों अनादि स्वतःसिद्ध सबूतकरदेते है. यह दोष तो आपहीको आताहै जो निराकारको विकारमें पडकर जगत्का बनावेवाला मानतेहो ? क्यों ! अंगाविनाभी कोइशरूख किसीचीजकों बनासकताहै ?-अगर नहीं वनासकता तो फिर यह कैसे सबूत करसकतेहोकि-निराकारने जग्तबनाया, सर्वशक्तिमान् कहदेनाही जानतेहो या कुछ प्रमाणभी रखतेहो ?-जगत्कर्त्ताका खंडन देखना होतो इसकिताबके पृष्ठ (५२७) पंक्ति ८ से लगाकर (५३४), तक देख लो.

१४-सत्यायम-पृष्ठ ४१४ पंक्ति २६ में-दयानंदजी लिखतेहै कि-आदिसृष्टिमें-जीवके शरीर और सांचेकों बनाना इश्वराधीन

पश्चात् उनसे पुत्रादिकी उत्पत्ति करना जीवका कर्त्तव्य काम है (जवाब.) क्यों ! इतनेहीसे क्यों थक गये ? क्या ! निराकारइश्वर जगत्बनानेका तो शौकीन बने और पालनकरनेमें कायरपन बतलावे यह मुनासिब है ?—दयानंदजी सत्यार्थप्र-पृष्ठ २१५ में लिखते हैं आकाश नित्यहै—और फिर नवीनसत्यार्थप्र-पृष्ठ २१९ में—रिग्वेदका—मंडल १ सुक्त १९ मंत्र ३—“सूर्यचंद्रमसौ घाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवं च पृथ्वीचांतरिक्षमथोऽस्वः बतलाकर फरमाते है कि—आकाश पृथ्वी सूर्यचंद्र वगेरा इश्वरके बनायेहुवे है. खूब पूर्वापरविरोधभरी बातकिइ. एक जगह आकाशको नित्य और एक जगह बनायाहुवा कहना—यह कौनसी बुद्धिमानका काम है ?

१५—दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १७१ में लिखतेहैकि—यज्ञके लिये जो पशुओंकी हिंसाहै सो \* विधिपूर्वकहै, पृष्ठ (३०३) में गौमेधादिकमें वंध्या गौ और बैलआदिनरपशुओंका मारना लिखा, पृष्ठ (३९९) में लिखाकि—पशुओंके मारनेमें थोडासा दुख होता है परंतु यज्ञमें चराचरका उपकारहोताहै, इसके प्रतिकूल—गौकरुणानिधिमें—तथा गौरक्षणीसभाके स्थापितकरते वरुत् व्याख्यानोंमें मांसका निषेध किया, देखिये ! दयानंदजीकी परस्परविरोधीबातपरस्वयाल किजिये ! नवीनसत्यार्थप्रकाश चोथी बारका साहुवा जो हमारेपास इसवरुत् मौजूदहै उसके पृष्ठ ३९९ पंक्ति १ में लिखाहैकि—पशुमारकर होमकरना वेदादिसत्यशास्त्रोंमें कहीं

---

\* उसविधिकी खोलकर क्यों नलिखी ?—मुसल्मानभी तोयही कहते है कि—हमभी विधिसँ मारते है.

नहीं लिखा. इससे तनक अगाडी बढोतो पृष्ठ ४०० पंक्ति ६ में लिखाहै-वेदोंमें कहीं मासका खाना नही लिखा. [इसकाजवाब] वेदोंकी भाष्य और टीकाकरनेवाले-उन्हट-सायनाचार्यऔर मही धराचार्यवगेरोंने साफसाफ लिखाहैकि-यज्ञमें-इसतरह हिंसाकरना. दयानंदजी नमालूम क्यों कभी कबूल और मुकरतेहै, देखिये ?-रिग्वेदमें अश्वमेधकाहालयों लिखाहैकि-घोडेको नहलाकर और उसपरकीमतीसाज चढाकर और उसके आगे रंग बरंगकी बकरियां रखकर उससे अग्निकी परिकम्मा दिलाइ, और फिर खंभेसे बांधकर और हथियारसे काटकर उसकामांस सीखपर भूना और उबाला और गोले बनाकर खागये. और एकजगह ऐसाभी लिखाहैकि-मैत्रावरणीं बशामालनेत्-अर्थात् मंत्र और वक्त्रके लिये बांझगौ मारनी चाहिये. रिग्वेदके ऐतरेयब्राह्मणमें-और शुक्लयजुर्वेदके शतपथब्राह्मणमें पशुमारनेकी बातहै. अथर्वणवेदके गोपथब्राह्मणभागके द्वितीयप्रपाठकमें ऐंद्राग्नि देवताकी प्रीतिके लिये पशुवधकरके यज्ञकरनालिखा, आपस्तंबीयधर्मसूत्र जो छपाहुवा हरदत्तनामकीटीका युक्त है उसमें गौवधकरके मधुपर्क करना लिखा,-इधर शंकराचार्यजी (जहां बौधोके शाय उनका संवादहुवाहे) वहां फरमाते है रे रे ! नीच !! तूं क्याक्या बोलरहाहै कि-अहिंसा धर्म है ?-सुन ! वेदसंबंधिनीहिंसा धर्मरूपहै-सर्वदेवों की तृप्तिहोनेका कारणहै-तद्वारास्वर्गप्राप्ति वगेरा फल देखेजाते है. इसलिये यज्ञमें पशुकी हिंसा करनीयोग्यहै. उसका पाठ शंकरदिग्विजय जो आनंदगिरिने बनायाहै उसके (२६) में-अध्यायसे यहां लिखते है “रे रे ! सौगतनीचतर ! किंकिं जल्पसि ! अहिंसा कथं

धर्मो भवितुमर्हति ? यागीयहिंसा-धर्मरूपात्वात्-(तथाहि) अग्निष्टोमा-  
दिऋतुः छागादिपशुमानयागस्य-परमवर्गत्वात्-सर्वदेवतृप्तिमूलत्वा-  
त् च-तद्द्वारास्वर्गादिफलदर्शनाच्च-पशुहिंसा-श्रुत्पाचारतत्परैरंगी  
करणीया, देखिये ! दयानंदजी ! आपके शंकराचार्य क्या फरमा-  
गये हैं ?-इधर महाभारत क्या-कहता है !

भुवं प्राणवधो यज्ञे-नास्ति यज्ञ स्त्वाहंसकः

ततो हिंसात्मकौ यज्ञः-सदा कार्यौ युधिष्ठिरः

इत्यादि प्रमाणोंसे सबूतपायाजाताहैकि-वेदमें हिंसाकरनी  
फरमायो है, आप क्यों मुकरतेहो ?-क्या ! दूसरोंके तर्कतापसें  
घभराते हो ? सबूतहोताहैकि-वेद अज्ञानीयोंके रचेहुवे है. क्या !  
वैदिकमतवालोंके घरमें सुन्नाचांदी झवाहिरात-ओर-मेंवामिठाइ  
नहीं थे जो देवोंकेसामने अर्पण करके पूजा करते-क्या ! वैदिक  
देवोंको मांसशिवाय तृप्ति नहीं आतीथी-अगर कहाजायकि-जैन-  
लोगजो-प्रतिमाकेसामने फलफुल चढाकर पूजाकरते हैं इसमें क्या  
हिंसा नहीं होती ! (जवाब.) फलफुल चढानेमें जीवके गलेका-  
टनेकी तरह रौद्रभाव नहीं आता-कहां पशुवध-और कहां फलपु-  
ष्प ?-प्रांचसमजकर तर्क उठाये करो.

१६-महाभारतवगेरासें जाहिर होताहैकि-पांडवोंने यज्ञ  
किया. उत्कंठमहादेवकेपाम जाबालिरूषिने यज्ञ किया जिसका  
नाम खैरनाथ जाहीर है. दयानंदजी वैदिकयज्ञोंकी हिंसा छिपाना  
चाहते हैं लेकिन ! छिप नहींसकतो. कइलोग यज्ञमें घृत-दूध-और  
उर्दकीदाल वगेराके पशुवनाकर होमकरते हैं. और कहदेते हैं,  
वेदमें हिंसा नहीं कही. लेकिन ! यहसब दूसरोंकीतर्कतापसें बच-

नकेलिये बहाना है. यज्ञमें पशुबधकरनेमें उसपशुका भला है ऐसा मानाजाय तो इसलाभमें मनुष्यों क्यों बंचित रखागया?—अगर कहाजाय उसमें पशुका कुच्छभला नहीं होतातो बतलाना चाहिये निरापराधीके गले खूरीफेरना कौनसा न्यायहै? दयानंदजी तो खैर! बातबातमें बदलते हैं, लेकिन! और भी कोई वैदिक महाशय इसके संबंधमें प्रमाणरखतेहो तो बतलावे. रिग्वेदकी संहितामें गौबलिदानकरनेकी रिचाहै—और उसीमें लिखाहैकि—जो पशुकाबलिदान करताहै स्वर्गकी तरह आनंददाताहै, सत्ययुगमें रिग्वेदकेतुने गौका बलिदान किया. ब्राह्मणलोग एकदफे विश्वामित्रके यज्ञमें ( १०००० ) दसहजार गौएँ खागये. दयानंदजी! आपने चतराई किइकि—वेदकीहिंसासें मुकरगये, नहंति—आजकल नमालूम ऐसेकामकरनेहारोंकों क्या क्या दंड दियाजाता?—गौकों पवित्र समझना और उसके वधकी आज्ञाफरमाना यह परमपवित्रवेदोंहीकी वाणी है. देखो! यजुर्वेद अध्याय २४ मंत्र २७—इसमें लिखाहैकि—वृहस्पतिकेलिये गोमेध कियाजाय यानी गौका होम कियाजाय. यजुर्वेद अध्याय २४ मंत्र २८ में लिखाहै प्रजापतिकेलिये नरमेध यज्ञहो. इसपर दयानंदजी फरमाते हैंकि—इसका अभिप्राय यह नहीं जो—हम—मनुष्योंका—वध करे. इसका मतलबतो यहहैकि—मनुष्य परमेश्वरकेलिये अपने आपको जीताही अर्पण करदेवे. विद्वान्लोगो! मुनलजिये! दयानंदजीका वेदभाष्य क्या उमदा अर्थ फरमाताहै! आप ऐसे चतरथेकि—किसीका निशाना नहींबनते थे. और दूसरोंकी तर्कतापसें बचजाते थे. लेकिन! जब गोमेधकेलिये पूछाजायगाकि—बतलाइये! गौ—अपनेआपकों

परमेश्वरकेलिये कैसे अर्पण करसकेगी ?—इसके जवाबमें दयानंद-जी क्या कहसकेगे ? खैर ! दयानंदजी तो रहे नहीं, उनका कोई आर्यसमाजही इसका जवाब दे तो बड़ीखुशीकी बात है. याद रहे ! इसीलिये दयानंदजीके बनाये वेदभाष्यकों काशीवगेराके वैदिक-पंडितोंने मंजूर नहीं किया. सबबकि—पदपदपर अर्थ उल्टाये हुवे हैं. समाजीलोग दयानंदजीकेलिये चाहे जितना बुगल बजावे—उसमें होता क्या है ?

१७—यहमत कहनाकि—दयानंदजी—वेदोंके ब्राह्मणभागकों नहीं मानते थे. देखो ! सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६०१ पंक्ति १४ में आगे लिखाहैकि—चारोंवेदोंके ब्राह्मण—अंग—उपांग—चारउपवेद—और—( १.१२७ ) वेदोंकी शाखा जोकि—वेदोंके व्याख्यारूप—ब्रह्मादिमहर्षियोंके बनाये ग्रंथहैं उनकों परतः प्रमाण—अर्थात् वेदोंके अनुकूल होनेसे प्रमाण और जो इनमें वेदविरुद्धवचनहैं उनकों अप्रमाण मानताहू. [ इसपर मंगलदेव पराजय पृष्ठ ३१ पंक्ति (२) पर लिखाहैकि ]—यहां ब्रह्मादिमहर्षियोंके बनाये ग्रंथोंमें वेदविरुद्ध वचन कहनेसे स्पष्ट सिद्धहैकि—स्वामीदयानंदजीकों—ब्रह्मादिमहर्षियोंसे अधिकविद्वान् होनेका अभिमान था. और उनका अज्ञान उन्दीके लिखे हुवे सत्यार्थप्रकाशादिग्रंथोंसे सम्यक्प्रकटहै, यहां हमकों इतनाहीलिखना बहुतहैकि—दयानंदजीने लाखचतराइकिइलेकिन ! झूठहोनेसे चली नहीं.

१८—जिस वैदिकमतावलंबीकों यह अभिमानहोकि—वेद—इश्वरप्रणीतहै—वह—इसलेखकों सावधानीसे पढ़े. रिग्वेदभाग (२) मंत्र (७)में—लिखाहैकि—वेद—परमेश्वरसे आये हैं—इसलिये सबतर-



हकी स्तुतियोग्य है. यजुर्वेदके शतपथमें लिखा है कि-चारों वेद पर-  
मेश्वरके \*श्वाससे निकसे. मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक (२३) लि-  
खा है कि-ब्रह्माने अग्निवायु और सूर्यसे-रिगवेद-यजुर्वेद-और-  
सामवेदको आकृष्ट किया. और यह भी उसी श्लोकमें कहा दिया कि-  
तीनों वेद असलमें सनातन हैं, शारीरिक अध्याय १-पाद ३-सूत्र  
१९ में लिखा है वेद अनादि हैं. इधर महाभारत और दयानंदजी-  
की बनाई रिगवेदादिभाष्य भूमिकामें लिखा कि-जब प्रलय होगा  
तब वेद परमेश्वरमें लीन हो जायगे. क्योंकि-वे-उसीसे प्रकट हुवे हैं  
जब फिर दूसरी सृष्टि होगी तब रुषिलोग परमेश्वरकी आज्ञासे त-  
पस्या करेंगे और वेदोंको पायेंगे. दयानंदजीका यह भी कहना है  
कि-१, वृंद ९६, करोड़ ८, लाख (५२) हजार-९७५ वर्ष हुवे वेद  
संसारमें आये. (१००) करोड़का एक अरब-और-(१००) अर-  
बका एक वृंद कहा जाता है. इसमें मनुस्मृति-और-ब्राह्मणोंका पं-  
चांग साक्षी है. (जवाब.)-वेद इश्वरके फरमाये हुवे इसलिये नहीं  
कि-उसमें अप्रमाणीक बातें जाहिर हैं जो इश्वरके कथन करने योग्य  
नहो. वेद पौरुषेय-या-अगौरुषेय? इसके नतीजे पर खयाल करते हैं  
तो यही मुनासिब ठहरता है कि-शब्दरूपवाणीका उच्चारण देहधा-  
री विद्वान नहीं हो सकता. निराकार इश्वर-मुखसे बोले-यह मुखोंके  
शिवाय दूसरे नहीं मान-सकते. अगर इश्वरने रुषियोंपर प्रेरणा  
किइ माने तो भी देहविद्वान प्रेरकका मानना युक्तिविकल है, नै-  
शब्दरूप है-और जो जो शब्दरूप है सो सो देहधारीका कथन होना  
चाहीये-इस बातको कोई तोड़ नहीं सकता. वेदोंमें कइमंत्र ऐसे हैं

\* इश्वर तो शरीररहित है फिर उसके श्वास कहाँसे निकसा ?

कि-इश्वर-( रुद्र-सूर्य-ज्यंबक-और वरुणवगेरासें )-विश्वामित्रकृत है कि-पेरा यह काम तुम करदो, रिग्वेदके ऐतरेयब्राह्मणभागमें अष्टमपंचिकाके (२८)में खंडमें लिखा है कि-इस अनुष्ठानसें राजाके सब शत्रु मरजाते हैं, इसमंत्रको जपे तो फतेह मिले-इसपर कई वैदिक लोग जवाब देते हैं कि-यह बात इश्वर थोड़ा ही कहता है किन्तु मनुष्योंको सिखलाता है कि-तुम लोग ! इमतरह मेरी प्रार्थना करो लेकिन !-यह बिल्कुल गलत है-सब कि-वेदोंमें किसी जगह यह नहीं लिखा कि-इश्वर मनुष्योंको कहता हो, तुम ! ऐमे मेरी प्रार्थना करो, न किसी प्राचीन भाष्यकारने ऐसा अर्थ किया. असल पुरछो तो वेदकी उत्पत्ति मनुष्यसें है इश्वरसें नहीं, इससें बहुतरे वैदिक मत-वाले अलबते ! नाराज होगे-लेकिन ! क्या कहा जाय-विद्वान् प्रमाणके कैसे कह देवे कि-इश्वर प्रणीत वेद है. कपिल-गौतम-पतंजलि और कणाद वगेरोंने जो वेदोंको छोड़कर नवीन सूत्र बनाये, इससें मालूम होता है उन्हींको वेदोंकी प्रक्रिया अच्छी नहीं लगी होगी, असलमें वेद एक शुरुआत बनाये नहीं बल्किन् ! कई रुषियोंके बनाये हुवे हैं, रिग्वेदकी संहितामें बहुत जगह ऐसा लेख है कि-वेदमंत्र रुषियोने उत्पन्न किये. रिषेमंत्रकृतास्तोमैः कश्यपोद-र्घयन् गिरः-इत्यादि प्रमाणोंमें कह सकते हैं कि-वेद इश्वरके कहे हुवे नहीं.

१९-आर्यतत्त्वप्रकाशग्रंथके पहिले व्याख्यान पृष्ठ २० में लिखा है कि-रिग्वेदका पहिला मंत्र विश्वामित्रके पुत्र मधुछंदस्ने-बनाया. और अंतका मंत्र अधमर्षणरुषिने-बनाया, इसलिये कह सकते हैं कि-रिग्वेद उस समयका रचा हुआ है जबकि-मधुछंदस् और

अधमर्षण वर्त्तमान थे. मधुच्छंदम् रुषिजिनोने पहिला मंत्र बनाया  
 रामचंद्रजीके समयवर्त्तमान थे, इमकारण रिग्वेदके आरंभका स-  
 मय प्रगट होगया. रामचंद्रजीसे सुमित्रतक वैदिकग्रंथोके अनुमार  
 (५६) पांडियां होती है, और छयनपीडियोंके (११२०) वर्ष नि-  
 कलते है. इसमें विक्रमादित्यसे आजतकका समय अर्थात् संवत्  
 (१९५२) मिलानेतें विदितहोताहैकि- अबतक (३०७२) वर्ष होते  
 है जबकि-रिग्वेदका आरंभहुवा था. ” यूरापखंडके नामी विद्वान्  
 मोक्षमूलरवगेराकोभी यही कहनाहैकि-वेदकेवचन ऐसे है जैसे अ-  
 ज्ञानीयोंके मुखसे अकस्मात् निकसेहो-और इनकी रचना अनु-  
 मान तोनहजार (३०००) वर्षोंतेंहुइहै. वेदोंमें जहां दोर्घायुहोनेकी  
 प्रार्थना किइहै यही कहाहैकि-मैं-(१००)-सोवर्षतक जीसकूं-कठ  
 उपनिषदमें पम-नचिकेतासे कहाहैकि तैरे बैठे-और-पोते मांग  
 जो सोसोवर्षतक जीयं. इत्यादिप्रमाणोंसे सबूतपाया जाताहैकि-  
 वेदोंकी रचनाकों बने बहुतवर्ष नही गुजरे. महाशय! अब कैसे  
 कहाजायकि-वेद-निराकारइश्वरके रचेहुवे-या-उसके श्वाससे नि-  
 कसे है?-कैसे कहाजाय ब्रह्माजीने अग्निवायु और सूर्यसे आकृष्ट  
 किये?-कैसे कहाजायकि-अनादिहै? और दयानंदजीकीतरह य-  
 हभी कैसे कहदेवेकि-वेद-इश्वरमें प्रकटहुवे और प्रलयके वख्त  
 उसमें लीन होजायगे. फिर जब दूमरीमृष्टि दयानंदजीका निरा-  
 कार इश्वर पैदाकरेगा तब उसकी आज्ञासे रुषिलोग तपस्या क-  
 रेमें और वेदोंको पायगें. ऐसी ऐसी अमंभवबाते कौन मानसक-  
 ताहै? जिसमतमें एकवातपर कोई कायमनही-कोइ कुछ और  
 कोई कुछ कहताहै उसपर कहांतक कोई दरयाफत करे? यह

निश्चयहैकि-वेदोंमें पूर्वापर विरोध पिष्टपेषण-और-निष्प्रयोजन-वर्णन बहुतसीजगह है, इसलिये सबूतहोगयाकि-वेद-इश्वरके कहे हुये नहीं,—

२०—स, पृष्ठ ४३६ पंक्ति २९ से—दयानंदजी लिखते हैकि-जितना मूर्तिपूजाका झगडा चलाहै वहसब जैनोंकेघरसे और पाखंडोंका मूलभी जैनमतहै. पुरानेमंदिरोंको सुधरानेसे मुक्ति होजाती है, एककिभीने पांचकोडीका फूल चढाया उसने अठाराह देशका राज्य पाया. उसकानाम कुमारपालहुवा था. जैनलोग मंदिरोंमें लाखहां रुपये लगादेते हैं जिनमें कुछ संसारका उपकार नहींहोता. ( जवाब. ) दयानंदजीको मूर्तिपूजासे कुछ उपकार नहीं दिखता यह उनकी उत्तम समझका फर्क है, वाल्मीकीयरामायणको वैदिकलोग जैनमतमे पहिले लिखीगइ समझ हुवे है, और उसके सर्ग(४४)श्लोक(४२-४३)पर लिखाहैकि-रावणशिवमूर्तिकी पूजाकरता था. बतलाइये! दयानंदजी! फिर आप किस मुंहसे लिखतेहोकि-मूर्तिपूजाका झगडा जैनोंकेघरसे चलाहै?—मनुस्मृतिमें आठतरहकी मूर्तिका बयानहै. रामायणको दयानंदजी इनकार करना चाहेतो नहीं करसकते. पहिले सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ (६८) में मनुस्मृति-वाल्मीकीयरामायण और महाभारत प्रमाणीक मानचूके है. अगर आपमूर्तिमें नाराजथं तो आपने अपनी तस्वीर फोटोग्राफमें क्यों उतरवाइ? आपतो मूर्तिपूजाके उढानेको झंडा लेकर खडे हुवे थे. पाषाणादिकों देवबुद्धिकरके मानना गप्प फरमा गये और कागज स्याहीमें बनीहुइ आपकी मूर्तिकों दयानंदजीकी बुद्धिकरके मानना गप्प क्यों नहीं फरमाया? समाजीलोग अपने

घरमें आपकी रंगीनतस्बीर दिवारोंपर लटकाकर-उसका आदर-सत्कार क्यों कर रहे है?—कोई आपके रागी आपकी तस्बीरको यानी एककुरसीपर रखकर उसमें इतर फुल चढ़ाके-गायन करे और-आपके जन्म-या-मृत्युकेदिन जलसा करेतो उसने मूर्त्तिपूजाका आदर किया जानना या-निरादर?—इश्वरकी-और-अन्य अन्य रुषियोंकी मूर्त्तिसें नाराज रहना और अपनी तस्बीर देशमें फैलाना यह पक्षपातनहीतो क्या है? अगर आप सब्बे मूर्त्तिद्वेषीये. तो सत्यार्थप्रकाशमें पुत्र कन्याके विवाहसंबंधके लिये फोटोग्राफकी मूर्त्तिकों काममें लानेकी आज्ञा क्यों दिइ? कहिये! कागज-स्याहीकी मूर्त्तिकों स्त्री और मर्दकीबुद्धिसें देखनातो मंजूरहुवा-और देवमूर्त्तिकों देवबुद्धिसें देखना मंजूरनही यह कौनसी बुद्धि-मानीका काम किया? याद रहे! मूर्त्तिपूजासें कोई नही बचा. ५ रमात्मा-इश्वर-आँ-शिव-सत्-चित्-प्रजापति-ये क्याचीज है? अगर कहाजाय ये खुद इश्वरनही किंतु इश्वरकी यादि दिलानेके आलंबन है ( जवाब. ) फिर इसीतरह मूर्त्तिभी खुद इश्वरनही लेकिन! उसकी यादि दिलानेका आलंबन माननेमें क्या हर्जया? अगर कहाजायकि-निराकारका आकार नही बनसकता-तो-यह भा कहसकते हैकि-निराकारका अक्षरभी नही होसकता. क्योंकि अक्षर साकार है, और निराकार इश्वर जगत्कों भी नही बनासकता. रचना करना देहधारीका काम है. दयानंदजीने तृतीयसमुल्लासमें-बेंदी-प्रोक्षणीपात्र-वमेरा पांच चित्र इसलिये बतलाये है कि-इसके आकारका. सभाजीलोगोंकों ज्ञानहों देखिये! जड वस्तुके ज्ञानकरावेमें तो आप अपने चेलोंकों मूर्त्ति बिना काम न

चाल-और-फरमाते है निराकार इश्वरका यूँही मनमें ध्यानकर लिया करो यह कौनसी बुद्धिमानी जाहिर करगये ? दयानंदजी ! सच कहना ! सब पापंडोंका मूल जेन है या आप ?-पुराना या-नयामंदिर तभी सुधरवायाजायगा जब उस ही बुद्धि धर्मपर रज्जू होगो. जिसकी बुद्धि धर्मपररज्जू हो उसकी मुक्ति कौन रौकसकता है. पांचकोडीके फुलसें अठाराहदेशका राज्य कुमारपालने पाया इसबातको आप किस प्रमाणसें तोडमकतेहो ?-पांचकोडीपर बात है या-उसके अंतःकरणकी भक्तिपर बात है ?-पूर्वजन्ममें वह दोन हीनथा. उसने पांचकोडीके फुल मौललेकर भक्तिमें देवको चढाये और नमस्कार किया-जिसमें अगले जन्ममें उसके पुन्यकी वृद्धि हुई और राज्यपाया-इसमें कौनसी असंभवबातथी ?-मूर्तिके दिखनेसें उसदेवकी यादी आती है उनमें मनःपरिणाम शुद्धहोकर मनुष्यको फायदा पहुंचताहै. दयानंदजी को-ब्रह्माविष्णुमहेशकी-मूर्ति-स्त्री और हथियारवाली देखकर कुछ फायदा नही दिखताथा तो जैनोंकीतरह समाधि युक्तमूर्ति-बनवाकर उसकी उपासना करनेकी रसम जारीकरते. सन्यासीहोकर धनसंचयकरना-और-भपनी तस्वीर पूजवाना-बनपडा और यह काम क्या नही बनसकता था ?—

२१-सत्यार्थ-पृष्ठ (४३९) पर-पंक्ति १ में-दयानंदजीने जैनोंका नमस्कारमंत्र लिखकर बतलायाकि-इसमंत्रका बडा महात्म्य लिखाहै और सब जैनियोंका यह गुरुमंत्रहै. इसका ऐसा महात्म्यधराहैकि-तंत्रपुराण भाटोंकीभी कथाको पराजय करदिया, इसमें जैनके अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-और साधुओंको

नमस्कार किया है, यद्यपि मंत्रमें जैनपद नहीं है तथापि जैनियोंके अनेकग्रंथोंमें बिना जैनमतके अन्य किनीकों नमस्कारभी न करना लिखा है, (जवाब.)-जैन लोग पहिले जिसको (नमस्कारमंत्र मानते है उसको सुनलो.) नमो अरिहंताणं-नमो सिद्धाणं-नमो आयरियाणं-नमो उवझायाणं-नमो लोएसव्वसाहूणं-एसो पंचनमुक्कारो-सव्वपावप्पणासणो-मंगलाणं च सव्वेसिं-पढमं हवइ मंगलं. (अर्थः) अरिहंतकों-सिद्धकों-आचार्यक-उपाध्यायका-और-सबसाधुओं-कों-नमस्कारहो. यह पंचतरहका नमस्कार सब पापोंका नाशकरनेहारा है-और-सबतरहके मंगलोंमें अवलंबवरका मंगलीक है. कहिये! इसमें कौनसे पक्षपातकी बात हुई? अरि नाम शत्रुका-सो-कामक्रोधादि आत्माके शत्रुकों जिसने दहन डालेहो सो अरिहंत-जो मुक्तहुवेहो उनका नाम सिद्ध-आचार्य उपाध्याय-आर-साधु-जो कि-संसारके त्यागी और धर्मके उपदेष्टा होते है सबकिमीकों जाहिरही है. इनकों नमस्कार करनेमें बड़ा फल जो जैनोंने बयान किया-इसमें दयानंदजीकी क्या बुराई थी? जयति रागद्वेषादि-शत्रून्-इति जिनः-ऐसी निष्पक्षपातकी बातमें भो दयानंद जो चोढेतो उनके दौर्भाग्यके शिवाय और क्या कहा जाय? आप फरमागये कि-जैनोंने इसमंत्रके महात्म्यसे तंत्रपुराण भाटोंकी कथाको भी पराजय कर दिया, लेकिन!-यह क्यों नहीं बनला गये कि-हमारे गायत्रीमंत्रकी भी कुछ तारीफ गाइगइ है. वैदिक लोगोंमें गायत्रीका जप सबमें बड़ी विशेषता रखता है. मनुजी अपने शास्त्रमें फरमाते है कि-मनुष्य-गायत्री पढनेसे निःसंदेह मुक्ति पाता है-चाहे वह अपने मतकी और कुछ बात करे-या-न करे. वेदकों भो वही

जानता है जो गायत्रीका पहिला अक्षर जानता हो. जो तांनवर्षतक गायत्रीको हरहमेश पढ़ेगा वह आकाश और पवनकी तरह साफ होकर परब्रह्ममें लीन हो जायगा. गायत्रीसें कोई बढानही. उपनिषद्में बयान है कि—जो सूर्यके सामने बैठकर जाप करेगा निडर हो जायगा. गायत्रीके प्रभावसें एकक्षत्री विश्वामित्ररुषिसें ब्रह्मरुषि हुवा और नयी सृष्टिरचनेकी सामर्थ्य पाई. दयानंदजी ! आपने सुना !—आपके वैदिक आचार्य—गायत्रीकी क्या तारीफ कर गये है ? (समीक्षक)—मुना दिजिये ! गायत्रीमें क्या बयान है ? (जवाब.) गायंतं त्रायते इति गायत्री, पढ़नेवालेकी रक्षा करे उसका नाम—गायत्री है. (समीक्षक,) हम पुछते है उसका पाठ क्या है ? सुना दिजिये. (जवाब.)—मकानकी चौकेर और गलीकुचोंमें देख आओ कोई सुनता तो नहीं. चढ़नेकी सीढ़ीमें भी देखलो. हम नहीं चाहते कि—कोई अनार्यमनुष्य इसको सुन लेवे. जरा पास आन कर कानमें सुनलो. [ ओं नमो भगवते वासुदेवाय—स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं—भूर्भुवः स्वः ] अर्थः—भू-आकाशस्वर्ग हम सूर्यकी बड़ी ज्योतिका ध्यान करते है वह हमारी बुद्धिकी प्रेरणा करे, अर्थात् तेजोमय सूर्यको हम नमते है वह हमारी बुद्धिको रास्ते पर लावे. बस ! यह वेदमतवालोंका गुरुमंत्र है. जिसपर इतना अभिमान रखते है कि—कुच्छ कहान जाय कहिये ! इसमें कौनसे परमात्माका ध्यान है ? दयानंदजी बतलाइये ! चारणभाटकी कथाको किसने हरा दिया ?—जरा पक्षपात रूपजामेंसें बहार आनकर कुच्छ कहते तो अच्छा था.



२२-जैनलोग जो कहते हैं कि-कुगुरुकीसेवा नकरना चाहिये. सांपकीसंगतसें एकभव मरनाहै लेकिन! कुगुरुकेसंगसें भवभवभय मरनापड़ेगा. इसपर चींड़कर दयानंदजी सत् अर्थ-पृष्ठ ४२८ षष्ठी शतककी गाथा लिखकर पंक्ति २६ में कहते हैं देखिये! जैनोकेसमानकठोर-भ्रांतद्वेषोनिंदक भूलाहुवा दूसरेमतवाले कोईभी नहोगे. इन्होंने मनसें यह विचाराहै कि-जो हम अन्यकी नींदा और अपनीप्रशंसा नकरेंगे तो हमारीसेवा और प्रतिष्ठा नहोगी, परंतु यह बात उनके दौर्भाग्यकी है. ( जवाब.) कुगुरुकी सेवा नकरना चाहिये यहकहना जैनोका किसीसुरत बुरा नहीं. क्योंकि-जो केचनकामनोका भोगो-और-शास्त्रोंसें उल्टा उपदेशदेनेवालाहै वह कुगुरु उसको मानने पूजनेसें कोईपारमार्थिकलाभनहीं-इसमें दयानंदजी क्यों! चींड़ें? जैनोंने इसमें किसकी नींदाकिई? औ कौनसी अपनी प्रशंसाकिई?-जैनगुरुओंकी सेवाकरनेवाले लोखे हांलोगहै उनके दौर्भाग्यकी बात क्यों हो?-दौर्भाग्य तो आपका भी-आपके वैदिक मतवालेही आपको नहींमानते थे. थाय-इसमें वेदविरुद्ध इनका उपदेश होनेसें न सुनना और कहते थे वेदविषय नष्ट होना चाहिये. वेदोंका अमूल्यार्थ सच्चा-या-दूसरा ऐसीभ्रान्ति आपको थी-या-जैनोको? महीधरादि पुरानेवैदिकाचार्योंके नींदक आपथे-या-जैन? भूलाहुवा आपका निराकारइश्वरथा-जिसने जूठे अर्थलिखनेहारें महीधर सायनवगेराकी अंगुली न तोडडाली और आपको उनसेंपहिले जन्म नहींदिया.

२३-दयानंदजी स. पृष्ठ ४२८ पंक्ति २ में-लिखते हैं कि-दुष्ट कर्मरूपसागरमें डुबानेवाला जैनमार्ग है. क्योंकि-येलोग-मुदेवमुगु-

रुधर्मकोंही मानो ऐसा कहकर दूसरोंकों कुदेवकुगुरुकुधर्म कहते हैं, जैनकेशिवाय दूसरेकों मानना पूजना नहीं फरमाते. यहतो बैरवेचनेहारी कुंजडीकसमान अपने बैर मोठे दूसरेके खट्टे बता-नेवाले है. (जवाब.) जैनलोग-रागद्वेषकामक्रोध-और-स्त्रीसंगसे रहित देवकों सुदेव-कंचनकामनीकेत्यागी और सच्चेशमों-पदेशकों सुगुरु-और-ऐमे निरागो और ज्ञानीके कथनकियेहुवे धर्ममार्गकों सुधर्म कहतेहै. कहिये ! इसमें क्या झूठ कहा ! कुदेवकुगुरुकुधर्मकों जैन क्या ! समनुष्य इनकारकरत है-इससे दयानंदजी क्यों नाराजहुवे. देखिये ! जिसभर्तृहरिके ग्रंथका आप अपने ग्रंथमें काव्य लिखकर प्रमाणीक सबूतकरते हों वही भर्तृहरि-क्या कहगये है ?

### [ काव्य. ]

शंभुस्वयंभुहरयो हरिणेषणानां-येनाकृतं सततं शुद्धकर्मदासाः

वाचामगोचरचरित्रपवित्रिताय-तस्मै नमो भगवते ! कुसुमायुधाय, ?

अर्थ:-जिस कामदेवने ब्रह्माविष्णुमहेशकों-त्रीयोंके दास बनादिये ऐसे अगोचरचरित्रवाले कामकों-मैं-नमस्कार करता हूं. दयानंदजी ! देखिये ! यह आपके वैदिकदेवोंका हाल पढलजिये ! जिसदेवकेपास हथियारहै-या-जो-दूमेरे दैत्योंकी छातीपर पांव-धरके खड़ाहै उसकों ध्यानसमाधिलीन कौन कहसकताहै ? इसलिये जैनोंका कहना किसीसुरत झूठ नहींहोसकता, न झूठबातका जैन पक्ष करते है. जिनशब्द विशेषस्निग्धहै, जो रागद्वेषशत्रुकों जीतगयाहो वह जिन-और उसके कहेहुवे मार्गकानाम जैन-

नमत है. आपने जो सत्यार्थप्रकाशक बारहवेसमुद्धानमें जैनकेषष्ठो शतकग्रंथकी जो (२९) पाथके अंशज लिखकर जो जो अर्थ किया सबझूठ और मनःकलित है, क्योंकि-दयानंदजीकों प्राकृतभाषाका ज्ञाननहीथा. अगर कोई आर्यसमाज अभिमान रखताहोकि-हमारे स्वामीजी झूठ कैसे लिखे-तो-प्राकृतभाषाके जानकार पंडितकेमामने सत्यार्थप्रकाशके लिखाणकों भेजकर तहकीकात करलेवे. क्योंकि-दुनियामें विद्वान् लोगोंकी नास्ति नहीं-दूनरा जानकार विद्वान् प्राकृतभाषाठी जोकुच्छ अर्थ करे वही सबकों प्रमाणकरना होगा. दयानंदजी! जगहजगह लिखतेकि-जैनी बड़े हठवादी होते हैं, दूसरेमतवालोंकों मानना पूजना नहीं फामाने. अपने बैर भीठें और दूनरेके खट्टे कहते हैं, (जवाब.) सत्यार्थ प्र० पृष्ठ ५२) पंक्ति १७ में लिखाहैकि-जो वेद और वेदानुकूल आत्मपुरुषोंके किये शास्त्रोंका अपमान करताहै उसवेदनींदक नास्तिककों जातिपंक्ति और देशमें बहार करदेना चाहिये. खू! क्या कहना ! दयानंदजी! आपके वचनकीतो तारीफही है जैन-बौध-कपिल-गौतम-पतंजलि-कणाद-कवीर-गुरुनानक-इशाइ-मुसलमान वनेरा जो आपके वेदकों नहींमानते उनकों आपदेशनिकाला देनाचाहतेहो?-शंकराचार्य-शंकरादिग्विजयमें-प्रकरण (२६) पर फरमाते हैं तदव्यतिरिक्तस्पैव पाषंडत्वात्-वेदके व्यतिरिक्त सब पाषंडहै. इधर मनुजी सबसे बढकर फरमारहे हैंकि-वेदनिंदापरा यतु-तदाचारविवर्जिताः-तेसर्वे नरकंयाति-यद्यपिब्रह्मबीजजाः-वेदकी निंदाकरनेहारे और उसकेकहेहुवे आचा-

रसेरहित-सब नरक जायेंगे. क्या कहना ! दयानंदजी ! आप-  
और-आपके मनुजी तथा शंकराचार्य-खूब पक्षपातरूपवाडाबंधी  
कर गये, देखिये ! अब जरा खोलकर कहदिजिये ! कुंजडीके  
समान अपने बैरमोठे दूसरेके खट्केरहनेवाले जैनहै ?-या-आप  
लोग ? दुष्टकर्मरूपसागरमें डुबानेवाला जैनमार्ग है ?-या-वैदिक-  
मार्ग ?—

२४-सत्यार्थप्र० पृष्ठ ४२५ पंक्ति-५ सें-आगे लिखते हैंक-  
जैनमतवाले दूसरेमतवालोंको-नमस्कारकरना-या-अन्नपानीदेना  
भी अच्छानही समझते. कितनेदयाहीनहै ? (जवाब.) अनुकंपा-  
लाकर दानदेना जैनलोक कभी बुरानही समझते. देखिये ! कल्प-  
सूत्रमें क्या लिखाहै ?-जैनकेमहावंरतीर्थकरने दाक्षालीयेबादभी  
एकदलिद्रीब्राह्मणको देव दुष्पवस्त्र देदिया, जो बहुमूल्यहोनस उस  
ब्राह्मण को बहुतसमयतक फायदेमें रहुाथा ?-दयानंदजीने यहबात  
क्यों जाहिर नकिई ? जैनोंका दानगुण दुनियामें मशहूरहै, जैन-  
शास्त्रोंमें लिखाहैकि-जैनके चौईसतीर्थकरणे, जबकि-वें संसारमें  
थे. सबमतवालोंको अनुकंपादानादिया. यह आपहीके वैदिकमत-  
वालोंका हठवादहैकि-नगच्छेत् जैनमंदिरं-जैनमंदिरमें नही  
जाना. जैनलोग-धर्मभ्रष्ट और पापशास्त्रके उपदेशकोको धर्मबुद्धि  
जानकर नमस्कारकरना-और-अन्नपानीदेना इसलिये अच्छानही  
समझतेकि-उनसे धर्मसंबंधी कोई लाभनही. दीनहीनजानकर अ-  
नुकंपादान देना जैनलोग मना नही फरमाते, बतलाइये ? फिर  
जैनलोग दयाहीन और कठोरहृदयवाले कैसे सबूत हुवे ? क्या !  
आपको सच्चेधर्मके उपदेशक नही समझे इसलिये ?

२५-दयानंदजी सत्या० पृष्ठ ४२० पंक्तो ९ में-लिखते हैं कि-  
 जिन्होंने वेदोंसे विरोध किया-करते हैं-और-करेंगे-वें-अवश्य-  
 विद्यारूप अंधकारमें पड़कर जितना दुख पावे उतनाही न्यून है.  
 इसलिये मनुष्यमात्रकों वेदानुकूल चलना समचित है. ( जवाब. )  
 दयानंदजी ! बहुतहुइ-अब माफ फरमावे. पहिलेबहोत कुछ  
 लिखाभी गया है कि-वेद-अविद्यारूप अंधकारकी गुफा है-इसमें  
 जो कोई जागरेगा वही पस्तायगा. दयानंदजी इसी पृष्ठ पंक्ति  
 २६ में लिखते हैं कि-चारवाकसें बौध और जैनियोंका भेद है-प-  
 रंतु नास्तिकता-वेद-इश्वरकी नोंदा परमतद्वेष-और जगत्का कर्त्ता इ-  
 श्वर नही इत्यादि बातोंमें सब एकही है. ( जवाब. ) जैन लोग-अष्टा-  
 दशदोषरहित इश्वर मानते हैं. जगत् अनादि स्वतः सिद्ध मानते हैं  
 जो जैसा कर्म करेगा वैसा फल भोगेगा. जो सर्वज्ञ प्रणीत धर्म पालन  
 करेगा उसका निर्वाण होगा मानते हैं इसलिये नास्तिक नही, जै-  
 नोंकों यह इष्टवाद नही कि-परमतमें कोई विद्वान् नही, इश्वर ज-  
 गत्को बनावे यह किसी युक्ति प्रमाणद्वारा सबूत नही होता इसलिये  
 कर्त्ता नही मानते. अगर जगत्को इश्वरने बनाया मानेतो मसाला  
 कहाँसे लाया ?-अरुपी इश्वरसें रूपी पदार्थोंकी पैदाशमानना प्रमा-  
 णस बाधत है. अगर जीवका कर्त्ता इश्वरकोही माना जाय तो प्र-  
 त्यक्ष प्रमाणसें विरोध आता है. सबब कि-कार्य अपने उपादानकार-  
 णस भिन्न न होता. अगर जीवोंका उपादान कारण इश्वर है तो  
 बतलाना चाहिये जीव-इश्वरकी एक्यतामें अंतर क्यों मानने हो ?  
 और इश्वरकी इच्छासें प्रतिकूल जीव क्यों देखे जाते हैं ? इसलिये  
 कबूल करना चाहिये जीव अनादि-और-इसका कर्त्ता इश्वर नही,

इसपरभी जिनलोगोंको हठवादहै वे बतलावेकि-एकमनुष्यसे दूसरेका घातकराना-और-फिर घातकों राज्यद्वारा फांसी दिलाना-इश्वरकेलिये कौनसी बहादूरीका काम था?—भगरकहाजाय एककाम इश्वरने किया-दूसराजीवने-तो-फिर बतलाना चाहिये वह सर्वशक्तिमान् कहां रहा? तैत्तिरीयब्राह्मणभागमें लिखाहैकि-परमेश्वरने अपने आपमें चाहाकि-मैं-सकलवस्तुको उत्पन्न कर-इसइरादेको पुराकरनेकेलिये तप किया. फिर सकलवस्तुके मूल कारणको उत्पन्नकिया. उनको अपना आत्मादिया और इसप्रकार सकलवस्तु बनगया. सौचना चाहिये-निराकारने तप कैसे किया! साकारचीजोंको आत्मा कैसे दिया? सकलवस्तुकेमूल-कारणको किसमसालेमें बनाया? पहिलेतो एकीला निराकारही था-इधरउधर फिरकर पीछा जैनोंकेघर आना आपलोगोंको मुनासिब नही था.

२६-सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४२१-पंक्ति १३ में दयानंदजी लिखते हैकि-जीव और जडका लक्षण तो जैनलोगठीककहते है लेकिन! जडरूप पुद्गलहै वे पापयुक्त कभी नहीहोसकते. (जवाब.) कौन कहताहैकि-जडपदार्थ पापपुन्ययुक्तहै? अपने दिलसे चाहे सो कहदो. किसी जैनशास्त्रमें यहबातनही लिखी. अच्छे बुरे अभिप्रायसे जो जीवकेशाथ अच्छेबुरे पुद्गल बंधते है-वे-चारस्पर्शों परमाणु पुद्गलहै इसको उल्टा समझे हुवेहोतो अलगबातहै. सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४० पंक्ति ११ में-दयानंदजी लिखते है जैनियोंके साधुओंकी लीला देखिये!-एक जैनमतका साधु-कोइया बेइयासे भोगकर पश्चात् त्यागीहोकर स्वर्गलोकको गया. (जवाब.)

पटनानगरके शकडालमंत्रोंके बेटे स्थूलभद्रजी जब संसार अवस्था थे—एक वेश्याकेघर ( १२ ) वर्षतक रहे थे. पीछेसे उसका संग छूटकर वे साधु हुवे. धर्मपालन किया—और—उमर पुरीहोनेपर मकर स्वर्गगतिकों प्राप्तहुवे. कहिये ! इसमें कौनसी विरुद्धबात थी क्या ! कोई आर्यसमाजी वेश्यागामी हो—पीछेसे संन्यासी बं दयानंदजीके इरादेमजब वेदोंके हुकमपर चले—आर—निराकार ईश्वरका ध्यानकरे तो मुक्तिकों पासके या नही ?—अगर पासके तो जो कोईस्थूलभद्रजीसाधु सच्चासाधुधर्म पालनकरके स्वर्गलोग क्यों न जैनमें लिखते दयानंदजी वारवार जो सत्यार्थप्रकाशमें लिखते है वे—पासकेगे ?—इत्ता—वेदइंदक बौध—वा—जैनमत—मचलितहुवा—इससे जा—दादिशास्त्रोंका नतीमें सबएक है. ~~सत्यार्थप्रकाश~~—नाजाताहैकि—दयानंदजीकों पंजाब—अरामियालनिवासा ठाकुर सजीने—तथा—मेवाड उदयपुरमें श्रीमानझवेरसागरजीने ऐस लायाकि जैनकों बुराकहते उनकों शांति नहीआतीथी. फिर आप फरमाते हैकि—जैनोंके साधुओंकी लीला देखिये ! ( जवाब. ) जैनोंका धर्म निर्विकारहै उसमें लीलाक्रीडा या—विकार—प्रथमहीसे निषेध है, लीलाक्रीडा तो आपक ब्रह्माविष्णुमहेश—परशुराम—और पाराशररुषिबेगोराकी देखना चाहिये—जो—कामक्रोधरुप समुद्रमें डूबे हुवे थे, आपनेभी संन्यासाबनकर खूब लीला जाहिराकिइ—पहिले लंगोट बांधकर नंगे फिरे—पीछेसे—कलावतूनका चौगा—कोट—शालदुशाले—और—जूता पहनकर संन्यासधर्म पाला, सवारीपरचढ़े खजाना तरकिया—और—परमहंस परिव्राजकाचार्यभी बने—खूब किया. आपकी लीला भी कुछ कम नहीथी.

२७—सत्यार्थ० पृष्ठ ४४२ पंक्ति १० में—दयानंदजी कहते है

एककरोड साठलाखकलशोंमें मेरुपर्वतपर देवोंने महावीरतीर्थंकरको स्नानकराया यह असंभवबातहै (जवाब.) महाशय!-जिस-बातको दूसरे बुद्धिमान् असंभव नकहसके-वो-आपके कहनेसे असंभव नहीं होसकती. आप जो पक्षपातरूप अग्रिसें जलहुवे हृदयकी साक्षीदेगयेहो शिवाय आपके अनुयायीलोगोंके दूसरा कोई नहीं मानसकता, आगे त्या०पृष्ठ ४४२ पंक्ति ११ में-दयानंदजी लिखते हैंकि-दशार्णराजा महावीरके दर्शनको गया-वहां कुछ उसने अभिमानकिया-उसकेनिवारणकेलिये-१६, ७७, ७२, १६०००-सोलहअरब सतत्तरकरोड-बहत्तरलाख सोलहहजार इंद्रके स्वरूप-और उससेंभी ज्यादा इंद्राणी वहां आइथी. देखकर राजा आश्चर्यहोगये, अब विचारनाचाहियेकि-इंद्र और इंद्राणीयोंके खडेरहनेकेलिये ऐसे ऐसे कितनेही भूगोल चाहिये? (जवाब.)-यह लिखना दयानंदजीका बिल्कुल गलतहै, आवश्यकसूत्रकीटीकामें दशार्णराजाका जहां बयानहै वहां ऐसापाठहैकि तद्गर्वखवतां नेतुं-स्वसैन्यैच्छादितांबरः-शक्रःस्वर्गादवातारीदारु-ह्यैरावणं गजं ८ तस्यास्यानि विकुर्व्याष्टौ-प्रत्यास्यं दशनाष्टकं-दंते-दंतेष्टपापीश्च-प्रतिशप्यष्टपञ्चिकां ९ पञ्चपञ्चेष्टपञ्चाणि-पञ्चपञ्चेतथैकके-द्वात्रिंशत्पात्रयुक्तानि-नाटकान्यभूतानिसः-१० तदानीमाययौ शक्रो-दशार्णद्विरदोपरि-श्रीमद्वीरगुणग्रामस्फीतगीतवशांतरः ११ (अर्थः) दशार्णराजाका गर्व नीचाकरनेके लिये इंद्र ऐरावण हाथीपर बैठकर स्वर्गस आया-उसहार्थीके आठ शूद्रथी-एकशूद्रपर आठआठदांत, और एकएकदांतपर आठआठ बावड़ीका आकार बनाया. बावड़ी बावड़ीपर आठआठ कमल-एकएककमलके आ-



ठआठपत्ते-और-उनपत्तोंपर देवशक्तिसँ बत्तीमतरहके नाठकोंकी रचना इंद्रनेकिई, सबबकि-देवोंकी ताकत मनुष्योंसँबढ़कर होती है. बस! इसजलसँकों देखकर दशार्णराजा गर्वरहितहुवा और सौचनेलगा मेरीरुद्धितो कुछभी चीजनही. देखिये! इसबातकों दयानंदजीने कितनी बढ़ाई! कौन कहताहै सोलहअरब इंद्र और उससँ ज्यादा इंद्राणी वहां आइथी! जिमसँ उनकों खडेरहनेकेलिये जगहभी नमिले! दयानंदजीतो देहांतहोगये-अगर कोईआर्यसमाजी जैनशास्त्रके प्रमाणसँ अबभी सबूतकरना चाहे तो लिखकर जाहिर करे. सब जूठ आपही दिखजायगा.

२८-सत्यार्थ पृष्ठ ४४२ पंक्ति १६ में दयानंदजी लिखते है जैनके श्राद्ध दिनकृत्यमें लिखाहै वावडी कुवा और तालाव न बनवानाचाहिये. (जवाब,) सौचना चाहियेकि-जिसधर्ममें करुणा ही प्रधानहो उसके प्रवर्तक उसकी मनादी क्यों फरमावे? जैन-श्वेतांबरमंदिर जो इसवख्त भारतमें (३६०००) मौजूदहै तो उनकेलिये कुवे और बागभी हजारोंहीहोंगे. बड़ेबड़ेशहरोंमें कइ जगह जैनश्रीमंतलोगोंके बागबगीचे बनेहुवे विद्यमानहै. अगर इस बातकों बुरीममझते तो उनमे यहरसम कैसे पाइ जाती!-हां! अनार्यकर्म के लिये कारखानाखोलना-और-उसके लिये कुवावावाडीतालावबनाकर उसमें पुन्य मानना-जैनलोग-नही फरमाते. श्राद्धदिनकृत्यमेंभी इसीमतलबसँ मनादी है, दयानंदजी लिखते है एक नंदनमणिकारने वावडी बनवाइथी उससँ धर्मभ्रष्टहोकर सोलहमहारागहुवे-और-मरकर उसीमें मेंढक होगया जैनलोग मानते है. (जवाब.) नंदनमणिकारने धर्मकीपुष्टिकेलिये वावडी नही ब-

नबाइथी इसीलिये वह धर्मभ्रष्ट हुवा. सौचो ! धर्मकेलिये बनबा-  
ता तो धर्मभ्रष्ट क्यों कहा जाता ! और उसकेमरते वख्तभी उसका  
इरादा अच्छारहता तो वह मेंढक क्यों बनता ? यह सबशास्त्रका-  
रोंको मंजूरहैकि-जिमचीजमें जीवकों मोहममत्व उपादे रहजाय  
अगले जन्ममें वह उसीमें उत्पन्नहोजायगा. इसमें जैनोंने क्या बु-  
राकहा ? और दयानंदजी क्यों नाराज हुवे ?

२९-सत्यार्थ पृष्ठ ४४२ पंक्ति ३१ में दयानंदजी लिखते है  
जैनकेश्राद्धदिनकृत्यग्रंथमें लिखाहै मृतकवस्त्र साधु लेलेवे देखिये!  
इनके साधुभी महाब्राह्मणके समान होगये, वस्त्रतो साधु लेवे प-  
रंतु मृतकके आभूषण कौन लेवे ? बहुमूल्यहोनेसे घरमें रखलेते  
हीमें तो आप कौनहुवे ? (जवाब.) यह लेख दयानंदजीकी अ-  
ज्ञानतका सूचकहै. अमलमें बातयहथीकि-जबकभी साधुम दा-  
यमेंसे कोई साधु-मृत्यु होजाय-तब उसके पहिनेहुवेकपडे तो ज-  
लाहीदियेजायगें, लेकिन ! जो उसके बचे दूसरे हुवे वस्त्र-कमल  
बगेरा रहते है उसको दूसरासाधु लेकर अपने काममें लालेवे, इ-  
सपर दयानंदजी फरमाते है मृतकके वस्त्रतो साधु लेव-परंतु आ-  
भूषण कौन लेवे ? महाशय ! यह अर्थ आपने कहासे निकाला ?-  
जैनकेसाधुओंके गहनेआभूषण पहिलेहीसें नही होते, ऐसी मि-  
थ्यातर्ककरना कौनसी बुद्धिमानीका काम था ? सत्यार्थ पृष्ठ ४४३  
पंक्ति १ में दयानंदजी रत्नसारग्रंथका प्रमाणदेकर बताते हैकि-  
जैनलोग-भूंजने-कूटने-पीसने-अन्नपकानेआदिमें पापहोनामानतेहै  
अब देखिये ! इनकी विद्या हीनता-भला ! ये कर्म नकियेजाय तो  
मनुष्यादि प्राणी कैसे जीसकें ?-और जैनीलोगभी पीडितहोकर

मरजाय—( जवाब. ) अगर इनकामोमें पाप नहीं थातो धर्मशास्त्रोंमें पर्वतिथीके रौज येकाम बंदरखने क्यों फरमाये?—इससें सबूतहुवा कि—भट्ठी—चूल—चक्की वगैरा जितनीतरहके संचे—हैं उनके चलानेमें पाप जरूर होताहै, लेकिन ! गृहस्थोंकों इनके चलाये बिदून काम नहीं चलता—इसलिये फरमायागयाकि—हरहमेश बंदरखना नबने तो पर्वकेरौज जरूर बंदरखेकरो. पकायेहुवे भोजनमेसें दशांशखो-दशांशभी सुपात्रदानमें दियाकरो, दीनप्राणीयोकों अनुकंपालाकर दियाकरो, कहिये ! विद्याहीनता आपकीहै या जैनोंका ?—कौन कहताहैकि—देहरक्षाकेलिये खंडनपेषनआदि—न करना ? रत्नसारमें मना फरमायी सो पर्वकेलिये है. जितने हिंसादिककर्म फिजू-लके है जैन उन्हींकों नकरना वयान करतेहै. यह आपकी बुद्धि-काही अंधरेहीक—ग्रंथकर्त्ताके अभिप्रायकों नबुझकर वृथाकागज काले करगये.

३०—दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४४३ पंक्ति ८में लिखते है—ए-कदिन जैनका एकलब्धि साधु भूलसें वेइयाकेघरमें चलागया, आर धर्मसें भिक्षा मांगी, वेइया बोलीकि—यहां धर्मका काम नहीं. किंतु अर्थका कामहै तब उसलब्धिसाधुने साढेबारहलाख अशर्फी उसके घरमें वर्षा दी. इसवातकों विनानष्ट बुद्धिके कौन मानेगा ? ( जवाब. ) जिस जैनसाधुनै अशर्फीयें बर्साइथी उसकानाम नंदा-पेणमुनि था. और उनकों ऐसीचमत्कारी लब्धि सिद्धथी जिससें वे अशर्फीयां बर्सासकते थे. आजकलके जमानेमेंभी कईसाधुलोग तथा—गृहस्थ ऐसे मौजूदहै जो शरीरकीतलाशीदेकर विद्याबलसें मणोंबंद मिठाइवगैरा मंगासकते है. फिर अच्छेजमानेमें बढेबढे

लब्धिधारी साधुलोग क्यों न अशर्फी बर्सा सकतेहोंगे? अनुमान प्रमाणसेंभी सबूत होसकताहैकि बात सत्यहै, अगर कहाजायकि फिर बें भिक्षा क्यों मागते थे?—(जवाब.) भिक्षामागना साधुलोगोंका मुख्यधर्म है. दूसरोंकी महत्वता सुनकर रंज उठाना ठीक नहीं. यह अपने अपने भाग्यकी बात है. अशर्फीबर्साना क्या! सिद्धसेन दिवाकरकि—जिनोंने मंत्रशक्तिसें उज्जेननगरमें शिवलिंग तोड़कर उसमेंसें जैनमूर्त्ति निकाली थी क्या! यह दयानंदजीने नहीं सुना होगा? उज्जेनमें महाकालकामंदिर मशहूर है मारवाड़में नाडोलनाडलाइगांवमें जाकर देखो तो मंत्रशक्तिसें उडालाये हुवे कई मंदिर मौजूदहै. इत्यादि प्रमाणोंसें मंत्र और विद्याओंकी शक्ति जूठीनही कही जासकती. दयानंदजीकहते हैकि—इसबातकों विज्ञानवृद्धिके कौन मानेगा?—लेकिन! असलमें तो नष्टवृद्धि उन्ही की होगइथी जो निराकार इश्वरसें साकरजगत्की पैदाश फरमा गये—प्रलयकेसमय वेद इश्वरमें लीनहोजायें—और जब दयानंदजीका निराकार इश्वर दूसरी सृष्टि बनायगा—उसकी आज्ञास रुचिलोग तप करेंगे तब फिर वेदोंकों बें लोग पायेंगे. एसी असंभ बातें माननाही नष्टवृद्धियोंका काम है,—

३१—सत्यार्थ पृष्ठ ४४३ पंक्ति १२ में दयानंदजी—रत्नसार भाग पृष्ठ (५७) का—नाम लेकर लिखते हैकि—जैनोकी—एकपाषाण की मूर्त्ति घोड़ेपर चढ़ीहुइ उसका जहां स्मर्णकरे वहां उपस्थित होकर रक्षाकरती है, कहा जैनीजी! आजकल तुम्हारे यहां चोरी डाकाआदि—और शत्रुसें भयहोनाही है तब तुम उसकास्मर्णकरके अपनी रक्षा क्यों नही करा लेतेहो? क्यों जहांतहां पुलिसआदि

राज्यस्थानोंमें मारेमारे फिरतेहो ? ( जवाब. ) जैनोंका कोईदेव घोंडेपर चढाहुवानही होता. वे-निर्मोही अर्हन्देवकों मानते है. कोई जैनशास्त्रमें नहीलिखाकि-जैनोंकादेव-घोंडेपरसवाररहताहै. दयानंदजी सच्चे थे तो नामबतलाजाते. लेकिन ! बतलावे क्या ?-जिसबातपर अपनेही दिलमें धोखाहो उसकों शिवाय गोलमोल के दूसरीतरह कैसे लिख सके ? जैनलोग अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्मकों प्रधानमानते है. और अर्हन्देव जो सर्वज्ञ हुवे है उनके कहे हुवे मार्गकों अनुसरते है. निर्मोहीका ध्यानकरनेसे उनमें जो स्वतः निर्मोहता पैदा होती है वही उन्होंकों पापकर्मसे बचाती है. जैनलोग ऐसे बाहियातदेवका स्मर्ण क्यों करेगें ?-यहतो आपलोंगोंकीडो कमजोरी हैकि-इश्वरकों जगतकाकर्त्ताहर्त्ता सर्वशक्तिमान् मानकरभी कचहरीमें पुलिसके धक्के खाते फिरतेहो, उसका स्मर्ण क्यों नहीकरलेते ? क्या अब वो आपलोंगोंका पालनकरनेमें कायरहोगयाहै, ? बनानेकी ताकत रखना-और-पालन करनेमें मौन होजाना-क्या ! सर्वशक्तिमानकों लाजिमथा ?

३२-सत्यार्थ पृष्ठ ४५७ पंक्ति ६ में-दयानंदजीलिखते है-जैनोम-"जल छानकर पानी-सूक्ष्मजीवोंपर नाममात्र दयाकरना-और रात्रीभोजननकरना-येतीनबातें अच्छा है, बाकी जितना इनका कथनहै सब असंभवग्रस्तहै." (जवाब.)-तीनबातेंभी क्यों अच्छी कहनाथा ?-सभी असंभवग्रस्त कहदेतेतो कोईहर्ज नहीथा. क्याकि-सत्यार्थप्रकाशमें-जहां भारतकेसभीधर्मकी नींदा किइ वहाँ जैनकी बुराइभी नकरतेतो पक्षपाती समझे जाते, असंभवग्रस्त जैनमतहै-या-वैदिकमत ?-जरा अगाडी चलकर इसलेखकों पुरा

पढलो-स्वतः मालूम होजायगा,-

- वेदैःपुराणैःस्मृतिभिश्चयेषां-मनांसि नित्यं परिगर्वितानि,  
 पृच्छामि संदेहपदानि तेषां-समीपतः शास्त्रविरोधभांजि. १  
 ब्रह्मापि पुत्रीमवसंवदात्मा-वृद्धोपि किं स्वांचकृमे न मोहात्,  
 पीनस्तनीभिःसहगोपिकाभि-र्लक्ष्मीपतिःसोपि चिरं चिखेल. २  
 सनीलकंठ स्त्रिपुरस्य दाहं-कोपाद्वितेने गगनस्थितस्य,  
 पूषांधकादींश्च मृधे जघान-मुक्तिप्रदः स्यात्कतमस्त्वमीषु. ३

वेदपुराण और स्मृतियोंके कथनसें जिनका दिल घमंडमें आगयाहो-उनकों कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो दरयाफक्त करने योग्यहैं, देखो! ब्रह्माने विकारवालाहोकर अपनी पुत्रीकों कुटाष्टिसें देखा, सवाल पैदाहोताहै क्या! ब्रह्मा जैसे लाइकवरम-हात्माकों ऐसा कर्तव्यकरना योग्य था? वैदिकलोग इसकों छि-पानेके लिये ऐसा अर्थ भी करते हैंकि-प्रजापति नाम सूर्यका और उसकी बेटी उषाहै, वेदोंमें जहां कहाहैकि प्रजापति अपनी बे-टीसें फसा मतलब इतनाही समजो सूर्य उषाके पीछे चलता है, लेकिन! यह अर्थ सच्चा नही-विद्वानोंकी सभामें यह झूठ नही पसार होसकता, इधर कृष्णजीकी लीला देखोतो उनकेग्रंथोंमें साफ बयान हैकि-गोकुलगांवकी गोपियोंके अधरामृतसें-उनके उत्तंगस्तनकल-शोंके आलिंगन करनेसें-और उनके साथ कामक्रीडाकरनेसें कृ-ष्णजीका मन अतिहर्षित होताथा. इधर शिवका वयान सुनो तो उन्होंने राक्षसोंके तीननगर जो आकाशमें थे गुस्सेमें आनकर ज-लादिये. और पूषांधकबगेराकों लडाइमें मारडाले-फिर यहभी लिखाकि-शिवकालिंग-अत्रिरुषिके शापसें टूट पडा, रामचंद्रजी

जबकि-उनकी सीता रावण लेगयाथा दिलखोलकर रोये, कसिये! वैदिकमतवाले महाशयो!-यही आपके इश्वरावतारोंका कर्त्तव्य था!-बतला दो! इनमें मुक्तिदाता कौनको गिने!-अगर दयानंदजी कहदेवेकि-हम-अवतारोंको कब मानते थे?-(जवाब.) यही तो आपको खंफ थाकि-इनको मानेंगे तो पकड़े जायेंगे. दयानंदजी कइजगह लिखते है जैनोके तीर्थकर भूल गये मालूम हाते है. बतलाना चाहिये! वें-भूले थे-या-आपके ब्रह्मा विष्णुमहेश और रामावतार, तीर्थकर पूर्णज्ञाची निर्मोही थे-वें क्यों भूलने लगेथे?

३३-तपस्विशापात् न कथं विनष्टा-पूर्वद्वारिका यादवमंडितापि,

हरि र्भयमन्काननमध्यदेशे-बाणप्रहारान्नकथं विनष्टः ४

बड़े आश्चर्यकी बातहैकि-कृष्णावतार बैठेहुवेभी द्वारिकानगरी तपस्वीके शापसें जल उठी, क्या! आरोंकी तकलीफ मिटानेके लिये तो अवतार लेना और अपनी तकलीफको आप न मिटासकना-यहभी कोई प्रमाणयुक्त बातहै? अखीरमें द्वारिकासें भगकर वनमें गये-और वहां एकबाणके लगनेसें दुखितहोकर जलके प्यासेंही कालकरगये-बड़े अपशोषकी बातहैकि-एसे कमजोरोको स-र्वशाक्तमान्के अवतार मानेजाय !

चकर्त शीर्षस्वकरेण मातुः-निःक्षत्रियां यःपृथ्वांचकार,

स्नातिस्म तेषां हृशिरैस्त्रिकालं-सोप्युच्यतेन्यैर्मधुसूदनांशः ५

द्रोणो रणे पांडवकौरवाणां-द्विजोपि जज्ञे नयमावतारः

यत्सौप्तिके पर्वणि तस्मिन्सालः-सुतोपि चक्रे वचनातिगं तत् ६

पथुरामने अपनीमताका मस्तक अपने हाथोंसें छेदन किया जितनेक्षत्रिय थे उनको मारकर पृथ्वी-निःक्षत्रिया किइ, और उ-

नकेलोहीसें दिनमे तीनतीन दफा स्नान किया. बड़ी हंसीकीबात हैकि-ऐसे निर्दयोंकोभी इश्वरातार कहे जाय! इधर द्रोणाचार्य ब्राह्मणहोकर कौरवपांडवोंके संग्राममें युद्धकरके यमावतार बने.

पाराशरः कामवशन्नकन्यां-दिवा निपेवे यमुनाजलस्यः,

व्यामस्तु बंधोर्दयिताद्वयस्य-वैधव्यविध्वंसकरो न जज्ञे. ७

भार्याप्यहिल्या किल गौतमस्य-क्रुद्धस्य शापेन शिलाबभूव,

नीतो वशिष्टेन रुपाभिश्म-श्रृंङ्खलतां भूमिपति स्त्रिशंकुः ८

पाराशररुषिने यमनानदीमें धीवरकी कवारीकन्यासें भोग किया. इधर व्यासजीनें अपनेभ्राताओंकी स्त्रियोंका वैधव्यविध्वंस कराया-देखिये! यह वैदिकरुषियोंके कर्त्तव्यहै. गौतमरुषिके शा-पसें उनकी अहिल्यास्त्री शिला बनगइ, कितनेककहते है इंद्र नाम सूर्यका और-अहिल्या नाम रात्रीका-जहां इंद्रने अहिल्याको ख-राबकिया लिखा-मतलब इतनाही समझोकि-सूर्यसें रात्रीकी ख-राबी होती है, ऐसे मनकल्पित अर्थ बनाकर दूसरोंकी तर्कतापसें बचजाना-यह मिथ्याबात कहांतक चलसकेगी?-कहिये? ऐसी अघटितबाते वैदिकअवनार और रुषियोंकी है-या-जैनोंके तीर्थ-कर और मुनियोंकी?-दयानंदजी कहजगदलिखत है जैनलंगवडे पक्षपाती होत है, लेकिन! खयाल करके निम्नलिखित वचनोंको देखिये! मालूम होजायगा पक्षपाती कौनहै?—

५-~~५~~ पक्षपातो न मे वीर!-नद्वेषः कपिलादिषु,

युक्तिमद्बचनं यस्य-तस्य कार्यः परिग्रहः ९

भवबीजांकूरजनना-रागाद्याः क्षयमुपगता यस्य,

ब्रह्मा वा विष्णुर्वा-हरो जिनो वा नमस्तस्मै. १०



जैनोंका कहना है कि—हमको महावीरवगेरा तीर्थकरोका पक्ष नहीं—इधर कणादवगेरा मतानुयायीयोसे द्वेष नहीं, जिसके युक्ति प्रमाणसहित वचन है उनको मनन करनेवाले हमहै. (९) जिसजि सपुरुषके रागद्वेषवगेरादोष दूरहोगयेहो—चाहे वह ब्रह्माहो—विष्णु शिव-या-जिन कोइहो उनको हमारा नमस्कारहै. कहिये ! जैनों-को पक्षहोतातो ऐसीबात क्यों फरमाते ? औरभी सुनिये !

प्रत्यक्षतो न भगवानृषभो न विष्णु-रालोक्यते न च हरो न हिरण्यगर्भः  
तेषां स्वरूपगुणमागमसंप्रभावात्-ज्ञात्वा विचारयथकोत्र परापवादः ११

नास्माकं सुगतः पिता न रिपवस्तीर्या धनं नैव तै,  
देतं नैव तथा जिनेन न हृतं किंचित् कणादादिभिः,  
किं त्वेकांतजगद्धितः स भगवान् वीरो यतश्चामलं,  
वाक्यं सर्वमलापहर्तृ च यतस्तत्राक्तिमंतो वयं. १२

जैनोंका साफ कहना है कि—प्रत्यक्षमें तो न रूपभदेव मौजूद है—न ब्रह्माविष्णुमहेश है. हां ! उनके कथन किये हुवे आगमवचनोंसे उनके गुण और स्वरूपकी तहकीकात करनी चाहिये कि—कौन तो इनमें सर्वज्ञ और—कौन असर्वज्ञ थे ?—कहिये ! यह जैनोंकी कैसी निष्पक्षपात बात है ? फिर वें बयानकरते हैं कि—बौधलोग हमारे पिता नहीं, सांख्य हमारे वैरी नहीं जिनेन्द्रोंने अशर्फीयें नहीं दीइ, कणादवगेरा मतवालोंने कुछ हमारा चोराया नहीं. हमतो जो सर्वज्ञपरमात्मा सच्चे उपदेशक होगये—उनके ग्राही है, बतला दो ! इसमें जैनोंने कौनसी पक्षपातकी बात फरमायी ?—

न सर्वज्ञा न नीरागाः—शंकरब्रह्मविश्वः,

प्राकृतेभ्यो मनुष्येभ्यो—प्यसमंजसवृत्तितः

रामादिदोषजनकानि वचांसिविष्णो-

रुन्मत्तचेष्टितकराणि च यानि शंभोः

निःशेषरोषशमनानि मुनेस्तुसम्यग्-

वदध्वमर्हति तु को नु विचारयध्वं, १४

दुर्योधनादि कुलनाशकरो बभूव-

विष्णुर्हर स्त्रिपुरदाहकरः किलासीत्,

क्रोचं गुहोपि दृढशक्तिहरं चकार-

वीरस्तु केवल जगद्वित सर्वकारी, १५

शक्रं वज्रधरं बलं हलधरं विष्णुं च चक्रायुधं,

स्कंदं शक्तिधरं श्मशाननिलयं रुद्रं त्रिशूलायुधं,

एतान् दोषभर्यादितान् गतघृणान् बालान् विचित्रायुधान्

नानाप्राणिषु चोद्यतप्रहरणान् कस्तान् नमः स्यात् बुधः १६

न यः शूलं धत्ते न च युवतिमके समदनां,

न शक्तिं चक्रं वा न हलमुशलाद्यायुधधरं,

विनिर्मुक्तं क्लेशैः परिहितविधाबुद्यतधियं,

शरण्यं भूतानां तमृषिमुपयातोस्मि शरणं. १७

ब्रह्मा लूनशिरा हरिर्हृदि सरूक् व्यालुप्तशिश्नो हरः

मूर्योप्युल्लखितो न लोप्यखिलभुक् सोमः कलंकांकितः,

स्वर्नाथोपि विसंस्थुलः खलुवपुः संस्थैरूपस्थैः कृतः,

सन्मार्गस्लनाद् भवंति विपदः पायः प्रभूणामपि. १८

ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादि-रागाद्यंककलंकिताः,

निग्रहानुगहापरा-स्ते देवाः स्फुर्न मुक्तये. १९

परिग्रहारं भग्नं-स्तारयेयुः कथं परान्,

स्वयं दरिद्रो न परान-ईश्वरीकर्तुमीश्वरः २०

नाट्यादिहाससंयुक्ता दुःपल्लवसंस्थुलाः

लंभयेयुः पदं शांतं-प्रज्ञान प्राणिनः कथं. २१

नशूलं नचापं नचक्रादिहस्ते-नहास्यं नलास्यं नगीतादि यस्य,  
ननेत्रे नगात्रे नवक्त्रे विकारः-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेन्द्रः २२

नगौरी नगंगा नलक्ष्मीर्यदीयं-वपूर्वा शिरो वाप्युरोवा जगाहे,  
यमिच्छाविमुक्तं शिवश्रीस्तु भजे-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेन्द्रः २३

नभोगा नरोगा नचोद्वेगवेगा-स्थितिर्नो गतिर्नो नमृत्युर्न जन्म,  
नपुण्यं नपापं नयस्य-स्तिबंधः-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेन्द्रः २४

कोपे सति स्यात्कुतएव मुक्तिः-कामेथवा तत्प्रतिबंध एव,  
रागेपि च स्यान्नफले विशेषः-तस्मान्नचैतं हृदयेवधार्याः २५

इमां समक्षं प्रतिपक्षसाक्षिणा-पुदारघोषामवघोषणां ब्रुवे,  
नवीतरागादपरोस्ति दैवतं-नवाप्यनेकांतमृते नयस्थितिः २६

कोपेन कश्चिन्मदनेन कश्चिद्-रागेण कश्चिच्च परितदेहः  
विहाय सर्वांश्च विमुक्तिहेतोः-श्रीवीतरागं शरणं विधेहि. २७

३६-ब्रह्माविष्णुमहेश-प्राकृतमनुष्योंसें भाँ वेसमक्षप्रवृत्तिवाले होनेसें नहीकहाजानाकि-सर्वज्ञ-या-निर्मोही थे. विष्णुके वचन रागपैदाकरनेवाले सबूत होते हैं, दुर्योधनके कुलका नाशकरानेमें आप सामीलथे. इधर शिवकों देखोतो स्त्रीकों गोंदमें लिये बैठेहैं, इंद्र-बलभद्र-और स्कंद तरहतरहके विकारोंसें ग्रस्तहैं, ब्रह्माका म-स्तक नमालूम क्यों छेदनहोगयाथा ? सूर्यचंद्रऔर अश्विगेरा-जो -वेदमंत्रोंकरके पूज्य फरमायेजातेहैं तरहतरहके दोषोंसें दोषितहैं, कहिये ! किसकों मुक्तिके अधिकारी समझे ?-न्याय-सच्चासच्चाब-

यान फरमाताहैकि-जिमकेपास स्त्रीऔर हथियारहोंगे वह जरूर कामीक्रोधी होगा. अगर कोपकरनेसे-कामभोग सेवनसे-और-राग बढ़ानेसे मुक्तिहोताहो-तो-सारामंसार मुक्त होजाता, इत्यादि प्रमाणोंसे सबूतपायाजाताहैकि-जिमने कामक्रोधादिशत्रुकों हरा दियेहो वही मुक्तिका अधिकारीहै मुक्तिहुवेबाद फिर संसारमें नही गिरता. उपरलिखेहुवे काव्योमें जोकुच्छ निष्पक्षपात बयान दिया है कोई शरूश प्रमाणसहित तोडनाचाहे तो तोडे; कितनेकलोग व्याकरण और तर्कशास्त्रकी विद्वत्ताका घमंडलाकर बेंमतलब लंबा चोडालिखाणकरडालतेहैं वैसेकरनाहोतो वैसा मसालाभी मौजूद ,लेकिन! तत्ववातसें लडनाचाहिये. जैसे मुसाफिर सर्पऔर कां-टेवाले रास्तेको छोडकर चलताहै मुक्तहोनेकी इच्छावाला कुदे-बादिकंटकसर्पको छोडकर चलेतो उसको कौन बुराकहसक्ताहै?—निदान! जैनोंके कोई कायदे ऐसेनही जिसपर दोष आसके, उनको असंभवग्रस्तकहना किसीमुरतपर नहीबनसक्ता.

३७-सत्यार्थपृष्ठ४४१ पंक्ति११में विवेकसारग्रंथका पृष्ठ(५५) का-नामलेकर दयानंदजीलिखतेहै गंगादितीर्थ-और-काशीआदि क्षेत्रोंके सेवनेसें कुछभीपरमार्थ सिद्धनहीहोता ऐमाजैनलोगमानतेह और अपने गिरनार शत्रुंजय और आवुआदितीर्थक्षेत्रमुक्ति पर्यंतकेदेनेवालंबतलातेहैं विचारनाचाहियेकि-जैसे शैववैष्णवादि केतीथे जडस्वरूपहै वैसे जैनियोंकेभीहै,इनमेंसें एककीनींदा और दूसरेकी स्तुतिकरना मूर्खताका कामहै या-नही? (जवाब.)-जन लोग युक्तिप्रमाणसें सबूतकरदेतेहैकि-स्त्री और हथियाररखनेवाले देव मुक्तिके अधिकारीनही गंगातीर्थ-और-काशीक्षेत्रमें अगर स्त्री

शास्त्रसे रहित-त्यागीदेवकी मूर्ति विराजित होती तो उसको जरूर तीर्थ समझ सकते, साफ साफ बयान है कि-जहां जहां स्त्री शस्त्र रहित देव मूर्ति होगी उसीको तीर्थ समझा जायगा. तीर्थनाम भी उतीका है जहां जाकर मनुष्य का दिल धर्म पर रजु हो. कृष्णजी और रामचंद्रजी एक प्रभावशाली राजे थे, उनको मुक्ति हुवे मानना वैदिक लोगों के निश्चयकी बात है, ब्रह्मा और शिव-रिषि-और विद्याधर थे, इनको मुक्ति हुवे मानना उनके भक्तों के निश्चयकी बात है, युक्ति प्रमाण से और उनके आचरण से पाया जाता है वे-मर्वज्ञ-या-निर्मोही नहीं थे, इसा मसीह का यहूद देश में संवत् (५७) विक्रमी के-असे पैदा होना-लोगों को उपदेश करना-और शूली पर चढ़ना इतिहासकी बात है. लेकिन ! ईश्वर-या-ईश्वर का पुत्र होना-और-सारे संसार को प्राणशरण होना इसाई यों के निश्चयकी बात है. मुसलमानों के पेगंबर महम्मद साहब का म-के में सन (५६९) इस्वी के दर्मियान पैदा होना, मत फैलाने के लिये लड़ाई करना और फिर मदीने में जाकर परलोक सिधारना, इतिहासकी बात है, लेकिन ! ईश्वर का दूत होना और मुसलमानों को स्वर्ग देना, मुसलमानों के निश्चयकी बात है, गंगा और काशी में जहां जहां वैदिक लोग तीर्थ मानते हैं वहां त्यागी देवों की मूर्ति न होने से वे पारमार्थिक तीर्थ नहीं समझे जाते. शत्रुंजय गिर नार आबू गेरामें त्यागी देवों की मूर्ति होने से वे-पारमार्थिक तीर्थ समझे जाते हैं. कहिये ! इसमें जैनो ने नींदास्तुति किसकी कि ? अगर जड़ का सत्त्वार नामंजूर था तो-आपके \* मरे बाद आपके जड़ शरीर को-समाजी लोगों ने दण्ड दन-दसमण आम्र काष्ठ-चारमण पृत-पांचशैर कपूर-अढाई सेर बा-

\* संवत् ( १४८० ) दीपमाल के रौज अजमेर में दयानंदजी का देहांत हुआ.

लछड-आधाशैर केशर-और-दोतोलेकस्तूरके साथ-क्योंदग्धकि-  
या ?-क्या ! आपकाशरीर चैतन्ययुक्त था ?-महाशय ! जडवस्तुका  
सत्कार आप क्या ! आपके पुरुषोंने और चेलोंनेकिया-और-कर  
तेहै, यहसत्कार किससे छूटाहै, यहआपलोगोंकी जीदहैकि-मूर्त्तिके  
बारेमें नाराजीलातेहो, हमारा एकशरूश शहरअजमेरमेबास्ते इम्ति  
हानपिडलदेनेकोंगयाथा, इंतफाकसें आर्यममाजीयोंकी यज्ञशालामें  
जापहुंचा, वहां एक महाशयने पुछाकि-आप कहांसे आये ? उ-  
सनेकहा मैं जिलाउज्जैनसें आयाहूं, सुनकर खुशहुवे, औरकहनेलगे  
निहायतखुशीकीबातहैआपयहां तशरीफ लाये, आज होंमपुराहो  
गया आपदेरसें आये, बारहबजे होम शुरुहोताहै और तीनबजे स-  
माप्तहोजाताहै, खेर ! चलिये ! हवनकुंड देखिये ! क्या अच्छा वेद-  
सुसार बनायागयाहै, बाददेखनेके मुकाममजलिसमें गयेतो वहां  
फरमानेलेगे देखिये ! यह हमारे स्वामीदयानंदजीकी मूर्त्तिहै, इस-  
परदेखनेवालेने दो सवालकिये, अवलतो ! आपने इसमूर्त्तिकों क्यों  
लटकाइ ? जबकि-आपने मूर्त्ति मानना फिजूल समझाहै, दोयम-  
यज्ञ-या-होमकरनेसें क्याफायदा पहुंचाताहै, उमदाचीजें जलाकर  
खाखकरदेना-शिवाय नुष्कसानके औरकोइदूसरीसुरतनही. अगर  
वही सामान गरीबगुरबोंकों खानेकेलिये दियाजातातो अलबते  
फायदाथा. देवपूजनतीर्थयात्रा और मंदिरमूर्त्तिकों तो फिजूलस-  
मझना और यज्ञशालाबनाकर हजारेरुपये होमकेजरीये खाखकर  
देना कौनसे फायदेकीसुरतथी ? क्या निराकारइश्वर उनचीजोंकों  
खाताहै ? दूसरीबातयहहैकि-जब मूर्त्तिकोंबाहियातसमझतेहो तो  
स्वामीदयानंदजीकी मूर्त्तिभी बाहियात क्यों नही ? बाहियातची-

जकों मकानमें लटकाना कौनसीबुद्धिमानीकाकामहै? साफसाफ जाहिरहोताहैकि-बंगरमूर्ति माने किसीकाकामनहीचलसकता, मंदिरउडाकरयज्ञशाला बनाइ, किसीने पथरकी मूर्तिमानी; आप लोगोनेकागजपर कायमरखी, किसीनेनैवेद्यलगाया-आपने हवन किया, बातएकहीहै, सुनकर कुच्छभीजवाब नहीदिया, और कहने लगे वरुतथोडाहगया-मुजे कामजरूरीपरजानाहै, फिर बातकरंगा अगरकोइ आर्यसमाजमहाशय होंमकरने-और-स्वामीदयानंद जीकीमूर्तिमाननेमें कुछ फायदासबूतकरसकतेहोतो बजरीये अखबारजाहिरकरे, मैंउसपरकुच्छलिखुंगा,

३८-सत्यार्थपृष्ठ४४१पंक्ति२५में-दयानंदजी लिखतेहैजैसे अन्यमतमें-वैकुण्ठ कैलाश गोलोक श्रीपुरआदि-पुराणी-तथा चौथे आसमानमें इसाइ-सातमें आसमानमें मुसल्मानोंकेमतमें मुक्तिके स्थानलिखेहै वैसेही जैनियोंकी सिद्धशिला और शिवपुरहै. जिस-कों जैनीलोग ऊंचा मानतेहै वही अमरिकावाले नींचा मानतेहै. यानी जैनोंकी सिद्धशिला भूगोलके नीचे होनीचाहिये, मुक्तिमेंसे पीछा नआनेसे सबूतहोताहैकि-उनकों वहां प्रीति और बहार आनेमें अप्रीतिहोतोहोगी, फिर वहमुक्तिकाहेकी संसारहोगया. (जवाब.)-दयानंदजी कहतेहै जैनोंका मुक्तिस्थान भूगोलकेनीचे समझनाचाहिये-यहउनकी अज्ञानताका नमुनाहै, वेदोंमेंतो किसी जगह पृथ्वी गोलबयाननहीकिइ, पृथ्वीसपाटहै, गोलाके आकारहोना-फिरना-और-उसके नींचे आबादीहोना-युक्तिप्रमाणसे \*सबूतनहीहोता, दयानंदजी कहतेहै हमारी मुक्ति सर्वव्यापीहै-

[illegible]



यानंदीयोंकी मुक्ति क्याहुइ ! मसलनजैसे औरतका पीहरहोमया,  
जब मनचाहाचलीगइ-पतियाद आया सासरे लोटआइ.

४०-महाशय !-जैनोंकीमुक्तिकाहाल जोकुच्छहै इसकाव्यसें  
मुनलिजिये !

नासंताभावरूपा नचजडिममयी व्योमबद्ध्यापिनी नो,

न व्यावृत्ति दधाना विषयसुखघना नेक्षते सर्वविधिः

सद्रूपात्मप्रसादा दृग्वगमगुणौघेन संसारसारा,

निःसीमात्यक्षसौख्योदयवसातिरनिःपातिनी मुक्तिरुक्ता, ?

( अर्थः )-कितनेकमतावलंबी असंतअभावरूप मुक्ति मा-  
नतेहै.जैसे बौध्लोगोंकी मुक्ति,कितनेक मतधारी मुक्तिमें जडहोजा  
ना मानतेहै,जैसे नैयायिक और वैशेषिकोंकी मुक्ति,कितनेक आ-  
काशकीतरह सर्वव्यापी और कितनेकलोग मुक्तिसें पीछालोट  
आना मानतेहै,जैसे आजीविकमतवालोंकी मुक्ति,दयानंदजी इसी  
के अनुगायीबनेहै,किसी वेदमें मुक्तिसें लोटआना नहींलिखा,कि-  
तनेक फरमातेहै मुक्तिमें खानपान भोगविलास और महेलभीमि-  
लतेहै, जैसे यवनलोगोंकी मुक्ति, कितनेक मतवाले कहतेहै जी-  
वकी मुक्तिहोतीही नहीं. जैमनीयमतवाले इसीबातपर पाबंदहै,  
कितनेककहतेहै इश्वर-भक्तोंकीरक्षाकेलिये-अवतार लेतेहै, वैदिक  
मतवाले इसीपर आरुढ़है.दयानंदजीवैदिकमतकेही सन्यासी कह-  
लाते थे-लेकिन ! उनकोतों न्यारीखीचडी पकानाथा-वें-पुराणी  
सडकपर कैसेकदम रखे.जैनलोग ज्ञानमयमुक्ति मानतेहै, मुक्तहुवे  
बाद-(जैसे जलपर तुंबास्थितरहे वैसे)लोकाग्रभागमें-अशरीरीहो  
कर स्थितरहना मानतेहै, मुक्तिहुवेपीछे लोटआनाभी जैनलोग

नहीमानते, किंतु लोकाग्रमें आत्मिकसुखमें मग्न रहना मंजूर रखते हैं, वहां बने रहनेसे उनको राग होने का जो दयानंदजी दोष लगाते हैं यह गलत है, सब बकि—उनको राग होता तो मुक्ति हुवे कैसे समझे जाते?—बल्किन्! जन्ममरणसे रहित हुवे बाद उनका गमनागमन स्वतः बंद हो जाता है, जैसे बिना हवा—पानीमें—तरंग—न उठेगी.

४१—सत्यार्थ पृष्ठ ४२३ पंक्ति १७ में दयानंदजी लिखते हैं—जैनियों के आर्हत लोग देह के परिमाणसे जीव का भी परिमाण मानते हैं, उनसे पुछना चाहिये कि—जो ऐसा हो तो हार्थी का जीव कीड़ी में—और—कीड़ी का जीव हार्थी में कैसे समासकेगा?—(जवाब.)—जैसे दिया जमीन पर रखकर उस पर बड़ा बर्तन ढांक दो तो बड़े में—और—छोटा ढांक दो तो—छोटे में प्रकाशमान रहता है वैसे ही जीव छोटे या बड़े शरीर में प्रकाशमान रह सकता है, दयानंदजी कहते हैं जीव तो एक परमाणु में भी रह सकता है लेकिन! उसकी शक्तियां नाडी आदिके साथ संयुक्त होकर रहती हैं उनसे सब शरीर का वर्तमान जानता है, (जवाब.) जब नाडी के साथ उसकी शक्ति—संयुक्त—मानी तो वह एक ही बात होगी. शक्ति रूप गुण—जीवरूप गुणसे अलग होकर नहीं रह सकता. जहां जहां शक्ति है वहां वहां जीव है यह बात प्रमाणसे सबूत है, जीदी लोग जीद करे जिसका कोई क्या करे?

४२—सत्यार्थ पृष्ठ ४३० पंक्ति ११ में—दयानंदजी लिखत है कि—जैसे अन्य स्थानों में—चामुंडा—कालिका—जवालाप्रमुख के आगे दुर्गानवमी तिथि आदि पर्व बुरे हैं वैसे क्या! तुमारे पर्युषण आदि—व्रत बुरे नहीं हैं?—जिनसे महाकष्ट होता है. (जवाब.) दुर्गानवमी वगैरा पर्व—जैन लोग—इसलिये बुरे फरमाते हैं कि—उनमें पशुओं का बध

किया जाता है, जैनों के पयुर्षणपर्व इसलिये बुरे नहों पाए जायेंगे, ओंका वधनही किया जाता, बल्कि न! जीवोंकी रक्षापाइ.

कहिये ! इसमें दयानंदजीकों कष्ट क्या आनपडा ?—क्या पण्डितोंसे दुकाने खुली न रहनेसे खानपानकी चीजें नही मिलसकतीथी—इसलिये हिंसाकी पुष्टि करगये. फिर इसीपृष्ठपर पंक्ति १८ में दयानंदजी लिखते हैकि—वह ( तुमारी शासनदेवी )—राक्षसी और दुर्गाकालिकाको संगीबहन क्यों नहीं ? जिसने एकपुरुष और बकरेकी आंखे निहाल लिइयी. ( जवाब. )—जैनके आवश्यकसूत्रके प्रतिक्रमण अध्ययनकी टीकामें एककथा है वहां ऐसा लिखा कि—दशार्णपुरनगरमें एकगृहस्थ रहता था. वह खुद धर्मश्रद्धासे रहित और उसकी स्त्री—धर्मरक्ता थी. जिसमें वह रात्रीकों भोजनतक न खातीथी. इसबातपर उसका पति उसकी हंसाडिटाता था कि—रा भोजनमें बुराई क्या है ? स्त्रीने कहा बहुतबुराई है—पति बोला, अच्छा ! हमभी नियम लेलेयों, स्त्रीने कहा तोड दोगें ! पति—बोला ! कभी न तोडुगा. ऐसा कहकर कितनेकरौज तो नियम रखा, और फिर पिछा खानेलग गया स्त्रीने कहा देखो ! बुरा है, तोभी—न—माना जैनमें शासनदेवी उमकों बोलते है जो धर्मके नियमोंका भंगकरे उसे शिक्षा दे, उसनेभी चेताया कि—तू—नियमभंग मतकर, लेकिन उसने नही माना, शासनदेवीने उसकी आंखे \*पतनकरडाली. दूसरेदिन उसकी स्त्रीने शासनदेवीसे बहुतनम्रताकिइ—और—पति, कौंभी नियमपालनकेलिये सावधान किया. शासनदेवीने उससे

---

\* आवश्यकसूत्रटीकाका—पाठ, देवता तं ग्रहत्याय—हमगोलौ च व्यपातयत्,

नहीमानते, किंतु अपनी खता याद रखनेकेलिये असली आंखें वहां बनेरहने-लेकिन ! एकजगहपर कसाइलोगोंने एकबकरा जो यहगल्ले-हुवाथा उसकी आंखें लाकर उस व्रतभंगकरनेवालेके थठाइ, वह पूर्ववत् देखने तो लगा-लेकिन ! लोगोंमें उसकानाम ए-डकाक्ष जाहिरहुवा. और सबलोग कहनेलगे नियम तोडनेवालेका यह हालहै. कहिये ! दयानंदजी ! जैनकी शासनदेवीने इसमें क्या बुराकिया ? और भक्तोंसे कबकहाकि-तुम-मैरेलिये सांढबकरेभैसे मुधेवगेरा मारकर अर्पण करो ? बाततो क्या थी ? और दयानंद-जीने क्या बनाइ ?-दयानंदजीने शासनदेवीकों-काली-चामुंडावगे-राकी बहेनबनाना चाहा-लेकिन ! परिश्रम व्यर्थ गया, सबहैकि जूठोंकी जय नहीं. जिनकों उपरके लेखका शक होवे जैनागमआ-वश्यकसूत्रकी टीका अध्ययन प्रतिक्रमण देखलेवे, क्या ! दयानंद-जीकों लिखतेवख्त मानूमनही रहाकि-मैरी जाल प्रकटहो जायगी ! असलमें तो वैदिकमतके रिषिलोगही हिंसक थे-जिनोंने यज्ञकरनेका महाहिंसकमार्ग चलाया, और यज्ञोंका मांसप्रसाद खाया. कहिये ! भैरवके भाइ कौनबने ? जैन-या-वैदिक ? रामा-यणमें लिखाहैकि-वशिष्ठजीने विश्वामित्रकों उसकी सेनासमेत मांस खिलाया और-मदिरा पिलायी, भारद्वाजने भरतकों सेना-समेत मांसखिलाया, कहते हैं रामचंद्रजीनेभी-खाया. रामायणका बालकांड और अयोध्याकांड इसका गवाही है, इनबातोंसे पाया जाताहैकि-वैदिकमतवाले धर्मके रास्तेसे दूरहै, अगर कहाजायकि जैनके नेमनाथतीर्थकर जब विवाहनेकों गये थे स्त्रीके पक्षवालोंने मांसपकाया था फिर मांसका निषेध कैसे करसकतेहो ? (जवाब.)

एक नेमनाथ क्या जैनके कोईभी तीर्थकर या साधुने मांस नहीं खाया, जैनकेकानूनसे यह सबूतहोताहैकि-मांसमदिरा खानापिना धर्ममार्गनहीं. इसीलियेतो नेमनाथतीर्थकरने विवाह नहींकराया और पिछा लोट आये.

४३-सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३३ में दयानंदजी कल्पभाष्य पृष्ठ १६ का-नाम-लिखकर बताते हैं, जैनाचार्योंने छोटेसे पात्रमें ऊंट बुलाया, भला छोटेसे पात्रमें कभी ऊंट आसकताहै ? ( जवाब. )-कौन कहताहै कि-छोटेसे पात्रमें ऊंट बुलाया, कल्पभाष्यका प्रमाणदेते हैं तो उसके अक्षरेअक्षर क्यों नहीं लिखे ?-लिखे क्या ! जिनको भूटेलेखलिखकर दूसरेको कलंकदेनाही मंजूरहो खुलेखुला बयान कैसे देसके ?-असलमें म-जमूनतो यहथा और दयानंदजीने उल्टा किया, जैनके आवश-कमूत्रके प्रतिक्रमणअध्ययनकी टीकामें बयानहैकि-एकनगरमें एकमकानपर गुरुशिष्यवगेरा साधुलोग आनकर ठहरे, पीछाडी पे-शाबकरनेकी जो जगहथी-उसकी-देखभालरखनेकेलिये गुरुने शिष्यको कहा हमेशा सायंकाले देखलियाकरकि-उसमें कोई जी-वजंतु न आनबैठे, तब शिष्य बोला रौजरौज क्या देखना ? क्या ! वहां ऊंटतो बैठाही नहीं, (उचेचतत्रसंत्युष्मा-निविष्टाःकिं-विश्रुंखलाः)-गुरुनेकहा-जा-देखतो सही, शिष्य रात्रीकोजब देखनेगया तो क्या देखताहै ! वहां गुरुके वचनको प्रमाणीकरनेके लिये शासनदेवताने ऊंटका रूपबनाकर देखादिया. (उष्मरूपंत-तःकृत्वा-निविष्टातत्रदेवता,)-चेला डर खाकर पीछा आ-या-और-गुरुजीसे कहने लगा वहांतो ऊंट दिखताहै. गुरुने कहा

देख! मेरा कहना तेने नही माना. मकानकी सारसंभाल जरूर रखना चाहिये, आगेपर खयाल रखना. चेला हाथजोड कहनेलगा आपका कहना सत्यहै. आगेपर खयाल रखुगा. बस? तात्पर्य तो यहथा-और-दयानंदजीने देखिये! क्या लिखादिया?—कौन कहा-ताहै जैनाचार्योंने पात्रमें उंट बोलाया.

४४—सत्यार्थ पृष्ठ ४५? पंक्ति २ में—दयानंदजी लिखते है जैनियोंके एक दमसार साधुने क्रोधितहोकर उद्देगजनकसूत्रपढकर एकशहरमें आग लगादी-और-बह-महावीरतीर्थकरका अतिप्रिय था. बतलानाचाहिये इसकी दयाक्षमा कहागइ थी? जब महावीरके संगसेंभी उसका आत्मा पवित्र नहुवा तो अब महावीरके मरे पीछे उसके आश्रयसें जैनलोग कभी पवित्र नहोंगे, (जवाब.) जैनके एक दमसारनामके मुनि एक नगरमें गये जहां ऐसे लोग बसते थे जो-कोइभी साधु वहां जाय बिदूनतकलीफ दिये नरहे, दमसारमुनिने उनकों प्रथम-उपदेश दिया-और-धर्मियोंकों तकलीफदेना बुराहै समझाया-लेकिन! उनोंने तो फिरभी उनकेसाथ बैसाही बर्ताव किया जो पहिले किया करते थे. उक्तमुनिने देखा, ये लोग इसतरह नही समझेंगे-उसीवख्त जो उद्देगजनकसूत्र-धर्ममें विघ्न पहुंचानेवालोंके चित्तकों उन्मत्तकरडालनेकी ताकतवाला था पढा, उसीदम नगरके लोग भ्रांतचित्तहोवेहुवे इधर उधर डोलनेलगे, अस्तीरमें जब उनमहाराजके पासआनकर अपराध क्षमा करवाया और आगेकों बैसा न करनेपर कबूलहुवे तब उक्तमुनिने अपनीविद्या पीछी समेट लिइ-अर्थात्-समुपस्थानसूत्र-पढाकि-जिससें उनलोगोंके चित्त पुनःस्थिर हुवे, देखिये! यहकाम उनोंने

किस इरादेपर किया था और दयानंदजीने उसकामतल किसरास्ते उतारा. व्यर्थद्वेषलाकर क्यों अपनी कमजोरी बतागये?—फिर आपलिखते हैं उससाधुका आत्मा महावीरकी संगतसें न सुधरा तो महावीरके मेरे पीछे उसकेआश्रयसें जैनलोग पवित्र कभी न होंगे. (जवाब.) कौनकहताहै उसका आत्मा नसुधरा?—उसका बिगड़ाही क्या था? धर्मकीरक्षापर ध्यानदेना मनुष्योंके लिये कौन कहेगा बिगाडकी सुरतहै?—महावीरतीर्थकर जैसे सर्वज्ञ और निर्मोहीकी संगतपाकर योग्यपुरुष कैसे न सुधरेगें?—जरूर सुधरेगें, ऐसोंकी संगतसें न सुधरे तो क्या कामीक्रोधी ब्रह्मा—विष्णु—महेश बगेराकी—या—मांसाहारी वैदिकरिषियोंकी संगतसें सुधरेगें, कभी नहीं. आपके भर्तुहरिजीही कहगये हैंकि—ब्रह्माविष्णुमहेशकों जिसकामदेवने स्त्रीकेदास बनादिये उसकामकों मेरानमस्कारहै. महावीरतीर्थकर निर्वाण होगये तो क्या हर्ज है उनके सत्यवचनोंका समूह तो निर्वाणनहीं हुवा. जैनलोग उनके आश्रयसें क्यों न पवित्रहोंगे? दयानंदजीके नाराजहोनेसें होता क्या है? दयानंदजीके मरेबाद उनकी एकहीपोथीकी संगतसे पंजाबीआर्यसमाजी लोग घासमांसकी लडाइलडकर फूटफजिताकर चुके हैं, दयानंदजीनेतो विधवाविवाह स्यात् मुंहसें नहीं निकाला होगा—हां! ग्यारहपत्तिकरनेकी बात नियोगद्वारा कही थी—लेकिन! चेलोंने क्या तामील किइ उसपर खयालकरते हैं—तो—उसमें विधवाविवाहकी ध्वनिहै, कह दयानंदीयोंकी बनाइ छोटीछोटी उर्दकिताबें देखते हैं—तो उनमें विधवाविवाहका दर्शावहै. दयानंदजीके पधारनेपर—थोडेही दिनहुवे कि—यहहालहै—तो—नमालूम आगे

क्या होगा !-दयानंदजी लिखते हैं उस दमसारमुनिकी दया क्षमा कहाँ गई थी ? ( जवाब. )-उन्होंने कौनसे जीवोंके गलेपर छूरी फेरी थी जो-उनकी दयाक्षमा चलीजाय. दयानंदजी द्वेषकेमारे चाहे सो लिखे, इनबातोंमें जैनोंका एकबालभी बांका नहीं होसकता, उसमुनिका इरादा लोभलालचका कब था ? उनका इरादा आगामीकालपर धर्मीपुरुषोंकेलिये-रक्षाकरनेका था,

४५-सत्यार्थ पृष्ठ ४५१ पंक्ति ५ में-दयानंदजी लिखते हैं एककोशा वैश्याने थालीमें सरसोंकी ढेरीलगा उसके उपर फूलोंमें ढकी हुई-सुई-खड़ीकर उसपर अच्छेप्रकार नाच किया. परंतु सुई पगमें गडने नपाइ और सरसोंकी ढेरी बिखरी नहीं. यह अतीव झूठ नहीं तो क्या है ? ( जवाब. ) काशीवैश्या-नाचघरमें सरसोंकी भरीथाली धरकर उसमें खड़ी सुई-और-सुईपर फूलरखकर इसतरहनाचींथीकि-जब नाचतीहुई उसथालीके पास आजातीथी-उछलकर उसफूलपर चारअंगुल उंचे-तीनचकर देतीहुई फौरननीचे उतरआतीथी. फूलकों सूइकों और सरसोंके दानोंकों स्पर्शतक न करतीथी. जाहिरातमें यही कहाजाताथाकि-देखो ! इसने सरसोंकी भरीथालीपर क्या उमदानाचकिया ?-दयानंदजी के पगजमें यहबात क्यों न समाई ?-और-अतीव झूठ इसमें क्या था ?-आजकलभी ऐसे नृत्यकार पुरुष-और स्त्री-मौजूदहैं जिसकी कलादेखकर बड़ेबड़े सभ्य चकित रहजाते हैं, नृत्यकलामें अन्य देशवाले भारत वासीयोंके नीचे हैं, अबभी-बड़ेबड़े शहरमें कथ्यकलांग बह नृत्यकला बतलातेहैं जिसकों देखकर अकलकामनही करती. काशीवैश्याने अपने शरीरकों ऐसीतालीम दिई थी जिससे



वह सर्वोत्तमकला बतलासकती थी. इसमें दयानंदजी अतीव श्रुत समझे तो उनकी मरजीकीमियाँ बात है. बुद्धिमानलोग श्रुत नहीं कहसकते,—

४६-सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३१ में दयानंदजी लिखते हैं, जैनके तीर्थंकर-महावीर<sup>न</sup> में स्वर्गकों गया. भला! शरीरके काटनेमें ला. और वह सर्प<sup>न</sup> सीने नहींदेखा, सिवाय इंद्रजालके दूसरीबात दूध निकलना काटनेवाला सर्प तो स्वर्गमें गया-और-महात्माश्री-नहीं. उसको वृत्तीसरेनरककों गये, यह कितनी मिथ्या बात है? कृष्णआदि तीर्थंकरके शरीरमें दूध नहीं निकला, किंतु वह रु- (जवाब.) महात्मासाहब<sup>न</sup> जैसे पानीखीकपमीनेमें खुशबू और शरि- धिरही सफेदरंगकाया, जीही कहगये हैं. ताज्जुब है, स- केबदबु-होती है, वैसे रुधिरकीरंगतमें फकहांनों-केथानमें<sup>न</sup> १०. जब महावीरतीर्थंकरकों काटा तब उन्होंने उसे ज्ञान सुनाया. स- र्पकों जातिस्मर्णज्ञान हुवा और जानगयाकि-में-पहिलेभवमें गुस्सा खोर शरुश था-जिसमें सर्प बनाहूं. अब गुस्साछोडदेना चाहिये. ऐसा सौचकर उसने जीवोंकों काटना खानाछोडदिया. धर्मक्रि- याके प्रभावसे वह आठवेस्वर्गमें दाखिल हुवा, कहिये! इसमें क्या असंभव बातथी!-क्या! महात्माओंके उपदेशमें पापीलोग धर्मीनहीं बनसकते!-अब महात्माश्रीकृष्णकी बात सुनलो-वें-नरक किस कामकेकरनेमें गये. जैनशास्त्रोंके लेखमें सबूत है कि-कृष्णका अपनीजीर्दगीमें ( ३६० ) संग्राम किये, पीछलीडमरमें दारका जलउठीथी-बनमें चलेगये और वहां भी जलके प्यासे मरगये, तप करना या दीक्षितहोना उनमें नहीं ब-

नसका, चाहे राजाहो-या-रंकहो-पापसें नरक और पुन्य-सेस्वर्ग-सीधीमडकहै, इसमें जैनोंने क्या मिथ्या कहा, ?-अगर वे तपस्या करते तो पापक्षयहोजाता. यह उनकेसेवकोंके निश्चयकी बातहैकि-(सामर्थको नही दोष गोसाइ)-जैनलोग कृष्णजीकों इ-श्वरावतार नही किंतु एकराजाहुवे मानतेहै, जब नरकगतिभोगकर फिर मनुष्यजन्ममें आयगें और तपकरेंगे तभीउनका निर्वाणहोगा,

४७-सत्यार्थ पृष्ठ ४४० पंक्ति २८ में-दयानंदजी लिखते है. जैनलोग-"त्रिपृष्ठ-द्विपृष्ठ-स्वयंभू-पुरुषोत्तम-पुरुषसिंह-पुरुषपुंडरी-क-दत्त-लक्ष्मण-और-कृष्ण-ये-नववासुदेव-तथा-अश्वग्रीव-तार-क-मोदक-मधु-निशुंभ-बली-महलाद-रावण-और-जरासिंधु-ये-नवप्रतिवासुदेव-भी-नरकगये और रिषभदेवसें लेकर महावीर प-र्यंत चौइसतीर्थकर मोक्षकों प्राप्तहुवा मानते है, भला ! इनके साधु गृहस्थ-और-तीर्थकर-जिनमें बहोतसें वेश्यागामी-परस्त्रीगामी और चोर आदि-सब-स्वर्ग और मुक्तिकों गये-और श्रीकृष्णआदिमहा-धार्मिकमहात्मा सब नरककोंगये यह कितनी बड़ी बुरी बातहै"?-(जवाब.)उपरलिखे नववासुदेव-और-नवप्रतिवासुदेव राजोंने आप-समें लडाइये लडकर हजारोंह लाखांह मनुष्योंको मारहाले-और वासुदेवोंने प्रतिवासुदेवोंको मारे, तपकरनेनहीपाये, इसीलिये वे नरककों गये, इसमें दयानंदजीकों क्या बुरालगा ?-क्या ! पापकर्म सेंभी-कभी मोक्ष होसकताहै ?-दयानंदजी जरा पक्षपातरूपजामेसें बहार होकर बातकरते तो आनंद आता. दयानंदजी कृष्णजीकों महाधार्मिक और महात्मा समझतेये तो उनकी मूर्चिकों देखकर नाकमें बल क्यों डालते थे ?-और उनके चेले समाजीलोग-महा-

त्माकृष्णजीकी मूर्तिदेखकर क्यों हंसी उड़ाते है!-क्या ! जिसको महात्मा समझना और उसकी मूर्तिसँ द्वेषरखना यहभी कोई न्या-य है. रहे जैनके चौइसतीर्थकर सो उनोंने राज्यछोडकर दीक्षा लिइ, बडे बडे तप किये, परिसहदेनेवालोंपरभी रहेम किइ. कहदु-ष्टोंने उनकेशरीरकों हथियार और आगसँ काटाजलाया, लेकिन! वें समाधिसँ नही गिरे, है कोई ! ऐसा योगीराज ! जिनके कानोंमें खीले ठोकदियेजाय और ध्यानसँ नडिगे ? देवांगना नाटक दि-खलावे और मोहित नहो ? दयानंदजी ! आपको मालूमहुवा ! जैनतीर्थकरोंने किसतरह धर्मपालनकिया और मुक्तिपाइ ? जो श-रुश निस्पृहहोकर तपकरेगा मुक्ति क्यों नहोगी ? आपके ब्रह्मा-विष्णुमहेश-रावण-और-जरासिंधुवगेरा ऐसाकरतेतो उनकोंभी मोक्ष मिलता, कहिये ! हठवादी कौन ठहरे ? जैन-या-आपलोग ? जैनके तीर्थकरोंकों कोई वेश्यागामी सवुन करदेवें तो हम बेशक ! कहदेयगें वें मुक्तिके अधिकारी नही थे. अगर कोई आर्यसमाजी जैनकेतीर्थकरोंकों वेश्यागामी प्रमाणकेशाथ सबूतकरदे तो हम (५००) रुपये इनाम दिलायगें रहे जैनमुनि-सो-उनके नामलिख-बतलाना चाहियेथा कौन वेश्या-या-परस्त्रीगामी थे ? दयानंदजी अगर सच्चे थे तो पत्तेवार नाम लिखते, गुम्मानामके लेख लिखना नामदोंका काम है, जो साधुबनकर फिर गृहस्थहोजाय कौन उसे मुनि कहता है ? कामक्रोधके होतहुवे कौन कहता है मुक्ति मिले, दयानंदजी जैनके सभी तीर्थकर और साधुओंकों वेश्या-या-पर-स्त्रीगामी लिख दे-तो-उससँ होता क्या है ? विना प्रमाण किसीका लेख मान्य नही होसकता.

४८-सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३२ में दयानंदजी लिखते हैं जैनके महावीरतीर्थंकरके पगपर खीर पकाइ और पग न जले, यह झूठहै, (जवाब.) महावीरतीर्थंकर जब बनमें ध्यानारुढ खड़े थे, गो-बालियोंने उनके दोनोंपाँवोंके बीच आगजलाकर खीर पकाइ, जिससे उनके पैरोंको तकलीफ जरूरहुइ, लेकिन ! बिल्कुल दग्ध होकर खाख इसलिये नहींहुवेकि-बहुतकालतक आग नहीं ज-लागइ थी. दयानंदजीका इरादा यहथाकि-बिल्कुल दग्ध क्यों न-होगये?-( जवाब.) बिल्कुल दग्धतो जब होते बहुतकालतक आग जलाइ जाती,

४९-सत्यार्थ पृष्ठ ४०७ पंक्ति २५ में-दयानंदजी लिखते हैं कि-अबजो बौध और जैनी लोग सप्तभंगी और स्याद्वाद मानते हैं सो यहहै, एसाकहकर बिनासमझे सप्तभंगीका बयान भाषामें लिखाहै, (जवाब.) बड़ेअपशोषकीबातहैकि-जिसन्यायको आप नसमझना और उसकेखंडनकरनेको तत्परहो जाना, दयानंदजी तो क्या-लेकिन ! उनकेबड़े व्यासजी और शंकराचार्यभी इस न्यायको बिनासमजे खंडनकर गये हैं.-लेकिन ! उनको तारीफ़ जबहोतीकि-समझकर खंडनकरते. व्यासजी ब्रह्मसूत्रमें लिखते हैं कि-(नैकस्मिन्नसंभवात्)-अर्थात् एकवस्तुमें अनेकविरोधी धर्मोंका समावेश नहींहोसकता. जैसे शीतआतप-और-सर्पनकुल समानाधिकरणहोकर नहींठहरसकता वैसे सप्तभंगीभी एकवस्तु नहीं ठहरसकता. (जवाब.)-व्यासजी जो हेतु बतलाते हैं सो ग-लतहै, सबकि-भिन्नभिन्न अपेक्षासे एकही वस्तुमें भिन्नभिन्न धर्म भी समावेश होसकते हैं, यह जो कहाजाताहैकि-ईश्वर-साकारभी

है और निराकारभी है, निर्गुणभी है समुणभी है-एकभी है अनेक भी है, कहिये विरोधिधर्म एकवस्तुमें नहीं रहमकते थे-तो-येये-बाते क्यों मानी गई? इसी लिये कहाजाताहैकि-व्यासजी और शंकराचार्यजी जैनोंके स्याद्वादन्यायकों मननभी करते जाते थे. और अज्ञानतासे खंडनभी करते थे. पक्षपातरूप चक्ष्मे उन्होने अपने नेत्रोंसे नहीं हटाये थे, रहे दयानंदजी! सो-उनकों यहभी मालूमनहींकि-बोधलोग-स्याद्वादन्यायकों मान्यरखते हैं-या-नहीं?-असलमें बोधके ग्रंथ दयानंदजीने नहीं देखथे, देखे होतेतो ऐसा कभी नहीं लिखते, बोधलोग तो स्याद्वादसप्तभंगीके शत्रुहै, उनके शास्त्रोंमें तो उसका खंडनकिया हुआ मौजूदहै, दयानंदजीने इतनाभी नहीं सोचाकि-जो लोग पदार्थकों क्षणभंगुर मानते हैं वे स्याद्वाद न्यायकों क्योंकर मानने लगे थे?

५०-शंकरस्वामीकों कितनेक लोगकहते हैं सर्वज्ञ और अद्वैतवादी थे, लेकिन!-यहदोनोंवाते गलतहै, यदि सर्वज्ञ थे-तो-मंडनमिश्रकी स्त्री-सरसवाणीके सामने कामचर्चामें क्यों हारगये?-और जवाबदेनेकेलिये छमहिनेकी मुद्रन क्यों मागी?-रहा उनका अद्वैतवाद-सो उसकाभी हाल सुनलिजिये!-वे-कहतेथे सबदुनिया ब्रह्मरूपहै, और जो नाना प्रकारके प्रपंच दिखाइदेते हैं, सब मायाजन्यहै, इसपर यहसवाल पैदाहोताहैकि-माया-सत्यरूपहै-या-असत्यरूप?-अगर सत्यरूपहै तो दोतत्त्व सिद्धहुवे-एक ब्रह्म दूसरीमाया, अगर असत्यरूपहै-तो-उससे नानाप्रकारके प्रपंचकी पैदाश कैसे हुई?-जिमकों माता कहना उसकों बंध्याभी कहना यह कौन बुद्धिमान मनन करसकेगा?-इसलिये अद्वैतवाद झूठाहै,

झूठेवादकों बयान करनेवालोंकी क्या ताकत है कि—स्याद्वादन्यायकों खंडन कर सकें?—जिस शंकराचार्यकी तारीफ दयानंदजी बड़े जोरसे सत्यार्थप्रकाशमें कर गये देखिये ! उन्होंने वेदकी हिंसाकों अहिंसा फरमायी, और धर्ममार्ग कहा, लेकिन ! कोई प्रमाण नहीं दे सके, पक्षपातमें पड़कर यह भी कह गये कि—वेदके प्रतिकूल सबपाखंड है, धन्य महाराज ! खूब विद्या सीखे थे, इशाइ और मुसलमान भी तो कहते हैं बाइबल और कुरानके शिवाय सबपाखंड है. शंकराचार्य—कुमारपालराजाके वख्तमें हुबे सबूत होते हैं, वें-बौधोंके साथ मतके बारेमें लड़े, दयानंदजी कहते हैं उन्होंने जैनकों भी हराये लेकिन ! महाशय ! जैसे आपनं दिग्विजय किया वैसे उन्होंने भी किया होगा. कुछ वाममार्गपर भी शंकराचार्यकी निगाह थी. उन्होंने श्रीचक्रकी स्थापना किई, श्रीचक्र वाममार्गीयोंका मुख्यदेव है. शंकरदिग्विजयग्रंथके (६५) में अध्यायमें उसकी बड़ी कीर्ति गाई है, शृंगेरी और द्वारिकाशेराके मठमें श्रीचक्रकी स्थापना है, हम नहीं कह सकते कि—शंकराचार्यजीने—सप्तभंगीन्याय—समझा था, जैसे व्यासजीके कहा दिया शंकराचार्यभी उसीमडकचले, सायनाचार्य—माधवाचार्य—विद्यारण्य—और—दयानंदजीभी उसीरास्ते चलकर सप्तभंगीकों झूठ बतला गये, अच्छा ! अब हम सप्तभंगी न्यायकों नीचे लिख बतलाते हैं जिसकी इच्छा हो समझकर खंडन करे, तारीफ उनकी किई जायगी जो समझकर खंडन करेंगे,

५१—~~स्याद्वाद~~ स्याद्वादन्याय क्या कहता है सुनिये !

( अनुष्टुप्वृत्तं. )

सर्वं अस्ति स्वरूपेण—पररूपेण नास्ति च,

अन्यथा सर्वभावानां—एकत्वं संप्रसज्यते,

१

( शार्दूलविक्रीडितम्. १ )

या प्रश्नाद्विधिपर्युदासमिदया-बादश्च्युतेना सप्तधा,  
 घर्मघर्ममपेक्ष्य वाक्यरचना-नैकात्मके वरेऽनुनि,  
 निर्दोषा निरदेशि देव ! भवता-सासप्तभंगी देया,  
 जल्पन् जल्परणांगणे विजयते-वादा विपक्षं क्षणात्, २

तत्र च स्यात् कथंचित् स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेणास्त्येव सर्वं  
 घटादिद्रव्यं, न पुनः परद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण, ( तथाहि )-घटो द्र-  
 व्यतःपाथित्वरूपेण अस्ति, नास्ति जलादिरूपेण, क्षेत्रतःपाटलि-  
 पुत्रकत्वेन-नास्ति कान्यकुब्जादित्वेन, कालतः शैशिरत्वेन-नास्ति  
 वासंतिकत्वेन, भावतो रक्तत्वेन-नास्ति पीतत्वेन, एवं सर्वं अन्य-  
 दपि ज्ञातव्यं-स्वद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया कथंचिदास्त-परद्रव्यादिच  
 तुष्टयापेक्षा नास्ति च घटइतिउल्लेखः-अन्यथा इतररूपापत्या  
 स्वरूपहानिप्रमंगः इति-अवधारणं चात्र भंगेनाभिमतार्थव्यावृत्त्यर्थं  
 मुपात्तं-अन्यथा अनभिहिततुल्यतैवास्य-वाक्यस्य-प्रसज्येत, प्रति-  
 नियतस्वार्थानभिधानात्-( तदुक्तं )-वाक्येवधारणं तावदनिष्टार्थानि-  
 वृत्तये-कर्तव्यमन्यथानुक्तसमत्वात् तस्य कुत्रचित्-(१)-तथाप्यस्त्येव  
 कुंभइति-एतावन्मात्रोपादाने-कुंभाद्यस्तित्वेनापि सर्वमकारेणास्तित्व  
 प्राप्तेः प्रतिनियतस्वरूपानुपपत्तिः स्यात्-तत्प्रातिपत्तये स्यादिति श-  
 ब्दः प्रयुज्यते-स्यात्कथंचित् स्वद्रव्यादिभिरेवायमस्ति-न परद्रव्या-  
 दिभिरपि-इत्यर्थः, यत्रापि चासौ-न प्रयुज्यते-तत्रापि व्यवच्छेदफ-  
 लैवकारवत् बुद्धिमयिः-प्रतीयते एव,-सोऽप्रयुक्तोऽपि वा तन्नैः-सर्वथा  
 त्प्रतीयते-यथैवकारो योगादिव्यवच्छेदप्रयोजनः, २, ततएवकार-  
 स्यात्कारयोः सप्तस्वापेभंगेषु ग्रहणं कर्तव्यं इति प्रथमो भंगः-( अ-

यद्वितीयभंगः प्रदर्श्यते, स्यान्नास्ति एव,—घटादिद्रव्यं—स्वद्रव्यादिभि-  
 रिब—परद्रव्यादिभिरपि—वस्तुनोसत्त्वानिष्ठौ—हि—प्रतिनियतस्वरूपा-  
 भावात् वस्तुप्रतिनियति—नस्यात्—नचास्तित्वैकांतवादिभिः अत्र  
 नास्तित्वमसिद्धमिति वक्तव्यं कथंचिद्वस्तुनि तस्य युक्तिसिद्धत्वात्  
 नहि कचिदनित्यत्वादौ सास्ये सत्त्वादिसाधनस्यास्तित्वं विपक्षे ना-  
 स्तित्वमंतरेणोपपन्नं—तस्य साधनत्वाभावप्रसंगात्—तस्मात् वस्तुनो-  
 स्तित्वं नास्तित्वेनाविन तं—नास्तित्वंच तेनेति—विवक्षावशाच्चानयोः  
 प्रधानोपसर्जनभावः—एवमुत्तरभंगेषूपिज्ञेयं—अर्पितानर्पितसिद्धेरिति वा  
 चकवचनादिति द्वितीयभंगः—यह वर्णन यहां भगवतौ सूत्रकीटोका\*—  
 नयप्रदीप—और—स्याद्वादमंजरीग्रंथके आधारसें लिखा गया है, जि-  
 नकों शंसायहो उनग्रंथोंको देखलेवें. इसकीभाषा यहां इसलिये  
 नहीलिखी कि—जो—पुरातार्किकहोंगा—वही इसन्यायका समझेगा,  
 फिर क्यों लंबान करना?—निदान! स्याद्वादन्याय किसीसें खंडन  
 नहीहोसकता. सबबाकि—वह—सच्चा है, व्यासजी—शंकरस्वामी—या—द-  
 यानंदजीवगेरा चाहेंसो कहें—जैनीकों उममें कोई क्षति नही. जि-  
 सअपेक्षा वस्तु अस्तिरूपहै उसीअपेक्षा वह नास्तिरूपहो ऐसा जै-  
 नलोग कब फरमाते है? हां! दूसरी वस्तूका इसमें असद्भाव  
 बतलाकर नास्तित्वधर्म सबूत करते है, जैसे एकपुरुष समझो अ-  
 पने बेटेकी अपेक्षा बापहै लेकिन! अपनेबापको अपेक्षासेंतो वह  
 बेटाही है. कहिये! एकहीपुरुषमें अपेक्षा भिन्नसें दो विरोधीधर्म  
 रहे गये या—नहीं?—ऐसेही गुरु और शिष्य—स्वामी और सेवक  
 जिसपर उतारना चाहो उतरसकेगा. नही मालूम! व्यासजी—शं-



करस्वामी-और दयानंदजी-इससे श्री

पनी अज्ञानता जाहिरकर गये,

अन्यायसे क्यों चीदें ? और क-

५२-सत्यार्थपृष्ठ ४४३ जो-तीरने के लक्षण बतलाये है बिल्कुल दजीने जो श्वेतांबर दिगंबर के साथ दयानंदजी लिखते हैं "दिगंबरों का गलत है, ४४४ पृष्ठ ५२-पंक्ति २-में पढ़ें कि-दिगंबर लोग-स्त्रीका-संसर्ग श्वेतांबरों के शाय इतना ही भेद है कि दिवातों से मोक्षकों प्राप्त होते हैं, नहीं करते और श्वेतांबर करते हैं, इत्यादि सब भारी जुर्म है, दयानंद (जवाब) शास्त्रों के अर्थों को उल्टा करके अर्थों को बदल देना, स्त्री-अगर जीकी आदत थी कि-जगह जगह अन्त्य में मुक्तियों हासिल कर अच्छे प्रकार धर्मपालन करते तो उसी जगह रहते हैं चाहे जितनी सके ऐसा श्वेतांबर मानते हैं और-दिगंबरों के धर्मक्रिया स्त्री-करे उसी भव में मुक्ति हासिल कर सकेंगे, दयानंद जीने इस बात को न समझकर ऐसा अनर्थ माग कि-कुछ कहानि ही जाता. मुनासिब था सच्चा बयान करते, लेकिन ! क्या कहा जाय ! दयानंद जीने उस घड़ी जन्म ही नहीं लिया था जो मंचाल वाला श्वेतांबर दिगंबर की भिन्नता-नामका विषय इस ग्रंथ के प्रथम तरंग में लिखे चूके हैं, उसको पढ़कर सब हाल मालूम कर लें, एक शिवभूति मुनि ने सनातन जैन श्वेतांबर आम्नाय में फटकर विक्रम संवत् (१३९) में दिगंबर मत निकाला, जैसे आप लोग बेद के सच्चे अर्थ से बदले वैसे वे जैन के आगमों से बदले जैसे आप लोग वैदिक नहीं वैदिका भासते वैसे दिगंबर लोग जैन नहीं जैना भासते, उन्होंने जो नंगी मूर्ति मानने की प्रथा निकाली जैन आगम से विरुद्ध है, दिल्ली और मध्य खंड बंगोरों में जो इनकी रथयात्रा अन्य लोगों द्वारा अटकाई जाती है इसका यही

सबवकि-नंगीमूर्ति मानना फिजूलहै, देखिये ! गुजरात-कच्छ-दखन-पूर्वमारवाड़-और-पंजाबमें जहांजहां श्वेतांबरलोग शींगारी हुइमूर्ति रथयात्रामें निकालतेहैं क्यों कोइनही अटकाता ?-यह दिगंबरोद्दीकी अज्ञानत का नमुनाहै कि-जैनकी अबर्नातिकरा रहेहैं, वेदी लोग अपने शास्त्रोंको गुप्तरखकर-जनकेनामको कमजोरी दिलातेहैं, शास्त्रछपकर अधिक लोगोंको दियेजाय इसमें श्वेतांबर लोग फायदा समझतेहैं, देखिये ! मुर्शिदाबादनिवासी रायबहादूर धनपतर्निजीने मूलसूत्रभी छपवाकर शहरशहरमें भेजदियेहैं, यह दिगंबरोंकी इठवाद्देहि-रामशास्त्र छपवाना ठीकनहीं. इनके कुआचरणोंसे दयानंदनी या औरकोइलोग जैनको कलंकदेनाचाहे तां उनकी भूल है,

५३-सप्तार्थपृष्ठ १४१ पर-दयानंदजीने-जो-हुंढियेलोग मुंहपर पटी बांधरखतेहैं उसपरलंबीचौडो वक्तृतादेकर जैनधर्मको कलंकितकरना चाहा था, भी जैनकेशाथ कुछसंबंधनहीरखता. किसी जैनआगममें मुंहपर पटीबांधनानहींलिखा, जैसेदिगंबर जैनाभास वैसे हुंढियेभी जैनाभासहैं, जब जैनशास्त्रोंके लेखसे दिगंबर और हुंढिये जैनही नहीं तो-उनके कुआचरणोंसे जैनको क्या ?-दिगंबरोंने द्वादशांगसूत्र उद्यथापन किये-और हुंढियोंने बत्तीससूत्रके शिवाय दूसरे सबसूत्र उद्यथापन किये, कहिये ! इनकेवचनोंपर क्या परतीत लाइजाय ?-मलीनरहना कोईजैनशास्त्र नहींफरमाया हुंढियोंकी मलीनता जहानभरमें मशहूरहै, अगमलीनरहना तीर्थकरोंको मजूरहोतातो-वै-कपड़ोंको प्रक्षालनकरना क्यों फरमाते ? चाहे साधुहो-या-गृहस्थ-मलीनरहना किसीको मुनासिबनहीं, दयानंद

जी इसी पृष्ठ पंक्ति ४ में—लिखते हैं कि—जैनों का केशलुंचन सर्वत्र प्रसिद्ध है, अब कहिये ! जैन लोग ! तुमारा दया धर्म कहाँ रहा ? चाहे अपने हाथ से लुंचन करे—या उसका गुरु करे, परंतु कितना बड़ा कष्ट उस जीव को होता होगा ! जीव को कष्ट देना ही हिंसा कहती है, ( जवाब. )—साधु लोग—या—गृहस्थ—जो धर्मपालन के लिये तपकर तै हैं जीव को कष्ट तो होता ही है, हे कन ! इस काम को अगर हिंसा मानी जाय तो फिर जितने धर्म शास्त्र सभी व्यर्थ सिद्ध हो जायगे, यह दयानंद जी की ही अज्ञानता का नमूना है कि—वै—धर्मपालन के लिये तपकरना भी हिंसामें सामील करते हैं, जैन के कल्पसूत्र वगैरामें खुले खुला वयान है कि—जिसकी ताकत हो वह केशों का लुंचन करे, जिसकी ताकत न हो—रोगी हो—बालक—या बृद्ध हो—उनके लिये हुकम है कि—उसे से या कतरनी से केशों को साफ करावे. जैसी शक्ति हो वैसा करे कोई हर्ज की बात नहीं. दयानंद जी के कुतर्क में जैनों को कोई क्षति नहीं पहुँच सकती, दयानंद जी प्रथमावृत्ति सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ४०१ की अंतिम पंक्ति से आगे लिखते हैं दुंदिये लोगों के केशों में जूँ आ पड़ जाय तो भी नहीं निकालते—इजामत नहीं बनवाते—जब उनका साधु आता है जैनी लोग उसकी टाटी मूँछ नोच लेते हैं, शरीर को कंपावे तो उसको कच्चा साधु समझते हैं. ( जवाब. ) जब हम पहिले भी लिख चुके हैं कि—जैन शास्त्रों के लेख से दुंदिया पंथी जैन नहीं किंतु जैन के घातक हैं तो फिर उनके कुआचरणों से जैन को क्या गरज रही !—ज्यादे दरया फत करना चाहते हो तो उन लोगों से पुछो,

५४—जैन लोग थाली के आकार गोल—और सपाट—जो—ठाख—योजन लंबा चौड़ा जंबू दीप मानते हैं उसमें दो सूर्य और दो चंद्र पृथक्

पृथक् घांणीके बैलकीतरह फिरते कहते हैं, उस जंबूद्वीपके दखन-कीतर्फ भारतवर्षक्षेत्र जिसमेंहमतुम रहते हैं बहुतछोटा हिस्साहै, जंबूद्वीपकी चौतर्फ दोलाखयोजनका बलयाकार लवणसमुद्र मानते हैं. जिसको हमतुम महासागर बोलते हैं उसलवणसमुद्रका एकतर्फका कनारा है, अगर कोई सिधादखन दिशाको महासागरमें जहाजलेकर जायगा फिरपिछा न लौटंगा, सबबकि दोलाख योजनजाकर पीछे चले आवे ऐसे जहाज आजकल कोइनही बनासकता, बड़ेबड़े विज्ञानी कबूलकर चूके हैंकि-समुद्रमें सिधादखनको जहाज चलावे तो जल तरंगोंकेमारे आगे जानही सकते, पीछा उत्तरकनारेकोही लौटते चले आयेंगे, बस ! ऐसे अगम्यलवणसमुद्रके आगे-चोफेरबलयाकार चार लाखयोजनका धातुकी खंड जैन लोग मानतेहैं, लवणसमुद्रमें चारसूर्य और चारचंद्र-तथा धातुकी खंडमें बारहसूर्य बारहचंद्र मानते हैं, इसकी चौफेर आठलाखयोजनका कालोदधिसमुद्र इसमें बेंतालीससूर्य-बेंतालीसचंद्र-और इस कालोदधिसमुद्रको चौतर्फ पुष्करार्द्ध द्वीप जिसमें बहत्तरसूर्य बहत्तरचंद्र-मानते हैं इसतरह इतनेद्वीपसमुद्रोंमें मिलाकर जैनलोगजो (१३२) सूर्य और इतनेही चंद्र आकाशमें अलगअलग फिरतेहुवे कहते हैं, इसपर दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५२ पंक्ति २३ में लिखते हैंकि-अब सुनिये ! भूगोलखगोलके जाननेवालो !-इतने सूर्यचंद्र जैनलोग मानते हैं, अगर आपलोगोंको वेदमतानुयायी सूर्यसिद्धांत नमिलता तो जैनोंके महाअंधेरमें पड़े रहते, (जवाब.) देखिये ! दयानंदजीकी अज्ञानताका नमुना ! जैनीलोग जितने द्वीपसमुद्रोंमें जितनेसूर्यचंद्र मानते हैं उनको एकही भारतवर्षका

धोखा देकर आप कैसे सच बनते हैं? तनक सोचना तो था कि-  
 जैनलोग ( १.३२ ) सूर्यचंद्र एकीलेभारतवर्षमें कब कहते हैं?—सूर्य  
 सिद्धांतग्रंथ जैनोके सूर्यप्रज्ञप्ति—चंद्रप्रज्ञप्ति—ज्योतिष्करंडक—आरं-  
 भसिद्धि—वगेराग्रंथोके सामने ऐसा है—जैसा सूर्यके सामने दीपक-  
 का उजाला, उसकी क्या सामर्थ्य है कि—उक्तग्रंथकी सच्चाईके सा-  
 मने बैठसके?—जैसा वेदोंकी सच्चाईका घमंड दयानंदजीको था—वै-  
 साही सूर्यसिद्धांतका समजलेना चाहिये, अगर कोई ज्योतिष वि-  
 द्याकापाठी जैनके ज्योतिषग्रंथोंको देखेगा स्वतःमालूमहोजायगा.  
 दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४५३ पंक्ति १७ में—लिखते हैं अब देखो  
 भाइ! इमभूगे लमें ( १.३२ ) सूर्यचंद्र जैनियोंके घरपर तपतेहोंगे,  
 भला ! जो तपतेहोंगे तो वे—कैसे जीते होंगे? और रातकोभी जै-  
 नीलोग ठंडकेमारे जकडजातेहोंगे ( जवाब. ) जैनोकेघर इतने चंद्र  
 सूर्य जब तपें कि—वे—एकजगहपर इतने मानतेहोवे, वे—तो—उपर  
 लिखे मुआफिक लवणसमुद्र—धातुकीखंड—कालोदधिसमुद्र—और—पु-  
 ष्करार्द्धद्रोप—जो—लाखहां योजनके हैं उनमें इतने चंद्रसूर्य मानते  
 हैं. फिर दयानंदजी क्यों चिल्ला गये, क्या ! वैदिक  
 मतके सन्यासीयोका यही लक्षण है कि—छलकपटद्वारा खडनघंडन  
 लिखना ? दयानंदजीके उपर उनके निराकारइश्वरकी ऐसी घोर  
 कृपाहुइथी कि—वे—अपशब्द लिखनेमेंही बड़ादूरी समझते थे, जैसे  
 कोई औरत किनीसें लहाइलडे तो शिवाय गालियोंके और कुछ  
 नहीं बोलसकती, सत्यार्थप्रकाशमें जहां जहां मतमतांतरोंका बनेन  
 लिखा शिवाय अपशब्द और हंसी उडानेके और कुछ लिख  
 नहींसके हैं, लेकिन! याद रहे! यहकाम विद्वानोंका नहीं, भांड

और धूर्तोंकाई, जैनोंकेघर ( १३२ ) क्या-उससेंभी-ज्यादे ज्ञान-मूर्ध तपरहे है, वें-आपके अज्ञान अंधकारमें कभी नहीं गिरसकते, दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५३ पंक्ति २३ में एक और गप्प धरगये हैंकि-सुमेरु बिना हिमालयके दूसराकोइनही, ( जवाब. ) किसी ज्योतिषग्रंथमें-यहनही लिखाकि-हिमालय-सुमेरुहै, न किसी धर्मशास्त्रमें भी हिमालयको सुमेरु बतलाया. दयानंदजीने नयीरो-शनीवालोंनेकी संगतसें खूब मनमानी विद्या सीखलीइथी. लेकिन ! यादरहे-समाजीयोंके शिवाय दूसरा कोई इसपर भ्रमल नहीं करसकता.

५५-दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५६ पंक्ति २३ में लिखते है, जैनलोग कुरुक्षेत्रमें-चौराशी ( ८४ ) हजार नदी मातनेहै, भला ! कुरुक्षेत्र बहुतछोटादेश-उसको न देखकर एकमिथ्याबात लिखनेमें इनको लज्जाभी न आई ! ( जवाब. ) जैनलोग जो देवगुरु उत्तरकुरुक्षेत्र-कहते है इसभारतवर्षका कुरुक्षेत्र नहींकहते, किंतु उपरलिखे जंबूद्वीप-धातुकीखंड-और पुष्करार्द्धद्वीपके कुरुक्षेत्रकी बात है, जिनको संदेहहो जंबूद्वीप प्रज्ञतिशास्त्र देखलो, जिसकुरुक्षेत्रको दयानंदजी बयान करते है क्या ! और कोई नहींजानता ? पानी पतकरनालवगेरागांवोंके पास जो कुरुक्षेत्रहै कुरुराजाके जमानेसें बसाहुवाहै, जैनलोग इसकुरुक्षेत्रमें चौरासीहजार नदी कब कहते ! ? दयानंदजी लिखते है जैनोको ऐसीमिथ्याबात लिखते लज्जा भी नहीं आई ! ( जवाब. )-लज्जा और शर्मतो जब आवेकि-मूठ बातकाबयान किधीजाय ? सौचोतो ! आपको इतनीभी लज्जानहीं आईकि-वैं-बिनासमझे क्या लिखताहूं ? वेदोंमें इंद्रकी तारीफ,

सूर्यकी इज्जत, - वायुवगेरा तत्वोंकी चर्चा, तरहतरहके जानवरोंको गलाघोटकर मारना - अश्वमेध - गौमेध - बलिदान वगेराका करना और - जहाँ राजाको अभिषेककरनेकी बात आइ मंदिरापानकरना फरमाया, ऐसे अज्ञानकेखजानेको ईश्वरप्रणीतकहना यही लज्जाका कारणहै, दयानंदजीने सोचाकि - अगर मैं प्राचीनअर्थको कबूल-खूगातो जैन बौधवगेराओंकी तर्कतापसे बचनामुश्किलहोगा. दयानंदजीने ( ५९ ) वर्षकी उमरतक जैनग्रंथोंका खोज लगाया दुवारा - सत्यार्थप्रकाशके बारहपें समुल्लासमें - जैनका बर्ननकिया, लेकिन ! फिरभी यथार्थभेद नहींपाया, प्रथम सत्यार्थप्रकाशमें जो नाम जैनग्रंथोंके लिखे थे नवीनसत्यार्थप्रकाशकी भूमिकामें बदलने पड़े, कहिये ! जिनके भ्रमकी निवृत्ति जिंदगीतक नहींहुइयी उन-केवचनोंकी कहांतक प्रमाणता किइजाय !

५६ - सत्यार्थ पृष्ठ ४५६ पंक्ति १५ में दयानंदजी लिखते हैं जंबूद्वीप - लवणसमुद्र - धातुकीखंड - कालोदधि - और - पुष्करार्द्धद्वीप वगेरा - जो - जैनलोग लाखहां योजनके मानते हैं इस पनरांह हजारपरिधिवाले भूगोलमें क्योंकर समासकते हैं ? इसलिये यहबात केवलमिथ्याहै, ( जवाब. ) जैनलोग कब उनद्वीपसमुद्रोंको इसभूगोलमें मानते हैं ? - वृथा शंखनाद क्यों किया ? - क्यों नयीरोशनीवालोंकी झूठीदलीलपर कायम हुवे ? - किसवेदमें इसभूगोलको पनरांह हजारकी परिधिवाला कहाहै ? - जब अमरिकाकी तलाश नहीं हुइयो अंग्रेजलोग कितनी जगहको सारीदुनिया बतलाते थे ? - जिनके नित्यनये सिद्धांत बदलते रहे उनकेकहनेपर कौनबुद्धिमान् एतकात लासकताहै ? अंग्रेजलोगोंका यहभी कहनाहैकि - अबतक सं-

पूर्ण दुनियाकी तलाश नहीं होचूकी है, नित्यनये टापु तलाशहोते जाते हैं, और यहभी कहाकरते हैंकि-उत्तरध्रुवके ( ७२ ) अंशसे ( ७५ ) अंशतक मनुष्यकी गति नहींहोमकती, इसलिये ( १५ ) पन-रांह हजार परिधिका भूगोल मानना प्रमाणीकनही हुवा. यह द-यानंदजीकी कमजोरी हैकि-अपने नयीरोशनीवाले चेलोंके पिछे चलपडे, अनार्यलोग आर्योंकेपीछे जागृत हुवे हैं, आर्यभूमि अपने गर्भमें सर्वज्ञपुत्रहोनेका दावा रखती है, दयानंदजीने बड़ी भूल किई-आर्य होकर अनार्योंके रास्ते चले,—

५७—जैनलोग-जो-ममय-आवली-मुहूर्त्त-दिवस पक्ष-मास-वर्ष-पल्योपम-और-सागरोपमवगेरा कालकी संख्या मानते हैं इ-सपर दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४१७ पर लिखते हैं जैनोके पल्योपम-सागरोपमका मापा ठाकनही. सबबकि-कुवेमें केशोंके बारिकटुकडोंको भरना और उनको अनुक्रमसे निकालना यह बात नहीं बनसकती (जवाब,) जैनलोग कब कहते हैंकि-केशोंके टुकडोंसे अमूकशरूशने कभी-कुवा-भरा और एक एकटुकडा क्र-मसे निकाला!-जैनलोगका कहनातो यहहैकि-अगरकोई ऐसा कामकरे और उसमें जितना वखतलगे उतनेवखतका नाम पल्यो-पमकाल-बोलाजाय, दयानंदजी इसबातपर क्यों नाराज हुवे!-क्या! नास्तिकोंकी तरह अनमानप्रमाणको इनकार करदेना चा-हते थे? दयानंदजीके निराकार इश्वरने जो इससृष्टिसे पहिले सृ-ष्टि रचीथी और उससे पहिलेभी इसतरह अनंतकालपहिलेभी रची होगी ऐसा जो-मानाजाताहै उस अनंतकालको कोई आर्य-समाजी गणितकरके बतलासकताहै!-अगर कहाजायकि-हां!ज-



नुमानप्रमाणसे बतलासकेगा—( जवाब )—फिर पल्योपम—सागरोपमके प्रमाणकोंभी जैनलोग—क्यों न बतला सकेंगे?—जब संसारको ही अनादि समुत्तरदेते हैं—तो—फिर पल्योपमसागरोपमके मापेकी समुत्तीबतलाना कौन मुश्किलबातथी?—

५८—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४९ पंक्ति २८ में—दयानंदजी लिखते हैं जैनोके तीर्थकारोंकी उमर इतनी लंबी है जो आपलोग सुनकर हंस उठोगे, सबसे बड़ेतीर्थकर रिषभदेव हुवे उनकी उमर—चौरा—शीलाखपूर्वकी—कही, दूसरे अजितनाथतीर्थकरकी बहत्तरलाखपूर्वकी—तीसरेतीर्थकरकी साठलाखपूर्वकी—इसतरह बड़ीबड़ी उमर जो—जैनलोग मानते हैं बिल्कुल असंभववात है, इन्ही जैनियोंके गपोड़े लेकर पुराणीयोंने जो दशदशहजारवर्षकी उमर लिखदिई है यहभी संभव नहीं होसकती तो जैनियोंकी बात कैसे संभव होसकेगी? ( जवाब )—इतनी बड़ी उमर जो पहिले जमानेमें होतीथी इसबातकों शिवाय दयानंदजी जैसेके और कोई इनकार नहीं करसकता. जो जो प्रज्ञाशाली श्रुतज्ञ हैं, अनुमान प्रमाणकों कभी निषेध नहीं करसकते. और यहभी नहीं कहसकेकि—पेस्तर आदमी बड़ो उमरवाले नहीं होतेथे? बड़ेबड़े मकान कोट किले और पशुपक्षी जैसे पहिले कालमें थे आजकलकी अपेक्षा हजारदुर्जे बढ़कर थे. पहिले दिनोमें—जैसा—रूपरंग पुण्यवानी और तरखजाना था अब कहां है? जैसी ताकत अगलें लोगोंकी थी अब कहां पाइजाती है—दशहजार वर्ष पहिले जितनी लंबो उमरवाले मनुष्य थे, वैसे अब कहां है?—सोचोकि—लाखवर्ष पहिले—उससे ज्यादा उमरवाले होंगे—या—नहीं? करोड़—और—कोटानकोटवर्ष पहिले उससेभी बढ़कर उमरवाले क्यों

नहोगे? वस! इसप्रमाणसें साबोतहै अगले जमानेमें जरूरपहीबड़ी उमरवाले मनुष्य होते थे, फिर जैनोके तीर्थंकर चौरासीलाखपूर्वकी उमरकेहुबे किस प्रमाणसें गरमुम्किन होसकते है? दयानंदजीने शिवाय कमजोरोके और कोइ प्रमाण नही बतलाया, हेबके मारे यहीकहना बनाकि-जैनियोंके सब गपोहें है, लेकिन! यह नही सौचाकि-सत्यार्थप्रकाशमें मेंहो-गपोहें मारआयाहूं. मुक्तिमें जाकर पीछे लोट आना कौन बुद्धिमान् कहेगा गप्पनही? स्वर्ग नरकका इसभूगोलसें अलगस्थान न मानकर कहदेनाकि-जो यहां सुखी और दुखी है वही स्वर्गनरक-यहभी गप्पहै-या-और कुच्छ? संस्कार\*विधिके पृष्ठ (१२९) पर लिखा पृथ्वी स्थिरहै और नवीन सत्यार्थप्रकाशमें लिखा घूमती है. यह गप्प हुवा-या-और कुच्छ? निराकारईश्वरने अग्निसूर्य और पवनरूप रिषियोंको प्रेरकर वेद बयानकिये यहगप्पहै-या-और कुच्छ? निराकारने किस मुखने प्रेरणा किइ? कहिये! दयानंदजी! यह आपके गपोहें है या जैनोके? अगर आप सत्यवक्ता थे तो अपनेजीवनचरितमें साफसाफ क्यों न लिखगयेकि-हमारे मातापिताका यह नाम था, आपका छलकपट रफतेरफते सबलोग जानगये है, दयानंदजीको यह अभिमान थाकि-वेदोंमें तो (१००) वर्षहोका आयुष्य लिखा और जैनोके यहां इतनी लंबी उमर क्यों हुई? (जवाब.) वेदही तीनहजारवर्षकी रचनाके सबुतहोते है तो उनमें उससें पहिलेकी बातें कहाँसे निकमेगी? अगर वेदही प्रमाणोकयें तो उनके प्रमाणोकरभी मनुजीने सत्ययुगमें (४००) वर्षकी उमरहोना

क्यों बयान किया? सबूत होता है कि—पहिले जमानेमें जरूर बड़ी बड़ी उमरवाले थे. एक दयानंदजीके नमानेसे क्या होता है? जरा—महाभारत और रामायणमें तो देख लो! लाख लाख वर्षकी उमरके मनुष्य हुवे लिखे हैं या नहीं? क्या! उक्त ग्रंथोंके कर्त्ता मिथ्यावादी थे?

५९—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ (४४९) पर दयानंदजी लिखते हैं जैनोंके रिषभदेवतार्थकरका शरीर (५००) धनुष्य लंबा—किसीका (४५०)—और कोइकोइका (४००) धनुष्य लंबा था, इतना लंबा शरीर होना कभी संभव नहीं हो सकता. इसलिये मिथ्यावात है. (जवाब.)  
उपरकी कलममें अभी तो सबूत कर चुके हैं कि—पहिले जमानेमें मनुष्योंकी उमर बड़ी बड़ी होती थी. सोचना चाहिये कि—जब उमर बड़ी होगी तो शरीर भी बड़ा क्यों न होगा? दूसरा यह भी मालूम कर लेना चाहिये कि—जैनशास्त्रमें मापा कितनी तरहका बयान किया है? जैनमें मापा तीन तरहका—१, उत्सेध अंगुल—२, आत्म अंगुल—३, और प्रमाण अंगुल मापा—जिसमें प्रमाण अंगुल सबसे बड़ा—आत्म अंगुल उससे छोटा—और उत्सेध अंगुल—उससे भी छोटा है, इनके भेदानुभेद देखना हो तो अनुयोगद्वारसूत्र—और—अंगुलमीत्तरीप्रकरण देख लो, यहां हमको थोड़ेमें बहुत कहना है, इसलिये जितना उपयोगी है उतना ही कहेंगे. पहिले आत्म अंगुलका संक्षिप्त वर्णन सुन लो, जिसजिस जमानेमें जो जो मनुष्य अपनी अंगुलसे (१०८) अंगुल उंचा हो उनकी चौड़म अंगुलका एक हाथ गिनना यह आत्म अंगुल मापा हुवा. कालभेदसे यह मापा छोटा बड़ा भी हो सकता है, रिषभदेवतीर्थकरके जमानेमें जो गांव जितनी दूर था—वही अगर आजकलकी अपेक्षा गिने तो गिनतोमें ज्यादा दूर कहना पड़ेगा,

अब उत्सेधअंगुलका बर्नन मुनिये ! महागीर तीर्थंकरकी आधीअंगुलकों एकपूरी उत्सेधअंगुलकहना यह अनुयोगद्वारसूत्रकी टीकामें लिखाहै. चक्रवर्त्तीका कांकणीरत्नभी एकउत्सेधअंगुलप्रमाण लंबा चौड़ा होता है, रिषभदेवजी उत्सेधअंगुलके मापसें (५००) धनुष्यके उंचे थे, सो महावीरतार्थंकरके हाथके मापसें (२५०) धनुष्य हुवे, धनुष्य चारहाथका—उसहिसाबसें एकहजारहाथकी देह रिषभदेवकी थो, कहिये ! जिम रिषभदेवकों आज एककोटानकोट सागरोपमकाल अंदाजहुवा जैनलोग मानतेहैं उनकेशरीरकी इतनी उंचाइहोना कौनआश्चर्यकी बातहै ! जो बात युक्तिप्रमाणसें सिद्धहो उसकों कौन इनकार करसकेगा ?—जिमकी आंखोंमें पोलेपनका रोग होजाताहै उसकों सबपदार्थ पीलेरंगकेही दिखलाइ दे-तो-बतलाओ ! किसका दोषहै ? दयानंदजीकों ऐसा असाध्य रोग होगया था जो असत्यपदार्थभी सत्य प्रतीतहोतथे. दयानंदजी ४१९ पंक्ति ६ में लिखतेहैं जैनलोग दशहजारकोशका एक योजन मानतेहैं. ( जवाब. ) यहबात किसी जैनशास्त्रमें नहीं लिखी, दयानंदजी गुजर गये, अब कोई उनका शिष्य—अपने सत्यवक्तास्वामीजीकी सत्यतापर धमंड रखता हो तो जैनशास्त्रसें सबूत करे, गुरुके सत्य वचनकों साबीत करना शिष्योंकी फर्ज है, बस ! जो कोई सबूतकरदेगा हम उसकों ( ५०० ) रुपये इनाम दिलवायगें,—

६०—दयानंदजीने सत्यार्थ पृष्ठ ४१८ पंक्ति ३० में लिखाकि अढतालीशकोशकी जूं जैनियोंके शरीरमें पडतीहोगी. और उनोंने देखीभी होगी. औरका भाग्य कहां जो इतनीबड़ी जूनों—देखे !

(जवाब.) किसी जैनशास्त्रमें अठतालीशकोशकी जूँ नहीं लिखी. बात बिल्कुल गलत है, अगर सब बातों उसशास्त्रका नाम क्यों नहीं लिखा? लिखे क्या! जिनके दिलमें धोखा हो-वें-प्रमाणसहित कैसे बतलासके? दयानंदजी तो गुजर गये, अगरचे उनकी जगहपर उनके शिष्य समाजीलोग इसबातको जैनशास्त्रसे साबीत करदेवे तो हमसे (१०००) हजार रुपये बतौर इनामके पावें, क्या जाने! वैदिकलोगोंके इश्वरावतार जो चारचारमहिनेतक सोते रहते थे-कुंभकर्ण-छमहिनेतक सोताथा, कहते हैं अगस्तिरिषि इतने बड़े थे जिनोंने समुद्र पेटमें भरलियाथा, शिवकी जटायें गंगानदी बहतीथी ऐसेऐसे महात्माओंके शरीरमें अठतालीशकोशकी जूँ पड़तीहो-और-लिखना भूल गये हो तो विचार करलिजिये!

६१-दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४५४ पंक्ति १५ में लिखते हैं 'जैनलोग तीनकोश लंबा मनुष्य और उनकी तीनपल्यो पमकालकी समर मानत है. ऐसे लंबे मनुष्य इसभूगोलमें बहुतथोड़े समासकेगें. बंबई और कलकत्ते जैसे शहरमें तो तीन-या-चार मनुष्यही निवासकरसकेगें. (जवाब.) हम (५९) मो कलममें लिखचूके हैंकि-जैनमें जितना शरीरकी उंचाइकामापा है उत्सेधअंगुलसें जानना. उत्सेधअंगुल महावीरतीर्थंकरकी आधीअंगुलको समझना यहभी पहिलेलिखचूके हैं उसहिसाबसें तीनकोशका आधा देढकोश हुवा सो ऐसे मनुष्य-जैनलोग-धातुकीखंड और पुष्करार्द्धदीपवगेर मानते हैं, धातुकीखंड यहांसें आठलाखकोश-और-पुष्करार्द्ध है. यहांसें छपनलाखकोश दूर मानते हैं, कौनकहता है इसभूगोलमें इतनेलंबे मनुष्य हैं! दयानंदजी बड़े करेबी थे, जितनाकेस किवा

धोखा देदेकर किया है. शर्म नहीं आइ कि-झूठ बात जहिर होने पर लोग मुझे क्या कहेंगे ?

फिर आप लिखते हैं इतने लंबे मनुष्यों के लिये घर और थंभे कितने बड़े होते होंगे ? ( जवाब. )—जहां इतने लंबे मनुष्य होते होंगे वहां वृक्ष भी लंबे क्यों न होंगे, कीड़ी अगर फिकर करे कि हाथी का घर कितना बड़ा होता होगा ?—तो—उसका मौच करना बुरा है या नहीं ?—दयानंदजी के धर्माचार्य मनुजी ने जहां हिरण्यकश्यप दैत्य का बर्नन किया है वहां फरमाया है कि—वह इतना उंचा था—जिसकी कमर सूर्य की बराबर पहुंचती थी. और उसका बाकी का शरीर सूर्य से भी उंचा था. कहिये ! इस बात को सच समझना या—झूठ ?

६२—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४१९ पंक्ति १ में—लिखा कि—जैन लोग चारकोश लंबा—वीरू—और मखी मानते हैं. ( जवाब. ) उत्सेध अंगुल के माप से चारकोश का आधा—दोकोश—हुवा—मो इतने लंबे शरीर वाले—चतुरिंद्रिय जीव द्वीपांतर में—जैन लोम मानते हैं. अन्य द्वीप की बात इस भारत में लगाना ठीक नहीं. बड़े बड़े समुद्रों में जलचर मगर मच्छ वगैरा जीव जैन लोग एक हजार योजन लंबे होना मानते हैं—सो—उत्सेध अंगुल के प्रमाण से (५००) योजन हुआ. जब लाखों करोड़ों योजन के लंबे चोड़े समुद्र हैं तो उनमें पांचसे योजन के मच्छ क्यों न होंगे ? छोटे समुद्रों में भी इतने बड़े मच्छ देखे जाते हैं जो स्टीम-शरके नीचे आजाय तो एक दफा उल्टा देवे. सौचो ! फिर बड़े समुद्र में बड़े मच्छ क्यों न होंगे ? इसका इनकार करना प्रमाण से बाधित है, जैन लोग भारतवर्ष के समुद्र में कब इतने बड़े मच्छ कहते हैं, जिस-

पर दयानंदजीकों सौचना पडा. समुद्रमें डूबेडूबे वेदकों फिरपाने-केलिये जो वैदिकलोग मच्छावतारका होना मानते है दयानंदजी ने उसकी लंबाई चौड़ाई क्यों न लिखी? क्या वादीयोंकी तर्कता-पसे कुछ खोफ मालूम हुआथा?—जब देवदानवोंने शेषनागरुपर-सी बांधकर पर्वतद्वारा समुद्रोंको मथा—और— पर्वत डूबनेलगा—तब अपनीपीठके सहारे जिसकच्छपने उसको रोकदिया—सौचो! वह कच्छप कितना बडाहोगा?—दयानंदजीने इसबातको खुलासा क्यों नही लिखी?—क्या! शर्म मालूमहुइ?

६३—दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४४७ पंक्ति ३० में—लिखते है जैनलोग हरितशाक खानेमें जीवोंका मरना मानते है यह अविद्याकी बातहै, ( जवाब. ) वनास्पतिमें जीवोंका होना सर्वसंज्ञ, सबबकि—उसमेंजल सींचनकरनेसे वृद्धिहोतीहै. लाजवंतीके पेंड है हाथलगादोतो लंकोच और—उठालो तो विकाश होताहै—सौचोकि अगर उसमें जीव नहोता तो—पेसा क्यों होता? असलीही हाल-तमें रही चली आती. इसलिये सच्चहैकि—हरितशाकके खानेसे जीव जरूर मरते है. दयानंदजी ४४८ पृष्ठ पंक्ति ९ में लिखते है उश्न-जल पीना जैनोंका भ्रमजालहै, जीवोंको मारकर पीना उससे तो ठंडाजलही पीना अच्छाया. ( जवाब. ) जलको तताकरनेसे कौनकहताहै जीव नही मरते? जरूर मरते है, असलमें व्रतधारीयों-को सजीव खानपानकरना शास्त्रका हुकमनही, कच्चाजल सजीव और तताजल निर्जीव यह सर्वमान्यबातहै, जलको तताकरनेसे उसमें चारप्रहरतक दूसरेजीव पैदा नही होते. इसलिये सजीवसे निर्जीवजल पीना व्रतधारीयोंकेलिये अच्छा समझागया. गृहस्थ

लोगोंकोभी गुनासिबहैकि-जब व्रतकरे निर्जीवजल पीये. अगर स-  
वालकियाजायकि-उसको जलके जीवमारेका पाप लगेगा यानही?  
( जवाब. ) जलतताकरनेका उसने कब त्याग कियाथा?—उपवा-  
समें चार या-तीनतरहके आहारका त्याग होताहै, जलतताकर-  
नेका त्यागनहीहोता,—और व्रतकी रक्षाकोलिये जलतताकरना भा-  
वहिंसामें दाखिल नही. बिदूनभावहिंसा पाप नही, इसलिये सबूत  
हुवाकि-व्रतमें गर्मजलपीना अतिउत्तमहै, गर्मजलपीनेसे कामवि-  
कार शांत रहताहै. चिकित्साविद्याकेजानकर वैद्यलोगभी उश्रकि-  
या हुवाजल पीना ज्यादा पसंद करते है,—इसलिये कच्चेजलसे प-  
काजल पीना दुरस्तहै,

६५—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४९ पंक्ति १ में—दयानंदजी लिखते  
है—है जैनो ! अगर जो तुम्हारा मत सच्चाहोतातो सृष्टिमें—इतनीवर्षा  
नदियोंका चलना—और इतनाजल क्यों इश्वरने उत्पन्नकिया ?—  
तुमारे मतानुसार सूर्यकेतापसेभी क्रोडानक्रोडजीव मरतेहीहोंगे.  
( जवाब. ) कौन मूर्ख कहताहैकि-सृष्टिजल नदियां और सूर्य-इ-  
श्वरने बनाये—जिनकीबुद्धि नष्ट होगइहो वही इश्वरको कर्त्ता माने,  
जैसे इश्वरवादीयोंके मतमें स्वयंसिद्ध इश्वरहै उसी प्रकार जैनमतमें  
स्वयंसिद्ध जगत् है. फिर क्या जरूरतहैकि-इसका रचनेवाला कोई  
मानाजाय, और निरागी इश्वर रागके फंदेमें क्यों फंसे ? अगर  
कहाजायकि-शुभाशुभकर्मोंका फलदाता इश्वर नही तो और कौन  
है ? ( जवाब. ) शुभाशुभकाफलदाता—खुद—कर्म है, जीव जैसाक-  
रेगा कर्म उसके स्वतःउदयआयगे, अगर कहाजायकि-बंदीका  
फल वह स्वतःपाना नहीचाहता ( जवाब. ) कौन कहता है वह



चाहना है, जैसे लोहा नही चाहता कि-मैं-चूंबकपाषाणकी तर्फ खें-चाउ? लेकिन! खेंचा जरूर जाता है, इसी प्रकार कर्मरूपचूंबकपाषाण लोहरूपजीवकों स्वतःखेंच लेते है, इसलिये कोईजरूरतनही इश्वर दंडदे, अगर कहा जायकि-फिर इश्वरकों माननाही बेफायदे हुवा ( जवाब. )-बतौर ध्यानका सहारा ध्येयरूप मानना क्या! फायदा नही है? अगरचे है-तो-फिर बेफायदे कैसे कहतेहो? हां! सिर्फ कर्त्तारूप नही मानते, क्योंकि-उसके स्वरूपमें दोष आता है,

६६-सत्यार्थ पृष्ठ ( ४५१ ) पंक्ति १० में-दयानंदजी विवेक० भा० १ का-इवाला देकर लिखते हैंकि-एकसिद्धकी कथा एकवैश्यकों ( ५०० ) अशर्फी नित्यदेतीथो. भला! कथा वस्त्रका होता है वह अशर्फी किसप्रकार देसकता है, ( जवाब. ) जैनके साधुओं को कथा नही होती. औरोंकी बात औरपर समजना ठीकनही. विवेकमारमें जो बात लिखी थी-अगर सच्ची थीतो उसका अक्षर अक्षर लिखते, फिर ( ४५२ ) पृष्ठ प्रथम पंक्तिपर दयानंदजीलिखते है ऐसी ऐसी असंभवकहानी इनकी लिखे तो जैनियोंके थोथे पोथोंके सदृश हमारा ग्रंथभी बहुत बढजाय. इसलिये अधिकनही लिखते-थोड़ीसीबात छोडकर हमके शास्त्रोंमें सब मिथ्या जालभरा है. ( जवाब. ) जरा इपमजमूनको खयालरखकर पढलो-मालूम होजायगा-वेद क्याचीज है, वैदिकलोग सत्यविद्याका पुस्तकवेद बतलाते है लेकिन! हजारवैदिक एकठेकरो तो उनमेंसे वेदके जनेनेवाले एक-या-दो-निकलेगें. चारोंवेदमें क्यालिखा है इसकेजाननेवाले औरभी कम निकलेगें. अगर वैदिकआचार्योंको पुछाजायकि-वेद-क्या वस्तु-और-उसमें क्या लिखा है? बहुतसे इसबा-

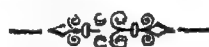
तकों नहीं बतासकेमें, फक्त यही जाहिरकरेमेंकि-हमारे बड़े वेद मानतेचले आये-और हमभी मानते हैं. वेदमें जो जो असंभववाते हैं इसीलेखमें हम पहिले लिख आये, पढ़नेमें मालूमहोजायगाकि वेदके थोथे पोथे हैं-या-जैनके? दयानंदजीने कुतर्करूपी तलवार हाथमें लेकर वेदरूपमहानगरका कतल आम किया, वेदके असली अर्थमें शर्म आइ-और-वादीयोंकी तर्कतापसे घबड़ाये-जब-नये अर्थ खड़े किये, दयानंदजीका फरमानाथाकि-सबके मतम-तांतर-सबके ग्रंथ-तीर्थयात्रा-मूर्त्तिपूजा-और-व्रतउपवास बगेरा मिथ्याहै, मुसलमान और इशायोंकोभी वैदिक बनालेना अच्छा है, सबजातिवालोंका एकत्रभोजनहोना कोइहर्ज नहीं, आचार विचार-चौका-जातिभेद-मिथ्याहै, सबजातिकी लडकीसें-विवाह करो. पति परदेश जाय तब स्त्रीकेलिये एक दूसरा पुरुष घरपर नियतकरजाय-वह उसस्त्रीसें संतान पैदाकरता रहे, जब पति घर आवे तब उस दूसरेपतिकों विदाकरदेवे. संतानकों आप ले लेवे, पति अपनीस्त्रीकों दूसरे पुरुषसें मैथुन करानेकी आज्ञा देवे, आर्यसमाजके संन्यासीकों धन देना-दूसरेकों कुछजखरत नहीं. पंचयज्ञकरो-संध्यासेवन करो-अग्निमें होम करो, देखिये! दयानंदजीका ये फरमाना था, कहिये! अब सत्यार्थप्रकाश थोथाहै-या जैन? दयानंदजीने लिखाहै जैनाचार्योंने वेदकी संहिता नहीं की-हीथी इसलिये नोंदा करगये, (जवाब.) महावीरतीर्थकरके बड़े शिष्य गौतमगणधर-अग्निभूति-वायुभूति सुधर्मा-बगेरा वेदपाठी अग्निहोतृब्राह्मण थे, शक्यंभव भट्ट-कुमुदचंद्र ( सिद्धसेन दिवाकर ) और-हरिभद्रसूरि-पहिले वैदिकमतके आचार्य थे, उन्होंने वेदों-

कों असत्यज्ञानकर छोड़दिया, और जैनमजहब अंगीकार किया, वेदोंकी चारोसंहिता मेरे पासभी मौजूदहै, अपनी हस्वलियाकत उसका तरजुमाभी कर सकता हूं. जिसकिसीको इम्निहानलेनाहो छपवाकर मेरे नजदीक इरसाल फरमावे, जवाब बमुजबटीकाभाष्यके दूगा, अगर कोई गुस्ताखी करेगा उसकेसाथ गुस्ताखीसे पेश आनापडेगा. सबबाकि—यह जमानेकी खूबी है,

६७—दयानंदजीकों ग्रंथलिखते वरुत सौचनाचाहियेथाकि—जैनलोगप्रलयकिसकों कहते है?—पुद्गल किमकों मानते है? चौदहरज्वात्मकलोक क्या वस्तुहै? विनासमजे मनमाना लिखदेना कौनसी बहादुरी किइ? चौदहराज्य नही—किंतु रज्जुहै, और रज्जु एकमापकरनेके—पैमानेका नामहै, किसी राज्यधानीका नाम नही, उसमें आकाशपाताल सबमिलाकर यह गिणनाहै, केवलआकाशपर चौदहरज्जु मानना दयानंदजीका भ्रमहै, दयानंदजीने कोनसा दिग्विजय कियाथा लेकिन! उनकरागीलोंगोंने दयानंददिग्विजयग्रंथ तयारकिया, इधर प्रतिपक्षीयोने दयानंदपराजय—दयानंदपराभूति—मुखचपेटिका—और—दयानंदमतमर्दन तयार किये, दयानंदजीने सत्यार्थप्रकाशमें लिखा तभी उनकों बोलनेकी जरूरत हुइ, समाजीलोग अकसर! यहीकहते है हमारे स्वामीजीने जो कुछ लिखा वह सचहै, लेकिन! दुश्मन जिसबातकों मंजूर करे वह सचहोताहै.

६८—दयानंदजीने लिखाहै जैनमुनि विष्णुकुमारने नमुचिप्रधानको मारडाला, और दंडप्रायच्छित लेकर शुद्धहोगये क्या खूब बातहै? ( जवाब. ) नमुचिकों जैनमुनिविष्णुकुमारने इसलिये मारा

कि-वह धर्मकों डूबाता था, उसकों उपदेशद्वारा समझाया-लेकिन! फिरभी वह सामनाकरनेकों आमादाहुवा. इसलिये उसकों मारना फर्जहुवा, जोवात फर्जहो-उसमें गुनाह नही. गुनाह बिदून प्रायश्चित्त नही. फिरदंडकी क्या जरूरत रही? कौन कहता है उन्होंने दंड लिया, दयानंदजी नाराज क्यों हुवे? क्या नमुचि कोई उनका रिस्तेदार था? कितनेक कहते हैं दयानंदजीने इसाइवनते रोककर समाजी बनाये यह गुण क्यों नही लेते? ( जवाब. ) सौ-चोतो-कुच्छभी नहीरोका और बनाया, बल्किन्! वैदिकमतमें विरोध फैलाकर जगह जगहपर भेद डालदिया, दयानंदजीकी और हमारी कलमकी लडाइ खतमहुइ, सत्यार्थप्रकाशके बारहुवे समुल्लासका-जवाब भी पुराहुवा. इसमजमूनमें जहां कइ जीकर इनामका आया उसकेलिये एकवर्षकी मुहलत दिइजाती है. जिनकों खायेसहो बजरीयेकलम छपवाकर जाहिर करे,



## [ दुनियाके मतमतांतर. ]

१-अगर दुनियाके दोहिस्से समझेजायतो एक आर्य और दूसरा अनार्य, जिसमें आर्योंके बनिस्पत धर्मकी तलाशीमें अनार्यलोग हमेशा नादुरस्त चलेआये, कोईधर्मतत्व अनार्योंका ऐसा नही जो आर्योंसे बढकरहो, अनार्यलोग बिदून सौचे उसकामकों जरूरकरडालेंगे जिसमें पाप ज्यादाहोताहो. मगर आर्यलोग उसको कभी न करेंगे जिसमें पाप बढकर लगे. निदान! आर्योंका खया-

ल धर्मपर ज्यादाकहना कोईहर्जकी बातनहीं. देखिये! उसकी चंदमिसालें यहां पर कुछ लिखदिइजाती हैं. फ्रांसके एक अध्यापकने इम्तिहान कियाकि-खरगोश जानवर ठंडकी बर्दास्त-सबसे ज्यादाकरसकताहै, उसने एकखरगोशको बर्फके संदूकमें बंदकरके एकमाँवसे दूसरेमाँव डाकमें भेजा, वहांजब बर्फको पींगलाकर उसे निकाला जीताजागता निकसआया. आर्यलोग ऐसा इम्तिहान कभी नहीं कर सकते, अगर वह मरजातातो कितना बेजाहोता? अनार्यलोग बतौर इम्तिहानके जीतेकुत्तोंकीखाल धीरेधीरे इसलिये खेंचलेते हैंकि-इसको नयीखाल आती है-या-नहीं? आर्यलोग ऐसाकठोरकाम हर्गिज नहोकरसकेगें.

२-बंदरोंकी खोपरीयोंको बरमोंसे छेदकर उसमेंसे मांस निकालना और कहनाकि-इम्तिहानलेते हैं, एकजानवरका अंग काटकर दूसरेको लगाना और देखनाकि-जुड जाताहै-या-नहीं? जानवरोंको जहरीले सपोंसे कटवाना और देखनाकि-इससे वह मरताहै या नहीं? नशकाटनेकी तरकोबकेलिये हजारोंहकुत्ते निर्दयहोकर काटडालना-आर्यलोग ऐसाकाम प्राणभंकट आनेपरभी मंजूरनहीं करेगें, कइ जानवरोंको भूखाप्यामारखकर इम्तिहानकरना अनार्योंहीका कामहै, मच्छलायोंको तलभुंजकर और उंदरोंका मुरब्बा बनाकर खाना अनार्योंहोकी लीला है आर्योंकी नहीं. युरोपदेशमें डाककेजरीये सांपवींछू बगेरा जीतेजानवर पार्सलमें बंदकरके भेजनेकी रसम दिनपर बढ़तीजाती है, आर्यलोग इसरशमको इसलिये बुरोसमझते हैंकि-स्यात्-वह मरजाय तो कितना पाप दर्पेश हो? इसीलिये कहसकते हैंकि-धर्मकीतलाशीयें

अनार्यलोग आयोंसे हमेशा नोचेचलेआये.

३-अनार्यदेशमें जानेकी चंद सरते निचे लिखी जाती है,

(१) कइशख्श धर्मकी वृद्धिके लिये अनार्यदेशमें जानेका इरादा जाहिरकरते है उनकों चाहिये पहिले अपनेकोंही धर्ममें पाबंद करे, और उसकेजरीये आर्यदेशमेंही उसका फायदा हासिल करे, बाद ज्यादे फायदा मालूम दे-तो-जानेको इजाजत संघमें मागे,

(२) कइशख्श हरकिसमके इम्तिहानके इरादेसे जानाजरूरीसमझते है. उनकों मुनासिबहै वहांजाकर धर्ममें द्रढ रहे, और बाद इम्तिहान हासिलके फौरन आर्यदेशमें चलाआवे, चाहे जितना वहां-वो-धर्ममें द्रढ रहाहोतोभी-अनार्यदेशमें भक्ष्याभक्ष्यकेसंसर्गका उसेजरूर दंडमायछित लेनाहोगा,

(३) अगर कोई उक्तदोकल्पके जरीये अनार्यदेशमें जानाचाहेतो उसकों चाहियेकि-निचे दर्ज कियाहुवा इकरारनामा संघकों लिखदेवे, इसमुताबिक जो शख्श जायगा उसकों वहांसे आनेपर मुआफिक इकरारनामेके समाज और बिरादरीमें सामोल करलिया जायगा. कइशख्श इकरारनामेसे बदल जायतो उसगांवका समाज आर्यखंडके कुलसमाजकों इतला दे-जिसकेजरीये वह कुलसमाजसे स्वारिज समझाजाय.

### [ इकरारनामेकी नकल, ]

(४)-श्रोजिनायनमः-स्वस्तिश्री अमूक नगरे-श्रीजैन श्वेतांबर संघ-और अमूक ज्ञातियोग्य-अमूक नगरसे-अमूकशख्शका जय-जिनेंद्र मालूमहो, मैं-अनार्यदेशमें जानेकी इजाजत चाहताहूं और

सच्चेदिलसें यह इकरारनामा पेशकरताहूँकि-मैं-वहाँ जाकर मांस मदिरावगेरा अभक्ष्यका भक्षण न करूंगा, अगर कहें तो जींदगी-तक ज्ञातिबिरादरी न पाउ, दूसरे अर्हन्नीविगेरा जैनशास्त्रमें जो कुच्छ दंडप्रायश्चित्त फरमायाहै उम मुआफिक लुंगा, शिवाय उसके शत्रुंजय-गिरनार-सम्मेतशिखरजी वगेरा एकमहातीर्थकी यात्रा करूंगा, इसलेखसें नफिरूंगा, अगरफिरुं तो ताबेउमर ज्ञाति नपाउ,

( गवाही अमूक अमूककी.)	} संवत् सही-हस्ताक्षर-
गवाही नंबर-१-	
गवाही नंबर-२-	



(५)-इस इकरारनामेकी नकल छपवाकर आर्यखंडमें जहां जहां बडेबडे शहरहै समाजमें भेजदिजाय, जब किसीशखशको अनार्यदेशमें जानाहोतो इसपर सही करके जानेकी इजाजत संघसें हासिलकरे, शास्त्रोंमें लेखहैकि-अनार्यदेशभी कारणपाकर आर्य-और-आर्यदेश-कारणपाकर अनार्य होजाते हैं, इसवख्त जो देश अनार्य है वही कारणपाकर अगर आर्य होजायतो फिर वहां जानेकेलिये इजाजत या दंड प्रायश्चित्तलंनेकी जरूरत नहोगी, सुनाजाताहैकि-थोडे अमेंमें यूरोपवगेरा देशोंकी रैल खुलनेवाली है, अगर खुलगइतो हजरांहआर्योंका वहां गमनागमन होकर खानपानकी योग्यसामग्री जारी होजायगी. रास्तेमेंभो खानपानकी शुद्धता रहसकेगी. अगर ऐसा हुवा तो-वें-देशभी आर्यतुल्य होजाय तो क्या ताज्जुब? उसवख्त-फिर दंडकी जरूरत नरहेगी.

(६)—फ्रांसके परिसनगरकी नेशनेल लाइब्रेरी आजकल दुनियाभरमें बड़ी है जिसमें चौदहलाख छपौहुइ किताबें—तीनलाख नकशे—और देढ़लाख प्राचीनमिक्के तथा तमगे मौजूद हैं वैसे पहिले जमानेमें आर्यखंडमें भी बहुतसी थी, सबबकि—उममयके ग्रंथ—अवधी—प्राचीन पुस्तकालयोंमें मिलते हैं, असलमें! विद्या और कारीगरीकी खजाना भारतवर्षही था. क्या हुवा!—कुच्छसमयके फेरफार एकमा जमाना न रहा तो ?—याद रहे ! धूपछांव सबजगह बदलती रहती है, दुनियामें सबमें बंदीनहेर जैसे आजकल—सेपटी—टमैवर्गसे लेकर चीनकी हदतक बनीहुइ है वैसे पहिलेदिनोंमें अपनेदेशमेंभी थी. यह कभी नहीं कहाजासकताकि—अपनेअपने जमानेमें—मुखके साधन न बनें,

(७)—यह भूलकरभी मतसमझनाकि—जैसा मुल्कका—बंदोबस्त अब है वैसापहिले कभी नहीं था. जब चक्रवर्ती वासुदेव—पतिवासुदेव—और—पंडलीकराजे—मौजूद थे—कैसे कहाजायकि—वै—अपनेदेशका बंदोबस्त नहीं करसकते थे—भर्वखर्ववर्षोंको जानेदो, कोटानकोटि—और—लाखवर्षभी अलगरखा—फक्त दो—अठाइहजारवर्षकाही हाल सूनलो ! अशोकराजाके हुकमनामेका खुलासाहाल तपसील—जेलयह है, प्रयाग—जूनागढ़—दिल्ली—कइजगहकी गुफाओं—चटान और खंभोंमें जोजो हुकमनामें मौजूद हैं उनमें लिखा हैकि—अशोकराजाने स्तोंपर कुब्रे बनवाये. सड़कोंपर दरखत लगवाये, आदमी और जोनवरोंके लिये सफाखाने बनवाये, अशोक—मगधदेशके राजा—चंद्रगुप्तका पोता—और इतिहासोंके लेखमें सबूत हैकि—मन (२५७) के पहिले यह पटनाकी गदीपर था, कहिये ! सड़कें—दोंनोंतर्फ द-



रखत-कुवे-और-सफाखाने पहिले थे-या-नही?—पहिले जितनी धरती बोइजातीथी इतिहासोंके पढ़नेसे मालूमहोताहै अब उससे कम बोइजातीहै, अगर ऐसा न माने तो बतलाना चाहिये पहिलेज मानेमें अनाज सस्ता क्यों था?—देश निर्धन था तो दूसरे देशवाले दौड़दौड़कर इसको लूटने क्यों आते थे?—जवाहिरात औरमणो-बंद सुवर्णकी मूर्ति क्यों बनाइजाती थी?

(८)—यह भूलकरभी मत समझोकि-पहिलेदिनोंमें कारीगरी कम थी, देखिये! जैसे पूर्वकालमें ग्रहनक्षत्रादिके वेधक-यंत्र बनायेजातेथे अब कहाँ बनमकतेहैं? डाककी चीठीयाँ जैसे अब जातीआतीहैं, पहिले इससेभी थोड़े परिश्रमके साथ विद्याधरलोग आकाशगामीविमानोंके जरीये जल्दी पहुँचाते थे, पाँचहजारवर्षपहिलेका वृत्तांत शास्त्रोंमें पढ़ो तो बखूबी मालूमहोसकताहैकि-पहिलेदिनोंमें-आकाशगामी विमान विद्याधरलोग चलातेथे और देशाटनकरनेवालोंको उससे बड़ाआराम पहुँचता था, पुलिसका बंदोबस्त जैसा अबहै नहीकहाजाताकि-पहिले नही था, -राजेलोग खुद-रात्रीको रैयतकी रक्षाकरतेथे, अगर सवालकियाजायकि-किस राजेने ऐसी कचहरी खोली-जिस्मेंराजापरभी नालिश सुनीजाय? ( जवाब. ) इजराह राजे ऐसेहुवे जिनोंने खुद अपनी सजाकेलिये न्यायालय खोलेथे-सभासदभी इसलिये मुकरर किये जातेथेकि-हमभी अगर न्यायसे चूके तो किताइ अलायदा करदि येजाय, किनकिनके नाम लिखे?—यह खूब यादरखोकि-बचनर्क पाबंदी जितनी पहिलेथी-अब नही रही. बतलाइये! बातबातपर

रसीद क्यों लिइजाती है? क्या जरूरत हस्ताक्षरकी अगर ज्यादा इतमीनानहोता तो ?

९-जंगलमें मंगल पहिलेनही था-इसकी क्या सबूती है? क्या द्राक्षके बाग-और मेंबेके पैड-कदमकदमपर नही सुने? कितनेक कहते है रामचंद्रजी अयोध्यासे रामेश्वरतक गये वहां रामायणमें जंगलही जंगल लिखाहै (जवाब) रामचंद्रजीको वनवासकी राह लेना था-इसलिये-वें-उमरास्ते चले थे-जहां राजधानी न आसके. दीनदुखीका-उद्धारजैसे पहिले किया जाताथा अबउससेकमहै ऐ-माकहनेमें कोइहर्ज नही. क्या! मजालहैकि-धर्मकी पाबंदीमें आ-योंका कोइसामना करसके? अगर कहाजायकि-पहिलेजमानेमें इ-तने पुल-कहांथे? (जवाब.) यह कोइबातनहीकि-हरेकजमानेमें सुख और आरामके साधन न वनेहो रामचंद्रजीकी सेनाने समुद्रमेंभी-पुल बांध दियाथा-यह किसीसें छीपीहुइबात नही. पहिलेजमानेमें जितनी रहेमदिलीथी-अब उतनी कहां है? चौइससंवर्षके पहिले जब बोटभयपत्तननगरके राजा उदयनने-उज्जैनके चंडप्रद्योतको हरादिया और-केदभी करलियाथा-फिरभी रहेमदिलीसें पूछाकि अब क्या चाहताहै? उसने कहा मेराराज्य पीछा देदो, उदयनने उसीवरुत उसका राज्य छोटादिया, ऐसेबहादूर बहुतथोडे निक-लेगें जो-जीते हुवे देशको फिर वापिस करदे,

१०-अगर कहाजायकि-टेलीग्राफ जिस्मे तारपर बीजली दौडाना पहिले कहांथा? (जवाब)-पहिले लिखआये हैकि-अग-लेजमानेमें आकाशगामीविमानोंके जरीये विद्याधरलोग समाचार पहुंचाते थे, जिनकेपास ताकतवर हथियारहो-वें-कमजोरको क्यों

पकड़े?—जरासा थंभा गिरजाय-या-तार-दूटजाय-वहांही वीजली दौड़ना बंद होजाय, रेलगाड़ी पट्टीपरसें उतरजाय तो जल-अग्नि और-पवन-कुच्छभी नोकरी नहीं देसके-विद्याधरोकोंयदखतरा कहाथा, अंग्रेजोंकी अमलदारीमें बहुत बड़ाआराम यहहैकि-कोइ किसीके धर्मपर दखलनहीं देसकता. किसीकी औरत कोइ छिन-नहींसकता, चाहे जैसागेहूँ कोइ पहनो-मनादी नहींकि-तुमने ऐसा क्यों पहना ?

११-गरीबोंकेलडकेकों पढनेका जैसा अब आरामहै पहिले भी था. इतिहासोंसे मालूमहोसकताहैकि-पहिलेभी गांवगांवमें पाठशाला बनाइजातीथी,-विद्या और कलाकौशल्यताका निधान आर्यावर्त्तही सदासें चला आया. छापखानेकी रसम पहिलेभी थी. देखिये हरेकजगह शास्त्रोंमें पढतेहोकि-स्वनामांकित मोहर पहिलेभी लोग रखते थे, अब छापखानेका काम ज्यादा पसंदहै पहिले हाथका लिखा पसंद था, जमानेकी खूबी सदासें बदलती चलीआइ, जैसे खेलनेके तास इस्वीसन (१३५०) के असें-छापेगये पहिले दूसरी बजइकेछापेजातेथे, इसमें चकितहोना कोइजरुरतनहीं,

१२-[ अकलके चाबुक, ] १-बैमतलब ज्यादा मतबोलो, २-ऐसा गुप्तभी मतरहो जहां कोइभी तुम्हारेपास न आसके, ३-सबकेसामने ऐसागुस्सा मत दिखाओ-जिमसें लोग तुमकों पागल समझे, ४-यह हमेशा यादरखो हम मोट्टीके पुतलेहै, यह घमंडभी मतलाओकि-यहकाम हमने किया, सबकार्य तुम्हारे पूर्वसंचितपुन्यसें सुधरतेहै, ५-कचहरीमें हाकिमकी धमकीसें मत गभडाओ-सौचकर इजहारदो, ६-मूर्खोंकी हांमें-हां!-मतमिलाओ, ७-तुम

नेकोई ग्रंथबनाआ और गलती रहगइ-उसकों सुधारनेमें ऐब मत समझों, ८-सबकेशाय मिलबुलकर चलना अच्छा होताहै लेकिन! बुरोंसे हमेशा दूर रहो, ९-दूसरेकी तारीफ करना अपनीही इज्जत बढ़ानाहै लेकिन! झूठोंकी तारीफ मतकरो. इसमें अच्छेकी बुराई होती है.

१३-(१०)-कोइशख तुमकों सुन्नाचांदी बनानेकी तरकीब बतलावे-तो सिखलो-लेकिन! पहिलेसें रुपयेपैसे हर्गिज मत दो, काम फतेहहोनेपर देना अकलमंदोंका कामहै, ११-अकलके काममें ताकतकी जरूरत नहीं, १२-जिसकामकों थुरुकिया उसकों पुरा करना चाहिये, आधीहजामत नाइलोगभी नहीं रखते, १३-ऐसा देशहित और आमदनी किसकामकी जिसमे धर्म डूब जाय, १४-चाज नजरदेखकर लेनाचाहिये-दूसरेके भरुसे लिइ हुइ न जाने कैसी निकसे?-१५-अगरतुम दौलतमंदहो तोभी फिजूलखर्च मतकरो, हां! धर्मकेकाममें जितना खर्चोगे अच्छाहोगा, १६-हरबातमें बहुत चिडना अच्छा नही. मिजाजकों मुकामपर रखेकरो, १७-नोकरीपर हरवरत हंटरलिये मतखडे रहो. १७-थोडेहफोंमें ज्यादा इशारत लाना अकलमंदीकी निशानी है, १८-यह हर्गिज मत समझोकि हमवेभूलहै, १९-ज्यादे लिखावट मतकरो थक जाओगे. २०-साधुलोगोंकी तारीफ जबहै गरीब और दौलतमंदकों ए-कसा गिने, २१-अपनी भूलकों किसीके सामने मतजाहिरकरो-तुमकोंही निचादेखना पडेगा,

१४-(२२)-इतना सखतरौआब मतडालोकि-लोग-पासआनेसेंभी नफरत करे, हां! बिना रौआब रहनाभी ठीक नही, २३-

दोलतकी तंगीपर बड़ी तिजारतका काम मत खोलो,—२४-विवाह-  
था-और किसी काजकरीयावरमें इतना खर्चमतकरो, जिससे क-  
र्जदार बनना पड़े, २५-गुम्ननाम चीठी लिखना डरपोकोंका का-  
महै, २६-ज्योतिष्-चिकित्सा-मंत्र-और-धर्मशास्त्रके पढेहुवे-हर-  
जगह-इज्जत पाते है, २७-अलभ्यवस्तुकी चाहनाकरना मूर्खोंका  
कामहै, खूबसुरतस्त्रीकों देखकर पुरुष-और-खूबसुरतपुरुषकों देख-  
कर-स्त्री-मोहितहोकर-पनकों बिगाडलेते है, लेकिन! नही सौच-  
तेकि-जो चीज अपनी नही उसपर अपना अमल क्योंकरहोसक-  
ताहै! २८, स्त्रीकों कुल जायदादकी कुंची सुपर्दकरदेना अकलम-  
दीसे दूरहै, २९-स्त्रीकों मरजी मुजब जेवर और पोशाक पहनाओ  
लेकिन! हेसियतसे बहारहोजाय ऐसाकाम मत करो, ३०-पूर्वपु-  
न्यकेउदयसेही संसारीकसुख मिलताहै, यहांधर्मकरोगे तो फिरभी  
पाओगे,

१५-(३१)-जैसे गुंजपर गेंद नहीटीकती मूर्खके दिलपर  
नसीयत नहीटीकती, ३२-उल्लूने वारांहवर्ष मेहनतकरके एकग्रंथ  
बनाया, उसमें लिखाकि-सूर्यमें रौशनी नही होती. उसपर चम-  
गीदड़ोंने सही करदिइकि-बात-दुरस्तहै, बस! इसतरह मूर्खोंकी  
बात मूर्खही मानसकते है, ३३-साधुलोगोंको चाहिये कोई बेव-  
कुफ वहेस करनेवाला आवे शिवाय खापोशीके दूसरा अमल न-  
करे, ३४-जो इसवरत तुम्हारा प्रीतिपात्रहै वही कभी-भीतिपात्र  
बनजायगा-दिलकी बात सौचकर कहा-दुनिया दगलबाजोकी  
सरायहै, इसमें नेक थोडे बढ ज्यादे देखोगे. ३५-साधुओंकी और  
राजाकी मुठी बंधीहुइ रहना चाहिये, खुल जानेसे योग और भोग

बेकदर होजायें, ३६-यह मतसमझोकि-भारत मध्यखंड दशपांचनगरोंका एकदेशहै, दौलत और बिद्याका खजाना यही खंड है, गिरतीवरुतमेभी दूसरे देशोंको परवरिश पहुचानेवाला दूसराकौन होगा ? देखिये ?-बहत्तरकरोडरूपयेका माल-दरसाल-दूसरेदेशोंसे-इसमेंआताहैऔर(९९)नवाणुंकरोडका यहांसे-अन्यदेशोंकेलिपेजाताहै,दूसरेदेशवालेअकसर-बजरीयेखूबसुरत औरतोंकेमालबिकवातेहैं याते उनका माल आसानीसेबिके,देखो ! एक अमरिकाके युनाइटेडस्टेटमेंही(७००००)हजार औरतेंहोटलोंपर सौदा बेचनेके लिये मुकररहैं,भारतमें उत्तरसम नहोनेपरभी-मालका ज्यादा बिकना-कौनबुद्धिमान कमजोर कहसकताहै ?-

१६-राज्यरिद्धि-और-इज्जत-सब-धर्मरूपकल्पवृक्षकेफलहै, पहिलेजमानेमेंजोलोगज्यादेसुखीहोतेथे धर्मको-ज्यादे-करतेथे-आजकल-जिसकेबहुतसुख-उसकोबिल्कुलअधर्मादेखोगे, जबकिसी-कों तकलीफहोकरहाजाताहै धर्मकरो,सौचो ! धर्म कुछ चीजनही-तो-ऐसा क्योंकहागया ? सबूतहुवाकि-सबका-शरणदाता धर्म है,अच्छाअधर्म किसका नाम है. सुनिये ! धर्म उसकानामहै जो दुर्गति पडते हुवे जीवकों अच्छी गतिमें धारणकरे. परलोकके रास्तेकों साफकरना या आत्मिक गुण प्रकटहोना उसकानामभी धर्महै,जिसने पूर्वभवमें धर्मको सच्चे दिलसे कियाहो उसीको यहप्यारालगेगा, दुनियामेंधर्म-अनेक तरहकेहैं-लेकिन ! उनसबका-नतीजा-इसतर-कीबसें लिखदिया जायगाकि-कोइमजहब इससें बहार नरहेगा,

१७-पहिले षड्दर्शनके नाम सुनिये, !-कइलोग-जैन-बौध-नैयायिक-सांख्य-वैशेषिक-और-जैमनीय-इनको षड्दर्शनगिनते

है, कइजैन-बौध-सांख्य-शैव-मीमांसक-और-नास्तिककों-सामिल करके गिनते है, कइ-जैन-बौध-सांख्य-जैमनीय-वैशेषिक-और-योगमतकों मिलाकर षड्दर्शन गिनते है, कितनेक लोग-नैयायिक-और-वैशेषिकों शैवमतमें और कइ वैशेषिकों चलगभी कहते है, कितनेक शैवमतका दूसरा नाम योगमतभी-बोलते है, अद्वैतवादी-और-वेदांती-मीमांसकके अंतर्गत समझना चाहिये, जैन और बौधका बयान इसी किताबके (१४१) पृष्ठसे लगाकर (१८१) तक लिखा गया पढ़ना हो-तो पढ़ लो !-जैनमें श्वेतांबर आम्नाय सबसे प्राचीन है. दि-गंबर मत विक्रमसंवत् (१३९) में निकसा, इन्हींने द्वादशांगसूत्र नमान कर नये ग्रंथ जारी किये, इसलिये इनको जैन-नहीं-जैनाभास-समझना चाहिये, हुंदिये पंथी लोग जो मुखपर कपड़े की पट्टी बांध रखते है ये भी जैन नहीं-जैनाभास समझे, जैनसूत्रोंमें मूर्तिका मनन करना दुरस्त लिखा-इन्होंने-इनकार किया. विक्रमसंवत् (१०९) में-एक लवजी नामके शरुशने मुखपर कपड़े की पट्टी बांधकर इसमतकी नींव-डाली, थोड़े वर्ष हुवे इनमेंसे एक-भीखमजी नामके शरुशने-भीखमपंथ चलाया, मूर्ति नहीं मानना-जैसे हुंदिये लोगोंका मत है इसीतरह भीखमपंथका भी-जान लो, दोनों मत-शास्त्र विरुद्ध होनेसे त्यागने योग्य है.

१८-संवत् (१९२५) में-बूज्यधरणेंद्रसूरिसे लडकर-एक-रत्न-विजयजी यतिने तीनथुईका मत निकाला, उक्त-रत्नविजयजीय-ति-पहिले तो कोइरीज-श्रीपूज्य-बने थे. लेकिन ! जब श्रीपूज्यधरणेंद्र सूरिने राज्यबलसे मुकाम जावरेमें उनका लवाजमा छिनलिया मारेशर्मके साधु बने, संवत् १९२५ के असें खाचरोदगांवमें-पहिला चातुर्मास किया-और-तीनथुईका-मत निकाला, शास्त्रके न-

चनकों-लौप-करना इसकेबराबर कोइपापनही, लोगोंकों भ्रममें डालनेकेलिये कभीकभीयहभी कहदेतेहैंकि-तीनथुइभी सत्यहै, चारभी सत्यहै, लेकिन! यहकहना उनका इसमतलबपरहैकि-हरेक शरुश हमारे मजहबमें दाखिलहो, दुनियाका यह कुदरती नियम हैकि-नयीचीज-चाहेखोटीभी हो-लोग-उसपर आमादा होजाते है, सज्जनोंकी यह कहलावत यादरखो-[सभी घास जल जाय-गो-दूब रहेगी खूब]-अखीरमें झूठेझूठेहीहै. नयेमतकी नयीबात-तीनदिन रहेगी. संवत् (१९२८)में-जब-श्रीमत् श्वेतरसागरजीके साथ-राजेंद्रविजयजीकीचर्चाहोनेका-#इकरारनामा लिखागया-लेकिन! सभामें नही आये-उसदिनसे उनके मतकी जड मालवेमें जमनेनहीपाइ-उज्जेन-इंदोर-और-रतलाम-जोकि-मालवेमें बडेश-हर समझेजातेहै-कोइश्रावकनेइनकोंनहीमंजूरकिये-रतलाममें जैन श्वेतांवर श्रावकोंके(७००) घर-जिसमें. कुल-४०-५०घर-उनके मतमेंदाखिलहुवे, जावरा-खाचरोद-राजगढ-कुकसी-श्राबुआ-मंदसोरबगेराजोछांटेगांवहै उनमें जाकर इन्होंने अपनी तीनथुइकी प्ररुपणा चलाई, नीमच-नीभाडा-आवर-और कुच्छहिस्सा-गुज-रातकी सरहदपर-थराद-वीरमगाव-वगेरामें लोग-उनकेमतमें दाखिलहुवेहै, तीनथुइवालेश्रावक इसबातका ज्यादा अभिमान लाते हैकि-हमारे-गुरुजीने-बडीबहादूरीकिइ, लेकिन! असलपुछोतो-कुच्छभी नहीकिया. (३०)तीसवर्षकी मेहनतसे कुच्छ नतीजा

\* वह इकरारनामा-जिसमें-रतनविजयजीकेहाथकी सही है रतलाममें शेठ-हरखाजी रिखवाजीके-घरखा हुवाहै-उसकी-नकल-जो-(त्रिस्तुतिभतखंडन) फिताब-इमने बनाना-शुरु किइहै उसमें छपेगी.



नहीपाया. सर्वविरतिचारित्रिकिसीके पासनहीलिया. आपही आप बिनागुरुके साधु बने-और-शास्त्रकेवचनकों लोपकर तीनथुइका पंथ निकाला. तोनथुइवाले श्रावक चाहेसो समझे-लेकिन!-और देशके श्रावक इनकों निन्हवोकीपंक्तिमेंगिनतेहै, देखिये! जब कि-सीतरहकी सम्मति-लेनाचाहतेहै तो-कोइदेशके श्रावक-इनकीसं-म्मति नही पुछते, सूरिपदवी किसीने नही दिइ-और-सूरि-बने, वंदितासूत्रकी गाथामें-समदिठीदेवा-पदकों तोडकर-समत्तससि-द्धं-जारीकिया. बगेरा फिजुलबाते पैदाकर अपने आत्माकों पा-पकर्मसें मलीन किया और नाहक फजीतहुवे.

१९-मेरा और राजेंद्रविजयजीका-शहरभमदावादमें-दोधं-टेतक-इठिभाइकीवाडीमें बार्त्तालाप हुवा, बहुतसा प्रसंग तोनथु-इके बारेमेंही चलाथा-अखीरमें उनोंने यही कहाकि-जिसबातकों मैं-जारीकरचूका-उसीकों अपनेमुखमें झूठ कैसे कहसकूं?-कित-नेक तीनथुइवालेश्रावक-कहते है-मुनिश्रीआत्मारामजीनेभी जैनत-त्वादर्थमें-पृष्ठ ( ४१.७ ) पर-तोनथुइ-लिखी है, ( जवाब. )-यहबात बिल्कुल गलतहै. थोडीसमझवालोंकों धोखादेकर बात बनाना-और सामने नही आना-कौनचतराइका कामहै? असलमें जैनत-त्वादर्थका लिखाणही मंदिरके संबंधमेंहै, जब जिनमंदिरके दर्श-नोंकों जाना तब अवकाश थोडाहो-तो-एकएकमंदिरमें एकएक-स्तुति-पढना-अवकाश ज्यादाहोतो-दो-या-तीनभी पढना, देखि-ये!-मतलब क्या था-और-तीनथुइवालोंने किसरास्ते उताराहै?-कहां प्रतिक्रमणकी-बात-और कहां जिनमंदिरकी?-जिसकों संशय हो-एक अलग पुर्जेपर छपवाकर भेजे-छापाद्वाराही उ-

सका जवाब दिया जायगा,

२०.—परिचिके चेले कपिलने सांख्यमतकी नाँव डाली. जैन-मतके पीछे सांख्यमत निकला, कइलोग सांख्यकारिकाको बहुत पुरानी कहते हैं, लेकिन ! उसकी रचना पुरानी विदित नहीहोती, उसके रचयिता इश्वरकृष्णआचार्यने संवत्नही बतलाया—लेकिन रचना नयी है, इसमतमें कपिल—और—आसुरिकेबाद एक संखनामके आचार्यहुवे उसकेनामसे मतका नाम सांख्य कहलाया, पहिले इसकानाम कपिलमत था. सांख्योंका फरमानाहैकि—हमारे मजहबके पचीसतत्व जो कोइ जानेगा, उसकी मुक्ति होगी. चित्तको—सांख्य मतमेंज्ञानसेरहित मानागयाहै. बुद्धि—जड, शब्दादित नुमात्रमें आकाशवगेराकी पैदाश, और पुरुषको बंधमोक्षनही, सिर्फ प्रकृतिही बंधन और छुटकारा पाती है,

२१.—सांख्यमतके साधु गैरवेवस्त्र पढ़ेनते हैं, हाथमें त्रिदंड और बिछानेको मृगछाला, भक्तलोग जब उनको नमस्कार करे [ नमोनारायणाय ] कहे—उसके जवाबमें—वें—[ नारायणाय नमः ] कहतेहैं. सांख्यमतके दोभेद—एक ईश्वरवादी—दूसरे अनीश्वरवादो, कपिल—आसुरि—भार्गव—उलूक—पंचशिख—वरकृष्ण—और—सांख्य—ये—सांख्यमतके आचार्यलोगहैं, माठर—तत्त्वकौमुदी—गौडपाद—आत्रय तंत्र—और—सांख्यसप्तति—ये—इसमतके शास्त्रहैं, प्रत्यक्ष—अनुमान—और—शाब्द—ये—तीन प्रमाण मान्यरखेगये. सांख्योंने वेदकी हिंसाको मंजूरनहोरखी. काशीतर्फ—इनकेसाधु—ज्यादे देखोगे, मस्तकके केश क्षौर करवातेहैं, और जहांतकबने ब्राह्मणके घरकाही भोजन जीमते है,

२२-मीमांसकमतका दूसरानाम-जैमिनीय-समझे, इनमें दोभेद एक-कर्ममीमांसक-दूसरा-ब्रह्ममीमांसक-वेदांतीलोग ब्रह्ममीमांसक-और-भट्टप्रभाकरकों कर्ममीमांसक-समझना चाहिये, इनके साधु-गैरवेवस्त्र-त्रिदंड-मृगचर्म-और-कमंडलु-रखतेहै, कितनेक भी मांसक वेदहीकों परमतत्व कहकर ईश्वरकों नहीमानते. वेदही उनके गुरुहै, जब एक दूसरेके सामने मिलेगे [ संन्यस्तं-संन्यस्तं ] ऐसा शब्द बोलेगें,

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

एकमेवाद्वितीयं स्यात्-ब्रह्मतत्त्वं महाफलं,

प्रपंच स्तंभकुंभादि-स्तेषामते निरर्थकं, ?

इसकामतलब इतनाही है कि-एक-अद्वितीय ब्रह्मतत्त्वही फायदमंद और स्तंभकुंभादि सब-मिथ्याप्रपंचहै, १-कुटीचर-२बहुदक-३, हंस-और-४, परमहंस-ये-इसमतके साधुलोग है, प्रपंच-मिथ्या-और-कठवल्लिका वगेरा-इनके शास्त्रहै,

२३-नैयाचिकमतका दूसरानाम अक्षपादहै, प्रमाण-प्रमेय-संसय-प्रयोजन-दृष्टांत-सिद्धांत-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितंडा-हेत्वाभास-छल-जाति-और-निग्रहस्थान-ये-सोलहपदार्थ इसमतमें मान्यरखेगये है, लकुटीश-कौशिक-गार्ग्य-मैत्र्य-कौरुष-इशान-अपरगार्ग्य-पलांडक-मनुष्यक-अपरकुशिक-अत्रि-पिंगला-क्ष-पुष्यक-वृहदाचार्य-अगस्ति-संतान-राशिकर-विशगुरु-और-रथापर-ये-(१८) अठाराह इनकेबड़ेआचार्य है, जयंताचार्यरचि-

त-न्यायतर्क-तथा-न्यायसार-जिसपर न्यायभूषणटीका है इसमतके मान्यवर शास्त्र समझो-इनकेसाधुलोग-दंड-कंबल-काखमें तुंबी-और-शिरपर जटा रखतेहैं, हमेशा दातूनकरके कुरले करना-कंदमूलफल खाना-और-पंचाग्नितापना-इनका मुख्यधर्म, बहुतसे स्त्री-नही रखते, कोईकोई रखतेभी है, लेकिन ! रखनेवालोंका दर्जा कम, इसमतके गृहस्थ जब उनके साधुओंको मिले जब [ ॐ नमःशिवाय. ] कहे-और-जवाबमें-वें-[ शिवाय नमः ] कहते है,

१४-वैशेषिकमतका दूसरा नाम पाशुपत्य-कहा, नैयायिकमतके-और-इनके साधुओंमें बहुतसी बातें एकसी देखोगे, जो (१८) बड़े आचार्य उपर लिखआये-उनको-येभी मानतेहैं, द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-और-समवाय-ये-छहपदार्थ-इसमतमें मनन कियेगयेहैं, तर्कसंग्रह-मुक्तावली और दिनकरी बगेरामें जोसप्त पदार्थ-कहे-यह-नवीननैयायिककी अपेक्षा समझना-नैयायिक. वैशेषिकोंने अभावको पदार्थ नहीं कहा, श्रीधराचार्यरचित-न्यायकंदली बगेरा-वैशेषिकमतके शास्त्र-है, आत्रेयतंत्रभी इसीमतका शास्त्र था-लेकिन ! विच्छेद होगया. दुखका आत्यंतिक वियोग होना-इसीका नाम मोक्ष हुवा फरमातेहैं, शिवने उलूकरूप धारण करकेकणादमुनिके सामने इसमतका बयान किया इसलिये इसका तीसरा नाम औलूक्यमतभी कहागया.

१५-रामानुजमतसंवत् (११८५) में पैदाहुवा उन्होंने शंकराचार्यजीके मतको बेजा कहा, और सीतारामको भजना पसंद रखा, संवत् (१५१५) में-वल्लभाचार्यजीने राधाकृष्णजीका रासविलास जारी कीया जिससे लोग-तुर्च उनपर रजुहुवे. शैवमार्गी-

योंने-वैश्ववोंका-और-वैश्ववोंने-शैवोंका-खंडनकिया. शैवोंने-भस्म-रुद्राक्ष-और-बाणालिंग-चिन्ह बनाये, वैश्ववोंने-तप्तमुद्रा-तुलसी-गोपीचंदन-और-शालिग्राम-चिन्ह जारीकिये-परस्पर द्वेषबढा और-एकदूसरोंके आक्षेपपर ग्रंथबनने शुरूहुवे, इस्वीसन (१३८०) के असेंमें एककीबरनामके शरूशने पतंजलशास्त्रका सार लेकर कबीरपंथ निकाला, अकबरवादशाहके वख्तमें दादुजीनामके शरूशने दादुपंथ-चलाया. दिल्लीके पास छुडाणीगांवके रहनेवाले गरीबदासजी जाटने गरीबदासपंथ जारीकिया, गुरुगौविंदसिंगजीने निर्मलपंथ चलाया, नानकसाहबके वख्तमें गोरखनाथजीयोगीने कनफटेका मत निकाला. पंजाबदेशमें भाइरामसिंह-सूत्रधारने-कुकापंथ चलाया, दखनमें तुकारामभक्तने भक्तिपंथ निकाला, अंदाज (१२५) वर्षहुवे गुजरातमें स्वामिनारायणमत-प्रचलित हुवा, संवत् (१९३०)के असेंमें दयानंदसरस्वतीने आर्यसमाजमतानिकाला. वेदोंके नयेअर्थ बनाकर असली अर्थकों रद किये.-विश्वपुराणकीरचनाइस्वीसन(१०४५)के-असेंमेंहुइ, दादुपंथीनिश्चलदासजीने विचारसागर-और-वृत्तिप्रभाकर-ग्रंथ बनाये, जिनकों आजकल वेदांतिलोग काममेंलातेहैं. मनुस्मृति भृगुनामकेआचार्यने बनाइ, इसकों बने ( २५०० ) वर्षके अंदाज हुवे, महाभारतमें लिखाहैकि ब्राह्मणोंकी संध्यापाठके प्रभावसें सूर्य उदय होताहै, भागवतमें कृष्णभगवान् फरमाते हैकि-मैं=जितना अग्निस्मृत्य और चंद्रसें खोफ नही लाता उतना ब्राह्मणोंके कोंपसें डरता हूं-असलमें यहलख-ग्रंथकर्त्ताकी अत्युक्ति समझना चाहिये. एककविने-सारे भागवतका सार निचे लिखेहुवे काव्यमें कहदिया—

( देखिये ), आदौदेवकीदेवगर्भजनन-गोपीगृहेवर्द्धनं,  
 मायापूतनजीवितापहरणं-गोवर्द्धनोद्धारणं,  
 कंसछेदनकौरवादिहननं-कुंतीसुतापालनं,  
 एतत्भागवतःपुराणकथनं-श्रीकृष्णलीलास्पदं, १  
 एककविने सारोरामायणकासार-निचे लिखेहुवे काव्यमें-इ-  
 सतरह बयानकिया, ( सुनिये ! )-

आदौरामतपोवनादिगमनं-हृत्वाभृगंकांचनं,  
 वैदेहीहरणं जटायुमरणं-सुग्रीवसंभाषणं,  
 वालीनियग्रहणं समुद्रतरणं-लंकापुरीदाहनं,  
 पश्चात् रावणकुंभकर्णमरणं-एतद्विरामायणं. २

तवारिखफिरस्तेकिताबमें लिखाहैकि-जगन्नाथजीतीर्थका मं-  
 दिर संवत् ( १३७३ ) के असेंमें बनायागया, बद्रीनाथका मंदिर  
 संवत् ( १४०६ ) के असेंमें बना, संस्कृतभाषामें बेरडी वृक्षका  
 नाम-बद्री कहा, -बेरडीयोंके झुंडमें यह तीर्थहोनेसे बद्रीनाथ नाम  
 कहलाया,

२६-नास्तिकमतका दूसरानाम चार्वाक है, चर्वन्ति भक्षयन्ति  
 पुण्यपापादिकं-परोक्षवस्तुजातं-तत्त्वतो-न-मन्यन्ते-इतिचार्वाकाः-  
 शीलतरंगिणी ग्रंथमें लिखाहैकि-एक बृहस्पतिनामका-ब्राह्मण हुवा,  
 उसकी एकबहेन बालविधवा थी. कइरौज बादबृहस्पतिकी स्त्री गु-  
 जर गइ-और-वह कामविकारसें पीडित हुवा तबसें बहेनको कहने

लगा दुनियामें भोगविलासकरना सारचीजहै, बहेनने कहा इससें नरक जानापड़ेगा, और दुनियामें नींदाहोगी, वृहस्पति कहनेलगा, पुन्यपाप-स्वर्ग नरक सब कहनेमात्रहै, कोई स्वर्गनरक नहीं देखआया, पांचतत्वका पुतला मरेबाद खाखहोजाताहै, परलोक जाता-आता-कोई नहीं, हरसुरतसें शरीरको आराम पहुचाना उमदा बातहै, अखीरमें बहेनका मनभी इसबातसें खुश हुवा, दोनों स्त्रीभर्ता बने, और खुलेखुला कहनेलगेकि-शरीरसें शरीरकामिलापहोनेपर क्या हर्ज है, बम ! इसतरहहोते नास्तिकमत फैला, खानापीना भोगविलासकरना-और-आनंद उडाना-किसको अच्छानही लगता ?-बहुतसें लोग इसीसेराजी रहते हैं, फिर ऐसे मतको जड क्यों न फैले ?-लेकिन ! यादरखो !-अज्ञानीयोर्ब बात ज्ञानी कभी नहींमानमकते, पुन्यपाप-और-स्वर्ग नरकका होना-शिवाय नास्तिकके और कोई नहीं फरमाता, जो-लोग-जैनको नास्तिक कहदेतेहैं उनकी भूल समझो, पुन्यपाप-स्वर्गनरक-और-पुक्तिवगेराकोमननकरे कभी नास्तिक नहींसमझेजाते, अगर जैन-लोग-ईश्वरको जगत्काबनानेवाला नहींमानते इसअपेक्षा नास्तिक कहा तो उससे होताक्याहै ? फिजूलबातें बनाकर कोई किसीको बुराफरमावे उनकी समझकीही बुराइहै,

२७-पुसलमानोंकी किताबोंमें लिखाहैकि-हजरतआदमसें पहिलें मनुष्य नहींथे, और जिंदथे-जो चारलाखवर्षपहिलेसें, उनकेबाद शैतानकी औलादने कुछदिन दुनियामें गुजरानकिया, फिर आदम पैदा हुवे, उनकी उमर ( ९३० ) वर्षकी थी, सबसें पहिलेपेगंबर यहोथे, शेष-अद्रेस नूह-हूद-सालह-इब्राहिम-लूत-इ

समाइल-असहक-याकू-बयूसुफ-शअब-मूमा-हारु-अलियास-अलीसय-समयूल-दाउद-मुलेमान-यन्स-जिकरिया-यहिया-इशा-और-मुहम्मदसाहब-इनके पेगंबर हुवे, इनमें मुहम्मदसाहबकों ज्यादाअफजल मानतेहै, किताब कुरानकी आकाशमें इन्हीकेलिये उतरीथी, मुहम्मदसाहबकी बेटी फातमा-दामादअली-और उनके दोबेटे हस्सन-हुसेन-लडाइमें काम आये, ये अपने नानाके मजहबकों फैलाना चाहतेथे, दुश्मनोंने इनकों लडाइमें मारडाले, इनके मृतकबरकीनकल ताजिये कहलाये, फारस और अरबमें ताजिये बनानेकी रमम नही, मुहम्मदसाहबका हिजरीसन मुसल्मानोंमें ज्यादा माना गयाहै, रमजानमहिनेकी तारीख ( २७ ) मीकों कुरानशरीफ आकाशमें उतराथा, तारीख ( १३ ) रबीउलअव्वल-सन ( ११ ) हिजरीके रौज मुहम्मदसाहबका अंतकाल हुवा, उस रौज मुसल्मानलोग-रौजा-रखतेहै,

२८-कुरानमें लिखाहैकि-इसदुनियाकों खुदाने बनाइ, खुदाही नाश करेगा, जो कुछ बंदेकों आराम और तकलीफ होती है खुदाही देताहै, कुरानकों मुसल्मान लोग [ कलामेइलाही ] = (यानी)-इश्वरवाक्य समझते है, [ लाइलाह इल्लीला-मुहम्मदरसूलअल्ला ]-यह मुसल्मानोंका पाक कल्माहै, मतलब इमका इतनाहीहैकि-तू-अल्ला-यानी-परमात्माहै तेरे शिवाय दूसरा कोई नही, मुहम्मद तेरा दूतहै, मुसल्मानोंमें गुरुकों पीर-या-मुर्शिद-और-चेलेका-मुरीद कहतेहै, मौलवी-हाफज-मुल्ला-और-काजी-इनके मजहबी बुजुर्ग है, अरबमें-मक्का-मुसल्मानोंका बडातीर्थ और आबेजमजमका पानी पीना अच्छा समझते है, अरबदेशमें जब-जो



मुसलमान मिलते हैं परस्पर सलामके बदले एकदूशरेका हाथ चूमकर गले लगते हैं, रुमदेशमें जब-दो-मुसलमान मिलते हैं अपनी अपनी छातोपर हाथ रखकर सिर झुकाते हैं, इरानदेशमें जब दो मुसलमान मिलते हैं एकदूसरेसे फरमाते हैं. आपका साया कभा कम नहो,-निश्रीमुसलमान जब आपसमें मिलते हैं तो एकदूसरेसे पूछते हैं आपका पक्षीना किमकदर निकला करता है, अफगानिस्थान-और-हिंदुस्थानके मुसलमान जब मिलते हैं तो कहते हैं [अस्मलामअलेकुम.](यानी) सलामतहो-तुमपर,

२९.-अजमेरमें जिस ख्वाजंसाहबकी दर्गा है हिजरीसन (५२७)मेंसजस्थानमें पैदाहुवे-और हिजरीसन ( ६०७ )में अजमेरमें आये, यहां सैय्यदहुमेनमुशहरीकी लडकीसे उनकी स्यादी हुई, आप मृन्नी-आग-इनके सुमर सियाथे, अखीरसन ( ६२८ ) हिजरीमें अजमेरहीमें उनका अंतकाल हुवा, उनकी वहां दर्गाह बनाई गई, मुसलमानलोगोंका मालभरमें यहाँपर एकमेला भरता है, इजरतइब्राहिमकों अल्लाहतालाका हुकम हुवाथाकि-तूं-अपने बेटे इसमाइलकों राहखुदामें कुरबान करदे, जब उन्होंने उस हुकमकों मंजूरकरलिया और कुरबान करनेकों तयार हुवे-तब-खुदाके हुकमसे फिरस्तेने उनके लडकेकी जगह एक बकरेकोलाकर रखदिया-और-लडकेको बचालिया, उसरौजमें मुसलमानोंमें बकरीइदकी रमम जारीहुई, खुदाका हुकम लडका कतलकरनेका था-लेकिन ! लडकेको कौनकतलकरे गरीबबकरेपर सबकोई मारनेकेलिये आमदा होजातेहैं, हरेक मुसलमानोंको इब्राहिमजीकी पावंदीपर खयालकरना चाहिये, बिदूनहुकम बकरेकी जान लेना

और खुदाके बंदे कहलाना-सौचलो ! कहांतक सच्चदे ? मुसल्मान लोग जो बातबातमें खुदाकी कसमखातेहै अच्छा नहीं करते जिसको अपना पैदाकरनेवाला समझना-उसकी झूठीकसमझपौ खाना ?-इसमें उनकी बेअदबी होतीहै,

३०-इसाइयोंकी किताबोंमें लिखाहैकि-इश्वरने जब्रायेल दूतकों गालीलदेशके-एकनगरमें जो-नामरत-कहलाताथा-किसी कुंआरीके पास भेजा-जिमकी पंगनी यूसफ नाम-दाउदके घरानेके पुरुषमें हुईथी, उम कुंआरीका नाम-मरियम-था. जब्रायेल दूतने आनकर मरियमसे-कहा-है ! मरियम !-परमेश्वर तेरेसंगहै और-स्त्रियोंमें-तू-धन्यहै. मरियम उमकों देखकर कुछ घबराइ, लेकिन !-दूतनेकहा ! मरियम ! मतडर, इश्वरका अनुग्रह तुजपर हुआहै, देख ! तू ! पुत्र जेनेगी, उमका नाम इशा-रखना, मरियमने कहा ! यह किमतरहहोगा ?-में-पुरुषकों नहीं जानती हूं. दूतने कहा-पवित्रआत्मा तुजपर आवेगा-और-सर्वप्रधानकी शक्ति तुजपर छाया करेगी. इसलिये वह पवित्रबालक इश्वरका पुत्र कहावेगा, मरियमने कहा-मैं परमेश्वरकी दासी हूं-पुजकों आपके कहने मुताबिक फलहो, दूत चला गया-मरियमने इश्वरकी तारीफ किइ, और कहा-मेराप्राण-परमेश्वरका गुणानुवाद करताहै. मेरा आत्मा मेरेप्राणकर्त्ता इश्वरसे आनंदित हुवा,

३१-पहिले लिखआये हैकि-मरियमकी स्यादी यूसफसे हुईथी, लेकिन ! उनके इंकटे होनेकेपहिले वह दिखपड़ीकि-पवित्र आत्मासे गर्भवती हुईहै. उसकों कलंक लगाना ठीकनहीं-चूपकेसे छोडदेना चाहिये-इसइरादेमें थाकि-उसीरौज इश्वरके दूतने आ-

नकर यूसुफकोँ ख्वाबमें कहा, हे ! दाउदके संतान यूसुफ ! तू ! अपनीस्त्री मरियमकोँ अपने घरलानेसेँ मतडर !-उसकोँ जो गर्भर-हाई पवित्र आत्मासेँ है, वह पुत्र जनेगी. उसकानाम इशा रखना, वह जगत्कात्राणकर्त्ता होगा, यूसुफने उसीमुआफिक किया, इ-शाका जन्महुवा-लोगोंकी समझमें इशा यूसुफके पुत्र थे-लेकिन ! इशाइयोंके निश्चयमुआफिक इश्वरके पुत्र थे, यूसुफके पिताकानाम एली-था, एलीकेपिताका-पत्तात-पत्तातकेपिता-लेवी-और-ले-वीकेपिता-मलकी-इसतरह इशामे लेकर आदमतक पीढियां गिने तो ( ७६ ) होती है, इशाइमतमें मानाहैकि-आदम प्रथममनुष्य था दुनियाके सबलोग उंसीसेँ पैदाहुवे, आदमकोँ इश्वरने बनाया, बस ! आदमसेँ पहिले कोई नहीं था.

३२-इशा जब-( ३० ) वर्षकी उमरके हुवे एकरोज योहन-नामके भविष्यत्वक्ताके साथ-यर्दननदीके कनारेपर गये, और उसमें डूब लगाई-अर्थात्-स्नानकिया, और तूर्त्त जलके उपर आगये, उसीवरून उनकेलिये स्वर्ग खुलगया, और इश्वरके आ-त्माकोँ कपोतकी तरह आकाशमें उतरते देखा, कहतेहै उसवरून आकाशवाणी हुई-उसमें फरमाया गयाकि-यह-मेरापुत्रहै-में-इस-पर निहायत खुश हूं-इशामसीह उसवरून इश्वरसेँ परिपूर्ण होकर यर्दननदीसेँ लोटे-और फिरतेहुवे जंगलतर्फकोँ गये,

३३-वहां शैतानने आनकर उनकी परीक्षा किई, पहिले यह कहाकि-अगर तुम इश्वरके पुत्रहोतो पथ्थर रोटियां बनजाय, उ-न्होंने जवाब दिया-हे ! शैतान ! सुन !-लिखाहै मनुष्य फक्त रो-टियोंहीसेँ नहीं लेकिन ! हरबातसेँ जो इश्वरके मुखसेँ निकसती है

जियेगा, फिर शैतान-मसीहको एकपवित्रनगरमें लेजाकर एकमंदिरके शिखरपर खड़े किये, और कहा-तुम-अगर इश्वरकेपुत्रहो-तो अपनेआप निचेगिर जाओ-देखें! तुम्हारे हाथपांवको लगता है-या-नहीं?-अगर सच्चे होंगे तो-इश्वरके दूत तुमको हाथोहाथ उठा लेंगे, जवाबमें मसीहने कहा-शैतान! तू-इश्वरकी परीक्षा मत-कर!-फिर शैतानने वहांसे मसीहको एकपहाडपर लेजाकर दुनियाका सवराज्य-और-विभव दिखलाया-और-कहाकि-मुझे सि-रझुकाके सिज्दा करो-तो-ये-सबचीजें तुमकोदेवूंगा, मसीहने जवाब दियाकि-शैतान! दूर हो! और अपने पैदाकरनेवाले इ-श्वरको नमस्कारकर, वस!-इसतरह शैतानके इम्तिहानमें मसीह किसीसुरत बाज नहीं आये, कहते हैं उसवरुत इश्वरके दूतोंनेआ-नकर मसीहकी तारीफ किई और धन्यवाद दिया,

३४-एक वरुत गालीलदेशके कानाननगरमें विवाहका भोज था-वहां-इशाभी गये थे. कहते हैं वहां जब दाखरस खूटगया था मसीहने-छ-बड़ेबड़े जलकेभरे मटके अपनीचमत्कारी विद्यासे दा-खरस बनादिये, एकरौज गालीलदेशके नासरतनगरमें जब म-सीह गये और-उपदेश सुनाया-लोगोंने उन्हींको-गुस्साखाकर बहार निकालदिये. एकदफे-कफर्नाहुननगरमें-एकशरूशके घर-एकआदमीको-भूत लगा था उसको मसीहने निकाला, बात इ-सतरहहुइकि-जब-उसभूतलगेहुवे आदमीके पास पहुंचे-खुद वह भूत बोला-है! इथु!-हमको यहांही रहने दीजिये! आपको हमसे क्या काम? क्या! हमे नाशकरनेकेलिये आये है? मैं-जानताहूं-तुम-इश्वरके पवित्रजन हो, मसीहने कहा-चूप रह!-और इसकेश-

रीरसें बहार निकल आ, भूत-उसीवरुत उस आदमीकों गिरा-  
कर बहारनिकलआया, सबलोग चकित होगये,

३५-एकशहरमें एकशख्शकों कोठ हुआथा-जब मसीहका  
वहांपरजानाहुवा उसने प्रार्थना किइ-मुजे-आप अच्छा करसकते  
है?-मसीहने उसके शरीरपर हाथ फेरा-और-कहा अच्छा होजा!  
तुर्ष उसकाकोठ जातारहा, इसतरह कइरोगीयोंके रोगमिटाये, ए-  
कदफे पहाडपर खडेहोकर उपदेश किया. और स्त्रीष्टोयधर्मकी  
उच्चमता बयान किइ, मसीहका फरमानाथाकि-कोइशख्शने कि-  
सीसबबसें अपनी औरतकों त्यागदिइहो-उससें दूसरा विवाहकरे  
वह परस्त्रीगमनकरनेवालाहै, भलमनसाइसें चलना और गमखाना  
किसीघुरत बुरानही, तुम किसीचीजकी चिंता क्यों करते न  
धर्मकी खोज करो-इश्वरकी तर्फसें सबचीजें तुमकों दिइजायग

२६-एकदफे मसीह नाइननगरकों जाते थे-शाथमें कइचेले  
और आदमीभो थे, जब-वें-उसनगरके पास पहुंचे जहां-एकविध-  
वाके मरेहुवेलडकेकों लोग कंधेपर धरके मशानकों लेजाते थे-उ-  
सकीमाता रोतीहुइ पीछे जारहोथी-कहते है ममीहने उसके पास  
जाकर कहा-है! जवान! मैं! कहताहूं-तूं! उठ उसीवरुत मराहु-  
वा लडका जींदाहोकर उठखड़ाहुवा-और-उसकी माकों सोंपदि-  
आगया, यहूदीयोंमें और दूसरेदेशोंमें यहबात फैलगइ-लोग बडे  
खुश हुवे, कइजगह औरतोंके भून निकाले, अंधोंकों अच्छेकिये,  
लंगडोंकों चलतेबनाये, उनके शिष्योंका कहनाहकि-मसीहने जि-  
तने आश्चर्यकाम किये-पूरीतौरसें-लिखे नहीगये. एकदफे गाली-  
लदेशमें होतेहुवे जब मसीह जाते थे अपने शिष्योंकों फरमायाथा-

कि-मनुष्योंका पुत्र मनुष्योंके हाथ पकड़ाया जायगा-वें-उसकों मारडालेंगे, और फिर वह मराहुवा तांसरेरौज जीउठेगा, शिष्यों ने नही समझाकि-किसके बारेम-और-क्या! फरमाते हैं! पूरीतौरसें पुछनेकों डरतेभी थे इसलिये ज्यादा नही पुछा. मसीह फरमातेथेकि-मैं-इश्वरका-भेजाहुवा-और-जगतका प्रकाशक हूं-मेरे पोछे चलेगा अंधकारमें नही गिरेगा,

२७-मसीह जब यरूशलीमनगरमें गये वहां उपदेश सुनाया जिसतरह दुश्मनोंद्वारा पकड़ाये गये-और-क्रूसपर प्राण त्यागकिये उसका हाल सुनिये!-मसीहके बारांह चेले थे, उनमें एक-यहूदा-इस्करीयूतीनामकाभी शिष्य था, वह एकरौज-प्रधानप्याजकोंके पासजाकर मिला, और कहनेलगा अगरमें मसीहकों आपके हाथ पकडवा दूं-तो-आपलोग मुजे क्या देंगे? उन्होंने उसकों ( ३० ) रुपये देनाठहराये, बस! इतनेहीपर वह राजीहुवा-और मसीहके पकडवानेके उपावमें लगा, एकरौज गेतशिमनीस्थानमें मसीह गये थे-मौका देखकर-यहूदाशिष्य-प्रधानप्याजकोंको-और-फरीसीयों ( कपटीमनुष्यों ) की-तर्फसें प्यादोंकों लेकर आया, मसीह ज्ञानीथे-उनोंने जान लियाकि-मुजकों पकडनेकेलिये आये है, कहा! किसकों ढुंढतेहो?-उनोंने कहा-इशूनासरीकों-मसीहने कहा वह-मैं-हूं, यहूदीयोंके प्यादोंने उनकों पकडकर बांधे-और-पहिले उनकों प्रधानप्याजकोंके बडे शिरदार हन्नसके पासलेगये,

२८-हन्नसने-उनकों महाप्याजकोंके पास भेजे, वहां पुछा गयाकि-क्या? तुम इश्वरके पुत्रहो?-मसीहने कहा-हां! तब महा-

\* यहूदीयोंके पूजारी.

याजकोंने उनकों दोषके योग्य ठहराये. कोइकोइ उनपर थूकने लगे, और कहा भविष्यत्वाणी बोल! ऐसा क कर बहुतसी नौ-दाकिइ, फिर रूमीयोंकी तर्फसें जो-पिलात-आर-हिरोद-गवर्न-रजनरल थे उनकेसामने मसीहका विचारहोना थुरु हुवा, पिला-तने उनकों बचानेकेलिये बहुतेरे उपाय किये-लेकिन! अस्वीरमें प्राणदंड देनेकी आज्ञा दिइ, अध्यक्षके योद्धाओने मसीहकों अ-ध्यक्षभुवनमें लेजाकर सारी पल्टन उनकेपास इकठी किइ, लाल-बागा पहिनाकर कांटोंका मुकुट उनकेसिरपर रखा, और घुटने टेककर ठट्टा कियाकि-हैं! यहूदीयोंक राजा! प्रणाम!-पिलातने फिरभी कहा-मैं-इनमें दोष-नही पाताहूं तुम जानो! यहूदीयोंने कहा-हमारी व्यवस्थाके मुताबिक यह वधकरने योग्यहै, क्योंकि इसने अपनेकों इश्वरका पुत्र कहा. जो इसे छोडना चाहते है\* कैसरके मित्र नही. अस्वीरमें पिलातने उनकों क्रूशपरचढाये जा-नेकेलिये-सोंपा. वें-उनकों लालबागा उतारकर असलीकपड़े प-हिना क्रूशपर चढानेकों लेगये,

२९-उसवख्त वहां लोगोंकी बड़ीभीड थी, बहुतस्त्रियों वि-लाप करती थी. मसीहने उनकीतर्फ देखकर कहा, मेरेलिये कोइ मतरोओ! धर्मपुस्तकोंका यह वचनपुरा हुवाकि-वह कुकर्मीयोंके संग गिनाजायगा, क्रूशपर चढायेजानेकेबाद प्रधानयाजकोंने अ-ध्यापकोंके संग ठट्टा कियाकि-क्या!-जिसने औरोंकों बचाया, अपने आपको नहीबचासकता! जब दोपहर हुवा सारेदेशमें ती-नघंटेतक अंधकार रहा. तीसरेपहर मसीहने बडे शब्दसें पुकारके

\* रूमीरान्यके मशाराजा थे.

कहा, है! मेरे इश्वर! तूने क्यों मुझे त्यागा है? मैं-अपना आत्मा ते-  
रे हाथमें सोपता हूं, ऐसा कहकर प्राण त्यागे, उनके सरीरकों यहू-  
दीयोंकी रीतिमुआफिक कब्रमें रखा गया, कहते हैं तोसरे रोज  
उनका पुनरुत्थान हुवा ( यानी ) फिर जीउठे, और ( ४० ) रोज  
तक फिर दुनियामें रहे, कई आश्चर्यकाम किये, और अखीरमें चे-  
ल्लोंको यह आज्ञा फरमागये कि-तुम! दुनियाको उपदेश करो, जो  
कोई विश्वास लायगा. उसका त्राण होगा, मैं-पृथ्वीकी अंततक  
तुमारे संगह, ऐसा कहकर स्वर्गमें गये और इश्वरकी दाहनीतर्फ  
बैठे, यह बयान-मत्ती-मार्क-लूक-और-योहानलिखित इशुस्त्रीष्ट-  
जीवनवृत्तांत किताबसे लिया गया, जिनको ज्यादे हालदेखनाहो  
उक्त किताब देखले, इसाइलोगोंका फरमाना है कि-जगत-इश्वरने  
अपनी कुदरतसे बनाया, बाइबल उनकी धर्मपुस्तक है, इसाइमत-  
का बयान पुरा हुवा,

३०-एकविद्वान् ऐसे शहरमें गया जहां विद्याकी पूरी तेजी  
थी. शहरमें घुसते ही उसे एकमच्छीमारकी लडकी मिली, -उससे  
पुछा तूं-किसकी लडकी है? उसने जवाब दिया, जलमध्ये दीयते  
दानं-प्रतिग्राही न जीवति-दातारो नरकं याति-तस्य कुलेहं बालि-  
का, १, आगे बढ़नेपर भीस्तीकी लडकी मिली, पुछा गया तूं-कौ-  
न है? उसने जवाब दिया-चतुर्मुखी-नतो ब्रह्मा-वृषभारूढो न शं-  
करः तोयधरा नतो मेघः तस्य कुलेहं बालिका, २, अगाडी चलने  
पर दरजीकी लडकी मिली. उसको पुछा तूं कौन है?-(जवाब दि-  
या)-ग्रोवाशीर्षे न विद्येते-हस्तपाद विवर्जितः सजीवं पुरुषं अत्ति-  
तस्य कुलेहं बालिका. ३, अगाडी जानेपर सुधारकी लडकी मि-



ली. पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाब दिया, यंत्रेतंत्रविधिं नित्यं करोति खंडखंडतां-राजाप्रजा न जानाति-तस्य कुलेहं बालिका, ४, अगाडी बढनेपर लुहारकी लडकी मिली उसको पुछा तूं कौनहै? ( जवाब दिया.) स्वासोत्स्वासंच गृण्णाति-जीवंतंइवसर्वदा कुटुंबे कलहो यत्र-तस्यकुलेहं बालिका, ५, अगाडी चलनेपर कुंभारकी लडकी मिली. पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाबदिया-पर्वताग्रै रथोयाति-भूमां तिष्ठति मारथिः-चलते वायुवेगेन-तस्यकुलेहं बालिका, ६. अगाडी जानेपर लेखककी लडकी मिली, पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाबदिया-कृष्णमुखी न मार्जारो-द्विजिव्हा न चसर्पिणी-पंचभर्ता न पांचाली-तस्य कुलेहं बालिका, ७,

३१-अगाडी गया तो-कुवेपर एक औरत जल भररही थी. पामजाकर कहा-पानीयं पातुमिच्छामि-त्वत्तःकमललोचने!-दास्यसि चेन-इच्छामि-नौदास्यसि चदेहिमें-८ ( अर्थः)-हैं! कमल समान अच्छेनेत्रोंवाली! मैं! पानी पीनाचाहताहूं-अगर देयगी तो नही लुंगा-नही देयगीतो जरूर लुंगा, दूसरा अर्थ यह निकलता हैकि-अगर तूं! किसीकी दासी है-तो-जल नही पिउंगा-अगर अच्छे खानदानकी औरतहूँ-तो-जरूर पिउंगा, निदान! उससे जल पोइकर अगाडी बढा, रास्तेमें एक लेखकवाहक मिला. उससे पुछागया क्या-चीजलिये जाताहै ( उसने जवाबदिया. )-अपदोदूरगामीच-साक्षरो नचपंडितः-अमुखः स्फुटवक्ता च-यो जानाति स पंडितः (९) विद्वान् समझ गया इसके हाथमें लेखपत्रहै, राज्यमहेलतक पहुंचा तो एक व्याकरणकापढा हुवा पंडित मिला, उससे पुछा आप किस स्थितिमेंहै? उसने जवाबदिया-द्वंद्वो द्वि-

गुरपि चाहं-मद्गेहे निखमव्ययीभावः-तत्पुरुष ! कर्मधारय !-येना-  
हंस्यां बहुवीहिः १०-मेरेघरमें-मैं-और-मेरीऔरत सिर्फ दोही  
मनुष्य-और-दो-गौ-है-रुपये पैसेके अभावसें असल अव्ययीभाव  
समाम मेरेघरवर्त्तरहाहै. इसलिये ऐसा उपाव बतलाइये जिससें-में  
बहुव्रीहिसमासवालाबनु-अर्थात् मेरेघर धनधान्यकी बढवारी हो,  
इसछंदमें छतरहके समासभी कहदिये और अपना मतलबभी खो-  
लदिया, विद्वान्ने जवाबदिया, महाशय ! विद्या और लक्ष्मीकी  
अकसर लडाइ रहती है, लेकिन ! याद रहे ! लक्ष्मी-विद्याकी दा-  
सी है, रुपये पैसेपर जबतक हर्फ नही उकेरे जाते कामनही देते,-  
इसलिये सबुतहुवा विद्या-बडीचीजहै,

३२-मनकी इच्छाबिदूनभी जो अधर्मीकों मानदेना पडताहै  
उसमें मोहनीकर्मका उदय जानना, झूठीहुंडी-नोट-झूठदस्तावेज-  
और झूठाशिका-बनाना महापापहै, इसमें स्थूलमृषावाद विरमण-  
व्रत टूटजाताहै, जुआखेलनेका त्याग आठमेव्रतमें-मांस और म-  
दिराका त्याग सातमेव्रतमें-शिकार और चौराका त्याग पहिले  
तोसरमें-और-वेश्यापरस्त्री निषेध चतुर्थव्रतमें दाखिलहै, तमाखूकी  
बीडी खादिमआहारमें होनेसें दुविहारकेप्रत्याख्यानवाला पियेतो  
बेमुनासिब नही, लेकिन ! तमाखू एकीलीहोनाचाहिये, दूसरीत-  
रहका मसाला जैसे चिलम-या-हुक्केकी-तमाखूमें मिलायाजाताहै  
ऐसाहोनाठीकनही, तमाखू-चलम-और-हुक्का-तीनोंही असलमें  
सागदेने योग्यहै.

३३-पंचाशकसूत्रकी टीकामें खुलासाहैकि-जोशरूखा-जिन-

मंदिरकी नैकीसे नौकरीकरे-सूत्रधार-या-रंगरौशनकरनेवाला नैकीसे जिनमंदिरका कामकरे और देवकेखजानेमें तनखाह लेकर खावेतो कोईपाप नहीं, हरामखोरीसे जालसाइसे बदनियत-या-चौरीसे-देवद्रव्यखायगा महापापका बंधकरेगा,कोइशरूख लिखारी है,और नैकीसे धर्मपुस्तक लिखकर ज्ञानद्रव्य लेवे उसकोभीकोइ पाप नहीं, कोईश्रावक जिनमंदिरकी नैकीसे नौकरीबजाकर देवद्रव्य खावे तो-वह-देवद्रव्य-नहीं अपनी नौकरीके दामहै इसलिये उसकेखानेमेंकोइहर्जनही, श्रावकलोग मंदिरकी नौकरीकरनेसे परहेज इसलियेकरतेहैंकि-स्यात्-कभी बदनियतसे देवद्रव्य खाया जायगा तोअच्छीनहीं, लेकिन!जोशरूख बदनियत न करे-और अपनेआत्माकोबचाकर नौकरी करेतोउसको व्याजबीतनखाहलेनेमें कोईहर्जनही,हरेकमंदिरमें नौकरोंकी तनखाह व्याजबीतरहसे मुकरकरनीचाहिये जिसमें उनलोगोंकीनियत ठीकरहे और देवद्रव्यकाबिगाड नहो-चावलबदामवगेराको बेचकरभंडारमेंजमाकरानाचाहिये-मीठाइ-और हरेफलवगेरा-नौकरोंको-देदेना,लेकिन! एकहीपरनियतनहीं जो-नैकनियतहो उसकोदेनाअच्छा-कइगांव नगरोंमें-यतिऔर श्रावकवगेरा-मंदिरकी चीजोंसे अपनेनिजका काम लेतेहैं महापापबंध करतेहैं,अगर कोइको जरूरतहोतो-मंदिरउके खजानेमें उसका व्याजबी किरायादेकर काममें लावे कुछहरकत नहीं,बिनाकिरायादिधे देवमंदिरकी कोइचीज उपयोगमें लाना बड़ेपापबंधकाकारणहै.

३४-जैनआगमके कितनेकनाम इसीकिताबके(१७१)पृष्ठपर

लिखेगयेहै. औरभी-मुनिये!?, उपदेशमाला-२, प्रवचनसारोद्धार-३, वसुदेवहिंद-४, धर्मरत्न-५, पंचाशक-६, उपमीतिभवप्रपंच-७, अंगविद्या-( इसमेंनिमित्तज्ञानकाबयानहै )-८, भद्रबाहुसंहिता-( विच्छेद होगइ. ) ९, चंद्रोन्मीलन-और-१०, मेघमहोदधि-( इनदोनोंमेंभीनिमित्तज्ञानहै )-११, सम्मतितर्क-१२, स्याद्वादरत्नाकरावतारिका-१३, अनेकांतजयपताका-१४, स्याद्वादमंजरी-१५, षड्दर्शनसमुच्चय-१६, प्रमाणसुंदर-१७, हेतुखंडन-( ये सातग्रंथ तार्किकोंके पढनेलाइकहै )-१८, हेमचंद्राचार्यरचितजैनद्रव्याकरण-१९, चंद्रप्रभा-२०, बुद्धिसागर-तथा २१-विनयविजयराचितव्याकरण-( ये चार शाब्दिकोंको पठनकरनेयोग्यहै. )-२२, हैमीनाममाला-२३, हैमनिघंटु-२४, हैमलिंगानुशासन-२५, अनेकार्थनाममाला, २६, देशीयनाममाला और-२७, पायलच्छी-( ये छहग्रंथ कोशग्रंथोंके शिरोमणि है. )-अमर-कोश-बौद्धाचार्योंकाहै, जैनका-नहीं. २८, द्वाधायकाव्य-तथा-२९, मेरुतुंगाचार्यरचित-नेमिदूत वगेरा-कइ काव्यग्रंथहै-कहांतक लिखे, ३०-हेमचंद्राचार्यरचित-अलंकारचूडामणि-तथा-३१, वाग्भट्टालंकार-रसीकग्रंथहै, -३२, योगशास्त्र-३३, योगबिंदु-३४, योगविंशति-३५-अध्यात्मबिंदु-तथा-३६, योगदृष्टिमसुच्चय-( ये पांचशास्त्र योगकों प्रतिपादनकरनेवाले है. ) ३७, ज्योतिष्करंडक-३८, आरंभसिद्धि-३९, त्रलोक्यप्रकाश-४०, जन्मांभोधि-४१, भुवनप्रदीप-४२, यंत्रराज-४३, प्रतिष्ठाकल्प-और-४४, नारचंद्र ( ये-आठग्रंथ-ज्योतिष् और निमित्तज्ञानके प्रकाशकहै. ) ४५, नमस्कारकल्प-४६, सूरिमंत्रकल्प-४७, वर्द्धमानविद्या-४८, रिषि-

मंडल-४९, शक्रस्तवकल्प-५०, लोगस्सकल्प-५१, भक्तामरकल्प  
 ५२, पद्मावतीकल्प-५३, चक्रेश्वरीकल्प-५४-अपराजितमहाविद्या  
 ५५, रोगापहारिणी-५६, विषापहारिणी-५७, बंधमोक्षिणी-५८  
 श्रीसंपादिनी-५९, परविद्याउच्छेदिनी-६०-दोषनिर्नाशिनी-और  
 ६१, अशिवोपशमिनी महाविद्या-( ये-सतरांह-ग्रंथ-मंत्रविद्याके  
 प्रतिपादक है, )-घंटाकर्ण-और-वसुयारा-बौद्धमतकेग्रंथहै जै-  
 नके नहीं,

३५-(६२), औषधिकल्प-६३, युगप्रधानगंडिका-६४, ल-  
 लितविस्तरा-६५, तत्त्वार्थ-६६, उच्चाटनसूत्र-६७, समुपस्थापन-  
 सूत्र-६८, पूजाप्रकरण-६९, अष्टक-७०, षोडशक-७१, अंगुल-  
 सप्तति-७२, कालसप्तति-७३, संबोधसप्तति-७४, हेमचंद्रचरितद्व-  
 त्रिंशका-७५, सिद्धसेनदिवाकररचितद्वात्रिंशका-७६, यशोविजय-  
 कृतद्वात्रिंशका-७७, भवभावना-७८, धर्मबिंदु-७९, ज्ञानबिंदु-८०  
 उपदेशपद-८१, कर्मग्रंथ-८२, क्षेत्रसमास-८३ द्वादशारनयचक्र-  
 ८४, नयप्रदीप-८५, प्रशमरति-८६, पंचवस्तु-८७, विवेकविलास  
 ८८, लोकप्रकाश-८९, हैमन्यास-९० त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित-  
 ९१, प्रभाविकचरित-९२, आचारदिनकर-९३, आचारप्रदीप-  
 ९४, वृंदारवृत्ति-९५, श्राद्धकौमुदी-९६, श्राद्धदिनकर-९७, ध-  
 र्मपरिक्षा-९८, लोकतत्त्वनिर्णय-९९, सिंधूरप्रकर-१००, कर्पूरप्र-  
 कर-१०१, हिंगुलप्रकर-१०२, शांतिचरित-१०३, पार्श्वचरित-  
 १०४, श्रीपालचरित-१०५, समरादित्य-१०६, भुवनभानु-१०७  
 श्रेणिक-१०८, अभयकुमार-१०९, कुमारपाल-और-११० पांड-  
 वचरित-१११, अर्हन्तीति, (इसमें दीवानी फौजदारीके कानून

है.) टीका-भाष्य-निर्युक्ति-चूर्ण-वगेराकी गिनतीकरे-या-संपूर्ण जैनग्रंथोका बर्ननलिखे तो बहुतकुछअर्सा-और-स्थानचाहिये, इसलिये इतनेहीमें संकोचकरके दिग्दर्शन कियाहै,

३६-यह हरवखतयाद रखोकि-अशुभकर्मके उदयसे व्यापारमें नुकशान और शुभकर्मके उदयसे फायदा होताहै, मनपसंदकी चीज न मिलना यही जीवोंको दुःखका कारणहै लेकिन! उसके मिटानेका उपाय-शिवाय-संतोषके और कोईनहीं. झुरते क्यों हो? देवगुरुधर्मकी सेवाकरो इसीसे अच्छा होगा. अपने आत्माको पापकर्मसे बचाना इसकानाम स्वदया और दूसरेजीवोंके प्राणोंकी रक्षाकरना इसकानाम परदयाहै, मनके इरादे बिदून जो कार्यकरोगे उसमें हिंसाहोगी-बहु द्रव्यहिंसाहै भावहिंसा नहीं, भावहिंसा बिदून पाप नहीं, संसारका स्वरूप देखकर जो तुमको हानीयोके वचनोंपर आस्तिकभाव पैदा होताहै उसीका नाम सम्यक्तकी दिप्ति जानो, जब तीर्थोंकी यात्राको जातेहो-या-शास्त्रसुनने बैठतेहो-उसवख्त जो तुमारे रोमरोम प्रफुलित होजाते है उसीकानाम सम्यक्तकी लहेर समझो. पुन्य-या-पापकर्मका-बंधहोना-मनःपरिणामके तालुक है. एकसरखी क्रिया करतेहुवेभी-सम्यक्ती-और-मिथ्यात्वीमें-इतनाफर्क हैकि-एकज्ञानी-और-दूसरा अज्ञानी,—

३७-कोई मर्द-या-औरत-अपने प्यारेके मरे पोछे-शोकसंताप न रखकर सौनापीटना-न-करेतो बतलाओ उसने लोकविरुद्ध किया-या-नहीं? जवाबमें कहा जायगा. लोकविरुद्ध नहीं बल्किन् ! अच्छा किया, कइ औरतें ऐसोहैं जो पतिकेमरे बाद

वर्षरौजपीछेभी शोकरखकर देवदर्शन-तीर्थयात्रा-और-व्याख्यान सुनने नही जाती-बतलाओ ज्ञानीयोंके ज्ञानमे वह गुनहगार है-या-नही ?-( जवाबमें ) कहाजायगा गुनहगारहै, कइदेशमें औरतें पर्देनसोन रहती है उनमेंसे किसीनेदेवदर्शनतीर्थयात्रा-और-व्याख्यान सभामें आते पर्दा नहींकिया बतलाओ उसने लोक-विरुद्ध नहीं जवाबमें कहा जायगा-लोकविरुद्ध नही बल्किन् ! अच्छाकिया, वह रसम किसकामको जिससे धर्मको धक्का पहुचे, कइमर्द और औरत-शोकके कारण-प्रभावना-या-स्वधर्मावात्सल्यमें सामील नही होते, बतलाओ ज्ञानीयोंके ज्ञानमें-वै-दोषकेभागीहै-या-नही ? ( जवाबमें ) कहा जायगा दोषके भागीहै,

३८-शोककेवरुत्त धर्मकरना समझदारोंका कामहै, जिसवरुत्त तुमाराअत्यंतस्नेही मनुष्य याद आजाय शिवाय ज्ञानचर्चाके औरकुच्छ खयालमें मतलाओं, और दिलकों नसीयतदंतेरहोकि-मोह करना मुनासिब नही, भोजनका स्थाल तयार है लेकिन ! तुमारे भाग्यमें नहोगातो घरा रहेगा. खूब सुरत औरत मौजूदहै लेकिन-तुमारे भोगावलीकर्मका अभाव होगा तो कभी उपभोगमें न आसकेगी. इसीतरह खूबसुरत-मर्द विद्यमान होतेहुवेभी औरत उससे भोग-या-संयोग-हामिल-न करसकेगी. उमदापलंग बिछाहुवाहै लेकिन ! तुमारे भाग्यमें न होगाता हर्गिज उसपरन-सोय सकोगे, धनदौलत-पकान-ओर गहनेकपड़े-बहुतथे-लेकिन! तुमारेभाग्यमें नही थे इसलिये हाथसें चलैगये-सौच क्यों करतेहो जानकार होकर अज्ञानी बनना है तो मरजी तुमारी !

अन्नं नास्त्युदकं नास्ति—नास्ति मुद्गयुगंधरी,  
धान्येषु लवणं नास्ति—तन्नास्ति यद्विभूज्यते, !

दुनियामें दुखी वह समझाजाताहै जिसकेघर खानपानकेलिये  
अन्नजल-और-नमकभी-नही, तुमारेघर सबकुछहै फिर किसबा-  
तसें दुखी समझतेहो ? यूँतो संसारमें सब दुखी है, तनक ज्ञान दृ-  
ष्टिमें विचार लो, और थीरशांत बनो,

३९-जिसकेशाथ पहिले तुमारा दोस्ताना हो-और-पीछेसें  
विनाकारण दूट जाय तो समझलो ! तुमने पूर्वभवमें बेगुनाहै उन-  
केशाथ विरोधकियाथा, जिसका तुम बुराकरो-और-बो-तुमकों  
चाहेतो जानलो पूर्वभवमें तुमने उसपर रहेम किइथी, जिसें देख-  
कर तुमको राग उत्पन्नहो-वह-तुमारा पूर्वभवका हितकारी-और  
जिसकों देखकर द्वेष आवे पूर्वभवका द्वेषी समझो, रागद्वेषकों क-  
मकरनेका उपाय लेना अच्छा है, सत्तामें तो ग्यारह बारहमें गुण  
स्थानपर पहुंचोगे रागद्वेषका नाश होगा. कइदेशोंमें ऐसारिवाज  
देखागया जब कोई पर्दानसीन औरत जिनमंदिरमें दर्शनको जावे  
तब अपनेशाथकीदासीयोंकोभी प्रतिमाजीके सामनेतक लेजातीहै  
बतलाओ ! यह बें अदबीका कामहै या-नही ? [ जवाबमें ] कहा  
जायगा बेशक ! बेंअदबीकाकामहै, अगर मंदिरके बहार रखकर  
जावेतो बेंअदबी नही. दासदासी एकतरहकी चपरास है, देवदर-  
बारमें मानकों निचा करके जाना चाहिये इसोतरह गुरुके मका-  
नमेंभी अदबरखकर जाना ठीकहै, अगर सवालकियाजायकि-दा-  
सदासीकोभी धर्मप्राप्तिहोजायगी इसलिये-मंदिरमें और-गुरुओंकी



व्याख्यानसभामें साथ लेजानेसें क्या हर्ज है? ( जवाब )-साथ लेजानेसें देवगुरुकी अवज्ञा होगी, तुम मंदिरमें-या-गुरुओंकेसामने पहुचचुके-आर-पीछेसें कुच्छदेरके बाद आवे तो हर्जनही. क-इदेशोमें बडे घरानेकी स्त्रीये-साथलाइहुइ दासीयोंद्वारा साधुलोगों-सें अर्जकराती है कि-मुजे-प्रत्याख्यान-कराइये. कहिये! उसने गुरुकी बें अदबी किइ-या-नही? ( जवाबमें ) कहा जायगा बेशक ! बेंअदबी किइ, खुद अपने मुखसें बोलना चाहिये-पास खडेहुवे-सासु-सुसरेकी शमे-न-कर-और-साफमाफ-बोले तो क्या हर्ज है ?-सासुसुसरेसे गुरुओंका दर्जा-बढकरहै,-देवगुरुके सामने संसारीक मगोंकों ताजीमदेनेसें अविनय किया मबुत होगा, दुनिया दिवानी है इसका लिहाज करके लोकोत्तर पुरुषोंका अविनय करना ठीक नही.

४०-जैन शास्त्रोंमें जो-निन्हव-सात कहे गये है-मो-उपलक्षण मात्र जानना. जैसे दशअच्छेरेके शिवाय कइ ओरभी हुवे लेकिन ! सामान्य रुपसें दशही कहे गये-सतीस्त्रीये अनेक हुइ लेकिन!मुख्यताकरके सोलहकहीगइ,ऐमेनिन्हवभी कइहुवे-और-होयगें लेकिन ! मुख्यतासें सातही कहे गये इस जमानेमें भारतक्षेत्रके जीवोंकों-क्षायिकसम्यक्त-अवधिज्ञान-और- जातिस्मर्णज्ञान-नही होसकता, सबबकि-विच्छेद हो गये. ग्यारहमें गुणस्थानपर कषासु का उपशम होता है तोभी वहांसें जो गिरना फरमाया-सबब-उसका मिथ्यात्वका उदय जानो. आत्माके उत्तम अध्यवसायका नाम गुणस्थान कहा, अव्यक्त मिथ्यात्वसें व्यक्तमिथ्यात्वमें आना इसीअपेक्षा-प्रथमगुणस्थान कहागया, छठेगुणस्थानसे लेकर चौ-

दहमें गुणस्थानतक बर्तनेवाले साधुपदमें गिनेजाते हैं, जैनशास्त्रोंमें जिसजिस मतका बयान आया-और उनकों-मिथ्या-कहे गये सबव उसकायदजानो-वें-झूठे हैं उनके तत्व युक्तिप्रमाणसे खंडित हो जाते हैं, और-उनके मननकियेहुवे देव-रागद्वेष करके ग्रस्तहै.

४१-चलती सवारीमें-सामायिक-प्रतिक्रमण-करना मुनासि-बनही. जमीनपर स्थिर होकर करना चाहिये. दृष्टसे-या-कीलसे बंधा हुवा जहाजभी स्थिर नहीं कहा जाता-मुनासिबहै निचे उ-तरकर सामायिक बगेरा करना, चेडाराजा और कौणिककी जब बाराह वर्षतक लडाइ हुई उस वख्तभी हाथीपरसे उतरकर चेडा राजाने प्रतिक्रमण किया लिखा है, धन्यवाद देना चाहिये ऐसे पुरुषोंकी धर्मक्रियाकों-जो-लडाइके वख्तभी-धर्मकों नहीं भूलते थे. आजकल कइ लोग कहदेने हैं हमकों फुरमत नहीं मिलती लेकिन ! यह सब झूठे बहाने हैं, हजारकार्य छोडकर जैसे एश आराममें लीन होतेहो-अगर-देवगुरुधर्मपर सच्चारण होतातो उ-नपरभी लीन रहते.

४२-जीवति-जीविष्यतिचेति-जीवः-चैतन्यलक्षणो जीवः-तद्दीपरीतः अजीवः-१. पुनाति पवित्रीकरोति आत्मानं इतिपुन्यं, [ अन्नं पानं च वस्त्रं=आलयःशयनासनं-शुश्रूषा वंदनं तुष्टिः-पुन्यं नव विधंस्मृतं, ]-२, पातयति आत्मानं इतिपापं, ३, आश्र-वंति प्रविशंति आत्मनि कर्माणियेन-स आश्रवः-४, संव्रियते प्रा-णातिपातादि-पापकारणं येन परिणामेन-स-संवरः-५, कर्मणां प रिज्ञाटनं निर्जरा, ६, जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलान् आदत्ते यत् स बंधः मोचनं कर्मपाशावियोजनं आत्मनो-मोक्षः,-७,अन उसका

नाम जिससे मनके परिणाम स्थिर किये जाय द्रव्यमनरूपी-और-भावमन-अरूपी-कहा, कितनेक लोग आगकी धुनीके सामने बैठकर ध्यान करते हैं और कहते हैं देखो ! ध्यानका प्रताप हमे आगभी नहीं सताती, असलमें-वै-लोग-एकतरहकी जड़ोंके जलमें घीसके शरीरपर लेंप करके बैठते हैं, वनस्पतियोंमें कइ ऐसीभी है जो चौरासोधुनी लगाकर सामने बैठो आग बिल्कुल न सतायगी, अगर आकका दूध-या-कदलीका रस-कुमारीवना-स्पतिके-रसमें मिलाकर शरीरपर लेंपकरलो-और-आगकी एक धुनीके सामने बैठजाओ-आशा है आगसें न जलागे, पीप-का-लीमीरच-और-सोंठ-खून चवाचवाकर खाओ-और-उपरसें तुर्त आगके इंगारे मुखमें लेलो, आशा है नहीं जलागे,-

४३-अंकोलके तेलमें ऐसीताकतहै कि-जिसजिसवृक्षके बीजोंको इसमें भीगोंकर जमीनमें बोदिये जायतो आशा है पहरभरमें वृक्ष उत्पन्न होसकेगा, वाजीगर लोग देखेंहोंगें इसीमें काम लिया करते हैं, हडताल-मिंदूर-और-आसगंध-कदलीके रसमें पीसकर-जो-खी-तिलककरेगी-और-जहां जायगी इज्जत पायगी, भृंगराज-अपामार्ग लज्जालू-और-सहदेवी-जलमें पीसकर-जो-श-खश-तिलक करेगा-और-जहां जायगा इज्जत पायगा.

४४-( पंच समवायका बयान. )-१, काल-२, स्वभाव-३, नियति-४, उद्यम-और-५, कर्म-इनपांचोंमें कौन ताकतवर-और कौन-कमजोर रहेगा, सुनिये !

( कालवादी कहताहै. )

कालः स्रजति भूतानि-कालः संहरति प्रजाः,

कालः सुप्तेषु जागर्ति—कालोहि दुरतिक्रमः, १,  
 फलंति वक्षाः कालेन—काले वीर्यं अवाप्यते,  
 काले पुष्पवती नारी—सर्वं कालेन जायते, २,

( स्वभाववादी. )

( वसंततिलका छंदः )

हंसा गतिं पिकयुवा कलकूजितानि,  
 नृत्यं शिखी परमसौख्यगुणा मृगेंद्राः  
 सौरभ्य शैत्यललितं मलयद्रिवृक्षाः  
 कैः शिक्षिताः सुकृतकर्मकृतः कुलानाः १,  
 निघ्नोन्नतं वक्ष्यति को ? जलीना,  
 विचित्रभावं मृगपक्षिणां च,  
 माधुर्यमिक्षो कटुता मरीचे,  
 स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धं, २

( नियति वादी. )

नहि भवति यन्न भाव्यं-भवति च भाव्यं विना प्रयत्नेन  
 कैरतलगतमपि न पश्यति-यस्यतु भवितव्यता नास्ति ?  
 तादृशी जायते बुद्धिः—व्यवसायोपि तादृशः  
 सहायाः तादृशा श्रैव-यादृशी भवितव्यता, २

( उद्यमवादी. )

उद्यमेन-हि-सिध्यन्ति-कार्याणि-न-मनौरथैः,  
 नहि सुप्तस्य सिंहस्य-प्रविशन्ति मुखे मृगाः, १,  
 आलस्यं हि मनुष्याणां-शरीरस्थो महान् रिपु,  
 नास्त्युद्यमसमो बंधुः-कृत्वायं नावसीदति, २,  
 उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः,  
 दैवं प्रधानमिति कापुरुषा वदन्ति,  
 दैवं विहाय कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,  
 यत्ने कृते यदि-न-सिध्यति कोत्रदोषः, ३,

( कर्मवादी.

सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता,  
 परो ददातीति कुबुद्धिरेषा,  
 अहं करोमीति वृथाभिमानः  
 स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः १,  
 दैवे विमुखतां याते—  
 न कोप्यस्ति सहायवान् ,  
 पिता माता तथा भार्या—  
 भ्राता वाथ सहोदरः, २,  
 वने जनेशत्रुजलाग्नि मध्ये,

महार्णवे पर्वतमस्तके वा,  
 सुप्तं प्रमत्तं विषमं स्थितं वा  
 रक्षन्ति पुन्यानि पुराकृतानि, ३,

न जूतपूर्वोनच केनदृष्टो-हन्त्रः कुरंगो न कदापि वार्त्ता,  
 तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य-विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ४,  
 धनानि जूमौ पशवश्च गोष्ठे-नार्या गृहचारि जनः श्मशाने,  
 देह श्रितायां परलोकमार्गे-कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ५,

यथाधेनुसदृशेषु-वत्सो विंदति मातरं,

तथा पुराकृतं कर्म-कर्त्तारमनुगच्छति, ६,  
 सुहृदो ज्ञातयः पुत्रा-भ्रातरः पितरावपि,  
 नानुस्मरन्ति स्वजनं-यस्य दैवमदक्षिणं, ७.

विपत्तौ किं विषादेन-संपत्तौ हर्षेण किम्, .

ज्वितव्यं ज्वत्येव-कर्मणामीदृशी गतिः, ८

अर्चितितानि दुःखानि-यथैवायांति देहिनां,

सुखान्यपि तथा मन्ये-दैवमत्रातिरिच्यते, ९

किं त्वं न वेत्सि जगति-प्रख्यातं लाजकारणे मूलं,

विधिलिखिताहरमात्रं-फलति कपालं न जूपालः, १०,

अरक्षितं तिष्ठतिदैवरक्षितं-

सुरक्षितं दैवदत्तं विनश्यति,

जीवत्यनाथो विपिनेप्यरक्षितः--  
 कृतप्रयत्नोपि गृहे विनश्यति ११  
 प्राप्तव्यमर्थं लज्जते मनुष्यो--  
 देवोपि तं लंघयितुं न शक्तः.  
 तस्मात्र शोचामि न विस्मयो मे--  
 यदस्मदीयं नहि तत्परेषां, १७  
 माधाव माधाव विनैव देव--  
 नो धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः  
 चेष्टावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः--  
 श्वा धावमानोपिलज्जतलक्ष्मीं १३,  
 यः सुंदर स्तछनिता कुरुषा--  
 या मुंदरी सा पतिरूपदीना.  
 यत्रोज्ञयं तत्र दरिद्रता च--  
 विधे विचित्राणि विचेष्टितानि, १४,  
 विधौ विरुद्धे न पयःपयोनिधौ--  
 सुधौघमिधौ न सुधा सुधाकरे,  
 न वांञ्जितं मिध्यति कल्पपादपे--  
 न हेम हेमप्रज्ञेव गिरावपि १५  
 ज्ञीमं वनं ज्वति तस्य पुरं प्रधानं,

सर्वो जनः सुजनतामुपयाति तस्य,  
 कृत्स्ना च भू र्जवति सन्निधिरत्नपूर्णा  
 यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य, १६  
 नमस्यामो देवान ननु हतधियस्तेपि वशगाः  
 विधिर्वैद्यः सोपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः  
 फलं कर्मायत्तं यदि किममरैः किंच विधिना,  
 नमस्तत्कर्मैर्न्यो विधिरपि न येज्यः प्रज्जवति, १७  
 जातः सूर्यकुले पिता दशरथः क्षोणीभूजामप्रणीः  
 मीता सत्यपरायणा प्रणयिनी यस्यानुजो लक्ष्मणः  
 दोर्दंडेन समो नचास्ति भुवने प्रत्यक्षप्रज्ञः स्वयं  
 रामो येन विमंवितापि विधिना चान्ये जने का कथा, १८  
 जग्राशस्य करंरूपीमिततनो स्त्रिनिंध्यस्य क्रुधा,  
 कृत्वाखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे जोगिनः  
 तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा,  
 लोकाः पश्यत दैवमेव हि नृणां वृक्षैर्द्वये कारणं, १९  
 कांतं वक्ति कपोतिकाकुलतया नाथांतकालोधुना,  
 व्याधोऽधो धृतचापमज्जितशरः श्येनः परिभ्रामति,  
 श्वं सत्यहिना स दृष्ट इषुणा श्येनोपि तेनाहतः  
 तूर्णं तौ तु यमालयं प्रति गतौ दैवी विचित्रागतिः २०,



४५—काल-स्वभाव-नियति-उद्यम-और-कर्मका संवाद पुरा हुआ, आपलोगोंको मालूम हुआ ?—कौन ताकतवर रहा ?—अकलसे दर्याफतकरके बतलाओ ! निश्चयनयसे कर्म-और-व्यवहारनयसे अपनीअपनीजगह सब प्रधान है, उद्यम खालीजासकताहै, कर्म-खालीनहीजाने, अमलमें-सुखदुखके दाता-कर्महै, स्वजन कुटुंब-परिवार-और-दोस्त-जब-भाग्य-खोटे आयमें कोई साथी नबनेगा. रुपया लेकर कोई नहींआया, नकोई साथ लेजायगा. खूब सुरत औरतका तुमको घमंडहै-तो-यादरखो ! वह-तुमारेशाथ न चलेगी, शरीरही तुमारा जवाबदेनेवालाहै तो-नोकरचाकरोकी क्या चलाइ ?—कंजुसोकी सबमें ज्यादा खराबी होगी,—अगर सुखी होनाहै-तो-धर्मपर-निगाह बढाओ-और-सुकुत-हासिलकरो, जिमको जैनमतमें कर्म-कहा-उसीको दूसरेमतवाले-विधि-विधात होनहार-भाग्य-पुन्य-कृतांत-तकदीर-और-इश्वर कहते हैं, बान करते है,—

४६—कर्म-भाठतरहके-है. ?—ज्ञानावरणीयकर्म-आंखके-पटे-समान-कहा, जैसे किसीशस्त्रकी आंखोपर पटाबांधदियाजाय-तो-वह-देखनहीसकता-ज्ञानावरणीयकर्मके उदयसे जीव-ज्ञान-नही पासकता. २, दर्शनावरणीयकर्म-चौकीदारसमान कहा, जैसे पहरेवालाशस्त्र-राजाकी मुलाकात नहीहोनेदेता-दर्शनावरणीयकर्म जीवको-धर्मपर श्रद्धा नहीआनेदेता, ३, वेदनीयकर्म-सहेतलीपटो तलवारसमान कहा. जैसे सहेत लगीहुइ तलवार कोइशस्त्र बानसे चाटे और तकलीफ उठावे-बैसे-ऐशआराम भोगताहुवा जीव अपने आपको दुर्गतिरूप तकलीफ हासिलकरेगा. ४, मोह-

नीयकर्म मदिरासमान कहा, जैसे मदिरापीइकर आदमी ज्ञाताहै मोहकर्मरूपमदिरासें जीव-मोहांध-बनताहै, धन-दांधो-पुत्र और निजशरीरपर रागलाना इसीकानाम के-दीलत-स्त्री ५, आयुष्यकर्म-बेंडीसमान कहा, संसाररूपी केदगइनीयकर्म है, आयुष्यकर्म एकबेंडी है. ६, नामकर्म चितारेस्त्वानेमें जीवकों चिनेरा तरहतरहके चित्र बनाताहै नामकर्मके उमान कहा. जैसे और-शरीरचगेरा बनाताहै. ७, गोत्रकर्म-उसवारीये जीव-रूपरंग या-नीच-जातिका पाना. ८, अंतरायकर्म - फौ नामहै-जो-उंच-कहा. जैसे भंडारी-नहांतो-कुच्छदेरतक राजाके भंडारीसमान सकता वैसे अंतरायकर्मके उदयसें-जीव-राजाभी-सर्व-नहीकर-कपडा-गहेना-वगेरा चीजोंसे वंचित रहव-स्त्री-पुत्र-घर-हाट-हवेली

४७-ज्ञान-और-ज्ञानीयोंकी बेंअदबी-ताहै.

कर्म बंधताहै, शास्त्रके वचनों लोपकरने-करनेसें ज्ञानावरणीय-सचे देवगुरु धर्मकों झूठे समझना दर्शनावरणीयक जैसा कोईपाप नहीं. इंद्रियोंकी विषयपुष्टिकेलिये जीवोंका बंधकरनेसें-धर्मका उदयहै, पांच और-उनकों तकलीफ पहुंचानेसें अपनेकों अज्ञातावेदनीकरनेसें-बंधताहै, उनका बचावकरनेसें-मारपीट-न-करनेसें-अपनेकों शास्त्र-तावेदनीयकर्म-बंधताहै, शातावेदनीयकर्मके उदयसें-जीवकों-अग-लेजन्ममें-अच्छारूप मिले. अच्छा खानपान-अच्छीस्त्री, और-स्त्रीकों अच्छापुरुष मिले, तरहतरहके दुस्-और-मानभंग होना-अज्ञातावेदनीयकर्मका फल है, मोहनीयकर्मके उदयसें रागद्वेष-का मक्रोध और लाभ उयादेरहेगा. धर्मकरना रुचे नहीं. शिवाय का-मभोग-और-एकआरामके-और कुच्छबात नहीं-यहसब मोहनी-

यकर्मके लक्षण जानो, इसकों कर्मकरनेके उपाय लेने चाहिये, म  
 हारंभ-महो-लोभ-पंचेंद्रियजीवोंकी घात-और-मांसभक्षणकरनेसें  
 जीवकी दुर्गति होगी. धर्म और धर्मीजनोंकी सेवा करनेसें. अच्छी  
 गति होगी, नामकर्म दोतरहका-शुभ-और-अशुभशुभसें-यश-और-  
 अशुभसें अपयश होता है, उंचगोत्रकामदकरनेसें-अगलेजन्ममें नि-  
 चगोत्र मिलेगा, अंतरायकर्मके उदयमें जीवकों हरवातकी अंत-  
 राय रहेती है, फालीयदा विचारो और हावे-नहीं. अच्छाखाना  
 चाहो-और-मिले नहीं. अच्छेकाभोग चाहो और अभाव रहे,  
 दानदेनाचाहो और दारुणिया-न-जाय. जिसकामका इरादाकरो  
 और बन-न-पड़े, यह सब अंतरायकर्मके फलहै, जब सबपापमें  
 रहितहोगे तुमारी मुक्ति होगो निस्पृहहोकर तपकरांगे सबका  
 छुटकारा पाओगे, ईश्वर किसीको सुखदुःख नहीं देता, जैसा क  
 जीव-करेगा-वैसाफल-भोगेगा,—

४८-इसजमानमें सर्वज्ञ-और अवधिज्ञानीनहीरहे, किमतरह  
 मालूमहोकि. (किसजीवके ज्ञानावरणीयवगेराकर्म कितनाहै? जवाब.)  
 -जिसकीजन्मपत्रीमें सूर्य-ऊंचका-मित्रक्षेत्री-या-स्वशुहीठांकर पड़ा  
 हो उसकेज्ञानावरणीयकर्म-थोडाजानना, इसीतरह चंद्रमासें दर्शना-  
 वरणीयकर्म-मंगलसें अशातावेदनीय-बुधसें मोहनीय-बृहस्पतिसें  
 नामकर्म-शुक्रसें गोत्रकर्म-शनिसें आयुष्यकर्म-और-राहुसें अंतराय  
 कर्मका-विचारकरना, वर्षपत्रमें जो-एकविशेषग्रह-मुंथानामसें ल-  
 पायाजाताहै-वह-भविष्यतजन्मके उपार्जितकर्मोंकासंचय जानना,  
 चिकित्साशास्त्रकी सचावटमें जैसे दस्त-और-उल्टीहोनेकी-दवा-  
 गवाहीदेतीहै ज्योतिषशास्त्रकी-सचावटमें चंद्रसूर्यकाग्रहण गवाही

देताहै, वर्षाकालमें-जब-शुक्रसें सप्तमराशिपर चंद्रमा आजाय और उसपर शुभग्रहोंकी दृष्टिपड़ेतो वरसातजरूरहो, इसीतरह शनिसैं भी-पंचम-सप्तम-और-नवमराशिपर चंद्रमा आजाय और-शुभ ग्रहोंकी उसपर दृष्टिपड़ेतो वरमातजरूरहो.ग्रहोंके उदय-अस्तके समयभी वरसातका होनासंभवहै, सूर्यके आगे-या-पीछे-बहुतसेग्रह-आजाय उसवख्तभी निश्चयकरके दृष्टिहोगी ऐसाजानना, बुध-शुक्रका-या-बुध-गुरुका-अथवा-गुरुशुक्रका-मिलापहो-उसवख्त-भी दृष्टिजरूरहोगी. श्री हंमप्रभसूर-त्रैलोक्य प्रकाशग्रंथमें फरमाते हैं कि—

चलत्यंगारके वृष्टिः—उदये च बृहस्पतौ

शुक्रस्पास्तमने वृष्टिः—त्रिधा वृष्टिः शनीश्वरे—१,

उदयास्तमने चारे—वक्रं याति शनीश्वरे

जलनाडीं गताःखेटा—महावृष्टिकरा मताः २,

४९—हरकज्येष्ठर्माहनेके-शुक्रपक्षमें-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-और-ज्येष्ठा-यह पांचनक्षत्र अंदाजदशमीतिथिमें लेकर पूर्णिमातकहांतेहैं, इननक्षत्रोंकेदिनोंमें देखनाचाहियेकि-आकाशमें बादल-विजली-वर्षा-बुंदपात-और पूर्वोत्तरकी हवाकिसकिसवख्त चलतीहै?—अगरचित्रानक्षत्रमें यहलक्षणदेखोतो अषाढमहिनेमें अच्छीदृष्टिहोगी ऐसाजाना, स्वातिनक्षत्रमें श्रावणमहिनेका विचार करो, विशाखामें भाद्रपदमहिनेका-अनुराधामें आसोजवदीका-और ज्येष्ठामें आसोजसुदीका-विचारकरो, यहां जो आसोजवदीकही उसको गुजरातदेशकी अपेक्षा भाद्रवावदीजानना, सबकि-गुज-

रात-और-दखनके शिवाय और जगह महिनेकी शुरुआत बदीमें मानीजातीहै,-फिर पूर्णिमा-या-प्रतिपदाकेरौज जो मूलनक्षत्र होताहै-उसकी सर्वघटिका देखो.जिसवरुतसें मूलनक्षत्रलगे औरउतरे उसकी सबघड़ीयां जितनीहो-अर्थात्-(६०)के-अंदाजहोंतीहैं -उसकी आधीआधीघड़ीकी-एकएकतिथि-अषाढकृष्णप्रतिपदासें लेकर आश्विनशुक्लपूर्णिमातक(१२०)तिथियोंका विचार इसतरह करांकि-मूलकी-जिसघटिकामें वर्षाहो-उसतिथिमें वर्षा नहोगी-और-जिसघटिकामें-अत्यंतधूप-अमुझा-वायुबंध-और-मनुष्योंको घबराहट-ऐसेलक्षण देखोउनउनतिथियोंमें अच्छीअच्छीवर्षाहोगी ऐसाजानो,चित्रा-स्वाति-और-विशाखाकेलिये-अषाढश्रावणऔर भादवेकी जोबातकहीगइहै उनकीभी घड़ीयोंकेहिसाबसें वृष्टि दे' खशक्तेहो-वहांएकएक तिथिकेलिये दोंदाघड़ीका हिसाब लगा-ना होगा,-

४९-यहनीचेलिखेहुवें(१.४)वाक्यरत्न-हरवरुत यादरखो,१, जिसकी औरत लडकाछोडकर मरगइहो-मुनासिबहै दूसराविवाह नकराना-घरमें दंगारहेगा,दंगेसें दौलतकी हानिहोगी.अगरतुमको कामविकारकी शांति नहीहुइहै-तो-खेर!विवाहकराकेभी उसलडकेको नयीऔरतसें ज्यादा समझो,२,जिसशरुवकी औरतको संताननहांतीहो-विवाहकियेबाद बारहवर्षतक राहदेखनाठीकहै बाद अगलीऔरतके खानपानका बंदाबस्तकरके दूसरा विवाहकराना मुनासिबहोगा. ३,इसजमानमें लंबीउमर-रहीनहीं इसलिये लाजिम है पचासवर्षकेबाद विवाह नकराना,बुढीउमरमें विवाहकरानेसें-कुल-कलंकित होताहै,४,औरतसें-मर्द-तीनगुनीउमरवालाहो तब

सकतो किसीकदर विवाहकाहोना ठीकभी कहेगें.लेकिन! इससे ज्यादाउमर-मर्दकीहै-तो-उसविवाहकों बेमुनासिबहुवा कहेमें,

(दोहा.)-साठवर्षका होयके-जो-नर-ब्याह करंत,-वो बुढा वह बालकी-तंतु काह करंत,-१,-(५)कोइशख्ख किसीबजहसे विरादरीबहार कियागयाहो-और-वह-सामीलहोनाचाहे तो मु-आफिककायदे अर्हअतीके प्रायछितदेकर सामीलकरलो. विरादरीके मुखीयोंकों चाहिये किसीकों अदावतसे विरादरीबहार न करे, खोटाकलंक लगाना नरककी निशानी है, लिहाजमें पढकर किसी-दोषितमनुष्यकों विरादरी बहार न-करनाभी अन्याय और अधर्मका कारण है,—

५०-(६) हरेकशख्खकों-चाहियेकि-सालभरकी पैदाशमेंसे रुपये आठआना धर्मकाममें (यानी) सप्तक्षेत्रमें लगावे, इतना न बनेतो चारआना-दोआना-अखीर एकआनातो जरूर लगावे, रुपयेमेंसे एकआनाभी नखर्चंगा तोर्थकरके हुकमकों तोडनेवाला समजाजायगा, हजारोंरुपयेका ब्याजआताहै उसकोंभी पैदाश स मझो और धर्माश उसमेंमेंभी निकालो. औरत अपने पतिमें जो कुछ मांगलेती है उसमेंसेभी धर्मका-आधाचौथाई-दशांश-षोड-शांश-निकाले, और तुर्त धर्ममें लगादेवे, कइ श्रावक कहदेते है साधुलोग शिथिलाचारी होगये जिसमें धर्म दिसिमान् नही हांता, लेकिन ! असलपुछोतो श्रावकलोगही शिथिलाचारी बनगये है, धर्मकाममें कंजुसकेसिरदार बनना और स्त्री-पुत्रकेलिये हजारांह रुपये उडादेना, स्त्रीकेलिये हजारांहका गेहना बनवाना-और-जिनप्रतिमाकेलिये एकतिलकभी नही देना-अपने और औरतके

लिये-कइतरहकी-नयीपुशाके-और-साधुजनोंकेलिये एकचदरतक नही देना, कहिये ! धर्मका नाश किसने किया ? सौचकर जबाब दो. दिगंबर-हुंढिये-भीखमपंथी. और-तीनथुइवाले जो जैनशास्त्र-केकानुनसे निन्हवहै उनकेशाय खानपान और बेटीव्यवहार न रखना चाहिये-और रखते हो कितनीबड़ी भूलहै, असल पुछो तो इससे धर्ममें बड़ी न्यूनता पहुंच रही है, इसबातकों सौचो,-

५१-(७)-मातापिता-पुत्र-स्त्री-वगेराके अंतसमय जो सात-क्षत्रकेलिये द्रव्य निकाला जाताहै वह तुर्त अपनेगांवके समाज (संघ)के सुपुर्दकर-दो, कितनेकलोग उसद्रव्यकों अपने बनाये हुवे त्रिनमंदिर-या-उपाश्रयमें लगाते है उनकों पुछना चाहिये क्या ! यह द्रव्य अब तुमाराहै ? जो अपनी हुकमतसे लगातेहो ? असलमें यह धर्मद्रव्य होगया, इसकों संघकी सलाहसे जहां मुनासिब समझाजाय लगाना चाहिये. कइशरूश अपनीलौकिक दिखलानेकेलिये उसवरूत इतनेहजाररूपये हमने धर्ममें किये मुखसे कहदेते है, फिर पैसा एकभी नहीलगाते, उनके जैसा कोई अधर्मी नही, विरादरीवालोंकों मुनासिबहै उसके वहांका खान पान छोड देवे, जो लोग धर्ममें पडकर उसके पाससे धर्मद्रव्य न-हीमांगते-वे-ज्ञानियोंके ज्ञानमें दोषकेभागी है, साधुलोगोंकोंभी मुनासिबहै उपदेश देकर धर्मद्रव्य धर्ममें लगानेकी काररबाइ करे, इतनेपरभी नमानेतो समझना उसका पापही उसे दुर्गतिमें डाळे-गा, लेकिन ! हां ! उसकों संघसे बहार जरूर करदेना चाहिये, उममें जो शरूशपक्षपातकरेगा महापापी बनेगा. कितनेक शरूश उम सातक्षेत्रके धर्मद्रव्यकों अपनेदस्तरेमें बतौर अमात्यके जमा

करलेते है—कोइकोइ व्याजके हीलेसे जमाकरते है, और फिर उस द्रव्यको सालंभरमें जोकुछ सातक्षेत्रमें अपनेनामसे खर्च किया—उसमें नामे लिखदेते है उनको पुछाजाय यहकाम कोनसे कानुनसे करतेहो ? तो जबाबमें शास्त्रसे विरुद्ध ठहरते है, जब धर्मद्रव्य अपने घरमेंही रखना ज्ञानीयोंने नहीफरमाया तो जमाकरना कहाँ रहा ? जिनजीवोंको संसारमें बहुतकालतक रुलनाहै—ऐसे कपटधर्मियोंको यह लिखाण बहुतबुरा मालूमदेगा. लेकिन ! उनसे हमको कोइ परवाह नही. हमको यहां ज्ञानियोंके वचन दिखलाने है. जो लोग धर्मद्रव्य देते नही और विरादरीमें तड्डालकर अपनी बाह बाह करारहे है, याद रखो ! यह तारीफ उनकी परलोकमें शाय न चलेगी. नरक तिर्यचगतिमें पापकर्म-भोगते वरुत कोइ प्राणशरण नहोगा. रुपयापैसा हाथका मेलै, इसका घमंडकरना नोचपुरुषोंका कामहै, जो शस्त्र देवद्रव्यका कर्जा लेकर पोछा नही देते संघकी फर्ज है राज्यमें नालिशकरके बसुलकरना,—

५२-(८)—कितनेक श्रावक ऐसे देखेगये है—जो—साधुजनोंके साथ बैइज्जतिसे पेश आते है. लेकिन ! यहनही सौचतेकि—हम—किस-दर्जेपरहै !—संसारछोडकर मुक्तिकीराहलेना सहजबातनही. खानपान और ऐशआराम किसको अच्छा नही लगता. धन्यवाद दो—उनको—जिनोने संसारछोडाहै—साधुलोगोंको शिवाय धर्मके किसीका आधार नही, तुमको कोइ मारने आयगा फौरन मातपिता और भाइ तुम्हारे साहायक बनेंगे. साधुओंका कोइसाहायक नही, ऐसे नावालिशोंका अपमान करना कितना बुराहै ? साधुलोग परमात्माके शरणमें बैठे है, उनको सताना याद रखो ! तु-



मारेनाशहोनेके दिनहै, तुमको किसीकी शर्मनहीं है तो खेर ! परमात्माकी शर्म तो रखो. शास्त्रोंका बचनहै साधुजनोंको खानपान वस्त्रपात्र-पुस्तकपंखे-और-मकान-देना और उनसे धर्म सुनना.

५३-(९)-हरैकशरूशकों-भंग-गांजा-तमाखू-मांस-मदिरा-जमीकंद-सहेत-रात्रीभोजन-परस्त्रीगमन-विनाछानाजल-तीनदिनकेबादकाअचार-और-दोघडीकेबादका मरुखन-इतनीचीजें त्यागकरनाचाहिये, इनमेंफायदा नहीं नुकशानहै,(१०)-कितनेकदेशमें लडकालडकीकी जन्मपत्री लोग नहींबनवाते. लेकिन! बनवाना मुनासिबहै, जन्मपत्रीसे धर्म-और-संसारदोनोंका विचार किया जाताहै,बल्किन्! किसगतिसे आया औरकहांजावेगा मालूमहो सकताहै? कितनेक कहदेतेहै जन्मपत्री क्या-कर्मपत्री देखना चाहिये (जवाब)कर्मपत्रीहोका दूसरा नाम जन्मपत्रीहै,ऐसा नहोतातो सूर्यसे ज्ञानावरणीय-चंद्रमासे दर्शनावरणीय-वगेराआठकर्मोंका विचार क्यों कियाजाता?-और-जैनाचार्योंने ज्योतिषग्रंथ क्यों बनाये?इसका जवाब दो, आजकल-ऐसेमनुष्य-ज्यादेरहगये-जो-मतलबभी-पुछजाय-और-नींदाकरे.ऐसोंसेबचनाचाहिये,

५४-(११)-हरैकश्रावकको मुनासिबहै एकसो आठ-जैन तीर्थोंमेंसे किसी एकजैनतीर्थकी हरसाल यात्राकरे,जोशरूशजिस तीर्थभूमिमें बसताहो उसको दूसरेतीर्थकीयात्राकरनाचाहिये,(१२) बडेबडेतीर्थोंमें जहां ज्यादा खजाना इकठा कियाजाताहै उसखजानेसे अगर दूसरेशहरोके हजारोंजैनमंदिर जो जीर्ण होगयेहै उनकीभरम्भत कराइजायतोकितनी उमदाबातहो!-बहुतधन इकठाहोनेसे बिगाढनेवालाभी मिलजायगा,इसलियेजोउपरलिखेमुजब

जाणोंद्वारमें लगादियाजाय वही अच्छा है, १३, जीव-इरादा कुछ करे-और उदयकर्मके जोरसें होजाय कुछ और ! कहिये ! कर्मबलोष्ट रहे-या-नहीं ? कर्म-आपकरना-दोष दूसरोंके शिरडालना कितनो भूल है ! जब पुन्यका उदय आयगा सब कामठीक होगा, इष्टप्राप्तिको चिंता बिल्कुल मत करो, जोबस्तु तुमारे भाग्यमें बंधी है स्वतः आनमिलेगी. बतलाओ ! कमलनी और सूर्यका संयोग कौन कराता है ? दूसरी मसाल देखो !-योगीने विचाराया शिवकुमारको जालकर सुवर्ण पुरुष बनालउ, लेकिन ! बन गया आप ! समझसकोतो समझलो पुन्य बलवान् ठहरे या कौन ? ( १४ ) कोई शूखश तंबोलमें खुश है कोई मीठे भोजन जियनेसें-कोई सवारोपर चढकर कोई इतर फुलेलमें-कोई जवाहिरातसें, कोई अच्छे कपडेसें, -कोई सुंदर औरतसें, कोई औरत-सुंदर पुरुषसें-कोई रात्रीमें-कोई दिनमें-कोई वरसावकी-झडीमें-और कोई-बागकी शेरमें खुश है, लेकिन ! ज्ञानी लोग सबसें ज्यादा खुशीका कारण धर्म फरमाते हैं.-

दुनियाके मतमतांतरका विषय पुराहुवा-बाचकर गौर करो.

( मकसीतीर्थकारखानेके-जष्टी-और-मेने-जर-जाउसाहबके प्रश्नोका उत्तर. )

१-( प्रश्न. )-किमी शूखशने रात्रोको चतुरविध आहार प्रत्याख्यान-या-त्रिविध आहार प्रत्याख्यान-किया हो-वह-स्त्रीसंभोगमें-अधरपान करे-या-नहीं ? ( जवाब. ) न करे, सबब कि-परस्पर थुंकल-

मनेसें व्रत टूटजाताहै,द्विविधआहारप्रत्याख्यानमें करेतो व्रत-नटूटे, श्राधधिधि वगेरा ग्रंथमें इसका खुलासा हैं.

२-(प्रश्न)-उपवासव्रतमें कामभोगकरनेसें व्रत टूटे या-नही ?  
(जवाब.)-उपवासव्रतमें कवलआहारका त्यागकियाहै रोमआहारका त्यागनही, कामभोग-रोमआहारमें दाखिलहै, इसलिये-संभोगकरनेसें-उपवासव्रतनहीटूटता, मैथुनसेवनेसे जोपापलगनेवाला है-वो-तो-लगेहीगा. लेकिन !-उपवासटूटगया-नहीकहना.

३-(प्रश्न)चौदहनियमधारनेवाला-रात्राकों चतुर्विध-त्रिविध-द्विविधआहारप्रत्याख्यान-न-करे-और-नियमधारेतो कुछ हर्ज है ! (जवाब.) कोइ हर्जनही.चौदहनियममें यहकोइप्रतिबंध नही कि-रात्रीकोंचतुर्विधआहारप्रत्याख्यानवगेरा जरूरकरना.

४-(प्रश्न)-कलंकीराजा कबहोगा ?

(जवाब.)-महानिशीथसूत्रके पांचमेंअध्ययनमें पाठहैकि-सेभयवं केवइयंकालं जाव एस आणा पवेइया ? (गोयमा) जावणं महायसे महासत्ते महानुभागे सिरिप्पभे अणगारे-सेभयवं केवइएणं कालेणं सिरिप्पभे अणगारे भवेज्जा ? (गोयमा)-होहो दुरंतपंतलखणं अदह्ववे रोहे चंडेपयंडे निस्सेरे निकिचे निग्घणे निचंसे कूरय पावमई अणारिये मिच्छदिट्ठी-कक्की-नामराया-(अर्थ.)गौतमस्वामीने महावीरस्वामीसें प्रश्नकियाकि-हैं ! प्रभु ! यह उपरवर्ननकिइहुइ-आज्ञा-(यानी)-यथार्थसमाचारी पांचमेंआरेमें कबतक चलेगी. (जवाबमें) फरमायागयाकि-हैं ! गौतम ! जब महानुभाग्य-श्रीप्रभ अणगार होयमें तबतक, गौतमस्वामीने फिरपुछा-श्रीप्रभअणगार कबहोंगे ? महावीरस्वामीने जवाबदिया-जब कलंकी नामकाराजा

होगा, जो महाखोटेलक्षणवाला और अदृष्टकल्याणी-कठोर-प्रबुद्ध-वैशर्म-निकाम-निर्दय-क्रूर-पापी-अनार्य-और-मिथ्यादृष्टि-होगा, -इसपाठसे सबुतहुवा कलंकीराजा-श्रीप्रभअणगारकी हयाती में होगा, श्रीप्रभअणगार-कौनसे उदयमें युगप्रधान होंगे उसका सुलासा युगप्रधानयंत्रसे देखाजायतो आठमेउदयके प्रथमयुगप्रधान सबुतहोतेहै, इसवस्तु उदय तीसरा भरुहै, जब आठमाउदय आयगा-श्रीप्रभयुगप्रधान होंगे. उसवस्तुकलंकी राजा पैदाहोगा, महानिशोधमूत्रमें ऐसाभी पाठहैकि-बह-साधुओंको तकलीफ पहुंचा भगा और इंद्र आकर उसको जानसे मारेगा, आठमाउदय पांचमेंआरेके कितनेवर्षबीतेबाद आनाचाहिये उसका हिसाबलगाते हैं-तो-साठेदशहजारवर्षबाद आताहै, समझशकोतो समझलो कलंकीराजा कबहोगा ? -पांचमेंआरेके-एकीशहजारवर्षमें-तेइसदफे धर्मका उदय-और-उतनीहीदफे धर्मका अस्तहोना जो जैनशास्त्रोंमें फरमायाहै उसमें(२००४)युगप्रधान-(यानी)प्रभाविकआचार्य होंगे, श्रीप्रभअणगार आठमेउदयके प्रथमयुगप्रधान पहिलेलिल चुके, दीपमालाकल्पमें तथा पांचमेंआरेकी सप्तायमें जो कलंकीका होना-संवत्-(१९१४)में-बतलाया, बह-भागमवचनसे-बर्तिलाफ-और-गलत समझनाचाहिये. दीपमालाकल्पमें यहभी लिखा हैकि-कलंकीराजा-विक्रमकेसंवत्को लोपकरके अपना नयासंवत् स्थापनकरेगा. सौचोतो-यहवातभी अबतक नहीबनी-फिर किस ! सबुतसे कहाजाताहै कि-कलंकीराजा होयगा.!

५-(प्रश्न)-एकपक्षमें ( छह ) तिथि-अर्थात्-वृज-पंचमी-अष्टमी-एकादशी-चतुर्दशी-पौर्णिमा-और-अमावास्यामेंसे-कोइभी-

तिथि-दो-होतो-दोंनों-पालना-या-एक ?-अगर दोनों-पालना कहोगे तो-उक्ततिथिमेंसे कभी कोई तिथि-दूटनाय तो क्या ! न-ही मानना चाहिये ?

( जवाब. )-जैनशास्त्रकाफरमाना है कि-दो तिथिहोजायतो पहिलो छोडकर दूसरी पालना, और क्षय हो तो पूर्वदिनमें मानना, जैसे अष्टमीका क्षय होतो सप्तमोकेरौज अष्टमो मानना चाहिये, अमावास्य-या-पौर्णिमा-टुटेतो-तेरसको तोडकर चतुर्दशी-पौर्णिमा-और-अमावास्या-पूर्ण-पालना, इसतरह हरेकतिथिके संबंधमें जानलो, जैन शास्त्रके कानुनसेदेखोतो बारहमहिनेकी-जो (१४४) पर्वतिथि-है, उनमेंसे-न तो (१४३)-न-(१४५) होगी.

६-(प्रश्न,) किसीवर्षमें-दो-श्रावण-या-दो-भादवेमहिने हो तो पर्युषण-किसमहिनेमें कियेजाय ?-भादरवा सुदीचौथ-टूटी हो या-दो-होगईहो-तो-संवत्सरीकप्रतिक्रमण किसरौज करना ?-इस तरहपर्युषणके आठदिनोंमें-औरभी कोईतिथि-घट बढ हुइ होतो-किमतरह करना ? और भादवामुदीपंचमी-टूटी होतो-कौनसे रौजपर्युषण बैठाना,

(जवाब.)-दो-श्रावणहोतोभी-भादवेमेंही-पर्युषणपर्व करना चाहिये, अगर कहाजायकि-अपाडमुदी ( १४ ) चतुर्दशीसे (५०) रौज लेना कहा यह कैसे सबुतरहेगा ? ( जवाब. ) कल्पसूत्रकी टी-कामें पाठ है कि-अधिकमास-कालपुरुषकी चूलिका-यानी-चौंटी है, जैसे किसीपुरुषका शरीर उचाईमें नापा जाय-तो-चौंटीकी लंबाई नापी-नहीं जाती, इसीतरह कालपुरुषकी चौंटी जो अधिकमासकहा गिनतीमें नहीं लिया जाता, कल्पसूत्रकी टीकाकापाठ-

कालचलेत्यविवक्षणात् दिनानां पंचाशदेव,—अगर लिया जाताहो पर्युषणपर्व—दूसरेवर्ष श्रावणमें—और—इसतरह अधिकमहिनोंके हिसाबसे हमेशा उक्तपर्व फिरते हुबे चले जायगें, जैसे मुसलमानोंके ताजिये—हरअधिक मासमें बदलते रहते हैं, दूसरायहभी दूषण आयगाकि—वर्षभरमें जो—तीनचातुर्मासिकप्रतिक्रमण किये जाते हैं उनमें पंचमासिकप्रतिक्रमणपाठ—बोलना पड़ेगा, शीतकालमें और उश्रकालमें—तो—अधिकमहिना गिनतीमें नहीं लाना—और चौमासेमें गिनतीमें लाकर श्रावणमें पर्युषण करना किस न्यायकी बात हुई? अगर कहा जायकि—पचासदिनकी गिनती लिइजातीहै—तो—पीछले (७०)दिनकी जगह—(१००)दिन होजायगें, उधर दोष आयगा, सवत्सरीके पीछे(७०)दिन—शेष—रखना,—यहबात समवायांगसूत्रमें लिखिहै—उसका पाठ—वासाणं सवीसइराए—मामे बइकंते सत्तरिराईं दिएहिं—सेसेहिं, इसलियेवहीप्रमाणवाक्यरहेगाकि—अधिकमास—काल पुरुषकी चोंटी होनेसे गिनतीमें नहीं लेना, अधिक महिनेकों गिनतीमें लेनेसे तीसरा यहभी—दोष—आयगाकि—चौइसतीर्थकरोके—कल्याणिक—जो—जिसजिसमहिनेकी तिथिमें आतेहैं गिनतीमें वेंभी बढ जायगें, फिर क्या !—तीर्थकरोके कल्याणिक(१२०)सेभीज्यादे गिनना होगा ?—कभी—नहीं, इस हेतुसेभी अधिकमास नहीं गिना जाता, अधिक महिनेके कारणसे—कभी—दो—भादवे—हो—तो दूसरे भादवमें पर्युषण करना चाहिये, जैसे—दो—अषाढमहिने होते हैं तबभी दूसरे अषाढमें चातुर्मासिककृत्य कियेजाते हैं वैसे पर्युषण—भी दूसरे भादवेमें करना न्याययुक्त है, भादवा सुदी चोथ दूटीहो—तो—ग्यारसकैरौजसे पर्युषण बैठाना, भादवा सुदी चोथ—दो—हो—तो—पर्युषण तेरसकी तिथिसे बैठकर पुरे आठरौज गिनना

संवत्सरीक पर्व दूसरीचौथके रौजमानना, भादवासुदी पंचमी टूटी हो-तो-ग्यारसके रौजपर्युषण बैठाना चाहिये, सबबकी-चौथ संबत्सरीपर्वका-दिनठहरा-उसकोतोड़ना-प्रमाणसे विरोधी है, इसतरह पर्युषणके आठरौजमें औरभी कोइ पर्वतिथि टूटीहो-तो उसकी प्रथमतिथि घटाकर पहिलेदिन उसको मानना उपर पांचमे प्रश्नमें लिखही चुकेहैं, निदान ! सबबातका सारयह हुवाकि-तेरससे लगाकर चौथतक कोइभी-तिथि-टूटीहोतो ग्यारससे और बढ़ीहोतो-तेरससे पर्युषण मानकर आठरौज पूरेकरलेना, और शुरुदिनसे चौथेरौज बढाकल्प-पांचमेरौज-महावीरस्वामीका-जन्म महोत्सव-आठमेरौज-चैत्यपरिपाटी-और-संवत्सरीक प्रतिक्रमण वगेरा-कार्य-करलेना चाहिये,

७-प्रश्न मुनिजनोको पीलेवस्त्र रखना कौनसे शास्त्रमें लिखा है ? (जवाब.)-निशीथसूत्रके अठारहमें उद्देशमें पाठहैकि-साधुलोग नयेवस्त्रको-कथा-लोध-या-पद्मचूर्ण वगेरासे रंग चढावे. [पाठ] जेभिखु-णवणमे बथे लड़े-तिकट्टु बहुदिवसिएणं-लोधेणवा-कके-णवा-पडम चुन्नेणवा-वन्नेणवा-उल्लोलेज्जवा-उवदेज्जवा-उल्लोतंवा उवदंतंवा-साइज्जइ-इत्यादि,

८-प्रश्न-इसकालमें भरतक्षेत्रके मनुष्य-मरकरकितने-स्वर्ग और-कितनी नरकतक जासके. (जवाब.) बृहत्कल्पसूत्रकी टीका वगरामें पाठहैकि-छेवठासंहननवाला-मनुष्य-उपर-चतुर्थदेवलोक तक-और-निचे-दूसरी नरकतक-जासके, आजकल भरतक्षेत्रमें छेवठेसंहननवाले मनुष्य है, इसलिये वही कहना मुनासिब आया जो उपर लिख चुके,

[ भाउसाहबके प्रश्नोंका उत्तर समाप्त हुवा. ]

## [ इसलेखकों मत पढो—तुमकों नागवार गुजरेगा. ]

स्त्रीपुत्रपर मोह-न-करो, देवद्रव्य तुत्त देदो, हरकिसीकी बरातमें-जानेका इरादा-नरखो, जो औरत तुमसें नफरत लातीहै उससें मत बोलो, पराइ औरतसें प्रेम-न बांधो, अपनी औरत-कोंभी दिलकी बात मत कहो, ज्यादा कामभोग मत सेवो, रज-स्वला औरतसें तीनदिन संभोग-न-करो, हरहमेश मिठाइखानेका शौख-न-रखो, राज्यकी नौकरी करनेका इरादा कम करो, धर्म शास्त्रसुनते किसीसें बात-न-करो, सभामें जाते और प्रमाणीक बात कहते शर्म-न-लाओ. अन्यायके तर्फदार मत बनो, रसायन विद्या-विच्छेद हो गइ-इसके पीछे मत पढो, हुका-चिलम-या बीड़ी-तुम पीते हो-यही बुरी बात है फिर औरतकोंइसके फंदेमें क्यों डालतेहो ?-संसारके कामकों पीछेऔर-धर्म कार्यकों पहिले करो, बीमारीमें कोई आनकर तुमकों कहे धर्म करो उसपर नाराज मत हो, एक लोभी आदमीकों नींदआइ-ख्वाबमें देखाकी मुजे कोई-एक रुपया-देता है, उसने कहा-दो रुपयेसें-कम-न लुंगा, उतनेमें नींद खुल गइ और रंजीदा हुवाकि-मैने-एक रुपयाभी नाहक छोडा, सौचने लगाकि-फिर लेटजाउ-और-एकही कोई देवेतो लेलूं, कहिये ! जैमाभि कोई बेवकुफ आदमी होगा संसारमें ?-स्वभावसें दलेर बने रहो, और एक एलम ऐसा सीख लो-जिससे रुपया रौज हमेशा पैदा हो जाया करे. जो काम स-



बकी सलाह लेकर करनेका है उसकों अपनी इच्छासे मत कर-  
हालो, नसीयतमें तुमकों कोई कहुआ वचनभी कहे-तो-उसको  
अच्छा समझो, घरसे बहार निकलो जब हरवख्त पांच सात रुपये  
या-पैसे पास रखे करो-न मालूम किम वख्त काम आ जाय !—,

## [ जैनका इतिहास. ]

१-रिषभदेवसे लगाकर आजतकका कुछ मुख्तसिरहाल  
बतलाकर ग्रंथ पूरा करता हूं, इसकालचक्रकी आद्यमें पहिलेराजा  
रिषभदेव हुवे, और-वै-खुद तीर्थकरभी थे, धर्मप्रवर्तक कहो-या  
तीर्थकर-एकही बात है. जैनमें अवतार लेना नहीमानागया,  
मोक्षपाकर फिर संसारमें आना अयोग्य बात है, जोइश्वर भक्तों-  
पर खुशहोगा-कभी-नाराजीभी लायगा. रागद्वेषका होना महान्  
दोष है, सर्वशक्तिमान् गर्भमें आवे-और-भक्तोंकी साहायता करे  
कौन बुद्धिमान् मनन करसकता है ? देखिए ! सारी दुनिया अ-  
पनेदेवोंसे गुजारीश करतीहै कि-गर्भवाससें मुत्लक मुलत्व छूटजाय,  
बड़े खेदकी बात हैकि-जिससें दुनिया छूटने चाहे उसीमें इश्वर  
आनकर फसे ?

२-प्रथम तीर्थकर रिषभदेव विनीता (अयोध्या) नगरीमें हुवे,  
उनका बडाबेटा भरत और भरतका-सूर्ययशा-हुवा, जिससें सूर्य-  
वंशी खानदान चला, रिषभदेवका दूसरा बेटा-बाहुबली-और  
बाहुबलीका-बेटा-चंद्रयशा-हुवा, जिससें चंद्रवंशी खानदान चला,

रिषभदेवके प्रथम पुत्र भरतचक्रीने भारतमध्यखंडमें अष्टापदवगेरा तीर्थोंकी स्थापना किइ, शत्रुंजय तीर्थ जो देवताओं करके पूजनीकथा-उसरौजसें-मनुष्योंकाभी पूजनीकहुवा, हरेक कालचक्रमें इसीतरह होता है,

३-दूसरे तीर्थकर अजितनाथ हुवे, दूसरा सगर चक्रवर्ती इनहीके वख्तमें हुवा, इसने देवोंकी मददसें लवण समुद्रकी खा-डीकों जगतीके कोटके भीतर फैलाया, जिससें क्षेत्रमर्यादा पहिलेमे बदल गइ, इसीसगरचक्रीके बेटे जन्हुकुमारने गंगाकी नहर अष्टापद तीर्थकी चौफेर लेजाना चाहा कुच्छ लेभी गयाथा, गंगाका दूसरानाम इसीलिये जान्हवी कहलाया, इसके बाद सावध्थी नगरीमें तिसरे तीर्थकर संभवनाथ हुवे, इनके बाद अयोध्यामें चतुर्थ तीर्थकर अभिनंदन हुवे, किसकिस तीर्थकरोका-कितने कितने वर्षोंका अंतर पडा-इसकी गिनतीकल्पमूत्रसें जानना, इनकेबाद पांचवे तीर्थकरभी इसीअयोध्यामें हुवे, इनकेपीछे छठे पद्मप्रभ तीर्थकर कौशांबीनगरीमें हुवे, सातमें तीर्थकर सुपार्श्वनाथ बाणारसीमें हुवे, इनकेबाद आठमें तीर्थकर चंद्रप्रभु चंद्रपुरीमें हुवे,

४-इनकेबाद नवमें सुविधिनाथ तीर्थकर काकंदी नगरीमें हुवे, इनके निर्वाण हुवे पीछे कुच्छकालतक धर्म बिल्कुल नाश होगया था, जबदशमें तीर्थकर शीतलनाथ हुवे फिर-धर्म-जाहिर हुवा जो आजतक चलरहा है, पैदाश हरिवंशकीइन्हीके जमानेमें हुइ, इनकेपीछे ग्यारहमें तीर्थकर श्रेयांसनाथ सिंहपुरीमें हुवे, पहिला त्रिपृष्ठ वासुदेव इन्हीके जमानेमें हुवा, इनकेबाद बारहमें

तीर्थंकर वासुपूज्य चंपानगरीमें हुवे, दूसरा द्विपृष्ठवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनके पीछे तेरहमें तीर्थंकर विमलनाथ हुवे, तीसरा स्वयंभूवासुदेव इन्हीके जमानेमें हुवा, इनकेबाद चौदहमें अनंतनाथ तीर्थंकर अयोध्यामें हुवे, चौथा पुरुषोत्तमवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनके पीछे पनराहमें तीर्थंकर धर्मनाथ रत्नापुरीमें हुवे, पांचवा पुरुषसिंहवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनकेबाद तीसरे म-घवाचक्रवर्त्ती—और—चतुर्थ-सनत्कुमारचक्रवर्त्ती—क्रमसें हुवे,

५—इनकेबाद हस्तिनापुरमें सोलहमें, शांतिनाथ तीर्थंकर हुवे, आप खुद छठे चक्रवर्त्तीभी थे. सतरहमें तीर्थंकर कुंथुनाथ—और अठारहमें तीर्थंकर—अरनाथ—इसी हस्तिनापुरमें हुवे, ये—दोनोंभी खुद चक्रवर्त्ती थे, इनके पीछे पुरुषपुंडरीक—छठे वासुदेव—और इनकेबाद कुरुवंशी सुभूमनामके नवमें चक्रवर्त्ती हुवे, इनकेवस्तुमें यमदग्नितापसके पुत्र परशुराम हुवे, कई लोगोंने इनको ईश्वरावतार माना है, इनकेबाद दत्तनामके मातमे वासुदेव हुवे, इनके पीछे उन्नीसमें तीर्थंकर मल्लिनाथ मिथिलानगरीमें हुवे, इनकेबाद बीसमें तीर्थंकर मुनिमुव्रत राजग्रहीमें हुवे, अयोध्यामें दशरथराजा-केपुत्र जो—रामचंद्रजी—और—लक्ष्मणजी हुवे हैं उक्त मुनिमुव्रततीर्थ-करके बादहुवे समझे, जैनशास्त्रोंके लेखसें सबूतहैकि—रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी—जैनधर्मके अनुयायी थे, सीताको रावण लेगया तब रामचंद्रजीने लंकापर आसोजसुदी दशमोके रौज चढाई किइ और फतेहपाइथी—इसलिये उसरौजसें दुनियामें विजयदशमी (-यानी-)-दशहरापर्व जारीहुवा. रावण—सुग्रीव—अंगद—और—हनु-मानबगेरा असलमें मनुष्य थे, विद्याकेबलसें तरइतरहके रूप बना

लेते थे, जैनशास्त्रोंके पाठसें सबूतहैकि-लक्ष्मणजी आठमे वासुदेव थे, इनकेबाद चंपानगरीमें श्रीपालराजा हुवे जिनोने सिद्धचक्रयंत्रका आराधन किया,

६-इनकेबाद एकीसमें नमिनाथतीर्थकर मिथिलामें हुवे, हरिषेणनामके दसमें और-उनकेबाद जयनामके ग्यारहमें चक्रवर्त्ती इन्हीके अंतरमें हुवे है, इनके पीछे समुद्रविजयराजाके पुत्र बाइसमें तीर्थकर नेमिनाथ-शौरीपुरमें-हुवे, ये-तीर्थकर बालब्रह्मचारी रहे ( यानी )-स्यादी नही किइ, इन्हीके चचेरेभाइ कृष्णजी नवमें वासुदेव हुवे, जैनशास्त्रके लेखसें सबूतहैकि-कृष्णजी और बलभद्रजी-दोनोंभाइ-जैनधर्मके अनुयायी थे, कौरवपांडवोंका महाभारतयुद्ध इन्हीके वरुतमें हुवा किसीमें छीपी बातनही, इनकेबाद बारहमें ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्ती हुवे-इनके पीछे तेइसमें तीर्थकर पार्श्वनाथ बाणारसीनगरीमें हुवे, इनकेबाद चौइसमें तीर्थकर महावीर क्षत्रीयकुंडग्राममें हुवे, जो जो तीर्थकर होते है, संसारकों छोडकर तप करे और जब केवलज्ञान होजाय दुनियाकों धर्मका उपदेश देवे यह उनका मुख्यकर्त्तव्य है,

७-रिषभदेवसें लेकर महावीरतीर्थकरतक चौइसहुवे-इन्होंके सबशिष्य कितने हुवे इनकी गणना किइजायतो लखहांतक पहुंचती है, लेकिन! हां! जिन्होंकों गणधरपदवी प्राप्तहुइथी-वें-गिनतीमें ( १४५२ ) होते है, महावीरतीर्थकरके बडेशिष्य ग्यारह थे, जितनेचक्रवर्त्ती और-वासुदेव इसलेखमें लिखआये सब जैनधर्मकों माननेवाले थे, महावीरतीर्थकरके वरुतमें और उनकेबाद जो जो बडे बडे जैनीराजे हुवे ( जैनबोधके भेदमें )-लिखआये, इ-

सीकिताबके प्रथमतः रंगमें पृष्ठ ( १६९ ) पर देखलो, बीतभयपत्त-  
ननगरका राजा उदयन-कौशांबी नगरीकाराजा उदयन-विशा-  
लानगरीका राजा-चेटक-नवमल्लिक-और-नवलच्छिक-अठाराह  
राजे-और-बलमित्र-भानुमित्र-नरवाहन-तथा-कुमारपाल-वगेरा  
कइजैनीराजेहुवे कहांतक लिखे?—

८-महावीरतीर्थकरके जो ग्यारहबडेशिष्यहुवे उनमेंसे पांचमे  
सुधर्मास्वामीके-शिष्य-जंबूस्वामी हुवे, इन्होंने करोड़ रुपये छोड-  
कर तपस्या इस्तिथार किइ, इनके चेले प्रभवस्वामी हुवे-इनके  
बाद शय्यंभवसूरि-जोकि-पहिले-वेदपाठीब्राह्मण थे, वेदोंको अ-  
सत्य समझकर छोडदिये, इनकेबाद यशोभद्रसूरि हुवे, फिर संभू-  
तिविजय-भद्रबाहु-स्थूलभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती-सुस्थित-  
सुप्रतिबद्ध-महावीरतीर्थकरके निर्वाणवाद ( ३७६ ) पीछे-इयामा-  
चार्य-जिन्होंने-प्रज्ञापनासूत्र-रचा, इंद्रदिन्न-दिन्नसूरि-सिंहगिरि-  
वज्रस्वामी-जिन्होंने बौधोंको दूसरीदफे परास्तकिये, (प्रथम-म-  
हावीरतीर्थकरने किये थे,) महावीर निर्वाणके पीछे (५८४) वर्ष-  
बाद वज्रस्वामी-देहांत हुवे, सिद्धसेन दिवाकर-जोकि-पहिले कु-  
मुदचंद्र नामसे ब्राह्मण थे, पीछेसे जैनधर्मके साधु बने,—

९-महावीर निर्वाणकेबाद ( ६८४ ) वर्ष पीछे गंधहस्ती आ-  
चार्य हुवे, महावीरसे ( ९८० ) वर्षबाद देवर्द्धिगणिक्षमाश्रवणने-  
वल्लभीनगरीमें ( ५०० ) जैनाचार्योंको इकठ्ठे करके कंठाग्र ज्ञान  
था-पुस्तकाकार लिखा. यह नही जाननाकि-इनसेपहिले कोई  
जैनपुस्तक लिखानही जाताथा, बल्किन्! बहुतसाज्ञान कंठाग्र र-  
खते थे, जब अतिशयज्ञानी कमहोते गये लिखनेकी रसम ज्यादा

होतीगइ, उमास्वाति-ये-देवर्दिगणिक्षमाश्रमणसें पहिलेहुवे है, इ-  
नकों दिगंबरलोगभी मानते है, लेकिन! उनके बनाये हुवे ग्रंथोंकों  
पुरीतौरसें नही मानते, महावीरसें ( ९९३ ) वर्ष पीछे-कालिका-  
चार्य हुवे-जिन्होंने-सबआचार्योंकी-संम्मतिसे-भाद्रपदशुक्ल च-  
तुर्थीके रौज संवत्सरीकपर्व-स्थापन किया, महावीरसें ( १००८ )  
वर्ष पीछे साधुलोग पौषधशालामें निवासकरने लगे, पूर्वकालमें ब-  
नखंड-या-उद्यानमें रहाकरते थे, ज्यूंज्यूं जमाना कमजोर सब-  
काय कमजोर होतेगये, महावीर निर्वाणसें ( १०५५ ) वर्षबाद ह-  
रिभद्रसूरि हुवे, इन्होंने ( १४४४ ) ग्रंथोंकी रचना किइ, महावीर  
निर्वाणसें ( ११५० ) वर्ष पीछे जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण हुवे, जि-  
न्होंने बहुतसें शास्त्रोंपर भाष्य बनाइ, आचार्य गल्लवादी-जिन्होंने  
बलभीनगरीमें बौधोंकों परास्त किये.

१०-संवत् ( ७०० ) में-शैलंकाचार्य हुवे, जिनोंने आचारांग  
और सूत्रकृतांगपर-टीका-बनाइ, संवत् ( १०९६ ) में-वादिवेताल  
शांतिसूरि स्वर्गवास हुवे, संवत् ( ११३५ ) में-अभयदेवसूरि-देहांत  
हुवे-जिनोंने स्थानांगवगेरा नवअंगशास्त्रोंपर-टीका बनाइ, संवत्  
( १२२६ ) में-वादिदेवसूरि-देहांत हुवे-जिनोंने चोरासी हजार  
श्लोकप्रमाण-स्याद्वादरत्नाकर-ग्रंथ बनाया, जो अबपूरा नहीमि-  
लता, संवत् ( १२२९ ) में-हेमाचार्य-हुवे, जिनोंने राजाकुमारपा-  
लकों प्रतिबोध दिया, और-बहुतसे ग्रंथ रचे, आचार्य मल्लया-  
गिरि-जिनोंने कइ शास्त्रोंपर टीका बनाइ, मानतुंगसूरि-जिनोंने  
भक्तामरस्तोत्र बनाया, मानदेवसूरि-जिनोंने लघुशांतिको रचना  
किइ, देवसूरि-नेमिचंद्रसूरि-मुनिचंद्रसूरि-अजितदेवसूरि-सोमप्र-

भाचार्य-जिनोंने-सिंधुर प्रकरस्सव बगेरा स्तोत्र बनाये, जगच्छं-  
सूरि-जिनोंने तपगच्छविरुद्ध पाया, देवेन्द्रसूरि-जिनोंने कर्मग्रंथकी  
रचना किई, धर्मघोष-रत्नशेखरसूरि-जिनोंने श्राद्धविधिग्रंथ रचा,

११-हेमचिमलसूरि-जिनोंने त्रैलोक्यप्रकाश ग्रंथ-बनाया  
आनंदचिमलसूरि-विजयदानसूरि, हीरविजयसूरि-जिन्होंने अकबर  
बाहशाहको धर्मसुनाकर-जीव दयाके फुरमानपत्र बनवाये, विजयसे-  
नसूरि विजयसिंहसूरि-गणिसत्यविजयजी-उपाध्याय यशोविजय  
जी-तथा-विनयविजयजी-इन्होंने कईग्रंथरचे, गणिकर्पूरविजयजी-  
गणिसमाविजयजी-गणि जिनविजयजी गणिउत्तमविजयजी-गणि  
पद्मविजयजी-गणिरूपविजयजी-गणिकीर्त्तिविजयजी-गणिकस्तुरवि-  
जयजी गणिमणिविजयजी-गणिबुद्धिविजयजी-जिनोंका दूसरा नाम  
बुटेरायजी-मशहूर है, ये पंजाबके रहनेवाले थे, इन्होंने पंजाबमें  
हुंडिये मतको खंडन किया, और गुजरातदेशमें आनकर सनातन  
जैनश्वेतांबर आश्रायकी दीक्षा इस्तिथार किई,

१२-इनकेबड़े चेले-गणिमुक्तिविजयजी हुवे, येभी पंजाबके  
रहनेवाले थे, इन्होंने गुजरात काठियावाड़-बगेरा देशोंमें विचर-  
कर धर्मको अच्छा उच्चेजन दिया, इनके गुरुभ्राता-न्यायांभोनिधि  
आत्मारामजी (आनंदचिमयजी) हुवे, इन्होंने पंजाबदेशमें हुंडिये  
मजहमको बिल्कुल उठादिया. गुजरात-पंजाब-मारवाड़-और-रा-  
जपुतानेमें फिरकर हजारोंइशख्वाओंको धर्ममें पावंद किये, इनकी  
प्रख्याती किसीसे छीपी हुई नहीं, -चाहे जिसदेशमें जाकर तलाश  
करो तारीफ सुनोमें, वर्त्तमानमें जोजो जैनके साधु लोग है उनमें-ये  
सबसे अधिकज्ञानी थे. यह आसलोग यंत्रर रखते है,—

१३-मैं-एन्होंका एक इस्तदीक्षितशिष्य हूं, संवत् (१९३२) के असेमें उक्त महाराज जब भावनगर पधारे-मैं-उनके व्याख्यान सुननेको जाया करता था, उस वख्तसेही मुजको उनका उदेश अकसीर होकर लगा, बाद संवत् (१९३६) वैशाख सुदी (१०) मी-गुरुवार-वख्तदसबजे-मुकाम-मल्लिकोट-जीलालुधिहाना पंजाबमें-इन्हीके पास मैंने दीक्षा लिइ, मेरा खास बतन-शहर भावनगर-जिले काठियावाड-गुजरात है, ज्ञाति विशाओशवाल पिताका नाम-मानकचंद्र माताका नाम-रलियातकवर था, जन्म संवत् (१९१७) का-उत्तीस वर्षकी उमरमें दीक्षा इस्तिथार किइ, मुजे-जो कुछ विद्याहासिल हुइ उक्त महाराजकी बदौलत स-  
 १४ मैंने जो कुछ इस ग्रंथमें दर्जकिया बहुत शास्त्रसे चुना है, भूतेधर्मका उपदेश करना इसके समान कोइ पाप नही, और मन्वेधर्मका उपदेशक होना इसकी बराबर कोइ धर्म नही, मतम-  
 तांतरके बारेमें मुजे बहुत कुछ लिखना था-लेकिन ! ग्रंथ बढ़ गया इससे कल्म बंद करता हूं,—

१४-मैं-पेस्तर अखबारोंमें जाहिर कर चुका हुंकि-जिसमहा-  
 शयकों-धर्म संबंधी किसीतरहके सुवाल करना हो बजरीये अख-  
 बारके मुजको खबर दे, मैंभी-जवाब उसका छापेहीमें इरसाल  
 करुंगा, सबबकि-इसजमानमें बहुतसे लोग जबाबपाकरभी बदल  
 जाते है इसलिये यही मुम्किन समझा गया. अगर कोइ शरूश  
 खबर सवाल करना चाहे तो दर्भियान एक मोतबीर शरूशके  
 काररवाइ किइ जायगी-और-परदेशसे पुछना चाहे तो अखबार-  
 द्वारा जवाब दिया जायगा, किताब मानवधर्म संहिता-(शांतसु-

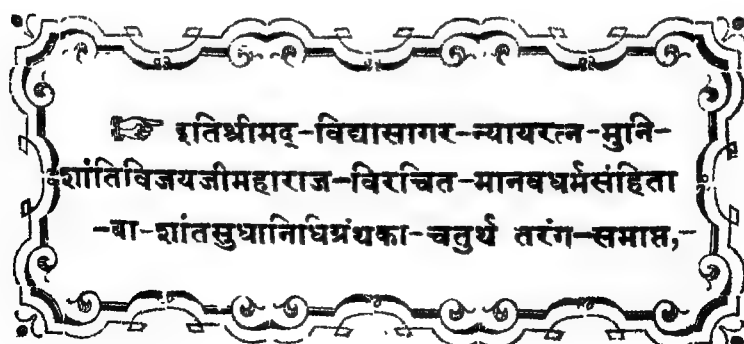


धानिधि, -पूर्ण-करता हूं, मैं-पूर्णज्ञानी नहींकि-बगैर चूकके लिख गया हूं, भूल मनुष्यमात्रके पीछे लगी हुई है, जानकार मुझे क्षमा करे, और जबतक मेरी जींदगी दुनियामें मौजूद रहे मेरे पास लिख भेजे-याते-दूसरी आवृत्तिमें दुरुस्त किया जाय.

१५-जीव एकीला आया-एकीला जायगा, मनुष्य जन्म सच्चेधर्मपर श्रद्धा-दिलमें रहेंम-खानपानका आराम-और-देवगुरुकी सेवा-इतनी चीजें बड़ेही पुण्यके ताल्लुक हैं, मनुष्य जन्म पाकर जो लोग धर्म नहीं करते उनकी बड़ी भूले समझो-धनदाँलत और सुखसंपदा धर्मरूप कल्पवृक्षकेही फल है, धर्मसेही आनंद मिला-और-मिलेगा, जिनकों परलोकका रास्ता साफकरना हो संसारके बंधनसें-छुटकारा पाना हो-और-आत्मिकज्ञान हासिल करना हो-धर्म करे, इस ग्रंथमें हरजगह यहीनतीजा दिखलाया है, इसके पढ़नेमें आमलोगोंको फायदा हासिल हो—

■ ( संवत् १९५५ )—

हस्ताक्षर-मुनि-शांतिविजय,—



## [ सिद्धार्थराजाने महावीरस्वामीके जन्म होनेपर जो कुछ खुशी मनाई उसका बयान. ]

### [ हरिगीत छंद. ]

श्रीवर्द्धमानजिनेंद्रजन्में-हर्षबाढों अतिमही,  
 सिद्धार्थराजाके भुवनमें-न्यात सब भेली भइ,  
 परिवारके सब पुरुषनारी-मुदितमन तहां आइयां,  
 सिद्धार्थराजा स्वतः उनकों-थाल भरभर लाइयां, १,  
 सब न्यात मिल भोजनकरे-आनंदभर धन ते घडी,  
 सिद्धार्थराजा त्रिशलारानी-खुद परोसैं तहां खडी,  
 धुभनालियरकी गिरी केंला-दाख नारंगी भली,  
 अंगूर जामन जामफल-दाढम अलूचा आमली, २,  
 लोकाट आम अनार आहु-सेव सरदा फालसा,  
 केमर कसेरु नासपाती-बीह कमरस कलरसा,  
 नींबु खजूर अंजीर खिन्नी-मुरस पौंढा आमला,  
 चकतर सरीफा बौर आदिक-हरितमेंवा मन रला, ३,  
 बादाम पिस्ता दाख खारक-बेल चारोली मली,  
 अखरोट खुरमा खोपरा-चिलगोजिया मूंगीफली,  
 इत्यादि बहुविध खुशकेमेवा-अबसुनो भोजन सही,  
 अतिमिष्टमोतीचूर लाहु-मगदमोदक मूंगही, ४,

मोदकमनोहरे सिंहकेधरी-सरस नुक्ती पाकके,  
 तिलके सकरके केल मोदक-आम्ररस अरु दाखके,  
 बर्फी जलेबी सूत्रफेणी-शकरपारा इमरती,  
 पेठा गिंदोडा छालजामन-कलाकंद भला अति, ५,  
 खजला सुहाल खजूर मठडी-बालूसाही रेवडी,  
 लौजात मोहनभोग सोरा-ल्हापसी मोठी बडी,  
 पूरी कचौरी दालघाटी-बेंढवी खस्ता लुची,  
 मांढें परांठे दालचावल-खरिपूवा मनरुची, ६,  
 चीले पकोड़े गुलगुले-माखन मलीदा चूरमा,  
 मीठी कढी अरु चर्चरी-इत्यादि भोजन सब जमा,  
 पापड चणेकीदाल भुंजी-सेब खटरस पापरी,  
 बहुविधचवीणा दही ताजी-नमक जीरामें भरी, ७,  
 परवाल चौले सुहजने-सांगरवगेराकी फली,  
 मटरा करेला बाकली-कचरो कचारेकी कली,  
 खीरा करोंदा आल कौला-खेलरा ककडी तुरी,  
 मिरची हरी मेंयी खरी-भिंडी वगेरा बहुहरी, ८,  
 नींबूके रसयुत बहुपदारथ-बड़े नानादालके,  
 चौले चनेकी मूंगकी-पीठीके नानाचालके,  
 कर्पूर अगर इलायची-इत्यादि मिश्रितजल सरस,  
 मिश्रीमें मिश्रितकेबड़ा-अरु दुग्ध उपजे मनहरस, ९,  
 तंबोल पानइलायची-बादाममिश्रित छालिया,  
 केशर जबत्री जायफल-कर्पूर लबंग कथा लिया,  
 घर बर्क सोनेमें लपेटे-हाथ सबकेमें दिया,

चंपा चमेली जुड़ी मेंहड़ी-केवड़ा नीका लिवा, १०,  
 गैदा गुलाब सिंगार मरवा-मदनसर शुभ, मोगरा,  
 नानाप्रकार सुगंध ले-सन्मान बहुजनका करा,  
 सेछे दुपट्टे रेशमी-पघड़ी कलाबतूनकी,  
 जरके बनाये वस्त्र बहु-और-कोर साची ऊनकी, ११,  
 सब नारियोंको जरी साडी-कांचली अरु ओढ़ना,  
 बहुमूल्य वस्त्रदिये-किया सत्कार आदर बहुधना,  
 सिद्धार्थनृप महावीरस्वामीके-पिता जग यश लिवा,  
 शांतिविजय कहे विवुध पुरजन-सबनको राजी किया, १२,

## [ संगीतशास्त्रकी बातें, ]

जितने दुनियादार पुरुष-या-स्त्री-हैं सब-स्वाभाविक तौरसें जब बातचित-या-भाषण करते हैं तो-प्रथम सप्तकके भीतरही भीतरतक रहते हैं, कारण पाकर दूसरी-या-तीसरी सप्तकतक जाय-तो-जाय, लेकिन ! स्वाभाविक तौरसें तो प्रथमहीतक रहेंगे, गवैये लोग-जोकि-बखूबी खुले हुवे गमकदार अवाजसें गाकर सहीसही स्वर लगाते हैं-जिनकी खरज-शुद्ध बनी रहती है-वै-अढ़ाई सप्तकतक पहुंच सकते हैं, जो लोग कानके हाथल-गाकर टेढ़ी गर्दन करके नाकका स्वर लगाते हैं और मनमें समझते हैं हम तीन सप्तकसेंभी ज्यादा पहुंच गये-यह समझना गायन कलाकी विद्यासें बखिलाफ-है, शुद्ध आलाप उसको कहते हैं जैसा स्वाभाविक अंग उसका हो-वैसाही स्वरूप गाते वरुत बना रहे, सो-यह-काम-अढ़ाई सप्तकतक होगा, ज्यादातक नहीं.

( कंठ साफ होनेकी तरकीब. )

( दोहा. ) ~~॥~~ मीर्च कुलिजन बावची-वच पीपर अरु पान,  
एक पहर मुखमें धरो-कंठ कोकीला जान, १,

[ श्रीयुत-सौजाग्यचंद्रमुणोतका बनायाहुवा  
गुरुनक्तिपर-पद,-जीजोंटीकी ठुमरी, ]

( जलभरन जात यमुनाकेघाट-बड़े ठाठसैं आवत  
कामनीयां जल,-)-( इसचालपर, )-

विद्यासागर-न्यायरत्नश्री-शांतिविजय महाराज मुनि है, वि,  
मिथ्यामतज्वर दूर करनकों-बानी अमृतरसमधुर ध्वनि है, वि, १  
भविजनके हितकारक तारक-तुम कीर्त्ति विरूयात सुनिहै, वि, २  
दक्षपुरनगरमध्य चौमासो-भाग्य भलो और शुभकरनीहै, वि, ३  
नरनारी मिल चरनकमलयुग-संवो ये गुरु ज्ञानगुनीहै, वि, ४  
सोभाचंदबंदित प्रमुदितचित-मेरे तो अब आप धनीहै, वि, ५,



# [ धर्म-अर्थ-काम-और-मोक्ष. ]

( धर्म. )

१-जाननाचाहिये धर्म-दौलतसेंभी-बढकर है, दोस्तभी अगर दुश्मनबनजायतो-बननेदो, पक्कादोस्त तुमाराधर्महै, जिसजगह अपनाधर्म-भ्रष्ट-होताहो वहां रहना कोइजरुरतनही. दुनियादार पापका फल प्रत्यक्षदेखरहेहै ! लेकिन ! नमालूम फिरभी धर्मपरनिगाह क्योंनहींबढाते ?-जिसबातका घमंडलातेहो-जरुर उससें नीचा देखनापडताहै-लेकिन ! नमालूम ! फिरभी उसकों तुम क्यों नहींछोडते ?-संसाररूप-केदखानेसें-छुटनेका रास्ता धर्म है जानतेहुवेभी उसतर्फ कदम क्यों नहीं बढाते ?-खूबयादरखो ! नाजुक शरीर-लंबीउमर-उच्छी औरत-औरतकों अच्छा पुरुष-हुकमहोदा-दौलत-औरबिद्या-पूर्वकृतधर्मसेंही-पायेहो,स्वर्ग और मोक्षभी धर्मसेंही मिलेगा-ऐसे मिलनसारदोस्तकों-क्यों भूलेहुवेहो ?

२-काया अनित्यहै-सरना नहींसंसारमें इसजीवकों किसी-का-तरहतरहकी वेदना जीव-भोगताचलाआया-अपशोषहै अब तक इसे ज्ञाननहीहुवा,अकेला आया-और-अकेलाही जायगा-कोइ साहायक-शिवाय धर्मके-न-बनेगा, देखलो ! राजेलोगोंकों इजारांह नोकरहोतेहुवेभी मरना नजीकआनेपर कोइ साहायक नहींबनता, धन-योवन-और-उमरका भरुसानही.पूर्वजलोग-जितने मरगये अगर एकएकभी उनमेंसें बनेरहते-तो-उनके रहनेकों जगहतक न मिलती, संसारका यही स्वरूपहै-जो-आया-

वह-चला जायगा, धर्मका बोधपाना जीवकों महादुर्लभसें दुर्लभहै, खूब ! यादरखो !! यहशरीर मिटोकापुतला और-सारबस्तु-धर्म है-शास्त्रोंमें जो-विधिवाद-चरितानुवाद-और-यथास्थितवादका ब-यानहै पुरीतौरसें समझो. उमरभरमें बनसकेतो नवलाख नमस्कार मंत्र पढो, किये हुवे पापोंको किसी ज्ञानीगुरुके सामने बयान करके प्रायच्छित लो, नैकीसें हासिल किई हुई दौलतसें अगर बनसके तो जिनमंदिर बनवाओ, इतनी ताकत नहोतो एक जिन-प्रतिमा बनवाकर तीर्थकी जगह-या-अपने शहरके जिनमंदिरमें स्थापित करो, पाठशाला-या-पुस्तकालयकी वृद्धिहो एसा प्रयत्न करो, नष्टहोतेहुवे अमूल्य शास्त्रोंका छापेद्वारा-या-लेखनीकेजरीये जीर्णोद्धारकरके रक्षण करो, पैदाशमेसें अर्द्धांश चतुर्थांश-अष्टमांश षोडशांश-द्रव्य-धर्ममें लगाओ, बनसकेतो संसार छोडकर दोषा लो, और परलोकका-रास्ता साफ करो,

( अर्थ. )

१-दुनियादारलोग-धनकों-प्राणोंसेंभी-अधिकप्यारा समझ-तेहै-लेकिन ! ज्ञानीलोग-इसे-दुर्गतिका द्वार-दुखका कारण-और-पापका मूल-फरमातेहै, कितनेक कहतेहै धनसें धर्मभी-तो-बन सकेगा, लेकिन ! असलपुछो-तो-भावधर्म-मनसेंही-बनेगा-धनसें नहीं. हां ! दुनियादारोंको धनकी-कुच्छपरवाह जरूर है, इसलिये उसका बयानदेना यहां लाजिम आया,-पहिले इतनायाद रखलोकि-जहांतुमको कुच्छ पैदाश-नहोतीहो-वहारइना कोइजरूरतनही दुश्मन-अधमी-और-हिंसककी पडोशमें रहना हरघुरत बुराहै, दुसरेके

घर-रूपये-व्याजुधरना-उससेतो दूसरेकी चीज अपनेघर-रखकर-उसपर धनदेना निहायतउमदाहै,-अकलमंदकों एकशहरके कौ-नेमें पहेरहना अच्छानही,देशाटनकरनेसें इज्जत मिलेगी,लेकिन ! खानपानकी सामग्री-और-खर्चा-पासरखकर जाना यातेकिसीसें लाचारी करना-न-पड़े,-

४-जिसचीजकों खरीदना चाहो-देखभालकर हाथमें लो-और-पीछें दाम दो, दुनिया-दगलबाजोंकी सरायहै, घर-हाट-कोट-किला-पुल-धर्मशाला-या-देवमंदिर बनवाना थुरु करो-तो-मगसीर-फाल्गुन-वैशाख-या-श्रावणमहिनेमें-रोहिणी-मृगशिरा-पुष्य-हस्त-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-ज्येष्ठा-उत्तराषाढा-शततारका-उत्तराभाद्रपद-और-रेवतीनक्षत्रके रौज-जब-अपना चंद्रस्वर चलताहो-नींव-ढालो,प्रथमईंट-अपने-बायेहाथसें रखो,-मकान उमदावनेगा-और-उसमें रहनेवाले सुखचैनसें रहेगें, विना चंद्रस्वर नींवढालोगे-या-उसमें रहने जाओगे-तकलीफ उठाआगे,-जिसदिशातर्फ घरका दरवजा हो-वही-उसकी अपेक्षा पूर्व-दिशा जानना, सूर्योदयकी पूर्वदिशा-यहां-नहीलेना, दरवजेकी अपेक्षा जोपूर्वदिशा कहचूके उसीतर्फ खजाना रखनेका मकान बनाना चाहिये, अग्निकौनमें रसोइघर-दखनतर्फ शयनघर-नैरु-त्यकौनमें शस्त्रशाला-पश्चिमदिशातर्फ भोजनजिमनेका स्थान-वा-यव्यकौनमें अनाजका संग्रह-उत्तरमें पानीरखनेकी जगह-और-इक्षानकौनमें देवमंदिर बनानाचाहिये, जिसघरमें पहिले-चौथेपहरकों छोडकर दूसरे तीसरे पहरमें वृक्षकी-या-देवमंदिरकी ध्वजाकी छाया पडतीहो अच्छानही,-जिमघरके दरवजेके पास जिनमंदिरकी पीठ आतीहो-वहभी ठीकनही, रहनेवालोंकों तक-



लीक रहेगी, दुश्मनभी घर आवे तो उसका मानरखना और पान बीड़ी देना न्याय है, -तुमको कोई कार्य किसीसे कराना है और उससे वह इनकार हो-तो-अन्योक्ति करके कहो, न-माने तो चूर हो, जो-राजोरी कोई कार्य नहीं बनता, जो कार्य तुमसे न-हो सके उसका प्रथमसे ही ऐसा जवाब दे दिया करो, झूठा दिलासा देना फिजूल है. जिसके साथ तुमारा स्नेह है-उसके सामने हर हमेशा विरोध की बातें मत करो, सच्चसच्च और प्रेमयुक्त कहना हो सो कहो;

### ( काम. )

५-स्त्री-पुरुषकी मोहबत छोपी नही रहती, जबजब देखेगे प्रेम जाहिर होगा, बारबार नेत्रमिलाकर स्थिर दृष्टिमें देखना इसीका नाम प्रेम है, जहां स्त्रीपुरुष-संभोग करते हो-या-बिल्कुल नंगे बैठे हो-उसबख्त उनकी तर्फ देखना नही चाहिये, बिल्कुल नंगे होना बेबकु-फोंका काम है, एकदख तो सदैव पहने रहना चाहिये, किसी स्त्रीने तुमसे प्रेमवचन कहे हो-किसी बातका ओलाहना दिया हो-नेत्रमिलाये-या-रतिक्रीड़ा किइ हो-उसबातको किसीके सामने मत कहो, किसीका पर्दा खोलना अच्छी बात नही, औरतको भी मुना सिब आया किसीमर्दकी बात जो अपने साथ गुजरी हो-उसरेके सामने न कहें, गुरुके सामने प्रायश्चित्तलेतेवख्त कहना बुरा नही, गुरुभी उसबातको जाहिर न करे ऐसा न्याय है, जिस औरतके सामने तुमने देखा और उसने मुंह फेर लिया-स्पर्श करनेसे नाराज हुइ उससे प्रेमबांधना कोई फायदा नही. दूर रहनेसे-या-दिनरात पास बैठारखनेसे स्त्रीके साथ प्रेम दूट जाता है, पचीसवर्षका यह-

और-सोलहवर्षकी-औरद-संतान उत्पत्तिके लाइक-हुवे कहेजा-यमें, आजकल-जो-विचित्रता देखतेहो-जमानेकी खूबीहै,

६—गर्मीयोंके दिनोंमें जितना ज्यादाकामभोग सेवोगे तक-लीफ उठाओगे, असलमें सुतेसर्पको जगानाही बुराकहा, ज्ञानी-लोगोंका फरमानाहै कि—गर्मीयोंकी मौसिममें पनरांहरोजके बाद कामजोग सेवनेवाला सुखी रहेगा, चौमासेमें तीनदिनके बाद-और-ठंडके दिनोंमें इच्छानुसार कामभोग सेवनेवालाभी-ज्यादे तकलीफ-नउठायगा, लेकिन ! इसमें-शरीरकों तकलीफ पहुंचा कर सुखमानना-शिवाय इसके-और-कोइबात हासिल नहींहोस-कती. क्याकहाजाय ! गृहस्थलोग इसकोंबिलकुलछोड-नहीं-सकते -जहांतक-कम-हो=अच्छाहै,-शयनकरतेबखत इष्टदेवका स्मर्णक-रके सोनाचाहिये,-जिसकों बुरेबुरे स्वप्नआतेहो-नींदमें खौफलगता हो-उपसर्गह्वरस्तोत्र-तीनदफे पढ़करसोयाकरे, रात्रीकों बहुतजा-गना-या-लिखना अच्छानहीं, आरामकरनाही ठीकहोताहै-याते-खायाहुवा भोजन अच्छीतरह पचजाय,

### ( मोक्ष. )

७—मोक्षनाम मुक्तिकाहै, देवगुरुधर्म-मोक्षसाधनके निमित्त कारण है, इसलिये देव-और-देवमंदिरका-कुच्छवयान सुनिये ! जो सबलोगोंकों उपकारी है, शिवाय अरिहंतके-औरोंमें-देवके लक्षण सबुतनहींहोते, अरिहंतकहो-या-जिन-एकहीबातहै, जिनें-ब्रह्मदेव जब-उपकारी सबुत हुवे-तो उनकी मूर्ति-और-मंदिर इ-

नियकों अच्छेभाव पैदाहोनेके कारण क्यों नकहे जायमे !-जरूर कहे जायमे, बस ! सिद्धहुवाकि-उनकीमूर्ति-और मंदिर आमलो-गोंकों उपकारकहै, इसलिये पहिले मंदिरका बर्नन सुनिये ! जिन मंदिर वहांपर बनानाचाहिये जहांपर बीजडालनेसें औरजगहकी अपेक्षा बहुतजल्दी फल उत्पन्न होताहै,-हाडचर्मवगेरा शल्यवाली जमीनपर मंदिर बनायाजायतो बनानेवालोंकों अशुभका-सूचक है, फटीहुइजमीनमें-या-सर्प वगेराके बिलवालीजगहपर-मंदिर बनायाजायतो-बनानेवालेकों-रोग उत्पत्ति-और-महान्कष्ट हो-नेका द्योतकहै, अगर सवालकियाजायकि-जिनेंद्रदेवका मंदिर-और-मूर्ति-तो महान् उपकारक फरमाचुके-और उनके बनाने-वाला तकलीफ उठावे-यह-क्याबात !-( जवाब. )-शास्त्रप्रमाणसें अयुक्त बनावे तो तकलीफका कारणहै-प्रमाणयुक्त बनावे तो कौन कहेगा बुराहै ?

८-जितनाउंचा-मंदिरहो-उतनेघैरेमें-पुरुताकोट बनवाना चाहिये, बिटूनकोट-मंदिरकी रवंन्नकही नहीआती, देखिये ! जो जो पुरानेमंदिर बनेहुवे है उनकी चौतर्फ कोट बनाहुवा जरूर मि-लेगा, हरेकमंदिरमें जोजो मूलनायकप्रतिमा होतीहै उसकोअचल रखनाचाहिये-प्रतिष्ठाकेदिनसें चुनावगेरामसालासें जमारखना ठीक है कभी उठानानही, जोलोग हमेशा उठातेहै उनकों पुछनाचाहिये स्थापनाका-मुहूर्त्त तुमाराकहांरहा ? बल्किन् ! उसकाफल बिल्कुल नष्टहोगया, जिसके ताल्लुक-या-जिसका-बह-मंदिरहोगा उसके छिये बुरेदिनोंकी निशानी है, असलमें जितनी पाषाणकी प्रतिमा-मंदिरमेंहो-सब-चुनेसे-स्थिरकरदेना चाहिये-याते-संहितहोनेक

डर-न-रहे, अगर कहाजायकि-खौफकेवल्ल मूर्ति उठाना पड़े तो-देरहोगी. ( जवाब ) देरका क्या काम ?-तुर्त उठसकती है,- बाहियात्तर्क करनामुनासिबनही, सौचो ! फिर बढीबढीप्रतिमा बनाना क्यों मंजुररखागया, खौफकेवल्ल दस आदमी उठानेके लिये कहांसैं आयगें ? वस्तुतः सब मंदिरमें मूर्ति अचल रखना बहुतठीक बात है,

९-जिसशस्त्रके हाथसैं प्रतिमाका नख खंडित होजाय-उसकों दुश्मनमें तकलीफ होगी, जिससे अंगुली खंडितहोजाय-उसकों स्थानभष्टहोनापड़ेगा, जिससैं हाथखंडितहोजाय-उसके कुटुंबका विनाशहोगा, जिसके हाथसैं पांवखंडित होजाय-उसकी दौलत चौर लेजायगें-जिसकेहाथसैं गर्दनखंडितहोजाय-उसकें लिये सबतरह बुराहै, मूलनायकप्रतिमाकी दृष्टि किसतरह रखना उसकाखुलासामुनिये-मूलगर्भद्वारकी जितनीउंचाई हो-उसके आठ भागकरना-और-उनमेंसैं उपरका आठमाभाग-तथा-नीचेके-छ भाग-छोडकर-जो सातमाभाग रहा-उसके फिर सातभाग करना -उससातभागमेंसैं नीचेके-छभाग-छोडकर-उपरका जो एकभाग रहा-उसभागमें ठीकमीलाकर मूलनायकप्रतिमाकी दृष्टिरखना चाहिये, इससैं ऊंचीनीची रखोगे-तो-अच्छा नहोगा,-उसकेमालिककों दुख बोधकरहेगा.

१०-जिसमंदिरका जीणोंद्वार करायाजाय-और-मूलनायक प्रतिमा-न-उठाइगइहो-तो-नवीनस्थापना करानेकी जरूरत नही, अगर अठाइगइहो-तो-फिर प्रतिष्ठापहोच्छव नया करानाहोगा, जिसरंगके पाषाणकी प्रतिमाहो-उसीरंगकी कोइरेखा-उसमेंदि-

खाइवे-तो-कोइहर्जकीबातनही, अगर दूसरेरंगकी रेखाहो-जैसे कालेमें सफेद-और-सफेदमें काली-तो-अच्छानही, बनानेवाले-कों दुखका कारणहै, रौद्रस्वरूपवाली प्रतिमाहो-तो-जानलो ! बनानेवालेकेलिये बुराहै, अति स्थूलप्रतिमा-कारीगरके विनाशका सूचकहै, खरमोशके उदरसरीखा-उदरवाली-प्रतिमा दुर्भिक्ष-और-विनाशकाकारण जानो, बहुतपतलीप्रतिमाहो-तो-बनानेवालेके लिये बुरेदिनोंकी निशानीहै, नाशिका टेंडीहो-या-मुख-जैसा चाहिये-उसी प्रमाणसें छोटाहो-तो-बनानेवालेकेलिये तकलीफ-का-कारणहै, छोटीकमरवाली हो-तो-स्थापनकरनेवालेका हृदय सुरत-नाशहोगा, चक्षुरहित हो-तो-बनानेवालेकी आंखोंमें पीड़ा रहेगी. छोटीजंघावाली-होतो-बनानेवालेकों कुटुंबसें बियोगरहेगा. छोटे अंगोपांगवाली-हरसुरत-बिगाडका कारणहै, प्रतिमाका-मुख-ऊंचा-नीचा-या-टेढाहों-तो-बनानेवालेकेलिये तरहतरहकी विपत्तिप्राप्तहोनेका कारणहै, बहुतनीचीदृष्टिवालीभी-ठीकनही, झल्लिये प्रतिमा-बनवाना-या-तयार-लेना-तो-जानकारसें-दर-याफतकरके लेनाठीकहै, शास्त्रोक्तप्रमाणसें रहितहोना-अमंगलीक-और-प्रमाणयुक्तहोना मंगलीकका-कारणहै,

११-पदमासनप्रतिमाका-समचतुरस्र-नापहोना चाहिये. एक घुटनेसें दूसरे घुटनेतक सिधीदोर नापलो, वहीनाप बायेंघुटनेसें दाहनेस्कंधतक-औरफिर वहीनाप दाहनेघुटनेसें बायेंस्कंधतक-एकसरिखा मिलालो. चौथानाप महाराजके नीचेके स्थलसें मस्तकतक एकसरिखा देखलो, इसीचारनापकानाम समचौरस प्रमाण मानाहै, ऐसी समचौरस और सुंदरप्रतिमा-पूजकपुरुषकों

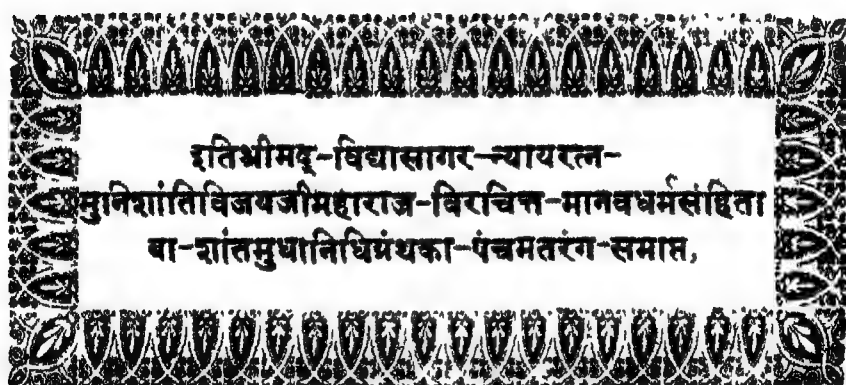
महान्मुक्तकारणहोगी. प्रतिष्ठाकरातेवस्तुजब प्रतिमा बैठाना तब अपना चंद्रस्वरूप देखकर बैठाना चाहिये, ज्योतिषके मुहूर्तसे बढकर स्वरोदयज्ञान है, गणिषिद्धापयमेमें छित्ताहुवा है कि-निमित्तज्ञान-का फल-लोग-नही जानते, इसलिये ज्योतिषद्वारा दिनशुद्धि देखकर स्वरोदयज्ञानसे कायलेना ठीक है, घरदेरासर अपने रहनेके मकानसे कुछ उंचा होना जरूर है जिससे अपनी हरसुरतसे उच्च-तिबनी रहे, घरदेरासरमें पाषाण-या-धातुकी-प्रतिमा-रखना ठीक नहीं. धातु-या-रत्नकी रखना अच्छा है, सोपी-ग्यारह अंगुलसे ज्यादा उंची न हो, बडी प्रतिमा-बडे मंदिरमें स्थापन करना मुनासिब है, आजकल-मानक-पंखा-स्फटिक-लाजवर्द-निलय-संगेशम-और-पुखराजबगेराकी-प्रतिमा-देखनेमें आती है, पहिलेदिनोमें सब तरहके रत्नोंकी थी, बडे उत्तमपुरुष होगये जिनोंने संसारकी मूर्च्छा छोडकर धर्ममें ध्यानदिवा, कइजगह देखा गया घरदेरासरमें भी-लोग-बडीबडी रत्नक रखते है, असलमें सारवस्तु-जगतमें धर्म ही है, और-सब-मिथ्याग्रपंच आत्माको अहितका देनेवाला जानो.

१२—प्रतिमाके उपर छत्र उसतरकी बसें रखना जो-नासिका-और-कलाटके ठीक मध्यभागपर ऊंचे-सिंघीलकीरमें रहे, हरेक मंदिरमें घंटानाद होतारहेगा-तो-उसमें रत्नक बनी करेगी, हरेक मंदिरके शिखरपर ध्वजारखना जरूरी बात है, ध्वजारहित मंदिरमें पूजा करनेसे पूजाका फल नही होता, एकदिन भी ध्वजारहित-मंदिर रखना ठीक नही, ध्वजा-त्रिसूटी रखना चाहिये, कइलोग-खंभी-और-चौखूटी रखते है, काबदेसे बसिल्लाफ बात है ध्वजाका यही कायदा सज्जो कि-त्रिसूटी होना-कइलोगमें बंदरबगेराके कार-

णसें कपड़ेकी ध्वजा-सावत-न-रह सकती हो-तो-पीतलकी ध्वजा  
तयारकरके उसमें अष्टमंगलीक-या-एकीलास्वस्तिक-बनाके लगा  
देना चाहिये याते सदा आनंदमंगल रहेगा,

( संवत् १९५५- )

हस्ताक्षर-मुनि-शांतिविजय,-



## ( गहूली गहूली. )

( जगतगुरु जिनवर जयकारी, ) इस चालपर,—

- श्रोतारे सुनो गुरुगुणना रागी-जानेरे तुम भाग्यदशा जागी,  
 श्रोतारे सुनो गुणना रागी, ए देशी,  
 जंबूमारे भरतभलूं सुनिये-देशगुर्जर राजनगर गणिये,  
 शोभारे तेह शहरतणी सुनिये-श्रोतारे, १  
 शोभेरे जिनमंदिर जयकारी-के-शत उपर अठ निरधारी,  
 नमेरे जहां नितनित नरनारी-श्रोतारे, २  
 करमदल कापवा बलवंता-साधुरे जिनशासनमें रमता,  
 एतारे पांचो इंद्रियने दमता-श्रोतारे, ३  
 आव्यारे गुरु देशविदेश फिरी-भूमी राजनगरनी पवित्रकारी,  
 श्रोतारे मन शंभय दूर हरी-श्रोतारे, ४  
 संवत् ओगणीस चालीस विषे-गुरु गिरुवा एकविष सिध्वे,  
 रही राजनगरमें कर्म पीसे-श्रोतारे, ५  
 तृप्णा तरुणीथी मन तांणी-विरतिरमणी करी पटराणी,  
 जेह उभयलोकमां गुणखाणी-श्रोतारे, ६  
 विवेकने मंत्रीपद ताजां-संवेगकुबर किया युवराजा,  
 सवर रहे हाजर दरवाजा-श्रोतारे, ७  
 आर्जवपटहस्ती महाभारी-बिनबल्लुष घोडा मिणधारी,  
 मुनि आतमराज करे भारी-श्रोतारे, ८  
 रथ संपमशिलतणा भरिया-सुखट अमदमणी अलंकरीवा,  
 मुनिरे समयतारसना दरिया-श्रोतारे, ९



के समकितमहेल बनोहारी-संतोषसिंहासन गुणकारी,  
 बेठारे जहां मुनिमुद्रा धारी-ओतारे, १०  
 चामर जहां धर्मभुकल करता-किरातिअशक्त जहां फिरता,  
 कर्यारे जेणे मोहरिपु हरता-ओतारे, ११  
 अलिकद्रव्यराज कथुं अलगुं-भलुंरे भावराजमां बन बलगुं,  
 दुरितवन शिघ्र जेथी सलगुं-ओतारे, १२  
 आत्मरूप लक्ष्मी रुहो लेवा-सदा करे शांतिविजय सेवा,  
 मीलेरे जेथो मुक्तितणा येवा-ओतारे, १३

### ( गहूली दूसरी, )

( भवी तुमे सुणज्योरे-भगवतीमूत्रनी बाणी, ) १ देसी,  
 भवीतुमे सुणज्योरे-गुरुमुखमधुरो बाणी,  
 दिलमां धरज्योरे-समतारसगुणखाणी,  
 पंजाबदेसमां जन्मलिया गुरु-बालपणे व्रत लीबा,  
 व्याकरणालंकार भणीने-दुर्पत दुरे किषा, भवीतुम. १  
 नामसमानगुणे शोभंता-सुमतिगुप्तिना धारी,  
 आनमनिजपद ध्यानमां लिना-भिना जिनगुणवधारी, भवीतुम. २  
 आगम अनुसारी किरिचामां-अप्रमत्त गुरुराया,  
 तृष्णातरुणीथी मन तांणी-संयम तान लमाया, भवीतुम. ३  
 गांमनगरपुर देसविदेसे-विचरंता व्रतधारी,  
 बहुजनने प्रतिबोध दइने-दुरमति दुर निवारी, भवीतुम. ४  
 संसयशत्रु दुर निवारी-भयथी निर्भय कीषा  
 खटमत्तत्व स्वरूप बतावी-छोचन अमने दीषा, भवीतुम. ५

कुम्भवादेकां कुर निवारी-कीचो इन सुपसाव,  
 बरुहकदिवदा जिनवाणीना-मकटाया गुरुराय, भवीतुम. ६  
 ए उपकार तुमारो कहो गुरु-विसायो किय जाय,  
 स्वर्णकरी उपकारीतणां सहु-गुणगातां दुख जाय, भवीतुम. ७  
 ज्ञानबधे ज्ञानीगुणगातां-ज्ञानी गुणधी भरिया,  
 सांतिविजयंकहे गुरुगुणदरिया-केम तराये तरिया, भवीतुम. ८

### ( गहूली तीसरी. )

[ इसमें महाराजभी आत्मारामजीका-जीवनचरित-गुंफितहै. ]

( साभलजोरे मुनि-संयमरागी,-उपसमश्रेणी चढीयारे,)

ए देखी,

आजनगरमें सुगुरु पधार्या-जिनआगमना दरियारे,  
 ज्ञानतरंगे लहेरां लेता-ध्यानपवनथो भरियारे, आजनगरमें, १  
 आजकालमां जे जिनआगम-दृष्टिपथमां आवेरे,  
 गहनमहन तेहना जे अर्थो-प्रकटकरीने बतावेरे, आजनगरमें, २  
 शक्तिनही पण भक्तितणे वक्ष-गुणगावा उलसावुरे,  
 कर्णामृत गुरु चरित सुणावी-आनंद अधिक बढावुरे, आज० ३  
 दक्षिणदिशि जंबूद्वीपमांही-मेरी भरतमझाररे,  
 उत्तरदिशि पंचाबदेस जहां-लहेरां भांव मनोहाररे. आज० ४  
 लखीबवंश गणेशचंदधर-जन्मलिया सुखधामरे,  
 बपदेवी कुशी मुक्तिमां-मुक्ताफल उपमानरे, आज० ५  
 लखुबधमां पण लखनयी बहु-दीपता गुरुरायारे,  
 संगतयी मिली दुंदकवनने-दुंदकवंश बसायारे, आज० ६

संवत ओगणीसे दसमाही-उत्सवकार्तिक मसेरे,  
 ब्रंच्चीमे दिवसे क्रिमे दीक्षा-जीवधाराम गुरुपासेरे, आज० ७  
 ज्ञानभण्यां बली देस क्रिया बहु-जुनां शास्त्र बिलेकीरे,  
 संसकपदिया गुरुने पुछे-प्रतिभा केम उवेखीरे, आज० ८  
 उचर न मिला जब गुरुजीने-ज्ञानकला घट जागीरे,  
 सुमतासखी घट आन बंसी जब-हुंडपंथ दिया त्यागीरे, आ० ९  
 धर्मशिरोमणि देसमनोहर-मुर्जरभूमि रसालीरे,  
 जहां आवी सुबिहितगुरुपासे-मनशंका सहु टालीरे, आ० १०  
 परमक्यों उपकार तुमे बहु-श्रीगुरु आतमरायारे,  
 जयवंता बतों आभरते-दिनदिन तेज सवायारे, आ० ११  
 दुषमकालसमे गुरुजी तुमे-वचनदीवडा दीधारे,  
 शांतिविजय कहे जेथी हमारा-विषमकाम पण सिधारे आ० १२

### ( गहूली चतुर्थी. )

( इसमेंभी-उक्तमहाराजका जीवनचरित-शेषहै. )

भाजनगरमें सुमुख पचार्या-रत्नत्रयीना धारीरे,  
 ज्ञान अपूरबदान दइने-जहता दूर निवारीरे, आ० १  
 संवत ओगणीसे बत्तीसे-राजनगर मोझारे,  
 संयमक्रिया सुबिहितगुरुपासे-सोलह शिष्य परिवारर, आ० २  
 चरणकरण गुणधार अनुपम-श्रीगुरु आतमरायारे,  
 जिज्ञासासन शिंगार महापुनि-तत्त्वमजनां धामरे, आ० ३  
 नयनम भंग प्रमाण करोने-जीवादेकनुं स्वरूपरे,  
 भुव उत्पात नाशयी गुरुने-जगण्युं निखिल अनुपरे, आ० ४

जाण्या द्रव्यगुणपर्याय-कर्मायर्मा आकाशरे,  
 पुद्गलकाल अने धली चेतन-निस्थावित्त्य नकाकरे, आ० ९  
 परम कर्यो उपकार तुमे गुरु-दुर्मत दुर नसस्यारे,  
 जयजयकार थयो जिनशासन-आनंद अधिक सवायारे, आ० १०  
 जो न होत आ बखत तुमारा-वचन दीवडा हडारे,  
 तो दुषम अंधारी राते-छेत अमे मत कुडारे, आ० ११  
 विद्यानी वधती करवामा-जेहना विविध विचाररे,  
 ये गुरुना उपकार कहो किम-भूले आ संसाररे, आ० १२  
 देस बहु विचरो गुरुराया-क्रोडकरो शुभ कामरे,  
 अंतरघटमां शांतिविजय पण राखेछे हडहापरे, आ० १३

## [ गहूली पंचमी. ]

( भवीतुमे अष्टमीतिथि सेवारे-इसचालपर. )

रहोगुरु राजनगर चोयामुरे-गुणनिधि गुण तुमारा मास्युं-रहोगुरु,  
 तुमे रागथी नही रंगाया-नही द्वेषरिपुथी बंधायारे,  
 महामोहथी नाही रंगाया-रहोगुरु. १  
 धनमाल अने राजधानीरे-महासंकट आकर जानीरे,  
 तुमे छोडी दुनिया दिबानी-रहोगुरु. २  
 पांच इंद्रो सुभटथी सुरारे-आलसविकथाथी दुरारे,  
 चार चौर किया चकमुरा-रहोगुरु. ३  
 शानदोरीथी मन्नकपि शंभुरे-तीर तत्व रमणतामां साध्युरे,  
 जेथी समकित अदभुत, साध्युं-रहोगुरु. ४

- गुरु विद्यावेळडीये विद्यायारे-जेनी कल्पतरुसम कायारे,  
 एतो समता जळथी सिंचाया-रहोगुरु. ५
- तुमे शास्त्रसुधारस पिधोरे-महामोहरिपु वश किधोरे,  
 तुमे अनुभव प्यालो पिधो-रहोगुरु. ६
- तुमे ज्ञानरतनभंडाररे-करवा हमपर उपकाररे  
 याज्यो नोधाराना आधार-रहोगुरु. ७
- तुम आणा सदा शिर धरस्युंरे-तपनियमविज्ञेये करस्युंरे,  
 कहे शांतिविजय अनुसरस्युं-रहोगुरु. ८





# वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल नं० 28 शक्ति

लेखक शान्ति (विजय)

शीर्षक मल्लव धर्म साहित्य